पच्चीसवाँ घण्टा

लेखक

सी० वर्जिल ज्यारज्यो

अनुवादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

ग्रन्थ संख्या—१७६

प्रकाशक तथा विक्रेता

भारती भंडार,

लीडर प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण

सं० २०११ वि०

मूल्य ६) रू०

मुद्रक

लल्ला प्रेस

बाई का बाग,

इलाहाबाद।

परिचय

न मेरी गिनती कहानी-लेखकों में है और न उपन्यास-लेखकों में। संयोग ने ही मुझे जातक-कथाओं का अनुवादक बनाया और उसी ने इस उपन्यास का भी।

सुना है कि मूल उपन्यास लेखक की अपनी भाषा—रूमानी—में लिखा तो गया किन्तु राजनीतिक कारणों से छप न सका। आज के समाज में स्वतन्त्र चिन्तन और उसकी अभिव्यक्ति को इससे बड़ा दूसरा कौन-सा दण्ड दिया जा सकता है? किन्तु यही किसी कृति के प्रभावशालिनी होने का एक सारवान् सार्टिफिकेट भी है।

प्रथम बार यह ग्रन्थ फ्रेंच में छपा और अब तो न जाने कितनी और कौन-कौन-सी भाषाओं में।

निश्चय से यह उपन्यास किसी का आत्म-चरित नहीं है, किन्तु पढ़ने पर लगता है कि किसी न किसी की आप-बीती अवश्य है। इसके अधिकांश चल-चित्रों की रेखायें जितनी भयानक हैं, उतनी ही स्पष्ट भी।

मेरे एक घनिष्ट मित्र ने जब 'पच्चीसवाँ-घण्टा' की पाण्डु-लिपि पढ़ी तो लिखा कि उन्होंने युद्ध की विभीषिका के विरुद्ध इससे तगड़ी चीज आज तक नहीं देखी। तो क्या 'पच्चीसवाँ-घण्टा' एक युद्ध-विरोधी उपन्यास ही है? नहीं, यह उससे बहुत कुछ अधिक है। यह बहुत ही गहरे में पैठ कर आधुनिक यान्त्रिक सभ्यता और उसकी मूल उपादान सामग्री का विश्लेषण करने का सफल प्रयास है। जो बात आज पाश्चात्य सभ्यता के बारे में सच है, नातिदूर काल

में वही बात सारी सभ्यता के बारे में सच हो सकती है; क्योंकि सभ्यता के सम्बन्ध में यह पूर्व और पश्चिम का भेद कुछ बहुत तथ्य-पूर्ण वर्गीकरण नहीं है। नोरा का प्रश्न है, "उन्हें यह मालूम करने में कितना समय लगेगा कि उन्होंने हमें पकड़ रखा है और जेल में डाले हुए हैं? मैं इसे अब और सहन नहीं कर सकती।" (पृ०३२४) त्रायन का उत्तर है, "उन्हें तुम्हारे या मेर अस्तित्त्व का कभी पता नहीं लगेगा। अपनी प्रगति की इस अन्तिम अवस्था में पाश्चात्य सभ्यता को अब व्यक्ति के अस्तित्व का तनिक भान नहीं रहा है और ऐसी कोई वजह नहीं दिखाई देती जिससे यह आशा बँध सके कि इसे भविष्य में भान होगा। यह समाज व्यक्ति के कुछ खास पहलुओं को ही समझ सकता है। जहाँ तक इसका सम्बन्ध है, एक इकाई के तौर पर, एक व्यक्ति के तौर पर, इसके लिए आदमी का अस्तित्त्व है ही नहीं।...उदाहरण के लिये तुम जर्मन क्षेत्र में पकड़ी गई शत्रु-नागरिका हो…जब यह समाज किसी आदमी को पकड़ता अथवा उसकी हत्या करता है तो यह किसी सजीव प्राणी को गिरफ्तार करता या उसकी हत्या नहीं करता, किन्तु केवल एक अदृश्य कल्पना की। किसी भी दूसरी मशीन की तरह इसे ऐसी बातों के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता…जब आदमी और मशीनें सर्वथा एक रूप हो जायेंगे, तब पृथ्वी पर आदमी नहीं रहेंगे। (पृ० ३२६) आज के आदमियों के बारे में लेखक ने भयानक तथ्य-भरी बात कही है। "...पृथ्वी पर जानवरों की एक नई जाति का आविर्भाव हुआ है। इन जानवरों को 'नागरिक' कहते हैं। ये वनों अथवा जंगलों में नहीं रहते, किन्तु दफ्तरों में रहते हैं; लेकिन ये जंगली जानवरों की अपेक्षा कहीं अधिक भयानक हैं। ये आदमी और मशीन की दोगली सन्तान हैं--एक पतित सन्तान किन्तु पृथ्वी प आज सर्वाधिक शक्तिशाली। उनके चेहरे आदमियों के चेहरे हैं

और बाहरी तौर पर देखने से उनमें और मानवों में भेद नहीं किया जा सकता। लेकिन शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है कि वे मानवों की तरह नहीं बरतते। वे ठीक मशीनों की तरह बरताव करते हैं। दिलों के स्थान पर वे यथार्थ समय बतलानेवाली घड़ियाँ रखते हैं। उनका दिमाग भी एक प्रकार की मशीन है। वे न मशीनें ही हैं और न आदमी हैं। उनकी भूख जंगली जानवरों की सी है। किन्तु वे जंगली जानवर नहीं है। वे नागरिक हैं...एक विचित्र दोगला नमूना। वे पृथ्वी के चारों कोनों में फैल गये हैं।" (पृष्ठ २४६)

यूँ किसी भी नाम में क्या रखा है, लेकिन तब भी प्रश्न हो सकता है कि लेखक ने अपनी इस कृति को 'पच्चीसवाँ-घण्टा' कहना ही क्यों पसन्द किया? माना जाता है कि आधुनिक रेलवे टाइम-टेबलों के अनुसार रात के बारह बजे चौबीस बजते हैं। 'पच्चीसवाँ-घण्टा' के मनीषी लेखक ने आधुनिक यान्त्रिक सभ्यता के भयानक आक्रमण का इस तीव्रता से अनुभव किया है कि उससे अपना यह मत व्यक्त किये बिना नहीं रहा गया कि अब यह मानवता का वह पच्चीसवाँ-घंटा आ पहुँचा है जब भगवान् का कोई "अवतार" भी उसकी रक्षा नहीं कर सकता—अन्तिम घड़ी की भी अन्तिम घड़ी।

किन्तु "अवतारों" ने मानवता की रक्षा की ही कब है?

यह असम्भव है कि लेखक का वास्तविक मत यही हो जो उसकी इस कृति से प्रकट होता है। यदि ऐसा हो तो फिर सर्व प्रथम लेखक की अपनी यह कृति ही निष्प्रयोजन ठहरती है। नहीं, यह तो अपने पाठक को सोचने पर मजबूर करने का एक असाधारण साहित्यिक कौशल मात्र है। पाठक देखेंगे कि लेखक इसमें सर्वथा सफल हुआ है।

रही अनुवाद की बात। अनुवाद के सम्बन्ध में स्वयं अनुवादक क्या कहे? वह पाठकों की चीज है। उसकी पाण्डु-लिपि की तैयारी

के समय सुशील, गुणाकर तथा दिनेश की लेखनी सहायक रही। तीनों का कृतज्ञ हूँ।

किन्तु, सब से अधिक भाई वाचस्पति पाठक का। वे मध्यस्थ न बनते तो आज लेखक, अनुवादक और पाठक का किसी भी तरह मेल न बैठ पाता। मेरे पुराने और कृपालु मित्र पं० लल्ली प्रसाद पांडेय और श्री० शिक्षार्थी जी ने पुस्तक की छपाई के सम्बन्ध में मुझे सर्वथा चिन्ता-मुक्त रखा, यह उनका कोई कम उपकार नहीं है। मैं दोनों मित्रों का आभारी हूँ।

धर्मोदय विहार —आनन्द कौसल्यायन

कालिम्पोङ

२२-२-५५

पच्चीसवाँ घण्टा

"मैं विश्वास ही नहीं करती कि तुम जा रहे हो," सुसाना ने जॉन मारित्ज़ से और अधिक चिपकते हुए कहा। उसने अपना हाथ उसके सिर पर रखा और उसके काले-काले बालों पर एक हलकी चपत लगाई। वह पीछे हट गया।

"तुम्हें इसका विश्वास क्यों नहीं होता ?" उसने थोड़ा तलख़ी से उत्तर दिया। "परसों, सूर्योदय होने से पहले, मैं चल दूंगा।"

"मैं जानती हूँ," वह धीरे से बोली।

वे झाड़ी के पास खड़े थे। आधी रात बीत चुकी थी। हवा ठण्डी थी। जॉन ने उसके हाथ पकड़े और उन्हें दूर हटा दिया।

"अब विदा !"

"थोड़ी देर और रुको," उसने मिन्नत की।

"तुम मुझे क्यों रोकना चाहती हो ?" उसका स्वर स्थिर था। "देरी हो रही है, कल मुझे बहुत काम करना है।"

उसने उत्तर नहीं दिया किन्तु और नजदीक सरक गई। उसकी कमीज़ के बटनों को खोल कर उसने अपने गाल उसकी नंगी छाती से सटा दिये और आकाश की ओर देखा।

"ज़रा देखो, तारों में कितनी चमक है," वह बोली।

वह किसी ख़ास बात की आशा लगाये था। उसने सोचा था कि किसी विशेष बात के लिये ही उसे रोका गया है, लेकिन वह तो केवल तारों के बारे में बतिया रही थी। उसने जाने के लिए मुँह मोड़ा। तभी उसे ख्याल आया कि वह अब उसे कम से कम तीन वर्ष तक न देख पायेगा। इसलिए, उसे प्रसन्न करने भर के लिये, उसने भी तारों की ओर देखा।

"क्या यह बात सच्ची हो सकती है कि हर किसी का आकाश में अपना एक तारा होता है? आदमी की मृत्यु के समय वह तारा टूट कर गिर पड़ता है।"

"मैं यह सब कैसे जान सकता हूँ?" उसने उत्तर दिया। अब वह चलने के लिये तैयार था।

"विदा।"

"क्या ऊपर आकाश में हमारे भी तारे हैं?" वह पूछ बैठी।

"हर किसी की तरह," जॉन का उत्तर था। "या तो वहाँ ऊपर या हमारे अपने भीतर।"

उसने उसका सिर अपने हाथ में लिया और धीरे से हटा दिया। तब वह चल दिया। वह उसका हाथ पकड़े-पकड़े रास्ते तक उसके साथ गई। उसने तारों की ओर देखा और तब उसकी ओर।

"मैं कल रात को तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी," वह बोली।

"यदि पानी न बरसा।"

वह उसके पीछे भाग कर कहना चाहती थी कि चाहे पानी ही बरसता रहे, तो भी वह अवश्य आये। किन्तु वह तेजी से बढ़ा चला जा रहा था। बाग के नुक्कड़ पर पहुँच कर वह आँख से ओझल हो गया। कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ी अपने कपड़ों पर लगे तिनकों को झाड़ती रही और कपड़ों को ठीक-ठाक करती रही। जब वह आँगन में वापस लौटने लगी तो उसकी नजर अखरोट के पेड़ के नीचे की कुचली हुई घास पर पड़ी। वहीं वे पास-पास लेटे थे। अपने आस-पास उसे अभी भी जॉन के बदन की गन्ध आ रही थी—कुचली हुई घास की गन्ध, तम्बाकू की गन्ध और बेर की गुठलियों की गन्ध।

जॉन ने खेत को पार किया। वह सीटी बजाते हुए घर की ओर बढ़ा। उसने काले रंग का फौजी पाजामा पहन रखा था। खुले गले की सफेद कमीज थी; पैर नंगे थे। बीच-बीच में अनेक बार उसका सीटी बजाना बंद हुआ और वह जम्हाई लेने लगा। तब उसे उस औरत का

ख्याल आया, जिसे वह अभी छोड़ कर आया था—सुसाना का। उसे हंसी आने को हुई। अपने मन में वह कहने लगा—"तारों के बारे में वह सारी बकवास! स्त्रियां छोटे बच्चों की तरह होती हैं। वे सब तरह की मूर्खतापूर्ण बातें सोचती रहती हैं।" उसे अपनी अमरीका-यात्रा का ध्यान आया, जो परसों ही आरम्भ होनेवाली है। तब उसने सोचना एकदम बंद कर दिया। वह फिर सीटी बजाने लगा। उसे नींद आ रही थी। वह चाहता था कि इस समय तक वह अपने घर पर बिस्तरे में होता। उसे बहुत जल्दी उठना था। यह उसका काम करने का अन्तिम दिन होगा। यह तो अभी पौ फटने का समय नजदीक आ गया था। जॉन ने अपनी गति तेज़ कर दी।

२

अगले दिन, अरुणोदय के समय, जॉन गाँव के कुए पर गया। अपनी कमीज के बटन अच्छी तरह खोल कर, हाथों में कुछ पानी ले उसने अपने चेहरे और गर्दन को अच्छी तरह रगड़ा। आसपास कोई न था। गाँव के लोग सोये थे। सड़क के बीचों-बीच चलते हुए उसने अपने हाथों को अपने सिर के बालों से रगड़ कर सुखा लिया। उसने अपने कालर को सीधा किया और गले को खुला रखा। वह दूध-सी स्वच्छ धुन्ध में से निकलते गाँव का विचार कर रहा था। यह रूमानिया का फांतना गांव था। पच्चीस वर्ष पूर्व जॉन मारित्ज़ का जन्म इसी गाँव में हुआ था। अब, इस समय, जब वह इसके छोटे-छोटे घरों और तीन गिरजों—कैथालिक, प्रोटैस्टैंट और ऑरथोडाक्स—को निहार रहा था, उसे ध्यान आया कि सुसाना ने उससे पूछा था कि क्या उसे अपने गाँव की याद नहीं आयेगी? उस समय उसकी बात पर उसने हँस दिया था।

उसका उत्तर था कि वह एक पुरुष है; स्त्रियों को ही घर याद आता है। लेकिन अब जब जाने का समय समीप आया तो उसकी तबियत मुरझा गई। वह दुखी भी हुआ। गाँव की ओर देखना बन्द करके उसने फिर सीटी बजानी शुरू कर दी।

फादर कोरग का घर ऑरथोडाक्स गिरजे से थोड़ी ही दूर पर ठीक मुख्य सड़क पर था। दरवाजे में ताला लगा था। जॉन ने झुक कर चाबी उठा ली। वह दरवाजे के नीचे छिपी पड़ी रहती थी ताकि जॉन जब सुबह काम करने आये तो वहाँ से उठा ले। उसने आराम से ओक की लकड़ी के उस भारी दरवाजे को खोला। कुत्तों ने उसे घेर लिया और उछल कर उसका स्वागत किया। वे उसे अच्छी तरह पहचानते थे। पिछले छः वर्ष से जॉन रोज़ फादर कोरग के काम पर आता था। यहाँ उसका मन लगता था। लेकिन आज उसका अन्तिम दिन था। आज वह सेब तोड़ने का काम करेगा। तब वह अपनी मज़दूरी लेगा और पादरी को कह देगा कि वह जा रहा है। अभी तक पादरी इस बारे में कुछ नहीं जानता था।

वह अनाज के गोदाम में गया और वहाँ से टोकरियाँ निकाल कर गाड़ी में रखीं। पादरी बरामदे में था। उसके बदन पर मोटे कपड़े की एक सफेद कमीज और पाजामे के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। वह अभी-अभी सोकर उठा था। जॉन ने एक मुस्कराहट के साथ उसका स्वागत किया। उसने टोकरी नीचे रख दी, हाथों की मिट्टी झाड़ी और बरामदे में आगे बढ़ कर बूढ़े आदमी के हाथ से पानी का बरतन ले लिया।

"फादर, पानी मैं डालता हूँ।"

जॉन ने पादरी के हाथों पर पानी डाला। उसने उसकी पतली-पतली उंगलियों की ओर निहारा, उतनी ही सफेद और मुलायम जितनी किसी स्त्री की। जिस समय बूढ़े आदमी ने अपनी दाढ़ी, गरदन और माथे पर साबुन लगाया, उसे मजा आ रहा था। वह इसमें इतना अधिक

तन्मय हो गया कि उसे लगातार पानी डालते रहने की ही सुध न रही। पादरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके हाथ साबुन के झाग से भरे थे और आगे फैले थे। जॉन को लगा कि उससे अपराध हो गया। उसके मुँह पर हलकी लाली आ गई थी।

अलैक्ज़ैण्डर कोरग उस इलाके का ऑरथोडाक्स पादरी था। यद्यपि वह अभी केवल पचास का था, तो भी उसके सिर और दाढ़ी के बाल एकदम रजत-वर्ण हो गये थे। वह लम्बे, पतले, दुबले शरीर का था, मानो किसी पत्थर पर किसी सन्त-पुरुष का चित्र हो; बूढ़े आदमी का बदन। लेकिन उसकी आँखों की चमक और उसके बोलने के तरीके से उसकी जवानी टपकती थी। जब वह पादरी अपना मुँह धो चुका तो उसने एक छोटे-मोटे तौलिये से अपना चेहरा और गरदन पोंछ डाली। जॉन पानी का बरतन हाथ में लिये पास खड़ा था।

"फादर, मैं आप से एक बात कहना चाहूँगा।"

"मैं पहले कपड़े पहन लूँ," पादरी का उत्तर था। उसने जॉन के हाथ से पानी का बरतन लिया और घर की ओर बढ़ा। देहली तक पहुँच कर वह वापिस लौट आया।

"मुझे भी तुम्हें एक बात बतानी है। ऐसी बात जिसे सुनकर तुम प्रसन्न होगे। तब तक टोकरियों को गाड़ी में रखो और घोड़ों को जोतो।"

जॉन और फादर कोरग सेब तोड़-तोड़ कर दिन भर टोकरियों में भरते रहे। वे चुपचाप काम में लगे रहे। जब सूर्य उनके कन्धों पर आ गया, पादरी ने काम रोक दिया और लेट गया। वह थक गया था।

"थोड़ा विश्राम कर लें।"

"बहुत अच्छा।"

वे सेबों की बोरियों की ओर बढ़े और उन में से एक पर बैठ गये। थोड़ी देर तक वे चुपचाप रहे। पादरी ने अपनी जेब में सिगरेट का पैकेट देखा और निकाल कर जॉन को दे दिया। यह, वह हमेशा जॉन के लिये लाता था।

"तुम मुझे कुछ कहनेवाले थे ?"

"फादर, हाँ।"

जॉन ने एक सिगरेट जलाई। दिया-सलाई घास में फेंक दी और उसे वह बुझते हुए देखने लगा। उसे पादरी को यह बताने में कि वह जा रहा है, कठिनाई हो रही थी। वह सोचने लगा—काश! वह यह बात टाल सकता।

"मैं अपनी बात पहले कहता हूँ," पादरी बोला।

जॉन को खुशी थी कि उसे पहले नहीं बोलना पड़ा।

"रसोई-घर के आगेवाला कमरा खाली है," पादरी बोला। "मुझे ख्याल आया कि शायद तुम यहाँ रहना पसन्द करो। मेरी स्त्री ने इसमें सफेदी की है, पर्दे लटका दिये हैं और सफेद चादरें बिछा दी हैं। तुम्हारे घर में एक ही कमरा है। यह तुम्हारे और तुम्हारे माता-पिता के लिए पर्याप्त नहीं। जब तुम कल काम पर आओ तो अपना सामान साथ लेते आना।"

"मैं कल काम पर नहीं आऊँगा।"

"तो परसों सही," पादरी का उत्तर था। "अब से कमरा तुम्हारा है।"

"अब मैं बिल्कुल नहीं आऊँगा," जॉन कह उठा। "मैं कल अमरीका के लिये सवार हो रहा हूं।"

"कल ?" पादरी ने अपनी आंखें खोलीं।

"कल अरुणोदय के समय।"

उसका स्वर यद्यपि स्थिर था, तो भी उसमें खेद और हैरानी की झलक थी।

"मुझे एक चिट्ठी मिली है। जहाज कान्सटैन्ज़ा में है और बन्दरगाह में केवल तीन दिन रहेगा।"

पादरी जानता था कि जॉन अमरीका जाना चाहता है। बहुत से किसान अमरीका जा रहे थे। दो-तीन वर्ष बाद वे रुपये के साथ लौटेंगे

और जमीन खरीदेंगे। फांतना में एक से एक बढ़ कर जमीन थी। पादरी प्रसन्न था कि जॉन जा रहा है। चन्द साल बाद वह भी एक अच्छी जायदाद का मालिक हो जायगा। लेकिन उसे आश्चर्य था कि वह इतनी जल्दी जा रहा है। जॉन ने कभी इसका ज़िक्र नहीं किया था। वे आज तक, रोज़, साथ-साथ काम करते रहे थे।

"मुझे कल ही चिट्ठी मिली है," जॉन ने कुछ समाधान किया।

"क्या तुम अकेले जा रहे हो?"

"घिज़ा आयोन के साथ। हमने कोयला झोंकनेवालों का फार्म भरा है। हमें इन्जन-घर में काम करना होगा। इस तरह हम में से हर एक को किराये के केवल पाँच सौ ली देने पड़ेंगे। कान्सटैन्ज़ा में घिज़ा का एक मित्र है। वह जहाज के अड्डे पर काम करता है। उसी ने सब ठीक-ठाक किया है।"

पादरी ने उसकी मंगल-कामना की। उसे अफसोस था कि अब जॉन काम पर नहीं आयेगा। जॉन नौजवान था और काम अच्छा करता था। वह दयालु था, ईमानदार था, किन्तु था गरीब। उसके पास एक इन्च जमीन न थी।

सारा दिन दोनों इकट्ठे काम करते रहे। बूढ़ा अमरीका की बातें करता था। जॉन सुन रहा था। बीच-बीच में वह एक ठण्डी साँस ले लेता। अब तो वह एक प्रकार से अपने निर्णय पर पछताने लगा था। शाम को जब वह अपनी मज़दूरी ले चुका तो वह नीची नज़र किये, पादरी के सामने खड़ा रहा। उसे वहां और खड़े रहने की जरूरत न थी, किन्तु उसे जाना दूभर हो रहा था। बूढ़े ने उसके कन्धों पर थापी दी।

"वहाँ पहुँच कर मुझे लिखना," उसने कहा। "कल प्रातःकाल आना और रास्ते के लिये जो खाना मैंने तुम्हें देने को कहा है, वह ले जाना।"

उसने उसकी कमाई के अतिरिक्त उसे पाँच सौ ली-नोट और ऊपर से दिये और कहा—

"अरुणोदय होते-होते आना। दरवाजे पर धीरे से दस्तक देना। अच्छा होगा, यदि मेरी स्त्री न सुने। तुम जानते हो कि स्त्रियाँ कभी कभी बड़ी कंजूस होती हैं।"

"पौ फटने से पहले मुझे गाँव के दूसरे सिरे पर घिज़ा आयोन से मिलना है।"

"तब तुम अपने रास्ते पर इधर से होते जा सकते हो। नहीं तो मैं तुम्हें आज शाम को ही आने को कहता।"

"मैं कल ही आऊँगा," जॉन ने उत्तर दिया। वह सोच रहा था कि आज रात सुसाना उसका इन्तजार करेगी। वह चला गया।

३

फादर कोरग ने उस फौजी-बोरे को खिड़की के पास दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और रोशनी बुझा दी। तब वह बिस्तरे में जा लेटा। सोने के लिये आंखें बन्द करने से पहले उसने जॉन मारित्ज़ की अमरीका-यात्रा का विचार किया। बोरे में सामान रखने के समय उसे एक अजीब अनुभूति हो रही थी कि वास्तव में वह स्वयं अमरीका जा रहा है। तीस वर्ष पहले उसने भी ठीक इसी यात्रा के लिये अपना सामान तैयार किया था। यह वह समय था जब उसने अभी-अभी 'देववाद' में डाक्टर की उपाधि प्राप्त की थी और वह मिचिगान की आरथोडाक्स बिरादरी में एक धर्मोपदेशक के पद पर नियुक्त हुआ था। विदायगी के एक सप्ताह पहले उसने तार भेज कर अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया था...उसे उसकी भावी पत्नी मिल गई थी और उसका विवाह हो गया

था। तब से आज तक वह फान्तना के ऑरथोडाक्स गिरजे का पादरी था। गांव छोटा था और जिंदगी में आराम नहीं था। उसे कई बार अफसोस होता था कि उसने अपना विचार क्यों बदल दिया। लेकिन अब तो कोई गुञ्जायश नहीं थी। अमरीका उसका अपूर्ण स्वप्न ही रहा। जब भी कोई किसान समुद्र-पार जानेवाला होता, फादर कोरग उसे सिगरेटें देता, भोजन देता और यात्रा के लिये कुछ रुपया भी देता और आग्रह करता कि वह उसे अमरीका पहुंच कर लिखे। यह सब वह अपनी स्त्री से छिपा कर ही करता। इसका कारण यह नहीं था कि वह कुछ आपत्ति करती, किन्तु उस बूढ़े आदमी को लगता था कि जब भी वह अमरीका की बात सोचता है, अपनी पत्नी के प्रति वफादार नहीं रहता। उसी के लिये उसने अमरीका को छोड़ दिया था। किन्तु उसके दिल की गहराई में अभी भी उस पुराने संघर्ष का धुआँ उठता रहता था।

जॉन उसके लिये दूसरे किसानों की अपेक्षा विशेष था। वह केवल भाड़े का टट्टू ही नहीं था, प्रत्युत उसका सहायक था जिसकी उसे कद्र थी, वह उसका मित्र था। इसलिये उसको ऐसा लग रहा था कि उसका अपना एक हिस्सा ही "नये संसार" के लिये विदा हो रहा है।

उस रात पूर्णिमा थी। पादरी को नींद नहीं आई। उसने बिस्तर छोड़ कर लैम्प जला लिया। पुस्तकों की आलमारी की ओर बढ़ कर उसने वहाँ से एक किताब निकाल ली। उसे खोलने से पहले उसने कमरे की तीनों दीवारों के साथ सटी हुई आलमारियों पर एक नज़र डाली जिनमें पुस्तकें क्रमशः श्रेणी-बद्ध रखी हुई थीं। अंग्रेजी पुस्तकें थीं, जर्मन थीं, फ्रैंच थीं और इटली की भाषा की थीं। आगे यूनानी और लातीनी प्राचीन-ग्रन्थ थे। इन तीस वर्षों में, जो उसने फांतना में गुजारे, उसकी इन पुस्तकों से गहरी दोस्ती हो गई थी। कभी-कभी उसे यह सोच कर आश्चर्य होता था कि उसने अपने मित्रों का कहना मान कर बुखारेस्त या इस्से के विश्वविद्यालय से अपना सम्बन्ध क्यों नहीं स्थापित किया? उसने दो बार "ईसाई-सम्प्रदाय के इतिहास" की कुर्सी

को अस्वीकार कर दिया था, जिसका उसे अफसोस न था। फांतना में वह रविवार तथा दूसरे पवित्र-दिनों पर धार्मिक पूजा कराता, और शेष समय में अपनी ज़मीन, मधुमक्खियों तथा बगीचे की देखभाल करता। अँधेरा हो जाने पर वह प्रायः पढ़ा करता। उसके भविष्य में जो कुछ भी होनेवाला हो, उसे स्वीकार करने में उसको कोई आपत्ति नहीं थी। केवल एक बार उसने अपने भाग्य के साथ ज़बर्दस्ती करने की कोशिश की थी और यह उस समय जब उसने अमरीका जाने की तैयारी की थी। आदमी के लिये जो कुछ भी करना संभव था, अमरीका पहुँचने के लिये उसने वह सब कुछ किया था; किन्तु तब भी वह न जा सका। जिसकी कहीं कोई कल्पना नहीं थी वैसी बात हो गई। तब से उसने योजनाएँ बनाना और उनकी अनिवार्य सफलता में विश्वास करना छोड़ दिया था। पादरी ने अपनी किताब खोली और यूं ही कहीं से पढ़ने लगा, "...न केवल मानव-प्रकृति किन्तु सारी प्रकृति ही आंशिक तौर पर अनिश्चित है। इसलिए एक बुद्धिमान् आदमी, एक विज्ञ आदमी कभी भी कोई निश्चयात्मक बात नहीं कहता। जब आदमी किन्हीं ख़ास, निश्चित भावी घटनाओं के साथ अपने आप को बांध लेता है तो उसे अपनी शक्ल दिखानी कठिन हो जाती है। पूर्व में कोई भी आदमी जो अपने आप को ऐसी स्थिति में रखता है, उसे लज्जित होना पड़ता है, क्योंकि उसने आदमी और सामान्य प्रकृति के बारे में पूर्व की जो सर्व-सामान्य शिक्षा है उसकी अवहेलना कर दी; अर्थात् कि सभी कुछ अनिश्चित है और कुछ भी हो सकता है।

"उनका यह विश्वास पूर्व के परम्परानुगामी लोगों को, सभी परिस्थितियों में समान रूप से लागू माने जानेवाले निश्चित, ख़ास नैतिक नियमों के प्रति भी सन्देहशील बनाता है। संसार में सभी निश्चित चीज़ें अनित्य हैं। इसलिये उनके आधार पर बने हुए नियम सभी परिस्थितियों के लिये कभी भी ठीक नहीं हो सकते। इसलिये किसी आदमी का किसी निश्चित, ठोस, नैतिक-नियम के पालन-मात्र के लिये

अपनी जान दे देना अथवा अपने आप को बलिदान कर देना उस में न केवल धार्मिक किन्तु दार्शनिक तथा वैज्ञानिक बुद्धि के भी अभाव को प्रकट करता है।"

पादरी ने पुस्तक बन्द कर दी और उसे उसकी अपनी जगह रख दिया। वह सोचने लगा—"क्या यह निश्चित है कि मुझे तीस वर्ष पहले अमरीका जाने के अपने संकल्प को छोड़ देने का तनिक अफसोस नहीं है? यदि सचमुच अफसोस नहीं है, तो आज जब कि जॉन जा रहा है, यह विचित्र उद्विग्नता क्यों?" अपने आप को बिस्तरे के कपड़ों से लपेट कर वह फिर सोचने लगा—"मुझे यहीं बने रहने का अफसोस नहीं है, लेकिन एक काल्पनिक वस्तु के लिये अजीब तरह की तृष्णा है। यदि हमें कभी यह प्राप्त हो जाय तो हमें पता लगेगा कि यह वह वस्तु नहीं है जिसकी हमें आशा थी। शायद मैं अमरीका के लिये बेचैन नहीं हूँ, किन्तु किसी ऐसी चीज़ के लिये जो मेरी बेचैनी के लिये एक बहाना मात्र है। अमरीका हमारी तृष्णा का आविष्कार है। अमरीका एक सुखद स्वप्न-लोक है...आविष्कार से पहले यह कवियों की कल्पना और वैज्ञानिकों की खोज में विद्यमान थी।"

तो भी पादरी इतना अशान्त था कि उसे नींद नहीं ही आ रही थी। वह दिन निकलने के लिए इतना उत्सुक था, मानो उसे ही गाँव के दूसरे सिरे पर यिज़ा आयोन से मिलना हो और उसे ही कान्सटैन्ज़ा जाना हो जहां वह जहाज़ जिसे "केवल तीन दिन बन्दरगाह में रहना है" उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

उसकी नींद टूटी तो अभी भी अँधेरा ही था। पादरी ने खिड़की खोली। सड़क वीरान थी और गांव प्रातःकाल की धुन्ध से ढका था। उसने बोरे का मुँह खोला और मेज पर रखी हुई सिगरेटों का पैकट उसमें डाल दिया। "जॉन के चले जाने के बाद मैं इन्हें किसे दूंगा? उसी के लिये तो मैंने इन्हें खरीदा है," वह सोचने लगा। खिड़की में से थोड़ा थोड़ा करके प्रकाश आने लगा था। सड़क पर उसे पाँव की आहट

सुनाई दी, किन्तु वह घर के पास से गुजर कर आगे जाकर विलीन हो गई। यदि वह जल्दी नहीं करेगा तो पिज़ा आयोन को उसकी प्रतीक्षा करते रहना होगा। पादरी बाहर बरामदे में गया और ठंडे पानी से हाथ-मुंह धोया। वहां जॉन उसके हाथों पर पानी डालने के लिये नहीं था।

सूर्योदय हो गया था और जॉन का कहीं कुछ पता न था। पादरी दोपहर तक प्रतीक्षा करता रहा। तब उसे विचार आया कि जॉन को सोकर उठने में ही इतनी अधिक देर हो गई होगी कि वह यह बोरा लेने भी न आ सका। "अफ़सोस है कि वह नहीं आया। मैंने उसके लिये कम से कम तीन सप्ताह का इन्तजाम कर दिया था। अमरीका पहुँचने पर भी उसके कुछ आरम्भिक दिन इसी के भरोसे कट जाते।"

"भोजन तैयार है," उसकी स्त्री बोली। वह देहली तक चली आई थी।

"मैं आया," पादरी ने उत्तर दिया। बड़ी मार्मिक वेदना के साथ उसने उस बोरे को चारपाई के नीचे धकेल दिया। तीस वर्ष के बाद अपने जिस आदर्श का उसने त्याग किया था, उस त्याग के त्याग का यह अंतिम प्रतीक था। वह खाना खाने अन्दर चला गया।

"यदि जॉन इस बोरे को ले गया होता तो मुझे लगता कि मैं ही जा रहा हूँ।

कितना अफसोस है कि वह नहीं आया।"

४

पादरी से विदा लेने के बाद जॉन सड़क के किनारे के कुएँ पर गया और हाथ-मुंह धोये। गाँव में से गुज़र कर वह निकोलस पोरफिरी

के घर की ओर बढ़ा। निकोलस पोरफिरी के पास जंगल के किनारे कुछ बिकाऊ खेत था।

घर के आंगन के पास पहुँच कर उसने कहा, "मैं कल अमरीका जा रहा हूँ। जब मैं वापस लौटूंगा तो मेरे पास तुम्हारा वह खेत खरीदने के लिये पर्याप्त पैसा होगा। लेकिन जाने से पहले इस निमित्त मैं तुम्हारे पास कुछ छोड़ जाना चाहूँगा ताकि तुम यह खेत किसी दूसरे को न बेचो।"

"तुम कब तक बाहर रहोगे ?"

"जब तक मैं पर्याप्त नहीं बचा लेता—दो-तीन वर्ष।"

"इतना समय बहुत है। तीन वर्ष में तुम आसानी से जमा कर लोगे। किसी ने भी इससे अधिक समय नहीं लगाया। अमरीका में रुपया आसानी से आ जाता है।"

"मैं तुम्हारे पास क्या कुछ छोड़ जाऊँ ?" जॉन ने पूछा।

"मुझे पैसा नहीं चाहिये। तीन वर्ष के भीतर पचास हजार ली कमाकर ले आओ, खेत तुम्हारा है। मैं इस बीच किसी को नहीं बेचूंगा। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

लेकिन जॉन ने अपनी पतलून की जेब में से नोटों का एक बण्डल निकाला और उन्हें दरवाजे की सीढ़ियों पर गिना।

"यह तीन हज़ार हैं। तो भी, मैं तुम्हारे पास कुछ न कुछ छोड़े ही जाता हूँ।"

जॉन ने सौदे पर मोहर लगाने के लिये निकोलस पोरफिरी के साथ हाथ मिलाया, और चल दिया। अभी अँधेरा नहीं हुआ था। वह उस खेत को ज़रा एक नज़र और देख लेना चाहता था, जिसके लिये उसने अभी कुछ रुपया रखा था। वह इससे भली भांति परिचित था। उसने इसे असंख्य बार देखा था। लेकिन इस बार यह कुछ सर्वथा भिन्न बात थी। अब खेत उसका था। उसे केवल रुपया लाकर देना था।

५

जान तेज़ी से खेतों को पार कर गया। उसकी कमीज़ पसीने से भीगी थी और उसके बदन से चिपटी थी। उसमें इतना सबर नहीं था कि वह धीरे-धीरे चल सके। ओक के जंगल से नातिदूर एक जगह पर पहुँच कर वह रुक गया। जिस जगह वह खड़ा था, उस से जंगल के ठीक सिरे तक उसका खेत था। वहाँ मकई बोई थी, जो कंधों जितनी ऊँची थी। खेत विशेष बड़ा नहीं था, किन्तु उसमें एक घर, एक आंगन, एक साग-भाजी के खेत और एक फलों के बगीचे के लिये जगह थी। उसने आँख से खेत की लम्बाई-चौड़ाई नाप ली। हरी मकई से भी ऊँची उसके अपने घर की छत उसे दिखाई दे रही थी, कुएँ का लम्बा बांस दिखाई दे रहा था, ओक-लकड़ी का भारी दरवाजा दिखाई दे रहा था और दिखाई दे रहा था अपना अस्तबल। इससे पहले भी अनेक बार, इस खेत को देखते हुए, उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह यह सब चीज़ें देख रहा हो, लेकिन आज जैसी स्पष्टता के साथ कभी नहीं। आज तो उसे हर चीज़ अपनी योजना के अनुसार वास्तविक प्रतीत हो रही थी। ठण्डी हवा के झोंकों के कारण हरी मकई में उठनेवाली लहरियों को देख कर वह मुसकरा उठा। नीचे झुक कर उसने अपने बायें हाथ में मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली। यह किसी जीवित वस्तु को हांथ में लेने जैसा लगा—उष्ण, मानो हाथ में कोई चिड़िया पकड़ ली हो। वह झुका और उसने अपने दूसरे हाथ की मुट्ठी भी भर ली; यह भी गर्म ही थी। उसने इसे जोर से अपनी मुट्ठी में दबाया और फिर खेत पर छिड़क दिया। तब वह मकई के खेत में धंस कर जंगल की ओर बढ़ने लगा। लेकिन खेत के बीचोबीच वह फिर रुका, फिर एक मुट्ठी मिट्टी उठाने ही के लिये। "यह भी गर्म है," उसने अपने मन में कहा। "ारा खेत जीवित है और गर्म है।" उसने वह मिट्टी अपने गालों से

लगा ली और उसकी भीनी-भीनी गंध सूंघने लगा। "यह अच्छी तेज़ गन्ध है, तम्बाकू की गन्ध।" उसने अपना सिर ऊपर उठाया वह अपने फेफड़ों को बार-बार अपने खेत की मधुर-सुगन्धि से भरने लगा। जिस रास्ते वह आया था, उसी रास्ते वह वापिस चला गया। उसे ख्याल आया कि सुसाना अभी भी इन्तज़ार कर रही होगी। वह सीटी बजाने लगा।

६

जरगु जॉरडन, सुसाना का पिता फन्तना की बाहरी सीमा पर, लाल खपरैलों की छतवाले एक बड़े घर में रहता था। जॉन बाग के बीच से गुजर कर आँगन की सब से नीची सतह पर पहुँचा और झाड़ी में की एक खाली जगह से झांकने लगा। उसने देखा कि जरगु घर में से बाहर आया है और जोर-जोर से बराम्दे में घूम रहा है। उसने तमाम खिड़कियां-दरवाजे बन्द करके कुण्डे लगा दिये और उनमें ताले डाल दिये। जॉन उसकी हर एक हरकत ध्यान से देखता रहा। अपना काम समाप्त कर जरगु ने अपने पीछे एक सन्देह भरी नजर डाली और तब सीढ़ियों से नीचे उतरा। उसके राक्षसी शरीर के दबाव से सीढ़ियां चर-चर करने लगीं। उसने अपनी रोज़ की हरी जॉकेट पहनी, छोटे बूट पहने और सवारी की बिरजिस पहनी। उसने सामने का बाग पार किया, दरवाजे को डबल ताला लगाया और ऊपर से लोहे का डण्डा डाल दिया। तब वह हिला और सारे घर का एक चक्कर लगाया। वह चारों ओर ऐसी सन्देह भरी दृष्टि से देख रहा था मानों वह छाया में छिपे हुए किसी आदमी को खोज रहा हो। अन्त में वह घर के पिछवाड़े से अन्दर चला गया।

किसी ताले में चाबी के दो बार घूमने की आवाज आई, और उस के बाद किसी प्रकार की कोई आवाज नहीं। जरगु अपने सोने के कमरे में गया जिसकी दीवारें उसके शिकार के विजय-चिह्नों से ढकी हुई थीं— हिरन, भेड़िये और भालू के सिरों से। छर्रे वाली बन्दूकें, पिस्तौल और कारतूस के थैले बारहसींगों और बाज़ों के बीच लटके थे। उस भारी पलंग के पास, नीचे फर्श पर, काले भालुओं की दो खालें बिछी थीं। जरगु ने हुक पर से एक बन्दूक उठाई और उसे बिस्तरे के सहारे खड़ा कर दिया। तब उसने एक पिस्तौल ली और दराज़ में से एक मोमबत्ती और दियासलाई की डिबिया निकाली और उन्हें पलंग के पास की मेज पर बड़ी सफाई के साथ यथाक्रम रख दिया। वह अपने बूट उतारने के लिये पलंग के सिरे पर बैठा और उन्हें एक दूसरे के पास काले भालुओं की खाल पर रख दिया। इस समय उसकी सांस बड़ी गहरी चल रही थी। वह अपने बूट हमेशा एक निश्चित जगह रखा करता था ताकि वह केवल हाथ फैला कर उन्हें अँधेरे में भी पा सके। अन्त में उसने अपने कपड़े उतारे और बिस्तर में जा पहुँचा। वह उन सफेद तकियों में ऐसे डूब गया जैसे कोई भालू बर्फ में जा दुबका हो। झाड़ी के पीछे से जॉन ने देखा कि लौ मद्धम पड़ी, हिली-डुली और फिर बुझ गई। खिड़की अँधेरे में एक काला धब्बा बन गई। योलन्दा के कमरे में अभी भी कुछ रोशनी थी; लेकिन यह बहुत ही नरम और मद्धम थी। लैम्प पर एक रेशमी ढक्कन चढ़ा हुआ था।

लोग कहते थे कि जरगु की स्त्री योलन्दा बहुत सुखी स्त्री नहीं है। इक्कीस वर्ष पहले, एक रात वह और जरगु कहीं से सवार होकर गांव में आये और सराय में ठहरे। कोई नहीं जानता था कि कहां से आये, लेकिन कहीं न कहीं दूर से आये होंगे। वह रूमानी था, किन्तु वह नहीं था। बाद में यह पता लगा कि वे हंगरी से आये थे। उन दोनों के बदन पर लम्बे फर के लबादे थे। जब वे दोनों भुने मांस और शराब का खाना खा चुके—वह एक जंगली पशु की तरह निगलता गया, और

उसने बड़ी कठिनाई से चन्द लुकमे खाये—तो वे दोनों सरायवाले के कमरे में सोये थे। तीन दिन के बाद लोगों ने सुना कि वे ठहरने के लिये आये हैं, और कुछ सप्ताह बाद कि उन्होंने वह सराय खरीद ली है। जब जरगु पहले-पहल आया तो उसे रूमानो का एक शब्द भी मालूम नहीं था, किन्तु अब वह अच्छी तरह बोल सकता था। फन्तना में उन्होंने किसी से दोस्ती नहीं रखी थी। उन्होंने अपनी लड़की सुसाना को भी कस्बे के स्कूल में भेजा था ताकि वह गाँव के बच्चों के साथ हेल-मेल न बढ़ाये। गाँव के लोगों को योलन्दा की झांकी उसी समय मिलती थी जब या तो वह ऑरथोडाक्स गिरजा जाती थी अथवा जरगु उसे अपने साथ गाड़ी में क़स्बे ले जाता था। गाड़ी में उसका पहाड़-सा बदन उस पर हावी हो जाता और वह उसके आकार से आधी से भी कम दिखाई देती। अच्छे कटे हुए रेशम सदृश उसके बाल थे और नीली आंखें। सुसाना उसकी ठीक प्रतिमूर्ति थी। जरगु जॉरडन के बारे में इस से अधिक कोई कुछ न जानता था। सर्दियों की एक रात में उसने एक आदमी की हत्या कर डाली थी, क्योंकि उसने उसके घर में सेंध लगाने की कोशिश की थी। उसने आंखों के ठीक बीचोबीच निशाना लगाया था। पुलिस का कहना था कि उसने ठीक ही किया था कि एक ऐसे आदमी को जो रात में उसका रुपया चुराने आया था, गोली मार दी थी। गाँववालों का विचार इससे भिन्न था। उनका कहना था कि हत्या तो हत्या ही है लेकिन शनैः-शनैः लोग यह सारी कहानी भूल गये। इस बात को बहुत दिन बीत गये। अब जान ने देखा कि योलन्दा के कमरे का प्रकाश भी मद्धम पड़ गया है, हिलने-डुलने लगा है और बुझ गया है। वह अपने दोनों हाथों का प्याला-सा बनाकर अपने मुँह के पास ले गया और उल्लू की तरह चिल्लाया।

उल्लू की सी आवाज हवा को चीरती चली गई और आकाश में पहुँच कर गूंज उठी। तब एकदम शान्ति थी, लेकिन केवल एक सैकिण्ड

के लिये। कोने के कमरे की खिड़की खुली और सुसाना धीरे से कूद-कर बाहर के पत्थर पर आ रही। आंगन के उस पार और बाड़ में की खाली जगह में से वह पंजों के बल दौड़ती हुई वहाँ पहुँची जहाँ जान उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

७

"तुम यह उल्लू की आवाज का ही उपयोग क्यों करते हो? यह उल्लू की चिल्लाहट क्यों? यह हू-हू क्यों? आखिर क्यों?" वह झाड़ी में से आई थी। जॉन ने उसे चूमना चाहा, किन्तु उसने चूमने नहीं दिया।

"मैंने तुम्हें पहले भी कह दिया है कि इस तरह आवाज न लगाया करो।" उसका हृदय भय से धक धक कर रहा था।

"और मैं कैसे क्या करूँ?" जॉन ने पूछा।

"जैसे तुम चाहो, किन्तु इस तरह नहीं। उल्लू की चिल्लाहट अप-शकुन है। इसका अर्थ दुर्भाग्य और मृत्यु होता है। इसी लिये तुम्हें इसका उपयोग नहीं करना चाहिये।"

"बुढ़ियों की बात!" जॉन का उत्तर था। "और कौन-सा पक्षी है जो रात को भी गाता हो और दिन को भी, अच्छे-बुरे सभी मौसमों में, सर्दी हो या गरमी। उल्लू के अतिरिक्त कोई नहीं। बुलबुल केवल वसन्त में अलापती है। भीड़ में आकर एक बुलबुल की तरह तान अलापने लगूँ तो तुम्हारा पिता जान जायगा कि यह कोई आदमी है। क्या तुम चाहती हो कि उस दैत्य को इसका पता लग जाय?"

"निश्चय से नहीं; किन्तु यह भी सही है कि उल्लू की आवाज दुर्भाग्य की सूचक है।"

"यह मेरा कसूर नहीं है। भगवान् ने कोई एक दूसरा ऐसा पक्षी

क्यों नहीं बनाया जो वर्ष में कभी भी और दिन-रात में भी कभी कभी गा सकता और मृत्यु का शकुन न होता? लेकिन आज रात हमें इस प्रकार झगड़ते रहने की आवश्यकता नहीं है। आज के बाद फिर इस प्रकार से रहस्य-मिलन नहीं। मैं कल प्रातःकाल अमरीका के लिये प्रस्थान कर जाऊँगा। जब मैं लौट कर आऊँगा तब तुम मेरी पत्नी होगी। तब मुझे एक झाड़ी के पीछे छिप कर उल्लू की तरह चिल्लाना नहीं पड़ेगा।"

उसने उसे जोर से धर लिया। उसने भी अपने हाथ उसके गले में डाल दिये और उससे चिपट गई। वे उसी अखरोट के पेड़ के नीचे थे, जिसके नीचे वे कल रात थे और जहाँ वे पिछले चार महीने से हर रात मिलते रहे थ। जॉन को, सुसाना के लचीले बदन का सारा भार, अपने हाथों पर आया जान पड़ा। उसे गिरने से बचाने के लिये जॉन को उसे अपने हाथों में लेना पड़ा। उसने उसे धीरे से घास पर लिटा दिया और स्वयं पास जा लेटा। उनके बदन लताओं की तरह एक दूसरे के साथ गुंथ गये। दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला। अँधेरे में दोनों के हाथ एक दूसरे को टटोलने लगे। उनकी आँखें बन्द हो गईं। उनके मुँह मिल गये। जरगु के बाग के निचले हिस्से में कहीं कोई तीलिये चिट्-चिट् कर रहे थे। तब वे भी चुप हो गये। अभी भी वह उसके हाथो में कैद लेटी थी। चन्द ही कदम पर उसका नीला वस्त्र घास पर पड़ा था। उसने इसे उतार कर वहाँ रख दिया था ताकि उसकी माँ को कपड़े में पड़ी सिकुड़न और उस पर लगे हरे धब्बे न दिखाई दें। चन्द्रमा को ढकनेवाले काले बादल अब हट गये थे। अन्धेरे में उसके कन्धे जगमगा उठे थे। जॉन ने अपनी कमीज़ उतार कर सुसाना को उस पर लिटा दिया था। उसकी श्वेत काया के मुकाबले में जॉन का बदन पेड़ की छाया की तरह काला था।

"जानी, जाओ मत।"

"तुम ऐसा क्यों कहती हो?" उसने भौं चढ़ाते हुए कहा। "तुम

जानती हो, यदि मैं यहीं रहूँ तो हम जमीन नहीं खरीद सकते। यदि हमारे पास जमीन न हो, तो हमारा विवाह नहीं हो सकता। यदि हमारे पास न जमीन हो, न घर हो तो हम कहाँ रहेंगे? मैं तीन साल में रुपया लेकर लौट आऊँगा और तब हम शादी कर लेंगे। अथवा ऐसा तो नहीं है कि अब तुम मुझसे शादी ही न करना चाहती हो?"

"निस्सन्देह मैं चाहती हूँ, किन्तु मैं यह भी चाहती हूँ कि तुम मत जाओ।"

"तो फिर तुम बताओ कि मैं जमीन किस चीज़ से खरीदूंगा," जॉन हँस पड़ा। "तुम जानती हो कि निकोले पोरफेरी की जमीन पर मैंने उसे कुछ रकम दे दी है। शेष मैं उसे लौट कर दे दूंगा।"

जॉन ने उसे बताया कि निकोले के खेत के बारे में उससे उसकी बातचीत हो चुकी है, और बाद में वह उसे देख भी आया है, और यह कि वह उस जमीन में किस प्रकार घर और अस्तबल बनायेगा।

जो कुछ वह कह रहा था उसे अनसुना करके सुसाना बोल उठी, "जानी, यदि तुम चले जाओगे, तो वापिस लौटने पर मुझे जीवित न पाओगे।"

जॉन को अब उस पर कुछ कुछ क्रोध आ चला था। बोला—"एकबारगी ही तुम्हें हो क्या गया है?"

"कुछ नहीं। केवल आन्तरिक अनुभूति है। तुम्हें इसमें विश्वास करने की आवश्यकता नहीं। लेकिन जब तुम वापिस लौटोगे, तब तुम मुझे जीवित न पाओगे।"

"ऐसा कुछ नहीं। तुम अभी की तरह अपने माता-पिता के साथ रहोगी। मुझे तुम्हारी चिन्ता नहीं है। आख़िर तुम अकेली नहीं रहोगी।"

वह सुबक सुबक कर रोने लगी।

"यह क्या है?" उसने पूछा और उसे चूम लिया। आँसुओं से उसके ओंठ ठंडे और नमकीन हो गये थे। "तुम्हें हो क्या गया है?"

"तुम यही कहोगे कि मेरी अक्ल मारी गई है। मैं यही अच्छा समझती हूँ कि तुम्हें न बताऊँ।"

"अच्छा, मैं यह नहीं कहूँगा कि तुम्हारी अक्ल मारी गई है।"

"मैं सोचती हूं कि मेरा पिता मुझे मार डालेगा।"

"तुम्हारी खोपड़ी में यह ख्याल कहां से घुस आया?" उसने थोड़ी तलख़ी से कहा। "वह तुम्हें क्यों मार डालेगा?"

"मैं जानती थी कि तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे, किन्तु मुझ पर मृत्यु-भय सवार हो गया है। मुझे यकीन है कि मैं सही हूँ। पिता को, पता नहीं किस तरह, कुछ बात का पता चल गया है। यही कारण है कि वह मुझे मार डालेगा।

"उसे क्या पता चल गया है?"

"हमारे प्रेम के बारे में।"

जॉन उससे दूर हट गया। सुसाना की नंगी देह घास में संग-मरमर की तरह चमकने लगी।

"क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें कुछ कहा है?"

"नहीं।"

"क्या उसने तुम्हें डांटा-डपटा है?"

"नहीं।"

"तब तुम कैसे जानती हो कि उसे पता लग गया है?"

"कुछ बात है, जिससे मैं समझती हूँ कि उसे पता लग गया है।" इस समय उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। "लेकिन यह मुझे केवल ऐसा लगता है। जब आज मैं भोजन के समय रकाबियाँ लाई, तो पिता ने मुझे आंखों में घृणा भर कर देखा। 'दीवार की ओर मुंह करके खड़ी हो,' उसने गर्ज कर कहा। यद्यपि मेरी आंखें दूसरी ओर थीं तो भी मुझे स्पष्ट लगता था कि उसकी आँखें मेरे नितम्बों पर हैं। तब उसकी आज्ञा हुई; खिड़की की ओर मुंह करके खड़ी हो। उसने फिर मुझे घूर कर देखा, इस बार मेरे पार्श्वों को। उसने मेरे पेट और

नितम्बों की रेखाओं को उसी प्रकार देखा जैसे वह घोड़ियों को देखता है। तब वह एक बार ही चिल्ला उठा, 'निकल यहाँ से मैली गन्दी कहीं की।' उसने फिर कुछ नहीं खाया। मैं बाहर चली गई और तभी मुझे पता चला कि वह सब कुछ जान गया है। जब मैं छोटी थी, पिता प्रायः मुझे झिड़कता था। एकाध बार उसने मुझे पीटते-पीटते खून भी निकाल दिया है, लेकिन उसने मुझे कभी 'मैली-गन्दी' नहीं कहा। आज उसने मुझे भोजन के समय कहा, "निकल यहाँ से मैली-गन्दी कहीं की।"

"उसे कैसे पता लग सकता है?" जॉन ने पूछा। उसने कभी हम दोनों को इकट्ठा नहीं देखा है।"

"उसने कभी देखा नहीं है, लेकिन वह सब कुछ जानता है।"

"लेकिन यह कैसे कह सकता है?"

"केवल मेरी ओर देख कर।"

जॉन हँसा और उसने उसका माथा चूम लिया।

"यदि उसने तुम्हें दोनों आँखों की दूरबीन से भी देखा होता तो वह कुछ न बता सकता। क्या तुम समझती हो कि इससे यह पता लग सकता है कि कोई औरत किस समय प्रेम करती रही है? यह तुम्हारी कल्पना मात्र है।"

"मैं जानती हूँ कि सामान्यतया कुछ नहीं पता चलता, किन्तु मेरे पिता की बात दूसरी है। वह देखने मात्र से घोड़ियों के बारे में कह सकता है। वह बता सकता है कि अब घोड़ी के पेट में बच्चा है। उसके दोस्तों को इसका पता नहीं चलता।"

"क्या तुम समझती हो कि तुम्हें गर्भ रह गया है?"

"नहीं। मैं ऐसा नहीं समझती।"

"तो चिन्ता करने की कोई बात नहीं। दो या तीन वर्ष में मैं रुपया लेकर वापिस आ जाऊँगा और हम फादर कोरग के गिर्जे में जाकर विवाह कर लेंगे। हम एक सुन्दर घर बनायेंगे, और सुख से रहेंगे। सुसाना, क्या हम नहीं रहेंगे?"

वह पूरी तरह से जॉन से चिपटी हुई डर के मारे काँप रही थी।

"यदि तुम यहाँ रहते, मुझे डर न लगता। लेकिन तुम्हारे चले जाने पर मैं डर के मारे मर जाऊंगी। यदि पिता ने मुझे गोली न भी मारी, तो भी तुम मुझे जीवित न पाओगे। तुम्हारी गैर-हाजिरी में मैं डर के मारे मर जाऊंगी। मैं हर रात अपने दरवाजे में ताला डालकर सोती हूँ, किन्तु जब भी मुझे बाहर पिता के पैरों की आहट सुनाई देती है तो मुझे इतना डर लगता है कि मैं तकियों में सिर दफना लेती हूँ।"

जॉन ने उसे धीरे से थपकी दी और अपने पास खींच लिया। वे चुपचाप थे। उसे प्रसन्नता थी कि अब वह जॉन के पास थी, और जॉन भी प्रसन्न था, क्योंकि अब सुसाना ने काँपना और चिल्लाना बन्द कर दिया था। जब मुर्गों ने बाँग देनी शुरू की, वे उठ खड़े हुए। सुसाना ने अपना कपड़ा पहन लिया, जो ओस से गीला और गन्दा हो गया था; और जॉन ने अपनी कमीज पहन ली। वे हाथ में हाथ मिलाये झाड़ी तक गये, जहाँ पहुँच वह झाड़ी में से निकल आँगन में गुम हो गई। अचानक उसके मुँह से एक चीख की आवाज आई। जॉन, क्या हुआ देखने के लिये आगे झुका, लेकिन सुसाना अब आंगन में न थी। वह जोर से उसी से चिपटी हुई थी। उसने उसे लौटते देखा तक नहीं था। वह वहीं थी। उसका बदन जल रहा था और एक पत्ते की तरह काँप रहा था। जॉन ने झाड़ी के झरोखे में से देखा—

सुसाना की खुली खिड़की में से प्रकाश की किरण आ रही थी। अपनी रात की कमीज पहने और हाथ में लालटैन लिये जरगु इधर-उधर टहल रहा था मानो कोई चीज खोज रहा हो। जॉन ने सुसाना का सिर अपनी छाती से सटा लिया और उसके बालों को थपथपाया ताकि वह किसी तरह यह न देख सके कि उसका बाप क्या कर रहा है। लेकिन सुसाना ने देख लिया था और यही कारण था कि वह उससे चिपकी हुई थी। वह इतनी डर गई थी कि चिल्ला भी न सकती थी। उन्हें जरगु कसम खाता हुआ सुनाई दे रहा था। उसके पास एक सैकिण्ड के लिये

योलंदा की पतली-दुबली छवि दिखाई दी, और एक सैकिण्ड बाद वह अदृश्य हो गई। जरगु ने खिड़की की ओर अपनी पीठ घुमा ली, और वह उसकी विशाल काया के पीछे छिप गई। तब उन्हें योलन्दा की चीखें सुनाई दीं—लम्बी-लम्बी, बींध देनेवाली, ऐसी जो उनकी हड्डियों की चर्बी तक पहुंच जायँ। रोशनी बुझ गई। खुली खिड़की में अन्धकार के सिवा कुछ न था। योलन्दा की निराशा भरी चीखें रात को और भी अधिक बींधती हुई सुनाई दे रही थीं। तब वे कम होने लगीं, अधिकाधिक मद्धम और अन्त में एकदम बन्द हो गईं। वह जमीन पर गिर पड़ी थी। अँधेरे कमरे में जरगु उसे पैरों तले रौंद रहा था।

"माँ," सुसाना चिल्ला उठी, "वह माँ को मार रहा है।" उसने अपने आप को छुड़ा कर आँगन में भागने की कोशिश की, लेकिन जॉन ने उसे जोर से पकड़े रखा। वह उसे शान्त रखने का प्रयत्न कर रहा था। अपने आक्रमणकारी से योलन्दा को बचाने के लिये जॉन ने कितनी बार भाग-दौड़ना चाहा, क्योंकि अब चीखें बन्द हो गई थीं और जॉन जानता था कि थोड़ी देर में सब बेकार हो जायगा। उसके सारे शरीर की पेशी-पेशी तन गई, किन्तु तब भी वह नहीं हिला। वह निहत्था था, और उस दैत्य के पास एक बन्दूक थी और था भी वह साँड़ की तरह मजबूत। उसकी सहज-बुद्धि ने जॉन को उस युद्ध में पड़ने से रोका, जिसमें उसकी पराजय निश्चित थी।

जॉन ने सुसाना को अपने हाथों में जकड़े रखा ताकि वह कहीं छूट कर भाग न जाय। एक अन्धे की तरह उसने खेत के उस पार भागना आरम्भ किया। बन्दूक हाथ में लिये, सुसाना को ढूंढ़ने वाले उस दैत्य का भूत उसका पीछा कर रहा था। वह सुसाना को छिपा देना चाहता था, वह उसे दूर ले जाना चाहता था, दूर-दूर उस लाल खपरैलों वाले घर से बहुत दूर। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके पीछे-पीछे उस दैत्य के कदमों की गूंज चली आ रही है जो उस स्त्री को मार डालने के लिये आतुर है जो इस समय उसके हाथों में है।

८

रास्ता छोड़कर जॉन खेतों को पार करता हुआ चला। अनेक बार वह खेतों की मेंड़ों से टकराता हुआ गिरते-गिरते बचा। उसे थकावट महसूस होने लगी। वह काफ़ी देर तक चलता रहा होगा, क्योंकि थकावट से उसकी बाँहें जड़ हो गयी थीं। पसीना माथे से टुचक कर उसकी आँखों में आ रहा, जिससे उसकी दृष्टि मन्द पड़ गयी। मकई के एक खेत के बीचों बीच वह झुका और उसने अपना बोझा उतार कर रख दिया। वह उस लड़की को अब एक कदम भी और नहीं ले जा सकता था। झुककर उसने सुसाना को गीली धरती पर लिटा दिया, उसके नंगे घुटनों पर नीला वस्त्र लपेट दिया और उसके दोनों बाजुओं को उसके दोनों ओर फैला दिया। पास के डंठलों से उसने मकई के कुछ बड़े-बड़े पत्ते तोड़े और उसके सिर के लिये एक तकिया बना दिया। तब कुछ और डंठलों को नोच कर उसने पत्तों का एक नरम बिस्तर लगाया और उस पर सुसाना को लिटा दिया। वह एक भी शब्द नहीं बोली थी। जॉन ने धीरे से उसके कपोल, उसके माथे और उसके बालों को थपथपाया और उठ खड़ा हुआ। दर्द के मारे उसका सारा शरीर फटा जा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानों उसकी कंधों और उसकी बाजुओं तथा टांगों की पोशियों में सुइयाँ चुभोयी जा रही हैं।

"मैं काफी दूर दौड़ आया होऊंगा," उसने अपने मन में कहा। उसने आकाश की ओर देखा जिस पर अब एक नीली धारी प्रकट हो चली थी। घूमकर देखा तो उसे ओक का वह जंगल दिखाई दिया जो उसके स्थान से थोड़ी ही दूर पर था। पहले तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा कि यह स्वप्न है। किन्तु शनैः-शनैः सत्य प्रकट होकर रहा। उसका अङ्ग-अङ्ग काँपने लग गया। यह स्वप्न नहीं था। सुसाना और वह दोनों वास्तव में निकोले पोरफिरी के खेत में थे। वे अन्धी दौड़ में अचानक यहाँ पहुँच गये थे। जिन मकई के पत्तों

को छीलकर उसने सुसाना के लिए जमीन पर बिछाया था वे उसी खेत के पत्ते थे जिसका उसने पहले दिन सौदा किया था।

पसीना और आंसू एक साथ जॉन के गालों पर बह चले और जमीन पर आ रहे, उस जमीन पर जो जॉन को लगा कि अब कभी उसकी नहीं होगी क्योंकि वह कभी अमरीका न जा सकेगा।

६

फंतना का सारा का सारा गाँव निकोले पोरफिरी के खेत से दिखायी देता था। जॉन की आँखें घर-घर घूमकर उस स्त्री पर अटकीं जो मकई के पत्तों पर उसके पैरों के पास पड़ी थी, वे दुबारा उन सफेद घरों की ओर मुड़ीं। वह उसे कहां ले जाय? इस प्रश्न का कोई उत्तर न था, लेकिन वह जानता था कि उसके लिये उसे शरण-स्थान खोजना ही होगा। उसने अपनी यात्रा छोड़ दी थी, और उसने खेत भी इसीलिये छोड़ दिया था, क्योंकि जिस स्त्री को वह प्यार करता था उसे जॉन की जरूरत थी। वह उसे छोड़कर नहीं जा सकता था, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था, उसे कहीं सुरक्षित स्थान पर ले चलना था। गाँव भर के घरों में उसके लिये केवल दो का ही दरवाजा खुला था। उसके अपने घर का और फादर कोरग के घर का। जॉन जानता था कि दूसरे किसान सुसाना को अपने घर में घुसने न देंगे। उन्हें जरगु जारडन से डर लगता था, उनमें से हर किसी को। उसके अपने माता-पिता के पास केवल एक ही कमरा था, वह उन्हें सुसाना को रखने के लिये न कह सकता था। एक ऐसी स्त्री के साथ जिससे अभी उसका विवाह नहीं हुआ था। वह फ़ादर कोरग के यहाँ भी नहीं जा सकता था। वह नहीं चाहता था कि फ़ादर कोरग किसी मुसीबत में पड़ जाय। यदि पादरी सुसाना को घर में रख ले तो जरगु हाथ में बन्दूक लिये आयेगा और उससे कैफियत तलब

करेगा। जॉन नहीं चाहता था कि ऐसा कुछ हो। वह सुसाना को वहाँ खुले में पड़ा रहने भी नहीं दे सकता था। क्षण भर के विचार के बाद जॉन ने सुसाना को फिर एक बार उठाया और गाँव की ओर चल दिया। वह इतनी पीली पड़ गयी थी कि उसे लगा कि सुसाना भय से बीमार हो गयी है। जब-तब उसने उसके हृदय की धड़कन को सुना। वह मद्धम थी और धीमी थी। जॉन जितना तेज चल सकता था, उतनी तेजी से गाँव की ओर बढ़ा।

१०

जॉन जब घर पहुँचा तब तक सूर्य उदय हो चुका था। उसने सुसाना को दीवार के सहारे बरामदे में रख दिया। जब उसने पूर्व की ओर देखा तो उसे ध्यान आया कि ठीक इसी समय गाँव के सुदूर सिरे पर घिजा आयोन प्रतीक्षा कर रहा होगा। उसने अपना साहस बनाये रखने के लिये अपने दाँतों को जोर से दबाया और उगते हुए सूर्य की ओर पीठ करके घर में दाखिल हुआ। वह चाहता था कि अपने माता-पिता से सुसाना का स्वागत करने के लिये कहे। वे सो रहे थे। जॉन की माँ अरिस्तित्जा एक चिड़चिड़े स्वभाव की औरत थी। जॉन को पहले अपने पिता से ही बात करना अच्छा लगता। किन्तु ज्योंही अपना कदम देहली में रक्खा, अरिस्तित्जा ने तकिये पर से अपना सिर उठाया।

"क्या तुम अपना थैला लेने आये हो?" उसने पूछा। "यह बाजे के पास रक्खा है।" जॉन ने कुछ उत्तर न दिया।

"तुम वहाँ एक भेड़ की तरह खड़े क्या कर रहे हो?" वह बोली। "अपनी माँ को चूमो, अपने पिता से बिदा लो, और जल्दी करो। वहां रुपया व्यर्थ न उड़ाते रहना, उसे घर लाना।"

"मैं अमरीका नहीं जा रहा हूँ" जॉन बोला।

"नहीं जा रहे हो ?" बूढ़ी औरत बिस्तर में से कूद पड़ी।

"नहीं।"

"क्या घिजा भी नहीं जा रहा है ?"

"वह जा रहा है।"

अरिस्तित्ज़ा समझ गयी कि कोई असाधारण घटना घटी होगी। उसने अपना कपड़ा खींच लिया।

"तुम क्यों नहीं जा रहे हो ? क्या किसी ने मार्ग-व्यय चुरा लिया है ?"

"नहीं।"

"क्या घिजा से तुम झगड़ पड़े हो ?"

"नहीं। मेरा झगड़ा नहीं हुआ।"

"तो मामला क्या है ?" अरिस्तित्ज़ा कमरे के मध्य में पहुँच गई थी और अपने लड़के पर बरसने जा रही थी।

"बात कुछ नहीं है। मैं विवाह करना चाहता हूँ। इसी से मैं यात्रा नहीं कर रहा हूँ।"

जॉन का स्वर काँप रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहां से आरम्भ करे और उन्हें कैसे समझाये। अरिस्तित्ज़ा ने उसके कन्धों में अपने नाखून गड़ा दिये और उसे झकझोरा।

"मैं पिता से बात करूँगा। मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं करना चाहता।" जॉन कह उठा।

"ओह ! तुम हो।" वह उबल पड़ी। "मैंने तुम्हें यह संसार दिखाया है, मैंने, तुम्हारे बाप ने नहीं।"

"शान्त रहो," बूढ़े ने बिस्तरे में से सिर निकाल कर कहा। उसने उसे चुप कराने की कोशिश की। किन्तु वह एक न सुनती थी। उसने कर्कश स्वर में चिल्लाना जारी रखा—

"यह मेरा गर्भ है, जिसे फाड़कर तुम बाहर आये हो"—अपने पेट को पीटते हुए—'यह मेरा दूध है जो तूने चूसा है; अकृतज्ञ जड़-भरत

कहीं का। और अब तुम्हारा यह साहस हो गया कि तुम मुझे कह सको कि "मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता।"

"अच्छा, मैं तुमसे भी बात करूँगा।" जॉन बोला। उसकी माँ मुसुकियाँ भर रही थी। जॉन ने उसे शान्त करने की कोशिश की। वह बोला "यदि तुम चाहो तो मैं तुम से अकेले बात करूँगा, किन्तु कृपया उत्तेजित न हों।"

बुढ़िया चारपाई के किनारे पर बैठ गयी और उसने अपने हाथों से मुँह ढक लिया। उसके मातृत्व के स्वाभिमान को चोट पहुँच गयी थी, किन्तु वह दुःख भी उसे चुप न रख सका। पृथ्वी पर कोई चीज अरिस्तित्जा की ज़बान को काबू में न रख सकती थी।

"तुम किससे शादी करना चाहते हो?" उसका प्रश्न था।

"मैं तुम्हें एक मिनट में बता दूँगा, किन्तु कृपया केवल उद्विग्न न हों।"

"मैं जानना चाहती हूँ कि तुम किससे शादी करने जा रहे हो। मैं तुम्हारी माँ हूँ। मेरा जानने का अधिकार है।"

"आयोन, इसे बता दो, तब यह चुप हो जायगी," बूढ़े ने कहा।

वह यह समझता था कि अरिस्तित्जा फिर उत्तेजित हो जायगी। जॉन अच्छी तरह से जानता था कि लड़की का नाम लेने से उसकी माँ किसी भी तरह शान्त नहीं होगी, बल्कि उसके बदन में और भी आग लग जायगी।

"मैं जरगु जॉरडन की लड़की से शादी करने जा रहा हूँ।"

अरिस्तित्ज़ा एक शेरनी की तरह उसकी ओर झपटी, उसके टुकड़े-टुकड़े कर देने के लिये नहीं, किन्तु प्रसन्नता के मारे उसके गले में अपनी बाँहें डाल देने के लिये।

"अब मैं समझी कि तुम क्यों नहीं जा रहे हो?" अरिस्तित्ज़ा ने उसकी आँखें, उसका माथा और उसके गाल बड़ी कोमलता से चूमे।

"तुम इतने मूर्ख नहीं हो कि तुम अमरीका जाओ और वहाँ गाड़ी

में जुतनेवाले घोड़े की तरह काम करो और कुछ साल के बाद एकदम झकझोरे हुए बीमार बन कर केवल कुछ हजार 'ली' के साथ लौटो। तुम वही करने जा रहे हो, जो मैंने तुम्हें सदैव करने के लिये कहा है। तुम एक धनी औरत से शादी करने जा रहे हो।" अरिस्तित्ज़ा की आँखें संतोष से चमक उठीं। "अब मैं भी अमीर हो जाऊँगी। मेरे पास मख़मल के कपड़े होंगे और मेरी अपनी गाड़ी होगी। मैं जरगु जॉरडन के घर में चली जाऊँगी। मुझे इसका पारिवारिक अधिकार भी है— क्योंकि मैंने, अरिस्तित्ज़ा ने अपने आयोन को इतना सुन्दर और चतुर बनाया कि वह गाँव की सुन्दरतम कन्या को प्राप्त करने में सफल हो गया। वह एक ऐसी लड़की का पति होगा, जिसके पास घर है, पत्थर का तहख़ाना है, ज़मीन है, गाड़ी है और घोड़े हैं।"

"औरत, चुप रह," बूढ़ा बोला। किन्तु उसका स्वर बहुत अस्थिर था और वह उसके मानोभावों को भी प्रकट कर रहा था। इतने अधिक धन की आशा ने उसे आत्म-विभोर कर दिया। बिना हिले-डुले ही उसने एक सिगरेट ली।

"मैं जाकर जरगु जॉरडन के घर में रहूँगी," अरिस्तित्ज़ा बोली। "मैं तुम्हें यहीं छोड़ जाऊँगी," उसने बूढ़े को सम्बोधन करके कहा। "मेरा स्थान अपने बच्चे के पास है। उसकी नवागता पत्नी को यदि किसी नसीहत की ज़रूरत होगी तो, मैं नहीं दूंगी तो और कौन देगा?"

"माँ, मैंने अभी अपनी बात समाप्त नहीं की," जॉन बोला।

"मेरे बच्चे, जो कहना हो कहो, माँ सुन रही है।"

"वचन दो कि तुम चुपचाप मेरी पूरी बात सुनोगी।"

"जो कहना हो, कहो," अरिस्तित्ज़ा ने उसके गाल पर एक चपत लगाई।

"माँ, जरगु जॉरडन की रज़ामन्दी के बिना ही सुसाना से शादी कर रहा हूँ।"

"मुख्य बात यह है कि तुम उससे शादी कर रहे हो। मैं जरगु

जॉरडन की लड़की की सास बनूंगी, एक धनी आदमी की लड़की की। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि वह राजी होता है या नहीं।"

"तुम उसकी सास तो बन जाओगी, किन्तु तुम्हें धन न मिलेगा।"

"तो उसका धन और किसे मिलेगा? जरगु की केवल एक ही तो लड़की है। जब उसके तहखानों में अशरफियों की बोरियाँ भरी पड़ी हैं, तो वह बिना दहेज के तो उसकी शादी नहीं ही करेगा? मेरे बच्चे, दहेज की बात तू मुझ पर छोड़ दे। मैं देख लूंगी। इस विषय में कैसे क्या करना चाहिये, यह तू कुछ नहीं जानता।"

"माँ, मैं सुसाना से विवाह करने जा रहा हूँ," उसके रुपये से नहीं।

"क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुम रुपये की अपेक्षा लड़की को ही लेना अधिक पसन्द करोगे?"

"हाँ, माँ।"

"क्या उल्लूपन है! लेकिन मैं तुम्हें समझाती हूँ। यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो। मुझे कोई मूर्ख नहीं बना सकता।" अरिस्तित्ज़ा ने अपनी कल्पना में जरगु के साथ दहेज के विषय में ले-दे शुरू कर दी। उसका निश्चय था कि वह उससे पैसा-पैसा लेकर मानेगी।

इस बीच में जॉन गई रात की घटनायें सुनाता रहा। अचानक अरिस्तित्ज़ा चौंक पड़ी और बोली—

"क्या कहा! वह कभी अपने पिता के पास वापस जाना नहीं चाहती?"

"हाँ, वह कभी वापस न जायगी। यदि वह वापस जायगी, तो जरगु उसे मार डालेगा।"

"वह 'इसे' भी मार डालेगा," बूढ़े ने समर्थन किया। "उसकी कोई बात मज़ाक नहीं होती। लड़की ठीक कहती है, उसका बाप पूरा राक्षस है। जब उसे गुस्सा आता है तो वह बन्दूक तान कर गोली मार देता है। जब उसे गुस्सा आया तो उसने अपने कुछ सब से अच्छे घोड़ों के साथ भी यही व्यवहार किया। यूँ, भगवान् जानता है, वह उन्हें-

अपनी आंख की पुतलियों से भी अधिक प्यार करता है। यदि वह लौट कर जायगी तो वह लड़की को भी गोली मार देगा, विशेष रूप से जब कि वह रात के समय घर से भाग आई है।"

"पिताजी, मुझे खुशी है कि आप तो समझ रहे हैं।"

"यदि ऐसी नौबत आ जाय, तो इसमें समझने के लिये कोई कठिन बात नहीं है। मैं जरगु को अच्छी तरह जानता हूँ।"

"तो भी लड़की एक-दो दिन में घर भेजी जा सकती है," अरिस्तित्ज़ा बोली। "मैं उसके साथ जाऊंगी।"

"सुसाना को घर नहीं जाना है," जॉन ने जोर से कहा। "मैं उसे जाने नहीं दूँगा।"

"यदि उसके पास रुपया ही नहीं है, तो तुम क्या करने जा रहे हो?" अरिस्तित्ज़ा ने पूछा। "उसके साथ भूखे मरने जा रहे हो? एक औरत का पाना काफ़ी आसान है। जब उसके साथ एक पाई भी नहीं आती है, तो उसे अपनाने की मूर्खता न करो।"

"मैं बिना दहेज के ही सुसाना से शादी करने जा रहा हूँ।"

"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है कि तुम नेक अकिञ्चन बछिया के लिये अमरीका जाना छोड़ रहे हो, अपना सब कुछ छोड़ रहे हो?"

"तुम्हारी माँ ठीक कह रही है," बूढ़े ने कहा। "अमरीका जाओ। जब वहाँ से लौटोगे तो तुम जमीन खरीद लोगे, अपना मकान बना लोगे, और विवाह कर सकोगे। तुम जानते ही हो कि चारों ओर स्त्रियों की कमी नहीं है।"

"अभी बहुत देर नहीं हुई है। गाँव के सुदूर सिरे पर घिज़ा अभी भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा होगा। सूर्य अभी उगा ही है। यदि तुम जल्दी करो तो तुम उसे पकड़ लोगे।"

"पिताजी, क्या आपका दिल इतना पत्थर है कि आप मुझे इस लड़की को छोड़कर अमरीका जाने को कह सकें?"

"वह कहाँ है ?" अरिस्तित्ज़ा ने पूछा।

"दरवाज़े के बाहर," जॉन का उत्तर था।

उसके माता-पिता दोनों चौंक गये, और उनके चेहरे लटक गये। अरिस्तित्ज़ा उठी कि सुसाना को ज़रा देख तो ले। जॉन ने मां का रास्ता रोक दिया—"माँ, मैं तुमसे एक याचना करना चाहता हूँ। जब तक मैं कोई स्थान ठीक न कर लूं, तुम उसे एक-दो दिन यहीं ठहरने दो। अब वह तुम्हारी लड़की है।"

"तुम चाहते हो कि वह हमारे साथ रहे ?" अरिस्तित्ज़ा तमतमा गई। "क्या तुम चाहते हो कि जरगु आये और तुम्हारे पिता को तथा मुझे मार डाले ?"

"क्या तुम नहीं देखते हो कि हम लोगों के लिये भी पर्याप्त स्थान नहीं है ?" बूढ़ा बोला। "तुम कहां सोचते हो कि वह सोयेगी ? नहीं, आयोन यह नहीं हो सकता।"

"मैं समझती हूँ कि तुम यह भी चाहोगे कि हम उसे खाना भी दें" अरिस्तित्ज़ा ने प्रश्न किया। "और उसका पेट भरने के लिये स्वयं भूखे रहें।" जॉन ने अपनी आँखें नीची कर लीं। अपनी मां के विरोध के लिये तो वह तैयार था, किन्तु उसे यह आशा न थी कि उसका पिता भी उसी का पक्ष लेगा।

"तो सुसाना केवल आज शाम भर यहां रहेगी," जॉन ने कहा। "अभी मैं उसे कहीं नहीं ले जा सकता। आज रात हम लोग क़स्बे के लिये चल देंगे और मैं वहां कुछ काम ढूढ़ूंगा। उसकी तबियत अच्छी नहीं है। यदि उसे कुछ विश्राम मिल जायगा तभी वह उतनी दूर चल सकेगी। कल रात उसके चित्त को जो धक्का लगा उसने उसे बीमार कर दिया।"

"आज खाने को कुछ नहीं है। यदि तुम चाहते हो कि वह भूखी रहे तो तुम उसे यहाँ रख सकते हो।"

"मैं उसके लिये खाने को कुछ लाऊँगा। उसे विश्राम की ज़रूरत है। वह खड़ी भी नहीं रह सकती।"

"तुम्हारा पिता बीमार है। उसे बिस्तर में ही रहना होगा," अरिस्तित्ज़ा बोली। "और वह कहां सोयेगी? तुम्हारे पिता के साथ उसके बिस्तरे में?"

"यदि घर में जगह नहीं है, तो वह बाहर घास पर, जहां प्रायः मैं सोता हूँ, सो सकती है," जॉन ने उत्तर दिया।

"यदि उसे यह पसन्द हो, तो वह पड़ी रहे। किन्तु मैं उसे कुछ भी खाने को न दूँगी, क्योंकि देने को घर में कुछ है ही नहीं।"

जॉन जाने लगा। किन्तु वह देहली पर रुका और उसने उस बूढ़े को, जो दूसरी सिगरेट पीने की तैयारी कर रहा था, सम्बोधन किया—

"पिताजी, मैं चाहता हूँ कि जो दो-चार घण्टे वह यहां ठहरे, आप उस से दया का व्यवहार करें। वह इस समय बहुत ही दयनीय स्थिति में है।"

"निर्लज्ज मूर्ख कहीं के, तुम्हें अपने माता-पिता को उपदेश देने का दुस्साहस होता है?" अरिस्तित्ज़ा चिल्ला उठी। "अण्डे ने मुर्गी को कब अण्डा देना सिखाया है? कुछ कमाई करने की अपेक्षा तुमने इस दरिद्र को अपने गले बांध लिया है। हमें कहते हो कि हम इसे खाने को दें। और, उस पर हमें उपदेश भी देते हो!"

अरिस्तित्ज़ा झुकी और उसने उसे पीटने के लिये एक लकड़ी की ओर हाथ बढ़ाया। यदि उसने उसे पीट दिया होता तो वह पीछे न हटा होता। वह कठोर शब्द सुनने और पिटने का अभ्यस्त है। उसका बचपन लुक-छिप और गालियां खाने में ही गुजरा है।

"तुम उस पर कृपा करोगे, क्यों क्या नहीं?" वह उनकी ओर देख कर मुस्कराया। "मैं उसके लिये कुछ भोजन लाने जा रहा हूँ। मैं अधिक देर नहीं लगाऊँगा।" वह कमरे से बाहर चला गया। बाहर, सुसाना उसी तरह मूर्ति-वत् बैठी थी, जैसे जॉन उसे छोड़ गया था। जॉन ने उसके बाल थपथपाये।

"मैं गांव जा रहा हूँ, एक मिनट में लौट आऊँगा," जॉन बोला। "ज़रा सोने की कोशिश करो। जब आँख खुलेगी, कुछ खा लेना, और तब हम कस्बे की ओर चलेंगे।"

"क्या हम यहां नहीं ठहर रहे हैं?" वह पूछ बैठी। उसे और आगे चलना पड़ने से डर लग रहा था।

"नहीं, सो आओ।" उसने हाथ पकड़ कर उसे ऊपर उठाया और घर के पिछवाड़े की ओर ले गया। वहाँ उसने उसे सूखी-घास पर लिटा दिया। उसका मामूली-सा कपड़ा भी खींच कर उसने उसे घुटनों तक ढक दिया।

"अब सो जाओ, यदि सोओगी नहीं तो तुम चल नहीं सकोगी। जगह तेरह मील से कम नहीं है।"

सुसाना कृतज्ञतापूर्वक मुस्कराई। यह उसकी कितनी बड़ी मेहरबानी थी कि वह उसे सोने के लिये अकेली छोड़े जा रहा था। बुखार से उसकी देह जल रही थी और उसके कान इतनी जोर से भिन्ना रहे थे कि उसे एक शब्द भी सुनाई नहीं पड़ा।

"यदि माँ आकर तुमसे झगड़ने की कोशिश करे तो ऐसा करना मानो तुम उसे समझ ही नहीं रही हो। माँ का दिमाग ठिकाने नहीं है।"

जॉन उसे छोड़ कर चला। जब वह सड़क पर पहुँचा तो उसने मुड़कर उसकी ओर देखा और मुस्कराया। किन्तु तब तक उसने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं।

११

ज्यों ही उसका लड़का बाहर हुआ, अरिस्तित्ज़ा कमरे से बाहर निकली और घर के पिछवाड़े जा पहुँची। अपनी कमर पर दोनों हाथ

रखे हुए उसने घास में लेटी हुई सुसाना को घूर कर देखा। सुसाना ने आँख खोली तो उसे अरिस्तित्ज़ा दिखाई दी—गीध की चोंच की तरह तेज़ और ऊपर उठी हुई नाक, सूखे हुए सफेद गाल। डर के मारे उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

"मैं आयोन की मां हूँ," अरिस्तित्ज़ा बोली। सुसाना ने इस बात की स्वीकृति और उसके स्वागत की भावना व्यक्त करने के लिये अपना सिर ज़रा सा हिला दिया। अपने नीले वस्त्र को जितना भी वह नीचे की ओर खींच सकती थी, उसने खींचा, क्योंकि बुढ़िया उसकी टांगों और कमर को इस प्रकार घूर-घूर कर देख रही थी, मानो उसने उसे नंगा ही देख लिया हो।

"ओह! तो तुम विवाह करना चाहती हो," बुढ़िया ने अपना मुँह बिगाड़ते हुए कहा।

"हां," सुसाना ने उत्तर दिया।

"मुझे तुम्हारे इस कहने का विश्वास है। घोड़ी जैसा गोल तो तुम्हारा पेट है।"

सुसाना ने अपना मुँह घास में छिपा लिया। अरिस्तित्ज़ा उसके पास पहुँच गई और उसके कानों में चीख़ने लगी—

"मेरी बच्ची, तुम्हें अभी वह मूर्ख नहीं मिला है, जो तुम्हें अपनी पत्नी बनायेगा। तुझ अकिञ्चन को कोई नहीं चाहेगा। यदि तुम मेरे लड़के के साथ सोती रही हो, तो यह तुम्हारा काम है। लेकिन वह तुम से शादी नहीं करने जा रहा है।"

सुसाना अपनी कोहनियों के सहारे उठ कर बैठ गई। वह भाग जाना चाहती थी, किन्तु अरिस्तित्ज़ा ने उसे ढक लिया।

विषय बदलने की इच्छा से सुसाना ने डरते-डरते पूछा—"क्या जानी गया?"

"जानी कौन?" अरिस्तित्ज़ा ने आश्चर्य से पूछा। "जानी नाम का यहां कोई नहीं है।"

सुसाना ने निस्तेज आँखों से उसकी ओर देखा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे।

"कौन है यह जानी, जिसका तुम नाम ले रही हो। तुम पागल तो नहीं हो गई हो ? तुम अपने आपको इस समय कहां समझ रही हो ?"

लड़खड़ाते हुए अत्यन्त धीमे स्वर में वह बोली—"जानी, तुम्हारा लड़का।"

"मेरे लड़के का नाम आयोन है," वह बड़े ही तीखे स्वर में बोली। "मैंने, उसकी मां ने, उसका यही नाम-करण किया है। मेरा दिया हुआ नाम किसी को बदलने का अधिकार नहीं। समझी ?"

सुसाना ने देखा कि अरिस्तित्ज़ा का मुक्का उसे पीटने के लिये उसके सिर पर है।

"मैं समझ गई," उसने कहा, और जॉन की इस बात को याद करके कि उसे किसी तरह माँ को शान्त रखना चाहिये, वह बोली—"आयोन अथवा जानी, यह एक ही जैसी बात है। कम से कम मैंने ऐसा ही समझा था।"

इस बहाने ने बुढ़िया को और भी अधिक उत्तेजित कर दिया।

"क्या तू मुझे मेरे अपने लड़के का नाम पढ़ाना चाहती है ? मैं तेरा सर चूर-चूर कर दूंगी, गन्दी वेश्या कहीं की।"

"मेरा उद्देश्य तुम्हें क्रोधित करना नहीं था।"

बुढ़िया ने उसके कन्धों में अपने पंजे गड़ा दिये और उसे ज़ोर-ज़ोर से झकझोरना शुरू किया। सुसाना चिल्ला उठी। घर के पिछवाड़े से बूढ़ा, अपना रात का कुर्ता पहने ही, चला आया। सुसाना की चीख़ उसे बिस्तर में से उठा लायी थी। उसकी सिगरेट अभी भी उसके होठों से लटक रही थी। अरिस्तित्ज़ा ने उसे छोड़ दिया और गुस्से से लाल-पीली हो अपने पति की ओर मुड़ी।

"क्या तुमने कभी ऐसी गुस्ताखी की बात सुनी है ? यह रांड मुझे यह बताने की कोशिश कर रही है कि मैं अपने लड़के का नाम भी नहीं

जानती। मैं इसे और नहीं सहन कर सकती।" अरिस्तित्ज़ा ने एक बड़ा पत्थर उठाया। "मैं इसे एक साँप की तरह कुचल दूँगी, मैं कुचल दूँगी।"

बूढ़े ने अरिस्तित्ज़ा की कलाई पकड़ ली।

उसे दरवाज़े की ओर धकेलते हुए बूढ़े ने कहा—"औरत, चुप रह।" तब वह सुसाना के पास पहुंचा। उसका हाथ अपने हाथ में ले उसने, करुणा भरी दृष्टि से, उसकी ओर देखा।

"और अधिक मत रोओ। इससे तुम्हें कुछ लाभ न होगा," वह बोला।

"जानी कहाँ है," सुसाना ने पूछा।

"घबराओ मत। वह अभी आ जायेगा।"

सुसाना को लगा कि वह अरक्षित नहीं है। बूढ़े आदमी का हाथ कड़ा था और बड़ा ही खुरदरा था।

"बच्ची, अब मैं तुम्हें कुछ सलाह देना चाहता हूँ। अच्छा होगा, यदि तुम इसे ध्यान से सुनो। अपने माता-पिता के पास वापिस घर चली जाओ।"

वह चिल्ला रही थी।

"तू यहाँ नहीं ठहर सकती," बूढ़ा कहता चला गया। यदि यहाँ ठहरेगी तो अरिस्तित्ज़ा या तो तेरा गला घोट देगी या सिर फोड़ देगी। यह बात उतनी ही निश्चित है, जितना निश्चित मेरा यहाँ खड़ा होना है। यह कितनी भद्दी बात होगी, यदि यहाँ रक्त बहेगा! तब, यदि आयोन को पता लगा, तो वह अपनी मां को मार डालेगा। यह कितना बड़ा पाप होगा! ऐसा नहीं होना चाहिये। क्या तुम समझती हो?"

"मैं समझती हूँ," सुसाना के ओंठ बड़ी कठिनाई से हिले।

"यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो तुरन्त उठ खड़ा होता। गाँव से आयोन के लौटने से पहले-पहले चल दो। तुम सीधी, मकई के खेत में से होकर, अपने माता-पिता के पास घर पहुँच जा सकती हो। जब आयोन लौटेगा,

मैं उसे कह दूँगा कि वह तुम्हारे बिना ही अपने रास्ते चली गई है। वह तुम्हें कभी न पा सकेगा। तुम दोनों एक दूसरे को भूल जाओगे। तुम जवान हो, और तुम्हारी आयु में भुला सकना आसान है। अब आओ, उठो और चल दो।"

सुसाना ने अपना सिर नीचे लटका लिया था। उसके कान इतने अधिक भिन्ना रहे थे कि उसे बूढ़े की बात सुनाई तक न दी थी।

"तो तुम नहीं हो जा रही हो?" उसने पूछा। उसे लगा कि सुसाना को उठाकर उसके घर छोड़ आये, लेकिन वह जानता था कि आयोन इसके लिये उसे कभी क्षमा नहीं करेगा। वह उठ खड़ा हुआ।

"यदि यहां किसी की हत्या होगी, तो यह सब तुम्हारा क़सूर होगा, क्योंकि तुम मेरी बात नहीं सुनती हो। मैंने अपना कर्तव्य कर दिया है, और तुम्हें सावधान कर दिया।"

बूढ़ा भीतर चला गया। सुसाना अकेली रह गई। जॉन गाँव से एक बरतन में दूध ले आया और उसे गर्म होने के लिये रख दिया।

"हमारे लिये दूध लाने की बात तुम्हें कभी नहीं सूझती थी," अरिस्तित्ज़ा बोली। किन्तु तुम आँगन में पड़ी हुई उस कम्बख़्त के लिये दूध लाओगे। अच्छा होता, यदि मैं तुम्हें अपना दूध पिलाने के बजाय पैदा होते ही तुम्हारा गला घोंट कर मार डालती।"

जॉन चूल्हे के पास घुटने टेके आग के शोलों का खेल देख रहा था। उसने ऐसा रूप बनाया मानो वह अपनी मां की बात सुन ही नहीं रहा हो। अरिस्तित्ज़ा उसके पास पहुँची।

"मेरे घर से इसी समय निकलो," वह बोली। "और अपनी उस गंदी राँड को भी अपने साथ ले जाओ, नहीं तो मैं उसे मार डालूगी। यदि तुम उसे तुरन्त मेरी आँखों से दूर नहीं हटा देते हो, तो मैं उसे 'इस तरह' गला घोंट कर मार दूंगी।"

"ज्यों ही यह दूध पी लेगी, हम यहाँ से चले जायेंगे," जॉन ने अपनी माँ के उन हाथों की ओर, जो सुसाना का "गला घोट देंगे,"

देखे बिना ही उत्तर दिया। "हम क़स्बे में जा रहे हैं। अब तुम उसे फिर कभी नहीं देखोगी।"

"अच्छा, श्रीमतीजी बिना दूध पिये नहीं जा सकतीं?" अरिस्तित्ज़ा बोली। "तुम्हारी माँ प्रातःकाल बिना दूध पिये रह सकती है, वह नहीं रह सकती।"

जॉन ने आग पर से दूध उतार लिया। यह उबला नहीं था, किन्तु उबाल आ गया था। बिना अपने माता-पिता की ओर देखे ही वह कमरे से बाहर चला गया।

पाँव की आहट सुन कर सुसाना चौंक पड़ी।

"यह मैं हूँ," जॉन बोला। "मैं तेरे लिये कुछ गर्म दूध लाया हूँ।" उसने सुसाना की ओर दूध का बरतन बढ़ा दिया।

"मुझे नहीं चाहिये," वह बड़बड़ाई।

"थोड़ा तो लेकर देखो।"

सुसाना ने जॉन के हाथ से दूध का बरतन ले लिया। वह अन्दर से अपना बण्डल लाने गया—वही बण्डल जो वह साथ अमरीका ले जाना चाहता था।

"क्या तुम उसके साथ जा रहे हो?" अरिस्तित्ज़ा ने पूछा।

"हाँ।"

"बहुत अच्छा।" अरिस्तित्ज़ा ने अपने दाँत पीसे।

जिस समय जॉन चारपाई के नीचे से अपना बण्डल खींच कर निकाल रहा था, वह आँगन में जा पहुँची। उसे आता देख सुसाना डर के मारे बर्फ़ बन गई। दूध का बरतन अभी भी उसके हाथ में था।

"जल्दी उठ, नहीं तो मैं तेरी हड्डी-हड्डी तोड़े डालती हूँ। मैं तुझे दिखा दूँगी, गंदी कुतिया कहीं की..."

अभी उसका वाक्य अधूरा ही था। उसने एक हाथ से सुसाना के बाल पकड़े और दूसरे हाथ से उसे पीटना आरम्भ किया। सुसाना

चीख़ पड़ी। एक क्षण के लिये, जैसे ही जॉन भाग कर बाहर आया, उसे लगा मानो उसे योलन्दा की चीख़ सुनाई दी हो।

"माँ, तुम क्या कर रही हो?" वह चिल्लाया। उसकी भयावह दृष्टि उस पर बिजली की तरह टूट पड़ी। अरिस्तित्ज़ा ने सुसाना की ओर बिना देखे ही उस पर एक ज़ोर का प्रहार किया और मकई के खेत में भाग गई।

सुसाना का चेहरा रक्त से लाल हो गया। उसकी आँखें और ओंठ सूज गये। उसकी दोनों कलाइयां टूटे हुए बरतन से कट गई थीं, जो कि अब टुकड़े-टुकड़े होकर उसकी गोद में पड़ा था। दूध के साथ मिली रक्त की बूंदों ने उसके नीले बस्त्रों पर बड़े-बड़े धब्बे लगा दिये थे। जॉन ने उसे अपने हाथों उठाया और चल पड़ा। वह अपना बण्डल लेने के लिये दरवाजे के सामने रुका, और तब आंगन से बाहर हो गया। उसकी पीठ पर उसका बण्डल था और हाथों में सुसाना। दोनों भार इतने भारी थे कि जॉन अपना सिर न उठा सकता था।

वह अपना सिर नीचे किये धीरे-धीरे चला जा रहा था।

१२

पौ फटने पर जरगु ने अपने घोड़ों को पानी पिलाया और जौ खिलाये। तब बारी-बारी से उसने सब की गरदन थपथपाई। उसके पास आठ घोड़े थे, लेकिन उनमें से चार इतने अधिक सुन्दर लगते थे कि वह उन्हें जोतता नहीं था। उन्हें केवल सवारी के लिये रखा था। वे श्रेष्ठ अरबी घोड़े थे, पतले-पतले खुरोंवाले। वे उसके मित्र थे। जरगु ने उन्हें सुसाना की बात कही। जो भी कोई चीज़ उसकी तबियत पर भार होती, जरगु अपने घोड़ों से कह देता था, क्योंकि जरगु को आदमियों

का विश्वास नहीं था। घोड़ों ने शीशे-सी चमकती साफ़ आँखों से जरगु की ओर देखा।

"और अब मेरी स्त्री ज़मीन पर रक्त में लथ-पथ पड़ी है। उसकी सभी हड्डियां चूर-चूर हो गई हैं," वह बोला। घोड़ों ने आँख तक नहीं झपकी। जरगु ने उनके मौन को अपनी निन्दा समझा। बोला :—

"अच्छा, यदि तुम यही चाहते हो तो मैं उसे अस्पताल ले जाऊँगा।"

आधे घंटे के बाद उसकी गाड़ी गांव से कस्बे की ओर चली। एक कपड़े में लिपटी हुई योलन्दा गद्दों पर पड़ी हुई आकाश की ओर निहार रही थी। अस्पताल, वे बहुत ही सबेरे पहुँच गये थे। अभी तक एक भी डाक्टर नहीं आया था। उन्हें आठ बजे तक बाहर गाड़ी में प्रतीक्षा करनी पड़ी। प्रतीक्षा करते समय उसने अपनी पत्नी से न तो बात ही की और न उसकी ओर देखा। वह अपने घोड़ों से ही बातचीत करता रहा। आठ बजे वह अपनी गाड़ी को हांक कर सीढ़ियों तक ले गया। वहां पहुँचकर उसने योलन्दा तथा गद्दियों के साथ सब कुछ उठाया और उसे पारसल की तरह ले जाकर डाक्टरी कमरे में रख दिया। पहले-पहल उन्हीं को लिया गया। जब नर्स उसकी ऊपर की चादर उतार रही थी, डाक्टर ने योलन्दा के सूजे हुए चेहरे का रक्त देखा। वह अपने रात के वस्त्र में ही पड़ी थी, जो रक्त के लच्छों के साथ उसके बदन से चिपटा था। जरगु कुछ नहीं बोला।

"इसे कौन पीटता रहा है?" डाक्टर ने पूछा।

"यह जानना तुम्हारा काम नहीं है। तुम्हारा काम है उसकी डाक्टरी करना। इसी लिये तुम डाक्टर हो और इसी लिये मैं इसे तुम्हारे पास लाया हूँ।" इसके आगे जरगु ने कुछ नहीं कहा। डाक्टर ने योलन्दा को देखा-भाला और तब उसे सीधा चीर-फाड़ के कमरे में ले जाने की आज्ञा दी जहां तुरन्त उसकी शल्य-चिकित्सा हो सके।

"मैं घर जा रहा हूँ। तुम अपना काम आरम्भ कर सकते हो," जरगु बोला। उसने अपनी टोपी सिर पर रखी और दरवाजे की ओर

बढ़ा। "जो कुछ देना है, वह मैं दे दूंगा। यदि तुम्हारे पास शल्य-कर्म करने से पहले ही बिल बनाने का समय हो तो मैं पहले भी दे सकता हूँ। चाहो तो मैं इस मद में यूं ही कुछ रकम छोड़ जाता हूँ।" उसने बटुवे के लिये अपनी जेब टटोली।

"तुम अभी नहीं जा सकते," डाक्टर ने कहा। "तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी।"

"किस लिये ?" जरगु ने पूछा। उसे किसी का हस्तक्षेप अच्छा नहीं लगता था। वह यथासम्भव शीघ्र अस्पताल से चल देना चाहता था। अस्पताल की गन्ध से उसका जी मतला रहा थ,ा साथ ही उसे अफ़सोस था कि उसी ने पत्नी को घूंसों से पीटा था। "अब जब कि मैंने उसे ठोकरें मार-मार कर अधमरा कर दिया है, डाक्टर ठीक-ठाक करेंगे," उसने सोचा। किन्तु अफ़सोस का अनुभव होने के बावजूद वह उसे प्रकट नहीं होने देना चाहता था। उसकी यही इच्छा थी कि किसी तरह वह अस्पताल से बाहर निकले और अपने फेंफड़ों को ताज़ी हवा से भरे।

पन्द्रह मिनट बाद पुलिस के सिपाही के साथ एक सरकारी वकील आया। उसने जरगु को दफ्तर में बुलवाया और उससे प्रश्न किये। उसने जरगु से उसका पूरा नाम, आयु और पता पूछा। उसने यह भी पूछा कि क्या तुम्हीं ने उस औरत को मारा है। जरगु ने चमकती आँखों से सभी प्रश्नों का दुखी मन से उत्तर दिया। तब सरकारी वकील ने उसे बताया कि आक्रमण करने और पीटने के इल्ज़ाम में वह हिरासत में है। जरगु का चेहरा जैसे का तैसा था, किन्तु जब पुलिस के सिपाही ने उसे ले चलने के लिये उसके कन्धे पर अपना हाथ रखा, वह यकायक सफ़ेद पड़ गया।

"क्या मैं जेल जा रहा हूँ," उसने पूछा।

"हाँ।"

"लेकिन मेरे घोड़े! मेरी गाड़ी में जुते हुए बाहर खड़े हुए, घोड़ों की तुम क्या व्यवस्था कर रहे हो?"

सरकारी वकील ने सिपाही की ओर देखा।

"कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो तुम्हारी ओर से उनकी देख-भाल रखे?"

"कोई नहीं।"

"हम उन्हें ब्रिगेड में दे देंगे। उनके पास पहले भी घोड़े हैं। जेल में घोड़े रखने के लिये कोई जगह नहीं।"

सरकारी वकील सिपाही की ओर देख कर मुस्कराया, क्योंकि उसने उसे एक झंझट में से निकाल दिया था। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह उन घोड़ों का क्या करे। सरकारी वकील का नाम था जार्ज दामियां। वह अभी कुछ ही दिन पहले नगर में आया था। यह उसका पहला मुकद्दमा था।

मध्याह्न के समय, जब वकील अपने दोपहर के भोजन के लिये जाने की तैयारी कर रहा था, उसे सूचना मिली कि जरगु जॉरडन ने अपनी कोठरी के कंकरीट के फर्श पर सिर पटक कर आत्म-हत्या करने का प्रयत्न किया है। जेलर की रिपोर्ट थी: "कैदी ने अस्पताल में बयान दिया है कि उसने आत्म-हत्या का प्रयत्न इसीलिये किया, क्योंकि वह यह नहीं सहन कर सकता था कि उसके चारों श्रेष्ठ घोड़े भूखे-प्यासे मरने के लिये छोड़ दिये जायेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि कैदी घोड़ों का अत्यन्त प्रेमी है। उसकी हालत ख़तरनाक है।"

सरकारी वकील को जो दूसरा समाचार मिला वह अस्पताल में योलन्दा जॉरडन की मृत्यु का था। उसे अपने मुँह से जले कोयले की सी गन्ध आने लगी। भोजनालय में मध्याह्न भोजन के लिये बैठने से पहले वह बड़ी देर तक अपने हाथों को साबुन और ठंडे पानी से रगड़-रगड़ कर धोता रहा। "क़ानून," उसने अपने मन में कहा, "जरगु जॉरडन को अपनी स्त्री को मर्मान्तक चोट पहुँचाने के अपराध में अनेक वर्षों का दण्ड दे देगा। लेकिन उसका सब से बड़ा पाप न तो अपनी स्त्री को पीटना है और न मनुष्यों से भी अधिक घोड़ों प्यार करना। ये केवल एक ख़ास

तरह की मनोवृत्ति की उपज हैं। जरगु ॉरडन का सब से बड़ा पाप उसकी बर्बरता है। हर बर्बर आदमी की तरह वह मानव-जीवन का इतना कम मूल्य आंकता है कि उसके अस्तित्व तक से इनकार कर बैठता है। उसके इस अपराध के लिये—यद्यपि सभी का मूल यही है—क़ानून उसे कभी दण्डित नहीं करेगा। केवल थोड़ी-सी सुनिश्चित बातों में ही बर्बरता ग़ैर-क़ानूनी मानी गई है।"

१३

कुछ मील चल चुकने के बाद सुसाना सड़क के किनारे बैठ गई। वह थक गई थी और उसे बुखार चढ़ आया था।

"जानी, मैं और नहीं चल सकती," वह बोली; और घास पर लेट गई। वे फन्तना और कस्बे के बीच में थे। उसने उसे सोने दिया वह किसी आती-जाती गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा जो उन्हें ले चले। लेकिन सड़क के मुसाफ़िर या तो पैदल जा रहे थे या घोड़ों की पीठ पर—

अपराह्न में लगभग पाँच बजे पानी बरसने लगा। जॉन ने आकाश की ओर देखा तो ठंडी-ठंडी बूंदें उसके गालों पर पड़ीं। वह सोचने लगा—"यदि कल रात वर्षा हुई होती, तो मैं सुसाना को मिलने न गया होता। वह अभी भी अपने घर होती और मैं कान्स्टैंज़ा में जहाज़ पर। आदमी योजनायें बनाता है, भगवान् विघटित कर देता है—इतना ही कुछ तो है।"

अँधेरा होना शुरू हो गया था और पानी अभी भी बरस रहा था। जॉन ने कुछ हिम्मत करने की सोची।

"मैं एक गाड़ी देखने के लिये गांव वापिस जा रहा हूँ," उसने सुसाना को करुणा भरी दृष्टि से देखते हुए कहा। वह पत्तों के आवरण के नीचे गठड़ी बनी पड़ी थी। उसके नीले कपड़े और बाल भीगकर गच्च हो गये थे। वह सर्दी के मारे ठिठुर रही थी और उसके दांत कटाकट बज रहे थे।

"जानी, जैसा तुम ठीक समझो।"

"तुम अकेली डरोगी तो नहीं?" उसने पूछा।

"जब तक तुम लौटते हो, तब तक मैं नहीं डरूँगी।"

उसने सुसाना को छोड़ते हुए बिदाई का चुम्बन लिया। जिस समय वह फन्तना पहुंचा, घुप अँधेरा हो गया था। सारे किसान सोने चले गये थे। उसने एक के बाद दूसरा दरवाजा खटखटाया, किन्तु उसे कोई सहायक नहीं मिला। किसान स्त्री का नाम पूछते और ज्योंही उन्हें पता लगता कि यह जरगु जॉरडन की कन्या है, वे बहाने बनाने लगते। उनके पास जगह न थी। उनको जरगु से डर लगता था।

लगभग आधी रात के समय जॉन फादर कोरग के आँगन में पहुँचा। पुस्तकालय में प्रकाश था। उस भीगी रात में शीशे की तरह चमकती हुई काले रंग की एक बड़ी मोटर गाड़ी उसी समय दरवाजे के सामने आकर खड़ी हुई। अन्दर अपरिचित आवाजें सुनाई दीं। "फादर कोरग के यहां अतिथि आये होंगे," उसने मुड़ते हुए सोचा, "अच्छा होगा, यदि मैं इस समय किसी प्रकार की गड़बड़ी न करूँ।" छत पर जोर से वर्षा हो रही थी। थोड़ी देर जॉन सुनता रहा और तब इस बात को याद करके कि सुसाना सड़क के किनारे अकेली पड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी, उसने खिड़की के शीशे पर धीरे से आवाज़ की।

१४

"तुम ठीक उसी समय आये जब मैं तुम्हें बहुत बहुत याद कर रहा था," पादरी ने मोटर-गाड़ी में से सामान निकालने में अपने लड़के की सहायता करते हुए कहा। मोटर बरामदे के पास आकर खड़ी थी, और उसकी छत लताओं तथा जंगली-गुलाब के फूलों से ढक गई थी। मूसलाधार वर्षा जारी थी। "तुम अकेले नहीं हो," पादरी ने प्रश्न किया। गाड़ी में से एक दूसरा तरुण बाहर आया।

"यह जार्ज दामियाँ है," त्रायन ने परिचय कराया, "कालेज का मेरा पुराना सहपाठी। मैं इसे आज अपने कस्बे में मिला। यह जिला कचहरी के नये सरकारी वकील हैं।"

पादरी ने अतिथियों का स्वागत करने के लिये समुचित रूप से वस्त्र न पहने रहने के लिये क्षमा मांगी। वह उन दोनों तरुणों को बैठक में ले गया और स्वयं थोड़ी देर के लिये भीतर चला गया। सरकारी वकील ने उस पुरानी किस्म की घड़ी पर नज़र डाली, दीवारों पर लटके हुए परदों को देखा और देखा पुस्तकों से ठसाठस भरी हुई आलमारियों को।

"मैं जानता हूँ, कि तुम क्या सोच रहे हो," त्रायन ने हँसते हुए कहा "तुम चकित हो कि देश का सर्वाधिक अद्यतन उपन्यासकार, जिसकी पुस्तकें मोटर-गाड़ियों, हवाई जहाजों, शराब-घरों तथा बिजली के प्रकाशों से भरी हैं, एक ऐसे घर में, जिसमें पिछली दो शताब्दियों में किसी एक भी चीज़ में न परिवर्तन हुआ और न प्रगति हुई, कैसे पैदा हुआ और कैसे पाला-पोसा गया? क्या मैं ठीक हूँ?"

सरकारी वकील के गालों पर सुर्खी आ गई।

'मैं ठीक यही बात सोच रहा था।"

फादर कोरुग कमरे में चला आया। उसने अपनी पतली बिखरी अँगुलियों से तेल के लैम्प को प्रज्वलित किया और बड़ी गम्भीरता से उसे मेज़ के ठीक बीचो-बीच रख दिया। त्रायन ने अपना चमड़े का

सूट-केस खोला, साफ-सुथरे ढङ्ग से लिपटे हुए कुछ पारसलों को निकाला और उन्हें मेज़ पर रख दिया। तब उसने शराब की एक बोतल खोली और अपनी माँ को भीतर बुलाया। जब वह आई तो त्रायन ने गिलासों को भर दिया और चमड़े की जिल्द बंधे दो ग्रन्थों पर चढ़ा हुआ सुनहरी रंग का कागज उतार दिया।

"यह मेरा सबसे इधर का उपन्यास है—आठवाँ। जैसा सदा का नियम है, प्रेस से आनेवाली पहली दोनों प्रतियाँ तुम्हारे और माँ के लिये हैं। हम इस समय वही कैरसा शराब पीयेंगे, जो हमने दूसरे सातों उपन्यासों के प्रकाशित होने पर पी थी। क्या तुम्हें याद है कि जब मैं सबसे पहले उपन्यास को घर ले आया तो कितना प्रसन्न था?"

पादरी ने अपने पुत्र की किताब उसी गम्भीरता से अपने हाथों में ली, जितनी गम्भीरतापूर्वक वह वेदी से पवित्र-ग्रन्थों को उठाता था। उसकी पत्नी ने उसे बड़ी सावधानी से अपनी अँगुलियों के सिरों से पकड़ा और फिर उसे मेज के किनारे पर रख दिया।

"खाना पकाने से मेरे हाथ बिलकुल चिकने हैं," वह बोली। "मैं त्रायन की पुस्तक को मैला नहीं करना चाहती।"

"जार्ज! तीसरी प्रति तुम्हारे लिये है।"

फादर कोरग ने त्रायन का माथा चूम लिया; सरकारी वकील ने उससे हाथ मिलाया। उसकी माँ ने उसका मुँह चूमा और उसके कान में इतने अधिक धीरे से कि दूसरे न सुन सकें फुस-फुसाकर कहा—

"त्रायन, मुझे क्षमा करना। मैंने अभी तक तुम्हारी पहली पुस्तकें भी नहीं पढ़ी हैं। तुम्हारे पिता ने मुझे उनका विषय बता दिया है। लेकिन इस एक किताब को मैं अपनी आँखों से पढ़ना चाहती हूँ। अपने बेटे की लिखी किताब बिना पढ़े मुझे मरना अच्छा नहीं लगेगा।"

त्रायन अपनी माँ की कामना से भावाभिभूत हो गया। उसने एक दूसरे के स्पर्श से सभी गिलासों को बजाया। तब तक उसकी माँ ने क्षमा चाही, क्योंकि रसोई-घर में बहुत कुछ करने को था।

"माँ, जरा यहाँ और ठहरो," त्रायन ने कहा। "एक और चीज है, जिसके सिलसिले में मैं तुमसे मिलने आया हूँ। यह बात मेरी नयी पुस्तक के प्रकाशन जितनी ही महत्त्वपूर्ण है।" त्रायन ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाल कर अपने पिता के हाथ में थमा दिया।

"इसमें मेरे उपन्यास के प्रथम संस्करण की रायल्टी है। मैं इस रुपये से फन्तना में एक भूमि खरीदना चाहूँगा—यथासम्भव तुम्हारे पास ही। मैं यहाँ एक घर बनाकर, अपने जीवन के अन्त तक उसी में रहना चाहता हूँ।"

पादरी ने लिफाफा लिया और मुस्कराते हुए मेज पर रख दिया। त्रायन की माँ आंचल से अपनी आँखें पोंछती हुई बोली—

"मैं जानती हूँ कि यह बात तुम केवल हमें प्रसन्न करने के लिये कह रहे हो। तुम फन्तना में तीन दिन से अधिक कभी नहीं रह सकते। जब भी तुम आते हो, तो एक महीना ठहरने की बात करते हो। और दो ही तीन दिन के बाद तुम अपनी मोटरगाड़ी में बैठकर चल देते हो। इसके बाद फिर महीनों दिखाई नहीं पड़ते।"

"लेकिन, अब मैं घर बनाने जा रहा हूँ," त्रायन बोला।

"तुम्हारा घर भी हो जायगा, तब भी तुम नहीं ठहरोगे। तुममें यहाँ रहने का सबर ही नहीं है। यहाँ की शान्ति तुम्हारे दिल को बैठा देती है।"

त्रायन ने अपने पिता और सरकारी वकील की ओर देखा। उसे लगा कि वे उसकी योजना को उदाराशयता मात्र समझते हैं।"

"किसी को विश्वास नहीं है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। स्पष्ट ही है कि किसी को भी नहीं। लेकिन मैं आज से दो वर्ष बाद, यदि जीवित रहा तो, आप सब को फन्तना में अपने घर आने का निमन्त्रण देता हूँ। शायद तब तुम मेरा विश्वास करोगे। तब तक के लिये हम इस चर्चा को स्थगित रखें।"

१५

भोजन के बाद, पादरी ने ञायन से उसकी एकदम इधर की साहित्यिक योजनाओं के बारे में पूछा। ञायन उत्तर देने से पूर्व थोड़ा हिचकिचाया।

"मेरा दूसरा उपन्यास सच्ची कहानी होने जा रहा है। यह केवल लिखने के ढंग के ही अर्थ में उपन्यास होगा; अन्यथा इसके सभी पात्र वास्तविक जीवन से लिये जायेंगे। मेरे पाठक, उनसे जाकर मिल सकेंगे, उनसे प्रश्न पूछ सकेंगे, 'हां', 'ना' की अभिव्यक्ति के लिये बाजार में सिर हिला सकेंगे। मैंने उनके पते और, यदि सम्भव हो तो, उनके टेलीफोन-नम्बर तक देने का विचार किया है।"

"और ये कौन लोग हैं, जिनका तुम इतना विज्ञापन करने जा रहे हो?" सरकारी वकील ने एक मुस्कराहट के साथ पूछा।

"मेरे पात्र वे सभी जन हैं जो पृथ्वी पर रहते हैं। लेकिन क्योंकि होमर भी दो अरब पात्रों को लेकर कहानी न लिख सकता, मैं केवल कुछ पात्रों को चुन लूंगा—संभवतः दस ही। ये पर्याप्त होंगे। लेकिन उनके अनुभव दूसरे सभी आदमियों के अनुभव होंगे।"

"मैं मानता हूँ कि तुम्हारे पात्र वैज्ञानिक आधार पर चुने जायेंगे, ताकि वे मानव-जाति का यथार्थ प्रतिनिधित्व कर सकें। क्यों, क्या नहीं?" सरकारी वकील ने पूछा।

"नहीं," ञायन ने कहा। "मेरे पात्र यूं ही चुने जायेंगे। किसी वैज्ञानिक आधार की आवश्यकता नहीं है। जो उनके साथ बीतेगी वह ब्योरे के थोड़े परिवर्तन के साथ पृथ्वी पर किसी के भी साथ बीत सकती है। ऐसे आपत्ति-काल आयेंगे जिनसे कोई आदमी न बच सकेगा। उनका वर्णन करने के लिये मुझे विशेष रूप से चुने हुए पात्रों की आवश्यकता नहीं। संसार के दो अरब प्राणियों में से मैं जिन्हें सबसे अच्छी तरह जानता हूँ, ऐसे दस प्राणी चुनूँगा। एक सारा परिवार, मेरे अपने पिता,

मेरी माता, स्वयं मेरे पिता के मजदूर, एक या दो साथी और अपने कुछ पड़ोसी।"

गिलासों में शराब उंड़ेलते हुए फादर कोरग थोड़ा मुस्कराये।

"अगले कुछ वर्षों में इन लोगों पर जो कुछ बीतेगी, मैं वह सब कुछ लिखता जाऊँगा।" त्रायन ने कहा।

"मुझे लगता है कि विचित्र घटनायें घटनेवाली हैं। मेरा विश्वास है कि अगले कुछ वर्षों में पृथ्वी के हर आदमी पर असाधारण विपत्ति आने वाली है। ऐसी घटनाए, जो इससे पहले इतिहास में कभी नहीं घटीं।"

"यदि ये भावी घटनाएं अत्यधिक नाटकीय होनेवाली हों तो मैं समझता हूँ कि ये केवल तुम्हारे उपन्यास में घटेंगी," सरकारी वकील ने कहा।

"ये नाटकीय घटनायें, पहले वास्तविक जीवन में घटेंगी, और बाद में मेरे उपन्यास में," त्रायन का उत्तर था।

"इसका मतलब तो मैं यह समझता हूँ कि इस नाटकीय युग में से मुझे वास्तव में गुज़रना पड़ेगा?" सरकारी वकील ने पूछा। "तुम जानते हो कि मेरा जीवन ऐसा 'बबुआना' है कि इसमें तुम्हारे पाठकों की रुचि हो ही नहीं सकती। मैं कुछ भी हूँ, किन्तु साहसिक नहीं हूँ।"

"मेरे प्रिय जार्ज, पृथ्वी के अधिकांश निवासी साहसिक नहीं हैं, तो भी उन्हें मजबूरी से ऐसे साहसी अनुभवों में से गुज़रना पड़ेगा कि रोमाञ्चक साहित्य के लेख भी वैसी किसी बात की कल्पना का साहस न कर सकें।"

"तो यह कौन-सी बात है, जो हमारे साथ घट कर रहेगी?" सरकारी वकील ने थोड़े व्यंग्य के साथ मुस्कराते हुए पूछा।

"जार्ज, मज़ाक एक ओर," त्रायन बोला। "मुझे लगता है कि हमारे आस-पास कोई बहुत ही महत्त्व की चीज़ शक्ल ले रही है। मैं नहीं जानता था कि कब और कहाँ से इसका आरम्भ हुआ, और न यही कि यह कितने दिन चलेगा; लेकिन मुझे इसके अस्तित्व का ज्ञान है। हम

एक भँवर में फँस गये हैं, यह हमारे अंग-प्रत्यंग से मांस नोच लेगा और हमारे बदन की हर हड्डी को चूर-चूर कर देगा। मुझे यह चीज़ आती दिखाई दे रही है, जैसे चूहों को डूबनेवाले जहाज का अन्दाज पहले से हो जाता है। लेकिन हम तैर कर किनारे पर नहीं पहुँच सकते, हमारे लिये कहीं कोई किनारा ही नहीं है।"

"तुम यह किस 'चीज़' की ओर इशारा कर रहे हो?"

"यदि तुम चाहो तो इसे 'क्रान्ति' कह सकते हो—एक असीम क्रान्ति, सभी प्राणियों को जिसका शिकार होना ही होगा।"

"और यह 'क्रान्ति' कब शुरू होगी," सरकारी वकील ने पूछा। अभी भी वह उसे गम्भीरतापूर्वक नहीं ले रहा था।

"बूढ़े आदमी, क्रान्ति हमारे सिर पर सवार है। तुम्हारे शक्की मिज़ाज़ और व्यंग्य के बावजूद 'क्रान्ति' आरम्भ हो गई है। एक-एक करके मेरे माता-पिता, तुम, मैं और शेष सारी मानव-जाति शनैः-शनैः इस ख़तरे का अनुभव करने लगेगी, और हम सब भागने तथा छुपने की कोशिश करेंगे। हम में से कुछ अभी से कोनों में घुस रहे हैं, जैसे आनेवाले तूफान के समय जंगली जानवरों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, मैं गाँव में चला जाना चाहता हूँ। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य फासिस्टों को दोष देते है। उनकी मान्यता है कि फासिस्टों का अन्त कर डालने से ही खतरे से बचा जा सकता है। नाज़ी यहूदियों की हत्या करके अपनी चमड़ी की रक्षा करना चाहते हैं। लेकिन ये सब तो ख़तरा सामने होने पर आदमी को जो भय लगता है उसका चिह्न-मात्र है। ख़तरा केवल एक ही है और सारी पृथ्वी पर वही है। अन्तर केवल आदमियों की प्रतिक्रियाओं में है।"

"और हम सब के सिर पर यह कौन-सा ख़तरा है," सरकारी वकील ने कहा।

"यान्त्रिक दास," त्रायन कोरुग ने उत्तर दिया। "जार्ज, तुम उसे भी जानते हो। यान्त्रिक-दास वह नौकर है जो हज़ार तरह से हमारी

सेवा में तत्पर रहता है। वह हमारी मोटर चलाता है, बिजली का बटन दबा देता है, हाथ धोते समय हमारे हाथों पर पानी डाल देता है, हमारी मालिश कर देता है, जब हम रेडियो को घुमा देते हैं तो हमें रोचक कहानियाँ सुनाता है, सड़कें बनाता है और पर्वतों को तोड़ देता है।"

"मुझे सन्देह रहा है कि सारा समय यह सब कुछ केवल कवि-कल्पना ही तो नहीं रही है।"

"मेरे प्रिय जार्ज, यह किसी भी तरह केवल कवि-कल्पना नहीं है। यान्त्रिक-दास एक वास्तविकता है। पृथ्वी पर उसके अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता।"

"मैं उसके अस्तित्व से इनकार नहीं कर रहा हूँ," सरकारी वकील ने उत्तर दिया। "लेकिन 'दास' शब्द के लाने की क्या आवश्यकता थी। यह केवल 'यान्त्रिक-शक्ति' का प्रश्न है।"

"मानवीय दास—आधुनिक समाज के यान्त्रिक-दासों का ठीक समान रूप—ग्रीस और रोम के लोगों के द्वारा वैसे ही देखे जाते थे, मानो कोई अन्धी शक्ति हो या निर्जीव पदार्थ। वे खरीदे जाते थे, बेचे जाते थे, दे दिये जाते थे, और मार डाले जाते थे। उनकी कीमत उनके शारीरिक बल और काम करने की शक्ति की कीमत थी। हम अपने आज के यान्त्रिक-दासों को भी ठीक इन्हीं नापों से नापते हैं।"

"यह सब होने पर भी बड़ा फर्क है," सरकारी वकील ने कहा। यान्त्रिक-दास मानवी दास का स्थान नहीं ले सकता।"

"तो यही तो बात है, कि ले सकता है। मानवी दास से यान्त्रिक-दास अधिक योग्य और सस्ता सिद्ध हुआ है और धीरे-धीरे उस पर बाज़ी मार ले रहा है। अब हमारे जहाज़ मानवी नाविक-दासों से नहीं खींचे जाते, किन्तु उनके निर्जीव उत्तराधिकारियों की शक्ति द्वारा। और अँधेरा होने पर, अब कोई भी अमीर आदमी—जो दास रख सकता है—जलती हुई मोम-बत्तियों को मंगवाने के लिये ताली नहीं बजाता; जैसा

कि रोम अथवा एथेंस में उसके पूर्वजों ने किया होता। इसके बजाय वह हाथ निकाल कर स्विच् घुमा देता है, और यान्त्रिक-दास कमरे को प्रकाशित कर देता है। यान्त्रिक-दास आग जलाता है, घर और नहाने के पानी को गर्म कर देता है, वह खिड़कियाँ खोल देता है, और पंखे से ठंडी हवा चला देता है। अपने मानवी-बन्धु की अपेक्षा उसकी विशेषता है कि वह अधिक शिक्षित है। वह न कुछ सुनता है और न कुछ देखता है। बिना बुलाये यान्त्रिक-दास कभी पास नहीं आता। वह एक सेकिण्ड में तुम्हारे प्रेम-पत्र को यथा-स्थान पहुँचा देता है और जल तथा स्थल दोनो जगहों पर तुम्हारे शब्दों को ठीक तुम्हारे प्रेम-पात्रों के कानों तक पहुँचा देता है। यान्त्रिक-दास पूरा नौकर है। वह खेत जोतता है, लड़ाइयाँ लड़ता है, राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाता है, शान्ति स्थापित करता है और शासन-व्यवस्था चलाता है। उसने सभी मानवी कृतियों पर अधिकार कर लिया है और उन्हें सम्पूर्णता की सीमा तक पहुँचा दिया है। वह दफ्तर में बैठता है और गिनती करता है, वह चित्र बनाता है, गाता है, नाचता है, आकाश में उड़ता है, समुद्र की तह तक डुबकी लगाता है। यान्त्रिक-दास जल्लाद भी बन गया है। वह मृत्यु दण्ड की आज्ञाएं देता है। वह डाक्टर के पास खड़ा होकर अस्पताल में रोगों की चिकित्सा करता है, वह पादरी के पास खड़ा होकर उसके धार्मिक क्रिया-कलापों में सहायक होता है।"

ट्रायन थोड़ी देर के लिये रुका और गिलास को अपने ओठों तक ले गया। बाहर से वर्षा की टप-टप की आवाज़ आई।

"मैं इस विषयान्तर को तुरन्त समाप्त करने जा रहा हूँ," वह बोला। "व्यक्तिगत तौर पर, मुझे यह कहना चाहिये, कि मैं जिस समय एकदम अकेला प्रतीत होता हूँ, उस समय भी मैं संगति में ही रहता हूँ। मैं इन मशीन-चाकरों को अपने चारों ओर मंडराते पाता हूँ। वे मेरी सिगरेट जला देते हैं, वे मुझे संसार में घटने वाली घटनाओं से परिचित कराते हैं, वे अंधेरे में मुझे घर का रास्ता दिखा देते हैं। मेरा जीवन उनकी

ताल पर नाचता है। मैं अपने मानव-बन्धुओं की अपेक्षा उन्हीं की संगति में अधिक रहता हूँ। कभी-कभी मैं उन्हें उसी तरह प्यार करता हूँ जैसे मानवों को, और उनके लिये मैं बलिदान चढ़ाने को तैयार हूँ। यही कारण है, जैसा कि माँ ने अभी कहा, मैं फान्तना में अधिक दिन नहीं ठहर सकता। मेरे मशीन-चाकर बुखारेस्ट में मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। दो हज़ार वर्ष पूर्व के अपने मानव-बन्धुओं की अपेक्षा हम बहुत अधिक धनी हैं। उनके पास एक या दो दर्जन ही गुलाम होते थे। हमारे पास सैकड़ों हैं, हजारों हैं। अब मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं; आप लोगों के विचार के अनुसार इस समय पृथ्वी-तल पर पूर्ण रूप से क्रियाशील मशीन-चाकरों की संख्या कितनी होगी? कम से कम कई अरब। और हम लोग कितने हैं?"

"दो अरब," सरकारी वकील का उत्तर था।

"निश्चयात्मक रूप से! इसलिये, मशीन-चाकरों की संख्या बहुत ही अधिक है। और जब हम यह देखते हैं कि समकालीन समाज के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर मशीन-चाकरों का ही अधिकार है तो खतरा एकदम स्पष्ट हो जाता है। सैनिक शब्दावलि का उपयोग करना हो तो हमारे समाज के सामरिक महत्त्व के स्थानों पर मशीन-चाकरों का अधिकार है; सेना पर, यातायात पर, सम्बन्ध-व्यवहार के साधनों पर तथा भोजन-सामग्री की प्राप्ति और उद्योगों पर। ये केवल दो-चार अत्यन्त महत्त्व की चीज़ें हैं। मशीन-चाकर एक प्रकार का मजूर-वर्ग है, यदि हम इस शब्द से एक ऐसे समूह की कल्पना करते हैं कि जो इतिहास की घड़ी-विशेष में समाज में रहता हुआ भी समाज में मिलकर उसका हिस्सा नहीं बनता। मैं कोई बे हिसाब काल्पनिक उपन्यास नहीं लिखने जा रहा हूँ और इसलिये मैं इसका चित्र नहीं खींचने जा रहा हूँ कि एक भले दिन, किस प्रकार यह अरब-खरब मशीन-चाकर विद्रोह कर उठे और उन्होंने मानव जाति को जेलखानों में बंद कर दिया और फाँसी के तख्तों पर लटका-लटका कर तथा बिजली की कुर्सियों में बिठा-बिठा

कर उनका बिस्तरा गोल किया। इस प्रकार की क्रान्तियाँ केवल मानवी दासों द्वारा ही की जाती हैं। मैं केवल यथार्थ बातें बयान करूँगा। और वास्तविक सचाई यह है कि यह मशीन-मजूर-वर्ग अपने ढंग की क्रान्ति करेगा। उसे उन रोकों की तनिक भी आवश्यकता न होगी, जिनके बिना आदमियों का काम नहीं चलता। समकालीन समाज में मशीन-दासों का प्रबल बहुमत है। यह एक यथार्थ सत्य है। वे इस समाज के ढाँचे के अन्दर रहते हैं, किन्तु वे अपने ही नियमानुसार चलते हैं। मानवी नियमों से उनके नियम सर्वथा भिन्न हैं। मशीन-दास जिन नियमों के अनुसार चलते हैं, उनमें से मैं केवल तीन का उल्लेख करूँगा— स्वसंचालकत्व, एकरूपता, अज्ञातपन।

"जिस समाज में अरबों-खरबों की संख्या में मशीन-दास हों और मानवों की संख्या केवल दो अरब हो—भले ही वह शासक मानव हों— उस समाज में मजदूर-वर्ग के बहुमत के गुण-स्वभाव प्रकट होंगे ही। रोम-साम्राज्य में दास लोग उन्हीं प्रथाओं के अनुसार बोलते थे, पूजा करते थे, प्रेम करते थे, जिन प्रथाओं को वे अपने साथ ग्रीस, थ्रेस अथवा दूसरे अधिकृत देशों से लाये थे। हमारी अपनी सभ्यता के मशीन-दास अपने गुण-स्वभाव को सुरक्षित रखे हैं, और अपनी प्रकृति के नियमों के अनुसार रहते हैं। यह प्रकृति, अथवा यदि आप अधिक पसन्द करते हों, तो यह पारिभाषिक-यांत्रिक वास्तविकता, समकालीन समाज के ढाँचे के अन्दर विद्यमान है। इसका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। अपने मशीन-दासों से काम लेने के लिये, आदमियों के लिये, यह अनिवार्य हो गया है कि वे उन्हें अधिकाधिक जानें और उनकी आदतों तथा उनके कानूनों की नकल करें। एक मालिक के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने अधीन काम करनेवाले की भाषा तथा उसकी आदतों से कुछ न कुछ परिचय अवश्य प्राप्त करे, जिससे वह उन्हें आज्ञायें दे सके। विजेता, जब वे संख्या में विजितों की अपेक्षा कम रहते हैं, तो प्रायः अपनी अधिकृत जातियों की भाषा तथा आदतों को ग्रहण कर

लेते हैं। इससे उन्हें सुभीता रहने के अतिरिक्त और भी दूसरे लाभ हो सकते हैं। उन्हें अपने "मालिक" होने के बावजूद ऐसा करना पड़ता है।

"हमारे स्वीकार करने की अनिच्छा के बावजूद हमारे समाज में यही प्रक्रिया जारी है। हम दासों के कानून और उनकी दुर्बोध भाषा सीख रहे हैं, ताकि हम उन्हें आज्ञायें दे सकें। और इसलिये क्रमशः हम अपने मानवीय गुणों और अपने कानूनों को छोड़ते चले जा रहे हैं। हमको इसका पता भी नहीं चल रहा है। हम अपने दासों की जीवनचर्या अपना कर स्वयं अमानवीय होते जा रहे हैं। इस अमानवीयपन का प्रथम लक्षण मानव के प्रति घृणा है। आधुनिक आदमी अपना और अपने मानव-बन्धुओं का मूल्यांकन पारिभाषिक-यांत्रिक मापदण्डों के अनुसार करता है। आदमी मशीन के उन पुर्जों का समूह मात्र है जिनमें से किसी एक को हटा कर उसके स्थान पर कोई भी दूसरा पुर्जा आसानी से रख दिया जा सकता है। हमारे समकालीन समाज में प्रत्येक आदमी के साथ, गिनती के हिसाब से, दो अथवा तीन दर्जन मशीन-दास हैं। यह समाज अनिवार्य तौर पर ऐसे ढंग से संगठित होगा ही कि यांत्रिक कानूनों के अनुसार चल सके। आधुनिक समाज की रचना मानवीय आवश्यकताओं की अपेक्षा यांत्रिक आवश्यकताओं के लिए है। यही वह स्थल है जहाँ से दुःखान्त नाटक आरंभ होता है।

"आदमियों को यकायक अपनी प्रकृति से सर्वथा विपरीत यांत्रिक कानूनों के अनुसार रहना और आचरण करना पड़ रहा है। मशीन के कानून अब प्रगति करके सामाजिक कानून बन गये हैं। उनका आदर न करनेवाले आदमी दण्डित होते हैं। अल्प संख्या में रहनेवाला आदमी अल्पसंख्यक मजदूर-वर्ग की अवस्था को प्राप्त हो जाता है। जिस समाज का वह है किन्तु जिसका वह हिस्सा नहीं बन सकता उससे उस समाज का बहिष्कार हो जाता है। इसका यही परिणाम होता है कि आदमी के मन में अपने को हीन समझने का भाव स्थान ग्रहण कर

लेता है। मशीन की नकल कर अपने आपको उन मानवीय गुणों से मुक्त कर लेना चाहता है जो उसे सामाजिक चैतन्य के केन्द्र से दूर-दूर रखते हैं।

"यह मानव को अमानव बनाने की प्रक्रिया नाना रूपों में चालू है। यह आदमी से उसकी भावनाओं का त्याग करा रही है। यह आदमी के सामाजिक सम्बन्धों को नपा-तुला, स्वयं संचालित और निश्चित बनाती जा रही है, मानो वे किसी मशीन के भिन्न-भिन्न पुर्जों का आपसी सम्बन्ध हों। मशीन-दास की दुर्बोध भाषा तथा उसके सुर-ताल की प्रतिध्वनि हमारे सामाजिक सम्बन्धों में सुनाई देती है और सुनाई देती है हमारी शासन-व्यवस्था में, चित्र-कला में, साहित्य में और नृत्य-कला में। आदमी मशीन-दासों की नकल मात्र बनते चले जा रहे हैं। किन्तु यह तो दुःखान्त नाटक का आरंभ मात्र है। यह तो वह स्थल है जहाँ से मेरा उपन्यास आरंभ होता है—मेरा उपन्यास अर्थात् मेरे पिता, माता, तुम्हारा जार्ज का, मेरा अपना और दूसरे पात्रों का जीवन-चरित्र।

उसी व्यंग्यपूर्ण ध्वनि में सरकारी वकील बोला—"इसका मतलब है कि हम मानवीय मशीनें बनते चले जा रहे हैं?"

"ठीक यही तो बात है," त्रायन ने उत्तर दिया, "जो हम नहीं कर सकते। यही तो सबसे बड़े दुख की बात है, यांत्रिक तथा मानवीय वास्तविकताओं का आपसी संघर्ष प्रकट हो चला है। इस क्रान्ति में मशीन-दास विजयी होंगे। वे स्वातंत्र्य लाभकर समाज के यांत्रिक नागरिक बन जायेंगे। और हम आदमियों को यांत्रिक नागरिकों की आवश्यकताओं तथा उनके स्वभाव-गुण के अनुसार रचित समाज का मजदूर-वर्ग बन कर रहना होगा।"

"व्यवहार में, इस सबका क्या रूप होगा?" सरकारी वकील ने पूछा।

"उस रूप को देखने के लिये मैं भी तुम्हारी ही तरह उत्सुक हूँ। लेकिन साथ ही उसका ख्याल करने से ही मुझे भय लगता है। मुझे अपना और अपने मानव-बन्धुओं का विनाश देखने से पहले मर जाना अच्छा लगता है।"

"क्या तुम्हारे दिमाग में कोई खास तसवीर है?"

"इस समय और आगामी वर्षों में पृथ्वी पर जितनी भी घटनायें घटेंगी वे सब इसी 'क्रान्ति' के लक्षण होंगी-मशीन-दासों के विद्रोह के। अंत में आदमी के लिये अपने मानवी संबंधों की रक्षा करते हुए समाज में रहना असम्भव हो जायगा। सभी को समान और एक जैसा माना जायगा। मशीन-दासों के कानून उन पर लागू होंगे। उनके 'आदमी' होने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा। गिरफ्तारियाँ अपने आप होंगी, दोषी अपने आप घोषित किये जायेंगे, मनोरञ्जन अपने आप होंगे तथा वध भी अपने आप होंगे। व्यक्ति उतना ही बेकार बन जायगा जितना बेकार कि किसी मशीन का वह पुर्जा जो अपना स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहता है। सारी पृथ्वी पर 'क्रान्ति' फैल जायगी। न द्वीपों में और न जंगलों में कहीं कोई सुरक्षा का स्थान शेष न बचेगा। जाने के लिये कहीं कोई जगह न बचेगी। एक भी जाति हमारी ओर से न लड़ेगी। समस्त संसार की सेनाएँ उन भाड़े के टट्टुओं से ही भरी होंगी जो मशीन-मानव के समाज की दृढ़ता के लिये लड़ेंगे; उस समाज की जिसमें से व्यक्ति का बहिष्कार कर दिया गया है। आज तक सेनायें नये देशों अथवा नई सम्पत्ति को हथियाने के लिये लड़ती रही हैं, अपने जातीय-अभिमान की सन्तुष्टि के लिये लड़ती रही हैं, राजाओं महाराजाओं के व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये लड़ती रही हैं; उनका अन्तिम उद्देश्य शान-शौकत अथवा लूट ही रहा है। ये सभी मानवीय महत्वकांक्षायें रहीं। लेकिन आज की सेनायें उस समाज के स्वार्थों की रक्षा करने के लिये लड़ रही हैं जो अपने सुदूर क्षितिज पर भी कहीं किसी मज़दूर-वर्ग को, कहीं किसी मानवता को सहन नहीं करता। कदाचित् संसार के

इतिहास में यह सर्वथा अंधकारमय युग है। इससे पहले आदमी कभी भी एकदम इतनी घृणा का पात्र नहीं बना है। उदाहरण के लिये बर्बर समाज में आदमी घोड़े से भी नीचे दर्जे पर माना जाता था। कुछ लोग और व्यक्ति आज भी वैसा व्यवहार कर सकते हैं। अभी तुम मुझे उस किसान की बात कह रहे थे जिसे अपनी स्त्री को मार डालने पर कुछ भी अफसोस या मनस्ताप नहीं हुआ था, किन्तु जिसने यह सोचकर कि जेल में उसके रहने पर उसके घोड़ों को दाना-पानी नहीं मिलेगा, आत्म-हत्या करने की कोशिश की। आरम्भिक समाज इसी पर आदमी का मूल्यांकन करता था। उस समय मानवी बलिदान एक स्वीकृत प्रथा थी। समकालीन समाज में मानवी-बलिदान को उल्लेख करने योग्य भी नहीं माना जाता—यह सर्वसामान्य बात है। मानवी जीवन का मूल्य अब केवल शक्ति के स्रोत के नाते रह गया है; माप-दण्ड शुद्ध रूप से वैज्ञानिक है। यह हमारी यान्त्रिक बर्बरता का भयानक नियम है। मशीन-दासों की सम्पूर्ण विजय के बाद इसी का सर्वोपरि राज्य रहेगा।"

"और तुम्हारी यह 'क्रान्ति' कब होगी?" सरकारी वकील ने पूछा।

"यह आरम्भ हो गई है," त्रायन बोला। "हम इसकी प्रगति देख सकेंगे। हममें से अधिकांश इसे देखने के लिये जीवित न रहेंगे। इसीलिये मुझे अत्यधिक डर लगता है कि मैं अपनी पुस्तक समाप्त करने से भी पहले मर जाऊँगा।"

"क्या तुम अपने दिमाग़ में सर्वथा निराशावादी तसवीर नहीं खींच रहे हो?" सरकारी वकील ने पूछा।

"जार्ज, मैं एक कवि हूँ," त्रायन ने उत्तर दिया। "मेरे पास एक छठी इन्द्रिय है जो मुझे भविष्य की एक झलक दिखा देती है। हर कवि एक भविष्यवक्ता होता है। मुझे दुःख इतना ही है कि मेरी भविष्य-द्वाणियाँ इतनी निराशापूर्ण हैं। कवि के नाते मेरा कर्तव्य है कि चाहे वे अच्छी न लगें तो भी मकान की छतों पर से उनकी घोषणा करूँ।"

"क्या इसमें कुछ सन्देह है कि जो कुछ तुम मुझे बताते रहे हो, उसे तुम स्वयं गम्भीरतापूर्वक नहीं मानते हो ?"

"दुर्भाग्य से, इसमें मेरा पूरा विश्वास है।"

"मैं समझता था कि यह केवल कवि-कल्पना नहीं है," त्रायन बोला। "मैं हर रात सोचता हूँ कि मुझे कुछ भी हो जा सकता है।"

"तुम्हें क्या हो सकता है ?" सरकारी वकील ने पूछा।

"कुछ भी। जिस क्षण आदमी घटते-घटते केवल यान्त्रिक-सामाजिक मूल्य का प्राणी मात्र रह गया, उसे कुछ भी हो सकता है। उसे गिरफ्तार कर लिया जा सकता है, उससे बेगार ली जा सकती है, उसे जलावतन किया जा सकता है, उसे किसी भी तरह का काम करने के लिये मजबूर किया जा सकता है,—एक पंचवर्षीय योजना के लिये, जाति के सुधार के लिये अथवा किसी दूसरे उद्देश की पूर्ति के लिये। आदमी को वही कुछ करना होगा, जो कुछ उसे यान्त्रिक सत्ता-रूपी कंस करने की आज्ञा देगा। आदमी की व्यक्तिगत आकांक्षाओं का इसमें प्रश्न ही नहीं उठता। यान्त्रिक-सभ्यता का समाज केवल यान्त्रिक-सिद्धान्तों के अनुसार काम करता है, सारांशों के अनुसार और योजनाओं के अनुसार। वह मात्र एक ही नैतिक शील का पालन करता है: उत्पत्ति।

"क्या हम सचमुच गिरफ्तार किये जा सकते हैं ?" सरकारी वकील का व्यंग्य-भरा लहजा जाता रहा था। उसने त्रायन से उसी प्रकार अर्ध-भयाकुल होकर पूछा जैसे हम किसी भाग्य बताने वाले से अपना भाग्य पूछते हैं, भले ही हम सिद्धान्तरूप से उसमें विश्वास न भी करते हों।

"समस्त पृथ्वी पर कहीं एक भी स्वतन्त्र आदमी न बचेगा," त्रायन का उत्तर था।

"इसका यह मतलब है कि हम सब, बिना किसी अपराध के ही, जेलखानों में पड़े-पड़े मरेंगे ?"

"नहीं," आयन ने कहा। "आनेवाले समय में दीर्घ काल तक के लिये आदमी यान्त्रिक-सत्ता द्वारा बांध दिया जायगा—वह हथकड़ियाँ और बेड़ी पहने नहीं मरेगा। यान्त्रिक-सभ्यता आराम पैदा कर सकती है, किन्तु भावनामय-चेतना को जन्म नहीं दे सकती। बिना भावनामय-चेतना के प्रतिभा कहाँ? जिस समाज में प्रतिभावानों का अभाव है उसका अन्त निश्चित है। यह नवीन सभ्यता, जो इस समय पाश्चात्य सभ्यता को परास्त कर रही है, जो अंत में समस्त संसार में फैल जायगी, अपनी बारी आने पर स्वयं विनाश को प्राप्त होगी... महान् आइन्स्टाइन का कथन है यदि केवल दो पीढ़ियों के लिये भी भौतिक शास्त्र के लिये विशेष रुचि रखनेवाली पहले दर्जे की प्रतिभाओं का सिलसिला बन्द हो जाय तो उतने से ही भौतिक शास्त्र की सारी इमारत गिरकर चकना-चूर हो जायगी।"

"यान्त्रिक-सत्ता के पतन के बाद फिर एक बार मानवीय तथा आध्यात्मिक मूल्यों का पुनर्जन्म होगा। सम्भवतः यह महान् प्रकाश पूर्व से, एशिया से मिलेगा—रूस से नहीं। रूस के लोगों ने पश्चिम की बिजली की रोशनी के सामने सिर झुका दिया है और ये उसी के पुजारी बन गये हैं। उनका वही बुरा हाल होगा जो पश्चिम के लोगों का हुआ है। यह पूर्व ही है, जो अन्त में हमारी इस यान्त्रिक-सत्ता पर विजय प्राप्त करेगा और बिजली के प्रकाश के पूजने की बजाय उससे अपने घरों और बाजारों को प्रकाशित करने का काम लेगा। आज पश्चिम का समाज, अपनी बर्बरता में, यही कुछ कर रहा है। पूर्व के आदमी बिजली के नये ट्यूबों के प्रकाश से जीवन और आत्मा के रहस्यों को अनावरण करने का प्रयत्न नहीं करेंगे। वे अपनी भावनामय-चेतनता और प्रतिभा से इस यान्त्रिक सभ्यता की मशीन पर अपना अधिकार कर लेंगे। वे उसका संचालन उसी प्रकार करेंगे जिस प्रकार संगीतमय सुर-ताल का ज्ञाता अपनी सहज-बुद्धि से वाद्यों को अपने अधिकार में रखता है और उनका संचालन करता है। किन्तु, हम उस युग को देखने के लिये जीवित नहीं

रहेंगे—हमारे युग में आदमी एक बर्बर मनुष्य की तरह बिजली के सूर्य को पूज रहा है।"

"तो हम बेड़ियों में जकड़े जाकर मरेंगे?" सरकारी वकील बोला।

"हम स्वयं वास्तव में निश्चयात्मक रूप से मरेंगे, यान्त्रिक बर्बरों के कैदी बनकर। मेरा उपन्यास मानवीय अस्तित्व के इस पहलू का अन्तिम परिच्छेद होगा—मानवीय इतिहास का यह परिच्छेद।"

"इसका नाम क्या होगा?"

"पच्चीसवाँ-घंटा" त्रायन ने कहा। "वह घंटा जब मानव जाति के उद्धार की सीमा को भी पार कर जायगा, जब किसी अवतार के आविर्भाव से भी किसी प्रकार का लाभ न होगा। यह आखिरी घंटा नहीं है, यह आखिरी घंटे के बाद का एक घंटा है। यह पाश्चात्य सभ्यता का वर्तमान क्षण है। यह अब है।

१६

पादरी, अपने हाथों में अपना सिर रखे, चुपचाप बैठा था।

"फादर कोरग, यदि त्रायन की भविष्य वाणियाँ सत्य निकलीं," सरकारी वकील बोला।

"यदि आदमी का विनाश ही होगा अथवा वह कारागृह में आबद्ध ही होकर रहेगा, तो क्या इस समकालीन समाज के उद्धार के लिये ईसाई धर्म कुछ न कर सकेगा? यदि ईसाई-धर्म इस परीक्षा की घड़ी में उत्तीर्ण नहीं होता, तो फिर संसार में इसके लिये और कौन-सा दूसरा उद्देश्य शेष रह जाता है?"

थोड़ी ही देर विचार करते रहने के बाद पादरी ने उत्तर दिया—"नये-प्रवचन ने सदैव यही कहा है कि अन्त होगा, और यदि इसे सौम्य

शब्दों में कहा जाय तो वह अन्त पर्याप्त दुःखदायक होगा। नये-प्रवचन की दृष्टि में यह संसार, ये समाज, वास्तव में यह समस्त जीवन ही क्षणिक अनुभव मात्र है। दूसरे ईसाई धर्म की सफलता और ईसाई धर्म की सचाई न तो इस बात पर निर्भर करती है और न कभी इस बात पर निर्भर रही है कि वह इन समाजों की कहाँ तक रक्षा कर सकता है अथवा इन्हें कहाँ तक शारीरिक मृत्यु से बचा सकता है।

"ईसाई धर्म ने रोम-समाज की रक्षा नहीं की, किन्तु उसने उस विनाशोन्मुख समाज में रहनेवाले रोम-लोगों की रक्षा की।

"ईसाई-धर्म ने मध्यकालीन जागीरदारों के समाज की रक्षा नहीं की, किन्तु इसने उस समाज में रहनेवाले पुरुषों और स्त्रियों की रक्षा की।

"इसकी कोई गारंटी नहीं है कि ईसाई धर्म वर्तमान समाज को बचा सकता है अथवा बचा सकेगा, किन्तु यदि यह अपने प्रवचनों का प्रचार करे तो वर्तमान समाज में जकड़े हुए पुरुषों और स्त्रियों की रक्षा कर सकता है।"

"तो तुम समझते हो कि त्रायन की भविष्यद् वाणियाँ सच्ची निकल सकती हैं?"

"मैं आम तौर पर कवियों के कथन का विश्वास करता हूँ," पादरी ने उत्तर दिया, "और मेरी सम्मति में त्रायन एक महान् कवि है।"

"कृतज्ञ हूँ, पिताजी," कहते हुए त्रायन के गालों पर लाली आ गई थी। उसे इन प्रशंसात्मक वचनों से खुशी हुई।

"मुझे लगता है कि बरामदे में मुझे किसी की आवाज सुनाई दी है।" तीनों आदमियों ने ध्यान दिया, किन्तु उन्हें वर्षा की टप-टप के अतिरिक्त और कुछ सुनाई न दिया।

"यदि आँगन में कोई भी होता, तो कुत्ते भौंकने लगते," पादरी बोला। "केवल मेरा खेत-मज़दूर जॉन मारित्ज़ ही कुत्तों से बचकर

निकल सकता है, किन्तु वह इ समय अपने जहाज़ में पड़ा सोता होगा।"

"मुझे निश्चय है कि सीढ़ियों पर कोई ऊपर आता सुनाई दिया है," त्रायन बोला। "मुझे छोटी से छोटी आवाज सुनाई देती है।"

"तुम्हारे मशीन-आदमियों में से कोई एक मोटर-गाड़ी में से निकल आया होगा," सरकारी वकील ने थोड़ा हंसते हुए कहा। "शायद उन्होंने अपनी 'क्रान्ति' को खुला छोड़ दिया है और वे आज ही रात हमें कैदी बनाने आ रहे हैं। त्रायन, तुम्हारी गाड़ी धकेलने में कितने मशीन-दास लगे हैं?"

"स्वयं हिसाब लगा लो," त्रायन बोला। "पचपन अश्व-शक्ति, और एक अश्व-शक्ति बराबर है सात आदमियों के।"

"कई कम्पनियों की क्रियाशील सामर्थ्य," सरकारी वकील बोला, "और हम तो केवल तीन जने हैं। यदि उन्होंने हम पर आक्रमण कर दिया तो हमें बिला-शर्त शस्त्र रख देने होंगे।"

"बिना आदमी के सहयोग के, मशीन-दास मानव पर आक्रमण नहीं कर सकते," त्रायन बोला।

"लेकिन किसी 'नागरिक' की सहायता मिलने पर—'नागरिक' का मानव होना आवश्यक नहीं—ये मशीन दास क्रूरतम पशु का व्यवहार कर सकते हैं।"

"तुम नागरिक शब्द का क्या अर्थ करते हो?" सरकारी वकील बोला। "क्या हम सब 'नागरिक' नहीं हैं?"

"नागरिक से मतलब उस आदमी से है, जिसका केवल एक ही पहलू होता है, सामाजिक," त्रायन बोला।

"किसी मशीन के बटन की तरह वह केवल एक ही दिशा में अनन्त बार कार्य कर सकता है। भेद केवल इतना ही है कि नागरिक अपनी

इस क्रियाशीलता को एक प्रतीक के रूप में अंगीकार करता है और चाहता है कि सारी मानवता उसका अनुकरण करे। जबसे आदमी और मशीन-दास का झगड़ा आरंभ हुआ है, उस समय से आज तक पृथ्वी-तल पर 'नागरिक' से बढ़कर कोई ख़तरनाक जंगली पशु पैदा नहीं हुआ। उनमें आदमी और पशु की निर्दयता के साथ मशीन की उपेक्षा सम्मिलित है। रूसी लोगों ने इस जाति का एक सर्वगुणसम्पन्न नमूना तैयार किया है; कॉमिस्सार, राज्याधिकारी।"

किसी ने खिड़की के शीशे पर दो बार टोका लगाया।

"मैंने तुम्हें कहा था कि मुझे पैरों की आहट सुनाई देती है," त्रायन बोला। "एक कवि की इन्द्रियाँ उसे कभी धोखा नहीं देतीं।"

१७

पीछे दरवाजा खुला छोड़ कर पादरी बाहर बरामदे में निकल आया। ठण्डी हवा का एक झोंका कमरे में आ पहुँचा। पादरी एक तरुण के साथ कमरे में वापिस आया। नवागन्तुक के बदन पर एक पाजामा और एक कमीज के अतिरिक्त कुछ न था। वह नंगे सिर था और बिलकुल भीगा हुआ।

"यह जॉन मारित्ज़ है," पादरी बोला। उसने उसे शराब का एक गिलास दिया और बैठने को कहा। जॉन ने अस्वीकार किया और दरवाजे के पास खड़ा रहा। वह नहीं चाहता था कि गलीचे और कुर्सी पर पानी के दाग रह जायें। उसके बालों में से पानी ऐसे झड़ रहा था, मानों कोई फौव्वारा हो। यह स्पष्ट ही था कि वह कुछ समय तक वर्षा में भीगता रहा है।

"क्या तुम मुझसे अकेले में बात करना चाहोगे?" पादरी ने प्रश्न किया।

"मैं इसी जगह भी अपनी बात कह सकता हूँ।"

"तुम आज सुबह अपना बण्डल नहीं लेने आये, इसका मुझे खेद रहा।"

"अब मैं अमरीका नहीं जा रहा हूँ।" उसने दोनों तरुणों की ओर देखा और तब पादरी को सम्बोधन करते हुए बोला--

"कल आपने कहा था कि आप मुझे रसोईघर के पासवाले कमरे में सोने देंगे।"

अब पादरी की समझ में आया कि जॉन क्यों आधी रात के समय दरवाज़े को खटखटाने आया है। बोला--

"कमरा तुम्हारा है। तुम जब चाहो, इसमें आ सकते हो।"

"क्या आज रात इसमें कोई दूसरा भी सो सकता है?"

"खुशी से," पादरी ने थोड़ा चकित होकर कहा। उसे लगा कि जॉन के साथ कोई असाधारण घटना घटी है। "यदि किसी को विश्रान्ति की आवश्यकता है, तो यह अच्छी ही बात है कि तुम उसके लिये इस की व्यवस्था कर दे रहे हो।"

"यह जरगु जॉरडन की लड़की सुसाना है। वह घर से भाग आई है, क्योंकि उसका पिता उसकी हत्या करने जा रहा था।"

जॉन को याद आया कि जब भी उसने किसानो के सामने जरगु नाम लिया, उन्होंने उसे आश्रय देने से इन्कार कर दिया था। इसलिये वह सीधा पादरी की आँखों की ओर देखने लगा।

"यदि वह कमरा ठण्डा हो, तो आग जला लेना," पादरी बोला। "तुम जानते हो कि लकड़ियाँ कहाँ रहती हैं।"

जॉन दरवाज़े के पास खड़ा रहा। बिना पादरी को सारी आप-बीती सुनाये वह जाना नहीं चाहता था। जिस समय अपनी राम-कहानी के अन्त में उसने यह बताया कि वह लड़की का फन्तना और

नगर के आधे रास्ते में, खुले आकाश के नीचे, छोड़कर आया है, तो त्रायन तुरन्त उठ खड़ा हुआ। उसने अपना ओवर-कोट पहन लिया। जॉन को साथ ले, वह मोटर में बैठ कर चल दिया। आध घण्टे बाद वे वापिस आ गये।

गाड़ी उसी जगह आकर बरामदे के पास लग गई। जॉन ने सुसाना को अपनी गोद में उठा लिया। सरकारी वकील बरामदे में खड़ा खड़ा यह दृश्य देखता रहा। पादरी की स्त्री जॉन के बाईं ओर थी और पादरी स्वयं उसके दाईं ओर। तीनों धीरे धीरे वर्षा में भीगते आये। जॉन की गोद में वह लड़की वैसी ही जड़ बनी हुई पड़ी थी, जैसे कोई सोता हुआ बच्चा हो। सरकारी वकील ने देखा कि उसका भीगा नीला वस्त्र उसके नितम्ब से चिपट गया है। त्रायन बैठक में गया। सरकारी वकील भी उसके पीछे पीछे था।

"तुम भीग कर गच्च हो गये," वह बोला।

त्रायन के गालों पर लाली आ गई। उसने अपने कीचड़ में लथ-पथ जूतों और पानी निचुड़ते कपड़ों पर दृष्टि डाली। वह बाहर चला गया था, और व्यर्थ में भीग गया था, क्योंकि जॉन ने बिना उसकी सहायता के ही सुसाना को उठाकर गाड़ी में ला बिठाया था, तो भी उस वर्षा में त्रायन सारा समय उसके पास खड़ा रहा था। अपने इस व्यवहार का विश्लेषण करने पर त्रायन को लगा कि समान परिस्थिति में वह दुबारा भी उसी तरह व्यवहार करेगा। "मुझे लगा कि पड़ोसी के कष्ट में हिस्सा बटाना आवश्यक है, भले ही मेरी सहायता का व्यावहारिक मूल्य कुछ भी न हो।"

पादरी वापिस लौट आया। उसके कपड़े भी भीग कर गच्च हो गये थे और उसके माथे से पानी बह बह कर उसके गालों और दाढ़ी पर आ रहा था। त्रायन की तरह वह भी वर्षा में जॉन के पीछे पीछे गया था—और उसी की तरह व्यर्थ।

"ईश्वर का यह सृष्टि रचना का कार्य्य भी ऐसा ही व्यर्थ का कार्य्य है," ब्रायन सोच रहा था। "उसने इतनी चीजों की रचना की है, जिनका व्यवहारिक मूल्य कुछ भी नहीं तो भी वे ही सर्वाधिक सुन्दर हैं। तर्कानुकूल कहना हो, तो आदमी का जीवन एक व्यर्थ की रचना है, उतनी ही बेकार और व्यर्थ जितना बेकार मेरा तथा पिता का जॉन के प्रति व्यवहार। लेकिन जीवन का उत्साह बड़ी ही शानदार वस्तु है। यह व्यथ है सही, किन्तु इसका सौन्दर्य सर्वोपरि है।"

"ब्रायन, तुम्हें ठण्ड न लग जाये," पादरी बोला।

"चिन्ता न कीजिये, मुझे नहीं लगेगी," उसने उत्तर दिया। "रोगिणी कैसी है?"

"उसे ज्वर आ गया है। तुम्हारी माँ ने उसके लिये कुछ चाय बनाई है और वह उसकी सेवा कर रही है। ब्रायन, तुम उसे अपनी मोटर में बिठा कर ले आये हो। ईश्वर तुम्हारा भला करेगा। उस अभागिनी को तुम्हारी सहायता की बुरी तरह आवश्यकता थी।"

घड़ी ने रात के बारह बजा दिये।

१८

जॉन ने दरवाजे पर दस्तक दी। वह पादरी और ब्रायन को धन्यवाद देने के लिये अगले दिन तक की प्रतीक्षा न कर सका। गत चौबीस घण्टों में उस पर जो-जो विपत्तियाँ आई थीं, उनके कारण उसका मन अपने सहायकों के प्रति मात्र कृतज्ञता की भावना से भरा था। उसे प्रसन्नता थी कि सुसाना को कहीं सिर छिपाने की जगह मिल गई है और अधिक विपत्ति नहीं आई।

ब्रायन आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर ध्यान से देख रहा था। उसने वाक्य के बीच में ही उसे रोक कर कहा—

"पिताजी, जब भी कभी मेरा फन्तना आना होगा, मैं सदैव आपके साथ ठहर सकता हूँ। जो रुपया मैंने आपको दिया था, वह जॉन को दे दें। वह एक घर बना ले। मेरी अपेक्षा उसे घर की कहीं ज्यादा जरूरत है।"

पादरी ने लिफाफा हाथ में लिया और बड़ी ही सरलता से उसे जॉन के हाथ में थमा दिया—वैसे ही जैसे सभी महान् कार्य होते हैं। उसने कोई सुझाव नहीं दिये, कोई उपदेश नहीं दिया; केवल लिफाफा दे दिया। जॉन ने उसे खोला। उसे विश्वास नहीं था कि वह इस बात को समझ सका है। जब उसने बैंक के नोटों का बण्डल देखा तो उसकी आँखें ऐसे खुल गईं मानों वह कोई करिश्मा देख रहा हो। उसने बोलना चाहा, किन्तु उसके पास शब्द न थे। उसने लिफाफे को दोनों हाथों से पकड़ा और चुप रह गया।

"ब्रायन को धन्यवाद दो," पादरी ने कुछ देर रुककर कहा। "तब जाकर सो जाओ। रुपया सुसाना को दे दो। स्त्रियाँ रुपये को अधिक अच्छी तरह संभाल कर रख सकती हैं।"

"शायद मारित्ज़ अब एक शराब का गिलास पसन्द करेगा। अब वह फन्तना में ज़मीन का मालिक हो गया है," सरकारी वकील बोला।

पादरी की स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया। जॉन ने अपने ओठों से गिलास हटा लिया और उसकी ओर देखा। वह बोली—"सुसाना अब अच्छी हालत में है।" तब वह पादरी को एक ओर ले गई और उसके कान में कुछ फुसफुस करके कहा। बूढ़े आदमी ने क्रोधी चेहरा बनाया, और तब मुस्करा दिया। जॉन उसकी ओर ध्यान से देखने लगा।

"घबराओ मत। कुछ बुरा समाचार नहीं है," पादरी बोला। "मेरी स्त्री ने बताया है कि तुम पिता होने जा रहे हो। तुम्हें पहले विवाहित हो जाना होगा।"

जॉन ने ब्रायन और सरकारी वकील से हाथ मिलाया और बाहर चला गया। वर्षा अभी भी जारी थी। वह बरामदे में रुका और उसने रुपये को भीगने से बचाने के लिये अपनी कमीज से लपेट लिया। लिफाफा नरम और गरम था। अपनी बगल के नीचे अपनी देह से उसे सटाये हुए जॉन को अपना घर और उसकी चौहद्दी, बाग और कुआँ ठीक उसी प्रकार ऊपर उठते हुए दिखाई दिये जिस प्रकार उसने उनकी कल्पना की थी। उसने देखा, सुसाना घर में पड़ी सो रही है। रुपया उसके तकिये के नीचे रख, वह स्वयं बाहर घास में सोने के लिये चला गया।

जिस समय जॉन सीटी बजाता हुआ, पुस्तकालय की खिड़की के नीचे से गुजरा, उस समय पादरी ब्रायन से कह रहा था—

"मुझे अभी उससे विवाह की बात नहीं करनी चाहिये थी। सुसाना की माँ की लाश अस्पताल में पड़ी है। उसका खूनी बाप अस्पताल में कैद है। शादी करने की बात करने का यह ठीक अवसर नहीं था।"

"वे इस विषय में कुछ नहीं जानते," ब्रायन बोला। "वे भविष्य के लिये योजना बनाने में मस्त हैं। उनका आपस में प्रेम है, और उन्हें वह रुपया मिल गया है, जिसका वे स्वप्न देखते रहे हैं। वे प्रसन्न हैं।"

"हाँ, वे प्रसन्न हैं। किन्तु वास्तव में उन्हें सारा समय दुःखी होना चाहिये।"

"यह सही है," सरकारी वकील बोला। "हमारे लिये, जिन्हें सब कुछ मालूम है, उनकी वर्तमान प्रसन्नता एकदम निस्सार है।"

"तमाम मानवी-प्रसन्नता विश्लेषण करने पर निस्सार सिद्ध होती है," ब्रायन कह उठा।

घड़ी ने एक बजाया। फन्ताना में, फादर कोरग के पुस्तकालय में बैठे तीनों आदमी घड़ी की टक-टक और बरसते पानी की टप-टप की आवाज सुन रहे थे।

प्रथम खण्ड

१६

दो वर्ष बीतने पर जरगु जारडन कारागार से मुक्त हुआ। जिस जगह से वह तेइस वर्ष पहले आया था, उसे वहीं वापिस जाना था। बिदा होने से पहले वह फिर घर बेच डालने के लिये फन्तना गया। उस दिन गाँव के बाज़ार में से इधर से उधर जाते हुए पुलिस-सेना के स्थानीय अधिकारी की नजर उस लाल खपरैलवाले घर पर पड़ी तो उसने देखा कि जो खिड़कियाँ सदैव बन्द रहती थीं, खुली पड़ी हैं। यह देखने के लिये कि क्या हो रहा है, वह अन्दर चला गया। जरगु घर के पिछवाड़े अपनी चीज़ों को बक्सों में बन्द कर रहा था।

"मिस्टर जॉरडन, यह स्पष्ट ही है कि तुम्हारे पास बहुत धन है। इतनी जल्दी बाहर आने के लिये उसमें से काफी खर्च हो गया होगा।"

शैतान ने उसे आँख उठा कर देखा।

"मैं नहीं समझा," उसने उपेक्षा से कहा।

"मैं पूछ रहा था कि तुम्हें बाहर आने के लिये क्या कुछ देना पड़ा। तुम दस वर्ष तक अन्दर रहनेवाले थे।"

जरगु ने हथौड़ा रख दिया। अपनी हरी जाकेट की जेब से एक कागज निकाला और सार्जेण्ट की ओर फेंक कर फिर अपने काम में जा लगा। तब उसने जरा जोर से कहा—

"यह तुम्हें यह दिखाने के लिये है कि तुम किससे बातें कर रहे हो। मैं कुछ ही दिनों में रक्षक-दल में एक बिना कमीशन के अफ़सर की वर्दी पहननेवाला हूँ। मैं जर्मन-नागरिक हूँ और मैं अपने (पितृ) देश के प्रति अपना कर्त्तव्य निबाहने जा रहा हूँ। अब तुम समझे कि मुझे क्यों कारागार से मुक्ति मिली है। यह वह बात नहीं है जो तुम समझ बैठे थे।"

सारजेण्ट ने जरगु का भरती-आज्ञापत्र पढ़ा। वह जानता था कि यदि जर्मन नागरिक अपने यहाँ लौटकर सेना में भरती होने के लिये तैयार हों तो उनकी सजा रद्द हो सकती है। उसने कागज को मोड़ा और मुस्कराते हुए उस शैतान को वापिस लौटा दिया।

"इसे भी पढ़ो," एक और कागज निकाल कर देते हुए जरगु बोला। यह धन्यवाद का पत्र था। शैतान ने अपनी सारी सम्पत्ति, एक टैंक का मूल्य चुकाने के लिये, जर्मन-सेना को भेंट कर दी थी। बुखारेस्ट-स्थित जर्मन राजदूत ने उसे जेल में धन्यवाद का पत्र भेजा था। सारजेण्ट ने उसे खोला, किन्तु क्योंकि वह जर्मन भाषा में लिखा हुआ था, इसलिये वह उसे पढ़ न सका। तो भी उसने बाज और स्वस्तिका वाले पत्र के शिखर को ध्यान से देखा और उसके नीचे लगी हुई सरकारी मोहर को।

"क्या तुम इस घर को रख रहे हो, अथवा इसे बेचने जा रहे हो?" सारजेण्ट ने पूछा।

"मेरे रुपये से जो टैंक खरीदा गया था, उसकी अग्नि-परीक्षा हो चुकी है," जरगु ने प्रश्न की उपेक्षा करते हुए कहा। "मैं भी शीघ्र ही उसी रास्ते जाऊँगा। मैं अब जवान नहीं रहा हूँ फिर भी शक्तिशाली-जर्मन पार्लियामेंट को मेरी आवश्यकता है।"

जरगु ने कागजों को इकट्ठा कर अपनी जेब में रख लिया। तब अपना हथौड़ा ले वह सामान भरे बक्सों में कीलें ठोंकने लगा। उसने सारजेण्ट की ओर और ध्यान नहीं दिया।

जब सारजेण्ट ने "विदा" चाही तो उसने बिना उसकी ओर देखे अपनी भाषा में कुछ अस्पष्ट शब्द कहे।

२०

जरगु के आँगन से निकल कर सारजेण्ट सराय की ओर बढ़ा। यह मई महीने का मध्य था। वह गाँव के बाजार की ओर बढ़ा। अपने बूटों का उसे ध्यान था कि कहीं उन पर धूल न चढ़ जाय। वह चाहता था कि उसके जूते शीशे की तरह चमकते रहें। उसे स्त्री भी अच्छी लगती थी, और ब्राण्डी भी। आजकल उसे सराय के यहूदी से ब्रांडी मुफ्त में ही मिल जाती थी। "यदि बीच-बीच में वे नये नये कानून न बनायें," वह सोचने लगा, "तो सारजेण्ट प्यासे ही मर जायें।" लेकिन राज्य इसका ख्याल रखता है। जनवरी में उसे आज्ञा मिली थी कि वह गाँव के सारे यहूदियों को इकट्ठा करके 'लेबर-कैम्प' में भेज दे। पान्तना में केवल एक यहूदी था, गोल्डनबर्ग, सराय का मालिक। सारजेण्ट ने उसे वह खुफिया आज्ञा-पत्र दिखा दिया, और बाद में अफसोस करने लगा। बाद में उसने इस पर विचार किया और सोचा कि ठीक ही किया। हर तीसरे महीने वह एक डाक्टरी-सार्टिफिकट भेज देता था, जिस में लिखा होता कि यहूदी गोल्डन-बर्ग बीमार है और 'लेबर-कैम्प' में काम करने की स्थिति में नहीं है। इसके बदले में उसे सराय के मालिक से हर महीने तीन हजार 'ली' मिल जाते थे। इसका मतलब था कि उसका वेतन दुगुना हो गया और वह आराम से रह सकता था। इसके अतिरिक्त उसे ऐसा भी लगता था कि वह एक अच्छा काम कर रहा है। लेबर-कैम्प में बेगार न करके बूढ़ा गोल्डन-बर्ग घर पर रहकर मजे से अपना काम चला रहा है।

जब वह ब्रांडी का एक गिलास खाली कर चुका, तो सारजेण्ट ने खिड़की का पर्दा खिसका कर खिड़की के शीशे में से यहूदी के रहने के कमरे में झाँका। वह सराय के मालिक की लड़की रोसा को देखना चाहता था और प्रतिदिन की तरह गुडमार्निङ्ग कहना। रोसा की चमड़ी मलाई जैसी नरम और सफेद थी। जब सारजेण्ट उसकी बाँह में उँगली गड़ाता

तो उसे ऐसा लगता था कि मानों वह मखमल में उँगली गड़ा रहा है। रासा की चमड़ी किसी किसान-कुमारी की चमड़ी के समान नहीं थी। प्राय: वह खिड़की पर बैठी उपन्यास पढ़ती रहती। लेकिन आज वह अपने पास बैठे एक तरुण से बात-चीत कर रही थी।

"यह कौन है?" सारजेण्ट ने थोड़े कठोर स्वर में पूछा। बूढ़ा गोल्डन-बर्ग सच्ची बात बताने अथवा न बताने के विषय में सन्दिग्ध था। अन्त में उसने निर्णय कर लिया।

"यह मेरा पुत्र मरकु है जो अभी तक पेरिस में रहा है।"

"मैं उससे मिलना चाहूँगा," सारजेण्ट ने कहा। वह आज तक किसी ऐसे तरुण से नहीं मिला था, जो पेरिस में रहा हो। उसने सोचा, शायद एक-आध चीज हाथ लग जाय। लेकिन मरकु गोल्डन-बर्ग मिलनसार स्वभाव का न था। उसके मुँह से जबर्दस्ती शब्द निकालना पड़ता था। सारजेण्ट को निराशा हुई। उसे यह आशा नहीं थी कि पेरिस में पढ़नेवाला तरुण ऐसा निकलेगा, किन्तु इसमें कुछ अजीब मन-हूसियत थी। उसने सारजेण्ट का दिया हुआ ब्रांडी का गिलास तक नहीं पिया। एक अप्रिय तरुण तो भी, सराय से विदा होते समय सारजेन्ट ने मरकु से कहा।

"आज शाम को चौकी पर आना। हम लोग ताश खेलेंगे।"

तब वह चला गया। जाते जाते यही सोचता गया कि उस लड़के को पेरिस भेजने में यहूदी ने अपना पैसा व्यर्थ बर्बाद किया था।

२१

जॉन मारित्ज़ के घर के पास से गुजरते समय सारजेण्ट रुक गया। आंगन में सुसाना ईंटें बनाने के लिये मिट्टी मसल रही थी। दो वर्ष में जॉन ने एक घर बना लिया था। उसने और उसकी पत्नी ने दिन-रात

काम किया था। यह एक सुन्दर ऊँचा मकान था और इसमें एक बरामदा भी था।

"तुम अभी ईंटें किसलिये बना रही हो? घर तो तुम्हारा बन चुका, क्या नहीं?" सारजेण्ट बोला। वह आँगन में चला जाना चाहता था, लेकिन दरवाजे में ताला लगा था।

"हम गाय-बैलों के लिये एक घर बना रहे हैं," उसने उत्तर दिया और अपने पाँव से मिट्टी मसलने के काम में लगी रही। सारजेण्ट उसकी पिंडलियों की सफेदी देख सकता था।

"तुम्हारा पति घर पर नहीं है?" उसने पूछा।

"जानी नीचे चक्की पर गया है," उसने हँसते हुए उत्तर दिया।

आँगन के सिरे पर जॉन के दोनों बच्चे धूप सेक रहे थे। छोटा पिंघूड़े में था, बड़ा जमीन पर खेल रहा था। सुसाना अपने पैरों से जिस मिट्टी को मसल रही थी, उसमें नया पानी डालने से पहले बीच-बीच में उन दोनों को एक नजर देख लेती थी। उसका वस्त्र अत्यधिक कसा था, जिससे उसके नितंबों की गोलाकृति बिलकुल स्पष्ट थी।

सारजेण्ट ने फिर दरवाजा खोलने की कोशिश की। वह भूल गया था कि दरवाजे में ताला लगा है।

"क्या तुम मुझे अन्दर न आने दोगी?" उसने पूछा।

"तुम जहाँ हो, वहीं अच्छे हो।"

"मुझे तुम कभी अकेली नहीं मिलती। इस समय तुम्हारा पति भी घर पर नहीं है और तब भी तुम ताला भी नहीं खोल रही हो!"

"मैं नहीं ही खोल रही हूँ। और अब तुम्हें उस दरवाजे पर खड़े हुए काफी देर हो गई है। आगे बढ़ो।"

"आओ, ज़रा देर के लिये खोल दो। इतनी अशिष्ट न बनो।"

"जानी किसी भी समय आ सकता है। यदि वह तुम्हें यहाँ देख लेगा तो वह उस कुल्हाड़ी से तुम्हारा पीछा करेगा।"

"क्या तुम्हें इसके लिये अफसोस होगा?"

"ऐसा लगता है कि तुम इससे अच्छे प्रश्न नहीं पूछ सकते। तुम्हारे लिये अब यही अच्छा है कि और कुछ मुँह से निकालो और अपने चक्कर लगाओ। जानी किसी भी समय यहाँ आ सकता है।"

"मैं तुमसे केवल एक बात और पूछूँगा, और तब चला जाऊँगा।"

"बोलो।" उसने मिट्टी मसलना छोड़ दिया और कमर पर हाथ रख कर खड़ी हो गई।

"यदि तुम्हें अपने पति की प्रतीक्षा न हो, तो क्या तुम मेरे अन्दर आने के लिये ताला खोल दोगी?"

"तुम्हारा यह प्रश्न सीमा के परे है," सुसाना अपनी मिट्टी मसलने के काम को आरम्भ करती हुई बोली। अभी तक उसने कभी इस बात पर विचार नहीं किया था कि यदि जॉन विशेष दूरी पर हो और सारजेण्ट उसके पास आये, तो उसे क्या करना होगा।

"अब तुम एक विवाहित स्त्री हो," वह बोला। अब तुम्हें डर किस बात का?"

"यहाँ से चले जाओ, और मुझे अकेली रहने दो," उसने थोड़े क्रोध से कहा।

"जब तक तुम मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देती, मैं नहीं जाऊँगा। यदि तुम्हें अपने पति के आने का डर नहीं होता, तो क्या तब भी तुम मुझे दरवाजे से बाहर ही रखतीं?"

"सारजेण्ट! मैं नहीं जानती," उसने दो टूक उत्तर दिया।

"या 'हाँ' कहो, या 'नहीं' कहो, अन्यथा मैं नहीं जाऊँगा।" उसने अपनी कोहनियाँ दरवाजे पर टिका दीं और प्रतीक्षा करने लगा।

"तुम यह क्यों जानना चाहते हो," वह बोली। "जानी कभी नहीं जाता है।"

"मान लो, वह चला जाय?"

"यह देखने की बात है," वह बोली। लेकिन जानी नहीं जा रहा है। अभी तो हमें गऊ-बैलों का घर बनाना है, फिर कुआँ बाँधना है। जब हमें यहाँ इतना काम करने को है तो उसे क्यों जाना है ?"

सारजेण्ट की आँखें चमक उठीं। वह दरवाजे पर से हट गया। जाता-जाता बोला—

"मैं जानता था कि तुम एक अच्छी लड़की हो।"

सारजेण्ट उसे छोड़कर चला गया। सुसाना को उस चले जाते सारजेण्ट की सीटी सुनाई दे रही थी। डर के मारे उसने कान बंद कर दिया। उसने अपने पैरों से मिट्टी झाड़ी और बच्चों की ओर भागी। बड़े बच्चे को हाथों से उठाकर उसने उसे अपनी छाती से लगा लिया। उसे लगा मानो उसने कोई पाप किया हो, मानो उसने कोई ऐसा दुष्कर्म किया हो जो उसे नहीं करना चाहिये था, कोई ऐसा कृत्य जिसका फल जान और उसके बच्चों के लिये अच्छा न होगा। 'क्या मैंने वास्तव में कोई गलती की है ?" वह सोचने लगी। "मैं व्यर्थ ही घबरा उठी हूँ।" उसने बच्चे को नीचे रख दिया। "कुछ भी गलती तो नहीं हुई," उसने अपने मन में सोचा, और अपने कपड़ों को अपने घुटनों से ऊपर खोंस कर वह फिर मिट्टी मसलने के काम में लग गई।

२२

एक सप्ताह के बाद चौकी से एक सैनिक सिपाही आया और उसने जॉन मॉरिट्ज़ के दरवाज़े पर टक-टक की। जॉन खाना खा रहा था। उसने खिड़की से बाहर देखा तो उसे सैनिक सिपाही की टोपी दिखलाई दी। "मैं जाकर देखूंगा कि उसे क्या चाहिये," उसने मन में सोचा।

जब वह लौटा तो उसके हाथ में एक लिखा-पत्र था। ज्यों ही उसने बैठकर फिर खाना आरम्भ किया, सुसाना ने पूछा—

"उसने तुम्हें क्या कागज दिया है ?"

जॉन जिस कौर को चबा रहा था, उसे निगल गया और बोला—"एक जब्ती की आज्ञा है। हम खाना खाने के बाद देखते हैं कि राज्य अब इस बार हमसे क्या चाहता है ?" वह पर्याप्त शान्त था। वह जानता था कि सभी किसानों को इस प्रकार के घोड़ों, गाड़ियों और पशुओं की जब्ती के आज्ञापत्र मिल रहे हैं। किन्तु उसके पास न घोड़े थे और न कोई गाड़ी थी। उसे खुशी थी कि उसने अभी तक कोई घोड़ा या गाड़ी नहीं खरीदी थी। यदि उसके पास होते तो राज्य उन्हें जब्त कर लेता और उसे अभी भी पैदल ही चलना पड़ता। "शायद राज्य मुझसे मकई या गेहूं का एक बोरा चाहता है," जॉन सोचने लगा। वह जानता था कि उन्होंने गेहूँ की जब्ती भी आरम्भ की है। जब वह खाना खा चुका तो जॉन ने अपने हाथ पोंछे। वह नहीं चाहता था कि जो कागज सैनिक-सिपाही लाया था, वह उसे खराब कर दे। उसने उसे खोला और पढ़ना आरम्भ किया। सुसाना की आँख उसके चेहरे पर गड़ी रही। पहले वह लाल हुआ, फिर सफेद हुआ और फिर दुबारा गहरा लाल हो गया।

"वे क्या कहते हैं ?" सुसाना ने पूछा। बच्चे चुपचाप अपने पिता की ओर देख रहे थे। जॉन अपने हाथों को सिर के नीचे रख बिस्तर पर फैल कर लेट गया।

जॉन की चुप्पी से बेचैन हुई सुसाना बोली—

"क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि यह किस बारे में है ?"

"तुम्हें बताने से कुछ लाभ नहीं है। तुम इसे समझोगी नहीं। मैं स्वयं भी इसे नहीं समझता।"

"जानी, यह तो बड़ा बुरा समाचार है।"

"क्वारटर-मास्टर के क्लार्क ने निश्चय से गलती की होगी," जॉन बोला। "रेजिमेंट के ये क्लार्क काम करते हुए दूसरी-दूसरी बातें सोचते

रहते हैं।" उसने सुसाना के हाथ में आज्ञा-पत्र थमा दिया। "तुम इस का क्या अर्थ लगाती हो? मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यह ज़ब्ती का कागज है। इससे पहले भी दो आ चुके हैं। एक बार गेहूँ का और दूसरी बार जब हमने निकोले पोरफिरी से बोरे खरीदे थे। लेकिन इस बार न यह गेहूँ की जब्ती का आज्ञा-पत्र है, न बोरों की जब्ती का। इस बार यह मेरी जब्ती का आज्ञा-पत्र है। वे एक आदमी को कैसे जब्त कर सकते हैं? क्या यह बात तुम्हारी समझ में आती है?"

सुसाना धीरे-धीरे पढ़ रही थी। जॉन बे-सबर हो उठा। उसने उसके हाथ से कागज खींच लिया और उसे पढ़ सुनाया। तब वह बोला—

"वे मेरी ज़ब्ती कैसे कर सकते हैं? आख़िरकार मैं एक आदमी हूँ। तुम घोड़ों को ज़ब्त कर सकते हो, घरों को कर सकते हो, गाय-बैल को कर सकते हो, बोरों को कर सकते हो, किन्तु आदमियों को नहीं। लेकिन, तो भी देखो, यहाँ मेरा नाम लिखा है। वे क्लार्क पागल हो गये होंगे।"

"तो वे तुमसे क्या चाहते हैं?" सुसाना ने पूछा।

"मुझे कल प्रातःकाल सात बजे चौकी पर हाजिर होना होगा।"

"तुम्हारी बात निश्चय से ठीक होगी," सुसाना बोली। क्लार्कों ने कुछ न कुछ गलती अवश्य की होगी।

"हाँ, यह तो होगा ही," जॉन बोला। लेकिन उसके दिमाग में एक सन्देह ने घर कर लिया था। वह सोच रहा था—"शायद यह क्लार्कों की गलती न हो।" वह चलने की तैयारी करने लगा, मानो वह अपनी सैनिक-ड्यूटी पर जा रहा हो। यदि, कहीं, यह जब्ती का आज्ञा-पत्र ठीक ही हुआ तो वे शायद उसे एक या दो महीने रोक रखें।

२३

अपराह्न भर जॉन सुसाना से झगड़ा मोल लेता रहा। उसने जॉन की चिन्ता न की। वह जानती थी कि उस आज्ञा-पत्र के कारण वह चिड़चिड़ा हो गया है। शाम को जॉन ने आज्ञा-पत्र लिया और उसे मैला होने से बचाने के लिये, अखबार के एक कागज में लपेट कर अपनी जेब में रख लिया।

"मैं यह आज्ञा-पत्र फादर कोरग को दिखाने जा रहा हूँ," आँगन से निकलते-निकलते वह बोला।

फादर कोरग घर पर नहीं था। आँगन में खड़ी उसकी पत्नी ने बताया कि फादर नगर में गया है और उसके देर से लौटने की आशा है।

जॉन ने उस आज्ञा-पत्र की बात कहनी चाही। किन्तु, फिर उसका विचार बदल गया। उसने उसका हाथ चूमा और बिदा ली।

गली में कुत्ते भौंक रहे थे। अँधेरा हो चला था। जॉन का पैर एक पत्थर से टकराया। उसने एक क़सम खाई और जल्दी से घर की ओर बढ़ा।

२४

रात बेचैनी से कटी। ज्यों ही जॉन बिस्तर पर जाकर लेटा, उसे दुश्चिन्ताओं ने आ घेरा। सुसाना उसके पास सरक गई और अपनी बाँह उसके गले में डाल दी। वह उसे चिन्ता-मुक्त करना चाहती थी, किन्तु वह अत्यधिक चिन्तित था। उसने झटका देकर अपने आपको उसके बंधन से छुड़ा लिया और उसकी ओर पीठ कर ली। लेकिन इस

से वह विचार-मुक्त नहीं हुआ। हज़ारों दुश्चिन्ताओं ने उसे आकर घेर लिया। खेत पर करने के इतने काम थे कि सारा दिन और सारी रात काम करके भी उन्हें समाप्त करना सम्भव न था। लेकिन, अचानक, इस प्रकार चल देने के लिये मजबूर होना, बिना यह जाने कि कितने समय के लिये, और सभी चीज़ों को जैसा का तैसा छोड़कर चल देने के लिये मजबूर होना, बड़ा ही भयानक था। वह निराश हो गया। यह वैसा ही था, मानों सभी चीज़ों को अस्तव्यस्त छोड़कर संसार से चल देना। बिदा लेने से पहले कितनी बातों की व्यवस्था करनी आवश्यक थी।

ये और ऐसे ही दूसरे विचार जॉन को कष्ट देने लगे। कुछ ही दिन पहले उसने इमारती लकड़ी का एक ढेर खरीदा था। उसने उसकी कीमत चुका दी थी, उसे काट डाला था और जंगल में अच्छी तरह चुन कर रख दिया था। अब इसे केवल ढोकर घर ले जाना बाकी था लेकिन अब इसे वहीं छोड़कर चला जाना पड़ रहा था। यह अच्छी इमारती लकड़ी थी और इस पर काफी रुपया लगा था। वह इसे अपने आँगन में आया भी न देख सकता था। उसने यह भी निर्णय कर लिया था कि वह इस लकड़ी को किस जगह रखेगा—चौतरफा झाड़ी के पास, क्योंकि लट्ठे बड़े-बड़े थे। और अब उसे सब कुछ छोड़ कर चले जाना होगा। वह तमाम इमारती लकड़ी, जिसकी कीमत चुका दी गई और जो कट कर तैयार हो गई—जंगल में पड़ी रहने देनी पड़ी।

जॉन ने सुसाना की ओर ध्यान दिया। वह उस तमाम इमारती लकड़ी को यूं ही वहीं छोड़ देगा। उस लकड़ी के वहाँ रखी होने की बात का तो क्या कहना, सुसाना को यह भी पता नहीं था कि उसने वह लकड़ी खरीदी है। उसे वह लकड़ी जंगल में ढूंढ़नी पड़ेगी। सुसाना पड़ी सो रही थी। जॉन ने उसके कन्धे को हाथ लगाया।

"मुझे उसे बताना होगा कि नदी से कोई दो सौ गज़ के फासले पर,

अपने प्रदेश की सीमा पर, वह लकड़ी रखी है। वहीं दूसरी ढेरियाँ भी हैं। यदि मैं अच्छी तरह समझा न दूं तो उसे यह पता नहीं लगेगा कि हमारी ढेरी कौन-सी है,' जॉन सोच रहा था। सुसाना ने अपने कन्धे पर उसके हाथ का स्पर्श अनुभव किया। वह निद्रा में ही मुस्कराई। पूर्णिमा की रात थी। कमरे में सभी कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जॉन अच्छी तरह जानता था कि अकेली सुसाना किसी भी तरह उस लकड़ी को ढोकर घर नहीं ला सकती। यह किसी औरत का काम न था। "लेकिन उसे इतना तो मालूम हो जाना चाहिये कि मैंने उसे खरीदा है। वह जाकर उसे देख तो ले। यह बात तो मुझे उसे बता ही देनी चाहिये।"

जॉन ने सुसाना के नंगे कंधे को जरा ज़ोर से दबाया। वह फिर मुस्कराई। चन्द्रमा के प्रकाश में जॉन को उसका चेहरा स्पष्ट दिखाई दिया। वह मुस्करा रही थी और अपने होठों को अपनी जिह्वा से गीला कर रही थी। जॉन का उसे जगाने का दिल नहीं हुआ। वह एक बच्चे की तरह मीठी नींद सो रही थी। इसके बजाय उसने सोचा कि वह प्रातःकाल जल्दी उठेगा और तब उसे समझा देगा कि उसे लकड़ी कैसे, कहाँ मिलेगी। उसने अपना हाथ खींच लिया और अपनी पीठ फेर ली। आम तौर पर इस तरह लेटने पर उसे आसानी से नींद आ जाती थी, किन्तु आज उसे चैन न थी। फिर उसे आज्ञा-पत्र का ख्याल आया। लकड़ी की चिन्ता में वह आज्ञा-पत्र की बात भूल गया था। उसके तन-बदन में आग लगी हुई थी। जॉन ने एक सीमा-रक्षक के तौर पर अपनी सैनिक-ड्यूटी की थी। वहीं उसने सरबिया की भाषा सीखी थी। वह सेना के कायदे-कानूनों से परिचित था, और वे रात भर में बदल नहीं सकते थे। गाड़ियों, पशुओं, हलों और लारियों की तरह आदमियों की कभी जब्ती नहीं होती थी। जॉन ने अपनी कनपटी को रगड़ा और निश्चय किया कि वह अब इस विषय में और अधिक हैरान नहीं होगा। प्रातःकाल वह पता लगायेगा कि वास्तविक बात क्या है। हो सकता है कि यह किसी की गलती हो और उसके ये सारे संकल्प-

विकल्प बेकार ही हो। यह भी असम्भव नहीं कि कोई कम्पनी-क्लर्क ही उसके साथ यह गन्दा मज़ाक कर रहा हो। उसने उसके पास बुलावे के कागज़ों की जगह ज़ब्ती के कागज़ भेज दिये हों।

उसका मन ज़रा शान्त हुआ ही था कि उसे याद आया कि उसे अन्तोन बाल्ता से पाँच सौ ली लेने हैं। वह नहीं जानता था कि उसे कितना समय बाहर रहना पड़ेगा और घर पर सुसाना को रुपये की आवश्यकता हो सकती है। हो सकता है कि सुबह उसे याद ही नहीं रहे, इसलिये उसने अभी सुसाना को कह देना चाहा। सुसाना उसके बाईं तरफ तकिये से चिपटी सो रही थी।

'पता नहीं, इस समय वह क्या स्वप्न देख रही है' उसने अपने मन में सोचा। अभी भी उसका मन उसे जगाने का नहीं हुआ। उसने सोचा, यह बात भी वह उसे प्रातःकाल ही बता देगा।

उसे ध्यान आया कि यदि वह कुँए की दीवार को समाप्त नहीं कर देगा तो वर्षा होने पर वह पोली हो जायगी। 'शायद मैं वर्षा-ऋतु से पहले वापिस आ जाऊँ' सोच उसने विचार करना बन्द कर दिया। उसके बजाय उसे गऊ-बैल के घर के लिये ईंटों की याद आई। यह एक ऐसा काम था, जो वह अधूरा नहीं छोड़ सकता था। अभी तक वह आठ सौ ईंटें पाथ चुका था और उसने उन्हें घर की दीवार के सहारे एक के ऊपर एक सूखने के लिये रख दिया था। अब उन्हें पकाना था। यदि उन्हें बहुत दिनों तक सूखने दिया जायगा तो वे भुरभुरा जायेंगी और सारा किया-कराया बेकार हो जायगा। बेचैनी के मारे वह अपने बिस्तर में इधर से उधर होता रहा। उसने सुसाना से परामर्श करने की इच्छा से उसकी ओर देखा। निद्रा में वह अनावरण हो गई थी और तकिये में अपना सिर दिये सो रही थी। जॉन की समझ में आया कि वह किसी प्रकार उसकी सहायता नहीं कर सकती। उसे जगाने से कोई लाभ नहीं। यह भी पुरुष के ही करने का काम था। उसने गाँव के अपने सब मित्रों को एक-एक करके याद किया। उनमें से कोई एक

भी नहीं था, जो उसकी ईंटें पका दे। सभी के अपने-अपने घर थे और सभी का अपना-अपना काम था। दिन होता तो वह एक-दो से पूछता, किन्तु अब आधी रात के समय में सभी सो रहे थे। वह उन्हें अपनी ईंटों की बात कहने भर के लिये नहीं जगा सकता था। 'मैं ईंटों को घास से ढक दूँगा। तब वह बहुत जल्दी नहीं सूखेंगी, और हो सकता है कि कुछ सप्ताह और पड़ी रहें,' जॉन ने सोचा। 'तब तक मैं लौट भी आ सकता हूँ।' जॉन उठ खड़ा हुआ। दरवाजा खुला था। वह बाहर बरामदे में चला गया। उसके बदन पर कोई कपड़ा न था। उसने सोचा कि वह वापिस जाकर अपनी कमीज और पाजामा पहन आये, किन्तु उसे डर था कि कहीं उसकी पत्नी और बच्चों की आँख न खुल जाय। उसने एक ईंट उठाई और चन्द्रमा के प्रकाश में उसे देखने लगा, तब उसने ध्यान से उसके स्पर्श का अनुभव किया। अधिक से अधिक दो या तीन दिन में ही इसे पकाना होगा।

वह कुएँ की ओर गया और सारे आँगन में घूमा। उसे अपने नंगे होने का तनिक ध्यान न था। उसने घर की दीवारों की ओर देखा, और उसकी छत की ओर। सभी कुछ इतना स्पष्ट दिखाई दे रहा था, जितना दिन में। चन्द्रमा चिरकाल के बाद इतना अधिक प्रकाशित हुआ था।

जॉन भूल गया कि उसे बिदा होना है। उसने गऊ-बैलों के घर के बनाने के बारे में सोचना शुरू किया। वह दो बैल खरीदेगा, एक गाड़ी, घोड़े और तब एक गऊ। इस समय तक वह आँगन के सिरे पर पहुँच चुका था, जहाँ सींकों का ढेर पड़ा था। उसने दोनों हाथों से उनको से उठाया और ईंटों के पास लाकर डाल दिया। वह जानता था कि कल सुसाना उन्हें ढकेगी; किन्तु क्योंकि वह ढेर के पास पहुँच गया था, इसलिये वह उन्हें उठा लाया। 'हाथ के पास होने से सुसाना का काम आसान हो जायगा।' तब वह घास लाया और उसने ईंटों को ढकना आरम्भ कर दिया। जल्दी ही वह गरमा गया, क्योंकि उसने तेजी

से काम किया था। मुर्गे की बाँग सुन कर वह चौंका। उसने सड़क की ओर देखा और उसे अचानक हर चीज का ध्यान हो आया। उसे ध्यान आया कि वह आँगन के बीचोबीच अलिफ नंगा खड़ा है, जिससे उसे लज्जा लगी। वह ईंटों को ढक चुका था। वह अन्दर गया और कमरे के बीच में जाकर रुका। सुसाना का नंगा बदन बे-ढंगे तौर पर बिस्तर में पड़ा था। जॉन बिना उसे जगाये उसके पास जा लेटा। सुसाना को अभी भी उसका कुछ पता न था। उसने अपनी टाँग जॉन की टाँग पर बढ़ा दी। जॉन को लगभग तुरन्त नींद आ गई। थोड़ी ही देर बाद वह फिर घबराकर उठ बैठा। उसने अपने चारों ओर देखा। सुसाना अभी भी सो रही थी।

खिड़की के किनारे पर चाँद एक सैनिक-सिपाही की टोपी की तरह लटक रहा था। जॉन मारित्ज़ ने उसकी ओर आँख गड़ा कर देखा और फिर दिन चढ़ने तक वह झपकी न ले सका।

२५

उसी दिन जॉन पुलिस-चौकी की ओर चल दिया। रास्ते में उसे बहुत से किसान मिले। कोई चक्की पर जा रहा था, कोई खेतों की ओर, कोई जंगल को। वह आँख बचा गया। उसे भी चक्की पर और जंगल की ओर जाना था। लेकिन उसे सब कुछ छोड़-छाड़ कर चल देने की आज्ञा मिली थी। उसे जब्त किया गया था। उसने चौकी के दरवाजों पर एक घृणा की दृष्टि डाली। उसके दिमाग में आया कि वह भाग खड़ा हो। यदि वह जंगल में जा छिपे तो सारजेण्ट को कभी उसका पता न लगेगा और उसकी जब्ती न हो सकेगी। लेकिन वह दरवाजे से तनिक नहीं हिला। उसकी स्त्री थी, बच्चे थे और घर था। इसलिये भागने

का प्रश्न ही पैदा नहीं होता था। जॉन आँगन में से होकर गुजरा। सारजेण्ट अपने कमरे में बैठा दाढ़ी बना रहा था। जॉन ने सोचा कि वह उसके दाढ़ी बना चुकने पर ही उससे पूछेगा कि कहीं आज्ञा-पत्र में कुछ गलती तो नहीं हो गई। आँगन में से जले दूध की गन्ध आ रही थी। किसी ने जॉन के कन्धों पर हाथ रखा। उसने घूमकर देखा। यह एक सैनिक सिपाही था, वही नहीं जो आज्ञा-पत्र लाया था; किन्तु दूसरा। सैनिक-सिपाही के दाहिनी ओर था मरकु गोल्डन-बर्ग—गाँव के यहूदी का पुत्र। जॉन ने उन्हें आता नहीं देखा था। वे उसे यकायक दिखाई दिये। उनकी आँखों में उपेक्षा थी, मैत्री न थी। सैनिक सिपाही ने जॉन की गरदन पकड़ी और आलुओं की बोरी की तरह उसे जबर्दस्ती अपने पैरों की ओर झुकाया। जॉन ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की। सोचा—सैनिक-सिपाही मजाक कर रहा है। तब उसने देखा कि मरकु के हाथ उसकी पीठ पर पीछे बँधे हैं।

"कंधे से कंधे मिलाकर," सैनिक सिपाही ने आज्ञा दी।

"मरकु के हाथ बंधे हैं, तो यह मजाक नहीं हो सकता," जॉन सोचने लगा। उसने मरकु के कन्धे के साथ अपना कन्धा सटा दिया। वह डर गया था। हाथ-बंधे आदमी देखकर उसे हमेशा डर लगता था। उसके पीछे सैनिक सिपाही अपनी बन्दूक भर रहा था। बिना पीछे देखे ही जॉन यह बात समझ गया था, क्योंकि वह स्वयं एक सैनिक रह चुका था। सैनिक-सिपाही ने अपनी संगीन चढ़ाई। जॉन समझ गया कि क्या होने जा रहा है। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। जिस समय वह आँगन के बाहर हो रहा था, उसने आफिस की खिड़की पर नजर डाली। सारजेण्ट ने आइने को खिड़की के शीशे के सहारे खड़ा कर रखा था। वह अभी भी दाढ़ी बना रहा था। गांव की गली के किसान उन्हें जाता हुआ देखने के लिये खड़े हो गये। स्त्रियाँ उन्हें देखने के लिये अपने दरवाजों पर खड़ी आ हुईं।

निकोलो पोरफिरी के घर के सामने, गाँव के कुएँ पर से आती हुई

स्त्रियों ने सड़क के बीच अपनी बाल्टियाँ रख दीं और जब आदमी उनके पास से गुजरे तो उन्होंने क्रॉस का चिह्न बनाया। जॉन ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। कोई चीज उसके अन्तर को स्पर्श कर गई थी। वह जानता था कि स्त्रियाँ जब भी कभी देखती हैं कि आदमियों को उनके हाथ बाँध कर संगीनों के आगे-आगे ले जाया जा रहा है तो वह क्रॉस बनाती हैं। जॉन को सैनिक-सिपाही के बूटों की आवाज सुनाई दे रही थी। उसके नपे-तुले कदमों की आवाज के अतिरिक्त वह और कुछ न सुन पाता था। उसका अपना साँस उसे अपना नहीं मालूम हो रहा था। उसका अपना शरीर और उसके विचार तक उसके अपने न थे; सब कुछ किसी दूसरे का था। उसका अपना कुछ भी तो नहीं रहा था।

२६

सैनिक-सिपाहियों के मुखिया का दाढ़ी बनाना समाप्त हुआ। वह सीटी बजाता हुआ आँगन में बाहर आया। आज सुप्रभात था। एक सैनिक-सिपाही ने उस पर पानी गिराया, जिसमें उसने हाथ-मुँह धोया। सैनिक-सिपाही जानता था कि उसका मुखिया किसी स्त्री के पास जा रहा है। उसने एक बार अपनी हजामत बनाई थी, और फिर दूसरी बार।

"श्रीमान्, एक नई है, अच्छा।?" सैनिक-सिपाही ने हँसते हुए पूछा। सारजेण्ट ने अपनी आँख की कनखियों में से देखा और आँख मारी; किंतु कुछ उत्तर नहीं दिया। जब हाथ पोंछ चुका, तो उसने अपनी नई वर्दी पहनी और डेस्क पर जा बैठा। उसने एक फाइल उठाई। उसमें से उस रिपोर्ट की कार्बन-नकल निकाली जिसने आज प्रातःकाल उसे कैदियों के साथ भेजनी थी और पढ़ने लगा—

"हम गारद के साथ आपके पास मरकु गोल्डन-बर्ग, डाक्टर ऑफ

लॉ, आयु ३० वर्ष तथा मारित्ज आयोन, किसान, आयु २८ वर्ष को सादर भिजवा रहे हैं। यह आपके पहले आज्ञा-पत्र में बताये गये उस कानून के अनुसार है, जो जिले भर के यहूदियों और संदिग्ध आदमियों को बटोर कर लेबर-कैम्पों में पहुँचा देने की आज्ञा देता है। (हस्ताक्षर) निकोले दो बरेस्को, फन्तना चौकी का मुख्याधिकारी।"

सारजेण्ट ने एक सन्तोष की साँस लेकर रिपोर्ट को वापिस फाइल में रख दिया। उसने अपनी मूछों पर हाथ फेरा और जेब में से शीशा निकाल कर देखा। तब वह तनकर खड़ा हो गया। बन्दूक कन्धे पर रखी और जॉन मारित्ज के घर की ओर चल पड़ा। आखिर अब सुसाना अकेली थी। पिछले दो वर्ष से वह इस प्रयत्न में था कि सुसाना को अकेला पा सके।

सारजेण्ट ने सीटी बजानी आरम्भ की।

२७

एक घण्टे के बाद वह वापिस लौटा। वह यह कहकर गया था कि वह सारे दिन बाहर रहेगा, किन्तु वह अभी अपने डैस्क पर वापिस चला आया था। उसका बुरा हाल था। वह नहीं जानता था कि अपने आप को शान्त करने के लिये वह क्या करे। डैस्क पर पड़ी हुई पत्र-व्यवहार की फाइल पर उसकी नजर पड़ी, और उसने उसे खोला। उसने उस रिपोर्ट को दुबारा पढ़ा, जो आज ही उसने कैदियों के साथ भेजी थी। वह और भी अधिक उद्विग्न हो उठा। उसे लगा कि वह इसे फाड़ चिंदी चिंदी कर दे। इसके लिखने में उसका सारा समय व्यर्थ गया था। यद्यपि सुसाना अकेली थी, उसने सार्जेंट घुसने न दिया था। जब उसने दरवाजा तोड़ कर अन्दर आने का प्रयत्न किया था तो सुसाना ने एक कुल्हाड़ी

उठा ली थी और उसका सिर खोल देने की बात कही थी। वह मजाक नहीं कर रही थी। सारजेंट स्त्रियों से अपरिचित न था। यदि वह अन्दर घुसा होता, तो सुजाना ने यही किया होता। यही कारण था कि उसने अपना इरादा बदल दिया था और वह वापिस दफ्तर चला आया था। उसके तन बदन में आग लगी थी। मारित्ज को पकड़ाने और उसकी स्त्री पाने के उसके प्रयत्न बेकार सिद्ध हुए थे। उसने उस जब्ती के आज्ञा-पत्र पर पूरी रात बिता दी थी।

"मैंने एक जंगली बत्तख के पीछे पड़कर कागज और स्याही नष्ट की।" अब वह जॉन को गालियाँ और गालियाँ दे रहा था।

२८

बैरक के बीचों-बीच कैदियों की एक पाँति चलने के लिए तैयार खड़ी थी। जॉन ने उनके सुन्दर कपड़ों और उनके चमड़े के सूट-केसों की ओर देखा। उसे थकावट महसूस हुई। पैरों में दर्द हो रहा था। सारे रास्ते गोल्डन बर्ग ने मुँह से एक शब्द नहीं निकाला था, लेकिन वह भी स्पष्टतः थका था। वे कहीं बैठ सकने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके पीछे का दरवाजा खुला रहने दिया गया था। पंक्ति-बद्ध कैदियों ने चलना आरम्भ किया। कागजों का ढेर हाथ में लिये एक अफसर ने मरकु-गोल्डन बर्ग के पीले चेहरे पर नजर डाली। तब उसने जॉन को ऊपर से नीचे तक देखा और गारद से कहा—

"सभी यहूदी?"

उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये उसने सैनिक के हाथ से पीला लिफाफा ले लिया और बाहर जानेवाली पंक्ति की ओर इशारा करके जॉन को चिल्लाकर कहा—

"लाइन में ।"

जॉन ने अफसर की ओर देखा । वह समझा नहीं था । अफसर ने उसे गरदन से धरा और लट्टू की तरह घुमा दिया । तब उसने उसे एक ठोकर लगाई । वह मानो उड़कर पंक्ति में जा पहुँचा । जॉन कतार के अन्त में कैदियों के साथ पैर मिलाकर चलने लगा और उन्हीं के साथ दरवाजे से बाहर निकला ।

उसने घूम कर देखा मरकु गोल्डन-बर्ग उसके पीछे-पीछे आ रहा था ।

२६

वे शाम तक चलते रहे । जब वे अंत में जाकर रुके तो नगर की सीमा पर पहुँच गये थे । मरकु गोल्डन-बर्ग जॉन के पास आया—

"मेरे हाथों को खोल दो," कह कर उसने जॉन की ओर अपनी पीठ कर दी । मरकु के हाथ सफेद और पतले थे । उसकी कलाई के चारों तरफ जहाँ रस्सी बंधी थी एक लाल लकीर खिंच गई थी, जॉन ने उसे बंधन-मुक्त कर दिया तो मरकु बोला—

"धन्यवाद ।"

वह न तो मुस्कराया और न उसने जॉन की ओर सीधे देखा । तब वह घास पर बैठ गया और अपनी शीशे जैसी आँखों से दूर निहारने लगा । जॉन उसके पास बैठ गया, ताकि उससे बातचीत कर सके । वह रस्सी, जो उसने खोली थी, जॉन ने अपने हाथ में ले ली ।

"क्या अभी भी तुम्हें यह रस्सी का टुकड़ा चाहिये ? क्या इसे मैं ले सकता हूँ ?"

"तुम इसे रख सकते हो," मरकु थोड़ी कम कठोरता के साथ

बोला। जॉन ने रस्सी को बड़ी सफाई से इकट्ठा किया और अपनी पतलून की जेब में रख लिया।

"अपने पास रस्सी का टुकड़ा रहना सदा अच्छा है," उसने कहा। "पता नहीं, किस समय काम आ जाय।"

मरकु मुस्कराया। यह पहली बार थी, जब जॉन ने उसे मुस्कराते देखा था।

३०

उसी रात यहूदी कैदियों की टोली तोपोलित्जा नदी के किनारे अपने मुकाम पर पहुँची। नदी बिलकुल सूखी थी। किनारों पर सरपत और छोटी-छोटी झाड़ियाँ लगी थीं।

यहाँ यहूदियों को एक नहर खोदनी थी। क्षितिज पर, इधर-उधर, कुछ घर छितरे हुए थे। पड़ोस में कहीं कोई गाँव न था। केवल दो वीरान तबेले थे। वे वहाँ उस समय से थे जब जमीन पर एक मठ की माल्कीयत थी। तबेले जंगल के सिरे पर थे। एक ट्रक उनके पास लाकर खड़ा कर दिया गया जो फावड़े, कुदाली आदि से भरा था और जिसमें एक चलता-फिरता रसोई-घर था। कैदी ट्रक की ओर आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगे। उनके लिये देखने को और कुछ न था।

उस रात कैदी तबेले में ही सोये। जॉन बाहर घास पर ही लेटा। यह अपेक्षाकृत नरम थी। उसे लेटते ही नींद आ गई। रात में कई बार उसकी आँख खुली। चाँद सूरज की तरह चमक रहा था। हर बार उसने यही समझा कि वह अभी भी घर पर है। किन्तु जब उसने अपने चारों ओर जमीन पर लेटे हुए, अपने-अपने कोट में लिपटे हुए, सोते हुए आदमियों को देखा तो उसका भ्रम दूर हुआ। तब उसने समझा कि वह फन्तना में नहीं है। उसने आँखें बन्द कर लीं।

अगले दिन यहूदियों को दो कतारों में खड़ा किया गया और गिना गया। एक बार फिर जॉन और मरकु दोनों पास-पास खड़े थे। जब जॉन ने 'गुड मार्निङ्ग' कहा तो मरकु ने प्रति-अभिवादन किया। उस समय वह कुछ मुस्कराया।

एक छोटा अफ़सर उस टोली के सामने आया और उसने उन्हें कुदाली तथा फावड़े थमा दिये। दस आदमियों ने मिलकर उस चलते-फिरते रसोई-घर को ट्रक पर से उतारा और उसे पास ही एक बलूत के पेड़ के नीचे खड़ा कर दिया। तब उस अफ़सर ने, जिसके दाँतों में चाँदी थी और मूछों का रंग काला था, एक भाषण दिया। उसका कहना था कि यहूदियों को वह नहर अपने देश की भलाई और रक्षा के लिए खोदनी है। उसने यह भी कहा कि वह—छोटा अफ़सर—यहूदियों का खुदा था और उसका हर शब्द कानून था, बहिश्त में बैठे हुए बूढ़े मूसा-तक के लिए। तब उसने यहूदियों को बताया कि उसका नाम अगोस्तोल कॉन्सटैंटिंग था और उसके दो लड़के थे, एक वकील तथा दूसरा एक अफसर।

यहूदियों ने ध्यान से सुना। कुछ मुस्कराये किन्तु सभी भयभीत थे।

"आज खाना नहीं मिलेगा," छोटे अफ़सर ने कहा। "रसोईघर अभी तक खड़ा नहीं किया गया। कल से तुम्हें चाय और दिन में दो बार सेम का शोरबा मिलेगा। इसके अतिरिक्त आधी पाव रोटी भी।"

तब काम आरम्भ हुआ। हर रोज प्रत्येक आदमी को एक निश्चित हिस्सा खोदने के लिए दिया जाता था। वह खोद चुकता तो उसे बाकी दिन की छुट्टी थी। यदि वह अपना हिस्सा समाप्त न कर सकता तो उसे काम में बाधा पहुँचानेवाला समझा जाता। उसके हथकड़ियाँ डाल दी जातीं और उसे पितृभूमि का शत्रु मानकर कोर्ट-मार्शल द्वारा उस पर मुक-दमा चलाया जाता। छोटे अफ़सर ने कम-से-कम यह बात कही अवश्य और कैदियों ने उसका विश्वास किया।

जॉन मॉरित्ज टुकड़ी से बाहर पड़ गया था। उसने छोटे अफसर से कह दिया था कि वह यहूदी नहीं है। छोटे अफसर का उत्तर था कि वह दफ्तर खोल चुकने पर ही व्यक्तिगत मामलों की ओर ध्यान दे सकेगा, जॉन फिर गोल्डनबर्ग के पास जाकर खड़ा हो गया और प्रतीक्षा करने लगा। वह जानता था कि सेना में आदमी को प्रतीक्षा करते रहने का अभ्यास रहना ही चाहिए।

दस दिन के बाद वे एक लकड़ी की झोपड़ी बना सके। उसमें मेजें थीं, स्टूल थे और पहरेदारों के सोने की पटरियाँ थीं। तब कहीं जाकर आफिस खुला। जॉन ने अपने आपको नये दरवाजे पर पेश किया। उसे एक सप्ताह बाद आने के लिए कहा गया। छोटे अफसर को अभी इतना अवकाश न था कि वह कैदियों की मांगों की ओर ध्यान दे सके।

३१

नहर खोदने का काम करते हुए, उस पथरीली जमीन को फावड़े से खोदते हुए जॉन ने अपने दाहिने पड़ोसी से उसका नाम पूछा। जॉन को अपने आस-पास के लोगों से बात-चीत करना अच्छा लगता था। जो आदमी अपने में ही घुलते रहते हैं वे घृणा फैलाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करते। उसके पड़ोसी ने उसे टेढ़ी नजर से देखा।

"क्या तुम्हें यहूदी बोलते लज्जा आती है!"—उसने पूछा।

"मुझे यहूदी नहीं आती,"—जॉन का उत्तर था।

"तुम्हें लज्जा से डूब मरना चाहिए।"—यहूदी ने थूका और अपना मुँह फेर लिया। जॉन ने अपने पड़ोसी को दूसरी ओर सम्बोधित किया। वह उसे समझाना चाहता था।

"यहूदी बोलो," उसके बायें पड़ोसी ने उत्तर दिया।

"ठीक यही तो बात है जो मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ।"—जॉन बोला।

"मैं यहूदी नहीं जानता।"

यहूदियों ने जॉन को घृणा की दृष्टि से देखा। उसने काम रोक दिया और उन्हें समझाने की चेष्टा की, लेकिन कोई सुनता ही न था। जॉन ने सोचा : "उन्होंने आपस में केवल यहूदी ही बोलने का निश्चय किया है। यह उनका काम है। ये यहूदी हैं और उन्हें अपनी भाषा में बातचीत करने का अधिकार है। लेकिन मैं यहूदी क्यों बोलूँ?"

"यदि तुम यहूदी भूल गये हो, तो शायद तुम हिब्रू बोलते हो,"—किसी ने सुझाया।

जॉन ने अपने आपको सीधा किया और एक उत्तर सोच लिया। वे सभी काम रोककर उसकी ओर देख रहे थे। तब वे सब खिलखिलाकर हँस पड़े। जॉन को अपने पर काबू न रहा। वह लाल-पीला हो गया।

"यदि भाषाओं के ज्ञान का प्रश्न हो तो तुम नहीं हँस सकते, हँस मैं सकता हूँ,"—वह कह उठा। "चार भाषाएँ मेरी जबान पर हैं। तुम कितनी जानते हो?"

वह अपने दाहिने पड़ोसी की ओर झुका जिसने तुरन्त उत्तर दिया—"मैं यहूदी जानता हूँ।"

जॉन ने ज़मीन पर अपना फावड़ा चलाया। वह यह देख रहा था कि वे उसका मजाक बना रहे हैं। वे सभी रुमानिया की भाषा जानते हैं, लेकिन बोलते नहीं।

जब काम रुक गया तो टुकड़ी का मुखिया, बूढ़ा इज्जाक लांग्येल जॉन को एक तरफ ले गया और बोला—

अपने लोगों के लिए ये बुरे दिन हैं। हम जब आपस में मिलें तो कम-से-कम इतना तो करें कि यहूदी बोलें। ऐसा करना हमारा कर्त्तव्य है।"

"लेकिन मैं एक यहूदी नहीं हूँ,"—जॉन ने उत्तर दिया।

"अब जब तुम यहाँ हो तो बहाना बनाने से क्या लाभ? पकड़े जाने से पहले तो इसका कुछ अर्थ था और शायद यही करना बुद्धिमानी थी। लेकिन अब यह सब बेकार है। यदि अब भी तुम अपनों में रहकर यह करते हो तो तुम पाखंडी हो।"

"लेकिन श्री लांग्येल, कृपया मेरी बात समझें। मैं यहूदी नहीं हूँ।"—जॉन का स्वर काँपने लगा।

"यदि तुम पाखंडी ही बनना चाहते हो तो जैसा चाहो करो।"

जॉन मॉरित्ज अकेला रह गया। उन्होंने उसके यहूदी न होने का विश्वास नहीं किया। सभी का यही मत था कि वह झूठ बोल रहा है, कि वह रुमानियावासी नहीं है और उसका सारा आग्रह केवल किसी तरह कैम्प से बाहर चले जाने के लिए है।

कैम्प-रजिस्टर में बूढ़े लांग्येल ने उसका नाम मॉरित्ज जेकब लिखा।

"जॉन किसी यहूदी का नाम नहीं होता,"—लांग्येल का कहना था। "यहूदी नाम जेकब है और यही तुम्हारा नाम है। यह आयोन भी नहीं है। आयोन जेकब का ही रुमानी अनुवाद है।"

कैम्प में उसके साथी उसे जांकी कहते थे। उसने कोई आपत्ति नहीं की। लेकिन उसे इसका अभ्यस्त होने में कठिनाई हुई।

"तुम मुझे जेकब या जांकी जो चाहो कह सकते हो,"—वह बोला। "मुझे खेद यही है कि मेरा विश्वास नहीं करते।"

३२

जॉन मॉरित्ज ने पता लगा लिया कि लेबर-कैम्प में जितने भी यहूदी थे, वे सब जन्दा के आज्ञापत्रों द्वारा बटोरे गये थे। उसने अब यह

मान लिया था कि राज्य न केवल घोड़ों, गाड़ियों और बोरों को ज़ब्त करता है, प्रत्युत आदमियों को भी। जो हो, वह यहूदी नहीं था। यही बात वह छोटे अफसर को कहना चाहता था। लेकिन छोटे अफसर के पास उसके लिये समय ही नहीं था। एक दिन, जैसे तैसे उसने छोटे अफ्सर से दो बातें कर ही लीं। छोटा अफ़सर लाल-पीला था।

"इन चार महीनों में जब से तुम यहाँ हो, तुमने मुझे हैरान करने के सिवाय और कुछ नहीं किया," वह बोला। "जब भी मैं अपने दफ्तर का दरवाजा खोलता हूँ, मैं तुम्हें दरवाजे पर देखता हूँ। रोज तुम्हें एक न एक शिकायत रहती है। भोजन अच्छा नहीं है! तुम काम नहीं कर सकते! तुम अपनी स्त्री के बिना नहीं रह सकते!"

जॉन ने अपने मन में एक भाषण तैयार कर रखा था, जिसे वह हर रोज दोहरा लेता था। वह छोटे अफसर को अपनी सारी कथा सुना देना चाहता था—

"मतलब की बात कहो," छोटा अफ़सर बोला।

"मैं घर जाना चाहता हूँ, मैं यहूदी नहीं हूँ।"

"तुम यहूदी नहीं हो?" छोटे अफसर ने व्यंग्य-भरी नज़र से देखा। उसने मेज़ पर रखा, कैदियों का रजिस्टर उठाया और उसमें से 'म' अक्षर के पन्ने निकाल, पढ़ने लगा—

"मारित्ज़ ज़ेकब, आयु २८ वर्ष, विवाहित-दो बच्चे, फन्तना का निवासी। स्त्री का नाम सुसाना।' यह तुम ही, क्यों क्या नहीं?"

"यह मैं हूँ," जॉन ने उत्तर दिया।

"तो यह यहूदी न होने के बारे में सारा झमेला क्या है?"

"यह मैं ही हूँ," जॉन बोला। "किन्तु, मैं यहूदी नहीं हूँ।"

"मैं तुम्हें सावधान करता हूँ कि जो बात तुम कर रहे हो वह बड़ी ही गम्भीर है," छोटे अफसर ने कहा। "झूठ बोलने के प्रथम प्रमाण

पर ही तुम गिरफ्तार हो सकते हो। तुम्हारे कथनानुसार, जो कुछ भी यहाँ लिखा है—और ये सैनिक-लेख हैं—सब मिथ्या है। जो बात तुम करने जा रहे हो उस पर विचार कर लो, सोच लो कि तुम्हारे साथ क्या बीतेगी; और क्या तुम अभी भी जिद्द करते हो कि तुम यहूदी नहीं हो?"

"मैं आग्रह करता हूँ," जॉन ने दृढ़ता से कहा।

"तो तुम अब यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं नहीं जानता।"

"तुमने ऐसा पहले क्यों नहीं कहा?" छोटे अफसर ने पूछा। "जिन कागज़ों पर मैंने हस्ताक्षर किये हैं, उनमें लिखा गया है कि मेरे अधीन जो ढाई-सौ आदमी नहर खोदने का काम कर रहे हैं, वे सब यहूदी हैं। अब तुम आते हो और कहते हो कि तुम यहूदी नहीं हो। इसका यही मतलब हुआ कि मैं झूठ लिखता रहा हूँ। मैं तुम पर झूठे होने का आरोप लगाता हूँ।" छोटे अफसर की गुस्से से त्योरियाँ चढ़ गई थीं। "तुम चाहते हो कि तुम्हारे गाल पर दो चपत लगाये जायँ, जिससे कम से कम एक सप्ताह तक तुम्हारे कान झन्नाते रहें। तो भी मैं तुम्हारा बयान लिख लेता हूँ। तुम्हारा यह बयान बहुत ही गम्भीर है। मैं एक वक्तव्य तैयार करता हूँ। तुम्हें उस पर हस्ताक्षर कर देना होगा। यदि यह बात सत्य निकली कि तुम यहूदी नहीं हो तो जिसने तुम्हें यहाँ भेजा, उसे जेल जाना होगा। यदि तुम यहूदी हुए तो तुम लेबरकैम्प छोड़ कर निमक की खान में जाओगे। समझे।"

जॉन दरवाजे पर खड़ा रहा। छोटे अफसर ने एक बयान तैयार किया और जॉन को हस्ताक्षर करने के लिये दिया। इसमें कहा गया कि जॉन मारित्ज़ यहूदी नहीं है और रिहाई के लिये दरख्वास्त करता है।

"अब तुम चले जा सकते हो," छोटे अफसर ने कहा। "जिन कागजों पर तुमने हस्ताक्षर किये हैं, मैं कल उन्हें भेज दूँगा। तब हम उत्तर की प्रतीक्षा करेंगे।"

जॉन मुस्करा रहा था। दफ्तर से बिदा हुआ, तो उसे ऐसा लग रहा

था, मानो वह सीधा घर जा रहा है। स्ट्रल, पहरेदार ने उसके पीछे भाग कर उसे बुलाया। छोटे अफसर को अभी कुछ और कहना शेष था।

"मारित्ज़, सुन। मुझे नौकरी करते पच्चीस वर्ष हो गये। मेरा परिवार है। मैं तुम्हारे इस बयान के कारण अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहता। तुम्हारा मामला इतना सरल नहीं है, जितना यह प्रतीत होता है। तुम्हारा नाम यहूदी है। तुम 'मारित्ज़' कहे जाते हो। यदि तुम यहूदी नहीं हो तो तुम मारित्ज़ क्यों कहे जाते हो? पहली बात तो यही है। फिर तुम यहूदी जबान बोलते हो। यह दूसरी बात है। क्या तुम किसी रूमानिया-वासी को यहूदी बोलते जानते हो? क्या मैं यहूदी बोलता हूँ?"

"मैंने इसे कैम्प में सीख लिया। यदि तुम्हें जर्मन आती हो और तुम्हें दिन भर यहूदी सुनने को मिले तो तुम उसे शीघ्र ही सीख सकते हो। यह कठिन नहीं है।"

"सुन," छोटे अफसर ने कहा। "पहली बात तो यह है कि तुम्हारा नाम यहूदी है। दूसरे तुम यहूदी ज़बान बोलते हो। तीसरे, इन सभी कागजों में लिखा है कि तुम यहूदी हो। क्या तुम अभी भी मुझ से यह आशा करते हो कि मैं तुम्हें रूमानिया का मानूं? जरा स्वयं सोचो।"

जॉन का बयान छोटे अफसर के हाथ में था। उसने उसे मेज पर ऐसे गिराया, मानो वह उसे रद्दी की टोकरी में ही फेंकने जा रहा हो। जॉन को लगा कि जैसे क्रोधाग्नि से उसकी आँखें सजल हो चली हों।

"श्रीमान् जी, मैं सभी सन्त-पुरुषों और परमात्मा की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं यहूदी नहीं हूँ।"

"यह बात अब हम आगे देखेंगे," छोटा अफसर बोला। "अभी मैंने तुम्हारा बयान लिख लिया है और जो कुछ मुझे कहना है, वह भी जोड़ दिया है। मैं उचित बात करने में विश्वास करता हूँ। जन्म भर यही किया है। अब तुम्हारे बयान के अतिरिक्त मैंने इस बात का भी उल्लेख कर दिया है कि तुम्हारा नाम यहूदी है और कि तुम इसका

कारण नहीं बता सकते; और यह भी कि तुम यहूदी बोलते हो, साथ ही यह भी कि गवाह इस बात की शपथ खाने को तैयार हैं कि तुमने इसे कैम्प में सीखा। जब तुम आये उस समय तुम यहूदी नहीं जानते थे—यह ठीक है न?"

"हाँ, यह ठीक है।"

"दूसरी बात," छोटे अफसर ने पूछा। "तुम्हारा मजहब क्या है?"

"आरथोडॉक्स।"

छोटे अफसर ने जॉन को सन्देह की दृष्टि से देखा।

"तुम जानते हो कि यहूदी लोग किस प्रकार दीक्षित किये जाते हैं?"

"हाँ।"

"और तुम्हारा कहना है कि तुम उस तरह नहीं हो।"

"हाँ।"

"निश्चय से?"

"एक दम निश्चित।"

"खिड़की के पास जाओ, जहाँ प्रकाश है और दिखाओ कि तुम यहूदियों की तरह दीक्षित नहीं हो।"

जॉन खिड़की के पास गया। उसने अपनी पतलून के बटन खोले और उसे जमीन पर खिसक जाने दिया। छोटे अफसर की ओर देखता हुआ वह वहाँ नंगा खड़ा हो गया।

"एक लड़की की तरह शरमाने की आवश्यकता नहीं है।" छोटा अफसर बोला। "इसमें शर्म की कौन-सी बात है। प्रकाश की ओर मुड़ो और मुझे देखने दो। मैं अपनी आँखों से यथार्थ बात जानना चाहता हूँ, ताकि मैं अपनी रिपोर्ट में ठीक-ठीक बात लिख सकूँ।"

छोटा अफसर अपने डैस्क से उठा। जॉन के पैरों के पास अपने घुटने टेक कर बैठा और बड़े ध्यान से देखने लगा। जो कुछ उसने देखा, अथवा सुना उसे याद था, उससे उसकी तुलना करने लगा। अन्त में उसके ज्ञान में कुछ भी वृद्धि नहीं हुई। जो हो, वह ठीक-ठीक रिपोर्ट

करना चाहता था। वह उठ खड़ा हुआ। चेहरा लाल। उसने एक सिगरेट जलाई।

"मारित्ज़, तुम अत्यन्त नीचे स्तर की मुसीबत हो," वह बोला। "क्या तुम समझते हो कि मेरे देश ने युद्ध के ठीक बीच में यहाँ मुझे तुम्हारा...देखने के लिये भेजा है? मेरे बेटे, मैं सैनिक हूँ। यह सब मेरा काम नहीं है। यदि मैं यह करता हूँ केवल इसलिये कि मैं उचित बात करने में विश्वास करता हूँ। जहाँ तक मैं जानता हूँ, हो सकता है कि तुम यहूदी न हो। ऐसी हालत में तुम्हें यहाँ रखना न्याय नहीं है।"

छोटे अफसर ने साथ के कमरे का दरवाजा खोला और पहरेदार स्ट्रल को आवाज़ दी।

"मारित्ज़ की परीक्षा करो," उसकी आज्ञा थी। "देखो कि यहूदियों की तरह इसकी 'मुसल्मानी' हुई है या नहीं।"

स्ट्रल जॉन के पास झुका। वह एक बैंक-क्लर्क था, और कोई भी काम हो उसे वैसे ही नाप-तोल के साथ ठीक-ठीक करने की कोशिश करता था जैसे संख्याओं को। उसने बड़ी ही बारीकी से जॉन की परीक्षा की। तब वह सीधा तन कर खड़ा हुआ, और बोला—

"यदि इसकी मुसल्मानी हुई होगी तो नाम-मात्र की हुई होगी।"

"नाम-मात्र से तुम्हारा क्या मतलब है?" छोटे अफसर ने सवाल किया। "मुझे साफ-साफ बताओ कि अग्र-त्वचा कटी है या नहीं।"

"मैं निश्चित नहीं कह सकता," स्ट्रल बोला। "कुछ कटी-सी लगती है, लेकिन मैं विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि यह यहूदी-पादरी की कृति है, अथवा दूसरे कारणों से है।"

"मारित्ज़, अब तुम स्वयं देखते हो," छोटा अफसर बोला। "तुम्हारा मामला बहुत ही उलझा हुआ है। तो भी मैं रिपोर्ट भेज दूँगा। अच्छा, अब बाहर निकलो। स्ट्रल, तुम यहाँ ठहरो और इसके लिखने में मेरी मदद करो।"

जॉन कुछ सोचता हुआ दफ्तर से बाहर चला गया। जाते-जाते उसने अपनी पतलून के बटन कसे।

३३

जॉन मारित्ज़ की गिरफ़्तारी के थोड़ी ही देर बाद फादर कोरग चौकी पर पहुँचा। सुबह के नौ बजे थे। सारजेण्ट अभी गाँव से वापिस आया था और उसका मिज़ाज ठिकाने न था।

"मुझे जब्ती का एक आज्ञा-पत्र मिला और मैंने तदनुसार कार्य किया। इससे अधिक मैं तुम्हें और कोई जानकारी नहीं दे सकता। मैं इतना ही जानता हूँ। इससे अधिक यदि तुम्हें कुछ और पूछ-ताछ करनी हो तो नगर में जाकर डिविज़नल हैड क्वारटर से पूछ-ताछ करो।"

"क्या मारित्ज़, इस समय हैड क्वारटर पर है?" पादरी ने प्रश्न किया।

"मैं यह भी नहीं जानता," सारजेण्ट का उत्तर था। "यदि मैं जानता भी होता तो मैं तुम्हें नहीं बताता। यह एक सैनिक-रहस्य है। आदमियों की ज़ब्ती किलाबन्दी के काम के लिये होती है। उनका पता-ठिकाना बताना मना है।"

पादरी ने उसे इस जानकारी के लिये धन्यवाद दिया और उठ खड़ा हुआ। अपराह्न में, नगर में जहाँ हैडक्वारटर था, वहाँ पहुँचा। जॉन वहाँ नहीं था। किसी ने उसका नाम न सुना था।

"क्या वह एक यहूदी है?" एक तरुण अफ़सर ने पूछा।

"वह मेरे प्रदेश का एक आर्थोडाक्स ईसाई है।"

"तो वह यहाँ नहीं भेजा गया होगा," अफसर का उत्तर था। "वापिस जाओ और सारजेण्ट से कहो कि वह हमें उस टोली का नम्बर बताये, जिसमें उसे भेजा गया है। कल और आज हम केवल यहूदी टोलियों को ही ले जाते रहे हैं। तुम कहते हो कि वह यहूदी नहीं है, तो वह उनमें नहीं हो सकता।

"वह यहूदी नहीं ही है," पादरी ने जोर डाल कर कहा। अगले

दिन वह जॉन की टोली का नम्बर लेकर वापिस हैड क्वारटर आया। उसी अफसर ने एक रजिस्टर में देखकर कहा—

"खेद है कि मैं तुम्हें किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं दे सकता। यह एक रहस्य है। तुम को युद्ध-सचिवालय से एक अधिकार-पत्र लाना होगा।"

"मैं तो केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मारित्ज़ पकड़ा गया है अथवा नहीं। यदि पकड़ा गया है, तो वह इस समय कहाँ है? यह कोई रहस्य नहीं हो सकता।"

"वह पकड़ा गया है," अफसर बोला। "लेकिन हम यह नहीं बता सकते कि वह कहाँ है। हम स्वयं नहीं जानते। वह सेना को सौंप दिया गया है, और वे लोग हमें यह नहीं बताते कि जिन आदमियों को हम उन्हें सौंपते हैं, उन्हें वे कहाँ काम पर लगाते हैं, अथवा उनका क्या करते हैं?"

उसके स्वर में तलखी थी। उसे रजिस्टर में जॉन मारित्ज़ का नाम मिल गया था और अब वह पादरी को घृणा की दृष्टि से देख रहा था। फादर कोरग चला गया। उसके चले जाने पर अफसर पहरेदार से बोला—"वह एक पादरी है, किन्तु वह कितना झूठ बोलता है। कल इसने कहा था कि मारित्ज़ एक आरथोडाक्स ईसाई है, और आज मैं देखता हूँ कि उसका नाम यहूदी-रजिस्टर में लिखा हुआ है। यदि फिर वह यहाँ पैर रखे तो उसे धक्का देकर बाहर निकाल देना।"

३४

फादर कोरग ने जॉन मारित्ज़ के साथ जो कुछ बीता था, वह सब आयन को लिख भेजा। फादर ने उसे लिखा कि वह जॉन की ओर से युद्ध सचिवालय और हेड क्वारटर में इस मामले को अपने हाथ में ले।

ब्रायन ने लिखा कि इस दिशा में जो कुछ भी किया जा सकता था, उसने सब कुछ किया है और उसे जॉन की रिहाई का वचन मिला है।

चिट्ठी मिलने के बाद दो सप्ताह गुजर गये। तब तीसरा, फिर चौथा। दो महीने गुजर गये। ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो गई और पतझड़ आ गई। जॉन मारित्ज़ अभी तक नहीं लौटा था। एक दिन पादरी अपने प्रदेश के अधिकारी से मिलने गया। नगर के रास्ते में उसे गोल्डन-बर्ग मिला। उसने उसे गाड़ी में बिठा लिया। यहूदी का वज़न कम हो गया था।

"उसकी गिरफ़्तारी के दिन से मुझे मरकु का कोई समाचार नहीं मिला," सराय के मालिक ने कहा। तब उसने एक कराह ली। "मैंने उसे स्कूल में तथा बुखारेस्ट और पैरिस की यूनिवर्सिटी में पढ़ाने के लिये अपनी सम्पत्ति खर्च कर दी। ज्यों ही वह अपनी 'डाक्टरेट' लेकर घर वापिस आया, वे उसे पकड़ कर ले गये। उन्होंने उसे खाई खोदने का काम दिया है। क्या इसी के लिये पैरिस जाकर उसने अपनी डिग्री ली थी, कि वह घर लौट कर खाइयाँ खोदे?"

फादर कोरग ने अपने बक्से में से एक ताजी पाव-रोटी निकाली। उसके दो टुकड़े किये और आधी गोल्डन-बर्ग को दे दी। वे दोनों चुप-चाप खाते रहे। सड़क ने पहाड़ी का चक्कर काटा और घोड़े धीरे-धीरे चलते रहे। जब वे शिखर पर पहुँचे, तो यहूदी ने मुँह खोला :—

"उन्होंने मेरा घर ले लिया। इसे ज़ब्त कर लिया। कुछ ही दिनों में मुझे घर खाली कर देना है, अन्यथा पुलिस-सैनिक मुझे घर से बाहर फेंक देंगे। मैंने अपने माथे के पसीने से घर को बनाया। पहले उन्होंने मरकु को ज़ब्त किया। अब घर। फादर, मैंने ऐसा क्या कसूर किया है कि मुझसे ऐसा व्यवहार किया जाय?" यहूदी चुप हो रहा। घोड़ा रुक गया। "मैं गले में फाँसी लगा कर यह सब समाप्त कर देना चाहता हूँ," यहूदी का अन्तिम वाक्य था।

घोड़ा फिर चलने लगा। नगर के बाहर ही गोल्डन-बर्ग गाड़ी से उतर

पड़ा। पादरी ने देखा कि वह तंग गली में से होकर यहूदियों के मुहल्ले में अदृश्य हो गया।

जब गोल्डन-बर्ग चला गया, तो पादरी गाड़ी को हाँक कर अधिकारी के यहाँ ले गया। वह घोड़े को थकावट से बचाने के लिये धीरे-धीरे चलने दे रहा था। उसे जाते-जाते अनेक तल्लोंवाले मकान दिखाई दिये, जिन्हें देख कर उसे टी० एस० इलीयट के ये शब्द याद आ गये–

> "जब कोई परदेसी पूछेगा—'इस नगर का क्या अर्थ है?
> क्या तुम लोग इसलिये एक दूसरे के इतने पास-पास हो
> कि तुम एक दूसरे को प्रेम करते हो?'
>
> तुम्हारा क्या उत्तर होगा? 'हम एक दूसरे से धनार्जन करने
> के लिये इकट्ठे रहते हैं?' अथवा 'यह एक जाति है?'"

अधिकारी के घर के आगे घोड़ा स्वयं अपनी मरज़ी से रुक गया। यह मालूम करने के लिये कि जॉन मारित्ज़ का क्या हुआ, पादरी सप्ताह में कम से कम एक बार यहाँ अवश्य आता था। इसलिये जब पादरी नगर की ओर मुँह करता, तो घोड़ा जान जाता था कि वह कहाँ जा रहा है। इसलिये वह उस बिल्डिंग के सामने स्वयं ठहर गया। अधिकारी प्रायः अपने दफ्तर में नहीं ही होता था, और जब कभी होता था तो बहुत ही कार्य-व्यस्त। पादरी को उससे वार्तालाप करने का अवसर नहीं ही मिला था। इस समय तक उसके सैक्रेट्री और द्वारपाल भी पादरी को पहचान गये थे। जब भी वह वहाँ जाता तो वे सहानुभूति से मुस्करा देते। आज सैक्रेट्री कुछ भिन्न प्रकार से मुस्कराया था।

"अधिकारी तुमसे भेंट करेगा," वह बोला। "आध घण्टे बाद तुम्हारी बारी आयेगी।"

एक घण्टे बाद अधिकारी के डैस्क के सामने पादरी को ले जाकर बिठा दिया गया था।

"छः महीने हुए, मेरे प्रदेश का एक तरुण पकड़ लिया गया है। मैं जानना चाहता हूँ कि वह कहाँ है और क्यों पकड़ा गया है? मैंने

सुना है कि वह यहूदी-कैम्प में है। किन्तु वह तो रूमानिया-वासी है और ईसाई है। मैंने उसे स्वयं दीक्षा दी है। मैं उसकी रिहाई के लिये अपील करना चाहूँगा।"

"मैं किसी भी अपील के स्वीकार करने का सिद्धान्ततः विरोधी हूँ।"

"मैं जिस आदमी की बात कर रहा हूँ, उसने कोई अपराध नहीं किया है," पादरी बोला।

"लेकिन वह एक यहूदी-कैम्प में डाल दिया गया है," अधिकारी बोला। "तुमने स्वयं अभी-अभी कहा है।"

"वह यहूदी नहीं है।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है? जब तक यहूदी-कैम्प में है तब तक वह उन खास कायदे-कानूनों के अधीन है जो मेरे अधिकार के बाहर हैं। इतना तो पहले प्रश्न के उत्तर में। और अब दूसरी बात, क्योंकि जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, वही मुख्य है और उसी के लिये मैंने तुम्हें मिलने का समय दिया है। मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि मेरे इलाके के पादरी अपने काम की ओर तो ध्यान न दें और अधिकारियों के सामने तरह-तरह की अर्जियाँ पेश कर उन्हें हैरान करते रहें। हम युद्ध की अवस्था में हैं। हर किसी को अपना ही कर्त्तव्य करना चाहिये। इसे एक सरकारी चेतावनी समझें। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे विरुद्ध कार्रवाई करने के लिये मजबूर होना पड़े।"

"मानव जाति के भले का काम करना, पृथ्वी पर न्याय का पक्ष ग्रहण करना, परमात्मा और धर्म के लिये काम करना है," पादरी ने कहा। "जान मारित्ज का पक्ष लेकर मैं धर्म और परमात्मा की वकालत कर रहा हूँ। पादरी के नाते यह मेरा मिशन है। मारित्ज के साथ बहुत अन्याय हुआ है।"

"अन्याय केवल तुम्हारी कल्पना में है," अधिकारी ने बड़ी शुष्कता के साथ उत्तर दिया। "सिर पर युद्ध है। हम ईसा के विरोधियों के विरुद्ध

अपने देश और धर्म के लिये लड़ रहे हैं। क्या तुम समझते हो कि यह कोई बड़ा अन्याय है यदि किसी आदमी को इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये किसी जगह किलेबन्दी पर भेज दिया जाता है?"

"यह व्यक्ति एक मानव है," पादरी ने उत्तर दिया। "इस मानव को पकड़कर वेगार करने के लिये भेज दिया गया है। उसका कोई कसूर नहीं है। उस पर मुकदमा तक नहीं चलाया गया है।"

"अपने आप को उपहासास्पद मत बनाओ। यदि हम हर व्यक्ति की चिन्ता करने लगें तो बाल्शविज़्म की लहर को हमें बहाकर ले जाने में तनिक देर न लगेगी। इससे पहले कि हमें यह भी पता लगे कि हम कहाँ हैं, हमारे सब के गले में फाँसी होगी। फादर, पहला नम्बर तुम्हारा होगा। हमें इसका निश्चित विश्वास है कि हम ईसाइयत की रक्षा के लिये लड़ रहे हैं।"

"जो व्यक्ति की परवाह नहीं करते, वे ईसाइयत के लिये नहीं लड़ सकते," पादरी का उत्तर था। "धर्म का विरोध और समर्थन दोनों एक साथ सम्भव नहीं है।"

"मैं समझता हूँ कि तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारे मारित्ज को मुक्त कर दें और बाल्शविक हमारे सिर पर आ बरसें, हमारे गिरजों को जला दें, हमारी स्त्रियों के साथ अनाचार करें, और हमें बेड़ियों में जकड़ डालें। क्या धर्म के लिये लड़ने से तुम्हारा यही अभिप्राय है?"

"कोई चीज नहीं; ऊंचे से ऊँचे राष्ट्रीय, सामाजिक अथवा धार्मिक आदर्श को भी किसी एक भी व्यक्ति के साथ अन्याय करने का बहाना नहीं बनाया जा सकता। ईसा के नाम पर आदमियों को कैद करना ईसा के विरुद्ध अपराध करना है।"

"क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास है कि वह आदमी यहूदी नहीं है?" अधिकारी ने पूछा।

"पूर्ण विश्वास है।"

"तब तो उसके साथ बड़ा गम्भीर अन्याय हुआ है। दोषी को सजा देनी ही होगी। जब्ती का हुक्म किसने दिया?"

"मैं नहीं जानता," पादरी का उत्तर था। "पिछले दो महीने से, मैं सभी अधिकारियों से पूछ-ताछ कर रहा हूँ, नागरिक-पुलिस से, सैनिक-पुलिस से, फौज से, और कोई एक भी जवाब नहीं देता। हर कोई यही उत्तर देता है कि यह रहस्य है।"

"निस्सन्देह, यह तो तुम्हें कहा ही जायगा," अधिकारी बोला। "इस तरह के सभी कार्य रहस्य हैं। मैं भी तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। तुम्हें सैनिक हेड-क्वारटर में जाना होगा। जब तुम्हें योग्य अधिकार-पत्र मिल जाय तो यहाँ वापिस आना। तब हम फ़ाइल देखेंगे और पता लगायेंगे कि जब्ती के आज्ञा-पत्र पर किसका हस्ताक्षर है। यदि गलती हुई है तो मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि जिस आदमी से यह गलती हुई है, उसे ऐसा दण्ड मिलेगा कि फिर कोई ऐसी गलती न करे। लेकिन जब तक तुम हस्ताक्षर-युक्त एक ऐसा पत्र न दिखाओ, जिसके अनुसार तुम्हें इस मामले की पैरवी करने का अधिकार दिया गया हो, तब तक हम तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकते।"

मुलाकात को समाप्त करने के लिये अधिकारी उठ खड़ा हुआ। पादरी अचल बना रहा—

"क्या यह सम्भव है कि आदमी की संवेदनशीलता का एकदम अंत हो जाय और वह एक मशीन की तरह अपने मानस-बन्धुओं की पुकार के प्रति एकदम बहरा बन जाय? मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि तुम मेरी अपील समझते नहीं। आख़िर, तुम एक मानव हो। मानव की रचना भावना के साथ हुई है। उसकी अपनी आत्मा है। मानव न मशीन है और न यान्त्रिक-दास है। ईमानदारी से कहो, कि क्या जान मारित्ज के साथ जो अन्याय हुआ है, उसका तुम पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता?"

"फादर कोरग," अधिकारी बोला, "यदि तुम सच्ची बात जानना

चाहते हो तो मुझे हार्दिक खेद है कि मैं तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकता। मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा कहना ठीक है। यह बात मैं इसलिये स्वीकार कर सकता हूँ कि मैं एक पादरी का लड़का हूँ। लेकिन सिद्धान्त-रूप से ही मैं ऐसे लोगों के निकट जाना नहीं चाहता। ये भयानक विस्फोटक पदार्थ हैं। ये छूने मात्र से किसी भी समय फूट पड़ सकते हैं। मैं राज्य का कर्मचारी हूँ और अपना जीवन नष्ट करने की इच्छा नहीं रखता। मैं ऐसे लोगों के पास फटकता ही नहीं।"

पादरी उठ खड़ा हुआ। जब वह चलने को हुआ तो अधिकारी ने उससे हाथ मिलाया और कहा—

"मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे उस आदमी के लिये कुछ नहीं कर सकता......उसका नाम क्या था? मारित्ज, यही न? यदि कोई और बात हो तो मुझे तुम्हारी सहायता करने में प्रसन्नता होगी।"

३५

नगर से बाहर निकलनेवाली सड़क पर एक गिरजा था। जिस समय पादरी उसके सामने से गुजर रहा था, वह रुका। उसे फन्तना के सारजेण्ट की याद आई, डिविजनल हेड क्वारटर के अधिकारी और छोटे अफसर की याद आई और उन सब पुलिस अधिकारियों की याद आई जिन्होंने उसे अपने कमरों में प्रतीक्षा करते रहने के लिये मजबूर किया था, और जो जॉन मारित्ज को कैद किये हुए थे। उसने सिर से अपनी टोपी उतारी और डब्ल्यु० एच० आडन के शब्दों में प्रार्थना आरम्भ की : "हम इस समय खास तौर पर उन छोटे और अप्रिय अधिकारियों के लिये प्रार्थना करें, जिनके कारण हमें राज्य के शासन की पीड़ा सहन करनी पड़ती है, जो निरीक्षण करते हैं और जिरह करते हैं, जो 'परमिट' देते हैं और पाबन्दियाँ लगाते हैं कि वे लिखे हुए शब्द को अथवा सांख्य

की को मांस और रक्त से अधिक वास्तविक न समझें......और प्राइवेट नागरिक की हैसियत से हमें आफिस और आदमी को एक समझने की मिथ्या-धारणा से मुक्ति मिले, और कि हम यह न भूल जायँ कि यह हमारी ही बेसबरी और आलस्य का परिणाम है, हमारे ही स्वतन्त्रता से भयभीत होने तथा उसके दुरुपयोग का नतीजा है, हमारा ही अन्याय राज्य की उत्पत्ति का कारण है ताकि हम पापों से बचें और हमें उनके लिये दण्ड मिले।"

पादरी ने अपने श्वेत-केशों को टोपी से ढक लिया और फन्तना की ओर चल दिया। चौरस्ते पर उसकी गोल्डन-बर्ग से भेंट हो गई। वह भी नगर से वापिस आ रहा था। उसे पहचानकर घोड़ा यहूदी की ओर बढ़ा चला आया, क्योंकि वह जानता था कि पादरी उसे हमेशा अपने साथ गाड़ी में ले चलता है।

३६

फन्तना के सारजेण्ट को आज्ञा मिली कि वह यहूदियों की तमाम सम्पत्ति की सूची तैयार करे। उसने वृद्ध गोल्डन-बर्ग की सभी चीजों की सूची बनाई। लेकिन उसने इसे भेजा नहीं। वह जानता था कि जॉन मारित्ज भी एक यहूदी-कैम्प में है। जब उसने उसे डिविजनल वेड क्वार-टर भेजा था, तब उसने उसे यहूदी नहीं लिखा था। यदि वह ऐसा करता तो वह अयथार्थ बात लिखने का अपराधी बनता; क्योंकि जॉन रूमानिया का था। लेकिन आदमियों की जब्ती का कानून दो तरह के आदमियों पर लागू होता था: यहूदियों पर और अवांछनीय व्यक्तियों पर। उसने मारित्ज को "अवांछनीय" आदमी बनाकर जब्त किया था, जो कानूनी दृष्टि से निर्दोष था। चौकी का सारजेण्ट किसी को भी

"अवांछनीय" समझ सकता था। इस बारे में कोई निश्चित कानून न था। डिविजनल हेड क्वारटरवालों ने उसे यहूदी बना दिया था। यह उनका कसूर था, या खुद मारित्ज का। उसने अपना यहूदी नाम क्यों रखा था? सारजेण्ट को अब तक इस सारी घटना पर अफसोस होना आरम्भ हो गया था। उसका अन्दाजा था कि मारित्ज कुछ हफ्तों अन्दर रहेगा। लेकिन छः महीने बीत गये थे और अब यहूदियों के घरों को जब्त कर लेने की आज्ञा मिली थी। न्याय की बात यही थी कि मारित्ज का घर जब्त नहीं होना चाहिये था। लेकिन दफ्तर के रजिस्टर में फन्तना के दो यहूदी लिखे थे—गोल्डन-बर्ग और मारित्ज।

सारजेण्ट ने इसका कोई हल निकालने के लिये अपना सिर खुजलाया। यदि उसने हेड क्वारटर को यह सूचना दी कि मारित्ज यहूदी नहीं है और इसलिये उसका घर जब्त की जानेवाली सम्पत्ति की सूची में दाखिल नहीं किया जा सकता, तो इस बात की पूछ-ताछ की जायगी कि वह कैम्प में क्यों लाया गया। तब उसे यह सूचना देनी पड़ेगी कि मारित्ज एक "अवांछनीय" व्यक्ति था। लेकिन सारजेण्ट नहीं चाहता था कि पूछ-ताछ हो। जितनी ही पूछ-ताछ कम हो, उतना ही अच्छा। कहीं सुसाना उसके विरुद्ध गवाही दे दे, तो? कोई दूसरा मार्ग आवश्यक था। सारजेण्ट ने गोल्डन-बर्ग से परामर्श किया।

"यदि सुसाना मारित्ज को तलाक दे दे तो उसे घर की मालकिन बने रहने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। उसके यहूदी होने का कहीं उल्लेख नहीं है। जो हो, नगर में ईसाई पत्नियों के यहूदी पतियों ने इसी तरह रास्ता निकाला है," गोल्डनबर्ग ने कहा।

विचार करने पर सारजेण्ट को लगा कि सुसाना तलाक की बात पर कभी राजी नहीं होगी। वह जानती है कि उसका पति यहूदी नहीं है। इसलिये वह सारी बात का पर्दाफाश कर सकती है; खास तौर पर यदि किसी वकील से सलाह लेने की बात उसके मन में आ जाय।

"तलाक बहुत आसानी से मिल सकता है," गोल्डनबर्ग ने कहा,

"तुम्हें इतना ही करना होगा कि औरत से एक वक्तव्य लिखा लो कि जातीय कारणों से वह अपने पति से पृथक् होना चाहती है। अर्जी पेश होने पर तलाक अपने आप मिल जाता है। किसी तरह की मुलाकात की अपेक्षा नहीं होती। सभी कुछ शासन-व्यवस्था के माध्यम से हो जाता है। ये नये कानून हैं।"

३७

सारजेण्ट ने सुसाना की ओर से एक तलाक की अर्जी लिखी और वह उस पर सुसाना के हस्ताक्षर कराने चला।

"तुम्हारा पति यहूदी कैम्प में है," सारजेण्ट बोला।" मुझे अभी तुम्हारा घर जब्त कर लेने का हुक्म मिला है। कागजों में लिखा है कि तुम्हारा पति यहूदी है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह नहीं है। सारी गड़बड़ उसके नाम की है। उस कम्बख्त ने अपना नाम वहाँ जाकर मारित्ज क्यों लिखवाया है?"

सुसाना दरवाजे पर अपनी ठोड़ी रखे सुनती रही। वह सारजेण्ट पर अपनी नजर गड़ाये थी। यकायक उसकी आँखों से आँसू बहने लगे—

"तुम मुझसे मेरा आदमी छीन ले गये," वह बोली। "अब तुम मेरा घर लेना चाहते हो। चाहे तुम सारजेण्ट हो, पहले मैं तुम्हें अपने हाथ से मार डालूँगी। तुम मेरा घर न पा सकोगे।" सुसाना ने एक बड़ा पत्थर उठाया और दरवाजे पर दे मारा। सारजेण्ट अपने आपको बचा गया।

"मैं तुम्हारा घर नहीं लेना चाहता," वह बोला। "मैं तो तुम्हारे

लिये यह कागज लाया हूँ कि तुम इस पर अपना हस्ताक्षर कर दो और घर की मालकिन बनी रहो।"

उसने सुसाना को तलाक की अर्जी और अपना फाउण्टेन-पेन दे दिया। सुसाना ने उन्हें ले लिया। किन्तु वह पढ़ न सकी। उसकी आँखें आंसुओं से तर थीं।

"इसमें क्या लिखा है?" उसने पूछा।

"यह तलाक की अर्जी है," सारजेण्ट बोला। "लेकिन यह केवल एक तरह की औपचारिक क्रिया है, जिससे तुम अपना घर रख सकोगी।"

"तुम चाहते हो कि मैं तलाक दे दूँ?" वह चिल्ला उठी। वह एक शेरनी की तरह उछली कि फाड़कर सारजेंट के टुकड़े टुकड़े कर दे। सारजेंट ने उसकी कलाई पकड़ ली और शान्त करने का प्रयत्न किया।

"यह केवल एक विधि है," वह बोला। "यह वास्तविक तलाक की तरह नहीं है। यदि तुम हस्ताक्षर नहीं करोगी, तो थोड़े दिनों ही में मुझे तुम्हें घर से बाहर निकाल देना होगा। तब तुम कहाँ जाओगी? सर्दी सिर पर है और बच्चे तुम्हारी गोद में हैं?"

सुसाना यह बात सुनना ही नहीं चाहती थी।

"जानी मेरा पति है। उससे पृथक् होने की अपेक्षा मैं आत्म-हत्या कर लेना अच्छा समझूँगी।"

सारजेंट उससे घण्टे भर तक बातें करता रहा। सुसाना रो-रोकर थक चुकी थी। वह अन्दर गई, फिर बाहर आई। उसने सारजेंट पर पत्थर फेंके और उसे कुल्हाड़ी से मार डालने की धमकी दी। अन्त में उसने सोचा कि शायद घर से निकाल दिये जाने की अपेक्षा एक कागज पर हस्ताक्षर कर देना ही अच्छा है। जब जान आयेगा, और सारी बात समझेगा तो उसे हस्ताक्षर कर देने के लिये क्षमा कर देगा। वह स्वयं देखेगा कि वह कितनी वफादार रही है, और उसने घर

तथा बच्चों की सार-सँभाल के लिये कितना कठोर परिश्रम किया है। वह उसकी और केवल उसी की रही है। तब उसने हस्ताक्षर कर दिये।

सारजैण्ट ने अपने कोट की ऊपर की पाकेट में सुसाना की अर्जी रखी और चल दिया। अब वह रात भर आराम से सो सकेगा, क्योंकि अब कोई पूछ-ताछ न होगी। यदि कैप्टन आ जाता तो वह सारजेंट को, दो दिन के लिये, कैद कर दे सकता था। लेकिन अब ख़तरा जाता रहा था। वह मुस्कराया और सीटी बजाने लगा।

३८

जॉन के कैम्प के सभी कैदी आसानी से भाग जा सकते थे। उन पर पहरा देनेवाले सैनिक केवल पाँच थे। लेकिन वे जानते थे कि देर-सवेर वे पकड़ कर यहीं वापिस लाये जायेंगे। इसलिये किसी ने कोशिश नहीं की। अकेले मरकु गोल्डन-बर्ग ने प्रयत्न किया था। लेकिन जब वह फरार था, वह सीधा छोटे अफसर के चंगुल में जा फँसा।

छोटे अफसर ने कार्यारम्भ के पहले सभी कैदियों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा—

"क्या मैं मरकु को लोहे के बेड़ियाँ पहना कर कोर्टमार्शल के लिये भेज दूँ या मैं इसे तुम लोगों के चार्ज में छोड़ दूं? क्या तुम इस पर नज़र रखने की जिम्मेदारी लेते हो, ताकि यह अपने आपको दुबारा मूर्ख न बनाये?"

कैदियों ने मरकु की जिम्मेदारी ली, तब तक उसने एक भी दिन नहर पर काम नहीं किया था। वह हमेशा बीमार रहा था। इसलिये उससे दफ़र में क्लर्क का काम ही लिया जाता रहा था। लेकिन अब बूढ़े लॉम्येल ने उसके हाथ में एक फावड़ा थमा दिया और उसके हिस्से

की जमीन उसे बता दी। मरकु गोल्डन-बर्ग ने साफ इनकार कर दिया। एक इंच भी नहर खोदने के बजाय, वह अपने हाथ कटवा डालना अधिक पसन्द करेगा।

"यह कार्य मेरे राजनैतिक विश्वास के विरुद्ध पड़ता है," वह बोला। "कैदियों ने उसे घेर लिया। राजनैतिक विश्वास से कोई भी नहर नहीं खोद रहा था। इसलिये वे यह सुनने को उत्सुक थे कि गोल्डन-बर्ग और क्या करने जा रहा है।"

"इस नहर के खोदने का उद्देश्य लाल-सेना की प्रगति में बाधा डालना है," मरकु बोला। "मैं कम्युनिस्ट हूँ। मैं अपने साथियों के रास्ते में बाधा उपस्थित करने से साफ इनकार करता हूँ।"

कैदियों ने मरकु के साहस की प्रशंसा की। उनकी उसका दृष्टिकोण समझ में आ गया। लेकिन जब उन्होंने देखा कि यदि मरकु अपने हिस्से की खुदाई नहीं करता, तो यह काम उन्हें करना होगा, तो उनके उत्साह पर ठण्डा पानी पड़ गया। वृद्ध लॉग्येल ने काम आरम्भ करने को कहा और इस मामले को स्वयं निबटाने का बचन दिया।

ज्यों ही काम चालू हो गया, लॉग्येल मरकु के पास आया। उस समय मरकु खाई के किनारे जेब में हाथ डाले बैठा था।

"हम यहूदी लोगों में एक गुण है, जो पश्चिम में और किसी में नहीं है," लॉग्येल ने आरम्भ किया। "हम मामले को निपटाना जानते हैं। हमारी जाति इतनी बुद्धिमान अवश्य है कि वह समझौते के मूल्य को समझती है। वह परस्पर-विरोधी पराकाष्ठाओं में से साफ रास्ता निकाल लेना जानती है। हमें यह गुण पूर्व से परम्परा में मिला है। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो? 'बुद्धिमान् वह है जो बकरी और गोभी दोनों से निपट सके' एक रूमानी कहावत है। तुमने इस बुद्धिमानी को ताक़ पर उठा कर रख दिया है और ऐसे सिद्धान्तों को अपना लिया है जो समझौते के लिये गुंजायश नहीं छोड़ते। तुम यह बात भूल गये हो कि यह बर्बर लोगों तथा सैनिकों की जातियों की निजी विशेषता है। सभ्य और संस्कृत लोग एक

साथ अनेक विचारों को अपने मन में स्थान दिये रह सकते हैं। परिस्थिति-विशेष में जिस विचार के अनुसार कार्य करना सबसे अधिक अनुकूल जान पड़े उसी विचार को कार्यरूप में परिणत कर सकते हैं। यदि तुम बुद्धि की इस बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहते, तो यह तुम्हारा अपना काम है। हमें लगता है कि तुम नहर नहीं हो खोदना चाहते ?"

"किसी भी तरह नहीं," मरकु ने उत्तर दिया।

"जब तक तुम कैम्प में हो, तुम्हारा हिस्सा किसी दूसरे को करना होगा। अभी तक तुम बीमारी की छुट्टी पर रहे हो लेकिन अब से..."

"मैं जानता हूँ, किन्तु मैं नहर खोदने नहीं जा रहा हूँ," मरकु ने दृढ़ता से कहा।

"यदि तुम नहीं खोदोगे तो हम तुम्हारे बजाय खोदेंगे। हम आज तुम्हारे बजाय खोद रहे हैं," लाँग्येल बोला "लेकिन साथ ही हम यह भी नहीं करेंगे कि हम तो तुम्हारा काम करें और तुम इस प्रकार जेब में हाथ डाले बैठे रहो।"

"मैंने तुम्हें कभी खोदने के लिये नहीं कहा," मरकु तिरस्कार के साथ बोला। "यदि तुम्हें मेरे बजाय खोदना अच्छा लगता है, तो खोदते रहो।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि इसमें हमें मज़ा नहीं आता। लेकिन हम यह भी नहीं कर सकते कि हम छोटे अफसर के पास जायें और उसे कहें कि तुम्हारे हाथ में हथकड़ी डालकर तुम्हें कोर्ट-मार्शल के लिये भेज दे।"

"जाओ, और उसे कह दो कि मैं तोड़-फोड़ करने वाला हूँ," मरकु बोला। "क्यों नहीं ?"

"तुम एक डिग्री-प्राप्त वकील हो," लाँग्येल बोला। "इसमें कुछ सन्देह नहीं कि तुम परिस्थिति को भली भाँति समझते हो। हम यह नहीं चाह सकते कि तुम पकड़ लिये जाओ और तुम्हें बन्दूकों के बीच कैम्प से बाहर ले जायें। हम यह कर ही नहीं सकते। यूरोप भर में आज

जंगली पशुओं की तरह यहूदियों का पीछा किया जाता है, उन्हें पकड़ा जाता है और कैदी बना लिया जाता है। लेकिन गोल्डन-बर्ग! ऐसा करनेवाले फासिस्ट हैं और हमारे शत्रु हैं। हम यहूदी इस शिकार खेलने में उनका साथ नहीं दे सकते। हम यह माँग नहीं कर सकते कि एक यहूदी के हाथ में हथकड़ी डालकर उसे कोर्ट-मार्शल के लिये भेज दिया जाय। लेकिन साथ ही हम तुम्हारे बजाय तुम्हारा काम भी नहीं कर सकते। हम पर अपने ही काम का पर्याप्त भार है।"

"मुझे यह भावना-प्रधान उपदेश देने का क्या प्रयोजन है?" मरकु ने व्यंग्य-पूर्ण ढंग से पूछा। "क्या तुम मुझे नहर पर काम करने की प्रेरणा दे रहे हो?"

"मैं इतना भोंदू नहीं हूँ," लाँग्येल बोला। "तुम झक्की हो। झक्की आदमी पशुओं की तरह व्यवहार करते हैं। उनके अधिक समीप जाना खतरनाक है। जो हो, तुम्हारे माता-पिता हैं। हम जानते हैं कि तुम उनका ख्याल नहीं करते। हम सब करते हैं। वे घर पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम यह बात नहीं भूल सकते कि तुम यहूदी हो। हमारे भाई हो। चाहे तुम इसे भूल ही गये हो, किन्तु तुम हमारा अपना रक्त-मांस हो। यही कारण है, चाहे तुम्हें यह उपहासास्पद ही लगे, कि हम तुम्हारी झक्क में, जाति के हित की बात में और अपनी भावना में समझौते का मार्ग खोज रहे हैं।"

दूसरे कैदी उन्हें घेर कर खड़े हो गये थे और उनकी बातें सुन रहे थे।

"तुम नहर खोदने का काम इसी लिये नहीं करना चाहते क्योंकि यह लाल-सेना के तुम्हारे कामरेडों के मार्ग में एक बाधा है," लाँग्येल बोला। "यह काम करने की अपेक्षा तुम अपनी जान देना अच्छा समझते हो। हम तुम्हें यह काम करने के लिये मजबूर न करेंगे। लेकिन इसके बजाय तुम्हें कोई ऐसा दूसरा काम करना होगा जिसमें कोई राज-नैतिक वा सैनिक रंगत न हो। उदाहरण के लिये कैम्प के पाखानों को

ही साफ करने का काम है। हम लोग इसे बारी-बारी करते हैं। यदि तुम इसे हर रोज करना स्वीकार करो, तो जिस किसी की भी उस दिन ड्यूटी हो, वह तुम्हारे हिस्से का खुदाई का काम कर दिया करेगा। लेकिन मैं तुम्हें सावधान कर देना चाहता हूँ कि यह बड़ा ही कठिन और गंदा काम है।" वृद्ध लॉंग्येल का विश्वास था कि मरकु के सामने जब यह दूसरा प्रस्ताव रखा जायेगा तो वह नहर खोदने के ही काम को स्वीकार कर लेगा। वह जानता था कि किसी बुद्धिजीवी का तो कहना ही क्या, कोई भी उसे लगातार दो-तीन दिन से अधिक नहीं कर सकता।

"तुम्हें अभी मुझे इसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है," लॉंग्येल बोला। "आज रात इस पर विचार कर सकते हो।"

"मुझे इस पर विचार नहीं करना है," मरकु बोला। "मैंने निर्णय कर लिया है।"

"तो क्या निर्णय है?"

"निस्सन्देह पाख़ाने साफ करना। यह सर्वोपयोगी रचनात्मक कार्य है। नहर की खुदाई तो जुर्म है, प्रतिक्रिया-वादिता है और फासिस्टों का कार्य है। मैं अपने कामरेडों के रास्ते में बाधा उपस्थित करने के लिये एक उँगली हिलाने की भी अपेक्षा प्रतिदिन पाख़ाने साफ करना अधिक पसन्द करूँगा।"

बूढ़े लॉंग्येल का चेहरा पीला पड़ गया। उसकी योजना असफल रही।

"अपना अन्तिम निश्चय करने से पहले, इस बात पर विचार कर लो," वृद्ध पुरुष ने कहा।

"मैं अपना निश्चय कर चुका," मरकु बोला। उसने लॉंग्येल की ओर पीठ कर ली।

इसके बाद फिर किसी कैदी की उससे बातचीत करने की हिम्मत नहीं हुई। केवल जॉन मारित्ज़ ने उससे दो शब्द कहने का साहस किया।

"मरकु, क्या तुम पगला गये हो? क्या तुम रोज पाख़ाने साफ करोगे? यह तो खानों के काम से भी बदतर है।"

"जाओ, नरक में!" गोल्डन-बर्ग उस पर टूट पड़ा। "मैं जानता हूँ, कि मैं क्या कर रहा हूँ।"

"ऐसा कोई नहीं सोच सकता," जॉन ने कहा।

उस समय उसने देखा कि मरकु गोल्डन-बर्ग की आँखें उतनी ही विकराल हैं जैसी कि जरगु जारडन की थीं।

इसलिये जॉन मारित्ज़ चल दिया।

३६

अगले दिन वृद्ध लॉग्येल की अन्तरात्मा ने उसे पीड़ा पहुँचानी आरम्भ की। उसे गोल्डन-बर्ग के साथ किया गया अपना व्यवहार अच्छा नहीं लग रहा था। वह एक कोमल-हृदय वृद्ध पुरुष था। गोल्डन-बर्ग के विचार को बदल देने का दृढ़ निश्चय कर वह उसी शाम उसके पास पहुँचा। वह जिस तरह भी हो उसे पाख़ाने साफ करने के काम से हटा लेना चाहता था। उसे लगता था कि उसी ने मरकु को उस काम में झोंका है।

मरकु अभी भी यही कर रहा था। सारा दिन वह उस गढ़े में से, जो कैदियों का पाख़ाना था, बाल्टी भर कर कैम्प के सिरे पर खेत में डालता रहा था। उस दिन वर्षा होती रही थी। गढ़ों में पानी भर जाने से कार्य और दिनों की अपेक्षा भी खराब हो गया था। मरकु चूर-चूर हो गया था। वह मजबूत नहीं था, और उसे फेफड़ों की शिकायत थी।

"मैं समझता हूँ कि अब तुम इसे छोड़ दोगे," लॉग्येल बोला। "यह काम तुम्हारे लिये नहीं है।"

मरकु नीचे गढ़े में उतरा और फिर बाल्टी भर ली। तब वह खड़ा हुआ और उसे फैलाकर उस पर फावड़े से मिट्टी डाल दी।

"इस गंदगी और सड़ाँद में सारा दिन!" लॉग्येल बोला। "मैं तुम्हारी जगह होता तो इसे जारी न रख सकता।"

मरकु ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया। वह बड़ी कठिनाई से खड़ा हो सकता था, किन्तु उसने अपना काम जारी रखा। उसने बाल्टी उठाई और उन्हें ले जाकर खाली करने के लिये बूढ़े आदमी के सामने से गुजरा। जब वह लौटा तो लॉग्येल कह रहा था—

"अब से तुम्हारे कपड़ों और तुम्हारी चमड़ी से बदबू आने लगेगी। इसकी सड़ाँद के मारे तुम रात को सो नहीं सकोगे।"

बूढ़ा आदमी मरकु को यह कहने जा रहा था कि कल से वह आफिस में अपने काम पर जा सकता है। लेकिन मरकु अधिक सहन नहीं कर सका। उसकी सहन-शक्ति की सीमा हो चुकी थी। हाथ में फावड़ा था। उसने उसे ऊपर उठाया, आँखें बन्द कीं और दे मारा। फावड़े का तेज सिरा पूरे जोर से लॉग्येल के सिर पर पड़ा। बूढ़ा लड़खड़ा गया, किन्तु मरकु ने फिर उसे देखा ही नहीं। उसके हाथों ने फावड़े को मजबूती से पकड़ा और उसने एक चोट की; फिर एक चोट की। अब ये चोटें जमीन पर पड़ रही थीं। बूढ़ा पृथ्वी पर लाश बना पड़ा था। मरकु हाथ में फावड़ा लिये खड़ा रह गया था। उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि बूढ़े की खोपड़ी खुली पड़ी है और वह उसके पाँव में सिकुड़ा पड़ा है। उसका इरादा बूढ़े आदमी की जान लेने का नहीं था। यह सब उससे निराशा में हो गया था।

किन्तु उसे इसका अफसोस नहीं था।

४०

उस दिन के बाद चार महीने बीत गये। जॉन मारित्ज़ को अभी भी बूढ़े का फावड़े द्वारा दो टुकड़े हुआ सिर दिखाई दे रहा था और बन्दूकों के बीच में ले जाया जाता मरकु भी। लेकिन उसे ऐसा लगता था कि इन बातों को कई वर्ष बीत गये। हम मरे हुओं को शीघ्र ही भूल जाते हैं। मरकु मरा नहीं था, किन्तु मुल्ज़िम भी मरे हुओं की भाँति ही भुला दिये जाते हैं।

इस खास दिन बर्फ पड़ रही थी। छोटे अफसर ने सूचना दी कि एक जरनैल निरीक्षण के लिये आनेवाला है।

"हम सम्राट् के आगमन की भी प्रतीक्षा कर रहे हैं" छोटे अफसर ने कहा। "जिस नहर को तुम खोदते रहे हो, सम्राट् उसे स्वयं देखना चाहता है। सम्राट् ने अपने हाथ से इसका नक्शा बनाया था। इस-लिये वह इसे देखना चाहता है।"

जॉन ने मरकु के बारे में सोचा कि वह कहीं न कहीं निमक की खान में नीचे काम कर रहा होगा। तब उसने उस सम्राट् के बारे में सोचा जिसने अपने हाथ से नहर का नकशा बनाया था। वह सम्राट् को, जैसा कि तसवीर में, हाथ में पेन्सिल लिये, डैस्क पर ख़ाका बनाते देख सकता था। नहर बड़ी लम्बी थी। कुछ लोगों के मत के अनुसार सत्तर मील लम्बी। लाखों कैदी इसे खोदने में लगे थे। लेकिन हर कैदी केवल अपनी ही टुकड़ी देख सकता था और थोड़ा दायें-बायें। नहर दस फुट गहरी थी और बहुत ही अधिक ढलवाँ। इसमें पानी भर दिया जाने को था। जॉन ने इस बात की कल्पना करने की कोशिश की कि जिस तरह वह खड़ा था, वहाँ से जब पानी बहता होगा तो कैसा लगेगा? उसने यह भी सुना था कि लड़ाई के बाद यह जहाजरानी के भी काम आयेगी। अभी तो यह रूसी लोगों को रूमानिया पर आक्रमण करने से रोकने के लिये बनाई जा रही थी। इसी लिये सारा काम छिप कर किया

जा रहा था। केवल सम्राट् और कुछ थोड़े से जरनैलों को ही इसका पता था। छोटे अफसर ने यही कहा था। स्वप्न में जॉन ने अनेक बार देखा था कि सम्राट् अपने जरनैलों से उस नहर के बारे में काना-फूसी कर रहा है, जिसके बनाने में जॉन मारित्ज का हाथ था। अब उसकी समझ में आया कि कैदियों को घर पर अपने स्त्री-बच्चों को क्यों चिट्ठी लिखने नहीं दिया जाता था। यह इसी लिये कि नहर रहस्य बनी रहे और रूसी लोग इसके बारे में कुछ जान न पायें। छोटे अफसर का कहना था कि रूसी खुफिया-पुलिस के आदमी हर जगह उस नहर के फोटो लेने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं, जिसे जॉन खोद रहा था। लेकिन उन्हें पुलिस हर बार पकड़ लेती है। कैदियों को इसी लिये नहीं छोड़ा जाता है कि वे घर पहुँचकर कहीं रहस्य का उद्घाटन न कर दें।

जॉन को लगा कि लड़ाई के बाद वह एक दिन यहाँ आयेगा और सुसाना तथा अपने बच्चों को यह नहर, जिस पर वह काम करता रहा है, दिखायेगा। उस समय यह पानी से भरी होगी। लेकिन उसने अपने दिमाग में उस स्थान को निश्चित रूप से अंकित कर लिया ताकि वह अपने काम करने की जगह को उस समय भी पहचान सके। उसके बच्चे इसे देख कर चकित हो जायेंगे। उन्हें विश्वास नहीं होगा कि कभी इस नहर की जगह पशुओं के चरने के लिये घास उगी हुई थी। वे अपने सहपाठियों को बतायेंगे कि उनके पिता ने क्या काम किया है, और उन्हें इसका अभिमान होगा। दूसरे बच्चों के पिताओं ने ऐसी असाधारण करनी नहीं ही की होगी।

आरम्भ में, उसे घर की चिन्ता हैरान करती थी। उसे उन ईंटों की फिकर थी जो आँगन में पड़ी-पड़ी बेकार हो गई होंगी, उस लकड़ी की फिकर थी, जो सुसाना जंगल से ला न सकी होगी, और उस मकई की फिकर थी जो खेत से काटी न जा सकी होगी। लेकिन यह केवल शुरू में था। समय के गुजरने के साथ-साथ उसका उद्वेग कम होता गया। वह सोचने लगा कि सुसाना ने सब व्यवस्था कर ही ली होगी। स्त्री

होने के कारण जो कुछ उससे न हो सका होगा, वह घर पहुँचने पर कर लेगा। जिस दिन से छोटे अफसर ने स्वयं उसकी परीक्षा कर ली, उसकी पतलून उतरवा कर निश्चित रूप से यह जान लिया था कि वह यहूदी नहीं है, उस दिन से वह किसी भी समय अपनी रिहाई की आशा लगाये हुए था। उसका विश्वास था कि उसकी रिहाई के कागज तो आ ही गये होंगे, किन्तु नहर अधूरी रहने के कारण ही उसे जाने नहीं दिया जा रहा है। अब जब कि जरनैल और उसके बाद स्वयं सम्राट नहर देखने आ रहे हैं, तो उसे जाने की आज्ञा मिल ही जायगी। उसे यहाँ भेज दिया गया था, इसके लिये जॉन के मन में कोई शिकायत नहीं रह गई थी। उसका प्रथम क्रोध उस पुलिस-सैनिक के विरुद्ध था, जो उसे फन्तना से नगर ले आया था। उसके बाद सारजेण्ट के खिलाफ। उसका विश्वास था कि उसकी जब्ती के आज्ञा-पत्र के लिये सारजेण्ट ही जिम्मेदार है। अभी भी उसका यही विचार था। लेकिन उसका विकट क्रोध कम हो गया था। प्रति दिन की छोटी-मोटी उद्वेगकर बातें उसे बझाये रखती थीं। घर लौटने पर, यदि गाँव की गली में सारजेण्ट डोब्रैस्कू उसके सामने से गुजरेगा तो वह पहले ही उसके सम्मानार्थ अपनी टोपी का स्पर्श करेगा। यदि कहीं छः या सात महीने पहले उसकी रिहाई हो गई होती तो वह काट कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता। उस जब्ती के आज्ञा-पत्र को लेकर उसे मूर्ख बनाने के कारण वह उसे शाप तक दे सकता था। समय महान् चिकित्सक है। शनैः शनैः उसकी क्रोधाग्नि शान्त हो गई थी। वह जानता था कि वह शीघ्र ही अपने घर वापिस लौट जायेगा। अपने स्त्री-बच्चों को देखने के लिये वह व्यग्र था। बच्चे बड़े हो गये होंगे। पैतरु दरवाजे पर उसका स्वागत करने आयेगा। इस प्रकार जॉन अपने दिवा-स्वप्नों में मस्त था। उसे अभी से अपना आप दरवाजे में से गुजरता दिखाई दे रहा था, पैतरु को गोद में उठाये हुए और निकोले को छाती से लगाये हुए। यह तमाम इतना ही स्पष्ट था, मानो वह इसी समय उन्हें छाती से चिपटाये हो। वह सुसाना को बतायेगा कि उसने क्या-क्या

किया और वह कहाँ-कहाँ रहा। वह उसे यह नहीं बतायेगा कि उन्होंने उसे पीटा और भूखा रखा। उसे दुखी करने से क्या लाभ? लेकिन वह उसे यह बता देगा कि उसने किसी प्रकार यहूदी सीखी और यह भी कि कैम्प में कोई भी यह विश्वास नहीं करता था कि वह रूमानिया का है, यहाँ तक कि यहूदी लोग भी नहीं। तब सुसाना खिलखिलाकर हँस पड़ेगी। फिर वह उसे यह भी बता देगा कि छोटे अफसर ने किस प्रकार उसका पाजामा खुलवाकर और स्वयं देखकर ही उसके यहूदी न होने का विश्वास किया। सुसाना हँसी के मारे लोट-पोट हो जायगी, खास तौर पर जब वह यह सुनेगी कि स्ट्रूल को भी झुक कर देखने का हुक्म दिया गया था। वह उसे बतायेगा कि किस प्रकार क्लार्क और छोटे अफसर ने जम्हाई लेते हुए कहा था: "जॉन, हमें तुम्हें छोड़ना होगा। सम्राट् की आज्ञा है कि केवल यहूदियों से ही नहर बनाने का काम लिया जाय।" सुसाना को खुशी होगी कि आखिर यह सारा झमेला समाप्त हुआ, और वह घर वापिस आया। वह उसके निकट आयेगी और प्रेम से उसके गले लग कर कहेगी: "तुम मेरे पति हो और तुम मुझे आकाश में चमकनेवाले सूर्य से भी अधिक प्रिय हो।"

जरनैल के आगमन की प्रतीक्षा करते समय जॉन इस प्रकार के स्वप्न देख रहा था। तब सूचना मिली कि जरनैल ने अपना निरीक्षण अगले दिन के लिये स्थगित कर दिया। अपना फावड़ा लिये जो कैदी तीन कतारों में खड़े थे, बिखर गये।

मारित्ज़ को आफिस में बुलाया गया।

"छोटे अफसर ने तुम्हें बुलाया है," स्ट्रूल ने कहा। जॉन को अपने हृदय की धड़कन साफ सुनाई दे रही थी। उसे विश्वास था कि उसे रिहाई की खबर सुनाने के लिये ही बुलाया गया है, लेकिन उसने स्ट्रूल से कोई प्रश्न नहीं पूछा। उसे अपनी खुशी पर काबू पाना कठिन हो रहा था। उसे नहर के पूरा होने से पहले रिहाई की आशा नहीं थी। यह समाचार ऐसा ही था, मानो आकाश से वज्र गिरा हो।

छोटे अफसर ने नई वर्दी पहन रखी थी। जरनैल के निरीक्षण के लिये फर्श रगड़ रगड़ कर साफ किया गया था। मेज पर नीले रंग का नया कागज बिछाया गया था और उस पर फाइलों की ढेरियाँ क्रम-बद्ध सजी हुई थीं। जॉन दरवाजे पर रुका और उसने सलाम किया। उसके लिये उस समाचार को सुनने की प्रतीक्षा करना आसान था। किन्तु उसने बहाना किया कि जैसे उसे पता ही न हो कि उसे क्यों बुलाया गया है? वह यह नहीं दिखाना चाहता था कि वह एक लड़के की तरह खुश है। छोटे अफसर के पास की ही कुर्सी पर डा० सैमुअल अब्रमोविच बैठा था। वह भी एक कैदी था, किन्तु उसने छोटे अफसर से दोस्ती कर ली थी। इसलिये सारा दिन दफ्तर में ही बैठा रहता था। स्ट्रूल अपनी मेज पर एक कोने में बैठा था। वे सभी बड़े गम्भीर थे। उन्होंने उसकी ओर सीधे देखा।

अंत में छोटा अफसर बोला।

"मारित्ज़, मेरे बच्चे, तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें तलाक़ दे दिया है!" अपनी मूछों पर ताव देते हुए वह कहता गया: "हमारे पास तलाक़ का सार्टिफिकट आ गया है। तुम्हें उस पर हस्ताक्षर कर देना है, ताकि यह प्रमाणित हो जाय कि तुम्हें इसकी सूचना मिल गई है।"

छोटे अफसर ने कागज का एक टुकड़ा मेज के कोने पर फेंक दिया और जॉन के हाथ में देने के लिये क़लम आगे बढ़ाया। जॉन पत्थर बना खड़ा रहा।

"तलाक़ का आधार जातीय है। वह अब और किसी यहूदी की स्त्री नहीं रहना चाहती।" छोटे अफसर ने एक प्रकार से उसे गाली देते हुए कहा: "शुद्ध रूमानिया-वासी और ईसाई होने की अपनी सब कथाओं के साथ तू! तू सोचता होगा कि तू मुझे मूर्ख बना रहा है? क्या सोचता था? लेकिन मैं ऐसे विषयों में खुर्राट हूँ। मैंने तुम्हारी दरख्वास्त भेजी ही नहीं, और मैं ठीक था। तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें तलाक़ दे दिया, क्योंकि तुम यहूदी हो। और उससे अधिक कौन जानेगा?"

छोटा अफसर मुस्कराया । लेकिन जब उसने जॉन का कुम्हलाया हुआ चेहरा देखा जो पिघला जा रहा था । उसकी मुस्कराहट जाती रही ।

"स्त्रियाँ ऐसी ही होती हैं," वह बोला । "तुम घर से बाहर हुए कि नहीं उन्होंने दूसरा आदमी खोजा । सभी सुअरियाँ, उनमें से हर कोई । आओ, इस बात को लेकर अपना मन छोटा न करो ।"

जॉन उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता । अपनी पत्नी के लिये 'सूअरी' शब्द का उपयोग ऐसी बात नहीं थी जिसे वह सहन कर सकता हो । उसने अपने दाँत कटकटाये । अपने पर काबू रखने के प्रयत्न के बावजूद उसे अपने अन्दर आग जलती प्रतीत हो रही थी । उसका गला सूख गया और उसने जैसे चोट करने के लिए, अपनी मुट्ठी बांधी ।

"मेरी पत्नी सूअरी नहीं है," वह बोला ।

"बिल्कुल ठीक," छोटा अफसर बोला । "तुम एक ऐसे आदमी हो, जिसकी पत्नी सूअरी नहीं है, क्योंकि अब तुम्हारी कोई पत्नी ही नहीं है ।.........ता० तक तुम्हारी पत्नी थी ।" छोटे अफसर ने हाथ बढ़ा कर कागज का टुकड़ा उठाया और तारीख पढ़ी—"३० जनवरी तक । यही वह तारीख है जब तलाक़ दिया गया है । तब से तुम फिर नये सिरे से कुँवारे हो ।" छोटा अफसर हँसा । डा० अब्रमोविचि भी अन्दर अन्दर मुस्करा रहा था ।

"मेरी स्त्री ने मुझे तलाक नहीं दिया है," जॉन बोला । "मैं सुसाना को जानता हूँ ।"

"तुम क्या जानते हो, यह सोचना तुपहारा काम है," छोटे अफसर ने कहा । "यहाँ इस बात पर हस्ताक्षर करो कि तुम्हें तलाक दिये जाने की सूचना मिल गई है और अब तुम फिर कुँवारे हो गये हो ।"

"मैं कुँवारा नहीं हूँ ।" जान बोला ।

"बहुत अच्छा, तुम कुँवारे नहीं हो, लेकिन तुम्हें तब भी हस्ताक्षर करना होगा ।"

जॉन ने उस कलम की ओर देखा, जिसे छोटे अफसर ने उसके सामने बढ़ा रखा था, और बोला :—

"मैं हस्ताक्षर करने से इनकार करता हूं।"

छोटा अफ़सर गुस्से से लाल हो गया। उसे याद आ गया था कि वह मिलिट्री का एक आदमी है और मारित्ज़ का वह उत्तर डिसिप्लिन के खिलाफ है।

"हस्ताक्षर करो," उसने आज्ञा दी। "क्या तुम भूल गये हो कि तुम कहाँ हो?"

जॉन ने कलम ली और हस्ताक्षर कर दिया। अब यह आज्ञा थी। यह उसे माननी ही थी। जब उसने दाहिनी ओर के उस कोने पर, जहाँ बिन्दुओं के चिह्न थे और जिस जगह पर छोटे-अफसर ने अपनी उँगली से निर्देश किया था, हस्ताक्षर कर दिये तो उसने कलम रखकर कमरे से बाहर होना चाहा। उसकी आँखें आँसुओं से अन्धी थीं और उसका सिर चकरा रहा था।

"इसे पढ़ लो," छोटे अफसर ने कहा। "ताकि तुम्हें मालूम हो जाय कि तुमने किसी चीज़ पर हस्ताक्षर किये हैं।"

"मुझे इसे पढ़ने की ज़रूरत नहीं," उसका उत्तर था। "मैं जानता हूं कि यह बात किसी भी तरह सत्य नहीं है।"

उसने दरवाजा खोलने की चेष्टा की। किन्तु उसका हाथ दरवाजे की मुठ पर नहीं पड़ा, मानो गुप्प अँधेरा हो।

"रुको और एक सिगरेट पीते जाओ," डा० अब्रमोविचि ने अपनी सिगरेट की डिब्बी आगे बढ़ाते हुए कहा। जॉन दरवाजे से वापिस मुड़ा, एक सिगरेट ली और पीने लगा। ठीक वह क्षण, जब डा० अब्रमोविचि ने सिगरेट जलाने के लिये अपनी अग्नि-पेटिका उसके सामने की थी, उस के दिमाग से उतर गया। उसने याद करने की कोशिश की। किन्तु उस नाचती हुई लौ के अतिरिक्त उसे कुछ नहीं दिखाई देता था। यह एक लाल शोला था जो क्रमशः बढ़ता जा रहा था।

"क्या तुम्हारा कोई बच्चा है ?" डाक्टर ने पूछा। जॉन मानो निद्रा से जाग उठा। उसने उत्तर दिया, किन्तु यह ऐसा था, मानो कोई और बोल रहा हो। किसी न किसी तरह वह आफिस से बाहर आ सका। उस दिन सारा समय वह नहर के किनारे बर्फ सी ठण्डी जमीन पर बैठा रहा। उसे ठण्ड नहीं लग रही थी। उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। बीच-बीच में उस कागज की याद आती, जिस पर उसने हस्ताक्षर किये थे, और उसका बदन क्रोध के मारे हिल-हिल जाता।

अगले दिन वह फिर छोटे-अफसर के पास गया और उससे वह कागज माँग कर दुबारा पढ़ा। तब तक उसे यह विश्वास नहीं था कि यह सच हो सकता है, किन्तु अब उसे विश्वास हो गया था। सुसाना ने उसे तलाक दे दिया था, क्योंकि वह भी यह समझने लगी थी कि वह यहूदी है और क्योंकि उसे दूसरा आदमी मिल गया था। अब उसे छोटे अफसर पर, अपने आप को कुँवारा कहने के लिये, क्रोध नहीं आता था। इससे उसे चोट लगती थी, लेकिन वह क्रोधित नहीं होता था। क्योंकि वह जान गया था कि यह सत्य है। उसने इसे स्वयं अपनी आँखों से पढ़ा था।

४१

अगले दिन भी छोटा अफसर अपनी नई वर्दी में ही आया कैदी दोपहर तक नहर के किनारे परेड करते रहे, किन्तु जरनैल आया ही नहीं। तीसरे दिन छोटे अफसर ने अपना रोज का कोट पहन लिया। उसने सूचना दी कि जरनैल असन्तुष्ट हो गया है और नहर देखने नहीं आ रहा है।

पूरे सप्ताह भर लोगों ने काम नहीं किया। जॉन की टुकड़ी और उत्तर चली गई। अभी तक वे नरम गीली मिट्टी खोदते रहे थे, लेकिन अब चट्टान खोदकर नहर निकालने का काम था। छोटा अफसर नये औजार लाने के लिये ट्रक में बैठकर गया। पुराने औजार नरम मिट्टी के लिये ठीक थे। वह तीन दिन गैरहाजिर रहा। तब दो ट्रक भर कर औजार आये, जिनसे चट्टानों में छेद किया जा सकता था और उन्हें उड़ाया जा सकता था। काम थका देने वाला था और गजब की ठण्ड पड़ रही थी। जॉन सर्दी भर मेहनत करता रहा। भोजन अच्छा नहीं था। बीसियों की संख्या में आदमी बीमार पड़े। बहुत से मर गये। जॉन बीमार नहीं पड़ा। केवल एक सप्ताह के लिए उसके गले में तकलीफ हो गई थी। लेकिन काम बड़े ही धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। अप्रैल का महीना आ गया। वे उस जगह से कुछ ही आगे बढ़े थे, जहाँ वे क्रिसमस के समय थे। वे नहर के कुछ ही दर्जन गज खोद पाये थे। यह कहा गया था कि पचास लाख आदमी सर्दी भर काम करते रहे हैं। गरमी भर काम को जारी रहना है और पतझड़ के आते-आते काम को समाप्त करना है। अक्तूबर के आस-पास नहर में पानी ले आना है। लेकिन मई के आरम्भ में उन्हें काम रोक देने की आज्ञा मिली। छोटे अफसर ने सूचना दी कि अधिकारियों ने नहर खुदवाने का विचार छोड़ दिया है। रूमानिया का राजा कैरोल द्वितीय सिंहासन से उतार दिया गया है और वह देश से भाग गया है। जितने जरनैलों ने उसे नहर की योजना में मदद दी थी, वे सब भी या तो भाग गये हैं, या हटा दिये गये हैं। उनकी जगह महल में ऐसे जरनैल आ गये हैं जो समझते हैं कि सम्राट् ने नहर की जिन योजनाओं को अपने हाथ से बनाया था, वे सब निकम्मी हैं। उन्होंने काम रोक देने की आज्ञा है। यहूदियों को गाड़ी में बन्द किया और हंगरी के विरुद्ध मोर्चा बन्दी करने लिये रूमानिया के पश्चिमी मोर्चे पर पहुँचा दिया गया।

जब जॉन ने नहर से विदा ली, तो उसे अफसोस था कि सम्राट ने योजना ठीक नहीं बनाई थी। सारा परिश्रम बेकार गया।

४२

नया कैम्प रूमानिया और हँगरी के बीच की सीमा पर एक जंगल में था। वे लगातार तीन दिन-रात रेल-गाड़ी में चलते रहे थे। नहर पर जिन औजारों से उन्होंने काम किया था, वे सभी साथ लाये गये थे। छोटे-अफसर का सारा दफ्तर, जो लकड़ी की झोपड़ी था, उठाकर रेल-गाड़ी में रख दिया गया। स्टूल रजिस्टर ले आया था। पुराने कैम्प में उन्होंने कुछ बाकी नहीं छोड़ा था। कैदी अपनी जुएँ तक अपने साथ ले आया थे, जिनकी किसी के पास विशेष कमी न थी। लेकिन नये कैम्प में नहर के औजारों का कोई उपयोग न था। यहाँ उन्हें किले-बन्दी के लिये पेड़ गिराने थे। जॉन को किलेबन्दी की कोई कल्पना न थी। लेकिन वह और दूसरे लाखों आदमी पेड़ों को गिरा कर नीचे उपत्यका में ढोये लिए जा रहे थे।

जॉन ने दूर से ही किले-बन्दी को देखने के लिये अपनी आँखों पर जोर डाला। किन्तु उसे वह दिखाई नहीं दी। उसने कल्पना की कि यह सारी लकड़ी हँगरी और रूमानिया के बीच एक बड़ी भारी दीवार बनाने के काम में आ रही है। शायद यही अधिकारियों का विचार था। वह अपरिचित था। लेकिन वह इन दो देशों को पृथक्-पृथक् कर देनेवाली दीवार को देखने के लिये उत्सुक था। जब यह बनकर तैयार हो जायगी, तो वह अपनी काम करने की जगह से, जंगल में किसी ऊँची जगह से, देख सकेगा। उसने सुना था कि हंगरी लोग अपनी ओर भी अपनी सीमा में, एक सुरक्षा-पंक्ति बना रहे हैं। उसे इसमें रुचि थी कि वह देखे कि

कौन-सी दीवार अधिक ऊँची बनती है। उसे प्रसन्नता हुई जब उसने छोटे असफर को यह कहते सुना कि हंगरी की किले-बन्दी दो कौड़ी की नहीं है, और यदि रूमानिया के लोग चाहें तो वे एक रात में उसे पैरों तले रौंद सकते हैं। लेकिन वे चाहते नहीं। जॉन ने कई बार रूमानिया सैनिकों को हंगरी में प्रवेश करते हुए देखा। लड़ाई छिड़ जाने पर भी यदि वह कैम्प में ही रहे तो वह उन्हें जंगल के ऊपर से देख सकेगा। छोटे अफसर ने कहा था कि रूमानिया की किले-बन्दी इतनी ऊँची है कि उस पर से पक्षी भी नहीं उड़ सकते। यही कारण था कि जॉन उसे वास्तव में बहुत ऊँचा मानता था। कुछ ऐसे पक्षी थे, जो आकाश में इतने ऊँचे उड़ते थे कि जमीन से दिखाई ही नहीं देते थे। यदि ये पक्षी भी रूमानिया की किले-बन्दी के ऊपर से नहीं जा सकते तो इसका यह अर्थ हुआ कि किले-बन्दी का शिखर दिखाई ही नहीं देगा। यह बादलों में छिप जायगा। जॉन सोचने लगा कि जिन पेड़ों को उसने स्वयं गिराया था, उन्हें वे कहाँ लगायेंगे। उसे इच्छा हुई कि वह अपने गिराये हुए पेड़ों पर विशेष चिह्न बना दे। हो सकता है कि किलेबन्दी पूरी होने पर वह अपने पेड़ों को सर्वोपरि ही कहीं लगा हुआ देखे।

प्रतिदिन जंगल में पेड़ गिराते समय, जॉन इसी प्रकार के संकल्प-विकल्प करता रहता। इससे आसानी से समय कट जाता। वह जानता था कि उसके कई विचार निरी शेखचिल्ली की कल्पनायें हैं, और वे किसी भी दूसरे आदमी को हँसा-हँसा कर मार डालेंगे, लेकिन तो भी वह उनसे चिपटा हुआ था।

हाँ, वह घर और फन्तना की बात कभी नहीं सोचता था। इससे उसका खून उबलने लगता था।

एक दिन स्ट्रूल उसके पास जंगल में आया और बोला कि उसे आफिस में बुलाया है। तलाक के सर्टिफिकेट के दिन के बाद से उसने आफिस में पाँव नहीं रखा था। डेस्क और छोटे अफसर को देखने से उसे कोने की याद आ जाती थी जहाँ वह कागज पड़ा था और जिस

तरीके से वह उस पर हस्ताक्षर करने के लिये अपनी कोहनियों के बल झुका था। यही कारण था जिससे उसने फिर कभी न वहाँ जाना चाहा और न दूर से भी उसकी ओर देखना चाहा। लेकिन अब जब उसे बुलाया गया था तो बिना गये चारा न था।

छोटा अफसर दफ्तर में नहीं था। कमरे में केवल तीन आदमी थे—डा० अब्रमोविचि, स्ट्रल और हरटिंग—कैम्प-रसोइया। जॉन ने सलाम किया। उन्होंने उसे प्रेमपूर्वक स्वीकार किया और बैठने के लिये स्टूल दिया। जॉन ने इधर-उधर देखा। वह छोटे अफसर के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। यदि उन्होंने उसे जंगल से बुला भेजा है तो छोटे अफसर को कुछ महत्त्वपूर्ण बात करनी होगी।

"छोटा अफसर यहाँ नहीं है। हम निर्विघ्न होकर शान्ति से बातचीत कर सकते हैं," डा० अब्रमोविचि बोला। उसने जॉन को एक सिगरेट दी। डा० अब्रमोविचि हमेशा मँहगी सिगरेटें पास रखता था।

"जॉकी!" डा० अब्रमोविचि बोला। "तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें छोड़ दिया है।" जॉन का रंग बदल गया। वह पीला पड़ गया।

"इससे तुम्हें क्या?" वह बोला। "यह केवल मेरा निजी मामला है।"

"मेरे कहने का इतना ही अभिप्राय था कि अब जब तुम कैंप से निकलोगे तो वहाँ कोई तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करता होगा।" डा० अब्रमोविचि बोला। "व्यक्तिगत तौर पर तो मैं यह नहीं मानता कि लड़ाई की समाप्ति से पहले किसी को भी रिहाई मिलेगी। लड़ाई और भी दस वर्ष तक जारी रह सकती है।"

जॉन ने ठण्डी साँस ली। यदि उसे इसी कैम्प में अभी और दस वर्ष गुजारने हुए तो उसके सारे बाल सफेद हो जायेंगे।

"क्या तुम किसी दूसरे देश चलना चाहोगे?" डा० अब्रमोविचि ने पूछा।

जॉन को घिरजा आयोन के साथ अमरीका जाने की अपनी योजना

याद आ गई। 'यदि उस दिन केवल वर्षा हो गई होती तो इस समय मैं अमरीका में होता। मैं उस रात सुसाना से मिलने न गया होता। यदि उस समय सुसाना से न मिला होता, तो अब कहीं बहुत दूर होता। इस कैंप में न आया होता।'

"हाँ, मैं चाहूँगा," कहते हुए जॉन का चेहरा चमक उठा। "एक बार पहले भी मैंने अमरीका जाना चाहा था, किन्तु कुछ ऐसा हुआ कि यह न हो सका।"

"इस बार यह सम्भव हो जायगा," डा० अब्रमोविचि बोला। "यदि तुम चलने के लिये तैयार हो तो तुम कुछ ही महीनों में अमरीका पहुँच जाओगे।"

जॉन ने अब्रमोविचि, स्ट्रूल और हरटिग की ओर देखा। उन्होंने भी उसकी ओर देखा। यह स्पष्ट ही था कि वे मजाक नहीं कर रहे थे। उन्होंने केवल मजाक करने के लिये इतनी दूर जंगल से उसे नहीं बुलवा भेजा था।

"मैं राजी हूँ," जॉन बोला।

"तो हमारे साथ आओ," डाक्टर ने कहा, "हम तीनों के साथ। हम हंगरी में भाग जाना चाहते हैं। क्या तुम छुपकर भागने से डरते हो?"

"नहीं," जॉन बोला।

"हंगरी में," डाक्टर बोला, "सैमिटिक-विरोधी कानून नहीं है। वहाँ मेरी एक विवाहिता बहन है। श्री हरटिग के भी वहाँ सम्बन्धी हैं। लेकिन हमें एक ऐसा साथी चाहिये जो सामान ढोने में सहायक हो सके। मेरे पास बहुत सामान है—छः सूटकेस। मैं अपनी सभी कीमती चीजें ले जा रहा हूँ। एक बार हम सीमा पर पहुँच जायँ, हमें दस मील तक हंगरी-प्रदेश में पैदल चलना होगा। मैं इन सब को अकेला नहीं ले जा सकता। और हममें से कोई भी हंगरी की भाषा भी नहीं बोल सकता। हमें तुम्हारा ध्यान आया।"

"हम यहाँ से कैसे निकलेंगे ?" जॉन ने पूछा ।

"छोटा अफसर हमें ट्रक में बिठाकर सीमा तक पहुँचा आयेगा," डाक्टर ने कहा । "अन्यथा हम किसी तरह बाहर नहीं जा सकते । सभी सड़कों पर पहरा है । लेकिन सैनिक-ट्रक में हम सुरक्षित निकल जायेंगे ।"

"क्या छोटा अफसर जानता है कि हम छुपकर भाग रहे हैं ?"

"निश्चय से वह जानता है," हराटिग ने उत्तर दिया । "उसका परिवार बड़ा है, और उसे रुपये की आवश्यकता है । यदि तुम उसके स्थान पर होते, तो क्या तुम भी यही नहीं करोगे ?"

जॉन ने उत्तर नहीं दिया ।

"एक और सिगरेट ले लो और तब जाकर अपना सामान बाँध लो," डा० अब्रमोविचि बोला । "लेकिन ध्यान रहे, किसी और कैदी को इस की गन्ध न लगने पाये ।"

"तुरन्त ?" जॉन ने पूछा ।

"जितनी जल्दी सम्भव हो," डाक्टर बोला । "नौ बजे दरवाजे के बाहर ट्रक लिये छोटा अफसर हमारी प्रतीक्षा करेगा । ज्यों ही तुम अपनी चीजें बटोर लो, तुरन्त आफिस चले आओ । हम तुम्हारा इन्तज़ार करेंगे । बहुत ज्यादा सामान मत लेना । याद रखना, तुम्हें मेरा सामान ले चलना है ।"

जॉन गया और एक छोटे से सूट-केस के साथ लौट आया । उसी में उसने एक कमीज, दो पतलूनें और पाव-रोटी का आधा टुकड़ा ठूंस लिया था । नौ बजे वे फाटक से बाहर हुए । छोटा अफसर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था । उसने उन्हें ट्रक में बिठाया और सीमा की ओर ले चला ।

तीन बजे जॉन मारित्ज़ हंगरी-प्रदेश में डा० अब्रमोविचि के सूट-केस ढो रहा था । दिन चढ़ते-चढ़ते वे एक रैलवे स्टेशन पर पहुँचे । डा० अब्रमोविचि ने जॉन को कुछ रुपया दिया कि वह बुडापैस्ट के चार सेकिण्ड-क्लास टिकट खरीद लाये ।

४३

बुखारैस्ट में फिनलैण्ड के दूतावास में एक स्वागत सभा में त्रायन कोरुग की रूमानिया के युद्धमन्त्री जरनैल ताउतु से भेंट हुई। कुछ दिन बाद वह उसे सचिवालय में मिलने गया और उस समय उसने उसके सामने मारित्ज़ का मामला रखा। जरनैल ने ध्यान देकर सुना। उसने उसका उपनाम, ईसाई नाम, जन्म तिथि, गिरफ्तारी की तारीख आदि-ब्यौरे की बातें लिख लीं और तब कहा—

"अधिक से अधिक एक महीने तक तुम्हारा आदमी वापिस गाँव पहुँच जायेगा। मैं इस मामले की अविलम्ब पूछ-ताछ करता हूँ और उसकी रिहाई के कागज मँगवाता हूँ। आज......है," जरनैल ने कैलेण्डर की ओर देखा। "अगस्त की इक्कीस तारीख। यदि तुम अट्ठाइस तारीख को यहाँ आ सको तो मैं तुम्हें अपने हाथ से उसकी रिहाई के कागज दे दूँगा।"

"क्या यह मारित्ज़ तुम्हारे पिता का नौकर है?" जरनैल का दूसरा प्रश्न था।

"वह खेत के काम में मेरे पिता की सहायता करता है। वह ठीक-ठीक नौकर नहीं है..."

"आज खेत पर काम करनेवालों की बहुत कमी है," जरनैल ने उसे वाक्य भी पूरा नहीं करने दिया। "मैं समझ रहा हूँ कि उस कम्बख्त के लिये तुमने इतना कष्ट क्यों उठाया है। हर आदमी का बड़ा मूल्य है। खास तौर पर इस समय, जब कटाई का मध्याह्न है।"

इसी तरह की बात-चीत होती रही। त्रायन ने सचिव को यह बात समझाने की कोशिश की कि वह मारित्ज़ की वकालत इसलिये नहीं कर रहा था, क्योंकि उसके पिता को खेत पर काम करने के लिये उसकी जरूरत थी, बल्कि केवल इसलिये कि उसकी गिरफ्तारी अन्यायपूर्ण थी।

"मैं तुमसे केवल मानव-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर मिलने आया हूँ। मेरा यह कार्य सर्वथा निस्वार्थ है।"

"मुझे भी इस तरह के काम करने पड़ते हैं," जरनैल बोला। "जब भी मैं कभी अपनी जमींदारी देखने जाता हूँ, तो मुझे या तो किसी किसान को दीक्षित कराना होता है अथवा शादी करानी होती है। आज-कल आदमियों से काम कराने के सभी साधनों का उपयोग करना ही है। तुम्हें उन्हें विश्वास दिलाना पड़ता है कि तुम उनके मित्र हो। तुम्हें उनके साथ एक ही मेज पर बैठ कर खाना भी पड़ता है। मैं समझ रहा हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो। तुम्हारा पिता ठीक मेरी ही स्थिति में है।"

एक दराज खोलकर जरनैल ने त्रायन का नवीनतम उपन्यास निकाल कर डेस्क पर रखा। यह एकदम नई प्रति थी। पुस्तक के पृष्ठ तक नहीं कटे थे।

"मैंने अपने अंगरक्षक को उसे खरीदने के लिये अभी दुकान पर भेजा" जरनैल ने कहा "क्या तुम उसे मेरी लड़की को भेंट देने की कृपा करोगे? उसका नाम एलिज़ाबेथ है। उसकी आयु अठारह वर्ष की है और तुम्हारे उपन्यासों पर बुरी तरह मुग्ध है। तुम उसके प्रिय ग्रन्थ-कारों में से एक हो। भोजन के समय जब मैं उसे बताऊँगा कि आज तुम मुझसे मिले थे तो वह मुझसे सब तरह के प्रश्न पूछेगी—तुम क्या पहने हुए थे, तुम्हारी टाई किस तरह की थी, और तुम कौन सा सिगरेट पी रहे थे? जवानी ऐसी चीज है, क्यों नहीं?"

त्रायन युद्ध-सचिवालय के बाहर निकला तो उसे विश्वास था कि इस बार वह जॉन मारित्ज़ को निश्चयात्मक रूप से छुड़ा सकेगा। वह फूल की दुकान पर गया। वहाँ से उसने गुलाब के वे सफेद फूल लिये जिनके लिये वह सुबह आर्डर दे गया था। तबवह डाकखाने में गया और अपने पिता को तार दिया "२६ अगस्त को अपनी भावी-पत्नी और जॉन मारित्ज़ की रिहाई के कागजों के साथ पहुँच रहा हूँ।"

४४

"तो २६ अगस्त को हम फन्तना में तुम्हारे पिता के पास होंगे ?" एल्योनोरा वैस्ट ने पूछा। उसे रोमाञ्च हो आया था। केवल एक सप्ताह और प्रतीक्षा करनी होगी। मैं वहाँ पहुँचने के लिये मरी जा रही हूँ।" उसने त्रायन के हाथ में से सफेद फूल लिये और उन्हें एक बरतन में सजाया। जिस समय वह उसकी ओर पीठ करके खड़ी थी, त्रायन ने उसकी काली रेशमी पोशाक पर पड़े हुए उसके भूरे घुँघराले बालों की ओर देखा। उसने उस ऊँची दुबली-पतली मूर्ति की ओर देखा और धुँधले रंग के मोजों से ढकी हुई उसकी टाँगों की ओर देखा।

"नोरा," वह बोला, "क्या तुम जानती हो कि जब भी कभी मैं तुम्हारी ओर देखता हूँ तो क्या सोचने लग जाता हूँ ?"

वह मुड़ी और मुस्करा दी।

"मैं उसी प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ जो कविवर त्यूदोर अरघेजी ने पूछा था : 'निश्चयात्मक रूप से तुम्हारी माँ या तो कोई परी रही होगी, या हिरनी रही होगी अथवा पानी के तट का नरकट। लेकिन वह कौन सा बीज था जो उसके गर्भ में उगा ? सम्भव है कि किसी वन-देवता का हो अथवा किसी अवतार का। निश्चयात्मक रूप से तुम मानवी नहीं हो। तुम्हारे पूर्वजों में एक हरिनी अवश्य रही होगी, अन्यथा तुम इतनी फुर्ती से कभी न चल सकतीं ! और तुम्हारे पूर्वजों में समुद्र के पौदे भी रहे होंगे क्योंकि तुम्हारे बदन में अभी भी गम्भीर-जलों के भीतर के जीवन की सुर-ताल की एकता है। तुम्हारी आँखें एक गिलहरी की आँखों की तरह चौकन्नी हैं और तुममें फारिस की बिल्ली की सी चपलता है।

एल्योनोरा उसकी ओर अपनी पीठ किये खड़ी रही। उसका चेहरा अभी भी सफेद फूलों से ढका था।

"क्या मैंने तुम्हें छेड़ दिया ?" त्रायन ने पूछा।

"नहीं" वह बोली।

"तुम्हारे चेहरे पर यकायक अफसोस की झलक आ गई है। यद्यपि मैं तुम्हारी आँखें नहीं देख सकता किन्तु मुझे मालूम है कि वे धुंधली पड़ गई हैं। क्या जो कुछ मैंने अभी कहा है, उसी की वजह से?"

"नहीं" उसने खिलखिला कर हँसते हुए कहा। मुझे अफसोस नहीं है। मैं केवल अपने वंश-वृक्ष पर विचार कर रही थी, जिसमें हरिनियाँ हैं, अवतार हैं, समुद्र के पौदे हैं और गिलहरियाँ हैं।"

उस बड़ी भोजन-शाला में वे अकेले भोजन करने बैठे। भोजन-शाला पुरानी बलूत और तैयार लोहे के फर्नीचर से सजी हुई थी।

यह एल्योनोरा का घर था, बुखारेस्ट के प्रसिद्धतम घरानों में से एक। उसने इसे स्वयं सजाया था, फर्नीचर, दरियाँ, सभी कुछ उसके प्लैन के अनुसार था।

२६ वर्ष की आयु में एल्योनोरा रूमानिया के सब से बड़े समाचार पत्र 'पश्चिम-संसार' की सम्पादिका थी। उसने यूरोप की बड़ी से बड़ी यूनिवर्सिटियों में अध्ययन किया था। इस समय वह अपने पत्र में अग्र-लेख लिखती थी, एक प्रकाशन संस्था चलाती थी, एक साहित्यिक तथा कला विषयक पत्रिका का सम्पादन करती थी, और राजधानी की राज-नीतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में आगे बढ़कर हिस्सा लेती थी। त्रायन उससे कई वर्षों से परिचित था। आरम्भ में उनका परस्पर जितना प्रेम था, उतना ही अब भी था; कदाचित् अधिक। लेकिन उन्होंने विवाह नहीं किया था। जब भी कभी त्रायन ने इसका प्रस्ताव किया, उसने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि वह कभी एक अच्छी पत्नी नहीं बनेगी—"मुझे अपने काम से इतना अधिक प्रेम है कि यदि मैं इसे छोड़ दूंगी तो मुझे यही लगेगा कि मैं अपने जीवन के एक महत्त्व-पूर्ण अंश से हाथ धो रही हूं।"

"मैं समझता हूँ, कि वे जॉर्ज मारित्ज़ को छोड़ देने जा रहे हैं," त्रायन बोला "युद्धसचिव ने आज मुझे वचन दिया है कि वह २८

अगस्त तक इसे सम्पन्न कर देगा। मैंने अपने पिता को तार दे दिया है कि मैं अपनी भावी पत्नी और जॉन मारित्ज़ की मुक्ति के आज्ञा-पत्र के साथ आ रहा हूँ। वह दोनों से समान रूप से प्रसन्न होगा।"

"क्या तुम्हारा अत्यधिक आग्रह है कि तुम अपने माता-पिता से मेरा परिचय अपनी भावी-पत्नी के ही रूप में कराओ?" नोरा ने पूछा।

"मैं इसे अवश्य बहुत पसन्द करूंगा। लेकिन यदि तुम्हें पसन्द न हो तो मैं नहीं कराऊंगा। पिता को बुरा लगेगा, सही लेकिन अन्त में वह क्षमा कर देगा।"

"तुम मेरा परिचय अपनी पत्नी के रूप में न कराकर अपनी भावी-पत्नी के रूप में ही क्यों कराना चाहते हो?" नोरा ने पूछा। "यदि परसों प्रातःकाल विवाहित हो जाँय तो फन्तना पहुँचने पर हम पति पत्नी होंगे।"

त्रायन को लगा कि वह मजाक कर रही है। पिछले दो वर्ष वह उसे लगातार शादी करने के लिये प्रेरित करता रहा था। उसने अस्वीकार किया था। वह उससे प्रेम करती थी, किन्तु उसकी पत्नी बनना न चाहती थी। वह किसी की पत्नी नहीं बनना चाहती थी। और अब, अकस्मात् वह विवाह करने का प्रस्ताव कर रही थी।

"क्या सचमुच तुम्हारे कथन का यही अभिप्राय है?" वह उठा और उसने उसका हाथ चूम लिया। "क्या कोई खास बात हुई? यह आकस्मिक निर्णय कैसा? आज प्रातःकाल 'फोन' पर तुमने इस विषय में एक शब्द नहीं कहा।"

"कोई खास बात नहीं है," वह बोली। "२६ अगस्त को हम फन्तना में पहले से ही विवाहित पहुँचेंगे। बस, इतनी ही। तुमने अनेक बार मुझसे शादी करने का प्रस्ताव किया है। अथवा तब से तुमने अपना विचार बदल दिया है?...मुझे खुशी है कि तुमने अपना विचार नहीं बदला है।"

त्रायन को लगा कि कोई न कोई खास बात हुई होगी, जिसके

कारण एल्योनोरा ने अकस्मात् शादी करने का निर्णय कर लिया है। लेकिन वह यह अनुमान नहीं कर सका कि क्या बात हुई होगी।

"अभी तो हम रजिस्ट्री-आफिस में विवाहित हो जायँ," वह बोली। "हम गिरजेवाली शादी तुम्हारे पिता के ही अपने गिरजे में कर सकते हैं। मैं इसी समय अपने को देख रही हूँ कि विवाह के श्वेत-वस्त्र पहने लकड़ी की वेदिका की ओर चली जा रही हूँ और पीछे अनेक कृषक कुमारियाँ चली आ रही हैं। मैं इसका निश्चय कर लेती हूँ कि हमें 'सिविल-मैरेज' का खास लाइसेंस मिल जायगा। मैं अभी सरकारी-वकील को फोन करती हूँ।"

"नोरा, मुझे बताओ, क्या बात हुई है।" आयन बोला। "मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे साथ कोई भयानक बात हुई है।"

"मैं कसम खाती हूँ," वह बोली, "कोई बात नहीं। एकदम कोई नहीं। मैं ने इसी समय निर्णय किया है और मैं चाहती हूँ कि यह यथा-शीघ्र कार्यरूप में परिणत हो जाय ताकि इस बीच में कोई ऐसी बात न हो जाय जो इसमें बाधक हो। इसका मेरे लिये इतना अधिक मूल्य है कि मैं प्रसन्नता के इस अवसर तक सीधी पहुंचना चाहती हूँ। यदि कुछ देर लगी, तो मुझे डर लगता है कि कहीं यह एकदम हाथ से न चला जाय। इतनी ही बात है। क्या तुम मेरा विश्वास न करोगे?"

४५

भोजनानन्तर आयन और एल्योनोरा पुस्तकालय में पुस्तकें और चित्र देखते रहे। आयन को विश्वास था कि एल्योनोरा ने सच सच कहा था। किन्तु उन्होंने शादी की और अधिक बात-चीत नहीं की। उन दोनों को ही अपने विचारों से दूर-दूर रहने की आवश्यकता अनुभव हो रही थी। वह पिकास्सो के एक चित्र के सामने खड़ा हुआ।

"पाबलो पिकास्सो कदाचित् हमारे समय का विशिष्ट चित्रकार है," त्रायन बोला। उसे इसी समय लेविस मनफोर्ड का एक उद्धरण याद आ गया : किसी भी दूसरे चित्रकार की अपेक्षा अधिक पूर्णता के साथ वह हमारी सफलताओं तथा विफलताओं को चित्रित करता है। उसकी सारी कृतियाँ आघात पहुँचानेवाली हैं, हर आघात हमारी सभ्यता की बनावट के किसी न किसी हिस्से का प्रतीक बनकर प्रकट होता है, और उसके ह्रास का। दरिद्रता और दुःख के ऐसे चित्र, जो भुलाये नहीं भूलते, बनाने में ही उसकी कला की परिपक्वता का आरम्भ है। अन्धकार-पूर्ण युग की गम्भीर मानवता।......अन्त में एक वास्तविक भावना पिकास्सो को अभिभूत कर लेती है : स्पेन के विद्रोह की वास्तविक भया-नकता उसपर अधिकार कर लेती है और उसे कष्ट पहुंचाती है। इसी के परिणामस्वरूप ग्योरनिका के भित्ति-चित्र में उसने स्त्री के सर्वाधिक दुःख को इतने ज़ोरदार प्रतीक के रूप में अंकित किया है। इससे आगे विकीर्णता आदमी को विक्षिप्त कर दे सकती है। जिस संसार में हम रहते हैं, पिकास्सो के चित्रों के हर पहलू में हमें, उस संसार का कहीं अधिक सच्चा चित्र मिलेगा। वैसा सच्चा चित्र हमें इन तथा कथित यथार्थवादियों के यहाँ न मिलेगा। यह हमें उसी वस्तु का दर्शन कराते हैं, जिसे कोई भी ऊपर ऊपर से देखनेवाली आँख देख सकती है।"

एल्योनोरा ने चित्र की ओर देखा। इस चित्र में दुःखदर्द की मारी एक स्त्री की उस कुरूपता को चित्रित किया गया था जहाँ पहुँच कर उसका मानव-रूप सर्वथा विलीन हो गया। यह चमड़ी के चिथड़े चिथड़े हो जाने का दृश्य था। मानव के चेहरे का एक चित्र जिसमें कष्ट के मारे सभी अंग एक दूसरे से पृथक् हो गये थे। वेदना के मारे मानव-शरीर की एकता बिखर गई थी।

त्रायन कोरग ने नोरा की ओर देखा। एक क्षण के लिये उसे ऐसा भासित हुआ कि उसमें और चित्र की औरत में कुछ समानता है। कोई फोटो-ग्राफर इसे ग्रहण नहीं कर सकता था। एल्योनोरा के चेहरे पर

वेदना उतनी ही गहराई से उत्कीर्ण था, जितनी गहराई से पिकास्सो की स्त्री के चेहरे पर। ऐसी अवस्था थी कि मानों जोर की बिजली गुजर रही है, और उसका अत्यधिक तनाव ही बिजली के द्वारा होनेवाली मृत्यु से बचाव है।

"नोरा, यह क्या है?" त्रायन ने पूछा।

"कुछ नहीं," वह बोली। "क्या हम कॉफी पीयेंगे?" उसके उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये ही उसने उसकी ओर पीठ कर ली, ठीक उसी प्रकार जैसे उसने उस समय की थी, जब वह हिरनियों और समुद्र के पौदों के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ रहा था।

४६

रजिस्ट्री-आफिस में शादी हो गई। त्रायन और एल्योनोरा ने शहरी वस्त्र पहने। त्रायन के दो मित्रों ने 'साक्षी' का धर्म निभाया। विवाह-संस्कार की समाप्ति पर उन्होंने एक नगर की सीमा पर बनेसा में एक उपहार-गृह में भोजन किया।

"गिरजेवाली शादी हम उचित ढंग से मनायेंगे," त्रायन ने कहा। उसने रूमानिया के एक ग्रामीण-विवाह की परम्परागत प्रथाओं का वर्णन आरम्भ किया।

"गिरजे जाने के रास्ते में घुड़सवार किसान जुलूस के आगे आगे चलते हैं—श्वेत घोड़ों पर चढ़े हुए, जातीय पोशाक पहने पचास किसान-तरुण। तब चार बैलों की गाड़ी, जिसमें, परम्परा के अनुसार, दुलहिन की दहेज और उसे मिलनेवाली भेंट रहती है। अपनी 'भेंट' का सार्वजनिक प्रदर्शन करने के बजाय हम गाड़ी को फूलों भर देंगे। हमारे विवाह में एक दर्जन 'धर्म-पिता' होंगे। जब हर कोई विवाह का गीत गाता होगा, और दुलहिन तथा दूल्हा, धर्म पिता और पुरोहित

सभी गिरजे में घेरा बाँध कर नाचते हैं, उस समय छत पर से मिठाई की वर्षा होती है, और लड़के नाचनेवालों के ठीक पेरों में से उसे बटोरते हैं। हम एक बोरा भर मिठाई बिखेरेंगे, जिसमें फन्तना के सारे बच्चे भरपेट खा सकें। जब मैं छोटा था तो मैं शादियों में मिठाई बटोरने जा पहुँचता था, किन्तु मेरे हाथ कभी चार से अधिक मिठाइयाँ नहीं लगीं। हमारी शादी में इतनी पर्याप्त मिठाइयाँ होनी चाहिये कि बच्चे अपनी जेबें भी भर सकें। हम घुमक्कड़ों के एक दर्जन बाजे मँगायेंगे जिनमें सितार और सारङ्गी होंगे। पीपों से शराब की धार बहेगी। सारा गाँव पीकर बेहोश हो जायगा। हम स्वागत-समारोह जंगल के मैदान में करेंगे और हजारों अतिथियों को निमंत्रण देंगे। एक सप्ताह तक शादी की धूम-धाम रहेगी।"

नोरा ने अपनी घड़ी पर नजर डाली। पन्द्रह मिनट बाद उसे अपने वकील ल्युपोल्ड स्टाइन से भेंट करनी थी।

"हम चलें," वह बोली। "मुझे आफिस में आज बहुत काम है।"

त्रायन ने अपने विवाह-विवरण को संक्षिप्त किया। वे मेज पर से उठे और वापिस नगर चले आये।

४७

त्रायन, नोरा को समाचार-पत्र के आफिस में वापिस ले गया। 'पश्चिमी-संसार' की इमारत आधुनिकतम ढंग की इमारत थी। उसका आगे का हिस्सा संगमरमर का था। एल्योनोरा ने इसे एक पुराने छापेखाने की जगह पर बनवाया था। अपराह्न धूप तेज धूप में चमकती हुई उसकी छः मंजिलों को त्रायन ने देखा और प्रशंसात्मक ढंग से मुस्कराया। "यह सारी नोरा की कृति है," उसने सोचा।

"मैं तुम्हारे लिये गाड़ी में प्रतीक्षा करूंगा," उसने कहा। वह जानता था कि यूँ नोरा आफिस से स्वयं ही गाड़ी लेकर घर आती है, लेकिन आज—उनके विवाह के दिन—उसने सोचा—सम्भव है, अपवाद हो।

'ज्यों ही काम समाप्त होगा, मैं स्वयं घर चली आऊंगी," उसने कहा। श्रायन के चले जाने तक प्रतीक्षा करती रहने के बाद वह संगमरमर की सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ आई और लोहे के उन बड़े बड़े दरवाजों में से, जिन्हें दरबान पकड़े था, अन्दर चली गई। सुनहरी किनारीदार वर्दीवाले पहरेदार ने उसे झुककर फर्शी सलाम किया। इतने में वह आफिस में अदृश्य हो गई।

४८

एल्योनोरा ने राजकीय उपेक्षा के साथ अपने आफिस में प्रवेश किया। काले कपड़े पहने बूढ़ा आदमी जब उसके भीतर प्रवेश करने पर खड़ा हुआ तो उसने ऐसा प्रकट किया मानो उसका उधर ध्यान ही नहीं उसने डैस्क पर अपने दस्तानें और हैण्ड-बैग रखा और तब वृद्ध को बैठने का इशारा किया। एक सिगरेट निकालकर उसने उसे जलाने का प्रयत्न किया। ऐसा करत समय वह सावधान रही कि उसके हाथों का कम्पन दृष्टिगोचर न हो। तब वह आरामकुर्सी पर बैठी और उसने अपने सामने बैठे हुए आदमी को आँख गड़ाकर देखा।

"श्रीमान् स्टाइन, मैं सुन रही हूँ," वह बोली।

बूढ़े आदमी ने अपनी गोद में रखी हुई मुकद्दमे की फाइल उठाई और उसमें से कागजों का एक बण्डल निकाल कर मेज पर रखा। नोरा उसकी ओर सारा समय ध्यानपूर्वक देखती रही।

"मामला तय हो गया, मिस वैस्ट,' बूढ़ा आदमी बोला। "ये कागज

हैं।" उसने कागजों के बंडल में से दो कागज निकाले और उन्हें उसके सामने रख दिया।

"क्या प्लोएस्ती के रिकार्ड-आफिस में केवल यही कागज हैं?" नोरा ने प्रश्न किया।

"आज सुबह तक केवल ये ही थे," वृद्ध पुरुष ने उत्तर दिया। "और अब ये भी तुम्हारे डैस्क पर हैं। अब रिकार्ड-आफिस में और कुछ नहीं है।"

एल्योनोरा ने उन कागजों पर एक घृणा की दृष्टि डाली, उन्हें समेटा और एक दराज में रख दिया।

"इन्हें तुरन्त नष्ट कर डालना बुद्धिमानी होगी," बूढ़े आदमी ने कहा।

नोरा ने उसके सुनहरी कमानीदार चश्मे की ओर देखा, उसके कड़े कॉलर की ओर देखा और देखा उसके पुराने ढंग से कटे सूट की ओर।

"श्रीमान् स्टाइन, इन कागजों के मेरे डैस्क में चले आने के बाद डरने का कोई कारण नहीं रह जाता," वह बोली।

"मैं अपने लिये नहीं डरता," वह बोला। "किन्तु तुम्हारे लिये ही यह अच्छा होगा कि इन्हें तुरन्त जला डाला जाय।"

विषयान्तर करने की इच्छा से नोरा ने पूछा, "तुम्हें इनके लिये क्या देना पड़ा?" उसने देख लिया था कि बूढ़ा भयभीत है। वह उन कागजों को नष्ट तो कर ही देना चाहती थी, किन्तु नष्ट करने से पहले उन्हें एक नजर और देख लेना चाहती थी।

"ठीक एक लाख 'ली'," ल्युपोल्ड स्टाइन का उत्तर था।

"और तुम्हारी अपनी फीस?"

"इसमें शामिल है।"

एल्योनोरा ने दराज में से बैंक-नोटों के दो बण्डल निकाले और वृद्ध-पुरुष के हाथ में थमा दिये। उसने उन्हें अपने मुकद्दमों की फाइलों

के बक्से में रखा। नोटों को लेने से पहले गिन लेना उसकी आदत बन गई थी, किन्तु उसने अपनी इस प्रवृत्ति को रोक लिया।

"अच्छा, तो मैं समझती हूँ कि अब यह सब हो गया," नोरा बोली। वह चाहती थी कि वह उन कागजों पर नजर डालने के लिये अकेली छोड़ दी जाय, लेकिन वृद्ध पुरुष बैठा ही रहा।

"क्या तुम्हें मुझसे और किसी विषय में चर्चा करनी है?" उसने पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं," ल्युपोल्ड स्टाइन ने उत्तर दिया। "जहाँ तक सम्भव था वहाँ तक बात समाप्त है।"

"क्या अभी भी कोई ऐसा कागज है, जो ठीक नहीं है?"

"अब कोई और ऐसे कागज नहीं हैं, जिनका कुछ सम्बन्ध हो," वह बोला। "लेकिन इन कागजों के नष्ट कर डालने से यह समस्या अस्थायी रूप से ही हल हुई है। यही बात है जो मैं तुम्हें बता देना चाहता था। यदि मैंने तुम्हारे बचपन में तुम्हें अपने हाथों खिलाया न होता, तो मैंने इस बात की ओर तुम्हारा ध्यान खींचने का कभी दुस्साहस न किया होता। लेकिन मुझे तुम्हें सावधान कर देना चाहिये कि कागजों को जला डालना समस्या का अन्तिम हल नहीं है।"

"साफ साफ कहो।"

"मिस वेस्ट यह बिलकुल स्पष्ट है तुम अपने माता-पिता के मूल जन्म सार्टिफिकट चाहती थीं, ताकि किसी तरह यह सिद्ध न किया जा सके कि वे यहूदी हैं। मैं उन्हें तुम्हारे लिये ले आया हूँ। मैंने उन्हें रिकार्ड-आफिस से खिसका दिया है।

"और यहाँ मामला समाप्त होता है।"

"तुम कागजों को नष्ट कर सकती हो, किन्तु इससे वास्तविकता नष्ट नहीं होती," ल्युपोल्ड स्टाइन बोला। "हर चीज के बावजूद तुम अभी भी यहूदिन हो, और यदि कोई इसे सिद्ध करना चाहे..."

"यदि कोई इसे सिद्ध करना चाहे, तो वह इसे सिद्ध न कर सकेगा" एल्योनोरा बोली। "कहीं कोई प्रमाण ही न होगा।"

"लेकिन तुमसे प्रमाण मांगे जायेंगे।"

"मैं उन्हें प्राप्त कर लूंगी," वह बोली। मैं किसी भी कागज की कीमत देकर उसे खरीद सकती हूँ।

"सही है" वकील बोला। "लेकिन तब हम दण्ड-विधान के विरुद्ध खड़े होते हैं। और दण्ड-विधान से खिलवाड़ करना आग से खेलने के समान है।"

"क्या तुम्हीं आज ल्रोएस्ती के रिकार्ड-आफिस से कागज नहीं चुरा लाये?" नोरा ने सीधा प्रश्न किया। "तब मुझे उपदेश क्यों दे रहे हो?"

"मैं उपदेश नहीं दे रहा हूँ," बृद्ध पुरुष बोला। "मैं केवल तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ कि तुम एक खतरनाक खेल खेल रही हो, जिसे देर-सबेर समाप्त होना चाहिये।"

"तुम जानते हो कि मेरे सामने दूसरा उपाय नहीं है," नोरा ने दूसरी सिगरेट जलाते हुए कहा, "और कोई चारा नहीं है। यदि समाज मुझे मेरा जीवन जीने नहीं देगा, यदि मुझे मनचाहा घर, पेशा और पति नहीं मिलने देगा तो मैं जो भी शस्त्र मेरे हाथ लगेगा, उसी की सहायता से दुस्साहस-पूर्वक लड़ने के लिये तैयार हूँ। मैं उस जख्मी शेरनी की तरह संघर्ष करूँगी, जिसकी आत्म-रक्षा की हर प्रवृत्ति उत्तेजित हो उठी हो।"

"मिस वैस्ट, मुख्य चीज लड़ना नहीं है, किन्तु विजय प्राप्त करना है।"

"मैं जीतूंगी," वह बोली। इसी समय उसने अपनी सिगरेट की राख, राख झाड़ने की डिबिया में डाली।

"क्या तुम्हें इस बात का सचमुच विश्वास है कि तुम्हें बहुत दिनों तक इसी तरह बे-रोक टोक रहने दिया जायगा?" बृद्ध-पुरुष ने पूछा। "अभी तक तुमने अपना यहूदी होना स्वीकार नहीं किया है। यह तुम्हारी

जवानी की ढिठाई रही है। लेकिन तुम सौभाग्यशालिनी थीं। भय या कायरता के कारण किसी ने तुम्हारा विरोध नहीं किया। जब जातीयता के आधार पर तुम्हारा समाचार-पत्र और छापाखाना जब्त कर लेने की आवाज उठी थी, तो उस समय तुम इस विषय की खोज-बीन करनेवालों को खरीद सकी थीं। यह तुम्हारी दूसरी विजय थी। अब तुमने अपने माता-पिता को यहूदी उत्पत्ति प्रमाणित करनेवाले कागजों को ही जला दिया है। एक बार फिर तुम्हें अवसर मिल गया है। लेकिन जातीय-कानून दिन प्रतिदिन अधिकाधिक कड़ाई के साथ लागू किये जा रहे हैं। आखिर में कोई भी यहूदी उनसे बच न सकेगा। यह कड़ाई अभी आरम्भ हुई है। यही कारण है कि तुम अभी भी एक महत्वपूर्ण समाचार-पत्र की सम्पादिका और मालकिन हो। यहूदी होने की हैसियत से तुम एक लेख भी प्रकाशित नहीं कर सकतीं। लेकिन हमें भविष्य का भी विचार करना ही होगा।"

"मैं भविष्य में भी 'पश्चिमी-संसार' की सम्पादिका और मालकिन रहूँगी" नोरा ने कहा।

ल्युपोल्ड स्टाइन जानता था कि जो स्त्री उसके सामने बैठी है उसका दिमाग निर्दोष रूप से तर्कानुगामी है। लेकिन जो उत्तर उसने अभी दिया उससे उसे दुराग्रह की गंध आई। दुराग्रही दिमाग में तर्क के लिये स्थान नहीं होता। उसे उसका खण्डन करने का साहस नहीं हुआ। जब आदमी तर्क की राह छोड़ दे तो उसके कथन का खण्डन नहीं करना चाहिये। उसे सचाई दिखाने का प्रत्येक प्रयत्न निश्चयात्मक रूप से असफल होगा।

"आज दोपहर मैंने एक ईसाई से विवाह कर लिया है। अब समाचार-पत्र मेरे पति के नाम से चलाया जायगा।...इस प्रकार चाहे रूमानिया अब जर्मनी की अपेक्षा भी अधिक सेमिटिक विरोधी बन जाय तो भी वह मेरे हाथ से 'पश्चिमी-संसार' को न छीन सकेगा।"

"क्या तुम वास्तव में विवाहित हो?" ल्युपोल्ड स्टाइन अपने आश्चर्य को रोक न सका।

"अब से मैं श्रीमती एल्योनोरा वैस्ट-कोरग हूँ," वह बोली। "मेरा पति उपन्यासकार ब्रायन कोरग है, जो कुछ ही दिनों के भीतर समाचार-पत्र का सम्पादक और मालिक होगा। और अब मैं उसकी मालकिन हूँ।"

एल्योनोरा संतोष की हँसी हँसी। ल्युपोल्ड स्टाइन, व्यर्थ ही जेब में हाथ डाले कुछ टटोलता रहा। वह अपनी झेंप छिपाना चाहता था। उसका प्रयत्न था कि किसी तरह उससे उसकी आँख से आँख न मिले और उसके प्रश्न का उत्तर न देना पड़े। उसे इस सारी बात को सत्य मान कर हजम करने के लिये थोड़ा और समय अपेक्षित था।

"दूसरे शब्दों में," उसने अपने रूमाल में खाँसते हुए कहा, "तुम समाचार-पत्र सौंप दे रही हो और उसकी सम्पादकी छोड़ दे रही हो।"

"इसके सर्वथा विपरीत," नोरा बोली, "केवल मैं समाचार-पत्र के सम्पादन का काम छोड़ ही नहीं रही हूँ, मैं इसका नये सिरे से संगठन करने जा रही हूँ। मैंने एक नया एडिटर रख लिया है।"

"यह शान की बात हुई," ल्युपोल्ड स्टाइन बोला। "एक लाजवाब बात। और उसने सब शर्तें स्वीकार कर लीं?"

"मैं नहीं समझी," नोरा ने तीखेपन से कहा।

"क्या तुम्हारे पति श्रीमान् ब्रायन कोरग ने यह व्यवस्था स्वीकार कर ली है? यह एक आदमी को बहुत अच्छी लगनेवाली बात नहीं है। इसका यही आशय है कि उसे एक निश्चित उद्देश्य के लिये, एक औरत ने खरीद लिया है।"

"मैंने किसी को खरीदा नहीं है," नोरा ने जरा काँपते स्वर में कहा। "मैंने प्रेम के कारण विवाह किया है।"

ल्युपोल्ड स्टाइन उसे बधाई देने के लिये खड़ा हुआ। नोरा ने उसके आगे अपना हाथ नहीं बढ़ाया। वह अपने माता-पिता के जन्म-सार्टिफिकट की बात को लेकर बेचैन थी। उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे।

"यथार्थतः जब तक कोई मृत्यु का ग्रास न बन रहा हो, वह बधाई

का अधिकारी नहीं। और मर जाने पर वह बधाई को स्वीकार नहीं कर सकता। यह सचमुच दयनीय स्थिति है।"

वृद्ध पुरुष फिर बैठ गया। उसे अपनी भावाभिव्यक्ति पर अफसोस था।

"मैं समझता था कि तुमने वास्तव में प्रेम के लिए ही विवाह किया है," वह बोला।

"क्या तुम्हारा यह विश्वास नहीं है कि मैं प्रेम करती हूँ ?" वह बोली। "अपनी सारी समझ के बावजूद क्या तुम इतनी बात नहीं समझ सकते ?"

"तो तुम इतनी दुखी क्यों हो ?" उसने पूछा। "मुझे ऐसा लगता है कि तुम चीख रही हो।"

"श्रीमान् स्टाइन, मुझे लगता है कि तुम बहुत थके हो। मैं नहीं जानती कि मामला क्या है, तुम इतनी सी बात नहीं समझते ? तुम्हें यहूदी कौन कहेगा ? मैं त्रायन कोरुग से प्रेम करती हूँ। वह पहला आदमी है, जिसे मैंने कभी भी प्यार किया है। मेरा उससे कई वर्षों से प्रेम है, बड़ा गहरा प्रेम। लेकिन मैंने इसके लिये विवाह नहीं किया है। शादी करने के लिये प्रेम कोई कारण नहीं होता। मैंने जातीय-कानून के कारण विवाह किया है। अपने समाचार-पत्र की रक्षा के लिये। अपने जीवन की रक्षा के लिये। क्या अब तुम समझते हो ?"

ल्युपोल्ड स्टाइन समझता प्रतीत नहीं हुआ। उसने एल्योनोरा का हाथ चूमा और दरवाजे की ओर बढ़ा। उसने उसे वापिस बुलाया।

"इस शनिवार को मैं अपने सास-ससुर के पास देहात में जा रही हूँ," वह बोली। त्रायन का पिता एक आरथोडाक्स पादरी है। मैं वहाँ कुछ दिन रहूँगी। जब तक मैं लौट कर आऊँ, मैं चाहती हूँ कि समाचार-पत्र सहित मेरी सारी जायदाद त्रायन कोरुग के नाम लिखी रहे। मैं यह काम तुम्हें सौंपती हूँ कि तुम एक ऐसा सिलसिला बना लो जो ठीक हो और जिसमें कानून की दृष्टि से कहीं कोई छोटे से छोटा दोष भी न रह गया हो। यह तबदीली जल्दी से हो जानी चाहिये।"

"तुम एक होशियार औरत हो," वृद्ध पुरुष बोला।

"बिल्कुल नहीं," उसने उत्तर दिया।" मैं केवल एक मामूली स्त्री हूँ जो अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति और सामर्थ्य के अनुसार अपने जीने के अधिकार की रक्षा के लिये लड़ रही है। श्रीमान् स्टाइन, नमस्कार।"

४९

जब वृद्ध पुरुष चला गया, एल्योनोरा अपने डैस्क पर झुकी और अपना सिर अपने हाथों में रख कर रोने लगी। वह खूब रोई। वैसा रोना केवल कोई स्त्री ही रो सकती है। न केवल अपनी आँखों से, किन्तु अपने सारे व्यक्तित्व से। तब उसने फोन का रिसीवर उठाया और त्रायन को बुलाया।

"दया करके मुझे लेने चले आओ," वह बोली।

"क्या तबियत खराब हो गई है?"

"कुछ नहीं। केवल मुझे लेने के लिये चले आओ। मैं शपथ खाती हूँ, तबियत ठीक है। लेकिन जल्दी आओ।"

त्रायन कोरग चलने के लिये उठ खड़ा हुआ। पुस्तकालय छोड़ने से पहले उसने एक बार फिर पिकास्सो की स्त्री की ओर देखा। उसकी आधी आँख हँस रही थी और आधी रो रही थी। इसके दो हिस्से हो गये थे, जिससे स्त्री का हँसना और रोना एक साथ—और समान उद्वेग के साथ।

५०

त्रायन की प्रतीक्षा करते-करते, एल्योनोरा ने ल्युपोल्ड स्टाइन को फोन किया। वह पास ही रहता था और अभी-अभी घर पहुँचा ही था।

"श्रीमान् स्टाइन, मेरे प्रश्न का ईमानदारी से उत्तर देना। तुम

क्या समझते हो, मैंने क्यों विवाह किया ? प्रेम से अथवा आवश्यकता से ? मेरी भावनाओं का ख्याल न करना। मैं तुम्हारी यथार्थ सम्मति चाहती हूँ।"

"तुम स्वयं क्या सोचती हो ?" वृद्ध पुरुष ने पूछा।

"मैं नहीं जानती," वह बोली। "यदि इस प्रश्न के उत्तर पर मेरा जीवन भी निर्भर करता तो भी मैं ठीक उत्तर न दे सकती। कभी मैं सोचती हूँ कि मैंने प्रेम के कारण विवाह किया, कभी सोचती हूँ कि परिस्थिति से मजबूर होकर फायदा देखकर विवाह किया, और फिर कभी सोचती हूँ, दोनों कारणों से। लेकिन इनमें से कोई भी एक व्याख्या सन्तोषजनक नहीं है। एक चीज मैं निश्चित रूप से जानती हूँ—कि मैं और अधिक समय प्रतीक्षा नहीं कर सकती थी। जो कुछ मैंने किया वह करणीय ही था। लेकिन मैं अपनी वास्तविक नीयत को समझना चाहूँगी।"

"वास्तविक नीयत न पहली है और न दूसरी" वृद्ध पुरुष बोला।

"तो सुविधा के लिये मैंने विवाह नहीं किया है, जैसा कि एक स्त्री......।"

"नहीं, श्रीमती वैस्ट। तुम इतनी स्वाभिमानिनी हो कि चाहे तुम्हारे समाचार-पत्र और सारी जायदाद पर भी खतरा आ गया होता, तो भी तुम भौतिक स्वार्थ के लिये विवाह करनेवाली नहीं थी।"

"क्या तुम्हें निश्चय है ?"

"पूर्ण निश्चय।"

"तो मैंने प्रेम के लिये विवाह किया है ?"

"सचाई से प्रेम करने लिये भविष्य में विश्वास करना होता है," ल्युपोल्ड स्टाइन बोला। "सुख में विश्वास करना होता है, और जो इससे भी अधिक बेहूदा बात है, यह विश्वास करना होता है कि सुख नित्य है, और कि जिससे प्रेम किया जाता है, वह सुख दे सकता है। तुम इतनी बुद्धिमान हो कि तुम ऐसी बात में विश्वास कर ही नहीं सकती।

और यही कारण है—मुझे यह कहने के लिये क्षमा करें—तुमने प्रेम के लिये भी विवाह नहीं किया।"

"बहुत अच्छा," तब उसने प्रश्न किया।

"तुम्हारी नीयत के मूल में न प्रेम था, न सुविधा का ख्याल था," ल्युपोल्ड स्टाइन बोला। "वह भय था। तुम्हारे इस कार्य में निराशा की बिजली जैसी गति थी।"

"तो प्रेम इसमें आता ही नहीं?" एल्योनोरा ने पूछा।

"थोड़ा सा," स्टाइन ने उत्तर दिया। "लेकिन यह तुम्हारा प्रेम उस समय की एक स्त्री का प्रेम है जब आदमी जंगल में रहते थे और उन्हें लगातार यह खतरा लगा रहता था कि जंगली पशु आकर उनके टुकड़े-टुकड़े न कर जायँ। यह केवल उसी समय था जब स्त्रियाँ पुरुषों के चरणों पर पड़ती थीं—संरक्षण के लिये, प्रेम के लिये और हिफाजत के लिये। और यह सब कुछ समान उद्वेग के साथ! यह वैसा ही प्रेम है जैसे प्रेम की अनुभूति स्त्रियों को भूकम्प के समय होती है, बाढ़ के समय होती है, अथवा किसी दूसरी महान् विपत्ति के समय, अर्थात् जब भी पृथ्वी को छितरा जाने का खतरा होता है।"

"तुमने यह सब मुझे उस समय क्यों नहीं कहा जब तुम यहाँ थे," उसने पूछा।

"मैं तुम्हारी ऊपर-ऊपर दिखाई देनेवाली शक्ति और तुम्हारे आत्म-संतोष को नष्ट करना नहीं चाहता था," उसने उत्तर दिया। "लेकिन मैं देख सकता था कि तुम डर से काँप रही हो और तुम्हारे कार्य के मूल में भय है। मुझे अफसोस हुआ। याद रखो कि जब तुम एक छोटी लड़की थी तो मैंने तुम्हें अपने घुटनों पर बिठा कर लाड़ लड़ाया है।"

त्रायन ने आफिस में प्रवेश किया। नोरा में 'फोन' रख दिया और उसकी ओर बढ़ी। वह हँसती हुई उससे चिपट गई। त्रायन ने उसे चूम लिया।

"मैं तुम्हें इतना प्रसन्न-बदन देख कर खुश हूँ। मुझे फोन पर लगा था कि तुम चीख रही हो।"

५१

फन्तना के लिये प्रस्थान करने से एक दिन पूर्व, २८ अगस्त को त्रायन जॉन-मारित्ज की रिहाई का आज्ञा-पत्र लेने के लिये युद्ध-सचिवालय पहुँचा। जब वह सीढ़ियों पर चढ़ा तो वह इतना प्रसन्न था जैसे रिहाई के कागज उसकी जेब में ही हों। अंग-रक्षक, जो त्रायन और जरनैल के मैत्री-सम्बन्ध से परिचित था, उसे तुरन्त अन्दर ले गया। वह अपने साथ अपने नये उपन्यास का एक सचित्र बढ़िया संस्करण लाया था, जिसकी जाकेट पर उसने एक अति प्रशंसात्मक समर्पण लिखा था। जब उसने अन्दर प्रवेश किया तो पिछले सप्ताह की तरह जरनैल स्वागतार्थ उठा नहीं। उसने पढ़ते रहने का नाटक किया।

"जैनरेल, मुझे डर है कि मैं आपकी पढ़ाई में बाधक हो रहा हूँ," त्रायन ने कहा।

"नहीं," जरनैल ने बड़ी सर्द-मोहरी से जवाब दिया। "कृपया बैठ जाइये।"

उसने अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया। त्रायन का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित हुआ।

"मुझे डर है, कि मेरे पास आपके लिये कोई अच्छा समाचार नहीं है," जरनैल ने सीधे मतलब की बात पर आते हुए कहा। "जिस आदमी की ओर से आप पिछले सप्ताह मिलने आये थे, और आज भी, निस्सन्देह, उसी के लिये आये होंगे, वह आदमी रिहा नहीं हो सकता। कम से कम, इस समय तो नहीं ही हो सकता। आपने उसकी जाति के बारे में जो वक्तव्य दिया है, उसकी सचाई परखने के लिये आरम्भिक पूछ-ताछ अनिवार्य है।"

त्रायन उसी समय कमरा छोड़ कर चल देता, लेकिन मारित्ज का ख्याल कर बैठा रहा।

"तो बस इतना ही है? और अब, श्रीमान् कोरग, आप सिवाय

इसके और कुछ नहीं कर सकते कि जाँच-पड़ताल की रिपोर्ट की प्रतीक्षा करते रहें।"

जरनैल के इन शब्दों का मतलब था कि मुलाकात समाप्त हुई और अब त्रायन से यही आशा की जाती है कि वह बिदा हो। त्रायन पूरी तरह समझ गया, किन्तु तो भी वह उठा नहीं। अगले दिन, फन्तना में उसका पिता मारित्ज़ की रिहाई के कागजों के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"ठीक एक सप्ताह पहले आपने मुझे यह कागज देने का वचन दिया था," त्रायन बोला। "आपने इतनी तरह से मुझे कहा था कि मेरा वक्तव्य पर्याप्त गारण्टी है, और कि किसी प्रकार की जाँच-पड़ताल नहीं होगी।"

"एक सप्ताह पहले परिस्थिति भिन्न थी।"

"मैं इस भेद को समझने में असमर्थ हूँ। यद्यपि जॉन मारित्ज़ एक रूमानिया-वासी है तो भी वह यहूदियों के कैम्प में कैद है।"

"इसका निर्णय कमीशन करेगा।"

"लेकिन कमीशन की जाँच-पड़ताल महीनों चलती रह सकती है," त्रायन ने कहा। उस अभागे को पकड़े गये लगभग अठारह महीने हो चुके हैं।

"मैं जानता हूँ," जरनैल बोला। "वे एक साल और दो साल तक भी जाँच-पड़ताल करते रह सकते हैं। यह जाँच-पड़ताल का समय भी नहीं। लड़ाई जारी है।"

"लेकिन क्या मेरा वक्तव्य मारित्ज़ के लिये पर्याप्त गारण्टी नहीं हो सकता। जाँच-पड़ताल बाद में हो सकती है।"

"नहीं।" जरनैल बोला।

"मुझे दुःख है कि एक ही सप्ताह में आपने अपना विचार बदल लिया है," त्रायन ने उठते हुए कहा।

"मुझे भी खेद है किन्तु इसका मुझसे कुछ सम्बन्ध नहीं।"

"क्या इसमें कोई व्यक्तिगत रहस्य है ?"

"रहस्य की कोई बात नहीं, यथार्थ बातें हैं।"

"अब तो लगता है कि मुझे आपसे साफ-साफ पूछने का अधिकार है," त्रायन ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

"साफ-साफ बात ? श्रीमान् कोरग ? ऐसे समय जब संसार का प्रत्येक यहूदी हमारे देश को नीचा दिखाने और हमें गुलाम बनाने के काम में बालशविकों को साथ दे रहा है तो तुम—शुद्ध रूमानिया-निवासी, हमारे देश के अग्रणी लेखकों में से एक एक यहूदिन से विवाह करने जाते हो ?"

जरनैल क्रोध से लाल-पीला था।

"एक सैनिक के हिसाब से," वह कहता गया, "मैं सोचता हूँ कि जो कुछ तुमने किया है वह राजद्रोह है। तुम राजद्रोह के अपराधी हो। इसके बाद तुम मुझसे यह आशा कैसे कर सकते हो कि तुम्हारे कथन का विश्वास करूँ ? मॉरित्ज की ओर से जो तुमने अपील की है उससे मेरे मन में सन्देह होता है कि वास्तव में वह एक यहूदी है। मुझे इसमें तनिक आश्चर्य न होगा, यदि मेरी बात ठीक निकली। क्या तुम अभी भी मुझसे यह आशा कर सकते हो कि मैं तुम्हारा विश्वास करूँ ?"

"स्पष्ट ही है कि नहीं," त्रायन बोला और कमरे से बाहर चला आया। सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उसे अपनी बगल में की पुस्तक का ध्यान आया। उसने उसे खोला और पहला कोरा पृष्ठ फाड़ डाला। इसके बाद उसने अपनी मोटर गाड़ी में पैर रखा।

५२

"एल्योनोरा यहूदी है," त्रायन मन में सोचने लगा, "और उसने मुझे कभी यह नहीं बताया।" उसे लगा जैसे उसने अपने प्रेम में धोखा

खाया है। नगर के ठीक बाहर उसने अपनी गाड़ी रोकी। उसने दरवाजा खोला और खेतों की ओर ताकने लगा। "उसने मुझे कभी नही बताया, क्योंकि मैंने कभी नहीं पूछा," उसने विचार किया। "पूछना हास्यास्पद होता। कोई कभी अपनी प्रेमिका से उसकी 'जाति' पूछता है?" उसे याद आया कि अपने प्रेम में उसने कितनी बार उसके वंश-वृक्ष की चर्चा की थी, हरिनियों और समुद्र के पौदों के साथ, गिलहरियों और अवतारों के साथ। और जब-जब भी उसने इन चीजों की चर्चा की थी, उसकी आँखें धुंधली पड़ गई थीं। त्रायन अब अपने आप को दोषी समझने लगा। "शायद वह यह सोचती रही हो कि मैं उसकी यहूदी उत्पत्ति पर चोट कर रहा हूँ। हर बार उसे भयानक वेदना हुई होगी।" उसने खट से दरवाजा बन्द कर दिया और गाड़ी वापिस नगर की ओर ले चला। "यदि मुझे यह बात पहले मालूम हो जाती। तो मैं उसके इतने दुःख का कारण न बनता। बेचारी नोरा।"

वह रास्ते में फूलों की पहली दुकान पर रुका और उसके लिये गुलाब के श्वेत-पुष्पों का एक गुच्छा खरीदा। "मेरे विवाह के कारण जॉन मारित्ज़ की रिहाई नहीं होगी।"

फूलों को लपेटते समय दुकानदार मुस्करा रहा था।

५३

"मुझे बताओ कि तुम किस बारे में लिख रहे हो," नोरा बोली। त्रायन ने अपना नया उपन्यास आरम्भ किया था। वह देखती थी कि वह प्रातःकाल चार बजे अपने बिस्तर से उठकर अपना लम्बा चोगा पहन लेता है और कमरे से बाहर चला जाता है। जलपान के समय तक वह अपने अध्ययन-कक्ष में रहता है। दोनों जलपान साथ-साथ

करते थे। उन्हें विवाहित जीवन व्यतीत करते अभी केवल दो महीने हुए थे।

"क्या तुम मुझे नहीं बताओगे ?" नोरा ने पूछा। वह बे-सबर थी। इधर त्रायन हर बार उपन्यास की चर्चा बचा जाता था, लेकिन आज उसे हार माननी पड़ी।

"एक बार," त्रायन बोला, "मैंने पन-डुब्बी जहाज में यात्रा की। हमने पानी के नीचे एक हजार घण्टे व्यतीत किये। पन-डुब्बी जहाजों में एक खास यन्त्र रहता है जो यह बता देता है कि ताजी हवा समाप्ति पर है। लेकिन पुराने समय में इस प्रकार के कोई यन्त्र न थे। उस समय नाविक लोग एक पिंजड़ा भर खरगोश साथ ले जाते थे। जब वायु-मंडल विषाक्त होने लगता, खरगोश मर जाते। नाविक जानते थे कि खरगोशों का मरना आरंभ होने के बाद वे केवल पाँच-छः घंटे और जीवित रह सकते हैं। उस समय कप्तान को अपना महानतम निर्णय करना होता था; या तो सतह पर पहुँचने की सिरतोड़ कोशिश करना या पानी के नीचे ही रहना और अपने सभी मल्लाहों के साथ मर जाना। एक दूसरे को मरता हुआ देखने के बजाय वे परस्पर गोली मार देते थे।

मेरे पन-डुब्बी जहाज में सफेद खरगोशों के स्थान पर यान्त्रिक औजार थे। कप्तान ने देखा कि हवा में आक्सीजन-गैस की थोड़ी सी भी कमी होने पर मुझे उसका पता लग जाता है। उसने मेरी तीक्ष्ण इन्द्रियों का मजाक उड़ाया, किन्तु बाद में यन्त्रों की ओर देखना छोड़ दिया। इसके बजाय वे मेरी ओर देखने लगे। मैं उन्हें ठीक ठाक—जिसका यन्त्र समर्थन करते थे—बता देता था कि पर्याप्त ताजी हवा शेष है या नहीं ?

हममें वह शक्ति है—खरगोशों में और मुझमें। हम दूसरे आदमियों की अपेक्षा छः घण्टे पहले यह बता सकते हैं कि हवा कब साँस के अयोग्य होने जा रही है। इधर कुछ समय से मुझे ऐसा ही लग रहा है जैसा मुझे पन-डुब्बी जहाज में लगा करता था। मुझे अनुभव हो रहा है कि सारा वायु-मण्डल गला-घोंटू हो गया है।"

"कौन सा वायुमण्डल ?"

"वह वायुमण्डल जिसमें हमारा समकालीन समाज रहता है। आदमी इसे अब अधिक समय सहन नहीं कर सकता। नौकरशाही, सेना, सरकार, केन्द्रीय तथा स्थानीय शासन-व्यवस्था सभी कुछ आदमी का गला घोंट डालने का षड्यन्त्र हैं। समकालीन समाज मशीनों और यान्त्रिकदासों के अतिरिक्त और किसी के योग्य नहीं। उन्हीं के काम के लिये इसकी रचना हुई है। लेकिन आदमियों का तो यह दम घोंट देने वाला है। अभी, उन्हें इस बात का पता नहीं। वे समझते हैं कि जिस प्रकार वे पहले से रहते आये हैं, वे उसी प्रकार सामान्य भाव से रह रहे हैं ? वे उन मल्लाहों की तरह हैं जो पन-डुब्बी में और भी छः घण्टों तक विषैले वायु-मण्डल में काम करते रहते हैं। लेकिन मैं जानता हूँ कि हमारा अन्त समीप है।"

"क्या तुम्हारे उपन्यास का विषय यही है ?"

"पृथ्वी पर जितने आदमी रहते हैं उन सब की भयानक मृत्यु-वेदना का वर्णन इसमें मैं करूंगा, जीवन-विनाशक वायु-मण्डल में। लेकिन क्योंकि मैं हर किसी के बारे में नहीं लिख सकता, इसलिये मैंने केवल दस लिए हैं, दस जिनके बारे में मैं सबसे अच्छी तरह जानता हूँ।"

"और सभी पात्र मरते हैं ?"

"एक बार जब खरगोश मर जाते हैं, तो आदमियों के लिये अधिक से अधिक जीने के छः घण्टे रह जाते हैं। मेरा उपन्यास मेरे घनिष्टतम मित्रों के जीवन के अन्तिम छः घण्टे हैं।"

"तुम कहाँ तक पहुँचे हो ?"

"पहले परिच्छेद के अन्त तक," वह बोला। "हमसे एक पात्र बिछुड़ गया है और..."

"और उसको क्या होता है ?"

"अभी तक उसकी स्वतन्त्रता छीन ली गई है, उसकी स्त्री छीन ली गई है, उसके बच्चे छीन लिये गये हैं और उसका घर छीन लिया गया

है...उसे भूखा रखा गया है और पीटा है। उन्होंने उसके दाँत उखाड़ने भी आरम्भ कर दिये हैं। आगे चलकर वे उसकी आँखें निकाल लेंगे और उसकी हड्डियों से उसकी चमड़ी पृथक् कर देंगे। और उसकी हड्डियाँ तोड़ी जायेंगी, पीसी जायेंगी। सम्भवतः अन्तिम यन्त्रणा उसे स्वयं-मशीन द्वारा और बिजली द्वारा मिलेगी।"

"क्या यह सब सत्य है?"

"यह सब सत्य है," उसने कहा। अपने उपन्यास में मैंने उन गलियों, नगरों और देशों के नाम दे दिये हैं जहाँ वे पात्र रहते हैं। मैंने उनके टैलीफोन-नम्बर तक बता दिये हैं। वास्तव में तुम मेरे प्रथम पात्र से स्वयं परिचित हो। जो कुछ मैंने लिखा है उसके सत्यासत्य की तुम जाँच कर सकती हो।"

"पहला पात्र कौन है?"

"जॉन मारित्ज़।"

एल्योनोरा का सिर चकरा गया। जॉन मारित्ज़ के बारे में जो बातें त्रायन ने कही थीं, वे सब सत्य थीं—वे सब वास्तव में घटी थीं।

"मैं जॉन मारित्ज़ के लिये बहुत ही ज्यादा दुखी हूँ।" नोरा बोली। "तुम्हारे पहले परिच्छेद का पात्र यह है। दूसरे परिच्छेद का कौन होगा?"

"मैं अभी नहीं जानता," त्रायन ने कहा। "कदाचित् मेरा पिता, मेरी माता, या तुम, शायद मैं—हर हालत में हममें से ही कोई एक होगा।"

"और क्या सभी परिच्छेद ऐसे ही होंगे जैसा यह जॉन मारित्ज़ वाला परिच्छेद?" वह बोली। क्या तुम्हारे सारे उपन्यास में एक भाग्यवान् पात्र नहीं है, एक सुखान्त—प्रकरण?"

"एक भी नहीं," वह बोला। "सफेद खरगोशों की मृत्यु के बाद पर कुछ सुख नहीं हो सकता। सारा खेल समाप्त होने से पहले कुछ और घण्टे ही शेष रह जा सकते हैं।"

द्वितीय खण्ड

५४

जॉन मारित्ज को हंगरी में प्रविष्ट हुए दो घण्टे हो गये थे। उन चारों को वेटिंग रूम में जाते डर लगता था। इसलिये वे रेलवे-स्टेशन के पिछवाड़े ही इधर-उधर घूमते रहे। तब गाड़ी आई। डा० अब्रमोविच्चि, स्ट्रूल और हरटिंग एक सैकिण्ड-क्लास डिब्बे में चढ़ गये। जॉन खिड़की से सामान पकड़ाने के लिये बाहर प्लेट-फार्म पर खड़ा रहा। ज्यों ही गाड़ी हिलने लगी, वह जैसे-तैसे कूद कर गाड़ी के पायदान पर चढ़ गया। हरटिंग ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अंदर खींच कर दरवाजा बन्द कर लिया। जॉन डर के मारे पीला पड़ गया—एक सैकिण्ड और, और वह प्लेटफार्म पर ही छूट जाता। वह कल्पना करने लगा कि उसका क्या हाल होता यदि वह डा० अब्रमोविच्चि और दूसरे साथियों से पृथक् होकर असहाय अवस्था में अकेला हंगरी में रह जाता। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वह गाड़ी में चढ़ सका।

डा० अब्रमोविच्चि और हरटिंग को तुरन्त जगह मिल गई। स्ट्रूल और जॉन ने सभी कमरों में झाँका। बत्तियाँ बुझी थीं। मुसाफिर सो रहे थे। सभी जगहें घिरी थीं। वे अपने सूट-केसों पर बरामदे में बैठे रहे। कुछ देर बाद एक स्त्री बाहर आई। स्ट्रूल ने कम्पार्टमेंट में उसकी जगह ले ली। जॉन बरामदे में अकेला रह गया। डा० अब्रमोविच्चि ने कम्पार्टमेंट का दरवाजा खोला और बोला कहा—

"सो न जाना, नहीं तो कोई सामान चुरा ले जायगा।"

"मैं जागता रहूँगा," उसने उत्तर दिया, लेकिन ज्यों ही डाक्टर ने दरवाजा बन्द किया, जॉन को नींद आ गई। वह बुरी तरह थका था। जब तक वे बुडापैस्ट नहीं पहुँच गये तब तक उसकी आँख नहीं खुली।

जिस समय वे गाड़ी से बाहर निकले, दिन चढ़ गया था। जॉन को प्यास लगी थी किन्तु हरटिग उसे लैमनेड की एक बोतल पीने के लिये उपहार-गृह में नहीं जाने दे रहा था। उसका कहना था कि उस पर पुलिस की नजर पड़ सकती है और वह यह जान ले सकती है कि वह रूमानिया से भाग कर आया है। तब चारों के चारों पकड़ लिये जा सकते हैं।

"तुम मेरी बहन के घर चलकर पानी का एक गिलास पी सकते हो," डा० अब्रमोविचि बोला। वे चलते रहे। स्टेशन के बाहर वे जरा देर के लिये गाड़ियों की एक कतार के पास रुके।

"पैदल चलना ही अच्छा है," हरटिग बोला। "गाड़ीवाला हमारी रिपोर्ट कर दे सकता है। यह कितने बड़े खेद की बात होगी कि बुडापैस्ट तक पहुँचकर अब हम पुलिस के हाथ में पड़ जायँ।"

वे पैदल ही चल दिये। जॉन के दोनों कंधों पर सूटकेस लटके थे और दोनों हाथों में भी। वे बहुत भारी थे। किन्तु कल रात की अपेक्षा जब वे सीमा के इस पार खेतों को पार कर रहे थे, उसे वे सूट-केस हल्के प्रतीत हो रहे थे। "मैं समझता हूँ कि इस समय कुछ आराम इसलिये है कि मैं कड़ी भूमि पर चल रहा हूँ," उसने ठंडे कोलतार पर अपने नगे पांवों क तलुओं को जमाते हुए सोचा। अभी ट्रामगाड़ियाँ नहीं चालू हुई थीं। जॉन ने देखा कि सड़क की बत्तियाँ अपने आप बुझ गई हैं। उसने पूछा कि इनका बटन किसने घुमाया है।

"अरे जड़-भरत कहीं के, क्या तू रूमानिया-भाषा बोलने से बाज नहीं आ सकता?" हरटिग क्रोधपूर्वक बोला। "यदि कोई हमें रूमानिया की भाषा बोलते सुन लेगा, तो वह हम सब को ताले के भीतर कर देगा।"

"क्या हमें रूमानिया की भाषा बोलने की आज्ञा नहीं है?"

"हम भाषा बोल सकते हैं," हरटिग बोला। "लेकिन यहाँ रूमानिया

के लोग पकड़कर कैम्प में कैद कर लिये जाते हैं। समझे, हंगरी रूमानिया को शत्रु-देश मानता है।"

"तो हम यहाँ क्या बोलें ?"

"यहूदी," डा० अब्रमोविच्चि ने कहा। "रूमानिया में जिस प्रकार यहूदी लोगों पर अत्याचार होता है, वैसा यहाँ नहीं होता। कम से कम अभी तक उनके विरुद्ध कोई कानून नहीं बना है।

जॉन ने रूमानिया भाषा में एक शब्द मुँह से नहीं निकाला; किन्तु वह यहूदी में भी कुछ नहीं बोल सका। वह बहुत थका था। पेतोफि स्ट्रीट में डा० अब्रमोविच्चि की बहन के घर पहुँचते-पहुँचते बोझे के दबाव के मारे जॉन को चक्कर आने लगा। उसने उसे देहली पर रख दिया। नौकरानी आई और उसने सामान को ऊपर ले जाने में उसकी सहायता की। उसका नाम जुलिसा था। जॉन रसोई-घर तक उसके पीछे-पीछे गया। उसने नीली पोशाक पहन रखी थी। जॉन को ख्याल आया कि उसने इसे कहीं देखा है। तब उसे याद आया कि सुसाना इसी तरह की पोशाक पहनती थी।

५५

डा० अब्रमोविच्चि की बहन एक मजबूत औरत थी। वह लाल फूलों वाला एक कोट पहने थी, बात बड़ी तेजी से करती और लगातार करती रहती। जिस कमरे में डा० अब्रमोविच्चि, हरटिंग, स्ट्रूल और डा० का बहनोई इस्साक नेगी बैठे थे, उसने जॉन को बुलाया। सभी को उसने एक-एक गिलास ब्रांडी दी। जॉन खड़ा का खड़ा रहा। वहाँ बैठने के लिये पर्याप्त कुर्सियाँ न थीं। डा० की बहन चाय लाई और मेज पर रख दी। जॉन की ओर देख कर उसने कहा :—

"यहाँ तुम्हारे लिये जगह नहीं है। अच्छा हो कि तुम रसोई-घर में जाकर अपनी चाय पीओ।"

"यह बहुत अच्छा है," इस्साक नेगी ने हंगरी-भाषा में कहा। "हमें आपस में कुछ बात-चीत करनी है।"

जॉन समझ गया कि उन लोगों को उसके साथ एक मेज पर बैठना पसन्द नहीं। लेकिन उसने बुरा नहीं माना। जुलिसा को खुशी थी कि वह और लोगों के साथ अन्दर नहीं रहा था। उसने एक के बाद एक उसे तीन गिलास चाय पिलाई—काफी चीनी और नीबू के साथ। तब उसने उसके लिये कुछ मोटे-मोटे पावरोटी के टुकड़े काटे और उन्हें मक्खन तथा सूअर के मांस के साथ उसे दिया। जॉन बहुत भूखा था। वह घोड़े की तरह खा गया। तब वह हाथ-मुँह धोना चाहता था, किन्तु वह बोली—

"पहले मेरे साथ मार्केट आओ। वापिस आने पर तुम हाथ-मुँह धो सकते हो।"

जॉन ने टोकरी उठाई और जुलिसा के साथ बाजार करने गया। इसके बाद रोज वह उसके साथ बाजार जाने लगा।

बाजार से लौटने पर वह लकड़ियाँ चीरता और उन्हें रसोई-घर में लाकर डालता। दिन के मुख्य भोजन के बाद वह बरतन धोने में लिसा को मदद करता। वह हँस-मुख स्वभाव की थी और हमेशा मजाक करती रहती थी। जॉन को घर में रहना अच्छा लगता था।

५६

रसोई-घर के काम और जुलिसा के मजाकों में मन लगा रहने के कारण जॉन को इस बात का एक प्रकार से ध्यान ही नहीं आया कि उसने डा० अब्रमोविचि और दूसरे लोगों को सारा दिन देखा ही नहीं।

रात्रि-भोजन के समय जब उसने उनके बारे में पूछा, तो डाक्टर की बहन ने बताया कि वे सो गये हैं। फिर वह पूछना ही भूल गया। रात आ गई और जब वह अपने बिस्तर पर था तभी उसे इस बात का ध्यान आया कि उसने उन्हें तमाम दिन नहीं देखा। लेकिन, जो हो, वे भोजन के लिये आये ही थे। इसका उसे विश्वास था, क्योंकि उसने भोजन के बाद उनकी प्लेटें धोई थीं। वे चाय के लिये भी आये थे, क्योंकि उसने जो प्याले धोये थे, उनकी संख्या पाँच थी। लेकिन डिनर के समय, उसे याद नहीं था, कि कितने छुरी, कांटे और प्लेट रसोई-घर में लाये गये थे। जुलिसा ने ढेर की ढेर प्लेटें लाकर बरतन धोने की नाली में डाल दी थीं, जिन्हें उसने गिना न था। इससे वह इतना बेचैन हुआ कि उसे नींद न आई। उसे सन्देह था कि शाम को जो प्लेटें धोई गयीं, उनकी संख्या कम थी।

"हरटिग अपने सम्बन्धियों के यहाँ चला गया होगा," उसने सोचा। उसे अफसोस था कि हरटिग चला गया। तब उसे ख्याल आया कि हो सकता है, यह उसकी कल्पना ही हो कि दोपहर को कम प्लेटें धोई थीं। लेकिन अगले दिन जॉन को पता लगा कि वह ठीक था। हरटिग अपराह्न के समय चला गया था और डिनर के लिए इस्साक नेगी के घर नहीं आया था। लेकिन डा० अब्रमोविचि और स्ट्रूल अभी वहीं थे। लगभग दस बजे जुलिसा उनके बूट साफ करने के लिये लाई। उसने उनपर क्रीम और पालिश रगड़ कर उन्हें चमका दिया। वह उन्हें वापिस घर में लिये जा रहा था, जब जुलिसा ने उसे दरवाजे पर रोक दिया। उसने उसके हाथ से बूट ले लिये और स्वयं उन्हें अन्दर ले गई वापिस आने पर उसने समझाया—

"मालकिन ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुम्हें अन्दर न आने दूँ। तुम जानते हो, वह ऐसी ही है। उसे हमेशा यही डर लगा रहता है कि चीजें चोरी न चली जाँय।"

५७

अपराह्न में डा० अब्रमोविचि ने जॉन को खाने के कमरे में बुलाया।

"इन सूट-केसों को लो और मेरे पीछे-पीछे चले आओ," उसने आज्ञा दी। जॉन प्रसन्न हुआ। उसे विश्वास था कि डा० उसे भूला नहीं है और उसे बुला भेजेगा।

"तुम नंगे पाँव क्यों घूमते हो?" डाक्टर ने बाजार में पहुँचने पर थोड़े गुस्से के साथ पूछा।

जॉन को लज्जा आई कि उसके पास जूते नहीं थे। उसने इधर-उधर देखा, कोई भी तो नंगे पाँव नहीं था। सारे रास्ते उसने अपना सिर नीचे रखा। आने जाने वाले लोगों में उसे एक भी नंगे-पाँव नहीं मिला। वे सभी जूते या बूट पहने हुए थे। जॉन को इतनी लज्जा आई कि वह चाहता था कि उसे पृथ्वी निगल जाय। उसने डाक्टर से क्षमा मांगनी चाही, लेकिन डा० अब्रमोविचि तो अपनी पाकेट में हाथ डाले आगे-आगे जा रहा था, मानो उसे उससे कुछ लेना-देना ही न था।

५८

वे एक पुराने घर के दरवाजे पर रुके, जिसके सामने फूलों से भरा बाग था। डाक्टर ने सूट-केसों को लिया और अकेला अन्दर गया। जॉन बाहर खड़ा प्रतीक्षा करता रहा। उसने साइन-बोर्ड पढ़ा। उस पर लिखा था—कौंसलेट। † तब वह बाजार में आने जाने वाले लोगों की ओर देखने लगा।

डा० अब्रमोविचि अधिक देर अन्दर नहीं रहा। वह मुस्कराता हुआ खाली हाथ सीढ़ियों से नीचे उतरा। लेकिन जब उसकी नजर जॉन पर

† राजदूतावास।

पड़ी, जो दीवार के सहारे खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो उसकी हँसी जाती रही। वह रुका। अपनी भौंहें ऊपर चढ़ाये, जेब में हाथ डाले कुछ सोचता रहा। रास्ते भर उसने एक बार अपना मुँह नहीं खोला। जॉन डाक्टर के थोड़ा पीछे-पीछे चलता रहा। वह नहीं चाहता था कि लोग यह सोचें कि डा० ऐसे आदमी के साथ है, जिसके पाँव में जूते नहीं। जॉन किसी भी तरह डा० अब्रमोविचि को उपहास का भाजन बनाने के लिये तैयार न था।

इस्साक नेगी के घर के सामने रुककर डा० ने जॉन की प्रतीक्षा की। उसके निकट आ जाने पर बोला—

"जॉकी, तुम्हारा मामला एकदम उलझा हुआ है। बुडापैस्ट की यहूदी बिरादरी, जो हमारे लिये अमरीका जाने की व्यवस्था कर रही है, तुम्हारे लिये कुछ भी करने को तैयार नहीं। मैंने उन्हें कहा कि तुम साथ आये हो, मैंने उनसे मिन्नत की, लेकिन सब बेकार। उनका उत्तर था कि वह ईसाइयों के लिये पास-पोर्ट नहीं देते। कमीटी केवल यहूदियों की ओर ध्यान देती है। इसी लिये यह यहूदी-कमीटी कहलाती है। और तुम तो यहूदी नहीं हो, क्या हो ?"

"नहीं, मैं नहीं हूँ।"

"उनका कहना ठीक है," अब्रमोविचि कहता गया, "यद्यपि मुझे इसका बड़ा खेद है। मैं तुम्हें अपने साथ अमरीका ले जाना चाहता था। लेकिन, मैं तुम्हें वचन देता हूँ, मैं तुम्हें भूलूँगा नहीं। मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि ऐसी बात करूँ।"

डा० ने अपना चमड़े का बैग खोला और नोट गिनने आरम्भ किये। जॉन ने हंगरी के नोट देखे। उसे आश्चर्य हुआ कि वे इतने छोटे थे।

"ये बीस पेंगु हैं," डाक्टर बोला। 'ये बोझा ढोकर लाने के लिये हैं। ये बहुत हैं। यहाँ हंगरी में इतना कमाने के लिये सप्ताह भर परिश्रम

करना पड़ता है। तुमने केवल दो घण्टे कुछ सूट-केसों को ढोकर इतना कमा लिया।"

जॉन को असबाब ढोने के लिये पैसे लेने का कभी ख्याल नहीं आया था। उसने यह काम रुपये के लिये नहीं किया था। लेकिन डा० का हाथ अभी भी आगे बढ़ा हुआ था। जॉन ने नोट लेकर अपनी जेब में रख लिये।

"बड़ी बात यह है कि मैं तुम्हें उस कैम्प में से यहाँ निकाल लाया।" डा० अब्रमोविचि बोला। "बिना हमारी सहायता के पता नहीं, तुम अभी कितना समय और वहाँ पड़े सड़ते। लेकिन मैं तुमसे यह आशा नहीं करता कि तुम मुझे इसके लिये कुछ दो। मैं वैसा आदमी नहीं हूँ कि जब लोग मुसीबत में हों तो उनकी कुछ सेवा करूँ और उसका बदला चाहूँ।"

५६

जॉन को हंगरी में अब एक सप्ताह हो गया था। वह वही काम करता रहा जो पहले दिन से करता आया था। वह जुलिसा के साथ बाजार जाता, लकड़ियाँ चीरता, जूठन फेंकता और बरतन साफ करता। शाम को वह रसोई का फर्श रगड़-रगड़ कर धोता और नहाने का कमरा तथा सीढ़ियाँ साफ करता।

रविवार के दिन प्रातःकाल के समय हाल में इस्साक नेगी की जॉन से भेंट हो गई। वह कठोरतापूर्वक बोला :—

"क्या तुमने अभी तक कोई काम नहीं खोजा? तुम्हें मेरे घर में रहते अब एक सप्ताह से अधिक हो गया। मैं समझता हूँ कि तुम अनन्त काल तक तो मेरे दया-भाजन नहीं बने रहना चाहते होगे।"

इस्साक नेगी बिना एक शब्द भी और बोले चला गया। जॉन सोचने लगा, उसे पहले से काम की खोज करनी चाहिये थी। लेकिन उसने तो इसके बारे में सोचा ही नहीं था। उसने अपने आपको इसी घर में नौकर मान लिया था। "मैं इतना मूर्ख कैसा रहा कि मैंने अपने लिये काम तक की खोज नहीं की?" वह अपने से ही पूछने लगा। "ये लोग ठीक तो कहते हैं। ये मुझे सदा खाना नहीं देते रह सकते।"

उस शाम जॉन ने जुलिसा से इसकी चर्चा की। उसने उसे नौकरी ढूंढ़ देने का वचन दिया। वह चाकलेट फैक्टरी में काम करनेवाले किसी आदमी से परिचित थी।

"तो शायद तुम मेरे लिये कुछ चाकलेट लाओगे। हाँ, यदि तुम्हें चाकलेट देने के लिये कोई दूसरी लड़की नहीं मिली तभी।"

"क्या दूसरी लड़की?" जॉन बोला। उसे इस बात से कष्ट हुआ कि जुलिसा के मन में ऐसा विचार भी क्यों आया। "जो भी चाकलेट मिलेगी, मैं सब तुम्हें लाकर दूँगा। मैं स्वयं स्पर्श भी नहीं करूँगा।"

उस रात जॉन ने स्वप्न देखा कि वह चाकलेट-फैक्टरी में काम कर रहा है। अगले दिन डा० अब्रमोविचि अपनी बहन और साले से बिदा लेने आया। जॉन उसका सामान स्टेशन तक ले गया और सोने के डिब्बे में रख दिया।

"क्या तुम दूर जा रहे हो?" उसने पूछा।

"स्विज़रलैण्ड," डाक्टर ने उत्तर दिया। "अमरीका जाने से पहले मैं कुछ सप्ताह विश्राम करूँगा।"

विदा होते समय डा० अब्रमोविचि ने उससे हाथ मिलाया। जॉन को लगा कि वह शलजम की तरह लाल हुआ जा रहा है। प्लेटफार्म पर खड़े सभी आदमियों ने देखा था कि डा० अब्रमोविचि ने उसके साथ हाथ मिलाये थे, एक ऐसे आदमी के साथ, जिसके पाँव में जूते भी न थे।

ज्यों ही गाड़ी चली, अब्रमोविचि खिड़की से चिल्लाया :—

"मेरे प्यारे जान्की, विदा। मैं तुम्हें भूलूँगा नहीं। मैं कुछ करूँगा जिससे तुम यहाँ से बाहर निकल सको।"

'विदा' जॉन ने प्रत्युत्तर दिया। ज्यों ही गाड़ी आँख से ओझल हुई, जॉन की आँखों में आँसू आ गये। उसे लगा कि वह संसार में अकेला है। हरटिग और स्ट्रूल जाने से पहले उससे मिले तक नहीं और अब डाक्टर भी चला गया। वह बड़ी देर तक प्लेट-फार्म पर खड़ा रहा। इससे पहले उसने जीवन में कभी अपने आप को इतना अकेला अनुभव नहीं किया था। तब उसे चाकलेट-फैक्टरी याद आई। तुरन्त उसका चेहरा खिल गया और वह पेतोफि स्ट्रीट की ओर चल दिया। "ज्यों ही मुझे कहीं नौकरी मिल जायगी, मैं जुलिसा के लिये एक कण्ठा खरीदूँगा," उसने अपने आप से कहा।

६०

जॉन और जुलिसा रोज की अपेक्षा कुछ जल्दी बाजार के लिये निकल पड़े। उन्होंने जल्दी-जल्दी माँस, साग-सब्जी और जो कुछ भी घर के लिये चाहिये था खरीदा, और तब छोटे-छोटे घरों वाली एक गली में मुड़ गये। जॉन ने अपने दाहिने हाथ में एक टोकरी ली और बायें हाथ में जुलिसा का हाथ लिया। वे दोनों बड़े तेज जा रहे थे।

"चाकलेट-फैक्टरी शहर के दूसरे किनारे पर है," जुलिसा बोली। "हमें जल्दी करनी होगी।" दोनों लाल हो रहे थे और उन्हें पसीना आ रहा था। यदि उन्हें वापिस लौटने में देर हो गई तो जुलिसा को मध्याह्न भोजन बनाने के लिये समय नहीं रहेगा। उसने अपने गाँव के एक आदमी से बातचीत की थी और उसने कहा था कि वह किसी दिन जॉन को ले आये ताकि मालिक से उसकी दो बातें हो जाँय।

"यदि वह आयेगा, तो वह तुरन्त ले लिया जायेगा, हमें आदमियों की जरूरत है," उसने कहा।

बाजार के नुक्कड़ पर इकट्ठी हुई भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ जॉन बोला—"सम्भव है, वह मुझे आज ही ले लें। यदि उन्होंने ले लिया तो अगले शुक्रवार को मुझे मेरे पहले सप्ताह का वेतन मिलेगा। हो सकता है, तुम्हारे लिये कुछ चाकलेट भी। उसने जोर से उसका हाथ दबाया। उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और हँसे।

"तब मैं एक कमरा ले लूंगा," वह बोला। "मैं तुम्हारे मालिकों पर भार बना नहीं रह सकता। मैं फैक्टरी के पास ही कहीं कमरा खोज लूंगा।"

"क्या मैं वहाँ आकर तुमसे मिल सकूंगी?" जुलिसा ने पूछा। उसने सुना नहीं कि वह क्या बोली। वह आगे बढ़कर यह मालूम करना चाहता था कि सभी लोग भीड़ लगाये क्यों खड़े हैं। किन्तु उसे कुछ पता नहीं लगा। सेकड़ों आदमी भीड़ लगाये खड़े थे, एक दूसरे को धक्के देते हुए। वहाँ से रास्ता पाना असम्भव था। क्या हो रहा है, यह देखने के लिये जुलिसा भी रुकी। उसे याद आया कि उन्हें जल्दी है।

"हम दूसरे रास्ते चलें," वह बोली। "नहीं तो मुझे भोजन बनाने के लिए समय नहीं रहेगा।"

वे वापस घूमे।:जो समय इस प्रकार खर्च हो गया था, उसकी कमी पूरी करने के लिये वे और भी तेज चले। सड़क के सिरे पर पुलिस की एक कतार खड़ी थी। जुलिसा ने अपनी आँख की कनखी से उनकी ओर देखा और शीघ्रता से आगे बढ़ गई।

"संसार में सैनिक और पुलिसवाले सब से बढ़कर दुष्ट होते हैं," वह बोली। "मैं कभी किसी पुलिसवाले से विवाह नहीं करूँगी।" वह पीछे घूमी ताकि यह देखे कि जॉन ने सुना है अथवा नहीं। लेकिन जॉन अब

उसके पीछे था नहीं। जुलिसा ने पीछे मुड़कर देखा कि वह भीड़ में कहीं दिखाई दे। उसे वह दिखाई दिया। वह पुलिसवाले के पास खड़ा था और उसे इशारे से बुला रहा था। वह उसकी ओर बढ़ी। अब उसकी समझ में आया कि वह उसके पीछे-पीछे क्यों नहीं आया था। वे पुलिस के हाथ पड़ गये थे। पुलिस ने सड़क को घेर लिया था और हर-जानेवाले को उसकी पहचान का प्रमाण-पत्र देख कर ही जाने देती थी। स्त्रियों को कागज दिखाने आवश्यक नहीं थे। इसी लिये उन्होंने उसे जाने दिया था। उसे याद आया कि जॉन के पास कोई कागज नहीं है, और इसलिये उसे डर भी लगा। वह पुलिस के घेरे में से वापिस बाहर निकल आई। एक पुलिसवाले ने उसके हाथ में चिकोटी काटने की कोशिश की, किन्तु वह साफ बच गई और जॉन की ओर बढ़ी। वह एक पृथक् टोली में था जिसे पुलिसवाले बन्दूकों के बीच करके लारी की ओर ले जा रहे थे। जॉन ने टोकरी अपने सिर से ऊपर उठा रखी थी ताकि वह उसे देख ले और लेने पास चली आये। उसने इसे आसानी से देख लिया था, किन्तु वह किसी भी तरह पास नहीं आ सकती थी। पुलिस-वाले ने उसका रास्ता रोक रखा था। इस समय तक वह जॉन को दिखाई दे गई थी। उसने पुलिसवालों को समझाया कि उसे सामान-सहित उसकी टोकरी मिल जानी चाहिये। या तो वे उसकी बात सुनते ही न थे, या समझते न थे कि वह क्या चाहती है। वह चिल्लाई और उसने कसम भी खाई। किन्तु सब बेकार। वे किसी भी तरह उसे उसके पास फटकने नहीं देते थे। जॉन लारी में चढ़ गया था। उसने टोकरी एक ओर लटकाई। अभी भी उसे आशा थी कि जुलिसा पास आकर ले जा सकेगी। तब लॉरी चल दी। उसने सब्जी से भरी टोकरी अपने घुटनों में रख ली। वह सोच रहा था कि जब जुलिसा बिना टोकरी के घर पहुँचेगी तो श्रीमती नेगी उसको बहुत मार मारेगी। वह उस तक टोकरी पहुँचाने के लिये लारी से कूद भी सकता था, किन्तु यह कार्य असम्भव था। बैंच के दोनों सिरों पर लोग बन्दूक ताने खड़े थे। उनकी

और ताकने पर वह सब्जी की टोकरी को भूल गया और सोचने लगा कि वह पकड़ लिया गया है।

६ ।

इस बात को चार सप्ताह बीत गये थे जब बाजार की भीड़ ने जॉन और जुलिसा को एक दूसरे से पृथक् कर दिया था। इसी बीच उसे बाहर का कोई समाचार नहीं मिला। उसे सूर्य के दर्शन तक नहीं हुए थे। उसकी कोठड़ी की खिड़कियों का मुँह उत्तर की ओर था, जो एक आँगन में खुलती थीं। उसी आंगन की ऊँची-ऊँची भूरि दीवारों ने आकाश को ढक रखा था। लगातार चार सप्ताहों तक वह एक बार भी ताजी हवा में सांस न ले सका था। दूसरे कैदियों का प्रतिदिन एक घण्टा आँगन में व्यायाम करने दिया जाता था। उनका पास की कोठड़ियों से जाना और फिर वापिस आना उसे सुनाई देता था। वह जानता था कि वे बाहर खुले में गये हैं। वह उनके पैरों की आवाज से बता सकता था।

अब, यद्यपि बरामदों में शान्ति थी, किन्तु अभी दिन नहीं चढ़ा था। उसने बड़ी कठिनाई से अपनी आँख खोली। उसने अपनी आँखों पर अपना हाथ रखा तो उसे पता लगा कि वे कितनी अधिक सूजी हुई हैं। उन पर खून जम गया था और उन्हें छूना कठिन था। उसे यह भी याद नहीं आ रहा था कि वह कब अपनी कोठरी में वापिस आया। उसने सोचा, "वे ही मुझे यहाँ लाकर डाल गये होंगे।" रोज ही उसकी पिटाई होती थी। जब वे उसे वापिस लाते थे, तो कभी-कभी उसे यह भी पता नहीं चलता था कि वह कहाँ चल रहा है। इधर वे प्रायः उसे वापिस लाकर डाल जाते थे और घण्टों वह एक दम हिल-डोल नहीं सकता था। लेकिन आज तक, उसे रोज इस बात की याद बनी रहती

थी कि किस समय उन्होंने उसे पीटना बन्द किया, कब वे उसे वापिस लाये और किस समय वे उसे लाकर उसके बिस्तर पर डाल गये। आज पहली बार उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। "कल रात उन्होंने अपना काम जल्दी समाप्त कर दिया होगा।" वह ऐसे कह रहा था, मानो किसी दूसरे आदमी की चर्चा कर रहा हो। उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा। जंगली दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसकी मूछों, भौं और बालों में खून चिपका हुआ था। भुनी हुई मिट्टी की तरह अब भी उसके धब्बे भुरभुरे थे। उसने अपने ओठों को भिगोने के लिये उन पर अपनी जिह्वा घुमाई। वह भी सूजे हुए थे और ऐसा दर्द कर रहे थे मानो फूट पड़नेवाले फोड़े हों। उसके दाँतों में बड़ा दर्द था। अभी तक वे उसके बाहर के चार दाँत तोड़ चुके थे। यह एक दिन जबड़ों पर लगे भयानक घूसों का परिणाम था। उसने खून के साथ दाँतों को भी थूक दिया था, मानो बेर की गुठलियाँ हों। उस समय भी उसे उतना ही दर्द हो रहा था, जितना इस समय। "यदि उन्होंने कल रात कुछ और दाँत निकाल दिये होंगे, तो अब मैं अपनी पाव-रोटी न चबा सकूँगा," उसने कहा। लेकिन उसने अपनी जबान से टटोल कर यह पता लगाने का प्रयत्न नहीं किया कि उसके मुँह में कुछ नई जगह बन गई थी, अथवा नहीं। जरा-सा हिलाने-डुलाने से भी उसे वेदना होती थी। एक बार उसने फिर अपनी आँख बँद कर ली। समय बीत गया। बरामदे में पैरों की आहट आ रही थी। रोज की तरह उसने आज यह विचार करने का प्रयत्न नहीं किया कि वह कैसी आहट थी, किधर जा रही थी, अथवा किधर से आ रही थी? उसके सारे बदन पर चोटें लगी थीं, जख्म हो गये थे और उसके ख्याल तक जम कर बर्फ बन गये थे। जब वे उसे प्रश्नोत्तरी के लिये लेने आये और उसने चारपाई पर से जमीन पर पैर रखा तो उसकी चीख निकली जा रही थी। उसके दोनों पाँवों के तलुए सूज कर ताजी रोटी बने हुए थे। उसे यह नहीं याद आ रहा था कि उसके तलुओं पर भी चोट लगाई गई हो। गार्ड ने ठोकर मार कर उसे

दरवाजे की ओर धक्का दिया। तब जाकर कहीं उसने अपनी कोठरी छोड़ी। गार्ड ने जिस जगह ठोकर मारी थी, कुछ क्षण के लिये, उस जगह के पीठ के दर्द ने उसके तलुओं की पीड़ा को भुला दिया। लेकिन तुरन्त ही वह पीड़ा फिर ताजी हो उठी। हर कदम पर उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके बदन की चमड़ी में से कोई एक किनारी उधेड़ ले रहा है।

प्रश्नोत्तरी करनेवाले वरगा इन्सपैक्टर का आफिस सौ कदम की दूरी पर था। यह ख्याल आते ही कि इन सौ कदमों में से हर कदम उसे अपने सूजे हुए तलुओं से चलना पड़ेगा, उसने हिम्मत हार दी और जमीन में धँस गया। अभी वे कोठरी से कुछ ही कदम आये थे। गार्डों ने उसे बगल से पकड़ कर ऊपर उठाया और शेष रास्ता उठाये-उठाये ले गये। उसका बदन एक छोटे बच्चे के बदन की तरह हलका था। जितना भी कुछ वजन था वह हड्डियों तथा चमड़ी का था। मांस और चर्बी का तो अब प्रश्न बाकी ही न रहा था।

६२

अपनी गिरफ़ारी के समय जॉन ने एक वक्तव्य दिया था जिसमें विस्तारपूर्वक यह बताया गया था कि वह किस प्रकार हंगरी पहुँचा। पुलिस ने उसका विश्वास नहीं किया। उन्होंने सच्ची बात का पता लगाने के लिये उसे पीटा था, किन्तु पिटाई के बाद भी उसने वही कहानी सुनाई। इसलिये उन्होंने फिर नये सिरे से आरम्भ किया। उसे हंगरी के खुफिया-पुलिस के जेलखाने में ले जाया गया। हर रोज उससे सवाल-जवाब होते थे और फिर उसकी पिटाई होती थी।

"तुम हंगरी किसलिये भेजे गये हो?" इन्सपैक्टर ने पूछा।

"मुझे किसी ने नहीं भेजा," उसका जवाब था।

"तुमने कहा है कि तुम्हें एक छोटा अफसर ट्रक में बिठाकर सीमा तक पहुँचा गया।"

"हाँ, छोटे अफसर का नाम एपोस्टोल कान्स्टैण्टिन था। वह हमारे कैम्प का हाकिम था। वह डा० अब्रमोविचि का मित्र था और हमारे साथ इसी लिये आया था कि पहरेवाले हमें रोकें नहीं।"

"वह रूमानिया की खुफिया-फौज के मेजर जॉन तनासे के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता," इन्सपेक्टर बोला। "हम जानते हैं कि इस क्षेत्र में वही काम करता है। वह हर महीने अपने एजेण्ट भेजता है, और तुम उनमें से एक हो। हम जानना चाहते हैं कि उसने तुम्हें क्यों भेजा है। तुम्हारा यहाँ आने का क्या उद्देश्य है?"

जॉन ने अपनी आँखें नीची कर लीं।

"मैंने आपको सच्ची बात बता दी है," वह बोला। उसने समझ लिया था कि वह समय नजदीक है जब वह उसे यन्त्रणा-भवन में ले जायेंगे। उसका बदन उस संभावना का ख्याल कर अभी से दर्द करने लगा था।

"क्या तुम नहीं समझते कि अब खेल समाप्त है?" इन्सपैक्टर ने पूछा। "इसे जारी रखने का अब कुछ अर्थ नहीं। तुमने कहा है कि तुमने रूमानिया में एक यहूदी-कैम्प में अठारह महीने बिताये।"

"हाँ, मैंने बिताये।"

"तुमने कभी किसी कैम्प में पैर नहीं रखा, तुम रूमानिया के ही हो।"

"मैं रूमानिया का ही हूँ," जॉन बोला।

"तुम हंगरी में अपने आपको एक यहूदी बनाये रहना चाहते थे। हमें विश्वास दिलाने के लिये ही तुमने यह कैम्प की कथा गढ़ी है। फिर तुमने यह भी कहा है कि तुमने तीन यहूदियों के साथ सीमा पार की।"

"यह बात सत्य है।"

"यह सत्य नहीं है। तुम अकेले आये हो। और कभी इस्साक नेगी के घर में भी नहीं ठहरे। पिछले छः महीनों में उनके यहाँ कोई

ठहरा ही नहीं। तुमने सोचा होगा कि तुम जैसा कहोगे हम वैसा ही मान लेंगे। हम तुम्हारा साँच-झूठ नहीं देखेंगे। क्या यह नहीं सोचा था? मेरे पास श्री नेगी और श्रीमती नेगी के लिखित वक्तव्य हैं। उन्होंने कभी तुम्हारा नाम नहीं सुना। श्रीमती रोसा नेगी का कोई भाई डाक्टर नहीं है।"

"क्या उन्होंने कहा है कि वे मुझे नहीं जानते?" जॉन ने पूछा। "श्रीमती नेगी ने ऐसा नहीं कहा होगा। मैं उसके घर में काम किया करता था। मैं जुलिसा के साथ सामान लेने जाता था। मैं सफाई किया..."

वह चीख पड़ा। इन्सपेक्टर जोर से चिल्लाया :

"और दूसरा झूठ! रोसा नेगी के यहाँ जुलिसा नाम की कोई नौकरानी नहीं थी। यदि तुम्हें झूठ ही बोलना था तो कम से कम श्रीमती नेगी की नौकरानी का नाम तो मालूम कर लिया होता!" इन्सपैक्टर हँस रहा था। "मैंने नौकरानी से भी पूछ लिया है। वह पिछले आठ वर्ष से श्रीमती नेगी के यहाँ काम करती है। तुमने जुलिसा के बारे में यह सारी कथा हमें कुरस्ते डाल देने के लिये गढ़ी है। अथवा मेजर तानसे ने ही तुम्हें जुलिसा के बारे में यह कहनी सिखा-पढ़ा कर भेजा है?"

जॉन आँखें बन्द करके उस गार्ड की आवाज की प्रतीक्षा करने लगा जो उसे नीचे यन्त्रणा-भवन में ले जाता था। उसने चाहा कि वह विचार करना एकदम बन्द कर दे। लेकिन यह विचार कि श्रीमती नेगी ने कहा कि वह उसे पहचानती नहीं, उसे हैरान कर रहा था। उसे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था।

उसे दरवाजे के खुलने की आवाज सुन पड़ी। लेकिन यह संतरी के उन पाँवों की आहट नहीं थी, जो प्रायः उसे नीचे ले जाते थे। उसने खोलीं तो इस्साक नेगी को सामने खड़े पाया। वह कॉफी के रंग का एक नया सूट पहने था और उसने उसकी ओर झाँका तक नहीं।

"क्या तुम इस आदमी को जानते हो?" इन्सपैक्टर ने पूछा।

"मैंने इससे पहले जीवन में इसे कभी नहीं देखा," नेगी का उत्तर था। उसने बड़ी अन्यमनस्कता से जॉन को ऊपर से नीचे तक देखा।

"क्या रूमानिया के तीन यहूदी शरणार्थी कभी तुम्हारे घर ठहरे हैं?" इन्सपैक्टर ने पूछा।

"मेरी स्त्री, मेरे और हमारी नौकरानी के सिवा हमारे घर में पिछले कई वर्षों से कभी कोई नहीं सोया।"

"धन्यवाद," इन्सपैक्टर बोला।

इस्साक नेगी को बाहर पहुँचा दिया गया। उसके तुरन्त बाद उसकी स्त्री आ गई। उसने भी कहा कि इससे पहले न उसने कभी जॉन को जाना ही है और न कभी देखा ही है।

"क्या तुम्हारा कोई भाई रूमानिया में डाक्टर है?"

"मैं अकेली सन्तान हूँ," उसका उत्तर था।

इन्सपैक्टर ने जॉन की ओर एक उड़ती नजर डाली और बोला :

"क्या तुमने जुलिसा नाम की कभी कोई नौकरानी रखी है?"

"कभी नहीं," उसका उत्तर था। "आठ वर्ष हुए, जब से हम बुडापैस्ट आये हैं, हमारी एक ही नौकरानी है और उसका नाम जोसफिना है।"

श्रीमती नेगी मुस्कराती हुई कमरे से बाहर चली गई। उसके बाद एक बुढ़िया आई, जिसका कहना था कि उसका नाम जोसफिना है और वह पिछले आठ वर्ष से नेगी-परिवार की नौकरानी है।

फिर एक बार इन्सपैक्टर और जॉन अकेले रह गये।

"अब तो तुम अपनी जिद्द छोड़ दोगे और स्वीकार कर लोगे कि तुम झूठ बोल रहे थे," वह बोला। "मुझे सच सच बता दो कि तुम्हें हंगरी क्यों भेजा गया है?"

जॉन मारित्ज़ जोर जोर से रोने लगा।

६३

इन्सपैक्टर वरगा के कमरे से जॉन को सीधा यन्त्रणा-भवन ले जाया गया। यही रोज का काम था। लेकिन इससे पहले उसे कभी इतना भय नहीं लगा था। ज्यों ही उसने अन्दर प्रवेश किया, उसकी आँखों पर रोशनी जोर से पड़ी। इस कमरे में सदैव तेज चौंधिया देनेवाली रोशनी रहती थी। लैम्प बड़े-बड़े थे और उनमें खूब रोशनी थी। जॉन ने आँखें बन्द कर लीं लेकिन रोशनी उसके गालों को आग की तरह जला रही थी।

"नंगे हो जाओ" गार्ड ने हँसते हुए आज्ञा दी।

यह दो मोटे आदमियों में से एक था। इसके बड़ी-बड़ी मूछें थीं। ये दोनों मेज पर बैठे प्रायः ताश खेलते रहते थे। जॉन ने अपनी कमीज का कॉलर खोलना आरम्भ किया। जब कभी वह जल्दी से नहीं खोल पाता था तो उन दोनों में से एक उसके मुँह पर एक चाबुक मार देता था। यह बात वह जानता था। लेकिन उसकी अँगुलियाँ सूजी थीं और उसे अपनी कमीज के छोटे-छोटे बटन पकड़ने में तकलीफ हो रही थी। उन आदमियों को प्रतीक्षा कराने से वह अत्यन्त भयभीत था। इससे पहले कभी उसे चाबुक की कल्पना से इतना डर न लगा था। उसने चोर की तरह दोनों गार्डों की ओर देखा। वे अपने खेल में इतने अधिक मस्त थे कि उसकी सुस्ती की ओर उनका ख्याल ही नहीं गया। जैसे-तैसे उसने अपनी कमीज उतार दी। उसे अपना पाजामा नहीं उतारना पड़ा। उसके सामने लोहे की सलाखों का एक शिकंजा था, वैसी ही सलाखों का जैसी बन्दूक की नलकियों के साफ करने के काम में आती हैं। वे मोटाई के हिसाब से एक कतार में क्रमशः रखी थीं। बाईं ओर की सलाखें आदमी के अँगूठे जितनी मोटी थीं, उसके बाद दूसरी सलाखें थीं, जो क्रमशः पतली होती गई थीं। प्रत्येक मोटाई की दो सलाखें थीं और उनकी बीस जोड़ियाँ थीं। उसने पहले उनकी

कभी गिनती नहीं की थी। शिकंजे के दाहिनी ओर अंतिम सिरे पर रखी सलाख इतनी पतली थी जितनी गेहूँ की बाल का डंठल। उसे मालूम था कि प्रत्येक सलाख ठीक-ठीक कितनी पीड़ा पहुँचाती है।

"चलो बेटा, काम पर," दोनों में से एक ने ताश को यूँ ही मेज पर बिखरे पड़े रहने देते हुए कहा। 'काम नहीं, तो वेतन भी नहीं।"

जॉन ने देखा कि उसने अँगड़ाई ली। वह एक कसा हुआ स्वेटर पहने था और लगता था कि जैसे उसे नींद आ रही हो। दूसरे गार्ड ने अपनी सिगरेट बुझाई और जॉन की ओर देखा।

"अच्छा, क्या आज बताओगे कि तुम्हें किसने यहाँ भेजा?" गार्ड बड़े धीरे बोला। इतने धीरे से से मानों वह जॉन से सिगरेट जलाने के लिये दियासलाई माँगता रहा हो। ज्यों ही उसका बोलना बन्द हुआ, उसने ठीक दूसरे आदमी की ही तरह जम्हाई ली और अँगड़ाई ली।

"मुझे किसी ने नहीं भेजा," जॉन का उत्तर था।

एक साथ ही दोनों आदमी उसकी ओर मुड़े। वे ऐसे उछले मानों लोहे की लाल सलाख से दाग दिये गये हों। उनकी आँखें क्रोध से चमकने लगीं। जॉन काँपने लगा। उनमें से एक आदमी उसके पास आया और उसने पहले उसके जबड़े पर एक घूँसा जमाया और तब दूसरा। जॉन का जबड़ा पत्थर हो गया। दूसरे आदमी ने उसे कंधों से पकड़ा और उसका मुँह नीचे की ओर करके शिकंजे के पास उसे बेंच पर लिटा दिया। तब उसने उसकी पीठ को चौड़ा किया और उस पर बैठ गया। जब-जब गार्ड उसकी पीठ पर चढ़ बैठता था, जॉन को डर लगता था कि उसका साँस घुट जायगा और वह मर जायगा। किन्तु आज वह सचमुच मर जाना चाहता था। उसे लग रहा था कि मानों उसे बेंच के साथ एक कर दिया गया है, उसकी पसलियाँ उसकी छाती में घुसी जा रही हैं, मानों बहुत-सी मेखें हों। कमर पर बैठे हुए

उस आदमी के भार के नीचे उसके फेफड़े ऐसे पिस रहे थे, मानों चक्की के पत्थर के नीचे पिस रहे हों।

गार्ड ने, जिसने उसकी ठुड्डी के नीचे चोट की थी, पूछा—"तुमने क्या कहा था?" दूसरे गार्ड ने उत्तर नहीं दिया। जॉन के पैरों पर पहला प्रहार पड़ा। उसने उन्हें समेट लेना चाहा, लेकिन जो आदमी उसकी कमर पर बैठा था, उसने उन्हें पकड़ कर फिर बैंच पर फैला दिया। तब दूसरा प्रहार हुआ। यह पहले से मोटी सलाख से किया गया था। अब उसके तलुओं में जलन नहीं थी। इस समय उसे केवल सिर में वेदना मालूम हो रही थी। लेकिन जब लगातार प्रहार होने लगा तो उसके सिर में भी नहीं किन्तु छाती में पीड़ा मालूम होने लगी। तब कन्धों में। उसके बाद कहीं नहीं। उसका शरीर जैसे जड़ हो गया। लेकिन यह अवस्था देर तक नहीं रही। उसे अपने पाँवों के तलुओं में ऐसी वेदना होने लगी मानों उन्हें किसी ने तेज चाकू से काट डाला हो। यह पतली सलाखें थीं। चोट का असर उसे अपने घुटनों और तब गुर्दे में मालूम हुआ। पेशाब की थैली और पेट पर उसका अधिकार जाता रहा। प्रहार थे कि जैसे ओलों की वर्षा हो रही हो। जॉन को उल्टी आई। उसकी आँखों के सामने एक पीला प्रकाश दिखाई दिया और जॉन का सब खाया-पिया निकल गया। उसका ढीला पाजामा उसकी चमड़ी से जा चिपका। जो रोटी और पानी वह किसी तरह निगल गया था, वह उसके पेट में न रहा।

जॉन को ऐसा लगा मानों वह अपनी आँखों के सामने के पीले प्रकाश में डूबता चला जा रहा है। उसका मुँह एक कड़ुवे हरे तरल पदार्थ से भर गया था। यह तरल पदार्थ उसकी नाक, मुँह तथा दूसरे छिद्रों से निकलने लगा। यह मेंढक-विशेष के थूक की सी नीली झाग से मिला हुआ था। जॉन उस समय जीवन के अन्तिम छोर पर लटक रहा था। अब केवल उसका दिमाग भर ही चेतन था। गार्ड

और भी अधिक पतली सलाखों से प्रहार कर रहा था, लेकिन उसे कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा था।

अधिक प्रहार सहने में असमर्थ हो जाने के कारण उसका रक्त भी उसके पीड़ित पिञ्जर से बाहर निकलना चाहता था। जितने भी द्वार मिले वह सभी से बाहर निकल आया। मुँह, नाक और कानों के रास्ते उसके शरीर से बाहर निकलकर उसका रक्त पेशाब के साथ जा मिला। यह उसकी चमड़ी के रन्ध्रों में से भी निकलने लगा था। इसे निकलना था—जैसे भी हो, जिस रास्ते हो।

६४

जब होश आया, तो जॉन को इस्साक और रोसा नेगी से जो उसका आमना-सामना हुआ था, उसकी याद आई। "यदि उन्होंने केवल सच्ची बात कह दी होती तो इन्सपैक्टर मुझे छोड़ देता। वैसी हालत में उन्होंने मुझे कल उतनी यातना न दी होती।" इससे पहले उसे कभी इतनी मार न पड़ी थी। पाँव के तलुवे से लेकर सिर के ठीक ऊपर तक उसका सारा शरीर एक खुला ज़ख्म था, जिसमें से रक्त बह रहा था।

"इस्साक नेगी ने कहा वह मुझे जानता नहीं था। उसने सीधा मेरी ओर देखा और बोला—उसने मुझे कभी देखा ही नहीं। और उसकी औरत ने भी वैसे ही।" उसे याद आया कि श्रीमती नेगी की आज्ञा के अनुसार वह कैसे प्रतिदिन इस्साक नेगी के जूतों पर पालिश करता था, लकड़ियाँ काटता था और घर का फर्श धोता था। जॉन को आश्चर्य होता था कि वे ऐसी बात मुँह से निकाल ही कैसे सकते थे! उन्होंने यहाँ तक कहा कि उन्होंने कभी जुलिसा को नहीं देखा और इस नाम की उनकी कभी कोई नौकरानी नहीं रही।

जॉन की सहनशक्ति की सीमा हो चुकी थी। वह जानता था कि उसका शरीर और दिमाग दुर्बल हो गये हैं और कल तथा परसों वह यह जानता ही नहीं कि वह कब और किस प्रकार अपनी कोठरी में वापिस पहुँच गया। यह सब चोट के कारण था। तो भी उसे इस बात का पूर्ण निश्चय था वह इस्साक नेगी के घर में रहा है। उसे पूर्ण निश्चय था। कि जुलिसा वहाँ नौकरानी थी।

इतना होने पर भी इस्साक नेगी ने कहा था—नहीं। उसकी स्त्री ने कहा था—नहीं। उसने उन्हें स्वयं अपने कानों से कहते सुना था—नहीं, नहीं, नहीं।

जॉन मारित्ज़ ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

६५

कुछ देर के बाद वे उसे फिर लेने आये। वह काँपने लगा। पहली बार उसके मन में आत्म-हत्या कर लेने की इच्छा हुई। ये अत्याचार असह्य हो गये थे। गार्ड ने दरवाजा खुला छोड़ दिया और देहली पर खड़ा रहा। अपनी अध-खुली आँखों से जॉन ने देखा कि वह खड़ा दाँत पीस रहा है—

"उठो।"

जॉन को इन्सपैक्टर वरगा सामने खड़ा दिखाई दिया। उसे उसकी आवाज सुनाई दी। तब उसे वह यन्त्रणा-भवन और लोहे की सलाखों वाला शिकंजा दिखाई दिया। उसे अपनी कमर पर उस गार्ड का पूरा-पूरा भार मालूम दिया। उसके ओंठ कुछ अर्ध-स्फुट स्वर में धीरे से बोले—

"नहीं।"

"उठो।" गार्ड की आज्ञा थी।

जॉन ने उसकी बात नहीं सुनी। उसकी दशा ऐसी थी मानो वह मुर्दा हो।

गार्ड उसके बिस्तर के पास आया और उसे खींच कर खड़ा कर दिया।

"नहीं, आज नहीं। यदि तुम चाहो तो कल मुझसे सवाल-जवाब करके मुझे यन्त्रणा दे लेना। उससे अगले दिन और फिर जीवन पर्यन्त प्रति दिन, किन्तु आज नहीं।"

आज तुम रिहा किये जा रहे हो," गार्ड बोला। जॉन ने उसका विश्वास नहीं किया। उसने किसी भी बात में विश्वास करना छोड़ दिया था।

यह सब होने पर भी उस दिन वह जेल से रिहा कर दिया गया। लेकिन वह एकदम रिहा नहीं किया गया। रूमानिया का वासी होने के कारण उसे लेबर-कैम्प में भेज दिया गया।

६६

जेल छोड़ने से पहले उसे जुलिसा से एक पत्र मिला। इन्सपैक्टर वरगा के आफिस का पहरेदार उसकी कोठरी में आया था और जॉन के जाने के समय उसे दे गया था। पत्र जुलिसा के अपने हस्ताक्षरों में था—

"प्रिय जानोस,

"चार दिन हुए, मेरी नौकरी छूट गई है। मैं तुम्हें यह बताने के लिये यह पत्र लिख रही हूँ कि जब लोग तुम्हें छोड़ दें तो तुम मुझ से मिलने के लिये पेतोफि स्ट्रीट न आओ। मैं अपनी माँ के साथ रहने के लिये तिस प्रान्त के बालतान जिले के देहात में जा रही हूँ। मैं वहाँ

बहुत प्रेमपूर्वक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी। ज्यों ही तुम जेल से छूटो, अवश्य आओ...जुलिसा।"

नीचे दायें कोने पर उसने घसीट लिखा था :

"कल मैं नेगी-गृह से अपनी चीजें लेने गई। श्री नेगी और श्रीमती नेगी चाहते हैं कि उन्होंने जो इन्सपैक्टर को यह कह दिया कि वे तुम्हें नहीं जानते हैं, इसके लिये तुम उनसे गुस्सा न होना। नगर में यहूदियों की पकड़-धकड़ शुरू हो गई है। उन्हें यह स्वीकार करते डर लगता था कि उन्होंने अपने घर में शरणार्थियों को जगह दी थी। वे तुम्हें हार्दिक मंगल-कामना भेजते हैं। श्री नेगी ने मुझे तुम्हारे लिये एक सूट दिया है। यह लगभग नया है, और तुम्हारे आने तक मैं इसे तुम्हारे लिये रखे हूँ। वह बड़ा भला आदमी है। श्रीमती नेगी भी वैसी ही हैं। उनसे गुस्सा न होना। उन्हें गिरफ्तारी का डर था। इसी लिये उन्होंने कह दिया कि वे तुम्हें नहीं जानते। दिन ऐसे ही हैं। भय ऐसी चीज है कि वह किसी से उसकी अपनी नानी की हत्या करा सकता है। मैं तुम्हें चुम्बन भेजती हूँ...जुलिसा।"

६७

पूरे तीन घण्टे तक रीजैंसी-महल में हंगरी-मन्त्रि-मण्डल की गुप्त बैठक होती रही। यद्यपि कान्फ्रेंस समाप्त हो चुकी थी, तो भी विदेश-मन्त्री फिर खड़ा हुआ।

"पचास हजार मजदूरों की समस्या अभी हल नहीं हुई," उसने कहा। "और यह सब से अधिक महत्व की है।"

"मामला तय हो गया है," प्रधान-मन्त्री ने दृढ़तापूर्वक कहा। "हम एक सर्व-सम्मत निर्णय पर पहुँच गये हैं।"

मंत्रियों ने चलने के लिए तैयार होकर अपने-अपने चर्म-बैग उठा लिये थे। विदेश मन्त्री बिना इसकी ओर ध्यान दिये ही कहता चला गया :—

"हमें कहीं न कहीं झुकना होगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हममें और जर्मनी में जो अन्तर है वह रहेगा ही। हम जर्मनी के बराबर नहीं हैं। कितनी ही अनिच्छा से हो, हमें यह स्वीकार करना होगा कि जहाँ तक जर्मन पार्लिमेंट का सम्बन्ध है, हंगरी की स्थिति एक अधीनस्थ की स्थिति है, बराबर के सहायक की नहीं। हमारे लिये दूसरा मार्ग केवल यही है कि हम पर जर्मन का सैनिक अधिकार हो जाय, जो सब से बुरी अवस्था होगी। पहले तो हम से तीन लाख मजदूर मांगे गये थे। बड़ी लम्बी बात-चीत के बाद यह संख्या घटाकर पचास हजार की गई है। यह पचास हजार कहीं न कहीं से आने ही चाहिये।"

"मेरी सरकार एक भी हंगरी-नागरिक बेगार के लिये नहीं देने वाली है," प्रधान मन्त्री ने गर्म होकर कहा।

"जर्मनी की माँग के पीछे उसकी धमकी है," विदेश-मंत्री ने कहा। "यह माँग उनकी अन्तिम माँग के रूप में आई है। उनके उद्योग-धन्धों को आदमियों की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि हम कम से कम पचास हजार आदमी नहीं भेजते तो हमारी इनकार का भयङ्कर परिणाम हो सकता है। मुझे सूचना दी गई है कि यदि माँग स्वीकार नहीं की गई तो हंगरी पर तुरन्त सैनिक अधिकार करना ही होगा। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं यह बात आप सब को स्पष्ट कर दूँ। श्रीमान्, आप सबके सिर इस निर्णय की जिम्मेदारी है।"

"शायद, कोई समझौता हो सकता है," एक मन्त्री बोला।

"यदि हमें जर्मनी में हंगरी का एक आदमी भी 'दास' बना कर भेजना पड़ा, इससे किसी भी तरह स्थिति की गम्भीरता में अन्तर नहीं आता। इतिहास हमें इसके लिये कभी क्षमा नहीं करेगा," प्रधान मन्त्री

ने कहा। "हमारा उत्तर स्पष्ट इनकार होना चाहिये। इस मामले में समझौता नहीं हो सकता।"

"हम ऐसे पचास हजार मजदूरों को जर्मनी भेज सकते है, जो हंगरी के नागरिक नहीं हैं," गृह-मन्त्री ने कहा। "हमारे यहाँ तीन लाख से भी अधिक विदेशी हंगरी में कैद हैं। उन्हें क्यों न भेज दिया जाय?"

"मुझे समस्या के इस हल पर आपत्ति है," विदेश-मन्त्री ने कहा। "इससे मामला और उलझ जायगा। राजनीतिक कैदियों और सीमित स्थान में रहने के लिये मजबूर व्यक्तियों के बारे में जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून है, यह उसके सर्वथा विरुद्ध है। हम दूसरी जातियों को अपना शत्रु नहीं बना सकते। यदि हम समस्या के इस हल को स्वीकार कर लेंगे तो हंगरी के राजमुकुट पर एक अमिट धब्बा लग जायगा। इसके अतिरिक्त हमें अगणित नये शत्रुओं की सम्भावना पर विचार करना होगा।"

आध घण्टे में एक समझौता हल—निकल आया। निश्चय हुआ कि ऐसे पचास हजार मजदूर जर्मनी भेजे जायँ, जो हंगरी के न हों और जिनकी जातीयता अपेक्षाकृत अनिश्चित हो। गृहमंत्री ने अपने जिम्मे यह काम लिया कि वह मजदूरों की जातीयता पर कुछ ऐसा पर्दा डाल देगा जिससे यह किसी भी तरह सिद्ध न हो सकेगा कि अमुक मजदूर अमुक विदेशी शक्ति का है।

"इस प्रकार हम अपने 'मग्यर-रक्त' की रक्षा कर लेंगे," गृह-मंत्री बोला। "इतिहास हम पर यह दोषारोपण नहीं करेगा कि हमने हंगरी के लोगों को दास बनाया। आनेवाली सन्तति हमारे उद्देश्य की योग्यता और शुद्धता पर ध्यान देकर उसकी प्राप्ति के लिये उपयोग में लाये साधनों को महत्त्व न देगी।"

६८

हंगरी-प्रेस के प्रधान अधिकारी का नाम था काउन्ट बारथोली। वह अपने आफिस में गया और अपने सेक्रेट्री को बुलवाया। मन्त्रि-मण्डल की गुप्त बैठक के निर्णय के बारे में वह एक सरकारी विज्ञप्ति लिखवा देना चाहता था।

"जिस किसी को आत्म-सम्मान का अधिकार नहीं है, वह 'दास' है," काउन्ट अपने मन में सोचने लगा। "लेकिन आजकल जो कोई भी अपने व्यक्तित्व की रक्षा करना चाहता है वह अपने मृत्यु-दण्ड के पत्र पर हस्ताक्षर करता है। हमारा समाज आदमी को अपने व्यक्तिगत सम्मान की रक्षा करने का अवसर नहीं देता, अर्थात् उसे जीने की स्वतन्त्रता नहीं देता। यदि वह 'दास' बनकर जीना स्वीकार करता है, तभी उसे जीने देता है। लेकिन यह अवस्था बहुत दिन नहीं रह सकती। वह समाज—जिसमें प्रधान-मन्त्री से लेकर सड़क के भंगी तक हर कोई एक 'दास' है—अनिवार्य तौर पर नष्ट होने जा रहा है। और यह जितना शीघ्र हो, उतना ही अच्छा।"

"सर, क्या आपने कुछ कहा?" सेक्रेट्री ने कमरे में आते हुए पूछा।

"नहीं," वह बोला। "अच्छा, यह लिख लें। सरकारी विज्ञप्ति: मंत्रिमण्डल की कल की प्राइवेट बैठक में यह निर्णय हुआ है कि हंगरी के ऐसे मजदूरों को, जो बड़े बड़े उद्योगों में विशेष दक्षता प्राप्त करने के लिये जर्मनी जाना चाहें, वहाँ जाने के सिलसिले में अनुज्ञा-पत्र और यात्रा की विशेष सुविधायें दी जायँ। अभी केवल पचास हजार मजदूर ही इन सुविधाओं से लाभ उठा सकेंगे।"

सेक्रेट्री उठ खड़ा हुआ।

"इसे सभी पत्रों को इस आदेश के साथ भेज दो कि प्रथम पृष्ठ पर छापें," काउन्ट बारथोली ने कहा।

उस शाम काउन्ट बारथोली ने अपने पुत्र के साथ भोजन किया। वही उसका मुख्य प्राइवेट सेक्रेटरी भी था। कॉफी पीते पीते काउन्ट ने अपने पुत्र से प्रश्न किया—

"यह जर्मनी मजदूर भेजने के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

"प्रथम दर्जे की राजनीतिक चाल। जर्मनी को हंगरी के मजदूर भेजने के बजाय हम जेलों से और कैम्पों से कुछ हजार विदेशियों को जोड़-बटोर कर भेज दे रहे हैं। जर्मन अभिमान की आँख में क्या धूल झोंकी गई है। प्रतिभा की सूझ है।"

"क्या तुम जानते हो कि इन मजदूरों के बदले में हमें जर्मनों से कुछ प्राप्त भी होनेवाला है?" काउन्टर ने पूछा। "अथवा स्पष्ट भाषा में क्या तुम्हें मालूम है कि हमें इन पचास हजार आदमियों की कीमत भी मिलनेवाली है?"

"यह भी कोई कहने की बात है," ल्युसियन बोला। "क्या तुम सोचते हो कि हम बिना कुछ भी बदले में लिये जर्मनों को मजदूर यूं ही दे देंगे?"

"और क्या तुम्हें इसमें अपना अपमान नहीं मालूम देता कि तुम्हारे पिता ने आज आदमियों के इस विक्रय में सहयोग दिया है?" काउन्ट ने पूछा। "इस प्रकार का लेन-देन नैतिक पतन की अन्तिम सीमा है।"

"पिताजी, आप अद्भुत आदमी हैं," ल्युसियन बोला। "क्या यही कारण है कि आज शाम से आप इतने उदास हैं?"

"प्रश्न से पल्ला मत छुड़ाओ," काउन्ट बोला। "तुम यह स्वीकार करते हो अथवा नहीं कि आज मैं मानव-व्यापार में लगा रहा हूँ?"

"अच्छा, यदि आप इसे इस दृष्टि देखते हैं, तो आप लगे रहे हैं, और तब?" ल्युसियन ने मुस्कराते हुए कहा।

"और इससे तुम्हें किसी तरह की बेचैनी नहीं होती?"

"मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि मैं इस बात से बेचैन होऊँ," ल्युसियन बोला। "जो हो, मुझे विश्वास है कि इसके अतिरिक्त कोई और दूसरी

बात भी होगी, जिसने आप को आज इतना बेचैन कर रखा है। क्योंकि यह बात तो इतनी मामूली है कि इसकी ओर तो एक क्षण के लिये भी ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। यदि जो कुछ हमने किया, वह न किया होता तो हमें हंगरी-निवासी भेजने पड़ते। यह तो सचमुच बड़ी भयानक बात हुई होती।"

"मैं स्वीकार करता हूँ कि हंगरी के दृष्टि-कोण से यह अधिक भयानक बात हुई होती," काउन्ट ने कहा। "किन्तु मानवी दृष्टि-कोण से इसमें कुछ अन्तर नहीं है। आज हमने जर्मनों के हाथ आदमी बेचे हैं।"

"पिताजी, यह अनिवार्य राजनीतिक आवश्यकता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ऐसा होगा ही।"

"अनेक शताब्दी पूर्व यूरोप ने दास-व्यापार को समाप्त किया। अन्तिम 'दास' जो बेचे गये वे अमरीका के नीग्रो थे। आज सारे संसार में मानव-व्यापार गैर-कानूनी है। दास-प्रथा का अन्त हमारी सभ्यता की महानतम विजयों में से एक है। स्कूली पाठ्य-पुस्तकें इस बात से भरी हैं। और अब हमने घड़ी की सूई को फिर पीछे की ओर घुमा दिया है। हम आदमियों का क्रय-विक्रय कर रहे हैं। हमने बीसवीं शताब्दी में से सीधे ईसा-पूर्व शताब्दी में पीछे की ओर अचानक एक छलाँग लगाई है, बीच में हम 'जागरण-काल' और 'मध्य-युग' को भी पार कर गये हैं।"

"पिताजी, आदमी को ऐसी निराशभरी दृष्टि नहीं रखनी चाहिये," ल्युसियन बोला। "आखिर जर्मनी में कोई इनके हाथ-पाँव बाँधने नहीं जा रहा है। ये केवल वहाँ काम करने के लिये जा रहे हैं।"

"इनको जंजीरों में केवल इसलिये नहीं बाँधा जाता क्योंकि इनके भागने का कोई खतरा नहीं। आज के समाज को अपने दासों को काबू में रखने के ऐसे-ऐसे तरीके मालूम हैं, जिनका यूनानियों को कभी ख्वाब भी नहीं आ सकता। मेरा आशय केवल मशीन-गनों और

बिजली के तारों की चहार-दीवारियों से ही नहीं है, किन्तु आधुनिक यान्त्रिक-सभ्यता के सभी साधनों से—राशन कार्डों से, होटल में रहने के आज्ञा-पत्रों से, ट्रेन यात्रा करने के अनुज्ञा-पत्रों से, बाजार में इधर-उधर जाने पर लगी हुई पाबन्दियों से और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये भी लगे हुए प्रतिबन्धों से है। ग्रीस और मिस्र के लोगों ने भी अपने गुलामों को जंजीरों में कैद न किया होता यदि उनके पास भी अपने गुलामों को काबू में रखने के वैसे ही आत्म-संचालित साधन होते जैसे आधुनिक समाज के पास हैं। दास-प्रथा में कहीं कोई अन्तर नहीं।"

"मैं इसकी अत्यधिक चिन्ता नहीं करूँगा," ल्युसियन बोला। "इस विषय में हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे सामने दूसरा रास्ता नहीं। यूरोप के लगभग हर देश ने जर्मनी को गुलाम बेचे हैं—रुमानिया ने, युगोसलाविया ने, फ्रांस ने, इटली ने और नारवे ने। व्यक्तिगत रूप से हम यही कर सकते हैं कि हम सरकार में से निकल आयें और जर्मनी से लड़ें कि वह गुलामों को खरीदता है और दूसरे देशों को उन्हें बेचने के लिए मजबूर करता है। तब दूसरे लोग सरकार बना लेंगे और जर्मनी को गुलाम भेजा जाना इसी प्रकार जारी रहेगा। यदि, मान लो, हम जर्मन पार्लिमेंट को नष्ट भी कर डालें तो भी तो समस्या हल न होगी। जर्मनों का स्थान रूस के लोग ग्रहण कर लेंगे। और रूसी लोग संसार भर में सब से बड़े गुलामों के व्यापारी हैं। सोवियत् रूस में हर आदमी राज्य की मानी हुई सम्पत्ति है।"

"और इस परिस्थिति से तुम तनिक व्याकुल नहीं हो?" काउन्ट ने पूछा।

"नहीं।"

"यह और भी गम्भीर बात है," काउन्ट बोला। "इसका अर्थ है कि तुम्हारे मन में मानवों के लिये तनिक आदर नहीं रहा। तुम स्वयं

एक मानव हो। इसका मतलब है कि अब तुम स्वयं अपना सम्मान भी नहीं करते।"

"मैं आदमी के मूल्य के हिसाब से हर आदमी का सम्मान करता हूँ। मुझे विश्वास है कि इस बात के लिये तुम मुझे गाली देने नहीं जा रहे हो।"

"जिस प्रकार बाजारू कीमत के हिसाब से तुम एक मोटर-गाड़ी का सम्मान करते हो, ठीक उसी प्रकार तुम एक आदमी का सम्मान करते हो।"

"इसमें हर्ज ही क्या है?" ल्युसियन बोला।

"लेकिन क्या तुम आदमी का आदमी की हैसियत से सम्मान करते हो, उसके अपने यथार्थ मानवी मूल्य के लिये?"

"निस्सन्देह मैं करता हूँ। यदि मुझसे कभी किसी को कष्ट पहुँच जाय, तो उसके लिये मैं अनुताप करता ही हूँ।"

"लेकिन तुम तो यदि एक कुत्ते को भी पीड़ा पहुंचाओगे तो उसके लिये अनुतप्त होगे, क्योंकि तुम जानते हो कि यदि तुम उसे चाबुक मारो तो उसे कष्ट होगा। यह तो जैसे किसी और जीव पर दया करना है, वैसे ही आदमी पर दया करना हुआ। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या तुम आदमी का आदमी की हैसियत से आदर करते हो, जिसका स्वयं अपने में कुछ मूल्य है, जो अपनी जगह अनूठा है, जिसके स्थान पर किसी को भी यूं ही नहीं बिठाया जा सकता; ऐसी अवस्था में भी जब उस व्यक्ति-विशेष का कोई उपयोग-मूल्य नहीं है, जब वह एक प्राणी के नाते न तुम्हारे मन में दया के भाव का ही संचार करता है और न प्रेम भाव का ही?"

"मैंने कभी अपने से यह प्रश्न नहीं पूछा," ल्युसियन बोला।

"मैं जानता हूँ कि मैं आदमी के सामाजिक मूल्य के अनुसार और उसके एक प्राणी होने के नाते उसका आदर करता हूँ। हर कोई मेरी ही तरह सोचता और अनुभव करता है।"

"ल्युसियन, क्या तुम्हें विश्वास है कि आजकल हर कोई तुम्हारी ही तरह सोचता और अनुभव करता है ?"

"निश्चत रूप से," ल्युसियन का उत्तर था। "एकमात्र यही तर्कानुकूल परिणाम है। आदमी सामाजिक-मूल्य की एक इकाई है। शेष सब कुछ कोरी मान्यता है।"

"यह तो भयानक गम्भीर बात है।"

"इसमें विशेष चिन्तनीय क्या है ?"

"ल्युसियन ! हमारी सभ्यता का अन्त हो गया। इसमें तीन गुण थे:—पहला, यह सौन्दर्य से प्रेम और उसकी पूजा करती थी, यह यूनानियों की देन थी; दूसरा, इसे कानून के लिये आदर था, यह रोमवालों की देन थी; तीसरा, यह आदमी का आदर करती थी, यह बात बहुत बाद में और बड़ी कठिनाई से ईसाइयत से सीखी गई थी। यह इन तीन बड़े प्रतीकों—सौन्दर्य, कानून और आदमी—का आदर करके ही हमारी पश्चिमी सभ्यता कुछ भी सम्पादन कर सकी है। अब इसने अपनी दायाद के सबसे बड़े महत्त्व के अंश से हाथ धो लिया है—आदमी के लिये प्रेम और आदर से। बिना इस प्रेम और आदर के पश्चिमी संस्कृति का अन्त हो ही जाना चाहिये। यह मृत है।"

"इतिहास में आदमी इससे भी अधिक अन्धकार-पूर्ण युग में से गुजरा है," ल्युसियन बोला। "उसे सार्वजनिक स्थानों और वेदिकाओं पर जीवित जला दिया गया है, चर्खियों पर घुमा कर उसकी हड्डी-पसली तोड़ी गई है, वह किसी भी बेजान वस्तु की तरह बेचा और काम में लाया गया है। हमें अपने ही युग के प्रति इतना अधिक कठोर होने का कोई अधिकार नहीं।"

"बहुत ठीक," काउन्ट ने कहा। "उस अन्धकार-पूर्ण युग में आदमी का अनादर होता था, उससे घृणा की जाती थी। बर्बरता के कारण आदमियों के बलिदानों के उत्सव मनाये जाते थे। लेकिन हमने बर्बरता

को जीत लिया था। हमने अभी आदमी का आदर करना आरम्भ किया था। हम एक नये युग में प्रवेश कर ही रहे थे। लेकिन इस बीच हमने जो कुछ शताब्दियों में प्राप्त किया था, वह सभी कुछ यान्त्रिक सभ्यता ने नष्ट कर डाला। आज आदमी घट कर सामाजिक-उपयोग की वस्तु मात्र रह गया है। क्या हम चलें ?" काउण्ट बोला। "देर हो रही है।"

ल्युसियन ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"मेरी घड़ी बन्द हो गई है," वह बोला। "पिताजी, क्या आप बता सकते हैं, कि अब क्या समय है ?"

"यह पच्चीसवाँ घण्टा है।"

"मैं नहीं समझा," ल्युसियन बोला।

"मैं तुम्हारी इस बात को मान सकता हूँ। कोई नहीं समझना चाहता। यह पच्चीसवाँ घण्टा है—यूरोपीय सभ्यता का 'अब'।"

६६

"अरे बूढ़े, उन्होंने तुझे जर्मनों के हाथ बेच दिया है," जॉन की ओर दाँत किचकिचाते हुए जमादार ने कहा। "पता नहीं तुम्हारी खाल के लिये हंगरीवालों को क्या मिला ? तुम जानते हो कि तुम्हारा मूल्य कुछ विशेष नहीं है। मैं सोचता हूँ कारतूस की पेटी। मैंने सुना है कि जर्मनीवाले नकद दाम नहीं चुकाते। वह बदले में हथियार और गोला-बारूद भेजते हैं। मैं नहीं समझता कि उन्होंने तुम्हारी कीमत कारतूस की एक पेटी से अधिक लगाई होगी। कारतूस की एक पेटी सब चीज के लिए; चमड़ी, हड्डी और मांस सब किसी के लिए।" जमादार ने उसकी पीठ पर एक धप्पा लगाया और हँस पड़ा। "कोई बुरी कीमत

नहीं है। रूसवालों ने इतना मूल्य भी न लगाया होता। मानवों के लिये उनकी कीमतों का स्तर और भी नीचा है।"

जॉन को यह मजाक अच्छा नहीं लगा। लेकिन वह बोला कुछ नहीं। जमादार बुखारैस्ट का एक विद्यार्थी था। उसे भी हंगरी के लोगों ने सीमित-क्षेत्र में कैद कर रखा था और आठ महीने से वे दोनों इकट्ठे किले-बन्दी पर काम कर रहे थे। जॉन जानता था कि विद्यार्थी को चुभती हुई बात कहना अच्छा लगता था किन्तु वह दिल का बुरा नहीं था।

"तो तुम यह नहीं मानते कि तुम बेच दिये गये हो, ओह," विद्यार्थी बोला।

"निश्चय से, नहीं," जॉन ने उत्तर दिया। "आदमियों को कैम्पों अथवा जेलों में कैद किया जा सकता है, उनसे कड़ी मेहनत ली जा सकती है, उन्हें यन्त्रणा दी जा सकती है, उन्हें जान से मार डाला जा सकता है; किन्तु बेचा नहीं जा सकता।"

"लेकिन जो भी हो मारित्ज़, उन्होंने तो तुम्हें बेच दिया है," विद्यार्थी ने कहा। "मैं सारे देवताओं की शपथ खाकर कहता हूँ कि हंगरी के लोगों ने हमें जर्मनों के हाथ बेच दिया है; तुम्हें और हर रूमानिया-वासी को, हर सर्बिया-वासी को और कैम्प में रहनेवाले हर रूथेनिया-वासी को। उन्होंने पचास हजार के लिये एक बिक्री-पत्र तक लिख दिया है।"

विद्यार्थी चला गया। जो कुछ अभी सुना था, उस पर जॉन विचार करने लगा। "वह मुझे चिढ़ा रहा होगा," उसने अपने मन में कहा। "यह बात सत्य नहीं हो सकती।" लेकिन विद्यार्थी के शब्द दिन भर उसके सिर पर मँडराते रहे। उसके मन में यह विचार आता ही था कि जर्मन लोगों ने उसे खरीद लिया है और उसकी कीमत एक

कारतूस की पेटी चुकाई गई है। लेकिन अधिक विचार करने पर उसने निश्चय किया कि इस तरह की बात पर विश्वास करना मूर्खता है।

उनका कैम्प हंगरी और रूमानिया की सीमा पर था। वे खाइयाँ खोद रहे थे और आधे से अधिक काम अभी शेष था। एरिटम—विद्यार्थी—का कहना था कि हंगरी के लोगों को इस क्षेत्र की सुरक्षा का काम समाप्त करने में कम से कम और दस महीने लगेंगे। काम को तेजी से कराने के लिये वे नये-नये कैदी लाते रहे। वे कुछ दागी कैदी भी ले आये। मजदूरों की अत्यधिक कमी थी। यह सब होने पर भी एक दिन उन्हें कूच कर देने का हुक्म मिला। जॉन के कैम्प के जितने रूमानिया-वासी और सर्बिया-वासी थे, सभी एक गाड़ी में बन्द कर दिये और ले जाये गये। अफवाह यह थी कि रूमानिया और सर्बिया के लोगों के काम के ढंग से हंगरी के लोग असन्तुष्ट हैं और उनकी जगह उक्रानिया के लोगों को लाकर काम को जल्दी से ठीक-ठाक कर देना चाहते हैं।

एरिटम का कहना था कि क्योंकि उन्हें बेच दिया गया है इसी लिये वे जर्मनी भेजे जा रहे हैं। कुछ दूसरे रूमानियावासियों ने उसका समर्थन किया। किन्तु अधिकांश ने—जिनमें जॉन भी शामिल था—इस कथन पर अविश्वास किया।

एक दिन प्रातःकाल जब गाड़ी कहीं रुकी, जॉन गाड़ी से बाहर आया। गाड़ी में संडास नहीं थे। सभी को गाड़ी के रुकने तक इन्तजार करना पड़ता था। तब वे जहाँ-तहाँ मेड़ों पर चढ़ बैठते और पहरेदार संतरियों की आँखों के सामने ही फारिग होते। इस बार गाड़ी बिलकुल खुले प्रदेश में रुकी थी। वर्षा हो रही थी। जॉन वापिस आकर एकदम सीधा ट्रेन के अन्दर नहीं गया, वह कुछ देर तक गाड़ी के बाहर ही रहा। अधिक ध्यान से देखने पर उसे मालूम हुआ कि हर डिब्बे पर खड़िया-मट्टी से कुछ लिखा हुआ है। वह पहले डिब्बे के एक दम पास गया। वहाँ जर्मन में लिखा था "हंगरी के मजदूर महान् जर्मन पार्लिमेंट के

साथी मजदूरों को नमस्कार करते हैं।" दूसरे डिब्बे पर लिखा था : "हंगरी के लोग धुरि-शक्तियों की विजय के लिये काम करने आ रहे हैं।" जॉन को भय होने लगा कि वे वास्तव में जर्मनी भेजे जा रहे हैं। अगले डिब्बे की सुर्खी थी : "हंगरी के मजदूर यूरोप में नई व्यवस्था कायम करने के लिये काम कर रहे हैं।" जॉन ने एशिटम को बुलाया और उसे ये सब जय-कारे दिखायें।

"क्या तुम्हें अभी भी विश्वास नहीं हुआ कि हंगरी के लोगों ने हमें जर्मनी के हाथ बेच दिया है?" विद्यार्थी ने पूछा।

"नहीं, मैं विश्वास नहीं करता," जॉन ने कहा। "ऐसी बात पर विश्वास करना असम्भव है।"

"थोड़ा इन्तजार करो, तुम्हें जल्दी ही पता लग जायेगा।"

जॉन ने इन्तजार किया। गाड़ी शाम तक वहीं खड़ी रही। सन्ध्या होने पर सन्तरी खेतों में फैल गये और फूल चुनने लगे। उसने कभी नहीं देखा था कि बन्दूकधारी संतरियों को फूल चुनने की आज्ञा मिली हो। उनके साथ एक अफसर भी फूल चुन रहा था। तब वे अपने-अपने गुच्छे लिये लौट-आये और उन्होंने गाड़ी के हर डिब्बे को हरे पत्तों, शाखाओं और हारों से सजा दिया, मानो किसी शादी के लिये।

उनके यह समाप्त करते करते अँधेरा हो गया। गाड़ी चल दी। जॉन चाहता था कि वह जागता रह कर देखे कि क्या होने जा रहा है। किन्तु, उसे नींद आ गई। इसके बाद जब उसकी आँख खुली तो दिन चढ़ गया था। डिब्बों के दरवाजों को ताला लगा था। बाहर लोगों के आने-जाने का हल्ला सुनाई दे रहा था। गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी थी। अभी तक या तो यह खुले मैदानों में खड़ी होती थी या किसी नगर की सीमा पर। खिड़कियों में से भँप, भँप करते इंजनों और शोर मचाती हुई भीड़ की आवाज सुनाई दे रही थी। जॉन ने अपने कान

खड़े कर लिये । कोई आदमी जोर-जोर से उसके डिब्बे के पास से बोलता हुआ गुजर रहा था, जॉन को उसकी आवाज सुनाई दी ।

"वे जर्मन बोल रहे हैं," उसने कहा । अब उसे विश्वास हो गया कि एरिटम झूठ नहीं बोल रहा था । वे जर्मनों के हाथ बेच दिये गये हैं ।"शायद जर्मनों ने वास्तव में मेरा सब कुछ—हड्डियाँ, माँस और चमड़ी और सभी कुछ कारतूस की एक पेटी के बदले में खरीद लिया है ।"

"हमें जन्म भर के लिए 'गुलाम' बनाकर बेच दिया गया है," एरिटम ने कहा । उसे स्वयं अभी पता लगा था कि वह जर्मन सीमा में पहुँच गये हैं । उसने एक भाषण दिया, जिसे सभी ने सुना । जॉन ने नहीं सुना । उसके दिमाग में एक ही वाक्यांश घर कर गया : 'जीवन भर के लिए गुलाम ।" उसे अपना सारा जीवन कैम्पों में खपता दिखाई दिया—नहरें, खाइयाँ और किलेबन्दी में मेहनत करते हुए, पसीना बहाते हुए, अध-पेट खाते हुए, मार खाते हुए और जुओं के साथ रेंगते हुए ।

तब उसने अपने आपको एक कैम्प में मरते हुए देखा । इस विचार से कि वह एक कैम्प में पड़ा-पड़ा मर जायगा, उसकी आँखों में आँसू आ गये । उसने बहुत से कैदियों को मरते देखा था । उसने उनकी कबरें खोदने में भी मदद की थी । वे मरे, तो उनके कपड़े उतार लिये गये और उन्हें नंगा ही दफनाया गया । "कुत्तों की तरह," उसने सोचा "कुत्तों को गाड़ने से पहले, दस्ताने बनाने के लिये उनकी खाल उतार ली जाती है । कैदियों के कपड़े उतार लिये जाते हैं । जब वे आदमी की चमड़ी के दस्ताने बनाना जान जायेंगे, तो वे आदमी की चमड़ी भी उतार लिया करेंगे । शायद मेरी बारी आने से पहले ही वे आदमी की चमड़ी उतारना आरम्भ कर देंगे ।" वह चौंक पड़ा ।

"वे मुझे चाहें तो जन्म भर कैम्प में रखें," उसने अपने मन में कहा । "लेकिन मरने के ठीक पहले मैं रिहा हुआ चाहता हूँ । मैं मरने

से, यदि केवल एक घण्टा पहले भी हो तो भी, मरने से पहले मुक्त हुआ चाहता हूँ। मैं कैद में मरना नहीं चाहता। कैद में मरना महान् पाप है। लेकिन यदि उन्होंने मुझे जर्मनों के हाथ बेच दिया है, तो मैं कभी रिहा नहीं होऊँगा, मरने के एक घण्टे पहले भी नहीं।"

७०

"दस दिन के अन्दर मुझे बाहर हो जाना चाहिये," एल्योनोरा वेस्ट बोली। "यदि मैं देश से बाहर नहीं हो जाती, तो वे मुझे गिरफ़ार करने के लिये वारण्ट निकाल देंगे। दस दिन का समय अन्तिम सीमा है। कदाचित् यह भी अत्यधिक है।"

उसने ल्युपोल्ड स्टाइन की ओर देखा, जो कि सदा की भाँति उसके सामने आराम-कुर्सी पर बैठा था। अपने आपको इस बात का निश्चय कराने के लिये कि वह अतिशयोक्ति से काम नहीं ले रही है, उसने सारी परिस्थिति को एक बार फिर अपने मन में दोहराया।

गृह-सचिव के शाखा-कार्यालय में यहूदियों के अपना नाम रजिस्टर कराने की अन्तिम तिथि बीत चुकी थी। जो नाम दर्ज नहीं करा सके थे, उन्हें कानून के अनुसार दस वर्ष के लिये जेल भेजा जा सकता था। उसने अपना नाम दर्ज नहीं कराया था। सार्वजनिक-भर्त्सना के बाद सरकारी वकील ने जाँच आरम्भ करा दी थी। उसकी फाइल में ऐसे कागज-पत्र थे, जिनकी उसे जानकारी नहीं थी, लेकिन जिनसे निश्चयात्मक रूप से उसका यहूदी होना सिद्ध होता था। उन कागज-पत्रों से मुक्ति पाने का कोई उपाय न था। दूसरे सभी सामान्य तरीके और जाँच करने-वालों को कुछ दे-दिला कर शान्त रखने के प्रयत्न असफल हुए थे।

"इस बार हम मारे गये," वह बोली। "मुझे संघर्ष छोड़ कर भाग जाना होगा। अब मैं केवल यही कर सकती हूँ। ढाई वर्ष तक मैं हर प्रकार के आक्रमण का मुकाबला करती रही। यह काम आसान नहीं था; तब भी मैं सफल रही। लेकिन भाग्य साहसी लोगों की सदैव रक्षा नहीं करता।"

"लड़ाई में अभी हार नहीं हुई है," स्टाइन बोला। "लेकिन दस दिन का समय बहुत ही थोड़ा समय है। हमें छापाखाना, समाचार-पत्र और घर बेच डालने में कोई कठिनाई नहीं होगी। हमें चीज़ों के लिये सापेक्ष दृष्टि से अच्छी कीमत भी मिल जायगी। फर्नीचर, पुस्तकों और चित्रों के खरीदारों की भी कमी नहीं रहेगी। यह सब मैं कर लूँगा। रुपया समय रहते स्विज़रलैण्ड के किसी बैंक में जमा किया जा सकता है। लेकिन दस दिन के भीतर श्रीमान् कोरुग का नियुक्ति पत्र और पास-पोर्ट प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है।"

"सरकारी-मिशनों के सदस्यगण ही रूमानिया छोड़ सकते हैं," वह बोली। "जैसा मैंने तुम्हें कहा था, जैसे भी हो मेरे पति की नियुक्ति रगुसा की रूमानिया-सांस्कृतिक-इन्सटीचूट के डायरेक्टर के पद पर हो जानी चाहिये। इस नियुक्ति के आधार पर, उसकी पत्नी होने के नाते, मुझे पास-पोर्ट और राजकीय-प्रवेश पत्र मिल जायेंगे। लेकिन यह सब कुछ जल्दी होना चाहिये। सरकारी वकील ने मुझ तक यह सूचना भिजवा दी है कि वह मेरे लिये अधिक से अधिक यही कर सकता है कि दस दिन कार्रवाई रोक रखे। उसके बाद वह किसी भी तरह की जिम्मेदारी सिर पर उठाने के लिये तैयारी नहीं। वह मेरी गिरफ्तारी का वारण्ट जारी करने के लिये मजबूर होगा।"

ल्युपोल्ड स्टाइन को यकायक एल्योनोरा-वेस्ट जेल में पड़ी दिखाई दी। उसने भय-भीत हो इस कल्पना को दूर हटा दिया।

"और तुम्हारे पति को अभी तक इस बारे में कुछ पता नहीं?" उसने पूछा। "यह एक गल्ती है। हर हालत में उसे देर-सबेर पता लगेगा ही। हो सकता है यदि उसे एक घण्टा पहले पता लगे तो वह इसमें हमारी कुछ मदद कर सके। वह क्या कहेगा जब उसके सामने एक नियुक्ति-पत्र और एक पास-पोर्ट पहुँचेगा, जिसके लिये उसने कभी प्रार्थना-पत्र तक नहीं भेजा।"

"अभी उसे बताने का मुझे साहस नहीं हुआ," वह बोली। "मैं जानती हूँ कि जिस बात को दो सप्ताह के अन्दर सभी जान जायेंगे, उसे छिपाये रखने में कोई सार नहीं। वह जल्दी पता पा ही जायगा कि मैं यहूदी हूँ। लेकिन मैं अभी उसे यह बात बताने का साहस नहीं रखती। मैं छितरा गई हूँ। मैं अब और उथल-पुथल के लिए तैयार नहीं हूँ। मुझमें अब और कोई प्रयत्न करने की शक्ति नहीं बची है, और पिछले दो वर्ष तक जिस एक बात को मैं उससे छिपाये रही हूँ, उसे प्रकट करने के लिये महान् प्रयत्न की आवश्यकता है। मुझ पर बहुत समय से दबाव पड़ रहा है, और यह दबाव बहुत ज्यादा है। मैं थककर चूर हो गई हूँ, चूर हो गई हूँ, चूर हो गई हूँ।"

उसका हाथ उसके सिर पर था और कोहनी डैस्क पर। वह वास्तव में क्लान्त प्रतीत होती थी। बूढ़ा दया से विचलित हो उठा। किन्तु वह उसके लिये कर कुछ न सकता था। उसने अपना चिट्ठियों का बक्स खोला, ताकि उसे उसकी ओर देखना न पड़े। हाथों में सिर गड़ाये हुए, उस भग्न-मनोरथ स्त्री की ओर देखते रहना उसके लिए असम्भव था। उसकी चिट्ठी-पत्री के बक्से में एल्योनोरा के घर, जायदाद, छापे-खाने और समाचार-पत्र के बिक्री-पत्रों के साथ चमड़े का एक बैग था, जिस पर त्रायन का हस्ताक्षर सुनहरी अक्षरों में खुदा हुआ था। उसने इसे निकाला और उसके आगे रख दिया। नोरा ने इसकी ओर देखा और उसे हाथ में ले लिया।

"कल तुम्हारी शादी का दूसरा वर्ष है," वह बोला। "मैं जानता हूँ कि तुम दूसरी-दूसरी बातों में इतनी अधिक व्यस्त रही हो कि तुम्हें अपने पति के लिए कोई चीज खरीदने का अवकाश ही नहीं मिला। मैं उसके लिये यह एक बैग ले आया हूँ। मैं जानता हूँ कि यह उसे अच्छा लगेगा : इस पर बहुत सुन्दर काम हुआ है।"

"तो कल मेरे विवाह का दूसरा वर्ष है," वह बोली। "मैं तो इसे सर्वथा भूल गई थी। श्रीमान् स्टाइन, तुम्हें धन्यवाद है। तुमने मेरे बजाय याद रखा। मैं जानती हूँ, त्रायन को इससे खुशी होगी।"

उसने बैग की ओर देखा और धीरे से उसपर अपना हाथ फेरा।

"मैं नहीं जानती कि मैं त्रायन को यह बात बताती क्यों नहीं। शायद इसी लिये कि मैं उसे बहुत अधिक प्यार करती हूं। मैं जानती हूँ कि यदि उसे यह बात मालूम हो जाय तो वह मेरी मदद करेगा। लेकिन मैं उसे कहूँगी नहीं। मैं उसके खोजने से बहुत अधिक डरती हूँ। मैं जानती हूँ कि यह केवल बेहूदगी है, भय यकायक मुझ पर सवार हो जाता है, और मैं अपने भयानक रहस्य को अपने तक ही सीमित रखती हूँ। त्रायन ही मुझे जीवित रखे है। यदि मैं उसे गँवा बैठी, तो मैंने अपने आप को ही गँवा दिया।"

अकस्मात् उसने बैग रख दिया और बोली :—

"तुम्हें मालूम है कि सरकारी वकील ने मुझे क्या कहा? उसने बताया कि मैं अविवाहित हूँ।" उसका स्वर काँप रहा था। "और उसका कहना एकदम यथार्थ है। मैंने विवाह उस समय किया जब रूमानियावालों के साथ यहूदियों के विवाह-निषेध का कानून लागू हो गया था। कानून की घोषणा अप्रैल के महीने में हो गई थी। मेरा विवाह दो महीने बाद हुआ। कानूनी दृष्टि से मेरा विवाह अप्रमाणित है। उस तिथि के बाद ईसाइयों और यहूदियों के बीच हुए सभी विवाह—चाहे ज्ञान में हुए हों चाहे अज्ञान में—स्वयं अप्रमाणित घोषित हो जाते हैं।"

वह मौन थी। अभी भी उसके कानों में सरकारी वकील के शब्द गूँज रहे थे। "श्री आयन कोरग तुम्हारे पति नहीं हैं। इस समय के लागू कानून के अनुसार वह अविवाहित है। तुम्हारा विवाह का प्रमाण-पत्र निकम्मा हो गया है। श्री आयन किसी भी समय जाकर किसी भी दूसरी स्त्री से शादी कर सकते हैं। उनपर द्वि-पत्नित्व का दोषारोपण नहीं हो सकता। यदि तुम किसी बच्चे को जन्म दो तो वह 'नाजायज' माना जायगा, और वह केवल 'वैस्ट' नाम धारण करेगा, कोरग नहीं। जब भी तुम एल्योनोरा कोरग हस्ताक्षर करती हो, तुम हर बार 'जालसाजी' करती हो। तुम केवल कुमारी एल्योनोरा वैस्ट हो।"

"कुछ भी खर्च करो, मि० स्टाइन" वह बोली। "जितनी भी जल्दी सम्भव हो, हमारे पास पास-पोर्ट और प्रवेश-पत्र आ जाने चाहिये—श्रीमान् कोरग और श्रीमती कोरग के पास-पोर्ट।"

७१

पाँच दिन बाद ल्युपोल्ड स्टाइन आयन के नियुक्ति-पत्र और लाल चमड़े की जिल्द के दो पास-पोर्टों के साथ लौट आया।

"इस बार भी, श्रीमती कोरग, हमने बाजी मार ली," वह प्रसन्नता-पूर्वक बोला। "वी-आना तक सोने की गाड़ी में तुम्हारा स्थान सुरक्षित है। तुम सोमवार को विदा हो रही हो। मुझे प्रसन्नता है कि तुम सोमवार के दिन जा सक रही हो।"

वह अपने चश्मे को साफ कर रहा था। एल्योनोरा ने जो अभी तक अपने पास-पोर्टों को ही देख रही थी, ऊपर नजर उठाई। उसे लगा कि जैसे बूढ़ा बहुत दुबला गया है। वह उसे पूछना चाहती थी कि क्या वह भी साथ नहीं चलेगा, किन्तु वह बोला।—

"मैं नहीं जानता कि हम फिर कभी मिलेंगे अथवा नहीं। आज ही रात चार हजार यहूदियों को त्रान्सद्निस्त्रिया भेजा गया है। मैं प्रसन्न हूँ कि तुम जा रही हो। यदि तुम कभी वापिस आओ तो तुम्हें बुखारैस्ट में एक भी यहूदी नहीं मिलेगा। मैं यहाँ नहीं होऊँगा। बूढ़े आदमी कैम्पों में बहुत दिन नहीं बने रहते।"

७२

त्रायन अपने अध्ययन-कक्ष में था। काम करते समय नोरा कभी आकर बाधक नहीं बनती थी। लेकिन आज वह पास-पोर्ट लिये सीधी चली आई। त्रायन अपने डैस्क पर दोनों हाथों में सिर लिये ध्यान-मग्न था।

"मैं अपने विवाह के दूसरे वर्ष के उपलक्ष में एक भेंट लाई हूँ," वह बोली। "मैं तुम्हें रगुसा की रूमानिया सांस्कृतिक इन्स्टीचूट के डायरेक्टर के पद पर नियुक्त करा सकी हूँ।"

उसने नियुक्ति-पत्र उसके हाथ में थमा दिया और बोली—

"डाल्मातियाँ-तट संसार के सुन्दरतम स्थानों में से एक है। तुम वहाँ शान्ति-पूर्वक अपना काम जारी रख सकोगे।"

"तुमने यह सब स्वयं अपने से ही कब और कैसे कर लिया?" उसने पूछा। "तुम इस सारी बात को इस तरह छिपाये कैसे रख सकी?"

त्रायन ने उसे चूम लिया।

"नोरा, तुम अद्भुत हो।" वह बोला, और बोलता गया "काश तुम जानती कि मैं इस नियुक्ति से कितना प्रसन्न हुआ हूँ। मुझे अपना उपन्यास जारी रखने के लिये जल-वायु के परिवर्तन की नितान्त आव-

श्यकता थी। मुझे लग रहा था कि मैं अगला परिच्छेद यहाँ नहीं लिख सकता। मुझे लगता है कि सारी पुस्तक में यहीं सबसे जोरदार परिच्छेद होगा।"

एल्योनोरा ने उसका मुँह चूम लिया ताकि वह उसे अगले परिच्छेद की बात कहने से रोक सके। उसे डर लगता था कि न जाने उसे क्या सुनना पड़े।

तृतीय खण्ड

७३

"हमें आज्ञा मिली है कि हम तुमसे हलका काम लें," फैक्टरी का अफसर बोला। "तुम्हारा नाम अभी भी बीमारों की सूची में है। वे बीच-बीच में बीमार आदमियों की सूची भेजते रहते हैं।"

उसने जॉन को घृणा भरी दृष्टि से देखा। लेकिन जब उसकी नजर हाथ में लिये उसके कागजों पर पड़ी, तो उसकी दृष्टि सन्देह की दृष्टि हो गई। जर्मनी के दो वर्ष के निवास-काल में जॉन लोगों की ऐसी ही सन्देह भरी दृष्टि से अनेक बार परिचित हो चुका था। जिन अपराधों को उसने कभी नहीं किया था, किन्तु जिन्हें वह अब कभी न कभी कर सकता था, उसे उन अपराधों का दोषी समझा जाता था।

"हंगरी-निवासी ?" सरकारी अफसर ने पूछा। "मेरे पास पहले भी हंगरी-निवासी रहे हैं। वह अत्यन्त असन्तोषजनक थे। शायद तुम वैसे न सिद्ध हो।" उसने व्यंगपूर्ण हंसी हँसी और फिर जोर-जोर से पढ़ने लगा :—

"मारित्ज, जानो, हंगरी-निवासी, बत्तीस, सामान्य मजदूर, जर्मनी में आगमन २१ जून, १६४१।" पिछले दो वर्ष में जॉन यह समझने लगा था कि वह हंगरी का ही नागरिक है, क्योंकि कागज-पत्रों में वैसा लिखा है। जिस समय सरकारी अफसर उन फैक्टरियों की सूची पढ़

रहा था, जिनमें जॉन ने काम किया था, और महान् जर्मन पार्लिमेंट के उन कैम्पों की सूची बाँच रहा था, जहाँ वह आज तक रहा था, तो जॉन अफसर की हर हरकत का अध्ययन कर रहा था। यह एक लम्बी सूची थी। सभी प्रकार के उद्योग-धन्धों का प्रतिनिधित्व हुआ था। उसे इतनी जगहों पर रह आने का अभिमान था। उसने एक बार अपनी कल्पना की दृष्टि उन सभी कैम्पों पर दौड़ाई जहाँ वह बिजली के तारों के पीछे रहा था, सभी फैक्टरियों पर, नगरों पर और अपने कष्टों पर। उसे आशा थी कि सरकारी अफसर उसकी वीरता की प्रशंसा करेगा कि अंत में उसके पास आने से पहले उसने कैसी-कैसी कठिनाइयों का वीरतापूर्वक सामना किया है। लेकिन अफसर की आँखें उन स्थानों पर, जहाँ रहकर जॉन ने इतना कष्ट पाया था, उपेक्षा-पूर्ण भाव से घूम गईं और अन्तिम जगह पर जा कर रुकीं : ८—३—४३।" विदेशी मजदूरों के ७०७ नं० के जेनरल हास्पिटल से मुक्त। जॉन को आश्चर्य था कि कोई भी उसकी यातनाओं की सूची पढ़कर बिना द्रवित हुए कैसे रह सकता है? लेकिन सरकारी-अफ़सर को जैसे भावुकता छू तक नहीं गई थी। उसने अपनी पेंसिल निकाली और कागज के नीचे एक कोने में, जहाँ अभी भी कुछ जगह थी, लिखा १०–३–४३ नॉफ एण्ड सोहन बटन फैक्टरी में काम करने के लिये आदेश दिया गया" तब उसने उसी तरह के कार्डों के ढेर में उस कार्ड को डालकर एक दराज में बन्द कर दिया और जॉन की ओर देख कर बोला :—

"नियम-पालन, आज्ञा-पालन, काम और योग्यता," विदेशी मजदूरों के लिये हमारा यही आदर्श-वाक्य है। इस कारखाने में जर्मन मजदूर भी हैं—लड़कियाँ। मुझे तुम्हें यह बात बता देनी चाहिये कि उनसे दोस्ती बढ़ाने का सन्देह होने पर भी कम से कम पाँच वर्ष की सजा हो सकती है। इस मामले में हमारा डायरैक्टर बड़ा ही निष्ठुर है। याद रखो कि हर जर्मन स्त्री की छाती में तुम्हारे लिये पाँच वर्ष की सजा

छिपी हुई है। यदि तुम उसका स्पर्श मात्र भी करोगे तो तुम्हें यही मिलने-वाला है। मत समझ बैठना कि उससे तुम्हें इसके अतिरिक्त कुछ और मिलनेवाला है। तुम्हारा हंगरी-वासी पूर्वज इस समय जेल में है। जैसे मैंने तुम्हें सावधान किया है, वैसे ही मैंने उसे भी सावधान कर दिया था, किन्तु उसने इधर ध्यान नहीं दिया। मैं समझता हूँ, उसने सोचा होगा कि क्योंकि अँधेरा है और क्योंकि वह एक स्त्री के साथ कम्बल में छिपा हुआ है, इसलिये वह बच निकलेगा। लेकिन जर्मन साम्राज्य में तुम्हारी हर हरकत पर नजर रखी जाती है—कम्बल के भीतर होने-वाली बातों पर भी। तुम कोई काम ऐसा नहीं कर सकते जिसकी हमें तुरन्त खबर न लग जाय। हम तुम्हारे विचारों का ही पता लगा ले सकते हैं। हम दिन में कम से कम दस बार तुम्हारे दिमाग के हर विचार का फोटो लेते हैं। अब दूसरी बात · हम इस समय युद्ध-सामग्री पैदा करने में लगे हैं। जो कुछ भी तुम यहाँ देखो, सुनो वह सब सैनिक रहस्य है। विदेशी मजदूर को यह मालूम नहीं होना चाहिये कि इस कारखाने में क्या बनता है, कितना बनता है और कैसे बनता है। यदि तुम मालूम करने की कोशिश करोगे तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा। गत जनवरी महीने में एक इटली-वासी का सिर काट दिया गया था। इस समय एक जैकोस्लोवेकिया-वासी पर मुकद्दमा चल रहा है'। उन्होंने नॉफ एण्ड सोहन फैक्टरी के रहस्य मालूम करने का प्रयत्न किया था।"

सरकारी अफसर खड़ा हो गया और दरवाजे की ओर बढ़ा। जॉन पीछे-पीछे चलता गया।

"आज तक जितने हंगरी-वासी यहाँ रहे, मैं किसी से संतुष्ट नहीं रहा," अफसर बोला। "वे सभी अब जेल में हैं। उनमें से एक को बीस वर्ष की कड़ी कैद की सजा हो गई है। वह काम में बाधा पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा था। हमें आशा करनी चाहिये कि तुम एक अपवाद सिद्ध होगे—इसका यह मतलब नहीं कि मुझे अपवादों में विश्वास है।"

अफसर एक पेटी के सामने जाकर खड़ा हो गया था, जो बक्से ढो ढोकर ला रही थी। पेटी के सिरे पर एक आदमी उन बक्सों को उठा-उठा कर अपने पास खड़ी एक छोटी ठेला-गाड़ी में रख रहा था। जैसे ही अफसर आगे बढ़ा, छोटी ठेला-गाड़ी बक्सों का भार लिये आगे चली जा रही थी। उसकी जगह एक दूसरी खाली ठेला-गाड़ी आकर खड़ी हो गई। ऐसा लगता था कि मजदूर को इसका पता ही नहीं लगा। वह पहले ही की तरह पेटी पर से बक्से उतार-उतार कर ठेला-गाड़ी पर जमाता रहा। यह स्पष्ट ही था कि बक्से भारी थे।

"कल से यही काम तुम्हें करना होगा," अफसर ने कहा। "यह बहुत सरल है। जैसे ही कारखाने में से बक्से बाहर आते हैं, तुम्हारा काम उन्हें उठा-उठा कर ठेला-गाड़ी पर रखना है, जो उन्हें गोदाम पहुँचा देती है। पहला नियम है योग्यतापूर्वक काम करो। क्या तुमने पहले कभी किसी कारखाने में काम किया है?"

जॉन ने देखा कि मजदूर एक मशीन की तरह नीचे झुका है, मशीन की तरह उसने अपने बाजू कड़े किये हैं और मशीन की तरह उस बटनों की पेटी को उठाकर ठेला-गाड़ी पर रख दिया है। उसका इस बात पर तनिक ध्यान नहीं था कि वह क्या कर रहा है। न किसी और ही बात पर। वह अपने आसपास खड़े हुए आदमियों तक की बात नहीं सोच रहा था। ऐसा लगता था कि शायद वह उनकी ओर से सर्वथा बे-खबर है।

"मशीनें कार्यक्षमता में किसी प्रकार की कमी सहन नहीं कर सकतीं," सरकारी अफसर बोला। "वे मानवी गड़बड़ी, आलस्य अथवा प्रमाद सहन नहीं कर सकतीं।"

जॉन ने अफसर की ओर देखा।

"तुम्हें कोई और बात सोचते रहने की आज्ञा नहीं है। यदि तुम

सोचोगे तो तुम्हें मशीन वहीं दण्ड देगी और बाद में हम तुम्हें देंगे। तुम्हें अपना सारा ध्यान अपने साथी-मजदूर में केन्द्रित करना होगा, मशीन-मजदूर में जो बक्से ला लाकर तुम तक पहुँचा देता है। तुम्हें केवल झुकना होगा, उसके हाथों से बक्सा ले लेना होगा और ठेला-गाड़ी पर रख देना होगा।" अफसर हँस रहा था। जॉन ने अपने मशीन-साथी के बाजू देखने चाहे, लेकिन उसे वे कहीं नहीं दिखाई दिये। उसकी आँखें वापिस अफसर को देखने लगीं। वह अभी भी मुस्करा रहा था।

"यन्त्र-रूप मनुष्य मनुष्य के अनुसार नहीं चल सकता। इसलिये यह काम तुम्हारा ही है कि उसके साथ अपना मेल बैठाओ। यही होना भी चाहिये," वह बोला। "क्योंकि वह आदर्श मजदूर है। केवल मशीनें ही आदर्श मजदूर बन सकती हैं। हमें उनका अध्ययन करना चाहिये और उनसे काम करना सीखना चाहिये। जब तुम पूर्णरूप से उनकी नकल कर सकोगे, तभी तुम प्रथम दर्जे के मजदूर होगे। इसका यह मतलब नहीं कि तुम कभी भी एक प्रथम दर्जे के मजदूर हो जाओगे। तुम हंगरी-निवासी की आँख मशीन के लिये नहीं है, वह केवल औरतों की ओर निहारते रहने के लिये ही है।"

जॉन उसे यह बताना चाहता था कि वह हंगरी का रहनेवाला नहीं है, किन्तु रूमानिया का है। वह उसे बुडा-पैस्ट के अपने जेल-जीवन और प्रश्नोत्तरी की सारी कथा सुना देना चाहता था, किन्तु अफसर उस मशीन के सम्मुख जो चुपचाप, नियम से सफेद-सफेद बक्सों को लाकर सामने रख रही थी, मन्त्र-मुग्ध खड़ा था। उधर से जब उसकी आँखें जॉन की ओर घूमीं तो उनमें घृणा भरी थी। अफसर की आँखों की घृणा से उसे वैसी ही चोट लगी जैसे किसी ने घूँसा मारा हो। इन्सपेक्टर वरगा का उसका अनुभव ओठों में ही रह गया।

"आदमी घटिया दर्जे के मजदूर होते हैं," अफसर बोला। "खास

तौर पर पूर्व के आदमी। वे मशीनों से घटिया होते हैं। और तुम केवल एक आदमी ही नहीं हो, तुम एक खरीदे गये पूर्वीय यूरोपियन हो—हंगरी-निवासी हो। मानो यह अपर्याप्त हो; तुम अभी तुरन्त हास्पिटल से निकल कर आये हो। तुम एक अशक्त प्राणी हो, बस तुम इतना ही कुछ हो।"

जॉन को यह स्पष्ट भास रहा था कि अफसर तकलीफ अनुभव कर रहा है। वह उसे यह यकीन दिलाने जा रहा था कि वह भरसक अच्छी तरह काम करने की कोशिश करेगा।

"तुम एक मशीन के निकट खड़े होने का दुस्साहस कैसे कर सकते हो? जरा अपनी ओर देखो।" अफसर ने उसे सिर से पाँव तक देखा। "यह मशीनों का अपमान है। हमें उन्हें ऐसे दरिद्र सहायक नहीं देने चाहिये। यह उन्हें अपवित्र करना है। मेरे पीछे-पीछे आओ। मैं तुम्हें तुम्हारा थैला देता हूँ। तुम फैक्टरी में केवल फैक्टरी के कपड़े पहन कर ही आ सकते हो। जैसे गिरजे में कोई पादरी अपना चोगा पहनता है, ठीक उसी तरह से उन्हें पहनना होता है। लेकिन, मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारे बूते से परे की बात है। तुम हंगरी-निवासी किसी फैक्टरी में स्त्री के अतिरिक्त और किसी चीज की ओर नहीं देखते। बर्बर कहीं के, सारे के सारे।"

७४

अगले दिन प्रातःकाल चार बजे जॉन अकेला ओसारे में आया और जिस ठेला-गाड़ी का पहले दिन अफसर ने निर्देश किया था, उसके पास पहुँचा। काम आरम्भ होने को अभी पाँच मिनट बाकी थे। वह उद्विग्न था। वह सिर से पाँव तक नीले चोगे से ढका था। जिस समय

उसने सीमेंट का फर्श पार किया तो उसके पाँव के खड़ाऊँ ऐसे खट-खट बजते थे, जैसे किसी हथौड़े की चोटें हों। उसने पंजों के बल चलने की कोशिश की, ताकि वह अकेला ही इतनी भयानक आवाज न करे; किन्तु इससे कोई अन्तर नहीं पड़ा। जब वह अभी आधे में था, किसी ने उसे आवाज़ दी। यद्यपि उसने अपना नाम नहीं सुना था, किन्तु जॉन जान गया था कि वह उसे ही बुला रहा है। उसे इसका पक्का विश्वास था। उसने घूम कर देखा। ठीक उसी समय दुबारा आवाज आई। उसने स्पष्ट सुना :—

"साल्व, स्कलव†"

एक छोटी सीखचोंवाली खिड़की के पीछे से काले बालों का गुच्छा और गहरी काली आँखें लिये एक चेहरा दिखाई दिया। सफेद दाँत चमक रहे थे। यह एक तरुण का चेहरा था, जिसका बदन ढाँचा मात्र रह गया था। आँखें एक दम लाल। उसका शेष बदन अदृश्य था। जब उनकी आँखें चार हुईं, पुराने परिचित की भांति वह चिल्लाया :—

"साल्व, स्कलव।"

जॉन ने समझा कि उस तरुण ने उसको साल्व, स्कलव नाम का कोई दूसरा आदमी समझ लिया है। इसलिये उसने कहा—"मेरा नाम जॉनोस् मारित्ज़ है।" फैक्टरी का भोंपू बजा। मशीनें चालू हो गईं। जॉन उस ठेला-गाड़ी के पीछे अपनी ड्यूटी पर जा डटा। कुछ और देर तक खिड़की के उस ओर, वह काले बालोंवाला तरुण, जॉन की ओर देख-देख कर हँसता दिखाई दिया। जॉन ने जो कुछ कहा, वह उसने सुन लिया था, किन्तु अदृश्य होने से पहले वह एक बार फिर सीधा जॉन की ओर देखकर चिल्लाया :

"साल्व, स्कलव !"

---

†गुलाम ! स्वागत है।

जॉन ने उस चलती हुई पेटी पर से कुछ बक्से उठाये और उन्हें खाली ठेला-गाड़ी पर जमा दिया। यदि बक्स भारी न होते तो एक सात वर्ष का लड़का यह काम कर सकता था। वह जानता था कि बक्सों में बटन हैं। वह उन्हें एक नजर देख लेना पसन्द करता। बक्स मेखों से जड़े थे। लेकिन, यदि वे खुले भी होते तो भी वह ढक्कन उठाकर भीतर झाँकने का साहस नहीं कर सकता था। "जनवरी में एक इटली-वासी का सिर काट दिया गया था। अब एक जैकोस्लोवेकिया-वासी पर मुकद्दमा चल रहा है।"

उस समय उसने उस जैक का मानसिक-चित्र खींचा—वह जजों के सामने खड़ा है, और नॉफ एण्ड सॉन की बटन-फैक्टरी के रहस्यों का पता लगाने का प्रयत्न करने के लिये क्षमा-प्रार्थी है। तब उसे उस इटली निवासी की याद आई जिसका सिर काट दिया गया था। उसकी बहुत से इटली-निवासियों से भेंट हुई थी। वे सभी प्रसन्न-चित्त और प्रसन्न-वदन थे। इसलिये, उसने कल्पना की, कि जिसका सिर काटा गया है, वह भी प्रसन्न-चित्त और प्रसन्न-वदन होगा। उसने कटे हुए सिर की कल्पना की, जिस पर सुन्दर काली मूछें थीं, और जो हत्यारे के पैरों में लुढ़कता हुआ भी, अभी तक मुस्करा रहा था।

उसने दृढ़ प्रतिज्ञा की कि वह किसी भी हालत में बटनों की ओर नहीं देखेगा। यदि अचानक कहीं बक्स टूट भी जाय, तब भी नहीं। उसने तय किया कि ये बटन सैनिक वर्दियों के लिये ही होंगे। जब उसने लकड़ी के बक्स को उठाकर खाली ठेले पर रखा, वह फिर सोचने लगा कि इसके अन्दर कैसे बटन होंगे। इस बीच उसने इस ओर भी ध्यान नहीं दिया कि भरा हुआ ठेला चला गया है। वह सोचने लगा—इसमें जल-सेना, स्थल-सेना और वायु-सेना के लिये बटन होंगे। कुछ पर सुनहरी मुलम्मा होगा, कुछ काले रंग के और कुछ का वर्दी के रंग से मेल खाता होगा। वह यह विश्वास करना चाहता

था कि जो बक्से उसके हाथ में से गुज़र रहे हैं उनमें सुनहरी मुलम्मे के बटन हैं। वे ही सोने के सिक्कों की तरह सर्वाधिक सुन्दर हैं। नाविक लोग अपनी वर्दी पर वैसे ही बटन लगाते हैं। शायद उसके बक्सों के बटन जल-सेना के ही लिये हों।

अचानक उसके दिमाग में अफ़सर की बात बिजली की तरह कौंध गई : "हम तुम्हारे विचार ही जान सकते हैं। हम तुम्हारे हर ख्याल का फ़ोटो लेते हैं।" उसने अपने आपको जैसे-तैसे बक्सों में पड़े बटनों की बात सोचने से रोका। यह एक रहस्य था और उसकी इच्छा किसी रहस्य का पता लगाने की नहीं थी।

थोड़ी ही देर बाद उसने अपने आपको यह सोचते पाया कि आखिर जर्मन लोग इतने फ़ौजी-बटनों का क्या करेंगे। जितने सिपाहियों और उनके अफ़सरों को उसने अभी तक देखा था, उन सब के छोटे और बड़े कोटों पर बटन थे। इसलिये जो बटन बनाये जा रहे थे, वे नई वर्दियों के लिये ही होंगे। उसने उन बक्सों की ओर देखा जो एक स्रोत की तरह उसकी ओर बढ़े चले आ रहे थे और कहा : "इनमें लाखों बटन होंगे। सारी जर्मन सेना के लिये पर्याप्त। शायद ऐसी आज्ञा निकली है कि सभी सैनिकों को नई वर्दियाँ दी जायँ। यही कारण है कि इतने बटन बनाये जा रहे हैं।"

उसे सूझा कि ये नई वर्दियाँ युद्ध की समाप्ति पर होनेवाली विजय-परेड के लिये होंगी, जिस समय आदमी गाजे-बाजे के साथ, झण्डे लहराते हुए, बाजारों में निकलेंगे। "सभी सैनिक सूर्य की तरह चमकते हुए सुनहरी बटन लगायेंगे।" वह मुस्कराया और उसने अपनी भी कल्पना की कि वह भी उस मार्च में शामिल है और उसे इस बात का अभिमान है कि सैनिक और अफ़सरों तक के ही कोटों पर नहीं, किन्तु जरनैलों के कोटों पर भी जो बटन लगे हैं, वे उसी के हाथ में से गुजरे हैं! "हो सकता है कि ठीक यही बटन जो इस समय मेरे हाथ में हैं,"

उसने अपने आप को कहा, "एक जरनैल की वर्दी में सिये जायँ। और सभी जरनैलों के कोटों और वर्दियों में इसी बक्से के बटन लगेंगे। हो सकता है कि यह सारा बक्स किसी एक ही जरनैल के लिए अपेक्षित हो।"

जॉन अपने विचारों में इतना मग्न था कि वह अपने सामने आये बक्से को उठाना भूल गया। बक्स लानेवाली पट्टी ने पहले एक धक्का दिया, किन्तु फिर बक्सों को जमीन पर दे मारा। वह इसे उठाने के लिये दौड़ा। इस बीच दूसरा बक्स चला आया था, और उसे लेने के लिये वह वहाँ नहीं था। जमीन पर धड़ाम से गिरते हुए, इसने पहले से भी अधिक आवाज की। पहले बक्स को उठाकर वह बगल में ले चुका था, अब उसने इस दूसरे बक्से को भी लेने की कोशिश की। लेकिन इसी समय एक तीसरा आकर उसकी पीठ में लगा। भय के मारे उसने पहले दोनों बक्से गिरा दिये। इससे पहले उसे ऐसे भय का अनुभव नहीं हुआ था। इतने में गड़गड़ा कर चौथा बक्सा आ गया, तब पाँचवाँ। वह प्लेटफार्म पर वापिस अपनी जगह जा पहुँचा। जो बक्से आ चुके थे, उन्हें छोड़ उसने उन बक्सों को ठेले पर रखना आरम्भ किया जो इस समय आ रहे थे। उसने मशीन की ओर बड़ी प्रार्थना-भरी दृष्टि से देखा, उस पेटी की ओर कि वह तब तक के लिये रुक जाय जब तक वह अपने गिरे हुए बक्सों को न उठा ले। लेकिन एक के बाद दूसरे बक्से आते ही रहे। उसने घबराकर इधर-उधर देखा। उसे भय था कि वह दण्डित होगा। लेकिन आस-पास कोई भी उसकी खबर लेने-वाला न था।

दोपहर को मशीन रुक गई। उस समय तक वह पकड़े जाने के डर के मारे काँप रहा था। वह प्लेट फार्म से उतरा, बिखरे हुए बक्सों को उठाया और उन्हें ठेले पर रख दिया। उसे खुशी थी कि किसी को कभी पता नहीं लगेगा कि उससे कुछ गलती हुई थी।

लेकिन ठेला, जो अपने आप ही चालू हो गया था, अब बाकी

सारी मशीन के साथ स्थिर खड़ा था। उस पर पाँच बक्से लदे थे। उसने उसे आगे धकेलने की सोची, लेकिन देखा कि ठेला नहीं धकेला जा सकता। यह केवल अपने आप ही चलता था। तब उसे ख्याल आया कि वह उन बक्सों को उठाकर गोदाम में पहुँचा आये। लेकिन उसने देखा कि वह दीवार में बने उस दरवाजे में से नहीं गुजर सकता जो खास तौर से ठेला गुजारने के लिये बनाया गया था। इसलिये वह अपनी दोनों बगलों में एक-एक बक्सा दबाये खड़ा रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। अपने पीछे उसे आवाज सुनाई दी। उसने बक्सों को ट्रक पर रख दिया और पीछे घूम कर शंकित नेत्रों से देखा।

लोहे की सलाखोंवाली छोटी खिड़की के पीछे वही काले बालों वाला दुबला-पतला चेहरा फिर प्रकट हुआ था। जिस तरुण ने सुबह जॉन का स्वागत किया था, वह फिर आँखों में मैत्री की चमक लिये, जॉन की ओर देख रहा था। वह फिर बोला—

"साल्व, स्कलब।"

जॉन अपने बक्सों और गलतियों की बात भूल गया। वह भी मुस्कराया।

"मेरा यह नाम नहीं है। मेरा नाम जॉनोस मारित्ज़ है। तुम मुझे कोई दूसरा आदमी समझ रहे होगे।"

तरुण के ओठों ने एक दूसरे से पृथक् होकर उसके सफेद दाँतों को प्रकट कर दिया। वह प्रसन्नतापूर्वक हँसा। तब वह आखरी बार बोलकर खिड़की के पीछे अदृश्य हो गया—

"साल्व, स्कलब।"

जॉन खाना खाने गया। वह सोचता गया कि इस 'साल्व, स्कलब' में और उसमें कुछ बहुत ही अधिक शक्क का मेल-जोल होगा। वह देखता था कि उसके यह बता देने पर भी कि उसका नाम मारित्ज़ है,

यह काले बालोंवाला तरुण उसे 'स्कलव' ही कहता चला जा रहा है।

कुछ समय में जॉन को यह पता लग गया कि वह तरुण सभी विदेशी मजदूरों को 'स्कलव, स्कलव' कह कर पुकारता है। वह फ्रांस का वासी है और अपने को भी 'स्कलव' कहता है। जॉन ने यह पता लगा लिया कि उसका वास्तविक नाम जॉसफ है।

७५

जॉन बटनों के उस कारखाने में पाँच महीने तक काम करता रहा किन्तु उस पहले दिन के बाद उसने फिर कभी कोई एक भी बक्स नहीं गिराया। जैसे ही बक्स आता, वह उसे ठेले पर रख देता। उसकी ओर वह ताकता तक नहीं था। अब वह न बक्से के अन्दर के बटनों की बात सोचता, न उन जरनैलों की जो उन्हें पहनेंगे, न उन सैनिकों की जो उन नई वर्दियों को पहन कर बाजारों में परेड करेंगे, जिन पर वे चमकदार बटन लगे होंगे; जो उन बक्सों में रखे रहे हैं, जिन्हें उसने अपने हाथों से ढोया है।

उसने विचार करना ही बन्द कर दिया था। उसे दिवा-स्वप्न भी नहीं आता था, उस हँसते हुए इटली-वासी के सिर का भी नहीं, जो सिर हत्यारे के पाँव पर लोटा। जब तक उसे उस जैक के बारे में जिज्ञासा हुई थी, जिस पर उसके फैक्टरी में आने के समय मुकद्दमा चल रहा था। वह जानना चाहता था कि जैक छूट गया अथवा दण्डित हो गया। लेकिन यह सब आरम्भ में था। अब उसे इसकी भी परवाह न थी। सुबह जब वह काम पर आता तो वह फ्रांसीसी खिड़की पर आता और चिल्लाता :

"साल्व, स्कलव !"

और जॉन भी बदले में कह देता—"साल्व, स्कलव !" उसे इसकी चिन्ता नहीं थी कि वह क्या कह रहा है। वह बिना जाने ही फ्रांसीसी की ओर देखकर मुस्करा देता। तब वह प्लेट-फार्म पर बैठ जाता और बटन के बक्सों की प्रतीक्षा करता। एक बार उसने दो बक्सों को एक साथ उठाकर ठेले पर रखकर काम को कुछ सरल बनाने की कोशिश की थी। लेकिन बक्से लानेवाली पेटी ने इसकी अनुज्ञा नहीं दी। जर्जीर बक्से के एक कोने से लटक आई और दाँतों से ऐसी चीत्कार की आवाज आई मानो उसे फाड़ खायेंगे। इससे उसकी सारी देह रेंगने लग गई थी। उसे ऐसा लगा मानो उसके दाँत जड़ से उखाड़ दिये गये हों। इसके बाद उसने फिर कभी यह तजर्बा नहीं दोहराया। मशीन इसे नहीं चाहती थी, और वह मशीन की इच्छा के अनुसार चलने के लिये मजबूर था। अब, यदि वह पाँच बक्से भी एक साथ उठा सकता तब भी एक ही उठाता। वह मशीन के सुर-ताल का ग्रास बन चुका था। अब उससे मुक्ति का उपाय नहीं था। काम न कठिन था, न आसान। पहले जब वह मेहनत से काम करता तो उसे पसीना आ जाता और साँस चढ़ जाती। अब उसे न पसीना आता और न वह थकता। उसे न तो यही लगता था कि वह काम करता है और न यही लगता था कि नहीं करता है। पहले जब वह काम करता था, तो नाना प्रकार की बातें सोचता रहता था और समय बड़ी शीघ्रता से गुजर जाता। लेकिन अब वह किसी चीज का विचार ही नहीं करता था। पेटी पर से बक्से उठा-उठा कर ठेले पर रखने के बाद उसके पास अनन्त बातें सोचने के लिये समय बचता था; किन्तु उसका दिमाग एक शङ्ख की तरह खाली रहता। उसमें कोई भी बात प्रवेश न कर पाती। न कोई विचार, न कोई स्वप्न। जो काम वह करता था, उसे उस काम तक की चेतना न थी। उसे इतना ही मालूम था कि उसका दिमाग और

उसके बाजू बक्सों को उठाते हैं, क्योंकि अन्यथा उसका दिल और दिमाग कहीं अन्यत्र होता। लेकिन वे वहीं थे, बक्सों के साथ और मशीनों के साथ।

उसे अपना शरीर उसी प्रकार सूखता प्रतीत होता था, जैसे बिना पानी के कोई भी पौदा। रात को जब वह बिस्तर में जाता तो यह ऐसा ही होता जैसे वह दूसरा बक्स उठाने के लिये झुका हो, और सुबह जब वह उठता तो ऐसा ही होता कि जैसे उसने अभी बक्स ठेले पर रखा हो और उसके हाथों को एक क्षण भर की मोहलत मिली हो। उसकी नींद भी अब स्वप्न-हीन थी। उसका अपना वर्ण भी अब पृथ्वी-वर्ण न रहकर मशीन-वर्ण हो गया था। इधर वह यह भी भूल गया था कि जिन बक्सों को वह हाथ लगाता है उनमें बटन हैं, और बीच-बीच में यदि कभी उसे यह बात याद आ जाती तो वह मुस्करा देता। उसकी हँसी वैसी ही सूखी थी, जैसी पृथ्वी सूखा पड़ने पर होती है।

डाक्टरों ने कह दिया कि वह बीमार है और उसे कैम्प के रुग्णालय में भेज दिया गया।

७६

अब जॉन लकड़ी की झोंपड़ी में था, जो रुग्णालय का काम देती थी। खिड़कियों पर कँटीले तार थे। यहाँ आये उसे चार सप्ताह हो गये थे। उसके फेफड़े खराब हो गये थे। उसका सारा शरीर ऐसे जल रहा था मानो उसे आग की लपट जला रही हो। यदि उसके मन में कभी कोई विचार आता था तो केवल बटन-फैक्टरी का, और वह वहाँ जाना चाहता था। वह आँखें बन्द किये पड़ा था। एक दिन अचानक कुछ हलचल हुई। शायद ये डाक्टर थे जो अपना 'राउण्ड' लगाने आये थे। यकायक उसे एक तरह की सुगन्धि आई जो उसने चिर-काल से नह.

सूँघी थी, किन्तु जिससे वह कुछ परिचित था—ताजी साफ की गई चमड़ी की सुगन्ध। वह मुस्कराया और उसने आँखें खोलीं। सैनिक वर्दी में एक स्त्री उसकी चारपाई के पास खड़ी थी। वह तरुण थी। बाल सुन्दर थे। चमड़ी में ताजगी थी। वह उसकी ओर कड़ाई से देख रही थी; किन्तु वह मुस्कराता चला गया। दो पुलिस-गार्ड और रुग्णालय के डाक्टर उसके पास खड़े थे। जिस समय वह उसकी ओर देख रही थी, डाक्टरों में से एक ने कहा—

"क्या वह यह है ?"

स्त्री जॉन का मैडिकल-शीट पढ़ रही थी और उसकी ओर सन्देह-भरी दृष्टि से देख रही थी। जर्मनी में हर कोई उसकी ओर इसी तरह देखता था।

"हंगरी-निवासी ?" उसने पूछा। "वे और इटली के लोग बड़े खतरनाक हैं।" अपनी अँगुलियों से उसने उस कम्बल का एक कोना पकड़ा, जिसमें जॉन लिपटा हुआ था और उसकी छाती को उघाड़ दिया। तब वह बोली :—

"यह वह नहीं है—जिसकी हमें जरूरत है, उसकी छाती पर बाल हैं।"

अपने रास्ते में वह हर चारपाई के पास रुकी। वह आदमियों के चेहरों को बारीकी से देखती-भालती जाती थी और कभी-कभी उन्हें नंगा भी करती। जिस आदमी की उसे खोज थी, वह नहीं मिला। गार्ड उसके पीछे-पीछे चलते रहे।

सुगन्ध—जिसमें पानी, साबुन और इतर के अतिरिक्त और भी कुछ था—उसके कमरे से बाहर चले जाने के बाद भी बनी रही। जॉन को याद आया कि सुसाना और जुलिसा की चमड़ी की गन्ध ऐसी ही थी।

डाक्टरों में से एक हालैण्ड का था। वह बोला : "कल किसी ने

यहाँ इस कैम्प में जर्मन लड़की से प्रेम-लीला की। इस औरत ने उन्हें ऐसा करते पकड़ लिया। उन्होंने लड़की को तो पकड़ लिया, लेकिन वह बच निकला। उसका रंग काला था, और उसकी छाती पर बाल थे। लड़की उसका नाम नहीं बतायेगी, लेकिन वे उसे ढूँढ़ निकालेंगे। बेचारा पाँच साल के लिये जायगा।"

इस समय वह खिड़की से बाहर देख रहा था।

"उन्होंने उसे पकड़ लिया," वह बोला।

जॉन उठ बैठा और उसने खिड़की से देखा कि एक सरबिया-निवासी के हाथ पीछे बँधे हैं और उसके दोनों ओर एक-एक गार्ड हैं, और उसे ले जा रहे हैं। काले-कालेबालों वाला वह सुन्दर तरुण था। जॉन उसे जानता था। वह रस्सी के कारखाने में काम करता था और प्रसन्न-वदन लड़का था। वर्दी पहने वह स्त्री उसके पीछे-पीछे थी।

"मैंने कहा था कि अन्त में मैं उसे पकड़ लूँगी," वह कह रही थी।

७७

जिस समय जॉन जॉसफ के साथ रहता, केवल उसी समय उसे भय नहीं लगता था। जब से वह अस्पताल में आया था, तब से वह निरन्तर भय-त्रस्त रहता था। कारखाने में बक्स को गिरा देने का डर भूत की तरह उसका पीछा करता था, अथवा समय रहते उसे पेटी से न हटा लेने का। उसे किसी जर्मन स्त्री की ओर देखते डर लगता था। उसे अचानक बटनों के बारे में किसी रहस्य की जानकारी प्राप्त होते डर लगता था। वह हर जर्मन-वस्तु से भयभीत था—स्वयं जर्मनों से, जर्मन-भूमि से, जर्मन-शब्दों से और उस हवा से भी जिसमें वह साँस लेता था, क्योंकि वह भी जर्मन थी। रूमानिया में वह कैद रहा था, उसके साथ अन्याय-

पूर्ण व्यवहार हुआ था, वह भूखा रहा था और पीटा भी गया था। लेकिन वहाँ वह भय-त्रस्त नहीं था। वह हंगरी के लोगों से भी डरा नहीं था, चाहे उन्होंने उसकी चमड़ी की बोटी-बोटी कर दी थी। वे मानव थे। जरगु जॉरडन भी एक मानव था, और जॉन को उससे भी डर नहीं लगा था।

उसे लोगों से कभी डर नहीं लगा था, क्योंकि वह जानता था कि वे सब अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। कुछ मुख्य रूप से अच्छे होते हैं, कुछ बुरे; किन्तु सभी आदमियों में कुछ न कुछ अच्छाई-बुराई रहती ही है।

रूमानिया में छोटे-अफसर ने एक घूँसा मार कर उसके दोनों दाँत उखाड़ दिये थे, किन्तु बाद में उसे एक सिगरेट दी थी। तप्त लाल-लोहे से उसके पैर दाग चुकने के बाद हंगरी में प्रहरियों ने उसे पानी पिलाया था और कुछ सुरती भी दी थी।

जर्मनी में उस पर कभी मार नहीं पड़ी थी। प्रति दिन उसे आधा पाउण्ड पाव-रोटी, कॉफी और सूप मिलता था। रूमानिया में नहर खोदने अथवा हंगरी में किलेबन्दी के काम की अपेक्षा यह काम भी आसान था। लेकिन उससे यहीं रह सकना नहीं हो सकता था। यद्यपि वह यह समझता था कि ऐसे विचार को मन में स्थान देना मूर्खता है, तो भी उसे पूर्ण विश्वास था कि जर्मनवाले उसका सिर काट डालेंगे। उसे लगता था कि चाहे उससे कोई गलती न भी हो, चाहे वह कभी भी बटन-फैक्टरी के किसी रहस्य का पता न लगाये तो भी वे उसे हाथ में हथकड़ी डालकर जेल पहुँचा देंगे। यहाँ के लोग उतने ही दुष्ट थे, जितनी दुष्ट उनकी मशीनें। शायद मशीनें वास्तव में दुष्ट नहीं थीं, और जर्मनी के लोग भी मशीनों से अधिक दुष्ट नहीं। लेकिन जो भी हो, वह मशीनों के साथ नहीं रह सकता था, इससे उसकी देह काँपती थी। उसे उनसे डर लगता था। सभी मशीनें और उन जैसे सभी आदमी

उसके भय का भयानक कारण थे। उन आदमियों और मशीनों के बीच में वह अपने आपको अकेला अनुभव करता था। उसे अकेलापन इतना अधिक अनुभव होता था कि उसकी इच्छा चिल्लाने की होती थी। यही कारण था कि उसे वह फ्रांसीसी इतना प्रिय था। अब जॉसफ उसके पास आया।

"साल्व, स्कलव।" वह बोला।

"साल्व, स्कलव," जॉन ने भी मुस्कराते हुए उत्तर दिया। जॉसफ को यह प्रति-नमस्कार अच्छा लगता था।

"हम सब गुलाम हैं," जॉसफ कहता। "कहीं हम भूल न जायँ, इसलिये यह अच्छा है कि हम दिन में हजार बार एक दूसरे को याद कराते रहें कि हम गुलाम हैं। यदि हम कभी यह भूल गये कि हम गुलाम हैं, तो सब कुछ जाता रहेगा। सभी कुछ। जैसे भी हो, अपनी चेतना जाग्रत रखनी है।"

यह रविवार का अपराह्न था। जॉन और जॉसफ एक झोंपड़ी की छाया में घास पर लेटे हुए थे। जॉसफ जॉन को अपनी प्रियतमा के बारे में बता रहा था। जॉन जानता था कि उसका नाम बीटरिस है, कि वह पैरिस में रहती है, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें हैं और वह रोज रात को इसलिये रोती है, क्योंकि जॉसफ कैद में है। उसे उसके बारे में इतनी अधिक जानकारी हो गई है कि उसे विश्वास है कि दूसरी हजार स्त्रियों में से वह उसे पहचान ले सकता है। कभी-कभी उसे ऐसा लगता जैसे उसकी आवाज सुनाई देती हो। उसका स्वर संगीत-मय था। उसके अपने और जॉसफ के बीच वह उपस्थित मालूम देती थी। और जब भी वह जॉसफ के साथ होता उसे ऐसा ही लगता कि वे तीन जने हैं। उसे कभी-कभी आश्चर्य तक होता कि बीटरिस बातचीत में क्यों नहीं शामिल होती।

७८

"सभी कैदी अपनी-अपनी झोंपड़ी में चलें," कैम्प के अफसर ने लाउड-स्पीकर से घोषणा की।

"दूसरी तलाशी," जॉन ने उठते हुए कहा। जॉसफ उसके पीछे-पीछे चला; वह कह रहा था :—

"वे अब और क्या चाहते हैं?"

उसे इस बात पर गुस्सा आता था कि उसे रविवार का अपराह्न भी बन्द कमरे में बिताना पड़े। मजदूर छोटी-छोटी टुकड़ियों में आँगन से बाहर जा रहे थे। बाहर सूर्य चमक रहा था और खासी गरमी थी। जॉन और जॉसफ एक खिड़की के पास गये और कँटीले-तार में से झाँकने लगे।

"तो यह सत्य है," जॉन बोला। तीन बड़ी मिलिट्री लारियाँ आँगन में आ पहुँची थीं और उनकी खिड़की के सामने आकर खड़ी हो गई थीं। कुछ समय से यह अफवाह उड़ी थी कि कैम्प में उन्हें औरतें मिलेंगी। दूसरे कैम्पों में यह बात हुई थी, लेकिन कैदियों को इसका विश्वास नहीं था। लेकिन अब औरतें आ पहुँची थीं, उनके लिये औरतें। उन तीन बड़ी लारियों में कुछ गौर-वर्ण थीं, कुछ श्याम-वर्ण, कुछ रक्त-वर्ण—सब उनके लिये।

"तो जो कुछ उन्होंने कहा, वह सत्य था," जॉन बोला। चाहे वह अपनी आँखों से देख रहा था, तब भी उसे विश्वास न था। स्त्रियाँ वहाँ हाजिर थीं। उसने उनकी ओर देखा। वे ओंठों की लाली और पाउडर से अत्यधिक रंजित थीं और बहुत ही झीना झीना चोगा पहने थीं। उन्होंने कैदियों से भरी खिड़कियों की ओर देखा और मूर्ख-हँसी हँसने लगीं। शीघ्र ही वे लारियों से बाहर कूदने लगीं। ज्यों ही वे नीचे कूदीं और हवा ने उनका आँचल ऊपर उठा दिया, जॉन को उनके घाँघरे और रंगीन निकर दिखाई दिये। उनका कपड़ा सिगरेट के कागज के

समान पतला था। उसे उनकी जाँघ तक दिखाई दे रही थी। अपने पीछे जॉन ने लोगों को हँसते हुए पाया। वह चौंक पड़ा। वह नहीं हँस सकता था।

"कोई स्त्री लारी से बाहर न निकले" लाउड-स्पीकर पर आज्ञा सुनाई दी। "लारी से उतरने की आज्ञा नहीं दी गई है।" स्वर कठोर और अधिकार-पूर्ण था। अफसर दिखाई किसी को नहीं देता था। वह अपने दफ़्तर में से बोल रहा था। स्त्रियाँ जिस तेजी से लारी में से उतरी थीं, उसी तेजी से एक दूसरी पर गिरती पड़तीं-वापिस जा चढ़ीं। वे डर गई थीं, क्योंकि उन्होंने बिना आज्ञा के लारी छोड़ दी थी। जब वे दुबारा वापिस चढ़ीं तो कैदियों को एक बार फिर उनके घुटने, उनके घाँघरे और उनके रंगीन निकर दिखाई दिये। लड़कियाँ अभी भी हँस रही थीं; किन्तु इस बार यह भय-पूर्ण हँसी थी।

"प्रत्येक झोपड़ी के लिये सदसद औरतें," अफसर ने आज्ञा दी। "वे नौ बजे रात तक रहेंगी। झोपड़ी के मुखिया लोगों को, योजना के अनुसार, काम करने के लिये खास हिदायतें हैं, और उन्हीं पर शान्ति तथा नियम-पालन की जिम्मेवारी है।

लाउड-स्पीकर चुप हो गया। स्त्रियाँ दूसरी आज्ञा की प्रतीक्षा में चुपचाप बैठी रहीं।

जॉसफ ने अपने दाँत पीसते हुए कहा "मेर्द!" जॉन ने यह समझ कि फ्रांसीसी उससे बात कर रहा है, उसकी ओर ध्यान दिया। लेकिन जॉसफ क्रोध के मारे जल रहा था और उसका ध्यान दूसरी ओर था।

लाउड-स्पीकर में से आने वालीआवाज बोली, "औरतें व्यवस्थित टोलियों में उतरें।" इसी की वे प्रतीक्षा कर रही थीं। वे लारियों में से कूदीं और पाँच टोलियों में बँट गईं। तब पाँच आदमियों ने—

झोंपड़ियों के पाँचों मुखियों ने—उस पार पहुँच उन्हें अपने पीछे-पीछे आने के लिये कहा। स्त्रियाँ झोंपड़ियों की ओर जाते समय भी हँस रही थीं।

जॉन की समझ में नहीं आ रहा था कि वे "योजना के अनुसार" कैसे क्या करेंगी। वह जानता था कि स्त्रियाँ कैदियों के साथ प्रेम-लीला करने के लिये भेजी गई हैं। जर्मनों का मत था कि कैदियों के प्रेम करने लगने से चीज़ों का उत्पादन बढ़ जाता है। और जर्मनों को निपुणता ही अपेक्षित था। स्त्रियों को उन्होंने इसीलिये भेजा था कि बटन-फैक्टरी और रस्सी के कारखाने में आदमी अधिक निपुणता के साथ काम कर सकें और गाँव की सीमा पर स्थित ढलाई करने के कारखाने में भी।

वह यह नहीं समझ सका कि ऐसा क्यों होना चाहिए। और यह भी नहीं सोच सका कि जब एक-एक झोंपड़ी के लिये इतनी थोड़ी औरतें हैं तो सभी लोग उनसे प्रेम-लीला कैसे कर सकेंगे। बरामदे लम्बे-लम्बे थे और एक-एक में अनेक चारपाइयाँ थीं। आदमी बहुत थे और स्त्रियाँ थोड़ी। हर कैदी को साथ सुलाने के लिये एक-एक औरत नहीं मिल सकती थी। "कदाचित् ये स्त्रियाँ एक के बाद दूसरे बिस्तरे पर जायें।" लेकिन तब उसे लगा कि इस प्रकार एक बिस्तरे से दूसरे पर भेजते हुए उन्हें लज्जा आयगी। उसने कभी अपनी झोंपड़ी और उसके कँटीले-तारों के साथ स्त्री का सम्बन्ध नहीं जोड़ा था। यह सब होने पर भी, वे अब देहली पर थीं। झोंपड़ी का मुखिया कुछ कह रहा था, शायद आखिरी हिदायत दे रहा था। वे खूब जोर-शोर से हँस रही थीं।

"क्या हम पीछे की ओर चलें?" जॉसफ ने पूछा। "हम जहाँ पहले बैठे थे वहीं चल सकते हैं।"

जॉन उसके पीछे-पीछे गया। दूसरे आदमी भी झोंपड़ी छोड़-छोड़ कर जा रहे थे। दरवाजे पर वे उस औरत से रगड़ खा गये जिसके

बदन से पाउडर और इतर की गन्ध आ रही थी। जब जॉन और जॉसफ बाहर निकले, उन्होंने कटाक्ष किया और दोनों की हँसी उड़ाई। वे उनके बाहर जाने का मजाक कर रही थीं। जॉन के बाहर जाते समय किसी औरत ने उसके गाल पर हाथ फेरा। उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। हाथ चिप-चिपा और सुगन्धित था।

"साल्वेत्, स्कालवी !" जॉसफ उनके पास से गुजरता हुआ बोला। उनका एक मात्र उत्तर था—खिलखिलाकर हँस पड़ना। लेकिन जॉसफ हँस नहीं रहा था। उसका चेहरा गम्भीर था।

जॉसफ ने पिछवाड़े की ओर खुले में पहुँचकर घास पर अपनी देह सीधी की और टकटकी बाँधकर वह तारों की ओर देखने लगा। वह मुँह से एक शब्द नहीं बोला। जॉन औरतों की बात सोचता हुआ, उसके पास आ बैठा। जॉसफ भी औरतों की ही बात सोच रहा था, किन्तु जॉन उसके विचारों का अनुमान नहीं लगा सका।

"अन्दर जाओ, यदि तुम्हारी इच्छा हो," जॉसफ बोला।

"मुझे नहीं चाहिये," उसने उत्तर दिया।

वे दोनों चुप थे। यह पहली बार थी कि फ्रांसीसी ने बीटरिस के बारे में मुँह से एक शब्द नहीं निकाला था।

"कैम्पों से लाई गई ये सभी पोलैण्ड-वासी लड़कियाँ हैं," जॉसफ बोला। "यदि ये लगातार छः महीने यह काम करती रहें तो इन्हें बाद में रिहा कर दिया जाता है। किन्तु छः महीनों में इनका सर्वथा विनाश हो चुका होता है। जब ये कैम्प से निकलती हैं तो या तो सीधी अस्पताल में जाती हैं, या पागलखाने में।"

"मैंने सोचा था कि ये वेश्यायें हैं," जॉन बोला। अब उसे उन पर दया आने लगी थी। "मैं नहीं जानता था कि वे हमारी ही तरह कैदी हैं।"

"जीन (वह जॉन को हमेशा जीन कहता था) ये वेश्यायें नहीं हैं। ये अपनी रिहाई के लिये भयानक प्रयत्न करनेवाली स्त्रियाँ हैं। अपनी गुलामी की बेड़ियाँ काटने के लिये इनके पास इनके अपने शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं। वीरतापूर्ण—किन्तु दुर्भाग्य से व्यर्थ। ये केवल अपनी चमड़ी की चीर-फाड़ कर रही हैं। गुलामी के बन्धन मानवी रक्त और मांस से कहीं अधिक मजबूत हैं।"

रात के नौ बजे स्त्रियाँ कैम्प से चली गईं। अब जब वह लारियों में चढ़ीं, कहीं किसी प्रकार का हंसाई नहीं थी। वे सिगरेट पी रही थीं। वे जाने लगीं तो जॉसफ ने चिल्लाकर कहा :—

"साल्वेत्, स्कलची!"

उस रात वह फ्रांसीसी, कैम्प से निकल भागा।

७६

"अफसरों को बलकान भाषाओं के एक दुभाषिये की आवश्यकता है," जॉन को आफिस की ओर ले जाता हुआ फैक्टरी-अफसर बोला। "और अपने बरताव की ओर ध्यान देना, वे लोग जरनैल-स्टाफ के अफसर हैं।"

जॉन बाहर एक घण्टे तक प्रतीक्षा करता रहा, तब उसे अन्दर ले जाया गया। हवा धुएँ से भरी थी और शराब की तेज गन्ध आ रही थी। मेज पर गिलास और बोतलें रखी थीं।

जब वह अन्दर आ गया तो किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। धुएँ से उसका गला घुट रहा था। वह वापिस अपने बकसों के पास वह दरवाजे के पास खड़ा रहा। चला जाना चाहता था। वहाँ कम से

कम शान्ति तो थी और उसका साँस घोटनेवाला सिगरेट का धुआँ न था। अफसरों की पतलूनों की लाल-लाल धारियों की ओर वह आकर्षक-दृष्टि से देखने लगा। वे सब तरुण थे। उसने उनकी गिनती की : वे सात थे। उनमें से एक उसके पास आया और अपना हाथ जॉन के सिर के ऊपर रख दिया। उसने उसे एक ओर घुमाया, मानो वह किसी गेंद के साथ खेल रहा हो। पहले उसने उसे दाईं ओर से देखा, फिर बाईं ओर से।

"घूमो," अफसर बोला। उसने जॉन के सिर की परीक्षा पीठ की ओर से की। तब उसने उसका कन्धा टटोला, ठोड़ी के नीचे हाथ लगाया, मुँह खोलने के लिये कहा और दाँतों परीक्षा की। तब आज्ञा दी :

"कपड़े उतारो।"

जॉन ने अपने कपड़े उतारे और उन्हें दीवार के पास जमीन पर रख दिया। अफसर ने अपनी आँख उस पर गड़ाये रखी। जिस समय वह कपड़े उतार रहा था, अफसर उसकी हर हरकत को ध्यान से देखता रहा। बाकी अफसर अपनी बातचीत में लगे रहे। उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"महाशयगण," जिस अफसर ने उसे कपड़े उतारने के लिये कहा था और जो सेना में एक करनैल था, बोला, "महाशयगण! मैं आप सब को एक तमाशा दिखाना चाहूँगा।"

उन्होंने बातचीत बन्द कर दी और जॉन को घेर कर खड़े हो गये। जॉन उनके बीच में नंगा और घबराया हुआ खड़ा था। उसे एक दुभाषिये के तौर पर बुलाया गया था, किन्तु उसे लेकर अब करनैल तमाशा दिखाना चाहता था। जॉन को क्षण भर के लिये जादू के वे सब खेल याद आ गये जो उसने सरकस में देखे थे। दर्शकों में से कोई आदमी स्टेज पर बुलाया गया और जादूगर उसकी जेब में से जीवित बिल्लियाँ, खरगोश और मुर्गियाँ निकालने लगा। जॉन उस तरह के

तमाशों से परिचित था। उनके अतिरिक्त वह और किसी तरह के तमाशे न जानता था। अब करनैल उसे लेकर तमाशा दिखाने की बात कर रहा था। शायद यह कुछ ऐसा होगा, जैसा उसने उस समय सरकस में देखा था, जब वह फौज में था। वह उत्सुकता से मुस्कराया। वह तमाशों से डरता नहीं था। जिन आदमियों को जादूगर प्लेट-फार्म पर बुलाता था उन्हें कभी किसी तरह की हानि नहीं पहुँची थी। वे केवल खड़े-खड़े मुँह बाये देखते रहते थे। और शायद उसे भी उसी तरह केवल खड़े रहकर ताकते रहना होगा जब कि करनैल उसके सिर के पीछे से अथवा उसकी कलाइयों में से खरगोश, बिल्लियाँ और मुर्गियाँ निकालेगा। वह करनैल की ओर प्रेमपूर्वक देखकर मुस्कराता रहा। उसे जादूगर सदा अच्छे लगते थे। "मैं कितनी ही कोशिश करूँ, मैं यह जादू और तमाशा नहीं दिखा सकता," वह कहता। वह करनैल की चतुराई के लिये मन ही मन उसकी प्रशंसा कर रहा था। किन्तु यकायक उसे अपनी माँ का कथन याद आया। वह कहा करती थी कि जादूगर शैतान के शागिर्द होते हैं। उसकी मुस्कराहट जाती रही। उसे थोड़ी घबराहट मालूम हुई। वह शैतान से सदा भयभीत रहा है।

"महाशयगण, अभी दस मिनट पहले जब यह आदमी कमरे में आया," करनैल, "बोला तभी मैंने इस आदमी को जीवन में पहली बार देखा। मैं यह भी नहीं जानता कि यह यहाँ क्यों है।"

"श्रीमान्, यह बलकान भाषाओं के लिये दुभाषिया है," अफसर बोला।

"मैं भूल गया था कि मैंने एक माँग भेजा था," करनैल बोला। "ज्यों ही इस आदमी ने दरवाजे के अन्दर पैर रखा, मेरा ध्यान इसके चेहरे की ओर आकर्षित हुआ।"

करनैल ने जॉन के सिर पर हाथ रखा। जॉन मुस्कराया, उसे लगता था कि अब करनैल उसके सिर के पीछे से एक खरगोश निकालने ही

याता है। करनैल का चेहरा गम्भीर था। लेकिन जॉन अपने सरकस के अनुभव से जानता था कि जब दर्शक हँस-हँस कर लोट-पोट होते रहते हैं, तब भी जादूगर गम्भीर बने रहते हैं। अब वह हंसी का फव्वारा छूटने की प्रतीक्षा में था और स्वयं उसमें सम्मिलित होने के लिये तैयार। बहुत समय से वह अच्छी तरह हँसा नहीं था।

"यद्यपि मैंने आपके साथ केवल दस मिनट पहले ही, इस आदमी को देखा है," करनैल बोला, "और इसके साथ कुछ भी बातचीत नहीं की है, तो भी मैं आपको केवल वैज्ञानिक निरीक्षण के आधार पर, इस आदमी का जीवन-चरित्र और इसके सारे परिवार का पिछले तीन सौ वर्ष का इतिहास बताने के लिये तैयार हूँ और पर्याप्त ब्योरे के साथ।"

जॉन को याद आया कि उसने यही ढंग सरकस में भी देखा था। जादूगर भीड़ में से किसी आदमी को लेकर उसका नाम, उसकी आयु, वह विवाहित है अथवा अविवाहित तथा और बहुत-सी दूसरी बातें बताता था। लोग जादूगर की सामर्थ्य देख कर चकित होते। लेकिन जॉन को ऐसे तमाशे में रुचि न थी। उसे वास्तविक मजा केवल उसी तमाशे में आता था जब किसी की जेब में से खरगोश और बिल्लियाँ कूद-कूद कर बाहर आते थे। उसे निराशा हुई कि अफसर यथार्थ जादू का तमाशा नहीं दिखा सक रहा है। वह यह ठीक-ठीक देखना चाहता था कि कोई जादूगर उसकी जेब में से कैसे कोई बिल्ली निकाल सकता है। उसने सरकस में इसे जानना चाहा था किन्तु जादूगर भीड़ से घिरा रहता था और हमेशा वह किसी न किसी दूसरे को ही चुन लेता था।

"नसल सम्बन्धी विज्ञान ने जातीय साम्यवादी शासन में इतनी उन्नति की है," करनैल बोला, जिसका नाम मूलेर था, "कि दूसरे देशों से सैकड़ों वर्ष आगे पहुँच गये हैं। इस व्यक्ति के नग्न-शरीर को देख लेने मात्र से मैं बता सकता हूँ कि इसके पूर्वज कहाँ से आये, उन्होंने कैसी शादियाँ कीं, उसके परिवार की कौन-कौन सी आदतें और प्रवृत्तियाँ थी,

और इसी प्रकार आप यहीं इस व्यक्ति से पूछ कर मेरे कथन की जाँच कर सकेंगे।"

"अविश्वसनीय" अफसर बोले। वे जॉन के और समीप आ गये।

"खोपड़ी की शक्ल, माथे की बनावट, नाक और चेहरे की हड्डियाँ, अस्थि-पिंजर का ढाँचा और विशेष रूप से छाती और हँसुली की स्थिति से यह बात निश्चयात्मक रूप से सिद्ध होती है कि यह व्यक्ति जर्मन-समूह से सम्बन्धित है। यह जर्मन-समूह यद्यपि अब संख्या की दृष्टि से बहुत कम हो गया है, किन्तु अभी भी राइन-उपत्यका, लुक्सेमबर्ग, त्रान्सिल-वानिया और आस्ट्रेलिया में विद्यमान है। चीन और अमरीका में भी कोई अठारह परिवार हैं, लेकिन सांख्यकी में अभी इनका समावेश नहीं किया गया है, क्योंकि युद्धारम्भ से कुछ ही महीने पहले उनके अस्तित्व का पता लगा। इस जर्मन-समूह के बारे में, जिसका नाम 'वीर-परिवार' है, हम विस्तृत तथा पूर्ण जानकारी पहली बार अपने विशेषांक में देने जा रहे हैं। इस परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक ८०० होगी। इनके पूर्वज १५०० से १८०० ई० के बीच दक्षिण-पश्चिम जर्मनी से थोड़े-थोड़े करके बाहर गये। वे उन मूल-जर्मनों में से हैं जो इतिहास के भारी दबाव के बावजूद अपने रक्त की पवित्रता बनाये रखने में सफल हुए। महाशयगण! नसल में आत्म-रक्षा की अपनी भावना होती है, जो व्यक्ति की आत्म-रक्षा की अपेक्षा कहीं अधिक बलवती होती है। यह "वीर-परिवार", जिसका आपके सामने खड़ा यह तरुण एक सदस्य है, इस नसल-गत आत्म-रक्षा की भावना की दृढ़ता का एक बड़ा प्रमाण है। वह कौन-सी शक्ति थी, जिसने इस तरुण के पूर्वजों को तीन-चार सौ साल तक अन्य कहीं अधिक आकर्षक स्त्रियों के रहते हुए भी केवल अपनी नसल में ही शादी करने के लिये मजबूर किया? यह आत्म-रक्षा की नसल-गत चेतना थी; यह रक्त की पुकार थी, जिसने इस परिवार के सदस्यों को दूसरी नसल में शादी करने के विनाशकारी पाप से

बचाया। इस परिवार के इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं हुआ। केवल इसी से हमें यह बात स्पष्ट होती है कि किस प्रकार यह तरुण जो हमारे सामने खड़ा है, अपने पूर्वजों की यथार्थ प्रति-कृति है। इसके बालों की ओर देखो—मजबूत, किन्तु रेशमी—यह वीर-परिवार के बाल हैं, जैसे कि चार सौ वर्ष पहले के और जैसे कि हमारे पास सुरक्षित पूर्व-कालीन अवशेषों में हैं। विशेषज्ञ की आँख इनके पहचानने में गलती कर ही नहीं सकती। इसकी रंगत मूल जर्मन-समूह से थोड़ी अधिक रेशमी है, लेकिन स्पष्ट रूप से वस्तु एक ही है। इस तरुण की नाक, माथ आँखें और ठोड़ी एकदम वैसी ही हैं जैसी हमारे अजायब घरों में रखी हुई शताब्दियों-पुरानी नक्काशी में बीच की सारी शताब्दियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।"

अफसरों ने जॉन के सिर को स्पर्श किया और उसके बालों को हाथ लगा कर देखा। वे उसकी ओर प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे थे। उसे लगा कि सभी आँखें उसी पर केन्द्रित हैं। इससे पहले उसके बारे में ऐसा कभी नहीं हुआ था। अब वह 'नायक' था। लेकिन उसे अफसरों को निराश करते डर लगता था। वह चाहता था कि उसने उनकी प्रशंसा का अधिकारी होने के लिये वास्तव में कुछ किया होता; ऐसी प्रशंसा जैसी केवल उन्हीं लोगों की होती है, जिन्हें मोतियों और ओक के पत्तों के साथ लोहे का क्रॉस मिलता है।

करनैल म्युलेर की उँगलियाँ एक बार फिर प्रशंसा और आदर की भावना के साथ जॉन के कन्धों को छू गईं। यह ऐसा ही था मानो तीन प्रधान-पुरोहितों के गिरजे में सन्तनी परशिव—करिश्मे करनेवाली—के पवित्र अवशेषों को हाथ लगा हो। जॉन ने लज्जा से अपना सिर नीचे झुका लिया। उसे अफसोस हो रहा था कि उसने लड़ाई में, सबसे आगे की लाइन में रहकर, अपने आपको किसी ऐसी प्रशंसा का अधिकारी सिद्ध नहीं किया।

"यह समूह, जिसे 'वीर-परिवार' का नाम दिया गया है" करनैल बोला, "नसल-गत वीरता का अद्भुत उदाहरण उपस्थित करता है। आज का दिन मेरे लिये विशेष दिन है, क्योंकि आज मुझे यह नमूना मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। प्रकरणवश मैं यह भी बता दूँ कि मेरे पूर्वजों में से एक ने 'वीर-परिवार' की लड़की से शादी की थी। दुर्भाग्यवश, विवाह के तीन महीने बाद उसने आत्म-सम्मान की रक्षा में प्राण दे दिये। इसलिये उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं हुआ। लेकिन यह तो विषयान्तर हो गया। मैं आशा करता हूँ कि समस्त ऐतिहासिक और नृवंश सम्बन्धी जानकारी के साथ इस तरुण की एक तसवीर मेरी उस कृति में छपेगी, जिस पर मैं अब काम कर रहा हूँ, और जिस पर पार्लियेंट–नेता डा० रोसेनबर्ग की देख–रेख में मैं गत दस वर्षों से ध्यान दे रहा हूँ। यह मेरे काम की शानदार सफलता होगी।"

"बधाई" अफसरों ने एकदम एकाग्र-चित्त होकर कहा। करनैल भावना से भर गया। उसने अपना दाहिना हाथ उठा कर सब को सलाम किया और फिर एक-एक करके सब से हाथ मिलाया। जॉन, उनकी ओर, खड़ा मूर्तिवत् देख रहा था।

"क्या तुम राइन लैण्ड से हो, ल्युक्समबर्ग से हो अथवा ट्रांसिल्वा-निया से?"

"ट्रांसिल्वानिया" जॉन ने उत्तर दिया।

अफसरों ने प्रशंसा की आवाजें लगाईं, करनैल प्रसन्नता से फूल गया।

"अब मैं इसके निवासस्थान के बारे में अधिक निश्चित जानकारी दूँगा" करनैल बोला, और जॉन को सम्बोधन कर उसने पूछा "क्या तुम्हारा जन्म तिमिसोरा में हुआ था, अथवा ब्रासोफ में अथवा जेकलेर प्रदेश में?"

"जैकलेर-प्रदेश में" उस ने उत्तर दिया।

"अद्भुत" करनैल बोला। वह प्रसन्नता से अपने हाथ मल रहा था। "मैं जानता था कि मैं गलती नहीं कर सकता। ज्यों ही इस ने दरवाजा खोला, मुझे ऐसा लगा कि मानो 'वीर-परिवार' की चित्र-शाला में से एक मूर्ति चली आ रही है। मुझे उन पारिवारिक-चित्रों का इतना अधिक परिचय है। तुम उन्हें मेरी पुस्तक में देखकर स्वयं पहचान लोगे। मैं उन्हें बृहदाकार, रंगीन रूप में प्रकाशित करूँगा। महाशयगण, मैं फिर निवेदन करता हूँ कि यह तरुण 'वीर-परिवार' का आदर्श नमूना है। यह मेरी सारी मान्यता का समर्थन करता है।"

करनैल ने अफसर से कहकर उसके सारे कागज-पत्र मँगवाये।

"पाजी कहीं के" उन्हें पढ़ते ही वह क्रोध से चिल्ला उठा। "वीर-परिवार के किसी सदस्य का आज तक कभी जानोस् नाम नहीं हुआ। यह नाम एक पवित्र वस्तु को अपवित्र बनाता है।" क्रोध से उबलते हुए करनैल ने जॉन की ओर देखा।

"क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हारा नाम जॉनोस् रक्खा ?

"नहीं, मेरा नाम जानोस् नहीं है" जॉन बोला। वह कहने जा रहा था कि उसका नाम आयान है।

"निश्चयात्मक रूप से नहीं—यह हो ही नहीं सकता कि 'वीर-परिवार' का कोई सदस्य जनन-पञ्चांग में लिखे नामों के अतिरिक्त किसी दूसरे नाम से अपने बच्चे को दीक्षित करे। चार शताब्दियों में यह कभी नहीं हुआ। यह किसी तरह हो नहीं सकता था।"

करनैल यह देख कि जॉन का नाम जानोस् नहीं है, प्रसन्नता से गद्गद् हो गया।

"तुम्हें यह 'जानोस्' नाम किसने दिया ?" करनैल ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। दो वर्ष हुए, जब मैं जर्मनी में आया, तो उन्होंने मेरे कागजों में दर्ज कर दिया।"

"उसका नाम जानोस् नहीं है। वीर-परिवार बार-बार इस प्रकार के अपयश का भागी हो चुका है। जिन लोगों में वे रहे, उन लोगों ने उनके नामों को विकृत कर दिया। यह सब होने पर भी उनका कभी रक्त मिश्रण नहीं हुआ। यह स्फटिक की तरह पवित्र रहा है।"

करनैल ने फैक्टरी-अफसर की ओर देखा।

"आज से यह तरुण नसल-अध्ययन की जातीय संस्था की इच्छानुसार रहेगा। हमें एक नमूने के तौर पर इसकी आवश्यकता है।"

"क्या इसका कारखाने में काम करना बन्द कर देना होगा?" अफसर ने प्रश्न किया।

"हाँ," करनैल ने दो-टूक उत्तर दिया। "बाद में मैं विशेष हिदायत भेज दूँगा।" जॉन की ओर देखकर वह सोचने लगा: "विज्ञान ने बहुत उन्नति की है, किन्तु अभी हम अपने आदर्श से बहुत दूर हैं। एक अत्यन्त रोचक नसल-समूह का यह बढ़िया नमूना किसी नृवंश-उद्यान में सुरक्षित रहना चाहिये, जो मानवी-नसलों के दुर्लभ अनमोल नमूनों के लिये खास तौर पर पृथक् किया गया हो। लेकिन खेद है कि अभी ऐसे उद्यानों की स्थापना नहीं हुई है। यूरोप में पशुओं की भिन्न-भिन्न जातियों की वृद्धि, चुनाव और सुरक्षा के लिये उद्यान हैं, किन्तु पक्षपातपूर्ण विचारों के कारण हम अभी तक नृ-वंश-उद्यान नहीं स्थापित कर सके। विज्ञान के लिये यह महान् आपत्ति है। इस क्षेत्र में अमरीका के लोग अगुआ हैं। उनके यहाँ इण्डियन-नसलों के लिये खास सुरक्षा-स्थान हैं। लेकिन एक दिन हमें यूरोप में भी बनाने होंगे। परन्तु सर्वप्रथम तो हमें युद्ध में विजयी होना है। किसी भावी व्याख्यान में मैं एक नृवंश-उद्यान की स्थापना का प्रस्ताव रखूँगा, जहाँ दुर्लभ नमूने वैज्ञानिक अध्ययन के लिये सुलभ होंगे। 'वीर-परिवार' का यह सदस्य उस उद्यान को अलंकृत करने वाला पहला मानवी नमूना होगा, और मैं इसका दान कर दूँगा।"

उसने जॉन की ओर देखा और मुस्कराया। उसने कल्पना की कि जॉन अपने बाबी-बच्चों के साथ जर्मन-नसल के मण्डप में, नृवंश-उद्यान में रह रहा है।

"एक दिन आयेगा......" वह बोला। "अभी तो हमें इस तरुण को इसकी 'जाति' के योग्य कोई काम देना चाहिये। वह सैनिक बनकर सबसे अधिक प्रसन्न होगा। मैं 'वीर-परिवार' को जानता हूँ। इसके पुरुष जर्मन-नसल के भयानकतम योद्धा हैं। हमें इसे एक सैनिक बनने का अवसर देना चाहिये।"

दूसरे अफसरों ने फिर करनैल को बधाई दी। उन्हें उसका सुझाव मान्य था। एक बार फिर वह प्रसन्नता के मारे गद्गद हो उठा था। उसने अपने अंग-रक्षक से पत्र-व्यवहार की पेटी मँगवाई और जेनरल-स्टाफ के चिट्ठी लिखने के कागज पर जॉन मारित्ज़ के लिये एक सिफारिश लिखी कि उसे सेना में भर्ती कर लिया जाय। यह कागज उसने फैक्टरी के अफसर को थमा दिया।

"देखो, सभी अपेक्षित लिखा-पढ़ी अविलम्ब हो जाय।" उसने आज्ञा दी।

करनैल जॉन की ओर देखकर मुस्कराया। "एक महीने के भीतर में वर्दी पहने तुम्हारा एक फोटो चाहता हूँ। जिस 'वीर-परिवार' के तुम हो, उसका अध्ययन करने के लिये यह अमूल्य सिद्ध होगा। मैं इसकी एक प्रति डा० गोएब्बेल्ज को भेज दूँगा। तुम अपनी तसवीर समाचार पत्रों तथा सचित्र पत्रिकाओं में देख सकोगे।

८०

जॉन की जाँच करने पर भर्ती करनेवाले सैनिक-अफसर ने कहा "यह आदमी सैनिक-सेवा के अयोग्य है। इसके दाहिने फेफड़े पर कई निशान हैं। सैनिक के फेफड़े सर्वथा स्वस्थ होने चाहिये।"

करनैल म्युलेर की भेंट को तीन सप्ताह हो चुके थे। जॉन को बताया गया था कि सैनिकों को प्रतिदिन लगभग आधी पाव रोटी का राशन मिलता है, गरम कपड़े मिलते हैं और ऐसे बूट मिलते हैं जिनके अन्दर नमी नहीं घुस पाती। और अतिरिक्त भोजन तथा सिगरेट भी। वह जानता था कि कैदी न होकर वह सैनिक हो जायगा तो उसके लिये अच्छा रहेगा। इसके बावजूद वह प्रसन्न था कि वे उसे अस्वीकार कर रहे थे।

उसके कागजों की ओर देखते हुए एक दूसरा सैनिक-अफसर बोला—"नैशनल इन्स्टीच्युट और जैनरल स्टाफ के करनैल म्युलेर ने इसकी खास सिफारिश की है। वह इसे नसल-गत अध्ययन के लिये चाहते हैं। हम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते।"

तीनों डाक्टर-अफसरों ने जॉन के बारे में विचार किया।

"क्या तुम क्लर्क का काम कर सकते हो?" कैप्टन ने पूछा :

"घर पर तुम्हारा पेशा क्या था?"

"खेतिहर मजदूर।"

डाक्टरों ने आपस में काना-फूसी की और उसे बाहर प्रतीक्षा करने के लिये कहा। जब उन्होंने उसे फिर भीतर बुलाया तो बताया कि उसे स्वीकार कर लिया गया है। उन्होंने उसे एक लिखित आज्ञा दी कि वह जाकर अपनी टुकड़ी को रिपोर्ट करे।

"तुम्हें सहायकों में भर्ती होना है," कैपटन ने कहा। "क्योंकि तुम क्लर्क का काम नहीं कर सकते, इसलिये तुम्हें सैनिक-पुलिस की टुकड़ी में नियुक्त किया जाता है।"

८१

कैम्प के नायक ने सीटी बजाई ताकि सभी कैदी भोजन के लिये इकट्ठे हो जायें। सिगनल होते ही सहायक मारित्ज़ कूद पड़ा। वह भूल

गया था कि वह पहरे पर था और वह भी मशीन की तरह यूँ ही बेतहाशा अपने भोजन-पात्र के लिये दौड़ पड़ा था। गुस्से से वह लाल हो गया।

"मैं कितना मूर्ख हूँ।" उसने अपने मन में कहा। "मैं फिर भूल गया कि मैं एक कैदी नहीं हूँ, सन्तरी हूँ।"

तीन दिनों में, जब से वह सन्तरी बना था, जब-जब सीटी बजी ना हर बार वैसा ही हुआ। उसके सिर में यह बात समाती ही नहीं थी कि वह सैनिक है। कँटीले तार और कैदियों की कतार देखकर वह अपने वर्तमान पद को भूल जाता और उसे लगता कि वह भी कैदी है। इतने वर्ष तक कैम्पों में रहने के कारण उसके रक्त में यह बात समा गई थी कि वह जीवन-कैदी है। वह अपने बारे में कुछ और सोच ही नहीं सकता था। जब भी दूसरा सन्तरी पहरा बदलने आता, वह काँपने लग जाता। उसे अनुभव होता कि कोई गार्ड उसे पकड़ने आ रहा है। अब जब उसने कैदियों को सूप के लिये कतार में खड़े देखा, तो वह फिर भूल गया कि वह सन्तरी है और सोचने लगा कि उसकी बारी में इतनी देर क्यों हो रही है। थोड़ी देर के लिये वह वापिस कतार में था।

पहले दिन से ही वह कैदियों में अपने पूर्व-परिचितों को खोज रहा था। उसे सचमुच आश्चर्य था कि उसे एक भी नहीं मिला। जर्मनी में वह इतने अधिक कैम्पों में रहा था कि उसे विश्वास था कि यहाँ इस स्ट्राफलेजेर में कोई न कोई अवश्य मिलेगा। यदि किसी परिचित से भेंट हो जाती तो उसे कितना आनन्द आता। वह कैदियों से बातचीत नहीं कर सकता था, किन्तु चाहे दूरी से ही सही वह किसी न किसी परिचित चेहरे को देखना चाहता था।

यकायक वह फिर भूल गया कि वह पहरेदार सन्तरी है। वह चिल्ला उठा :

"जॉसेफ, जॉसेफ।"

आँगन में इकट्ठे हुए कैदियों ने उसकी ओर देखा। जॉसफ ने भी देखा। किन्तु वह खाने पर वापिस चला गया। उस फ्रांसीसी ने उसे पहचाना नहीं था। जॉन ने फिर आवाज दी। इस बार जॉसेफ तन कर खड़ा हो गया और हाथ में भोजन-पात्र लिये घूर-घूर कर देखने लगा।

तब वह घूमा।

"क्या तुम मुझे नहीं पहचानते, ? मैं मारित्ज़ जानोस् हूँ।"

दाँत किचकिचाते हुए जॉसफ बोला—"साल्व, स्कलव।" अन्त में उसने उसे पहचान लिया था। उसने अपना भोजन-पात्र नीचे रख दिया और बाड़ के थोड़ा समीप आ गया।

"जीन! तुम यहाँ कैसे पहुँच गये?" जॉसेफ ने पूछा। जॉन ने उसे थोड़े में बताया कि वह किस प्रकार एक सैनिक बन गया था। इस बीच जॉसफ ने अधिक जर्मन सीख ली थी। लेकिन तेज़ हवा चल रही थी और दोनों के बीच पर्याप्त दूरी थी। इसलिये एक दूसरे को समझने में उन्हें पर्याप्त कठिनाई हो रही थी।

"और तुम यहाँ कैसे पहुँचे?" जॉन ने पूछा।

"मेरे भाग निकलने के पाँच दिन बाद उन्होंने मुझे पकड़ लिया। क्या तुम बोर्टादिस को खबर पहुँचा सकते हो? हम यहाँ से चिट्ठी नहीं भेज सकते। उसका समाचार मिले चार महीने हो गये।"

जॉन ने उसका पता पूछा। जॉसफ ने एक कागज के टुकड़े पर लिखा। जिस समय वह लिख रहा था, जॉन ने उसे कम्पनी से उस दिन मिला सिगरेट का पैकट कँटीले तार के उस पार आँगन में फेंक दिया। वह जाकर जॉसफ के पाँव पर पड़ा।

"कल मैं कुछ और सिगरेट और कुछ रोटी लाऊँगा," वह बोला। "और आज रात मैं चिट्ठी भेज दूँगा। मैं भूलूँगा नहीं।"

जॉसफ सिगरेट का पैकट उठाने के लिये झुका। पते वाले कागज के टुकड़े को उसने एक कंकड़ पर लपेटा और जॉन की ओर फेंक दिया।

यह काँटे-दार तार के घेरे में जा पड़ा। जॉसफ दुबारा पता लिखने जा रहा था।

"रहने दो, मैं उसे निकाल लूँगा," जॉन बोला। "यदि मैं बाड़े के समीप गया, तो वे मुझे गोली थोड़े ही मार देंगे।"

लेकिन जिस समय वह पहरे की अटारी से नीचे उतर रहा था, उसे नायक आता दिखाई दिया जो उसको ड्यूटी बदलने आ रहा था। वह वापिस अटारी की सीढ़ियों पर चढ़ गया। चढ़ते चढ़ते उसने जॉसफ से चिल्ला कर कहा—

"मैं अब पता नहीं उठा सकता। नायक आ रहा है। मैं कल नौ बजे फिर अटारी पर आऊँगा। उस समय मैं तुम्हें देखूँगा। मैं उस पते को निकाल लूँगा। अभी विदा।"

"साल्व, स्कलव!" जॉसफ ने उत्तर दिया। एक सिगरेट सुलगाता हुआ वह चला गया। इस समय भी वह पहलेवाली खाकी वर्दी ही पहने था। चार महीने में यह और खराब हो गई थी। वह बहुत दुबला हो गया था। कैम्प का खाना बहुत खराब था।

जिस समय उसकी ड्यूटी बदल रही थी, जॉन ने जॉसफ को अपनी आँख की कनखी से देखा और सोचा—

"कल मैं उसके लिये एक पूरी पाव-रोटी लाऊँगा।"

८२

उस रात जॉन को ज्वर आ गया। अगले दिन वह रोगी-गाड़ी में अस्पताल पहुँचा दिया गया। वह जानता था कि बाड़ पर जॉसफ पाव-रोटी और सिगरेट के लिये उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा। उसे यह सोच

कर खेद होता था कि वह फ्रांसीसी वहाँ बेकार प्रतीक्षा करेगा। "बेचारा जॉसफ," उसने अपने मन में कहा।

"वह प्रतीक्षा कर रहा होगा कि मैं प्रातःकाल उसके लिए पाव रोटी लाऊँगा।"

लेकिन उसने अपने आपको इस विचार से सान्त्वना दी कि वह शीघ्र ही अच्छा हो जायगा, और तब वह जॉसफ के लिये रोज-रोज पावरोटी, सिगरेट और बीटरिस के पत्र ला सकेगा।

लेकिन, जॉन को तो, डबल न्युमोनिया हो गया था। वह दो महीने तक सैनिक अस्पताल में रहा। फरवरी की पहली तारीख को डाक्टर-अफसर बोला :

"इस सप्ताह के अन्त में तुम अस्पताल छोड़ सकोगे। तुम्हें तीस दिन का रोगी-अवकाश मिलेगा।"

जॉन को सूझा कि यदि वह छुट्टी पर चला गया तो फिर वह जाकर जॉसफ को नहीं देख सकेगा, और जॉन अभी भी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि वह बीटरिस का पता लगेगा और उसे पत्र लिखेगा। वह रोटी और सिगरेटों की भी प्रतीक्षा कर रहा था। जॉन ने निश्चय किया कि वह छुट्टी पर न जायगा और अपनी कम्पनी में ही वापिस चला जायगा।

"मेरे बच्चे, तुममें वापिस ताकत आनी चाहिये," डाक्टर-अफसर ने कहा। "तुम्हें अच्छे भोजन और विश्राम की आवश्यकता है; अन्यथा बस तुम रह जाओगे। तुम अपनी छुट्टियाँ कहाँ बिताने जा रहे हो?"

जॉन में अब यह साहस नहीं रह गया था कि वह कह सके कि वह छुट्टी पर नहीं जा रहा है। उसके गालों पर लाली दौड़ गई।

"मैं समझ गया," डाक्टर-अफसर बोला। "तुम्हें जाने के लिये कोई जगह नहीं है। मैं तुम्हें स्वास्थ्य-गृह में भेज सकता हूँ, लेकिन मैं

नहीं समझता कि वह तुम्हारे लिये ठीक जगह होगी। तुम्हें निग्घा† पारिवारिक जीवन चाहिये।"

जॉन का अन्तरतम छू गया। डाक्टर ने उसकी बात समझ ली थी। उसे न तो अच्छा भोजन चाहिये था, न स्वास्थ्य-गृह और न रुपया। उसे केवल एक ऐसी जगह चाहिये थी, जहाँ वह घर की तरह रह सके।

"तुम्हें एक स्त्री चाहिये जो तुम्हारी देख-भाल कर सके और तुममें नये सिरे से आत्म-विश्वास पैदा कर सके," डाक्टर-अफ़सर ने कहा। "इसके बिना तुम कभी पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होगे। स्वाभाविक तौर पर स्वास्थ्य-गृहों में स्त्रियों की कमी नहीं है, किन्तु वे सब वहाँ रोगियों की कामुकता सन्तुष्ट करने के लिये हैं। तुम्हारे जैसी शारीरिक और मानसिक अवस्थावाले के लिये वे अत्यन्त प्रतिकूल हैं। मेरे बच्चे, तुम्हें कोमलता चाहिये, उत्तेजना नहीं।"

डाक्टर-अफ़सर ने अच्छी तरह इधर-उधर देखा-भाला। उसे अपने निदान में पूर्ण विश्वास था। वह यह अच्छी तरह जानता था कि रोगी को क्या चाहिये। उसके पेशे की चेतना ने उसे सुझाया कि वह रोगी के लिये एक स्त्री की कोमलता, निकटस्थ-सम्बन्ध, विश्वास और भक्ति-भावना का निर्देश करे। लेकिन वह अपने रोगी के लिये इनमें से किसी भी औषधि की व्यवस्था न कर सकता था। और रोगी इनके बिना स्वस्थ भी नहीं हो सकता था।

उसके पास मैडीकल-चार्ट लिये नर्स खड़ी थी। उसकी नजर उस पर जा पड़ी।

"बहन हिल्दा," वह बोला। "मैं समझता हूँ कि तुम अपनी माँ के साथ नगर में रहती हो?"

† इषत प्रवण (पंजाबी)

"जी, अस्पताल से कुछ ही गज की दूरी पर," वह बोली। वह सीधी उसकी आँखों की ओर देख रही थी थी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक सैनिक पूरे आत्म-विश्वास और आत्म-नियंत्रण के साथ अपने अफसर की प्रतीक्षा करता है।

मेडिकल अफसर मुस्कराया। उसे जो चाहिये था, सो मिल गया।

"मैं जॉन मारित्ज़ को तुम्हें सौंप रहा हूँ। तुम्हें इसके साथ अपने पति-वत् व्यवहार करना होगा। एक महीने में, जब यह स्वस्थ हो जाय, इसे यहाँ ले आना। मैं इसे इसकी टुकड़ी में वापिस भेजने से पहले एक बार और देख लेना चाहता हूँ। इसे एक स्त्री की आवश्यकता है, जो इसकी प्रेमिका, बहन और माँ एक साथ हो सके।"

'जी, मैं समझती हूँ।" उसका कद नाटा था और कपोल गुदगुदे। रंग अच्छा था। आयु बीस वर्ष की। डाक्टर ने उसकी शक्ल-सूरत की ओर ध्यान दिया। वह सन्तुष्ट था। उसमें सभी अपेक्षित गुण प्रतीत होते थे। उसके बालों की ओर देखकर उसने सोचा। "यह सौभाग्य है कि उसका रंग गोरा है। मैं इसके लिये श्यामा पसन्द नहीं करता। गोरी लड़कियों की उपस्थिति मात्र से वेदना कम होती है।"

"इसके लिये तुम्हें चौदह दिन की छुट्टी मिलेगी," उसने उसे कहा। "तुम अपना सारा समय उसी के लिये। खर्च करोगी। तुम अपना भोजन अस्पताल में कर सकती हो, लेकिन घर पर भी तुम्हें कुछ खाना-पकाना होगा। उसे सावधानी और प्रेम से पकाये हुए भोजन की अपेक्षा है, जैसे-तैसे प्लेट में परोस दिया गया खाना नहीं।"

"मैं अच्छी तरह समझती हूँ," हिल्दा बोली। उसे इस बात का अभिमान था कि यह काम उसे सौंपा गया है। वह जानती थी कि उसकी साथिन-नरसें उससे ईर्ष्या करेंगी।

"क्या तुम्हारे पास एक अकेला कमरा है?"

"अवश्य," उसने गालों पर लाली लाते हुए कहा।

"मैं सोचता हूँ, कि तुम्हें लड़का पसन्द आयेगा," वह बोला। इससे पहले कि वह कुछ उत्तर दे सके वह कहता गया : "उसका डिस-चार्ज ले लो, दोनों के छुट्टी के पास भी, और दोनों के लिये तीस दिन के राशन की प्राप्ति का पर्चा भी भर दो। राशन न० १ श्रेणी का लिखा रहे।"

"जी, निश्चयपूर्वक", हिल्दा बोली। उसने डाक्टर के लिये दरवाजा खोल दिया था।

डाक्टर दरवाज़े में से घूमा। उसने मॉरित्ज़ की ओर देखा और जल्दी से बोला :

"लड़के ! बिदा। देखो, जल्दी से स्वस्थ हो जाओ।"

८३

जॉन अस्पताल के आँगन की ओर झाँक रहा था। बर्फ पड़ रही थी। दूरी पर वह कँटीले तार के घेरे को पहचान सकता था। देर तक वह खिड़की में से देखता रहा। अचानक दो ठण्डे-ठण्डे हाथों ने पीछे आकर उसकी आँखों को ढक लिया। उसने घूम कर देखा—यह हिल्दा थी। वह उसे और जो कुछ मेडिकल-अफसर ने कहा था, सब कुछ भूल गया था।

"अपनी वर्दी पहन लो," और वेतन-क्लर्क के पास चलकर अपना वेतन ले लो", वह बोली। "मेरे पास तुम्हारा छुट्टी का पास है, और डिसचार्ज भी। छुट्टी के पास पर भी हस्ताक्षर हो चुके हैं।"

वह जल्दी-जल्दी बोलती थी। उसने वर्दी पहनने में उसकी सहायता

की। उसके चोगे के अन्दर उसने अपना हाथ डाला ताकि पहनना कुछ आसान हो जाय। नंगी-छाती पर उसके हाथ का स्पर्श, एक बहुत पुरानी अनुभूति की याद दिला गया। उसने उसे इस प्रकार कपड़े पहनाये जैसे अनेक वर्षों तक वह या तो उसका पति रहा हो, या बच्चा। इधर उसके प्रति उसका व्यवहार उपेक्षा और दूरी-दूरी का था। वह उसको दवा लाकर देने और थर्मामीटर से बुखार देख लेने के बाद तुरन्त चली जाती। अब यकायक वह सुपरिचित और निकटस्थ हो गई थी, नुसाना और जुलिसा की भी अपेक्षा। उसे लगा कि वह अकस्मात् उससे प्रेम करने लग गई है। डाक्टर की आज्ञा थी। वह उससे प्रेम करती थी, क्योंकि उसे मेडिकल-अफसर को दिया हुआ अपना वचन पूरा करना था। चोगे को ठीक करने में और उसके बटन लगाने में जिन हाथों ने उसका स्पर्श किया था, वह एक प्रेमिका के हाथ थे, एक श्रीमती के, एक बहन के, ठीक वैसे ही जैसी डाक्टर की आज्ञा थी।

मेडिकल-अफसर ने हमें अस्पताल से एक पलंग ले लेने का अधिकार दिया है," वह बोली। "शल्यचिकित्सा-भवन से एक बड़ा सफेद वाला, और साथ में दो ऊनी कम्बल। दो जनों के लिये मेरी चारपाई बहुत छोटी है।"

उसने बिस्तरे की चिन्ता की।

"मेडिकल-अफसर का कहना है कि मुझे तुम्हें अत्यधिक उत्तेजित नहीं करना चाहिये। यह स्वाभाविक है। तुम भयानक बीमार रहे हो। लेकिन एक सप्ताह के अच्छे भोजन और विश्राम के बाद एकदम दूसरी हालत हो जायगी।"

"क्या दूसरी हालत हो जायगी?" वह पूछ बैठा।

हिल्दा चुप रह गई और उसने उसके होंठों का एक चुम्बन लिया।

"तुम देखोगे।"

उसने अपना वेतन ले लिया। लेकिन उसे प्रसन्नता न थी, क्योंकि

यह आज्ञा-पालन था। यह किलेबन्दी पर काम करने की आज्ञा न थी, यह बटनों के कारखाने में काम करने की भी आज्ञा न थी और यह कैम्प में पहरा देने की भी आज्ञा न थी। उसे हिल्दा के साथ एक महीने तक प्रेम करने की आज्ञा मिली थी ताकि वह शारिरिक तथा मानसिक तौर पर स्वस्थ हो जाय। यह कोई बुरी आज्ञा न थी, लेकिन यह भी आज्ञा ही थी। और कोई आज्ञा उसे प्रसन्न नहीं कर सकती थी।

८४

लगभग एक सप्ताह तक इकट्ठे रह चुकने के बाद एक दिन हिल्दा जॉन से बोली—"क्या तुम्हें मालूम है कि यदि हम विवाहित हो जायें तो हमें चौदह दिन की अतिरिक्त छुट्टी मिल जाय?" जॉन उसकी ओर बड़ी देर तक कोमलता भरी दृष्टि से देखता रहा।

"कल तुमने कहा था कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो। क्या नहीं कहा था?"

"यह सही है," उसने समर्थन किया। उसे याद आया कि गत रात्रि को उसने, हिल्दा ने और उसकी माँ ने मिलकर शराब की पाँच बोतलें खाली कर दी थीं।

"क्यों नहीं?" वह कहती चली गई। "यदि हम जल्दी करें तो मुझे और छुट्टी मिल सकती है। इसी प्रकार तुम्हें भी। तब हमें एक कमरा, फर्नीचर और दो हजार मार्क की सहायता मिल सकती है। ड्यूटी के समय के अतिरिक्त तुम्हें बैरकों में नहीं सोना पड़ेगा। मैंने इस बारे में माँ से बात चीत की है। मैं समझती हूँ कि तुरन्त विवाहित हो जाना सबसे अच्छा है।"

जॉन कुछ नहीं बोला। उसने सोचा, वह इसीलिये कि वह दफ़्तरी-कार्रवाइयों पर अपनी छुट्टियाँ बरबाद नहीं करना चाहता।

"तुम्हें इस विषय में कुछ नहीं करना होगा," वह बोली। "जैसा आज तक करते रहे हो, तुम उसी तरह घर पर रह कर आराम करते रह सकते हो। रजिस्ट्री-आफिस में, निवास-स्थान के आफिस में, खाद्य सामग्री के आफिस में, नौकरी लेने-देने के आफिस में तथा और भी वहाँ जो कुछ करणीय होगा, मैं सब कर लूँगी। मैं जानती हूँ कि तुम एक स्थान से दूसरे स्थान फिरने में अपनी छुट्टियाँ बरबाद नहीं करना चाहते।"

जॉन मान गया। हिल्दा की दलील तर्कानुकूल थी। विवाहित हो जाने से उन्हें फ़ायदे ही फ़ायदे थे।

और वे विवाहित हो गये। उन्हें एक तीन कमरोंवाली मंजिल मिल गई, जिसके साथ एक रसोईघर तथा एक नहाने का कमरा था। उन्हें दो हजार मार्क मिले और साथ में चादरें, वस्त्र, फर्नीचर, भोजन बनाने के बरतनों, लकड़ी, कोयला, शराब और शादी के लिए मांस के कूपन, एक रेडियो-सैट तथा और भी कई चीजें मिलीं।

ड्यूटी पर जाने के लिये जॉन की सहायता करते हुए हिल्दा बोली :— "इतने लाभ रहते हुए भी यदि हम विवाहित न होते, तो हम मूर्ख होते। क्या बैरकों की अपेक्षा तुम्हें घर पर सोना अच्छा नहीं लगता?"

"निस्सन्देह," उसका उत्तर था।

"और क्या जो भोजन मैं तुम्हारे लिये शाम को बनाती हूँ वह भण्डारे के भोजन से अच्छा नहीं होता?"

उसे प्रसन्नता थी।

"सम्भवतः, दो महीने में, जब मैं अपने गर्भ की बात कर सकूँगी, मुझे और छुट्टी मिलेगी। तब तुम दोपहर और सन्ध्या को, दोनों शाम, घर पर खा सकोगे," वह बोली। "हमें अधिक खाद्य सामग्री मिलेगी।

माँ बननेवाली स्त्रियों को तीन राशन कार्डों का अधिकार है। मैं तुम्हें वास्तव में अच्छी तरह खिलाऊँगी। मैं तुम्हें मोटाया देखकर प्रसन्न होऊँगी।"

वह मुस्कराया और बोला :—

"हिल्दा। तुम एक अच्छी लड़की हो।"

८५

फन्तना की पुलिस-चौकी के नायक के पास द्वार पर चिपका देने के लिए एक नोटिस की दो प्रतियाँ आईं। सार्जेण्ट निकोलि दोबरेस्कू ने पढ़ा :

"आवश्यकता है : पुलिस को यहूदी मारित्ज़ आयोन, उर्फ जॉनि, उर्फ जेकब, उर्फ जांकी की आवश्यकता है। सभी चौकियों को सूचित कर दिया गया है। मारित्ज़ एक लेवर-कैम्प से भाग गया है। यदि कोई आदमी उसे आश्रय देगा अथवा उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की जानकारी रखते हुए पुलिस को वह जानकारी नहीं देगा तो ऐसे आदमी को कैद की सजा हो सकती है।"

नोटिस के दाहिने कोने पर जॉन की एक फोटो थी, पूरे चेहरे की और एक ओर से ली हुई। सारजेण्ट ने इसकी ओर देखा और कहा—"तो वह यहूदी ही था," उसने एक सिपाही को बुला भेजा।

"अपनी बन्दूक लो और जाओ और तुरन्त यहूदी की माँ और बाप को लेकर आओ," उसने आज्ञा दी। "नोटिस को दरवाजे पर चिपका दो। इसे अच्छी तरह लगाना ताकि हवा न उड़ा दे।"

फन्तना में बर्फ पड़ रही थी। सारजेण्ट ने गली की ओर देखा।

फादर कोरुग उसी समय गुजर रहा था। उसकी कमर कुछ झुक गई थी; हाथ में वह एक कागज-पत्र रखने का बैग लिये था।

कुछ समय के बाद सिपाही वापिस आया।

"मैं केवल औरत को साथ लाया हूँ," उसने रिपोर्ट की। "बूढ़ा बीमार है।"

इससे सारजेण्ट क्रोधित हो उठा। वह दोनों से एक साथ सवाल पूछना चाहता था।

"यदि आप आज्ञा दें, तो उसे मैं यहाँ उठा लाता हूँ।" सिपाही बोला। "वह अपने पाँव खड़ा नहीं हो सकता, मैंने उसका बिस्तर खींच कर देखा। उसका सारा बदन गोंद की गोली की तरह सूजा हुआ है।"

सारजेण्ट ने इस पर सोचा और बूढ़े आदमी से सवाल पूछने का विचार छोड़ दिया। उसने सिपाही को, बाहर प्रतीक्षा करती हुई बुढ़िया को अन्दर बुलाने के लिये कहा।

क्रोध से आग-बबूला अरिस्तित्ज़ा कमरे में आई "तुमने मेरे पीछे एक बन्दूकवाला सिपाही कैसे भेजा?" उसने पूछा। "मानो तुम्हारे पास अपनी संगीनों के साथ लाने के लिये यहाँ पर्याप्त चोर और अपराधी नहीं हैं, कि तुम ईमानदार आदमियों को हैरान करते हो? अथवा क्या तुम मुझे अपराधिनी समझते हो?"

वह गुस्से से लाल थी। जब सारजेण्ट उसे लेने आया तो उसने तय किया था कि वह उस की आँखें निकाल लेगी।

"तुम अपराधी नहीं हो, किन्तु देश की सारी पुलिस तुम्हारे लड़के के पीछे है।"

जो नोटिस उसे दिया गया था, अरिस्तित्ज़ा ने उसे देखा। जब उसने अपने लड़के की तसवीर देखी तो वह चिल्ला पड़ी।

"बेचारा, कितना दुबला गया है!"

वह दुबला लगता था, इसका मतलब था कि उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं हुआ है। दूसरी किसी बात से उसे कुछ लेना-देना नहीं था।

"पढ़ो," सारजेण्ट ने आज्ञा दी।

"किस लिये?" वह आँखें पोंछते हुई बोली। "मैं इस तसवीर से ही बता सकती हूँ कि वह भूखा है और शायद उसके बदन में जुएँ पड़ी हैं; वह पीटा गया है और कैद में रखा गया है; अन्यथा वह ऐसा दुबला कभी न दिखाई देता। और तुम मुझे क्या पढ़ाना चाहते हो? मुझे और कुछ जानने की जरूरत नहीं।"

सारजेण्ट ने गश्ती-चिट्ठी पढ़नी आरम्भ की। उसने उसे कुछ आरम्भिक शब्दों के ही बाद रोक दिया।

"सारजेण्ट! जरा केवल उतने ही हिस्से को फिर पढ़ो," वह बोली। "शायद मैं नहीं समझी। तुमने यही कहा था न कि यहूदी मारित्ज़, आयोन? यही न? यदि यहाँ यही लिखा है तो वह मेरा पुत्र नहीं है। मेरा कोई लड़का यहूदी नहीं है।"

सारजेण्ट ने उसे नोटिस दे दिया। यह देखकर कि उसका लड़का कितना दुबला गया है, उसे फिर हार्दिक वेदना हुई।

"क्या यह वह है?" सारजेण्ट ने पूछा।

"है तो यह वही, बेचारा!" वह बोली। "जिन लोगों ने उसे कैद किया, परमात्मा कभी उनके पापों को क्षमा न करे।"

"सो, तुम उसे ठीक-ठीक पहचानती हो, ओह!" वह बोला। "तो फिर उसके यहूदी न होने का बहाना क्यों करती चली जा रही हो? हम केवल समय नष्ट कर रहे हैं। जो मैं पढ़ने जा रहा हूँ, तुम केवल उसे सुनो। तुम जो कुछ कहती हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम एक अनधिकृत व्यक्ति हो। मैं केवल अधिकृत वक्तव्यों में विश्वास करता हूँ, यह अधिकारियों का वक्तव्य है, और इसलिये शास्त्र-वचन है। यह कहता है कि तुम्हारा लड़का यहूदी है।"

"यदि इस बात को तुम फिर दोहराओगे, तो मैं तुम्हारी आँखें निकाल

लूँगी," वह बोली। "क्या तुम मुझे पागल बनाना चाहते हो? बेचारा लड़का—जब वह गया तो ब..न की लकड़ी की तरह सुन्दर और मजबूत था। अब वह हाड़-मांस के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया!"

"अधिकारियों का अपमान मत करो," वह बोला। "अन्यथा मैं तुम्हें एक अफसर की ड्यूटी में बाधा डालने के अपराध में धर दबाऊँगा।"

"अधिकारियों ने नहीं, मैंने और मेरे पति ने आयोन की रचना की। यह मैं थी, जिसने आयोन को अपने गर्भ में रखा और दूध पिलाया, अधिकारियों ने नहीं। और मैं जानती हूँ कि वह यहूदी नहीं है।"

"गृह-सचिवालय ने स्पष्ट तौर पर उस गश्ती-चिट्ठी में सफेद को काला किया है कि आयोन मोरित्ज़ यहूदी है।"

"यदि सचिव का साहस हो तो आकर मेरे मुँह पर कहे। मैं उसके मुँह पर थूक दूँगी, यदि वह सोचता है कि जिसे मैंने गर्भ में रखा, वह उसके बारे में मुझसे अधिक जानता है।"

"यदि तुम रूमानिया की हो, तो मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा पति यहूदी होगा," वह बोला। "तुम दोनों में से एक को यहूदी अवश्य होना चाहिये—यह सरकारी वक्तव्य है। शायद तुम स्वयं नहीं जानती?"

"क्या तुम पियें हो?" वह बोली। "क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि मैं यह नहीं जानती कि मैं किस देवता के सामने सिर झुकाती हूँ, और कौन मेरा परमात्मा है?"

"हम मूर्तियों की चर्चा नहीं कर रहे," वह बोला। "तुम ईसाई यहूदी हो सकती हो। यह रक्त का प्रश्न है।"

"मेरे पति का रक्त ईसाई है, और इसी प्रकार मेरा भी। हाँ, जिन्होंने मेरे बच्चे को कैद किया और यन्त्रणा दी वे लोग अवश्य विधर्मी हैं।"

"क्या तुम्हें पूर्ण निश्चय है कि तुम्हारा पति ईसाई है?" उसने कुछ अपमानजनक ढंग से पूछा। "क्या तुमने इतने वर्षों के इकट्ठे जीवन में कभी किसी चीज की ओर ध्यान नहीं दिया? स्त्रियों की अपेक्षा

आदमियों को प्रमाणित करना आसान है। या उसके विषय की कुछ बातें हैं जो शायद तुम नहीं जानतीं।"

"क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि जिस आदमी के साथ मैं पैंतीस वर्ष तक सोती रही हूँ, उसे मैं नहीं जानती?" वह चिल्लाई। "एक सूअरी को भी पता चल जाता है कि वह कैसे आदमी के साथ सहवास कर रही है। तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि मैं बिना अपने पति को जाने उसके साथ पैंतीस वर्ष तक सोती रही हूँ। क्या तुम्हारे अधिकारी उस लड़के के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं, जिसे मेरे पति और मैंने मिलकर बनाया? सारजेण्ट! क्या तुम और तुम्हारे अधिकारी मुझसे उसके बारे में जवाब तलब करना चाहते हैं, जिसे मैंने अपने गर्भ में धारण किया और अपनी छाती का दूध पिलाया?"

उसकी आँख सारजेण्ट के कलमदान पर जा गड़ी थी। उसकी आँखों में लहू था। जिस कलमदान को उठाकर वह सारजेण्ट पर दे मारना चाहती थी, उसका भी रंग लाल था। दीवारें लाल थीं, स्वयं सारजेण्ट भी लाल था। उसने उसकी आँखों की दिशा भाँपी और चतुराई से उस कलम-दान को उसकी पहुँच से परे कर दिया।

उसकी अंगुलियाँ उसके आँचल को मसल रहीं थीं, मानो वह "अधिकारियों" का ही गला घोट रही हो। जब उसने देखा कि कलम-दान हटा दिया गया है तो उसे लगा कि उसका अन्तिम हथियार उससे छिन गया है। उसने अपने दाँत पीसे। तब उसने एक झटके में अपना घाघरा उठाकर अपने सिर पर डाल लिया। सारा घाघरा ऐसे उड़ गया, जैसे आँधी आई हो और उसकी कुर्ती को भी साथ ले गया। झुर्रियाँ पड़ा हुआ उसका श्याम-वर्ण शरीर नग्न हो गया था। उसके छोटे-छोटे स्तन खाली थैलियों की तरह लटक रहे थे। जिस समय उसने चक्कर लगाया, सारजेण्ट को अरिस्तित्ज़ा की सम्पूर्ण नग्नता के दर्शन हुए। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। दरवाजा जोर से बन्द हुआ। दीवारें हिल गईं।

डैस्क पर सफेद चूने के धब्बे आ पड़े। अरिस्तित्ज़ा जा चुकी थी। तीखी सीटी की तरह उसकी आवाज अभी भी सारजेण्ट के कानों में गूँज रही थी।

"तुम्हारे लिये यही मेरा उत्तर है...इन्हें एक-एक करके अपने पाइप में रखो और इनका धुआँ पियो—तुम और तुम्हारे अधिकारीगण।"

८६

घर पहुँचते ही अरिस्तित्ज़ा ने अपने बदन पर चादर डाल ली और चूल्हे पर जा झुकी। उसने और ईंधन लाकर आग जलाई और अपनी आँखों के सामने नाचते-कूदते लाल शोलों को देखने लगी। आँसू उसके गालों से ढरक-ढरक कर नीचे आ रहे थे। "मैं अपने पति को कुछ नहीं बताऊँगी," उसने अपने मन में कहा। "वह बीमार है और उसे हैरान करना अच्छा नहीं।"

उसने चारों ओर देखा। बूढ़ा आसमान की ओर मुँह किये लेटा था। अपने आँसुओं के भीतर से उसकी ओर देखते हुए उसे आयोन की याद आई जिसे अधिकारियों और पुलिस ने गलती से यहूदी समझ लेने के कारण पाँच वर्ष तक यंत्रणा दी थी। यदि वह असल में यहूदी होता तो वह बहुत जल्दी अपने लिए कुछ रास्ता निकाल लेता, लेकिन बेचारा आयोन एक बुद्धू था और वह हर किसी की हर बात पर विश्वास कर लेता था। असम्भव नहीं कि लोगों ने उसे पीटा हो और कहलवा लिया हो कि वह यहूदी है, और अधिकारियों ने उसके शब्दों को ही पकड़ लिया हो।

वह अपने हाथों में अपना सर लिये बैठी रोती रही। कुछ देर के बाद वह इसे और अधिक नहीं सहन कर सकी। उसे अपने पति को यह

बता देना पड़ा कि एक वैसे ही हरे रंग के नोटिस पर जैसा चुनाव के दिनों में छपता है, उनके पुत्र का फोटो छपा है और कि यह पुलिस की चौकी के दरवाजे पर लगा है। "मैं उसे यह नहीं बताऊँगी कि ऑयोन एक बाँस की तरह दुबला गया है—इससे वह बहुत उद्विग्न हो जायगा। लेकिन मैं उसे इतना बता दूँगी कि सारजेण्ट ने यह कहा था कि वह यहूदी है।"

"आइनकू," वह बोली। "उठ बैठो, अन्यथा तुम आज रात सो नहीं सकोगे"। बूढ़े ने उत्तर नहीं दिया। जब भी वह कभी उसे जगाती थी, बूढ़ा कभी उत्तर नहीं देता था। वह आँखें बन्द किये पड़ा रहता। जो कुछ वह कहती, सुनता सब कुछ रहता, किन्तु उत्तर नहीं ही देता।

"आइनकू," वह बोली, "सारजेण्ट ने अभी-अभी मुझे कहा है कि तुम यहूदी हो— उस बेहूदे की यह बात तुम्हें कैसी लगती है? लेकिन खैर, जो वह चाहता था उसे ठीक-ठीक मिल गया।"

उसे ऐसा लगा कि मानो बूढ़े के ओठों पर मुसकराहट है। अपने ३५ वर्ष के विवाहित जीवन में वे अनेक बार झगड़े होंगे किन्तु वह उसे हमेशा प्यार की दृष्टि से देखती रही थी। वह अनेक बार उस पर क्रोधित हुई थी, लेकिन केवल इसलिए कि वह अति नरम और अति दयालु था—हर कोई उसे ठग लेता था। लेकिन वह उसे अपने हृदय के अन्तरतम से प्यार करती थी, और इस समय सदैव से अधिक।

"प्यारे आइनकू, यदि तुम कल तक अच्छे नहीं हुए तो मैं शहर जाकर डाक्टर को बुला लाऊँगी," वह बोली।

"मैं पैसों के लिए सूअर बेच दूँगी। ज्यों ही तुम अच्छे हो जाओगे, हम दूसरा सूअर ले लेंगे। लेकिन तुम्हें अच्छा होना होगा।"

बूढ़े ने अभी भी उत्तर नहीं दिया।

"आइनकू, अपनी आँखें खोलो, मेरे पास तुम्हारे लिए एक सिगरेट है" वह बोली "इसे मैंने खास तौर पर तुम्हारे लिए रखा है।"

वह उठी और शहतीर पर छिपा कर रखी सिगरेट लेने गई।

"दियासलाई तुम्हारे पास है, क्या नहीं है?" उसने उसके समीप आते हुए पूछा। अपने विवाह के आरम्भिक दिनों में जिस प्रकार कभी-कभी वह सुबह के समय अपने पति के मुंह में सिगरेट दे दिया करती थी उसी प्रकार वह उसके मुँह में सिगरेट देने आ रही थी। वह जानती थी कि वह आँखें नहीं खोलेगा, लेकिन सिगरेट की गंध आते ही उसके ओंठ खुल जायेंगे।

लेकिन इस बार मूंदे हुए ओंठ बन्द ही रहे। उसके सिगरेट का स्पर्श करने पर भी वे नहीं ही खुले।

"आइनकु, क्या बात है?" वह बोली। उसने उसे कंधों से हिलाया। जब उसने उसे हाथ लगाया तो उसे उसकी कमीज के अंदर देह ठंडी मालूम दी। उसने उसके माथे का स्पर्श किया। वह बर्फ की तरह ठण्डा था।

बूढ़ा मर चुका था।

उसने चिल्लाना आरम्भ किया। उसे लगा कि घर से भाग खड़ी हो। लेकिन वह रुकी और मृत व्यक्ति के पास लौट आई। जिस दियासलाई से वह सिगरेट जलाना चाहती थी उससे उसने एक मोमबत्ती जलाई और उसके सरहाने रख दी।

यह जानते हुए भी कि अब कोई उसकी आवाज सुननेवाला नहीं है, वह जोर-जोर से चिल्ला रही थी।

८७

जब तक गला बैठ नहीं गया, अरिस्तिता जोर-जोर से रोती रही। तब उसने धीरे-धीरे सुसकना आरंभ किया। अन्त में थक जाने के कारण उसका सुसकना भी बंद हो गया। किन्तु अपने मृत पति के

पास बैठे-बैठे उसका मौन अश्रुरहित रुदन जारी रहा। मौन उसके दुःख की न्यूनता का द्योतक न था।

लेकिन अन्त में उसका दिमाग भी हार गया। उसका रोना एकदम रुक गया। उस समय उसे यकायक अनुभव हुआ कि वह अकेली है। जब तक वह चिल्लाती रही थी, उसे लगता था कि कोई उसके साथ है। उसने फिर रोना आरंभ करना चाहा, लेकिन अब आँसू नहीं आ रहे थे। कमरे में अँधेरा था। उसने लैम्प जलाया। उसे आश्चर्य हो रहा था कि अभी तक उसे यह कैसे पता नहीं लगा कि रात हो गई है।

उसने रोज की तरह शाम के भोजन के लिए पानी उबलने के लिए रख दिया। तब उसने परदे खींच दिये। लेकिन जब सब काम हो गया तो वह अपने आपको और भी अधिक अकेली अनुभव करने लगी। वह हतप्रभ और थकावट से चूरचूर थी। उसने मुर्दे के चेहरे पर नजर डाली। वह मुर्दे से भयभीत न थी। उस रात और अगली तीन रातें, जब तक मुर्दा दफना नहीं दिया गया, वह उस मुर्दे के साथ घर में अकेली सोई।

सारजेण्ट के शब्द उसे याद आये:—"हो सकता है कि तुम्हारा पति एक यहूदी हो।"

छाती पर हाथ बाँधे वह कमरे के बीच में खड़ी थी, नहीं जानती थी कि आगे क्या करे। पानी उबल रहा था, किन्तु उसे भूख न थी। बिस्तर लगा नहीं था और वह उसमें घुस सकती थी लेकिन उसे नींद भी नहीं आ रही थी। उसे कुछ न कुछ करने को चाहिए था। उसका दिल और दिमाग हिल गया था। वह दुःख से हैरान थी। उसे शान्ति न थी। उसे अपने आपको किसी न किसी काम में लगाना था और उसका अकेला पन भी था। उसने परदों को छोड़ा और खींचा और बिस्तर की ओर बढ़ी। उसे लगा जैसे सारजेण्ट उसके पास खड़ा हो और कह रहा हो—"हो सकता है कि तुम्हारा पति यहूदी हो।"

अरिस्तित्ज़ा ने मृत व्यक्ति पर नजर डाली। उसने बिस्तर के कपड़े पीछे खसका दिये। बदन सूजा हुआ था। उसकी नजर कमीज पर पड़ी और उस मोटे कैनवस के पाजामा पर जिसे वह अनेक बार अपने हाथ से धो चुकी थी और जिसकी अनेक बार मरम्मत भी कर चुकी थी। उसने पेटी खोली और पाजामा को घुटनों तक खिसका दिया। मृत व्यक्ति की चमड़ी का रंग पीला- नीला था।

"मैं लज्जा क्यों करूँ?" वह जोर से बोली। "आखिर वह मेरा पति है।" उसे वह दिन याद आये जब वे दोनों तरुण थे और वह उसे अपने पास नंगा देखती थी। अब उसका बदन नीला था।

"हो सकता है कि तुम्हारा पति यहूदी हो।" एक बार फिर उसके कानों में यह शब्द गूँज गये। उसकी उँगलियाँ उसके पति के पेट से नीचे जा पहुँचीं और तब कुछ और आगे बढ़ीं। यहाँ भी यह नीला पड़ गया था, वैसे ही जैसे उसकी आँखों के पपोटे, उसकी नाक और उसके ओंठ—नीले और ठण्डे। चौंककर उसने जल्दी से अपने हाथ खींच लिये, और उसके पाजामे को ऊपर घसीट कर, उसे चादर से ढक दिया। तब वह खड़ी हुई और उसने क्रॉस का चिह्न बनाया। वह सिर से पाँव तक काँप रही थी।

"करुणानिधान भगवान्, मैं आपकी कृतज्ञ हूँ कि आपने मुझे समय पर रोक लिया।" उसने फिर क्रॉस का चिह्न बनाया। "यदि मैंने देखा होता तो मैं सीधी नरक को जाती। यह एक महान् पाप होता। लेकिन मैंने नहीं देखा, मेरी नजर किसी चीज पर नहीं पड़ी। मैं यह जानना भी नहीं चाहती कि वह यहूदी है अथवा नहीं—मैं नहीं चाहती।"

उसने मृत व्यक्ति की ओर देखा।

"आयनकु, मुझे क्षमा करो," वह रोते-रोते बोली। "मैं शपथ खाती हूँ कि मैंने कुछ नहीं देखा, मैंने देखना चाहा तक नहीं। आयनकु, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कभी इतनी बुरी नहीं हो सकती।

सारजेण्ट और उसके 'अधिकारियों' ने मेरे दिमाग में यह विचार डाल दिया था। वे दोनों के दोनों नरक की आग में जलकर मर जायँ।"

८८

सिपाही मारित्ज़ पाँच कैदियों को लिये नगर में से गुजर रहा था। सुबह के सात बजे थे। जब वह अपने घर के सामने से गुजरा, हिल्दा खिड़की पर आई और उसे इशारा किया। उनका बच्चा फ्रान्ज उसकी गोद में था। जॉन को वह कहते सुनाई दी, "वहाँ वह तुम्हारा बाप है। देखो, उसके पास बन्दूक है और टोप है।"

फ्रान्ज केवल तीन महीने का था। वह यह नहीं देख सका कि जॉन के पास एक बन्दूक थी और वह नगर में से कैदियों को ले जा रहा था। लेकिन हर रोज हिल्दा उसे वही तसवीर दिखाती थी ताकि उसे अपने पिता का स्वाभिमान हो जाय—वैसा ही स्वाभिमान जैसा उसके अपने मन में था।

बाकी सारे रास्ते, जॉन, बच्चे और हिल्दा की बात सोचता रहा। जब नगर पीछे छूट गया तो कैदियों ने खेत-का मैदान पार किया। जॉन चुपचाप उनके पीछे चला जा रहा था। उसकी बन्दूक उसके कन्धे से लटकी थी। तब वे सब बाँध से नीचे उतरे और एक पुल के नीचे दरिया पर जाकर रुक गये। इसी जगह वे हर रोज काम करते थे। जॉन उनके पीछे-पीछे चला। ज्यों ही वे सूखे दरिया की जगह पहुँचे, कैदी उसकी ओर मुड़े और खिल-खिला कर बातें करने लगे। यहाँ उन्हें कोई देख न सकता था।

"साल्व, स्कलव ! क्या तुम अच्छी तरह सोये," एक कैदी ने प्रेम। पूर्वक हाथ मिलाते हुए जॉन से पूछा। यह जॉसफ़ था।

"साल्व, स्कलत्र !" जॉन का उत्तर था। उसने दूसरों के साथ हाथ मिलाया। फिर अपनी बन्दूक एक चट्टान के किनारे रख, उसने अपना कोट खोला और उसमें से एक पाव की रोटी और सिगरेट की पाँच डिबियाँ निकालीं।

जॉसफ को सिगरेट देते हुए वह बोला—"अभी मुझे तुम्हारे १५ मार्क देने हैं। मुझे साबुन नहीं मिला। मैं कल फिर प्रयत्न करूँगा। एक थैला उसके कोट के नीचे कमर से लटक रहा था। उसने उसमें से एक दूसरी पाव-रोटी निकाली और जॉसफ को दे दी। कैदी बैठ गये और सिगरेट उड़ाने लगे। जॉन ने भी एक सिगरेट जलाई। जब से उन्होंने पुल पर काम करना आरम्भ किया था, वे प्रति दिन काम का पहला आधा घण्टा जॉन के साथ बैठ कर हँसी-मज़ाक करने में बिताते थे, तब वे काम करना आरम्भ करते, और दो-पहर तक लगे रहते। उसके और कैदियों के लिये—दोनों के लिये—यह दिन का सबसे अच्छा घण्टा होता। उस समय वह उनके पतों पर आई हुई चिट्ठियाँ, सिगरेट, पाव-रोटी और उनके लिये नगर से खरीदी हुई चीजें उन्हें देता। उसके बाद उन्हें फिर काम आरम्भ कर देना होता था।

जॉन प्रायः चोरी से उनकी कुछ सहायता करता। उसे उनकी सहायता करने में आनन्द आता था। यह ठीक था कि कैदियों को उसका सहायता करना अच्छा नहीं लगता था। पाँचों बुद्धिजीवी थे और इस प्रकार का काम करने में विशेष दक्ष न थे। वह एक फावड़ा उठा लेता और उन्हें काम करने का तरीका बताता। उसे शरीर का अभ्यास था और यह उसके लिये सहज था।

"जीन, मैं तुमसे एक विषय में चर्चा करना चाहता हूँ," जॉसफ बोला।

शेष चारों जने उठ खड़े हुए और उन्होंने काम आरम्भ कर दिया। पत्थर पर खन्ती और फावड़े की चोट पड़ने की आवाज़ आने लगी।

जिस समय जॉन जॉसफ के साथ अकेला था, जॉसफ बोला—"हम

भागने जा रहे हैं। अभी नहीं, लेकिन एक न एक दिन हम पाँचों जने भागने जा रहे हैं।"

जॉन ने उसकी ओर देखा। वह सोचने लगा कि जॉसफ उससे मज़ाक कर रहा है, किन्तु वह गंभीर था।

"मैंने तुम्हारा या दूसरों का क्या बिगाड़ा है कि तुम भाग जाओगे?" जॉन ने पूछा। "क्या तुम चाहते हो कि मेरा शेष जीवन जेल में ही कटे?"

वह क्रोध से लाल-पीला था।

"तुम जानते हो कि यदि तुम भागे तो मैं तुम्हें गोली न मार सकूंगा," उसने कहा। "मैं यह कर ही न सकूंगा। और यदि मैं तुम्हें गोली न मारूँ तो मुझे जेल जाना होगा। तुम मजाक करते होगे।"

"ऐसी बात बिलकुल नहीं है," जॉसफ ने उत्तर दिया। "हम निश्चयात्मक रूप से भागने जा रहे हैं, लेकिन तुम्हें जेल जाना न होगा।"

जॉन काफी सुन चुका था।

"मैं कम्पनीवालों को कहूँगा कि वे मेरी ड्यूटी किसी और जगह लगा दें," वह बोला। "कल से मैं अब और तुम्हारे साथ पुल पर नहीं आऊँगा। यदि तुम भागने जा रहे हो तो निश्चयात्मक रूप से नहीं। न मैं तुम्हें मारना चाहता हूँ और न स्वयं जेल जाना। मैंने आज तक किसी आदमी को गोली नहीं मारी। और मैं जीवन भर के लिये काफी जेल भुगत चुका हूँ। कल से अब तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा, मैं चला जाऊँ, तो तुम जितना चाहो उतना भाग सकते हो।"

"तुम सुनते क्यों नहीं, और हमें अपनी योजना कहने क्यों नहीं देते?" जॉसफ ने पूछा। "तुम्हें हमारे साथ भागना चाहिये।"

"मुझे भागने की जरूरत नहीं," जॉन ने तुरन्त उत्तर दिया। "मेरी स्त्री है और बच्चा है। मैं एक कैदी नहीं हूँ। यदि मैं होता, तो भागने की कोशिश करता।"

"लेकिन जीन ! तुम एक कैदी हो," जॉसफ ने उत्तर दिया। "तुम बन्दूकवाले कैदी हो, और हम बिना बन्दूक के कैदी हैं। इस भेद के अतिरिक्त, हम सभी की स्थिति समान है। तुम्हें हमारे साथ भागना चाहिये।"

"कल सुबह से, मैं अब तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा," उसने एक सिगरेट जलाते हुए कहा। उसका चेहरा गुस्से से लाल था।

"मेरे प्यारे जीन ! हम तुम्हारे भले की बात सोच रहे हैं," जॉसफ ने कहा "तुम जानते हो कि युद्ध एक प्रकार से समाप्त ही है। शत्रु-पक्ष जीत रहा है। क्या तुम नहीं समझते हो कि यदि तुम जर्मन-सैनिक की वर्दी में पकड़े गये तो तुम्हारे साथ क्या बीतेगी ? वे तुम्हें दस या बीस वर्ष के लिये जेल में डाल देंगे।"

"मूर्ख मत बनो," जॉन बोला। "कोई कारण नहीं कि अंग्रेज-अमरीका-फ्रान्स वाले मुझे जेल में डाल दें। मैंने उन्हें किसी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुँचाई। रेडियो पर यह कहा जाता है कि वे बड़े न्यायी हैं।"

"जीन, तुम उनके शत्रु हो। तुम मेरे अपने देश के — फ्रांस — के शत्रु हो, और सभी सहकारी जातियों के।"

"मैं और फ्रांस का शत्रु !" जॉन उत्तेजित हो उठा। "मैं जो तुम्हारे लिये पाव-रोटी लाता हूँ, सिगरेट लाता हूँ, और जो कुछ मुझसे बन पड़ता है, करता हूँ, क्या यह सब इसलिये कि फ्रांस का शत्रु हूँ ?"

उसने अपना सिगरेट फेंक दिया। "मैं नहीं समझता था कि तुम लोग मुझे अपना शत्रु समझते हो। मैं सोचता था कि हम लोग मित्र हैं।"

"तुम जर्मनों के मित्र हो और तुम उनकी ओर से लड़ रहे हो," जॉसफ ने उत्तर दिया। "तुम मत भूलो कि तुम हिटलर के सैनिक हो।"

"जब मुझे कहीं से बीयर की एक बोतल मिलती है तो मैं उसे कहाँ

ले जाकर पीता हूँ ? बैरेक में जर्मनों के साथ, या यहाँ तुम सब लोगों के साथ ?" जॉन ने बड़े उद्वेगपूर्ण स्वर में प्रश्न किया।

"जॉसफ, मुझे जवाब दो। तम्बाकू मुझे मिलती है, वह मैं किसके साथ पीता हूँ ? जो कुछ मेरे मन में होता है, वह मैं किसके साथ बैठ कर बतियाता हूँ ? जर्मनों के साथ नहीं। एकमात्र तुम्हीं मेरे मित्र हो। और अब तुम मुझे कहने चले हो कि मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। क्या तुम ने मुझे कभी जर्मनों के साथ मैत्री-पूर्ण व्यवहार करते देखा है ? केवल तुम्हीं लोग मेरे मित्र रहे हो, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई नहीं ?"

जिस समय वह अपनी सिगरेट होंठों तक ले गया, उसके हाथ काँप रहे थे।

"तुम मुझे कह रहे थे कि सहकारी जातियाँ मुझे बीस वर्ष के लिये कैद में डाल सकती हैं। यह फ्रांस वाले भी हो सकते हैं। क्यों, क्या नहीं हो सकते ?"

"बिलकुल ठीक," जॉसफ बोला। "यदि फ्रांसीसी सैनिक यहाँ आयें तो वे तुम्हें पकड़ लेंगे।"

"यदि यह बात है, तो इसका मतलब है कि संसार में न्याय नहीं रह गया है। यदि वे मुझे गोली भी मार दें, तो मुझे तनिक खेद न होगा। जब पृथ्वी पर न्याय ही नहीं रहा और जब तुम (तथा दूसरे) मुझे अपना शत्रु कहते हो तो जीने का प्रयोजन ही क्या है ? मैं फिर तुम्हारे साथ पुल पर नहीं आ रहा हूँ। यदि तुम भागना चाहो, भाग जाओ; आगे-आगे जाओ। यह मेरा काम नहीं है। मैं तुम्हें रोकने नहीं जा रहा हूँ। यदि बिना अपनी जान को खतरे में डाले मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँगा, मैं करूँगा। भागने में किसी कैदी का सहायक बनना सदैव भला काम है। मैं वह करूँगा। लेकिन न तो मैं तुम्हारे साथ भागूँगा और न तुम्हारे लिये अपना शेष जीवन जेल में ही बिताऊँगा।"

"तुम्हें इस दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिये," जॉसफ बोला।

"हम तुम्हें भी बचाना चाहते हैं। हम इसे ही मैत्री कहते हैं। हम तुम्हें अपने साथ फ्रान्स ले चलना चाहते हैं"

"मेरे स्त्री-बच्चे यहाँ हैं," जॉन बोला। "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता।"

"कुछ ही महीनों में 'शत्रु-पक्ष' यहाँ आ पहुँचेगा। तब हम तुम्हारे स्त्री-बच्चों को अपने साथ फ्रान्स ले चलेंगे। पेरिस के ठीक बाहर मेरा एक खेत है। तुम वहाँ रह सकते हो। तुम एक किसान हो। तुम उसकी देख-भाल कर सकते हो और रुपया कमा सकते हो। जब तुम्हारे पास काफी रुपया हो जाय, तो तुम अपनी जमीन और अपना मकान खरीद सकते हो। फ्रान्स एक सुन्दर देश है। लोग भले हैं और दयालु हैं। लड़ाई समाप्त हो जाने पर तुम यहाँ जर्मनी में क्या करोगे? आओ, हम साथ भाग चलें।"

"मैं तो यहीं रह रहा हूँ।"

"हम लौटकर उसे लेने आने तक तुम्हारी स्त्री के लिए पर्याप्त रुपया छोड़ जायेंगे। हमने उसके लिए पहले से रुपया इकट्ठा कर लिया है—पाँच हजार मार्क। हम एक या दो महीने में ही उसे लेने आयेंगे। यदि तुम पाँच फ्रान्सीसी कैदियों की रक्षा करोगे तो फ्रान्स तुम्हारा कृतज्ञ होगा। अब तुम्हें इस विषय में क्या कहना है?"

जॉन ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सारा दिन वह फ्रांस के खेत की बात सोचता रहा। उसने कल्पना की—वह जमीन खरीदेगा, वह घर बनायेगा और वह हिल्दा तथा फ्रान्ज के साथ उसमें रहेगा। "दूसरे बच्चे भी होंगे," उसने अपने मन में सोचा। "मैं चाहूँगा कि मेरे एक छोटी बच्ची हो और मैं अपनी माँ के नाम पर उसका नाम आरिस्तित्ज़ा रखूँ।" अपने ऐसे भविष्य की कल्पना कर उसके चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गई।

तब वह चिढ़ गया और बोला—"मैं नहीं भाग रहा हूँ।"

८६

हिल्दा दरवाजे पर मिली। उसने सिनेमा जाने के लिये कपड़े पहन रखे थे।

जॉन ने अपनी देखी फिल्म की ओर विशेष ध्यान तक नहीं दिया। उसका मन किसी दूसरी ही जगह था। उसे साप्ताहिक समाचार रील के अतिरिक्त कुछ याद न था। इसमें युद्ध-भूमि की नवीनतम स्थिति बताई गई थी। टूटे टैंक, जले घर और मुर्दे। एक नकशा भी था। युद्ध-पाँति जर्मन सीमा के निकटतम थी। जब वे सिनेमा से निकले तो वह चुप और चिन्ता-ग्रस्त था। हिल्दा ने भाँप लिया कि वह रोज की सी हालत में नहीं है और पूछा कि तबियत तो ठीक है ? उसे बात करना अच्छा नहीं लग रहा था। बिस्तरे में घुसने से पहले उसने पालने में झूलते अपने बच्चे को देखा। लेकिन बिस्तरे में जाने के बाद भी उसे नींद नहीं आई।

"हिल्दा, यदि जर्मनी पराजित हो जाय, तो हमारा क्या होगा ?" उसने पूछा।

"जर्मनी पराजित नहीं होगा," उसने उत्तर दिया। जॉन को सिनेमा के पर्दे पर देखे हुए युद्ध के दृश्य याद आये, मान-चित्र याद आया, जॉसफ याद आया, पालने का बच्चा याद आया—और तब वह बोला :—

"हिल्दा, मैं जानता हूँ कि जर्मनी पराजित नहीं होगा। लेकिन थोड़ी देर के लिये मान लो कि वह हार जाय, तो हम क्या करेंगे ! मैं कैद कर लिया जाऊँगा। तो तुम और बच्चा कैसे जीओगे ?"

"या तो हम जीतेंगे, या मर जायेंगे—हममें से हर कोई सच्चा जर्मन अधिकृत जर्मनी में जीवित नहीं रहेगा।"

"और मान लो कि हम न मरें ?" उसने पूछा।

"हम लड़ते-लड़ते मरेंगे," हिल्दा बोली। "जब सब कुछ जाता रहेगा, तो जो जीवित बचेंगे वे आत्म-हत्या कर लेंगे।"

"यह तो पुरुषों के साथ होगा, किन्तु स्त्रियाँ क्या करेंगी ?"

"स्त्रियाँ भी यही करेंगी। यदि हम लड़ाई हार गये तो सब से पहले मैं अपने बच्चे के साथ आत्म-हत्या कर लूँगी। मैं पराजित होने की घड़ी के बाद जीवित नहीं रहूँगी। लेकिन जर्मनी हारेगा नहीं, वह कभी विजित नहीं होगा। तुम ऐसी बात सोच ही कैसे सकते हो ? अच्छा तो अब गुड-नाइट।" हिल्दा ने रजाई से अपना मुँह ढक लिया।

जॉन ने उसकी और फ्रांत्ज़ की बात सोची। उसने कल्पना की कि वे मर रहे हैं। सारी रात उसे यही स्वप्न आते रहे कि "सहकारी" जातियाँ जर्मनी में घुस आई हैं और उनके टैंक उसके घर के बाहर ही खड़े हैं। उसने स्वप्न देखा कि हिल्दा ने बन्दूक हाथ में ली है, पालने में फ्रांत्ज़ को गोली मार दी है और उसके बाद अपने को गोली मार ली है। सोते-सोते उसकी आँख निकल गई और उसे पसीना आ गया। खिड़की में से प्रकाश आ रहा था। दिन निकल चुका था। वह बिस्तर में से सरक कर बाहर आया, ताकि हिल्दा की आँख न खुल जाय, जो अभी गहरी नींद में थी। उसने कपड़े पहने और बैरकों में चला गया। अपने पहले दिन के विचार के अनुसार उसने अपनी ड्यूटी बदलने की दरख्वास्त नहीं दी। फ्रांसीसियों ने कोई आलोचना नहीं की। वे उसे देखकर प्रसन्न थे। उन्होंने हर्ष से एक दूसरे को आँख मारी। वे बहुत अधिक भयभीत थे कि अब वह फिर नहीं आयेगा।

जब वे पुल के नीचे पहुँचे, जॉसफ ने नित्य की तरह कहा :—

"साल्व, स्कलव ! क्या तुम्हें कल रात अच्छी नींद आई ?" इससे जॉन को हिल्दा के आत्म-हत्या करने और फ्रांत्ज़ को मार डालने के भयानक दुस्वप्नों की याद आई।

" जॉसफ," वह बोला। "क्या तुम कसम खाओगे कि यदि जर्मन हार गये तो तुम मेरे बीबी-बच्चों को फ्रांस ले आओगे?"

"हम कसम खाते हैं, कि ज्योंही सहकारी जातियों की सेनाएँ यहाँ पहुँचेंगी, हम उन्हें लेने यहाँ आयेंगे और यहाँ से वापिस पैरिस ले जायेंगे।"

जॉन ने अपनी बन्दूक एक ओर रख दी और सिनेमा के बाद हिल्दा से जो चर्चा हुई थी, वह सब कह सुनाई।

"लेकिन मान लो कि तुम बहुत देर करके पहुँचते हो, और तुम्हारे पहुँचने से पहले पहले वह अपने आपको और अपने बच्चे को खतम कर डालती है?"

फ्रांसीसियों ने वचन दिया कि वह पहली सैनिक टुकड़ी के साथ आयेंगे। जॉन की आँखें कृतज्ञता की भावना से चमक उठीं।

"यदि तुम मुझे यह बचन दो, तो मैं तुम्हारे साथ आता हूँ," वह बोला। "तुम कब जा रहे हो?"

"कल प्रातःकाल" जॉसफ बोला। "हम रोज़ की तरह काम पर आयेंगे, लेकिन हम कभी वापिस कैम्प नहीं जायेंगे। तुम फ्रांस के लिये यह एक बड़ी शानदार बात करने जा रहे हो। फ्रांस सदा तुम्हारा कृतज्ञ रहेगा।"

"मैं फ्रान्स के लिये कुछ नहीं कर रहा हूँ," जॉन बोला। "मैं हिल्दा को जानता हूँ—वह सदैव अपने वचन का पालन करती है। यदि हम समय से उसके पास नहीं पहुँचे तो वह अपने गोद के बच्चे के साथ ही अपनी हत्या कर डालेगी। उसका हृदय पत्थर का है।"

"उस के साथ, तुम फ्रांस की भी महान् सेवा कर रहे हो!" जॉसफ बोला।

"तुम यह बात मानने की जिद क्यों कर रहे हो कि जो कुछ मेरे मन में होता है, उसके बारे में तुम मुझ से भी अधिक जानते हो?"

जॉन का उत्तर था। "फ्रांस के लिये मुझे भागने की क्या जरूरत है? मैं फ्रांस के बारे में क्या जानता हूँ? मैं इतना ही जानता हूँ कि मेरी एक स्त्री है और एक बच्चा है। वे खतरे में हैं। मैं उनके लिए ही तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।"

६०

पिता के नाम त्रायन कोरुग का पत्र :—

"पिताजी, मैं यह पत्र सरकारी थैले में भेज रहा हूँ। कृपया अविलम्ब उत्तर दें। मेरे अन्दर सभी खतरे की घण्टियाँ बज रही हैं। मुझे डर लग रहा है कि कहीं आपको कुछ हो न गया हो। यदि आप मेरी भयभीत अवस्था पर हँसना चाहें तो हँसे, यदि इसे पागलपन समझते हों तो समझें, लेकिन मैं प्रार्थना करता हूँ कि कृपया उत्तर तुरन्त दें। मैं यह जानना चाहता हूँ, कि आप जीवित भी हैं अथवा नहीं?

"मेरा उपन्यास जारी है। मैं चौथे खण्ड पर आ पहुँचा हूँ—श्वेत खरगोशों की मृत्यु के बाद चौथा घण्टा। इस समय यान्त्रिक-दास संसार भर में एक-एक करके जो भी चीज़ उनके सामने आती है, उसे चूर-चूर करने चले जा रहे हैं। बत्तियाँ बुझ रही हैं। आदमी मृत्यु की सीमा पर अन्धकार में भटक रहे हैं।

"आपको और माताजी को मेरा प्रेम।

त्रायन और नोरा

"रगुसा—दलमतिया, बीस अगस्त १९४४।"

चतुर्थ खण्ड

६१

फॉदर कोरग ने त्रायन के पत्र का तुरन्त उत्तर दे दिया। उसने उसे सूचित किया कि वह और उसकी पत्नी पूर्णरूप से स्वस्थ हैं, और कि उसके फन्तना से जाने के बाद कोई असाधारण घटना नहीं घटी। केवल जॉन मारित्ज़ का अभी तक कुछ पता न था। कोई नहीं जानता था कि उसका क्या हुआ।

जिस समय बूढ़ा दुबारा चिट्ठी पढ़ रहा था, ठीक उसी समय जार्ज दमियन—वकील—आँगन में आया। वह एक-दो दिन वृद्ध पुरुष के साथ देहात में रहने आया था। वह लगभग प्रति सप्ताह आता था। दोनों आदमी इकट्ठे चिट्ठी डालने गये।

"त्रायन को हमारी बुरी तरह चिन्ता है," पादरी बोला। उसने वकील को वह पत्र दिखाया, जो उसे अभी मिला था।

वकील ने उसे हँसते हुए पढ़ा।

"त्रायन एक कवि है। वह अतिशयोक्ति करता है," वह बोला। "यदि तुम मुझे पूछो, तो वह व्यर्थ बहुत अधिक उत्तेजित है।"

गाँव के चौरस्ते पर लोगों की भीड़ थी। डाकिये की गाड़ी अभी वहीं थी। बूढ़े ने उसे चिट्ठी देने का प्रयत्न किया; किन्तु उसने इनकार कर दिया।

"विदेश के लिये अब कोई और चिट्ठी नहीं ली जा सकती," वह बोला। "आज शाम के छः बजे रूमानिया ने हार स्वीकार कर ली!

देश पर रूसियों का अधिकार हो रहा है। आज बादशाह ने रेडियो पर कहा है।"

पादरी ने चिट्ठी अपनी जेब में डाल ली।

६२

उस सन्ध्या को गाँव के किसान पादरी के खेत में इकट्ठे हुए। वे उसकी सलाह लेने आये थे। रूसी पड़ौस के नगर में पहुँच गये थे। नगर के लोग गाँव में भाग रहे थे। भयानक अत्याचारों की अफवाहें फैल रही थीं: स्त्रियों के साथ अनाचार करने की, उन्हें फाँसी देने की, आदमियों को गलियों में गोली मार देने की।

फादर कोरग बाहर बरामदे में चले आये। सभी किसान उत्तेजित और बेचैन थे।

"विदेशी लोग देश के शासक हो गये," उसने कहना आरम्भ किया। "वे अपने पूर्वजों से भी गये-बीते हैं, क्योंकि वे विदेशी हैं। किन्तु, सच्चा ईसाई जानता है कि पृथ्वी के सभी राज्य दुस्सह हैं। स्वर्ग का राज्य ही एक मात्र सच्चा राज्य है।"

"क्या हम जंगलों में चले जायँ और वहाँ से आक्रमण करनेवालों के विरुद्ध युद्ध जारी रखें?" एक तरुण किसान ने पूछा। "आप हमें क्या करने की सलाह देते हैं?"

"दुनियावी ताकत के लिये लड़ाई करने की बात ईसाई-धर्म कभी नहीं कर सकता।"

"तो क्या ईसाई-धर्म का हमारे लिये वही उपदेश है कि हम हथकड़ियाँ पहनने के लिए अपने हाथ आगे फैला दें?" किसान ने थोड़ी उत्तेजना के साथ पूछा। "क्या ईसाई-धर्म हमसे यही आशा करता है

कि जिस समय हमारी स्त्रियों के साथ अनाचार हो रहा हो, और हमारे घर जलाये जा रहे हों, हम हाथ बाँधे खड़े देखते रहें ? निश्चय से, ईसाई-धर्म हमसे यह आशा नहीं कर सकता। यदि करता है तो हम ईसाई-धर्म को छोड़ते हैं।"

तरुण किसान उससे सहमत थे। पादरी बहुत शान्त रहा।

"ईसा मसीह ने दिखाया है कि आदमियों को दुनियावी ताकतों के सामने सिर झुका देना चाहिये। तुम कहोगे कि रूमानिया के नये शासक अत्याचारी हैं और विदेशी हैं। मैं यह बात जानता हूँ। लेकिन साथ ही जिन विदेशियों ने उस भूमि पर शासन किया, जहाँ ईश्वर-पुत्र ने जन्म लिया था, वे भी निर्दयी बर्बर मनुष्य थे। उन हजारों बच्चों को याद करो जो ईसा मसीह के जन्म के बाद हेरोड की आज्ञा से जूडा में मार डाले गये थे। वह राज्य वास्तव में अत्याचारी था, कदाचित् कम्युनिस्ट राज्य से किसी तरह कम नहीं। लेकिन ईसा ने इसके विरुद्ध विद्रोह नहीं किया, और न और लोगों को ही विद्रोह के लिये उकसाया। उसने कहा—'कैसर की चीजें कैसर को सौंप दो और भगवान् के राज्य की प्राप्ति का प्रयत्न करो'।"

"और फॉदर, क्या तुम गिरजे में स्टालिन के लिये भी प्रार्थना करोगे ?" तरुण किसान ने पूछा।

"यदि तुम ऐसा करते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम क्राइस्ट के विरुद्ध प्रार्थना कर रहे हो। और हम अब इसके बाद तुम्हारे गिरजे में कभी पैर नहीं रखेंगे।"

"यदि देश के शासक मुझे स्तालिन के लिये प्रार्थना करने की आज्ञा देंगे, तो जैसे मैं बादशाह के लिये करता रहा हूँ, उसी प्रकार करूँगा। मैं जानता हूँ कि स्तालिन निरीश्वरवादी है। लेकिन निरीश्वर-वादी लोग भी तो मानव हैं। उनकी आत्माओं पर पाप का भार है, क्योंकि वे ईसा के पथ से दूर चले गये हैं। यह एक पादरी का कर्तव्य

है कि आदमियों की आत्माओं की मुक्ति के लिये प्रार्थना करे और सर्वाधिक बड़े पापियों की आत्माओं के लिये।"

"यदि तुम चाहो तो स्तालिन के लिये प्रार्थना कर सकते हो, लेकिन अब तुम हमें इस गिरजे में फिर कभी नहीं देखोगे," वसिल अपोस्तोल नामक किसान बोला। वह विरोधी स्वर में बोलता ही चला गया : "और यदि हम बाल्शिकों के विरुद्ध, स्वतन्त्रता और मानवता की लड़ाई लड़ने के लिये जंगलों में भाग जायँ, तो क्या हमारे लिये भी रविवारों को प्रार्थना की जायगी ?"

"जो लोग जंगलों और पर्वतों में रहकर लड़ेंगे उनके लिए पादरी न केवल रविवारों को, किन्तु प्रतिदिन प्रातः-सायं प्रार्थना करेगा, क्योंकि जो लड़ेंगे उनका जीवन सदैव खतरे में रहेगा और इसलिये उन्हें पादरी की प्रार्थनाओं की और भगवान् के पवित्र मातृत्व की करुणा की सदा अपेक्षा रहेगी।"

"यदि तुम कभी हमारे लिये गिरजे में प्रार्थना करोगे, तो तुम्हें गोली मार दी जायगी।" वसिल अपोस्तोल बोला।

"यह कोई कारण नहीं है कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करने से विरत रहूँ। ईसाइयों को मृत्यु का कुछ भय नहीं।"

"हम जंगल में जा रहे हैं," वसिल बोला। "जाने से पहले हम चाहेंगे कि आप हमें आशीर्वाद दें और हमारे लिये धार्मिक क्रिया-कलाप करें। हम नहीं कह सकते कि हम कभी वापिस आयेंगे। हम ईसा और ईसाई धर्म के लिये लड़ने जा रहे हैं।"

"यदि तुम ईसा और ईसाई-धर्म के लिये तलवार उठाओगे, तो तुम बड़ा भारी पाप करोगे," पादरी बोला। "तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम घर पर रहो। ईसाई-धर्म की रक्षा युद्ध की शक्ति से नहीं होती।"

"हम रूमानिया के लिये लड़ने जा रहे हैं, जो कि एक ईसाई-देश

है," वसिल बोला। उसने किसानों को टोलियों में बाँटना आरम्भ किया गाँव के अधिकांश श्रेष्ठ जनों ने जंगल में चले जाने का निश्चय किया था। उनमें कुछ स्त्रियाँ और लड़के भी थे। वे फादर कोरग के आँगन में घास पर घुटने टेक कर बैठ गये। उसने बरामदे में खड़े होकर एक प्रार्थना पढ़ी और फिर एक-एक को पृथक्-पृथक् आशीर्वाद दिया।

"मुझे भी अपना आशीर्वाद दें," पादरी के सामने अपने घुटने टेकते हुए जार्ज दमियन ने कहा। "मैं भी इनके साथ मानवता और स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने जा रहा हूँ।"

"जो भी चाहते हैं, ईसाई-धर्म उन सभी को आशीर्वाद देता है," पादरी बोला।

"क्या उनको भी जो जान-बूझ कर गलत रास्ते पर जाते हैं?" जार्ज दमियन ने पूछा। अथवा आपको विश्वास है कि हमारा रास्ता ठीक है?"

"जो चाहो सो करो, शर्त यही है कि उसके मूल में प्रेम की भावना हो," पादरी बोला। "जब तक तुम्हारे कर्मों के मूल में सच्चा प्रेम है, तुम्हें पाप से डरने की जरूरत नहीं। तुम ठीक रास्ते पर हो।"

किसानों की तरह जॉन दमियन ने भी फादर कोरग के हाथ चूमे और जंगल की ओर जानेवाले दल के साथ हो लिया।

घर के अन्दर पादरी की स्त्री रो रही थी।

६३

किसानों को गाँव छोड़कर गये दो घंटे गुजर गये थे। पादरी ने कुछ पढ़कर अपने मन को शान्त करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसी समय दो किसान, जो उस गाँव के नहीं थे, लाइब्रेरी में बढ़े चले आये। उन्होंने

कमरे के अन्दर प्रवेश करने से पहले दरवाजे पर 'ठक-ठक' भी नहीं किया। उनके बाजुओं पर जातीय रंग के पट्टे बँधे थे और हाथों में पिस्तौल थे। पादरी ने ऐसी शक्ल बनाई जैसे उनके शस्त्रों की ओर उसका ध्यान गया ही न हो। वह उनकी ओर देखकर मुस्कराया :—

"मैं समझता हूँ कि मुझे गाँव के पंचायत-घर में चलना होगा।" उसने यह बात जोर से कही ताकि साथ के कमरे में उसकी स्त्री सुन ले और भयभीत न हो।

"हमें हिदायत मिली है कि हम तुम्हें जनता की पंचायत के सामने पेश करें," उनमें से एक किसान ने कुछ उच्च-स्वर से कहा।

पादरी ने दूसरे कमरे की ओर देखा। "हो सकता है कि उसने न सुना हो, आशा है कि उसने नहीं ही सुना होगा," उसने अपने मन में सोचा। उसने पुस्तक नीचे आराम-कुर्सी पर रख दी और बाहर चला गया। आँगन छोड़ने से पहले उसने पीछे घूम कर देखा। यह 'बिदा' की नजर थी।

दोनों किसान उसे ले चले, एक-एक दोनों ओर। वह अपना सिर ऊँचा किये दरवाजे में से गुजरा। उसकी चाल एक कैदी की चाल न थी। ऐसा लगता था कि उसकी भौंहें आकाश तक चढ़ी हैं। अपने घर से पंचायत-घर तक उसने गाँव में से सारा रास्ता पैदल तय किया।

६४

जनता की पंचायत का अध्यक्ष था मरकु-गोल्डनबर्ग। वह असेम्बली-भवन में मुखिया की कुर्सी पर विराजमान था। उसके बाल एक दण्ड-प्राप्त व्यक्ति की तरह तराशे हुए थे। कुछ ही दिन पहले रूसियों ने

उसे जेल-मुक्त किया था। वह लांग्येल का हत्यारा होने के कारण जेल में अपनी सजा काट रहा था।

उसके दाईं ओर, मुखिया की मेज पर जॉन की माँ अरिस्तित्ज़ा बैठी थी। मरकु ने उसे इसलिये चुना था क्योंकि वह गाँव की दरिद्रतम "नागरिक" थी। बाईं ओर आयोन कैलुगर था। उसने पन्द्रह वर्ष पहले अपनी कुल्हाड़ी से एक सिपाही की हत्या कर दी थी। इसी के फल-स्वरूप उसे अब 'न्यायाधीश' बना दिया गया था।

फादर कोरग ने उसका अभिवादन किया। मरकु ने चुपचाप उसकी ओर घूर कर देखा। शेष दोनों ने अपनी आँखें नीचे कर लीं और उसकी ओर न देखने का बहाना किया। वे अनेक आदमियों को दण्डित कर चुके थे। पंचायत-घर में इस समय उन तीन न्यायाधीशों और रंगीन-पट्टेवाले उन दो किसानों के अतिरिक्त कोई न था। मरकु ने पादरी से उसका नाम, आयु और पेशा पूछा।

"पादरी होना कोई पेशा नहीं है," उसने कहा। "एक चमार जूता बनाता है, एक दरजी कपड़े सीता है। हर मज़दूर कुछ न कुछ पैदा करता है। एक पादरी क्या पैदा करता है?"

अरिस्तित्ज़ा और आयोन कैलुगर ने अपनी आँखें जमीन पर गड़ाये रखीं। दोनों पट्टी-बन्द किसान पादरी की पीठ पीछे हँस रहे थे।

"तुम्हारा कोई पेशा नहीं है," मरकु बोला। "यह एक अपराध है कि इतनी आयु हो जाने पर भी अभी तक तुमने कोई पेशा नहीं अपनाया है। तुम अभी तक केवल मज़दूरों का खून पी-पीकर जीते रहे हो।"

मरकु का चेहरा नीबू की तरह पीला था। उसके ओंठ पीले और नीले थे। पादरी को याद आया कि मरकु के पिता, वृद्ध गोल्डन-बर्ग के भी वैसे ही पतले-पतले ओंठ थे, किन्तु उन पर मुस्कराहट खेलती थी। मरकु के ओंठ बन्द और खिंचे थे।

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हें जनता की पंचायत के सम्मुख क्यों पेश किया गया है," मरकु ने पूछा।

"नहीं," पादरी का उत्तर था।

"एक प्रतिक्रियावादी का सामान्य उत्तर," मरकु विषैले-स्वर में चिल्लाया। "प्रतिक्रियावादी हमेशा कहता है कि उसे मालूम ही नहीं कि उसे अदालत के सम्मुख क्यों पेश किया गया है। क्या तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने फासिस्ट-दल का संगठन किया, जो अंत में जंगल भाग गया?"

"मैंने कोई दल संगठित नहीं किया" पादरी बोला। "मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपने घर के आँगन में गाँव के कुछ तरुणों के लिये प्रार्थना की, क्योंकि उन्होंने मुझे वैसा करने के लिये कहा।"

"क्या वे फासिस्ट डाकू नहीं थे?" मरकु बोला। "यदि तुम उनके पापों का प्रायश्चित्त करानेवाले नहीं हो, तो तुमने उन के लिये प्रार्थना क्यों की?"

"मैं जानता था कि जिन तरुणों के लिये मैंने प्रार्थना की, उनके सामने एक बड़ा भारी प्रश्न था। उन्हें भगवान् के पवित्र मातृत्व की दया की आवश्यकता थी। मैंने प्रार्थना की कि उन्हें सहायता मिले, और ज्ञान तथा न्याय के प्रकाश से उनका मार्ग प्रशस्त हो।"

"जनता की पंचायत तुम्हें फाँसी पर लटका कर प्राण-दण्ड देने का निर्णय करती है," मरकु ने कहा। तुम सशस्त्र विद्रोह संगठित कर सार्वजनिक सुरक्षा के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के अपराधी पाये गये हो।"

अरिस्तित्ज़ा और आयोन वैलुगर ने डर के मारे अपनी आँखें ऊपर उठाईं और मरकु की ओर देखा। वह लिख रहा था। उसने उनकी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। उन्होंने पादरी की ओर देखा। फादर कोरग उनकी ओर देख शान्त-मुद्रा में मुस्कराया।

"कल सूर्योदय होते ही सार्वजनिक रूप से फाँसी दी जायगी," मरकु बोला। "जनता की पंचायत का अधिवेशन समाप्त हुआ।"

९५

पट्टीबन्द किसानों ने फादर कोरग को पकड़ लिया और पंचायत-घर के साथवाले अस्तबल में बन्द कर दिया। वहाँ उसे जार्ज दमियन—वकील मिला। वह जंगल के रास्ते में पकड़ लिया गया था। सिपाहियों का सारजेण्ट मिला। गाँव के अत्यन्त समृद्धिशाली किसानों के साथ वसिल अपोस्तोल मिला। उन सब को मृत्युदण्ड मिला था, और दूसरे दिन सूर्योदय होने से पहले उनकी मृत्यु होनेवाली थी। जनता की पंचायत की यह आज्ञा थी।

रात को एक-एक करके अस्तबल से कैदियों को निकाला गया और उन्हें खाद के गढ़े के किनारे ले जाकर गोली मार दी गई। मरकु के पास आज्ञा आ गई थी कि वह सार्वजनिक रूप से उनकी हत्या न करे, ताकि लाल-सेना के विरुद्ध जनता न भड़क उठे। उसने उनकी गर्दन में गोली मार-मार कर उन्हें स्वयं समाप्त कर दिया।

९६

आधी रात के बाद ही अरिस्तित्ज़ा को खिड़की पर 'टक-टक' की आवाज सुनाई दी। यह सुसाना थी, जॉन की स्त्री। उसकी चीत्कार सुनकर अरिस्तित्ज़ा ने समझा कि रूसी लोगों ने गाँव पर अधिकार कर लिया होगा और उसकी बहू के साथ अनाचार किया होगा। वह क्रोध के मारे बिस्तर में से कूद पड़ी। वह जानती थी कि फन्तना में रूसी-सैनिकों की एक टुकड़ी आनेवाली है और कि रूसी लोग औरतों के साथ अनाचार करने के आदी हैं, लेकिन उसे यह असह्य था कि वे सर्वप्रथम

उसकी पुत्र-वधू का ही हाथ पकड़ें—जनता की पंचायत को न्यायाधीश की पुत्र-वधू का।

"तुम्हें क्या हुआ है?" दरवाजा खोलते हुए उसने पूछा।

"फादर कोरग को गोली मार दी गई है," सुसाना बोली।

"यह सत्य नहीं है," अरिस्तित्ज़ा ने कहा। "गोल्डन-वर्ग कल उसे गिरजे के आँगन में फाँसी देना चाहता है। लेकिन वह ऐसा कर न सकेगा। गाँव में केवल वही अकेला न्यायाधीश नहीं है, मैं भी हूँ। कल हम पादरी की दूसरी पेशी करेंगे और उसे रिहा कर देंगे। मैंने आयोन केलुगर से बात की है। जाओ और पादरी की स्त्री से कहो कि वह शान्ति से सो जाय और चिन्ता न करे।"

"फादर कोरग मर चुके हैं," सुसाना बोली। "कुछ आदमियों ने, जिन्होंने उसे गोली मारे जाते देखा है, आकर मुझे बताया है।"

अरिस्तित्ज़ा ने विश्वास नहीं किया। जो हो, वह घर में भी वापिस नहीं गई। सुसाना के साथ वह गाँव के पंचायत-घर की ओर चली। उसके बदन पर सोने के कपड़ों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। रात्रि प्रकाशमान थी। दोनों औरतें चुप-चाप सड़क के बीचो-बीच चलीं। सुसाना चुप-चाप रो रही थी। बीच-बीच में वह अपने चोगे के कोने से आँसू पोछती चलती थी। अरिस्तित्ज़ा गुस्से के मारे गुर्रा रही थी। उसने कई बार सुसाना को सम्बोधित करके कहा—

"तू जाग रही है, या सो रही है? तुम्हारी नसों में क्या है, रक्त या पानी?"

सुसाना ने शीघ्रता से कदम उठाया, किन्तु उसे विश्वास था कि सारी शीघ्रता बेकार है। पादरी मर चुका था और अब कोई उसके लिए कुछ न कर सकता था।

गाँव के पंचायत-घर में अभी भी रोशनी थी किन्तु आस पास कोई न था।

"हम अस्तबलों की ओर चलें," अरिस्तित्ज़ा बोली। "मैं एक न्यायाधीश हूँ और मुझे अधिकार है कि मैं पूछूँ कि क्या चल रहा है।"

अस्तबलों के अन्दर घुप अँधेरा था। दरवाजा बन्द था, लेकिन उसमें ताला नहीं लगा था। जैसे ही वे अन्दर घुसे, अरिस्तित्ज़ा को यकायक डर लगा।

"तुम्हारे पास दियासलाई नहीं है ?" उसने सुसाना से पूछा।

"मां, नहीं।"

"तुम्हारे पास कभी कुछ नहीं होता," अरिस्तित्ज़ा ने क्रोध भरे स्वर में कहा। "मेरे बेटे जैसा कोई मूर्ख ही तुझ नंगी को अपना सकता था।"

सुसाना ने बुरा नहीं माना। वह जानती थी कि अरिस्तित्ज़ा उस पर अपना गुस्सा इसीलिये उतार रही है, क्योंकि उसे डर लग रहा है कि कहीं पादरी सचमुच ही मर न गया हो।

"यहाँ कोई है ?" अस्तबलों के बीच खड़े होकर अरिस्तित्ज़ा ने ज़ोर से आवाज दी।

"मां, यहाँ कोई नहीं है," सुसाना बोली। मरकु आकर अस्तबल से सभी कैदियों को ले गया और खाद के गड्ढे के पास ले जाकर गोली मार दी।"

"तुम्हें स्वप्न आ रहा है," अरिस्तित्ज़ा बोली। "पहले बिना हम दूसरे न्यायाधीशों का परामर्श लिये वह ऐसा काम कैसे कर सकता है ?"

सुसाना चुप थी। दोनों औरतें आँगन में गईं और अँधेरे में मुर्दों की खोज करने लगीं।

"आँगन में कुछ नहीं है," अरिस्तित्ज़ा ने कहा। "मैंने कहा था कि तुम स्वप्न देख रही हो। शायद उनको किसी दूसरी जगह ताले में बन्द कर दिया गया है, और प्रतिक्रिया-वादियों ने गाँव में अफवाह उड़ा दी है कि मरकु ने उन्हें गोली मार दी है।"

सुसाना अरिस्तित्ज़ा को छोड़ अकेले ढूंढ़ने लगी। उसने ध्यान से खाद के गड्ढे के चारों ओर सारे आँगन को देखा-भाला। उसे निश्चय

था कि पादरी को गोली मार दी गई है। गाँव के जिन लोगों ने उस दुर्घटना को घटते देखा था उन्होंने सब किसी को बताया था कि कैदियों को एक-एक करके अस्तबल से ले जाया गया है और पीठ में गोली मार दी गई है।

"हम चलकर गोल्डन-बर्ग का पता लगायेंगी", अरिस्तित्ज़ा बोली। सुसाना के मुँह से एक चीख़ निकली, और वह घास पर गिर पड़ी। अरिस्तित्ज़ा उसकी ओर झपटी।

"अब तुझे क्या हो गया है, निकम्मी कहीं की!" वह बोली। "क्या तुझे अपनी छाया दिखाई दी है, और तू उसपर से लाँघ गई है?"

लेकिन शब्द उसके हलक़ से ही चिपटे रह गये। सुसाना के पास, गड्ढे के किनारे, घास में दूसरी लाशें पड़ी थीं।

सबसे पहले अरिस्तित्ज़ा ने सुसाना के पाँव के पास पड़ी हुई, सफेद कमीज़ पहने, एक लाश को पहचाना। दूसरी, सिर से पैर तक काले वस्त्रों में, कुछ और कदम पर थी। आगे कुछ और थीं। अरिस्तित्ज़ा ने अपना साहस बनाये रखने के लिये 'क्रास' बनाया।

"उठ खड़ी हो, मुझे तुम्हारी जरूरत है," उसने आज्ञा दी। उसे मुरदों का भय नहीं था, किन्तु उस समय वह अकेली नहीं रहना चाहती थी।

सुसाना काँपती हुई खड़ी हो गई। अरिस्तित्ज़ा ने उसका हाथ पकड़ा। दोनों औरतों ने हर लाश पर झुक-झुक कर उनकी परीक्षा आरम्भ की। उन्हें पहचानने के लिये उन्होंने उनके चेहरों को बहुत नजदीक से देखा। उनमें से नौ गड्ढे के किनारे पर थीं। तीन अन्दर गिर पड़ी थीं। अरिस्तित्ज़ा एक लाश पर झुक कर उसे ध्यान से देख रही थी।

"यह निकोलै च्युबोतरु है, पूर्व अध्यक्ष," वह बोली। उसने अपने घुटने टेके और उसकी छाती पर कान रख कर देखा कि उसका दिल अभी भी धड़क रहा है अथवा नहीं। वह उठी और बोली :

"मर गया ।"

कुछ और आगे वह दूसरे आदमी पर उसके हृदय की धड़कन सुनने के लिये झुकी ।

"उनके बदन अभी भी गरम हैं, लेकिन उनके हृदय की धड़कन बन्द हो गई है । यह कोन्सटैन्टिन सोलोमन था । परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे," वह बोली । "जब मैं जवान थी, तो उसने मुझसे शादी करनी चाही थी ।"

उस दुःख पर क़ाबू पाने के लिये जो उस पर हावी हुआ चला जा रहा था, उसने क्रोध भरे स्वर में सुसाना से कहा : "मेरी मदद करो, क्या तुम नहीं कर सकतीं ? देखो, यदि इनमें से कोई अभी भी जीवित हो ! वहां एक मूर्खा की तरह खड़ी खड़ी मत बुड़बुड़ाओ ।"

"मां, मैं असमर्थ हूँ," सुसाना बोली । "मुझे डर लगता है ।"

"तुम किस बात से डरती हो ?" अरिस्तित्ज़ा ने पूछा । "उनकी छाती पर अपने कान रखो, एक मिनट के लिये साँस रोके रहो और पता लगाओ, यदि अभी भी दिल में धड़कन है । यदि न हो तो परमात्मा से प्रार्थना करो कि उसकी आत्मा को शान्ति मिले और अपने क्रॉस बनाओ । यदि धड़कन होगी, तो केवल क्रॉस बनाने से काम न चलेगा । कुछ और करना होगा । समझीं ?"

"मैं समझती हूँ, किन्तु मुझे डर लगता है," सुसाना बोली ।

"तू दरिद्र कहीं की, निकम्मी ।" अरिस्तित्ज़ा क्रोध से बोली । "मेरे लड़के को क्या हो गया था कि उसने तुझसे विवाह किया ?"

अरिस्तित्ज़ा दूसरी लाश पर झुकी हुई थी ।

"यह वह तरुण वकील होगा जो फादर कोरग के पास आया करता था," वह बोली । "वह श्री आयन का मित्र था—एक यथार्थ सत्पुरुष ।"

उसने उसकी जाकेट एक ओर खींची और क्षण भर सुनती रही ! तब उठ खड़ी और बोली :

"परमात्मा उसे क्षमा करे। वह भी मर गया है। मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि बेचारे की स्त्री और बच्चे घर पर उसकी प्रतीक्षा कर रहे हों।"

तब वह अचानक सुसाना को बिलकुल भूल गई। उसे पादरी की लाश मिल गई थी और वह दूसरी लाशों की अपेक्षा विशेष आदर-बुद्धि से उस पर झुकी हुई थी। उसने उसके चोगे को एक ओर करके कान दिया। तब वह फुसफुसाई :

"लड़की ! फादर कोरग अभी जीवित है।"

यह सुनते ही कि पादरी मरा नहीं, सुसाना ने और भी अधिक रोना आरम्भ कर दिया।

"क्या तुम्हारी बुद्धि मारी गई है ?" अरिस्तित्ज़ा ने पूछा। "प्रसन्न होने को बजाय तुम ने चिल्लाना शुरू कर दिया। यहाँ आओ और आकर स्वयं देखो कि उसका दिल कितनी अच्छी तरह धड़क रहा है।"

सुसाना पादरी के पास झुकी, लेकिन उसने अपना कान उसकी छाती पर नहीं रखा। अरिस्तित्ज़ा ने पादरी के हाथ को अपने हाथ में लिया, और बोली :—

"लड़की ! उसमें अभी भी उष्णता है। देख, कितनी उष्णता है।"

अरिस्तित्ज़ा के कान, आँख और हाथ पादरी के शरीर में जीवन के कुछ और प्रमाण पाने के लिये प्रयत्न-शील थे। लेकिन उसके हाथों और गालों की गरमी, तथा उसके हृदय की धड़कन की आवाज के अतिरिक्त उसे अपने पास के आदमी में जीवन का कोई और चिह्न दिखाई नहीं दिया।

"तो जीवन यही कुछ है—हृदय की धड़कन और शरीर से निकलने-वाली गरमी।" उसे लगा कि यह जैसे कुछ भी नहीं।

"यदि आदमी के जीवन में यही कुछ है तो यह सचमुच बहुत कुछ नहीं," उसने कहा।

उनके चारों ओर सर्वत्र मौन था।

"फादर कोरग के शरीर से कस्तूरी-गुलाब की क्या मधुर गन्ध आती है! उसका शरीर एक गिरजे के समान है। कितनी मीठी सुगन्ध है! एक वास्तविक गिरजा-घर के समान।"

पादरी के अतिरिक्त शेष सभी मर चुके थे। जो तुरन्त नहीं मरे थे, वैसे कुछ लोगों के शरीर में अभी भी गरमी थी। कुछ देर तक उन्होंने यन्त्रणा भुगती। उनकी लाशें बता रही थीं कि मृत्यु द्वारा वेदना से मुक्त होने से पहले वे कैसे घास में लोट-पोट होती रही थीं। शेष सब एकदम पथरा चुकी थीं। शरीर में गोली के प्रवेश करते ही उनकी मृत्यु तुरन्त हो गई थी।

अरिस्तित्ज़ा ने अपने चोगे पर अपने हाथ पोंछे। बिना यथार्थ कारण जाने उसने इस बार पाँचवीं या छठी बार अपने हाथ पोंछे थे। इस बार उसके घुटने भी भीग गये थे।

"यह उनका रक्त होगा," उसने सोचा। "अँधेरे में मैंने अपने पाँव और हाथ रक्त से सान लिये होंगे। आदमी के खून पर पैर रखना महान् पाप है। लेकिन ईश्वर मुझे क्षमा कर देगा। यह इसीलिये हुआ क्योंकि अँधेरा था।"

जिस समय अरिस्तित्ज़ा नीचे गढ़े में दूसरी लाशों की परीक्षा कर रही थी, सुसाना पादरी का माथा मलती रही।

"जख्म कहाँ है?" गढ़े में से जैसे-तैसे बाहर निकलते और अपने हाथ पोंछते हुए अरिस्तित्ज़ा ने पूछा।

"माँ, मैं नहीं जानती।"

"तुम कुछ नहीं जानतीं!" अरिस्तित्ज़ा बोली। "जख्म तुरन्त बन्द होना चाहिये। यदि हम तुरन्त इस पर कुछ नहीं रखते तो सारा रक्त बह जायगा और अपने साथ जीवन को भी बहा ले जायगा।"

उसने वह जगह ढूंढ़ निकाली, जो रक्त से गच्च हुई पड़ी थी। पादरी की पीठ में दाहिने कन्धे के ऊपर जख्म था।

"इस जख्म को बाँधने के लिये मुझे कुछ लत्ता दो,"—अरिस्तित्ज़ा ने आज्ञा दी।

"कपड़ा कहाँ मिलेगा?" चिन्ता से सुसाना भयानक रूप से चिन्तित हो उठी। अरिस्तित्ज़ा का सबर जाता रहा। उसने अपना चोगा उठाया कि अपनी कुर्ती में से एक कत्तर फाड़ ले। उसके हाथों ने अपने चोगे के नीचे कुर्ती को बहुत ढूँढ़ा किन्तु वह नहीं ही मिली। उसने चोगे को छाती तक उठा कर देखा।

"अरे! मेरी नामुराद कुर्ती कहाँ है?" वह बोली। तब उसे ख्याल आया कि प्रातःकाल पंचायत-घर जाने की उसे इतनी जल्दी रही थी कि वह उसे पहनना ही भूल गई थी। "मेरे बदन पर केवल मेरा चोगा है, और कुर्ती नहीं है," उसने कहा।

उसने पादरी को अपने हाथों में उठाया, उसका चोगा खोला और उसके कन्धे के जख्मी हिस्से को नंगा किया।

"सुसाना, मुझे अपनी कुर्ती दो," उसने आज्ञा दी। उसने अपनी हथेली से उसके जख्म के रक्त को पोंछा।

"उसके शरीर से कैसी कस्तूरी-गुलाब की मीठी सुगन्ध आती है। उसका शरीर ठीक गिरजे की तरह सुगन्धित है।"

अरिस्तित्ज़ा ने सुसाना की ओर देखा। वह अपने वस्त्र उतार चुकी थी और अब अपनी कुर्ती उतार रही थी। वह नगी थी।

"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?" अरिस्तित्ज़ा चिल्ला उठी। "क्या तुम्हें पादरी और मुर्दे के सम्मुख नंगी खड़ी होते लज्जा नहीं आती?"

"बिना पहले अपने वस्त्र उतारे मैं अपनी कुर्ती कैसे उतार सकती हूँ?" सुसाना ने पूछा।

"रण्डी कहीं की," उसकी बात बिना सुने ही अरिस्तित्ज़ा बोली। "पादरी और और मुर्दे के सामने नंगी घूम रही है।"

उसने जमीन पर थूक दिया।

अरिस्तित्ज़ा और सुमाना दोनों ज्वर के खेत के किनारे खड़ी हो गई और उन्होंने पादरी की देह को घास पर लिटा दिया। वे उसे उसके चोगे में ही लपेटे वहाँ तक ले आई थीं। आरम्भ में उन्होंने उसे दोनों सिरों से पकड़ कर बीच में लटकाते हुए ऐसे उठाया जैसे कोई बिस्तर हो लेकिन वह उन दोनों के लिये अत्यधिक भारी था। उनके गालों से पसीना बह चला। जब जब भी वे रुकीं, हर बार अरिस्तित्ज़ा ने झुक-झुक कर देखा कि पादरी का दिल अभी भी 'टक-टक' कर रहा है या नहीं। तब उन्होंने उसे उठाया और आगे बढ़ीं। लेकिन अब वे उसे लटका कर नहीं ले चल रही थीं, किन्तु अपने पीछे घसीट कर ले चल रही थीं।

"भगवान् करे कि वह रास्ते में न मर जाय," अरिस्तित्ज़ा बोली। "हमें जल्दी करनी चाहिये। विश्राम करने के लिये कल और कल के बाद बहुत समय रहेगा।"

अरिस्तित्ज़ा ने पादरी को अपने घर ले चलने का साहस नहीं किया था। वहाँ कम्युनिस्ट पता पा जा सकते थ। "एक बार वह बच गया हो, किन्तु वह दूसरी बार उसे अच्छी तरह ठिकाने लगा देंगे," वह बोली। "यह अधिक अच्छा होगा कि हम उसे अपने लड़कों के पास जंगल में ले चलें। वे उसकी देख-भाल करेंगे और उसे फिर अपने पैरों पर खड़ा कर देंगे। एक बार वह जंगल में पहुँच गया तो कम्युनिस्ट फिर कभी उसका पता न पा सकेंगे।"

"जिले का मैडिकल-आफिसर उनके साथ है," सुमाना बोली। "यदि हमें केवल वह मिल जाय। वह गाँव से आरम्भिक शुश्रुषा के सभी साधन पट्टी आदि साथ ले गया है।"

"हमें वह निश्चित मिल जायगा," अरिस्तित्ज़ा बोली। लेकिन क्रमशः जैसे ही वे जंगल के समीप हुए, उनकी आशा लड़खड़ा गई। जंगल बहुत बड़ा था। उन्हें उसमें जिले का मैडिकल-आफिसर मिल ही नहीं सकता था। यह ऐसा ही था जैसे घास की ढेरी में सुई को ढूंढ़ना।

"यदि हमें अपने लड़के नहीं मिलते," अरिस्तित्ज़ा बोली। "तो हमें ही उसे ले जाकर कहीं न कहीं कम्युनिस्टों से छिपा कर रखना होगा। यह कुछ तो होगा। इसके बाद हम देख लेंगे। तुम्हें उसके पास जंगल में तब तक रहना होगा, जब तक मैं गाँव से न लौट आऊँ। मैं दिन चढ़ने से पहले कुछ खाना और पानी लेकर लौट आऊँगी। सम्भव है कि कोई बूढ़ी औरत भी साथ आ जाय जो जख्मों को ठीक करना जानती हो।"

सुसाना ने रोना आरम्भ किया। उसे आधी रात के समय जंगल में अकेले रहने से डर लगता था। उसने भगवान् से चुपचाप प्रार्थना की, कि किसी न किसी तरह लड़के मिल जायँ।

६७

जंगल के किनारे एक बड़ी सड़क जाती थी। उसे पार करने से पहले अरिस्तित्ज़ा ने कान दिया कि कोई आ तो नहीं रहा है। लारियों की एक कतार धीरे-धीरे सड़क पर चली आ रही थी। मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह दूर से इंजन की आवाज सुनाई दे रही थी। लारियों की कतार उन्हीं की ओर बढ़ी आ रही थी। दोनों स्त्रियों ने अपना भार घास पर रख दिया और ज्वार के डण्ठलों में छिपे-छुपे सड़क के पास जा पहुँचीं।

"यह रूसी कतार है," अरिस्तित्ज़ा ने कहा। "लेकिन इसकी परवाह नहीं। हम उनके चले जाने तक प्रतीक्षा करेंगे। वे हमें देख नहीं सकते।"

गाड़ियाँ समीप आ रही थीं। जब वे पहाड़ी के शिखर पर पहुँचीं और उन औरतों से दूर नहीं रह गईं तो वे एकदम रुक गईं। इं

की भिन-भिन रुक गई और झींगुर की आवाज सुनाई देने लगी। कुछ सैनिक ट्रक में से कूद पड़े। वे परस्पर फुसफुसा रहे थे।

"वे जर्मन हैं," सुसाना बोली।

अरिस्तितज़ा ने अपने कान खड़े किये। वे ज्वार के खेत में छिपी रह कर, बसों की कतार के थोड़ा और समीप आ गईं तथा फिर सुना।

"वे जर्मन हैं," अरिस्तितज़ा बोली। "यदि हम इनसे पादरी के लिये कुछ माँगें तो इसमें तुम्हारा क्या विचार है? उनके साथ एक डाक्टर या एक चिकित्सक सिपाही अवश्य होगा।"

दोनों औरतें ज्वार के खेत में से निकल आईं।

"क्या तुम जर्मन का एक शब्द भी नहीं जानतीं?" अरिस्तितज़ा ने पूछा। "एक भी शब्द नहीं? यदि हम उन्हें कुछ न कहेंगे तो वे समझेंगे कि हम शत्रु हैं और हमें गोली मार देंगे···।"

"मैं एक भी शब्द नहीं जानती," सुसाना ने उत्तर दिया।

वे लारियों के थोड़ा और समीप गईं और रुक गईं। वे सड़क पर एक दूसरे से सट कर खड़ी हो गईं। अरिस्तितज़ा ने सुसाना की कलाई पकड़ ली और चिपट कर खड़ी हो गई।

"तुम्हारी आयु मुझसे कम है," वह बोली। "कोई एक जर्मन शब्द याद करने की कोशिश करो। तुमने कभी न कभी जर्मनों को बात-चीत करते सुना होगा। तुम्हारा बाप जर्मन बोलता था। जब तुम आयु में कम हो तो तुम्हारी स्मरण-शक्ति अच्छी होनी ही चाहिये।"

"मुझे एक शब्द याद नहीं आ रहा है," सुसाना बोली। "हम कुछ रूमानिया-बोली में कहें।"

"हम जर्मनों को रूमानिया-बोली में क्या कह सकते हैं," अरिस्तितज़ा ने गुस्सा होकर कहा। "वे कुछ नहीं समझेंगे और सोचेंगे कि हम 'कम्युनिस्ट' हैं।

"माँ, हम 'ईसा' चिल्लायें," सुसाना बोली। "सभी जर्मन ईसाई

हैं। यदि वे हमें 'ईसा' कहते सुनेंगे तो वे समझ जायेंगे कि हम कम्युनिस्ट नहीं हैं। 'ईसा' का अर्थ है अच्छे और ईमानदाराना विचार।"

"तुम कोशिश करो" अरिस्तितज़ा बोली। यदि जर्मनों ने तुम्हारी बात समझ ली तो तुम उतनी मूर्ख नहीं हो, जितनी लगती हो।"

"मैं यह अकेली नहीं कर सकती," सुसाना बोली। "हम साथ चिल्लायें।"

दोनों औरतें और भी साथ सट गईं, और पहले तो धीरे-धीरे, फिर जोर से, और और ज़ोर से चिल्लाना आरभ किया।

"ईसा, ईसा।,"

"वहाँ कौन है?" पहली लारी में से कठोर स्वर सुनाई दिया।

औरतों ने नहीं समझा कि जर्मन ने क्या कहा। वे एक स्वर से चिल्लाईं :

"ईसा।"

दो सैनिक उनके पास आये। अरिस्तितज़ा थर थर काँप रही थी, सुसाना से भी अधिक। जर्मनों की कुछ समझ में नहीं आया कि उन्हें क्या चाहिये था। औरतें खेत में गईं और पादरी के साथ लौट आईं। उन्होंने उसे लारियों की कतार के आगे, सड़क के ठीक बीच में रख दिया। जर्मनों ने बत्ती जलाई और पादरी कोरग के चेहरे को देखा।

"क्या वह एक पादरी है?" एक अफसर ने पूछा।

"ईसा," अरिस्तितज़ा का उत्तर था।

"क्या बाल्शविकों ने इसे गोली मार दी?" अफसर ने प्रश्न किया।

यह समझकर कि अफसर ने यही पूछा है कि क्या ज़ख्मी आदमी बाल्शविक है, उसने विश्वास के साथ कहा :—

"ईसा।"

जर्मन लारियाँ विदा होने को थीं। जो अफसर स्त्री से बातचीत करता रहा था उसने लारियों को चलने की आज्ञा दे दी। उसने अरिस्तितज़ा

को इशारा किया कि वह लारियों को रास्ता देने के लिये देह को एक ओर हटा ले। अरिस्तित्ज़ा ने उसका हाथ पकड़ लिया और पादरी के जख्म पर पट्टी बाँधने के लिए उससे कोई डाक्टर या चिकित्सक-सिपाही देने की प्रार्थना की।

इंजन का चालू होना सुनते ही वह दुस्साहसी हो बैठी। वह नहीं चाहती थी कि पादरी के जख्मों की दवा पट्टी बिना किये ही जर्मन वहाँ से चल दें। उसने अफ़सर के सामने घुटने टेक दिये और उसके हाथ चूमे। वह जानती थी कि उस रास्ते अब और कोई डाक्टर नहीं आयेगा।

"यह स्त्री क्या चाहती है?" सैनिक-टुकड़ी के अधिकारी अफ़सर ने पूछा।

"ये चाहती हैं कि हम इस एक जख्मी को अपने साथ नगर ले चलें।" दूसरे अफ़सर ने कहा।

"यह एक ऑरथोडाक्स पादरी प्रतीत होता है।"

"क्यों नहीं?" अधिकारी का उत्तर था। "हम सभ्य लोग हैं। भले ही हम लौट रहे हैं। जख्मी को गाड़ी में डाल लो। लेकिन जल्दी करो, लारियों को चलना चाहिये।"

पादरी को एक कम्बल में लपेट लिया गया और उठा कर जख्मियों की गाड़ी में लिटा दिया गया। पहियों की कतार आगे बढ़ने लगी।

अरिस्तित्ज़ा ने पादरी के साथ-साथ चढ़ने की कोशिश की। किन्तु सैनिकों ने उसकी हँसी उड़ाई और लारी का दरवाजा बन्द कर लिया। लारियाँ रास्ते पर थीं। सुसाना ने देखा कि लारियाँ रात्रि के अन्धकार में विलीन हो गई हैं। वह रोने लगी मानों वह रो रोकर सहायता माँग रही हो।

"अरी औरत, अब क्या है," अरिस्तित्ज़ा ने उसका कन्धा हिलाते हुए पूछा। "क्या तू चाहती है कि रूसी तेरा चीत्कार सुन लें।"

"माँ, हमारे पाप के लिये भगवान् हमें दण्ड देगा," सुसाना

बोली। "हमें उसे कभी जर्मनों को नहीं सौंपना चाहिये था। भगवान् ही जानता है कि वे उसके साथ क्या करेंगे।"

"वे उसे अस्पताल ले जायेंगे," अरिस्तित्ज़ा ने उत्तर दिया। "वह जंगल से अस्पताल में अच्छा रहेगा।"

लेकिन कुछ ही क्षणों के बाद उसने भी रोना आरम्भ कर दिया। उसने जो कुछ किया था, उसके लिए उसे अफसोस था।

"हमें उसे जर्मनों को नहीं ही सौंपना चाहिये था," वह बोली। "हमने महान् पाप किया है। भगवान् हमें दण्ड देगा। हमें नरक में जाना पड़ेगा। हमने बेचारे फादर कोरग को जर्मनों को सौंप दिया। यह सारा हमारा कसूर है।"

दोनों औरतें लारियों के पीछे भाग कर पादरी को वापिस ले लेतीं; लेकिन सड़क खाली हो चुकी थी।

उन्होंने वापिस गाँव की ओर मुँह किया।

९८

अगले दिन अरिस्तित्ज़ा पकड़ ली गई। गाँव के पंचायत-घर में उसे पानी में भिगो कर मोटी रस्सी से पीटा गया गई। उसने स्वीकार कर लिया कि वह गत-रात्रि को पादरी को ले गई थी और उसने उन्हें जर्मनों को सौंप दिया था। दिन के नौ बजे उसे खाद के गड्ढे के किनारे ले जाकर गोली मार दी गई। सुसाना अपने दोनों बच्चों के साथ गाँव से भाग गई। जब मरकु के आदमी उसे पकड़ने आये तो उन्होंने जॉन मारित्ज़ का घर खाली पाया।

६६

"वह," बिस्तरे में घुसते हुए जॉसफ बोला, "मेरे जीवन का सब से महान् दिन था।" जॉन की सहायता से भागे हुए फ्रांसीसी कैदी कुछ ही घण्टे पहले अमरीकी-इलाके में जा पहुँचे थे।

जॉन और जॉसफ अब एक बड़े होटल के सुन्दर कमरे में ठहरे हुए थे। उन्होंने स्वादिष्ट भोजनों की कई प्लेटें साफ कर दी थीं, शराब पी थी और कीमती सिगरेट फूंके थे। उन्हें खाने-पीने की चीजों के पारसल, कपड़े और बहुत-सी दूसरी चीजें मिली थीं।

जॉन ने दीवार के सहारे बड़ी सफाई से दरी पर रखे हुए पारसलों की ओर देखा। इससे पहले उसने कभी अपने आपको इतना सम्मानित नहीं अनुभव किया था। अमरीका-वासियों ने उसे नई कमीजें, सूट, उस्तरा, बूट, साबुन और सिगरेट दिये थे। जॉन मारित्ज़ पर उनकी आँख पड़ते ही उन्होंने उस पर इन चीजों की वर्षा कर दी थी। उसे इसका अभिमान था। अब उसे प्रथम बार यह अनुभव हुआ कि उसने भी सहयोगी-राष्ट्रों की विजय में सहायता की है।

"यदि मैंने कुछ महत्त्वपूर्ण बात न की होती, तो अमरीका-वासियों ने मुझे इतनी चीजें न दी होतीं," उसने अपने मन में सोचा। उसे याद आया कि उन्होंने उसका नाम तक नहीं पूछा था। इससे उसने अनुमान लगाया कि उनके वहाँ पहुँचने से भी पहले उन्होंने उनकी फरारी की बात जान ली होगी। सभी अमरीका-वासी उसकी ओर देख कर मुस्कराते थे, मानों वे उस पर यह बात प्रकट करना चाहते हैं कि उसने कौन-सी मुसीबतें झेलीं हैं और किस बहादुरी तथा साहस का प्रदर्शन किया है।

वह थका था, किन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने कमरे को

चारों ओर अच्छी तरह से देखा-भाला। उसे विश्वास नहीं होता था कि यह सब खास तौर पर उसके लिये तैयार किया गया है। सभी चीजें, जो चारों ओर कुर्सियों पर, मेज पर और दरी पर बिखरी पड़ी थीं, उसकी थीं। अमरीका-वासियों ने उसे ये सब चीजें दी थीं, क्योंकि उसने एक कैम्प से पाँच कैदियों की जान बचा दी थी।

"हम साफ फरार हो गये," जॉसफ बोला।

जॉन को याद आया कि उसने कैसे एक दिन पाँच कैदियों के साथ आउटण्ड में मार्च की थी। वे ठीक नगर के बीचोंबीच से गुजरे थे। हिल्दा सदा की तरह बच्चे को गोद में लिये खिड़की पर खड़ी कह रही थी: "देख, वह है तेरा बाप, बन्दूक और टोपी वाला।" जॉन प्रति दिन की तरह उनकी ओर देख कर मुस्कराया था। तो भी, वे पुल पर नहीं रुके थे। कैदी इसे पार करके आगे मार्च करते चले गये थे और वह भी कंधे पर बन्दूक लटकाये जंगल तक उनके पीछे-पीछे मार्च करता चला गया था। रास्ते में जो कोई मिला उसने यही समझा कि वह एक सिपाही है और कैदियों को ले जा रहा है। लेकिन फरारी वास्तव में आरम्भ हो गई थी। एक स्त्री, उसे विश्वास था, उसकी ओर ताकती रही थी। डर के मारे उसका दिल धक-धक करने लगा था। उसे लगा कि दूसरे भी उसकी ओर सन्देह की दृष्टि से देख रहे हैं, किन्तु उसने उनकी ओर ध्यान न देने का बहाना किया।

ज्यों ही वे जंगल में पहुँचे, उसने फौजी वर्दी उतार कर देसी कपड़े पहन लिये, जो उसके लिये फ्रांसीसी लाये थे। जॉसफ ने उसकी बन्दूक ली और एक बलूत के पेड़ पर मार कर टुकड़े-टुकड़े कर दी। बन्दूक को टूटते देख कर जॉन को लगा जैसे उसके दिल में भी कुछ टूट रहा है। लेकिन इस बात को छिपाये रखने का उसका निश्चय था। इसके बाद फ्रांसीसियों ने उसकी वर्दी को दियासलाई दिखा कर जला डाला। अपनी वर्दी में आग लगी देख कर उसकी इच्छा हुई कि वह चिल्ला पड़े किन्तु उसने अपने पर संयम रक्खा कि कहीं फ्रांसीसी रुष्ट न हो जाँय।

सारा समय वे हिटलर को कोसते रहे, किन्तु वह समझता ही नहीं था कि वे क्या कह रहे हैं।

तब वे जंगल ही जंगल एक सप्ताह तक चलते रहे थे। एक दिन जंगल से कुछ बाहर होते ही उन्होंने सड़क पर कुछ अमरीकी जीप-गाड़ियाँ देखीं। फ्रांसीसियों ने हर्ष के मारे गाना आरम्भ कर दिया। थकावट की ओर से बे-परवाह हो वे तब तक चिल्ला-चिल्ला कर गाते रहे जब तक कि जंगल उनकी आवाज से गूँज नहीं गया। उन्होंने उसके और अपने बटनों के सुराख में लाल-सफेद और नीले फीते खोंस दिये थे। तब वे जीप गाड़ियों के समीप चले आये। अमरीकियों ने उन्हें सिगरेट दिये और उन्हें यू० एन० आर० आर० ए होटल में ले गये, जहाँ उनके लिये कमरे तैयार थे और मेजों पर भोजन रखा था। प्रतीत होता था कि उनकी प्रतीक्षा पहले से थी।

तब से अमरीकियों ने उन्हें पारसल और खाने-पीने की चीजें देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया था। उसे लगने लगा जैसे कि यह सब कुछ कोई परियों की कहानी हो। लेकिन पारसलों और जॉसफ की ओर एक साथ देखने से उसे यह सब यथार्थ प्रतीत हुआ। यह बातें उसके साथ वास्तव में घट रही थीं, क्योंकि उसने मित्र-राज्यों की विजय में बड़ी सहायता पहुँचाई थी।

जॉसफ को नींद आ गई थी। जॉन लेटा-लेटा सोच रहा था कि अब वह यहाँ से कैसे फ्रांस पहुँचेगा। उसने उस घर की कल्पना की, जिसे वह बनायेगा; और हिल्दा की तथा फ्रॉंज़ की। "लड़ाई समाप्त हो जायगी, तो मैं अपने माता-पिता को भी फ्रांस बुला लूँगा," उसने अपने मन में कहा।

तब उसे भावी आनन्द की कल्पना करते-करते ही नींद आ गई। वह कपड़े पहने ही पहने चारपाई के किनारे पर सो गया और फिर प्रातःकाल तक एकदम हिला-डुला नहीं।

१००

जॉन यू० एन० आर, आर, ए में पूरे पन्द्रह दिन रहा। उसने अमरीकियों को बताया था कि पाँच फ्रांसीसियों के साथ वह कैसे भाग आया था। उन्होंने उसे मुबारक बाद दिया था और भागने की सारी कहानी उससे लिखवा ली थी। वे यह सारी कथा समाचार-पत्रों में छापने जा रहे थे। हर कोई उसकी प्रशंसा करता था और उससे बात-चीत करना चाहता था। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, उसे अधिकाधिक विश्वास होता गया कि उसने वास्तव में मित्र-पक्ष का सेनाओं की सहायता की है और उन्हें युद्ध में विजयी बनवाया है। उसे मित्र-सेनाओं के लिए कुछ कर सकने का संतोष था, अभिमान था और साथ ही उसे इस बात का अभिमान था कि वे उससे प्रसन्न थे।

एक दिन यू० एन० आर, आर, ए के डायरेक्टर ने उसे आफिस में बुलवाया। डायरेक्टर ने उसे पहले भी कई बार बुलवाया था और उससे पादरी की सारी कथा सुनी थी। जॉन प्रसन्न-बदन कमरे में आया। डायरेक्टर ने उसे आराम-कुर्सी पर बैठने के लिये कहा और मुस्कराया। उसने उसे सिगरेटों का एक डिब्बा दिया। जॉन को उस आदर पर आश्चर्य हो रहा था। जब-जब वह आया, उसका इसी प्रकार का स्वागत हुआ था, तो भी वह इसका अभ्यस्त नहीं हुआ था।

अपनी अग्नि-पेटिका से जॉन की सिगरेट को जलाते हुए डायरेक्टर बोला, "अब तुम्हें यू० एन० आर, आर, ए से भोजन और निवास-स्थान मिलेगा। कल से तुम्हारा वहाँ खाने का अधिकार जाता रहा। होटल का जो कमरा तुम्हारे पास है, उसे तुम्हें खाली कर देना होगा।"

जॉन पीला पड़ गया। वह सोचने लगा कि उससे क्या अपराध हो गया कि अमरीकी उससे उतने कष्ट हो गये, "मुझसे कुछ न कुछ भयानक गलती हुई होगी, अन्यथा यह लोग मुझे यकायक होटल से बाहर इस प्रकार सड़क पर क्यों फेंक देते।"

उस दिन तक उसे भेंट पर भेंट मिलती रही थी। उसके और हिल्दा के लिये उसे जो चीजें मिली थीं, उनके पाँच पार्सल उसके पास हो गये थे। जब उन्हें पता लगा कि उसका एक बच्चा भी है, तो उन्होंने उसके लिये भी उसे खिलौने और कपड़े दिये थे। उन्होंने उससे फ्रांत्ज़ की फोटो माँग कर देखी थी।

"और अब यही महाशयगण मुझे सड़क पर फेंक दे रहे हैं, मैंने कुछ न कुछ गलती अवश्य की होगी," वह मन में सोचने लगा।

"यू० एन० आर० आर० ए केवल मित्र-जातियों के नागरिकों की सुरक्षा का भार अपने सिर लेती है," डायरैक्टर बोला। "तुम मित्र-जातियों के शत्रु हो।"

जॉन को उन भेंटों का ख्याल आया जो उसे उसके महान् कर्तव्य के बदले में मिली थीं। हर किसी ने उसे कहा था कि उसने मित्र-जातियों का कितना उपकार किया है! पूरे चौदह दिन तक एक नायक की तरह उसका आदर-सत्कार होता रहा था—और अब वही लोग कह रहे थे कि वह—जॉन मारित्ज़—मित्र-जातियों का शत्रु है!

"तुम एक शत्रु-विदेशी हो," डायरेक्टर से जोर डालकर कहा।

"मैंने मित्र-जातियों के द्रोह का कोई काम नहीं किया है," जॉन ने कहा। "मैं शपथ खाता हूँ, मैंने उनके विरुद्ध कुछ नहीं किया है।"

"तुम रूमानिया-वासी हो, क्या नहीं?" डायरेक्टर ने थोड़ी कठोरता से पूछा। "रूमानिया मित्र-जातियों का शत्रु है। तुम रूमानिया के हो, इसलिये तुम हमारे शत्रु ही हो। यू० एन० आर० आर० ए शत्रु नागरिकों के लिये भोजन और विश्रान्ति की व्यवस्था करने के लिये नहीं है। तुम्हें कल तक अपना कमरा खाली कर देना होगा।"

जॉन सिर लटकाये कमरे से बाहर चला गया। उसे याद आया कि उसकी बन्दूक टुकड़े-टुकड़े होकर जंगल में पड़ी है और उसकी वर्दी में फ्रांसीसी आग लगा चुके हैं। वह अपनी बन्दूक के बिना अपनी कम्पनी में वापिस नहीं जा सकता था।

"अब मैं कहाँ जाऊँ ?" उसने अपने आप से पूछा।

१०१

जॉन के 'भगोड़ा' होने की घोषणा होते ही, हिल्दा को हिरासत में ले लिया गया। सैनिक चौकी पर उसने बयान दिया कि वह कुछ नहीं जानती। दो दिन के बाद हिल्दा की माँ भी कैद कर ली गई। उनसे सवाल-जवाब किये गये और उन्हें पीटा गया किन्तु उनसे अफ़सरों को कुछ भी हाथ नहीं लगा। जॉन के घर की तलाशी लेते समय उन्हें कर्नल म्यूलेर की चिट्ठियाँ मिलीं।

"वह जॉन का मित्र है," हिल्दा ने कहा। "करनैल म्युलेर हमें प्रति महीने दो सौ मार्क भेजा करता था। क्रिसमस के दिन, ईस्टर के दिन और हमारे जन्म दिनों पर वह हमें सदैव खाने-पीने के चीजें और सिगरेट भेजा करता था।"

सैनिक पुलिस ने कुछ अधिक जानकारी प्राप्त करने की आशा से करनैल म्युलेर को जॉन के भगोड़ेपन की सूचना दी। दो दिन के बाद जरनैल के दफ़्तर से एक तार—एक पूरा पृष्ठ—आया। करनैल म्युलेर ने पुलिस को लिखा था :—

"जिस वीर-वंश का जॉन मारित्ज़ है, उसके किसी एक भी वंशज के 'भगोड़ेपन' का उल्लेख चार शताब्दियों के इतिहास में, नहीं है। जॉन मारित्ज़ के भगोड़ेपन की बात सर्वथा अविश्वसनीय है। मेरा

विश्वास है कि या तो उसे कोई उड़ा ले गया है अथवा किसी ने उसकी हत्या कर दी होगी। यही मान कर अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करो। जॉन मारित्ज़ का अन्तर्धान हो जाना वीर-वंशज की पूरी न की जा सकनेवाली हानि है। जैसे भी हो, उसका पता लगाया जाय। जर्मन-रक्त के एक सर्वाधिक वीर तथा सम्माननीय वंश पर भगोड़ेपन का सन्देह मत करो। अपनी जाँच-पड़ताल में 'भगोड़ा' शब्द का प्रयोग न करो। जॉन मारित्ज़ के स्त्री-बच्चों को जर्मन अध्ययन और खोज की संस्था की देख-भाल में ले लिया जाय। जब तक जॉन मारित्ज़ नहीं मिल जाता तब तक स्त्री-बच्चों का भोजन-खर्च संस्था की ओर से दिया जाय। स्थानीय पुलिस से प्रार्थना है कि वह बच्चों की सुरक्षा का ख्याल रखे। जॉन मारित्ज़ के बारे में कोई भी और जानकारी मिले, मुझे तार द्वारा सूचित किया जाय। म्यूलेर, करनैल, हैड-क्वारटर जरनैल-स्टाफ, जर्मन सेना।"

"यदि करनैल को पता लग गया कि हमने मारित्ज़ की स्त्री को हिरासत में ले लिया था तो वह हमें चौबीस घण्टे के भीतर सेना की आगे की टुकड़ी में जाने की सजा देगा," सैनिक-पुलिस के कप्तान ने कहा। "अच्छा होगा, यदि हम इस औरत को कह दें कि वह करनैल को यह न कहे कि हमने उसे हिरासत में ले लिया था।"

"और जाँच-पड़ताल के बारे में?" गुप्ति-पुलिस के लेफ्टिनेंट ने पूछा।

"यह फाइल तुरन्त बन्द कर दो। हम प्रधान-सेनापति के साथ उलझना नहीं चाहते," कप्तान बोला। "यूँ मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूँ कि यह मान लूँ कि यह 'भगोड़ेपन' के अतिरिक्त कुछ और है। किन्तु कभी-कभी यह पीतल की कलगियाँ सामान्य सिपाहियों की अपेक्षा कहीं बड़ी-बड़ी गलतियाँ करती हैं। करनैल म्युलेर एक स्कालर है। मैंने मासिक पत्र-पत्रिकाओं में उसके लेख पढ़े हैं। उसने कुछ पुस्तकें भी छापी हैं।

किन्तु वह अत्यधिक झक्की है। वह यह कैसे कह सकता है कि मारित्ज़ एक 'भगोड़ा' नहीं है ?"

हिल्दा कप्तान की गाड़ी में वापिस घर पहुँचा दी गई।

"जब भी तुम्हें गाड़ी की ज़रूरत हो, बस ज़रा मुझे फोन कर देना," कप्तान ने कहा। "मेरी मोटर-गाड़ी रात-दिन तुम्हारे लिये है। किसी और चीज़ की ज़रूरत हो, बस जरा मुझे कह देना। मैं चाहूँगा कि तुम करनैल म्युलेर को यह मत कहो कि तुम्हें पकड़ लिया गया था। यह केवल दूसरे लोगों को शिक्षा देने भर के लिये किया गया था—एक औपचारिक क्रिया मात्र।"

"तो मेरा पति 'भगोड़ा' नहीं है ?" हिल्दा ने पूछा। "क्या वह किसी खास काम पर भेजा गया है ?"

"हम तुम्हें सभी कुछ नहीं बता सकते," अफसर ने कहा। "किन्तु तुम्हारा पति एक 'भगोड़ा' नहीं है। शेष सभी कुछ गोपनीय है।"

"प्रसन्नता से हिल्दा की आँखें चमक उठीं। उसके बाद से उन एक हजार एक रातों में से उसका जीवन एक सतत-स्वप्न बन गया। उसे विश्वास था कि जरनैल के स्टाफ द्वारा उसका पति किसी खास काम पर भेजा गया है। "अन्यथा पुलिस मेरे लिये एक मोटर-गाड़ी क्यों रखती ? —यही उसका तर्क था।

वह खिड़की पर बैठी हुई दिवा-स्वप्न देखा करती और घण्टों बिता देती। वह जॉन की उन सब भयानक और रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में कल्पना करती, जैसी उसने साहसिक फिल्मों में देखी थीं।

"उसने कभी मुझे इसके बारे में नहीं बताया," उसने अपने मन में सोचा। "उसने मुझे इस योग्य नहीं समझा। लेकिन मैं हर तरह से उसके योग्य सिद्ध होने का प्रयत्न करूँगी।" उसने अपने बच्चे को चूमा और बोली :—

"मैं सारा जीवन, कभी भी, कभी भी इतनी प्रसन्न नहीं हुई। किसी

नायक की स्त्री बनने का जो परमानन्द है उसका अनुभव किसी जॉन मारित्ज़ की पत्नी को ही हो सकता है।"

१०२

"मैं यह नहीं मान सकती कि सारा खेल समाप्त हो गया है," हिल्दा बोली। "हर कोई शहर छोड़ कर या तो जंगल में भाग गया है, या देहात में चला गया है। रूसी लोग कुछ ही मील की दूरी पर हैं। सभी पड़ोसी चले गये हैं। किन्तु मैं इन बातों को नहीं मानती। यह सारा का सारा शत्रुओं का प्रचार है ताकि लोग आतंकित हो जाँय। मैं यहीं ठहरती हूँ। जर्मनी युद्ध नहीं हार सकता।"

"मेरे पानी की एक चिलमची लाओ," हिल्दा से बात चीत करते रहनेवाले अफ़सर ने कहा। उसने अपना चमड़े का कोट उतारा और उसे एक खूँटी पर लटका दिया। उसका सूट-केस कुर्सी पर रखा था। तब उसने अपनी जाकेट निकाली और कुर्सी की पीठ पर लटका दी। उसके बदन पर अब जर्सी रह गई थी। हिल्दा उसकी हर हरकत देख रही थी। वह उसकी ओर घण्टों देखती रह सकती थी, अपना चमड़े का कोट उतारते हुए, खूंटी पर लटकाते हुए और जाकेट के बटन खोलते हुए।

"और मेरे लिये हजामत बनाने को कुछ गर्म पानी लाओ," उसने आज्ञा दी। उसने उसकी ओर पीठ फेरी और सूट-केस खोला। दरवाजा खुला छोड़, हिल्दा कमरे से बाहर गई। रसोई-घर की खिड़की में से उसने बरामदे में खड़ी मिलिटरी-गाड़ी देखी। इसी गाड़ी में अफ़सर आया था। हिल्दा ने अपनी घड़ी की ओर देखा। उसे वहाँ आये मुश्किल से १५ मिनट हुए होंगे। "ऐसा लगता है कि मैं इसे वर्षों से जानती हूँ," उसने अपने मन में कहा।

अफसर ने दरवाजा खटखटाया था और उसने खोल दिया था। वह घर में अकेली थी। उसने थोड़े कठोर स्वर में कहा था—मानो वह अपने नौकर को आज्ञा दे रहा हो—वह हाथ-मुँह धोना और कपड़े बदलना चाहता है। बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये वह भीतर चला आया था। दरवाजे पर हिल्दा के बदन से हलकी रगड़ लगी थी। उसने हवा, धूल और युद्ध की गन्ध से मिश्रित उसके चमड़े के कोट की गन्ध ग्रहण कर ली थी। नशे में चूर व्यक्ति की तरह वह उसके पीछे-पीछे चली आई थी।

आगन्तुक का कद बहुत ऊँचा था, एक पूरे दैत्य का। उसने रहने के कमरे का दरवाजा ऐसे खोल दिया था, मानो अपने ही घर के किसी कमरे में चला आ रहा हो। उसने खुले दरवाजे कपड़े उतारना आरम्भ कर दिया था। हिल्दा देहली पर खड़ी उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही थी। किन्तु दैत्य ने उसकी ओर तनिक ध्यान नहीं दिया और कपड़े उतारता रहा। जब उसने अपनी टोपी उतारी, उस समय हिल्दा ने देखा कि अफसर के बाल श्वेत रजत-वर्ण हैं। उस समय तक वह अपना कोट उतार चुका था। उसने देखा कि उसके कन्धे पर लेफ्टिनेंट की लैस लगी है।

"वह एक अफसर है," उसने अपने मन में कहा।

अनेक बार उस दैत्य ने उसकी ओर देखा था; किन्तु उसकी नजर सीधी उसे बींध कर पार हो गई थी। जो उसके मन में आया, उसने बोलना आरम्भ किया। दैत्य ने उत्तर नहीं दिया और फिर उसकी ओर दुबारा देखा ही नहीं। जब वह अपनी जाकेट उतार चुका तो उसने उसे पानी और चिलमची लाने भर की आज्ञा दी। हिल्दा ने सोचा कि उसे स्नानागार में आकर हाथ-मुँह धोने के लिये कहे। लेकिन उसने एक चिलमची माँगी थी और वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस नहीं कर सकती थी।

जिस समय वह जलपात्र में पानी डाल रही थी, हिल्दा ने दरवाजे से बाहर खड़ी गाड़ी पर दुबारा नजर डाली। यह दैत्य के चमड़े के कोट की तरह धूल से ढकी थी। जब वह चिलमची लेकर अन्दर गई तो उस समय उसकी कमीज की बाँहें चढ़ी थीं।

"मेरे लिये एक शीशा ले आओ!" वह बोला। वह अपने ही विचारों में डूबा हुआ था और बड़ा थका-माँदा प्रतीत होता था। हिल्दा ने सोचा—हो सकता है कि वह सोना चाहे। वह सोने के कमरे में प्रसन्नतापूर्वक बिस्तर लगाकर उसे वहाँ आराम करने के लिये छोड़ दे सकती थी।

गत कुछ दिनों में सेनाओं की एक टुकड़ी के बाद दूसरी टुकड़ी गाँव में से गुजरी थी। सैनिकों ने और उन्हीं की तरह अफसरों ने भी दरवाजे पर दस्तक दी थी। किसी ने रात भर विश्राम करना चाहा था, किसी ने नहाने के लिये पानी चाहा था और किसी ने अपना खाना गर्म करना चाहा था। अपने पति का ध्यान कर जो कुछ भी सहायता वह कर सकती थी, उसने की थी। वह जानती थी कि जॉन किसी खास काम पर भेजा गया है और वह अपने पितृ-देश के प्रति अपना कर्तव्य पालन कर अपने आपको उसके योग्य सिद्ध करना चाहती थी।

इन सैनिकों और अफसरों के लिये उसने रहने के कमरे में बिस्तर लगा दिया था। लेकिन अब वह स्वयं रहने के कमरे में लम्बे काउच पर लेटकर, दैत्य को अपना सोने का कमरा सौंप देने के लिये तैयार थ। उसके मन में छिपे-छिपे यह भी आशा पैदा हुई थी कि कदाचित् वह जॉन के बिस्तर पर न सोकर उसके अपने बिस्तर में ही सोयेगा। इस विचार से उसे रोमांच हो उठा। जिस शीशे की सहायता से जॉन सदैव हजामत बनाया करता था, उसे वह दैत्य के लिये ले आई। वह गले के बटन खोले, कमरे में नीचे से ऊपर चहल-कदमी कर रहा था। उसने हाथ से शीशा ले लिया और उसे लटकाने की जगह खोजने लगा जो उसे नहीं मिली। वह ऊँचा था। यदि वह शीशा मेज पर रख देता तो

जब तक उसकी हजामत न बन जाती, तब तक उसे बार-बार झुकना पड़ता। बिना एक भी शब्द बोले उसने शीशा उसके हाथ में थमा दिया और चेहरे पर साबुन रगड़ने लगा।

"और ऊँचा करो," उसने आज्ञा दी।

उसका गेहरा धूप और हवा से लाल पड़ गया था। लाल बालू जैसी खूंटियाँ उसके चेहरे पर दिखाई देती थीं। वह अपने मुँह के सामने शीशे को लिये खड़ी थी। उसकी आज्ञा पर, उसने उसे अपने माथे तक ऊँचा कर लिया। जब वह उसके पास झुका तो शीशे को उसके श्वास का स्पर्श हो रहा था। उसके हाथ काँप रहे थे, किन्तु वह शीशे को और भी अधिक तेजी से पकड़े रही। उसने अपनी ओर से उसे स्थिर रखने का पूरा प्रयत्न किया।

"और ऊँचे," वह थोड़ी निष्ठुरता से बोला।

उसने शीशा अपने सिर से ऊपर उठा लिया। उसके बाजुओं में दर्द होने लगा किन्तु उसने परवाह नहीं की। वह कुछ कहना चाहती थी, किन्तु दैत्य के नरम तथा झाग भरे चेहरे को साफ करनेवाले उस्तरे की लगातार खर-खर ने उसे कुछ कहने न दिया। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और उस्तरे की आवाज सुनने लगी। उसके फूले हुए नथने साबुन की सुगन्ध ले रहे थे, और इसके साथ न केवल साबुन की, किन्तु युद्ध की, वीरता की तथा दूर देशों की यात्राओं की भी गन्ध ले रहे थे। उसके कोट से भी वैसी ही गन्ध आ रही थी। उसके हिलने-डुलने की ओर दैत्य का ध्यान नहीं गया। वह अत्यन्त सावधानी से हजामत बना रहा था ताकि कहीं कट न जाय।

जब वह समाप्त कर चुका, उसने उस श्वेतवर्ण चिलमची में अपने हाथों पर साबुन रगड़ा।

"मेरी बाँहों को ऊपर लपेट दो!" वह बोला।

उसने यह सावधानी रखी कि चमड़ी से स्पर्श न हो जाय, और

उसकी बाँहें ऊपर चढ़ा दीं। लेकिन अचानक उसके हाथ उसके हाथ से रगड़ खा गये। उसे फ़िर रोमांच हो उठा। दैत्य के साथ हवा और जंगलों की गन्ध चली आई थी। वह सारे घर में फैल गई थी। यह फरनीचर में, गलीचों में, दीवारों में, हर जगह बस गई थी। हिल्दा जानती थी कि यह गन्ध कभी दूर नहीं हो सकती। उसे लगा कि यह उसके वस्त्रों में बस गई है, उसके अंग-अंग में बस गई है, उसके बालों में बस गई है, उसके कुर्ते में बस गई है; और वह चाहे जितना धोवे, अब यह जीवन भर उसके साथ रहेगी।

"अब मैं अकेला रहना चाहता हूँ।"

जब वह अपने पीछे का दरवाजा बन्द करने के लिए घूमी, उसकी नजर उसकी नंगी छाती पर पड़ी। वह अपनी कमीज उतार रहा था, जिससे उसका सिर ढका था। उसे केवल उसकी छाती दिखाई दी। नर्स रहने के कारण उसने हजारों नंगी छातियाँ देखी थीं। लेकिन इससे पहले उसने ऐसी छाती कहीं नहीं देखी थी।

वह रसोई-घर में गई और खिड़की में से मोटर-गाड़ी को झाँका। बच्चा सोया था। वह सोच रही थी कि क्या यह अफ़सर तुरन्त चला जायगा अथवा कुछ आराम लेकर जायगा। उसके लिये खाना बनाकर खिलाना भी उसे अच्छा लगता। वह अब सावधान थी, आवाज देते ही तुरन्त "जी" कहने के लिये।

"रूसी केवल दो मील और रह गये हैं!" उसकी खिड़की के पास से गुजरते हुए एक पड़ोसी ने कहा। "क्या तुम यहीं रह रही हो?"

"हाँ, मैं ठहर रही हूँ," हिल्दा ने उत्तर दिया। उसे आश्चर्य हो रहा था कि दैत्य ने उसे अभी तक क्यों नहीं बुलाया। वह और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकी। उसने दरवाजे पर दस्तक दी और अन्दर चली गई। उसने पूरी वर्दी पहन रखी थी और उसकी छाती तमगों से सजी थी।

हिल्दा चकित-सी दरवाजे पर खड़ी रह गई। वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया। यह पहली बार थी कि उसने उसके चेहरे पर मुस्कराहट देखी थी। हवा, युद्ध और झाग की गन्ध जाती रही थी। इसके बजाय कमरा फूलों की सुगन्ध से भरा था।

"मैं जानना चाहता हूँ कि क्या तुम एक असली जर्मन रमणी हो," वह बोला। "मैं तुमसे एक सेवा लेना चाहता हूँ, जो केवल एक असली जर्मन रमणी ही कर सकती है।"

"मैं हूँ," उसने उत्तर दिया, "और मैं केवल एक असली जर्मन रमणी ही नहीं हूँ, किन्तु मेरा पति भी महान् जर्म......द्वारा भेजा गया है।"

वह उसे अपने पति के गमन का रहस्य बताने जा रही थी, लेकिन वह सहसा रुक गई। इस समय मेज पर दो सुन्दर रमणियों के चौखटे मढ़े चित्र रखे थे। ज्यों ही उसने उनकी ओर देखा, उसे लगा कि वह उस रहस्य को—जिसे उसने अभी तक किसी पर प्रकट नहीं किया था—किसी पर प्रकट नहीं कर सकती। वह यह रहस्य उस पर प्रकट करने जा रही थी। अब उन दोनों रमणियों के चित्र देखने के बाद उसे अपनी उस उमंग पर अफसोस आने लगा जिससे प्रेरित हो कर वह उस पर सारा रहस्य प्रकट करने जा रही थी।

"मेरी स्त्री और लड़की," वह बोला। "वे दोनों मर गई हैं। मैं उन्हें बहुत प्यार करता था, किन्तु उन्होंने मेरे साथ विश्वास-घात किया। दोनों ने मुझे निराश किया। मेरी स्त्री दफना दी गई है। मेरी लड़की, इस संसार में कहीं न कहीं होगी, किन्तु मुझे पता नहीं कहाँ। उसने एक रद्दी आदमी से शादी कर ली और तब से वह मेरे लिये ऐसी ही है, जैसे मर गई हो।"

हिल्दा ने दोनों नारियों के चित्रों की ओर देखा। "यदि इसने मुझे प्यार किया होता, तो मैंने कभी इसके साथ विश्वास-घात न किया होता," उसने सोचा।

स्त्रियों की फोटो के पास एक दूसरी फोटो थी--चमड़े के चौखटे में नेताजी की।

"और अब नेताजी भी नहीं रहे," वह बोला। "और अब जर्मनी समाप्त हो गया है। इन्हीं के लिये मैं जीवन धारण किये था। जब मैं जवान था, तो मैं घोड़ों को भी बहुत प्यार करता था। लेकिन वह थोड़े दिनों की चीज़ थी। एक एक करके मैंने अपने जीवनादर्शों को अपने सामने ही मिट्टी में मिलते देखा—अपनी स्त्री को, अपनी लड़की को, अपने 'नेता' को और अपनी पितृ-भूमि को। अब मेरी बारी है। आध घण्टे में रूसी लोग यहाँ पहुँच रहे हैं। उनके आगमन से पहले मैं अपने जीवन का अन्तिम कर्तव्य पूरा कर देना चाहता हूँ।"

हिल्दा की आँखों में आँसू थे। उसे आशा थी कि वह उसके सोने के कमरे में सोयेगा, कि वह कहेगा उसे भूख लगी है और वह उसे खाना दे सकेगी। और इस सब के स्थान में वह उसके सामने अपनी पूरी पैरेड की वर्दी पहने खड़ा था।

"जो कुछ तुम मुझे करने को कहो, मैं करूँगी" उसने कहा। "क्या तुम कहीं जाना चाहते हो?" वह उसकी वर्दी की ओर देख रही थी।

"मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ," उसने उत्तर दिया। "पृथ्वी पर यह मेरी अन्तिम यात्रा है।" इस समय वह हँस रहा था।

"क्योंकि मैंने हजामत बनाई, हाथ-मुँह धोया और कपड़े बदले, इसी से तुम ने समझा कि मैं कहीं जा रहा हूँ?"

उसने हिल्दा के कंधे पर एक थपकी दी। उसकी तुलना में हिल्दा को अपना व्यक्तित्व छोटा जँचा, वैसे ही जैसे उसे उस समय जॉन की तुलना में जँचा था, जब उसने सुना था कि जॉन को एक महत्त्वपूर्ण गुप्त कार्य पर भेजा गया है।

"जो कुछ मैं कहने जा रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो," वह बोला। "वास्तव में यह अत्यन्त सरल बात है। किन्तु एक जर्मन रमणी के अतिरिक्त और कोई रमणी इसे नहीं कर सकती। मेरी पत्नी इसे न कर

सकती। लेकिन तुम, तुम इसे कर सकोगी। वह अत्यधिक कामुक थी, अत्यधिक दुर्बल मनवाली। मैं उससे इस काम के लिये कहता भी नहीं। किन्तु, तुम्हारी बात दूसरी है।"

हिल्दा को लगा कि जो बात वह अपनी पत्नी को भी नहीं कह सकता था, वह उसे कहने जा रहा है!

"जब मैं मर जाऊँ," वह बोला, "तो मेरे शरीर को आँगन में खींच ले जाकर जला देना। तुम मेरे शरीर को इसी चादर पर मरा पाओगी।"

उसने पहले ही फर्श पर एक बड़ी चादर बिछा दी थी। यह नयी थी और उसने तमाम फर्श ढक लिया था।

"तुम्हें इतना ही करना होगा कि चादर के कोने पकड़ कर मुझे आँगन तक घसीट ले चलो," वह बोला।

मेज के नीचे से उसने पैट्रोल के दो डिब्बे निकाले।

"यह पैट्रोल है। यह हवाई-जहाज का ईंधन है। जब तुम मुझे आँगन तक खींच कर ले चलो, तब मुझे चादर से लपेट देना और उस पर सर्वत्र पैट्रोल डाल देना। तब इस अग्नि-पेटिका से आग लगा देना।"

जिस समय उसने सिगरेट जलाने की एक स्वर्ण-वर्ण पेटिका अपने पाकेट से निकाल कर उसे दी, उसके मुँह पर मुस्कराहट थी।

"अग्नि जलाने के लिये यह अग्नि-पेटिका है," उसने कहा। "जब पहले शोले बुझ जायँ, तब दूसरा डिब्बा खाली कर देना। इसके बाद मैं नहीं समझता कि जलाने के लिये कुछ शेष बच रहेगा। मेरी राख के अतिरिक्त रूसियों को और कुछ हाथ न लगेगा। कोई सैनिक नहीं चाहेगा कि लाश भी शत्रु के हाथ में पड़ जाय। सारे इतिहास में, यही जर्मन-योद्धा की परम्परा रही है। जब सब कुछ समाप्त हो गया, तो उसने मृत्यु का आलिंगन किया और उसकी लाश नाम-शेष कर दी गई। राख की ढेरी के अतिरिक्त शत्रु के हाथ कभी कुछ नहीं लगा।"

दैत्य ने अपने हाथ मले। हिल्दा चुपचाप चित्रों की ओर देख रही थी।

"यदि तुम चित्रों को जलाना चाहो तो इन्हें भी मेरे साथ चादर में लपेट देना और साथ ही जला देना। यदि तुम इन्हें रखना चाहो, तो रख लेना; लेकिन मैं नहीं समझ सकता कि तुम क्यों रखना चाहोगी। मैं यहाँ कभी नहीं रहा। मैं रूमानिया का हूँ।"

वह मूर्तिवत् चादर पर पड़े मृत-दैत्य की कल्पना करती रही। उसे यह विश्वास ही नहीं होता था कि यह सम्भव है। उसे लगता था कि वह कभी मर ही नहीं सकता। वह सदैव बना रहेगा।

"क्या तुम्हें भय लगता है?" उसने पूछा। "एक जर्मन नारी को कभी भय नहीं लगता, विशेष रूप से उस समय जब वह अपनी पितृ-भूमि के लिये कुछ करने जा रही हो। मैं मानता हूँ कि तुम यह बात समझती हो कि तुम अपने देश के एक सैनिक की अन्तिम इच्छा पूरी कर अपने देश की सेवा कर रही हो।"

"मैं जाती हूँ," वह बोली। "मुझे तनिक भय नहीं लगता; लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि यह सब सच है। मैं यह नहीं मानती कि रूसी कभी भी यहाँ पहुँच पायेंगे। मैं नहीं मानती कि जर्मनी पराजित हो गया है।"

"सारा खेल समाप्त है," वह बोला। "अब कहीं कुछ नहीं किया जा सकता। पिस्तौल को उसके चमड़े के खोल में रखना और साथ ही आग लगा देना मत भूल जाना जिसमें वह भी साथ ही भस्म हो जाय। एक सैनिक को उसके शस्त्रों के साथ ही जलाना या दफनाना चाहिये।"

क्षण भर का मौन। वह सुदूर क्षितिज की ओर देख रही थी, अपने विचारों में डूबी हुई, मानो अनन्त जल-राशि में।

"अब यह सब समाप्त है," वह बोला।

हिल्दा ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं। उसे लगा कि उसके सामने वहीं वह अपने को गोली मारने जा रहा है। वह इसे सहन न कर सकती। लेकिन वह यहाँ गोली मारने नहीं जा रहा था। उसने घूम कर हिटलर की तसवीर के सामने मुँह किया। तब उछल कर और हाथ फैलाकर उसने उसे सैल्यूट दी।

वह ठीक उसके पीछे थी। उसकी वर्दी ने उसके कन्धों और उसकी छाती को कस रखा था। उसने उसका फैला हुआ हाथ देखा। वह मूर्तिवत् खड़ा था। ऐसा लगा कि वह अनन्त काल से सैल्यूट ही कर रहा है।

अन्त में उसने अपना हाथ नीचा किया, घूमा, एक कदम आगे बढ़ा, फिर अपना हाथ उठाया और उसे नमस्कार किया।

"विदा, मेरे मित्र! तुम्हें धन्यवाद," वह बोला। "मैं लेफ्टिनेंट जार्ज जार्डन हूँ। किन्तु, यह बात किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ तुम करने जा रही हो, उसके लिये तुम्हें अभिमान करना चाहिये। जर्मन नारी के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि वह एक सैनिक की अन्तिम इच्छा की पूर्ति करे।"

उसने उसके साथ हाथ मिलाया। यह अन्तिम बिदाई का जोर से हाथ मिलाना था।

"अब मैं अकेला रहना चाहता हूँ," उसने आज्ञा के स्वर में कहा। "ज्यों ही तुम गोली की आवाज सुनो, अन्दर चली आना। बिदा।"

१०३

सड़क के सिरे पर पहली रूसी लारियाँ दिखाई दीं। हिल्दा ने पहले तो उनके इंजन की आवाज सुनी और तब उन्हें रसोई-घर की खिड़की से देखा। वह उस कमरे की ओर भागी, जहाँ उसने दैत्य को छोड़ा था।

उसने उसे कहा था कि जब तक वह पिस्तौल की आवाज न सुने तब तक न आये। उसे कुछ सुनाई नहीं दिया था और वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने का दुःसाहस भी नहीं कर सकती थी। रूसी लारियाँ सड़क पर गड़-गड़ा रही थीं और उनके कारण घर की दीवारें हिल रही थीं। वह और प्रतीक्षा न कर सकती थी। इस समय वह डरी हुई थी। उसने दरवाजे पर टक-टक की और अन्दर जा घुसी।

दैत्य कमरे के बीचोंबीच चादर पर चित लेटा था।

"यह हुआ कैसे कि मुझे पिस्तौल की आवाज सुनाई ही नहीं दी!" उसने अपने आप से पूछा।

उसकी लाश सीधी तनी हुई पड़ी थी, मानो वह हिटलर की तस्वीर को सैल्यूट करता हुआ ही मरा हो। उसकी कलगीदार-टोपी सिर पर थी।" उसका चेहरा एकदम नीला था और लगता था कि उस पर राख छिड़की हुई है। उसके दाहिने गाल, उसके मुँह तथा नाक में खून लगा था, लेकिन अधिक नहीं, रक्त की केवल एक पतली लकीर।"

उसके पास पड़े हुए पिस्तौल को उसने उठाया और उसके चमड़े के खोल में रख दिया। तब उसने बन्धक को नीचे दबाया। वह अभी भी हैरान थी कि उसे पिस्तौल की आवाज क्यों सुनाई नहीं दी।

उसने चादर के कोने उठाये और लाश को ढक दिया। उसका चेहरा ढकने से पहले उसने अन्तिम बार उसकी ओर देखा।

"मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं किसी मुर्दे के पास खड़ी हूँ," वह अपने मन में कहने लगी। "मुझे मृत्यु का भय नहीं है। मैं इसके निकट होने पर भी इसकी ओर देखती तक नहीं। शायद यह इसलिये कि मैंने अस्पताल में हजारों को मरते देखा है।"

उसने बिना छुए उसका चेहरा ढक दिया। अब वह मुर्दा था। जिन मुर्दों को उसने देखा था उनसे किसी भी तरह भिन्न नहीं। जीवित था, तो दूसरों से कितना भिन्न था! लेकिन अब उसे वह समय भी याद

नहीं आ रहा था जब वह जीवित था, जब उसने हजामत बनाई थी और वर्दी पहनी थी। उस समय जब वह उसके पास थी तो उसका रोम-रोम काँप रहा था।

लेकिन, अब यह ऐसा लगता था जैसे अनेक वर्ष पूर्व हुआ हो। वह इसे लगभग भूल गई थी।

बाहर रूसी लारियां और फौजी मोटर-गाड़ियों की गड़-गड़ाहट सुनाई दे रही थी। अचानक हिल्दा डर गई। वह बच्चे को गोद में लेकर बाग के पिछवाड़ेवाले छोटे दरवाजे से जंगल में भाग जाना चाहती थी। लेकिन उसे दैत्य को दिया हुआ अपना वचन याद आया।

"मैंने उसे जलाने का वचन न दिया होता," उसने अपने मन में सोचा।

वह लाश को आँगन में नहीं ले जा सकती थी। लारियों और फौजी गाड़ियों में उस रास्ते जानेवाले रूसी सैनिक उसे देख ले सकते थे।

"मुझे रात होने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी," उसने अपने मन में तय किया। "तब मैं इसे घसीट ले चलूँगी, चादर को आग दिखा दूँगी और बच्चे को लेकर जंगल में भाग जाऊँगी।"

वह लाश के पास खड़ी रही, विचार-शून्य। तब उसे सूझा कि यदि किसी ने उसके घर में लाश देखी तो वह पकड़ ली जा सकती है। वह पास के कमरे में से बच्चे को ले आई और लाश के पास कुर्सी पर बैठ गई।

"मृत्यु से पहले एक सैनिक को दिये गये वचन को मैं भंग नहीं कर सकती," उसने अपने मन में कहा। उसने दरवाजा बन्द कर दिया और निश्चय किया कि वह अँधेरा होने तक प्रतीक्षा करेगी। अभी एक या दो घण्टा ही और शेष था। उसके निकट घड़ी नहीं थी, किन्तु उसे याद आया कि उसने दैत्य की कलाई पर एक बड़ी-सी घड़ी देखी थी। उसने

चादर को एक ओर खींचा और मुर्दे की घड़ी पर नजर डाली ताकि वह जाने कि उसे और कितनी देर प्रतीक्षा करनी होगी। उसी समय दरवाजे पर जोर का शब्द हुआ।

उसने बच्चे को जोर से छाती से लगा लिया और मौन रही। उसे दरवाजे के बाहर रूसी बोलते हुए आदमियों की आवाज सुनाई दे रही थी। और भी 'धप-धप' की आवाज हुई। बाग की ओर का दरवाजा खोला।

"मैं बिना अपना वचन पालन किये भाग नहीं सकती," उसने मन में कहा। "मेरा पति जॉन एक वीर-पुरुष है। उसकी पत्नी होकर मैं एक कायर की तरह नहीं बरत सकती।"

उसने पैट्रोल के बरतनों में से एक की टोपी खोली और उसे चादर पर उँड़ेल दिया। इस समय तक वे अपनी बन्दूक के कुन्दों से दरवाजों पर प्रहार कर रहे थे। उसने दूसरे बरतन की ढिबरी खोली और उसमें से आधा पैट्रोल ही गिराया। उसे डर था कि रूसी किसी भी समय दरवाजा तोड़ डालेंगे और वह बहुत जल्दी कर रही थी। उसने बच्चे को उठाया और खिड़की की ओर बढ़ी।

"मैं खिड़की में से कूद जाऊँगी और तब जलती हुई अग्नि-पेटिका कमरे में फेंक दूंगी। आग लग जायगी। तब मेरा वचन पूरा हो जायगा," उसने सोचा।

कमरे में पैट्रोल की तेज दुर्गन्ध थी। बच्चे ने खाँसना आरम्भ किया। उसने और भी जल्दी की। जिस समय वह बाग में कूदने के लिये खिड़की की शिला पर चढ़ी, उस समय रूसी अपने कन्धों से दरवाजा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे; किन्तु दरवाजा मजबूत था। खिड़की से बाग की पुष्प-शय्या एक कूद की ही दूरी पर थी। वह आसानी से कूद सकती थी। किन्तु ठीक उसी समय खिड़की की शिला के नीचे से तीन रूसी टोपियाँ प्रकट हुईं।

बाग में दूसरे सैनिक भी आ पहुँचे थे। अब खिड़की में से कूदना

बेकार था। उसने दरवाजे की ओर देखा। पेट्रोल की भाप से बच्चे का गला घुटा जा रहा था और वह चिल्ला रहा था। अन्त में उसने सोचा कि वह खिड़की के रास्ते बाग में कूद ही पड़ेगी और रूसी सैनिकों को पार कर जंगल में जा पहुँचेगी। उसी समय उसके पीछे-पीछे एक हाथ आगे बढ़ा, जिसने उसका पैर पकड़ लिया।

वह चिल्लाई। वह आत्म-रक्षा चाहती थी, किन्तु उसके हाथ में उस अग्नि-पेटिका के अतिरिक्त और कुछ न था। जान पर खतरा आ पड़ने पर जैसे कोई बन्दूक का घोड़ा दबा देता है, उसी प्रकार उसने बिना विचारे ही अग्नि-पेटिका की चर्खी घुमा दी। एक सैकिंड के भी एक अंश के लिये बड़ा प्रकाश हुआ। तब अन्धकार छा गया, रात्रि से भी अधिक गहरा और काला अन्धकार। फिर उसके बाद कभी प्रकाश नहीं हुआ। आग की जिन लपटों ने जरशु जार्डन की लाश को भस्म किया, उन्हीं लपटों ने जॉन मारित्ज़ की पत्नी हिल्दा को और उनके बच्चे फ्रांत्ज़ को भी। और उसी आग ने तहखाने से लेकर ऊपरी मंजिल तक और भीतर की प्रत्येक वस्तु को भस्म कर दिया; उन चित्रों को भी, जिन्हें दैत्य अपने साथ लाया और जिन्हें मेज पर रखा था : सुसाना की माँ की तसवीर और जॉन की पूर्व-भार्या सुसाना की तसवीर।

उस रात दैत्य के पेट्रोल से निकलनेवाले शोले आकाश को स्पर्श कर रहे थे।

१०४

त्रायन कोरग और एल्योनोरा वैस्ट बीमर के नगर-मेजर, मेजर ब्राउन के सामने एक दूसरे के पास पास बैठे थे।

"और यही सब कुछ है, मेजर-ब्राउन," त्रायन बोला। २३ अगस्त

को जब रूसियों ने रूमानिया पर अधिकार कर लिया उसी समय हम रूमानिया-दूतावास के सदस्य के नाते क्रोटो द्वारा सीमित क्षेत्र में कैद कर दिये गये। हमें एक होटल में रहने के लिये मजबूर किया गया और हमारे साथ शत्रु-देशों के कूटनीतिक प्रतिनिधियों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार जो व्यवहार किया जाना चाहिये, वही व्यवहार किया गया। उसके बाद तीतों के पक्ष-धरों ने क्रोटिया पर अधिकार कर लिया। हम आस्ट्रिया में कैद रहे, तब जर्मनी में और अन्त में जैकोस्लोवाकिया में। जब जर्मनी ने शस्त्र रख दिया और हम को कैद रखनेवाला कोई नहीं रहा, तो हम पश्चिम की ओर चल दिये। हमारे पास जो कुछ था, वह हमने सब छोड़-छाड़ दिया और पश्चिम की ओर चल दिये।"

एल्योनोरा उन डेढ़ सौ मीलों की बात सोच रही थी, जो उन्होंने पैदल तय किये थे। उसकी टाँगें सूज गई थीं और उसके पाँवों के तलुओं में गाँठ पड़ गई थीं।

"हम खाली हाथ खेतों में और जंगलों में भागते रहे हैं, ताकि हम किसी ऐसे प्रदेश में पहुँच जायें जहाँ अमरीकनों का, अँगरेजों का अथवा फ्रांसीसियों का अधिकार हो," एल्योनोरा कहती गई। "हम जीते जी रूसियों अथवा पक्ष-धरों के हाथ में पड़ना नहीं चाहते थे। उनके हाथों गिरफ्तार होने से पहले हम आत्महत्या कर लेते।"

"तुम रूसियों और पक्षधरों से इतने भयभीत क्यों हो? फैसिस्टों के अतिरिक्त और किसी को उनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। रूसी और पक्षधर हमारे सहयोगी हैं। वे संयुक्त जातियों की विजय के लिये लड़ते रहे हैं।"

"मेजर ब्राउन, तुम भी फैसिस्ट नहीं हो, लेकिन मैं नहीं समझता कि तुम अपनी पत्नी को २४ घंटों के लिए भी बाल्शविक अधिकृत प्रदेश में रखना चाहोगे," त्रायन बोला। "राजनीतिक कारणों से नहीं, किन्तु केवल रूसियों के अत्याचार और आततायीपन के कारण। मुझे विश्वास नहीं कि जब तक तुम वर्दी न पहने हो और तुम्हारी प्राण-रक्षा की पूरी--

पूरी व्यवस्था न हो, तब तक तुम भी रूसी अथवा पक्ष-धर क्षेत्र में प्रविष्ट होने का साहस कर सकोगे। ऐसी परिस्थिति में क्या यह शोभा देता है कि आप हमारे जैसे दो रक्षा-विहीन प्राणियों से यह प्रश्न करें कि हम उन बर्बरों के झुण्ड के सामने, जिनके पास नवीनतम अमरीकन-ढंग की स्वसंचालित बन्दूकें हैं, क्यों भाग खड़े हुए?"

"और अब तुम क्या चाहते हो?" मेजर ब्राउन बोला। "तुम जर्मनी छोड़ कर नहीं जा सकते। और जब तक तुम रहो, तब तक तुम्हारे साथ शत्रु-नागरिक का व्यवहार किया जायगा। जर्मन-जनता की जो मजबूरियाँ होंगी वही तुम्हारी मजबूरियाँ होंगी और वे ही अधिकार। इससे अधिक कुछ नहीं।"

"दूसरे शब्दों में कोई अधिकार नहीं," त्रायन बोला। बीमर में रहने वाली प्रत्येक जर्मन-रमणी को बुखेनवाल्ड के कैदी-कैम्प के पाखाने साफ करने पड़ते हैं और कम से कम सप्ताह में एक बार "मुक्ति-प्राप्त" लोगों के कपड़े धोने पड़ते हैं। क्या तुम मेरी पत्नी को भी यही कुछ करने के लिये भेजना चाहते हो?"

"हम अमरीका और मित्र-जातियों के शत्रु नहीं हैं," एल्योनोरा बोली। "एक वर्ष से भी अधिक मित्र-जातियों के शत्रुओं ने हमें कैदी बनाकर रखा। अब हम तुम्हारे पास इस प्रदेश में कहीं एक कमरे की माँग करने के लिये आये हैं; और यदि हम यहाँ रह नहीं सकते तो चले जाने की अनुज्ञा के लिए। हम दोनों बे-घर हैं। हम नहीं जानते कि हम कहाँ सोयें, कहाँ खायें! हमें नहाने-धोने के लिये कहीं कोई स्थान नहीं है। हमें रहने की आज्ञा भी नहीं है और हमें चले जाने अनुज्ञा भी नहीं है।"

"तुम शत्रु-नागरिक हो," मेजर ब्राउन बोला। "मुझे तुम्हारे व्यक्तिगत दुर्भाग्य से कुछ लेना-देना नहीं है। तुम्हारे पास रूमानिया के पासपोर्ट हैं, क्या नहीं हैं? इसलिये तुम शत्रु-नागरिक हो।"

"लेकिन रूमानिया पिछले दस महीनों से, मित्र-सेनाओं की ओर से जर्मनी से लड़ रहा है," एल्योनोरा ने कहा। "तुम इस बात को उतना ही जानते हो जितना हम जानते हैं। मित्र-सेनाओं का पक्ष ग्रहण कर अस्सी हज़ार रूमानिया-वासी अभी तक बलिदान हो चुके हैं। जो लोग तुम्हारे कन्धे के साथ कन्धा मिलाकर लड़ रहे हैं, क्या तुम उन्हें अपना शत्रु समझते हो?"

"रूमानिया एक शत्रु-राज्य है," मेजर ब्राउन ने फिर दोहराया। उसने दराज में से एक छपा हुआ कागज़ निकाल कर पढ़ा: "शत्रु-देश रूमानिया, हंगरी, फिनलैण्ड, बलगेरिया, जर्मनी, जापान, इटली। यह बिलकुल स्पष्ट है, क्यों क्या नहीं है? तुम संयुक्त-राज्य के शत्रु हो।"

त्रायन उठ खड़ा हुआ। एल्योनोरा ने प्रार्थना भरी आँखों से मेजर की ओर देखा।

"क्या तुमने कभी समाचार-पत्रों में यह नहीं पढ़ा कि लगभग एक वर्ष से रूमानिया मित्र-जातियों की ओर से लड़ रहा है," उसने पूछा। "क्या हमारी पहचान के कागज यह नहीं कहते कि हम जर्मनों के कैदी रहे हैं? यह तुम्हारे लिये पर्याप्त प्रमाण होना चाहिये। हम तुम्हारे शत्रु नहीं हैं।"

"चाहे सच हो, चाहे झूठ, मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं है," मेजर ब्राउन बोला। "मेरे पास जो हिदायतें आई हैं उनमें लिखा है कि रूमानियावासी संयुक्त-राज्य के शत्रु हैं। मैंने तुम्हारे साथ तर्क-वितर्क करते पर्याप्त समय बरबाद कर दिया। अरे, पागलो, तुम मेरे शत्रु हो, मेरे शत्रु हो, कुछ समझ में आया? यदि मैं तुम्हारे हाथ पड़ गया होता तो तुमने मुझे तुरन्त वहीं गोली से उड़ा दिया होता। जैसे मैं तुमसे बात-चीत कर रहा हूँ इस प्रकार तुमने बैठकर बातचीत न की होती। यह सब कानून के विरुद्ध है। और यह अब नहीं होगा। कोई अपने शत्रुओं से तर्क-वितर्क नहीं किया करता।"

बीमर का मेजर ब्राउन क्रोध से नीला पड़ गया था। उसने त्रायन और एल्योनोरा के विदा होने पर उनका प्रति-अभिवादन तक नहीं किया।

"यह तुम्हारा पश्चिम है," सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए त्रायन बोला "उन्हें घटनाओं के अतिरिक्त आदमियों से कुछ लेना-देना नहीं। व्यक्ति के लिये उनके पास आँख नहीं रही। उन्होंने हर चीज़ को सामान्य बना दिया है और वे अब केवल कायदे-कानून के सामने सिर झुकाते हैं।"

"मैं अब और नहीं चल सकती," नोरा बोली। उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। वह उसके कंधे पर झुक पड़ी और रोने लगी।

"हम लगभग सौ मील दौड़े। हम उसी प्रकार दौड़े जैसे लोग मक्के की ओर दौड़ते हैं।"

"नोरा, इसके लिये पश्चात्ताप न करो," वह बोला। "हम रूसियों के जंगली अत्याचार से बच निकले। हम भाग्यवान् हैं। आज पृथ्वी पर कोई ऐसी जगह नहीं रह गई है, जहाँ आदमी सुखी है। पृथ्वी आदमियों की नहीं रह गई है।"

१०५

चार दिन बाद त्रायन और एल्योनोरा एक बार फिर नगर-मेजर से मिलने गये। उन्हें और एक सप्ताह रहने के लिये अनुज्ञा की आवश्यकता थी।

नोरा के पाँव सूजे थे और वह बड़ी कठिनाई के साथ चल सकती थी। उसके पास जो सबसे अच्छा रेशमी पहनावा था, वही उसने पहन रखा था। सिर पर एक टोपी थी और पाँव में ऊँची एड़ीवाला जूता।

ड्यूटी पर खड़े सिपाही को यह कहने के बाद कि वे गवर्नर से मिलना चाहते हैं, त्रायन एल्योनोरा से बोला :—

"तुम पूरी तरह से पहने हो मानो किसी सरकारी स्वागत के लिये।" वह मुस्कराई। पिछली बार उसने तीन वर्ष पूर्व, उस दिन यह पहनावा पहना था जब कि वह फिनलैण्ड के एक मंत्री से मिलने गई थी।

"मेजर ने आपको एक मिनट प्रतीक्षा करने के लिए कहा है," संतरी ने नम्रतापूर्वक कहा।

कुछ मिनट गुजरे। एल्योनोरा प्रसन्न थी। तब दूसरा सैनिक आया।

"क्या आप ही वह रूमानिया-वासी कूटनीतिज्ञ हैं जो नगर-मेजर से मिलना चाहते हैं?" उसने पूछा। "क्या आप कृपया थोड़ी और प्रतीक्षा कर सकेंगे?" और वह अदृश्य हो गया। एल्योनोरा सोचने लगी कि आखिर मेजर ब्राउन एक सज्जन आदमी है और: बर्ताव करना जानता है। पाँच मिनट में यह दूसरी बार था कि उसने उनसे प्रतीक्षा कराने के लिए क्षमा माँगी थी।

एक बड़े प्रवेश-द्वारवाले बड़े भारी भवन में सैनिक शासन का प्रधान दफ्तर स्थापित किया गया था। नोरा ने शीशे में अपनी शकल देखी। वह अब कुछ दुबला गई थी और उसके पहनावे की चुनन इस समय उससे कुछ अधिक अच्छी लगती थी जैसी कि पिछली बार फिनलैण्ड के दूतावास के समय।

"कृपया इस ओर," उनकी ओर आते हुये एक दूसरे सैनिक ने कहा। एल्योनोरा मुस्कराती हुई शीशे से हट आई। त्रायन ने उसका हाथ धर लिया। वे सैनिक के पीछे हो लिये। सैनिक जहाँ वे पिछली बार गये थे, उधर गवर्नर के दफ्तर की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ रहा था, वह बाहर की ओर जा रहा था। दर्वाजे के बाहर एक जीप प्रतीक्षा कर रही थी। उसने उन्हें उसमें बैठने के लिए कहा।

"हम कहाँ जा रहे हैं?" त्रायन ने प्रश्न किया।

गाड़ी का चक्का चलानेवाले सैनिक ने कन्धे झटकार दिये। हवा तेज थी। गाड़ी नगर के बाजारों में से दौड़ चली। त्रायन ने दूसरे सैनिक की ओर झुक कर उसके कानों में चिल्लाकर प्रश्न किया :

"हम कहाँ जा रहे हैं ?"

उसने भी पहले सैनिक की तरह अपने कन्धे झटकार दिये।

त्रायन अपनी पत्नी की ओर मुड़ा। वह दोनों हाथों से अपनी टोपी के किनारे थामे हुए थी और हँस रही थी। उसे तेज गति से सदैव प्रेम रहा था।

जीप, नगर के दूसरे सिरे पर एक पथरीली दीवार के बाहर जाकर रुकी। कलगीदार टोपी पहने एक द्वार-पाल ने दरवाजा खोला। किन्तु गाड़ी अन्दर नहीं गई। सैनिकों में से एक ने द्वारपाल को एक लिफाफा दिया। तब उसने त्रायन और एल्योनोरा को गाड़ी में से उतरने का इशारा किया।

"हम कहाँ हैं ?" उसने पूछा।

अमरीकी उसके गाड़ी से उतरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया।

"हम कहाँ हैं ?" उसने द्वार-पाल से जर्मन में पूछा।

"नगर की जेल में," उसका उत्तर था और साथ ही उसने उसे बाजू से पकड़ लिया।

वह सैनिकों से दो शब्द बोलना चाहती थी, लेकिन अब बहुत देर हो गई थी। जीप, जितनी जल्दी आई थी उतनी ही जल्दी अदृश्य हो गई थी। वह त्रायन की ओर मुड़ी। त्रायन का रंग सफेद था। उनके पीछे लोहे के दरवाजे बन्द थे।

वे जेल के आँगन में थे।

१०६

ब्रायन को नीचे की मंजिल में कोठरी नं० ५ में कैद कर दिया गया और नोरा को तीसरी मंजिल पर कोठरी नं० २६ में।

"स्पष्ट ही कहीं न कहीं कुछ गलती है," ब्रायन ने अकेले होते ही अपने मन में कहा। उसने गलती का अनुमान लगाने का प्रयत्न किया। लेकिन उसी समय जब उसे इस बात का ध्यान आया कि उसी की तरह की कोठरी में नोरा कैद है तो उसका अपने स्नायुओं पर से अधिकार जाता रहा।

जिस समय उन्हें पृथक् किया जा रहा था, उसने उसका चुम्बन लेने का प्रयत्न किया था और कोशिश की थी कि प्रेम के दो शब्द बोल सके। वार्डर ने उसे कन्धे से पकड़ लिया था और उसके पास जाने से रोक दिया था। नोरा बड़ी मिन्नत करती हुई वार्डर की ओर झुकी थी किन्तु उसे भी उसने निर्दयतापूर्ण ढंग से बरामदे के एक कोने की ओर ढकेल दिया था। इस प्रकार वे उस कारागार के बड़े कमरे में एक दूसरे से पृथक् कर दिये गये थे।

"मुझे लगता है कि उन्होंने मेरे ही जैसे नाम और मुझसे मिलती-जुलती शकल वाले, भगवान् जाने, किसी न किसी अपराधी से गड़बड़ा दिया है। लेकिन उन्होंने नोरा को क्यों पकड़ा है?"

ब्रायन ने वार्डर को बुलाने के लिए दर्वाजे को मुक्कों से पीटना आरम्भ किया।

"मैं यह आशा कर सकता था कि रूसी लोग मुझे गिरफ्तार करेंगे," उसने अपने मन में कहा। "उनके लिए किसी आदमी के हाथों का साफ-स्वच्छ होना ही गिरफ्तारी का पर्याप्त कारण है। यथार्थ बात तो

यह है कि यदि उन्होंने बिना मेरे हाथों की ओर देखे भी मुझे पकड़ लिया होता तो भी मुझे कुछ आश्चर्य न होता। मैं रूमियों से कुछ भी आशा कर सकता हूँ। मैं कई सौ मील तक पैदल केवल इसलिए दौड़ा ताकि मैं समाज के उस रूप से बच सकूँ जिसमें 'किसी कारण का न होना' ही किसी की गिरफ्तारी, हत्या और जलावतनी का पर्याप्त कारण हो सकता है।"

यद्यपि उसके हाथ दुखने लगे थे तो भी वह अपनी कोठरी के दरवाजे को पीटता रहा। अब वह यह वार्डर को बुलाने के लिए नहीं कर रहा था किन्तु वह अपने आपको इस बात का दण्ड देना चाहता था कि वह व्यर्थ एक सौ मील दौड़ा और साथ-साथ नोरा को भी घसीटा; नोरा, जिसकी टाँगें सूजी थीं और पाँव से रक्त बह रहा था।

"मैं समझता था कि उसे जर्मन लोग गिरफ्तार करेंगे, क्योंकि वे नाज़ी हैं और यहूदियों के विरोधी हैं।"

"तुम क्या चाहते हो?" रास्ते में खड़े हुए वार्डर ने पूछा।

"मैं तुरन्त जेल के गवर्नर से दो बातें करना चाहता हूँ," आयन बोला। "मेरी पत्नी और मैं किसी मूर्खतापूर्ण गलती के कारण पकड़ लिये गये हैं।"

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ," वार्डर ने व्यंग-भरे स्वर में कहा। "जो कोई भी यहाँ पहले-पहल आता है, यही कहता है कि वह गलती से पकड़ लिया गया है।"

"मेरे साथ मज़ाक मत करो," आयन बोला।

"मैं गवर्नर से तुरन्त बात करना चाहता हूँ।"

"यहाँ कोई गवर्नर नहीं है," वार्डर ने उत्तर दिया। "तुम्हें अमरीकियों ने पकड़ा है। हम केवल जेल की भीतरी व्यवस्था के लिए उत्तरदायी हैं। हमें कैदियों से बात करने की भी आज्ञा नहीं है। एक तरह से हम भी कैदी हैं।"

"तो मैं अमरीकियों से बात करना चाहता हूँ।"

"सार्जेन्ट सप्ताह में केवल एक दिन आता है—सोमवार के दिन।"

ब्रायन को याद आया कि आज सोमवार ही है।

"क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि मुझे अगले सोमवार तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?" उसने पूछा। "क्या तुम सोचते हो कि मेरी पत्नी पूरे सप्ताह भर जेल में पड़ी रहेगी?"

"यह सब मुझे कहने से कोई लाभ नहीं है," वार्डर बोला। "तुम घण्टों लगातार दरवाजे को पीटते रह सकते हो किन्तु इससे कुछ लाभ न होगा। सार्जेन्ट अगले सोमवार से पहले नहीं आएगा और मैं इस विषय में कुछ नहीं कर सकता।" उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

"अच्छा, चाहे तो इस बात को आगे बढ़ा दो और चाहे अपने तक ही सीमित रखो, जैसा तुम चाहो करो; किन्तु जब तक मुझे अपनी गिरफ़्तारी का कारण जानने के लिए गवर्नर से बात-चीत करने को नहीं मिलेगा, मैं भोजन या पानी नहीं छूऊँगा। मेरे पास विरोध प्रदर्शन का केवल एक ही मार्ग है और मैं इसे अपना रहा हूँ।"

"क्या तुम्हारा मतलब भूख-हड़ताल है?" वार्डर ने पूछा।

"हाँ, और मैं कुछ पिऊँगा तक नहीं।"

वार्डर हाथ में चाबी लिये जरा देर देहली पर खड़ा रहा।

"तुम दया के पात्र हो," वह बोला "तुम अभी बच्चे हो।" उसने ताले में दो बार चाबी घुमा दी।

१०७

नोरा आध घण्टे तक अपनी कोठरी के दरवाजे को मुक्कों से पीटती रही। आखिर में एक वार्डर दरवाजे तक आया किन्तु उसने दरवाजा नहीं खोला। उसने झँझरी में से कोठड़ी में झाँका।

"यदि तुम दरवाजे को पीटती रहोगी तो तुम्हें सजा मिलेगी," वह बोला। "कैदियों को दरवाजों के पीटने की आज्ञा नहीं है।"

वार्डर चला गया। नोरा जाकर बिस्तर पर लेट गई। एक क्षण के बाद वह उठ खड़ी हुई। "शायद यहाँ खटमल हैं," उसने अपने मन में कहा। वह डर गई थी। वह चाहती थी कि फिर दरवाजे को पीटे और दूसरा गद्दा माँगे या कम से कम मालूम करे कि उसकी चारपाई में खटमल हैं अथवा नहीं। लेकिन अब उसे कह दिया गया था कि वह दरवाजे को पीट नहीं सकती है। वह अपनी कोठरी में ऊपर-नीचे टहलने लगी।

अपने अन्तःकरण के भीतर नोरा अपने-आपको अपराधी समझती थी। वह मानती थी कि सामान्य रूप से उसकी गिरफ्तारी उचित है। जिस दिन से उसने अपनी जातीय उत्पत्ति प्रमाणित करनेवाले कागज-पत्रों में धोका किया था और फाइल में से अपना जन्म-प्रमाण-पत्र चुरा लाने के लिए धन दिया था, उसी दिन से जेल का विचार दिन-रात उसका पीछा कर रहा था। प्रतिदिन उसे ऐसा लगता था मानो पुलिस पकड़ने आ रही है। वह जानती थी कि उसका पता लग जायगा और देर-सबेर पकड़ ली जायगी। जर्मनी की सीमा पर वह हर पुलिसवाले को देखकर काँप उठती थी, क्योंकि उसके कागज-पत्र जाली थे। उसके जीवन के ये वर्ष अन्तिम गिरफ्तारी के सतत भय में व्यतीत हुए थे।

"वह घड़ी आ पहुँची है" वह बोली। "उन्हें पता लग गया है कि मैं यहूदी हूँ और अब मैं किसी तरह नहीं बच सकती।"

भय से उसके शरीर का रोम-रोम काँप रहा था।

"मेरा यह सोचना बेहूदा है कि अमरीकियों ने मुझे इसलिए पकड़ लिया क्योंकि मैंने अपने यहूदी-मूल को छिपाया और रूमानिया में कुछ जाली कागज-पत्र बनाये; तो भी मुझे यकीन है कि मेरी गिरफ्तारी का कारण यही है। एक-मात्र यही है। यह तर्कानुकूल नहीं है किन्तु सत्य है। मैं अपराधिन हूँ। पाँच वर्ष तक मैं बची रही। इस बार मुझे

सजा मिलेगी, कठोर तथा निर्दयतापूर्ण सजा, किन्तु वह अन्यायपूर्ण न होगी।"

उसे ठण्ड लगने लगी। साबुन के बुलबुलों की तरह हल्का उसका अन्त-र्वस्त्र और मुखावरण की तरह पतला तथा हवादार उसका पहनावा पथरीली दीवारों की ठण्डभरी नमी से उसकी रक्षा न कर सकता था। यह उसकी चमड़ी को भी पार कर उसकी हड्डियों की मज्जा तक पहुँच गई। उस समय तक उसे कभी अपने गुर्दों में ठण्ड नहीं लगी थी। शरीर-शास्त्र की दृष्टि से वह यह भी नहीं जानती थी कि गुर्दे ठीक कहाँ होते हैं और कैसे होते हैं। किन्तु वे निश्चय से बरफ बने जा रहे थे। न केवल उसके गुर्दे किन्तु उसकी आँतें भी बर्फ बनी जा रही थीं।

उसने अपने कपड़ों से अपने घुटने लपेट लिये किन्तु इससे कुछ लाभ नहीं हुआ। उसे बिस्तर पर बैठते डर लगता था। सीमेंट के फर्श की बर्फीली ठण्डक उसके जूतों के पतले तल्लों में से होकर उसके घुटनों तक पहुँच रही रही थी और उनसे भी ऊपर जाकर उसकी सारी देह में व्याप्त हो थी। वह काँपने लगी और उसके दाँत कटकटाने लगे।

बाहर गर्मी थी, लेकिन इसका उसके लिए कुछ अर्थ न था। उसके दाँत कटकटा रहे थे और वह ऐसे काँप रही थी जैसे यह कोई शीतकाल का मध्य हो। गर्माने के लिए वह अपनी कोठरी के बीचों-बीच अपने पैरों के बल बैठ गई। उस समय उसे यकायक ऐसा लगा कि उसे लघु-शंका करनी है। उसे इसके लिए उसी समय जाना था। उसके मूत्राशय में सैकड़ों सूइयाँ चुभ रही थीं और उसकी पेशियाँ उसके अधिकार से बाहर चली जा रही थीं।

उसने उपन्यासों में पढ़ा था कि जेलों की कोठरियों में शौचालय के स्थान पर बाल्टियाँ रहती हैं। किन्तु अपनी कोठड़ी में से उसे चारपाई, मेज, एक छोटी सलाखोंवाली खिड़की और दरवाजे के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं दिया। वह गई और उसने दरवाजा पीटने के लिए अपनी मुट्ठी बाँधी।

"निश्चय से वे लघुशंका करने देने से इन्कार नहीं कर सकते," उसका तर्क था।

तब भी उसे यकायक जर्मन वार्डर के कठोर शब्द याद आये, यदि तुमने फिर दरवाजा पीटा तो तुम्हें सजा मिलेगी। उसके हाथ दोनों ओर लटक गये। उसे दरवाजा पीटते डर लगा।

"मैं दोषी हूँ, क्योंकि दरवाजा पीटना मना था। मैंने उसे पीटा," उसने अपने मन में कहा और फिर कोठरी में इधर-उधर घूमने लगी।

वह फिर दरवाजे के सामने आई और अपनी बँधी मुट्ठी ऊपर की, लेकिन अभी उसे दरवाजा पीटने का साहस नहीं हुआ। "यदि तुम फिर दरवाजा पीटोगी तो तुम्हें सजा मिलेगी।"

जिस समय ये शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे, उसके शरीर में से विद्युत् की एक धारा सी गुजर गई—एक सावधानीसूचक सिगनल। अकस्मात् उसकी पेशियों ने उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया और उसका उन पर तनिक भी अधिकार न रहा। उसे लगा कि नमी फैलती जा रही है, फैलते-फैलते वह उसकी जुराबों तक पहुँच गई है। उष्ण और गीला तरल पदार्थ उसकी जाँघों से टपक कर उसकी जुराबों में होता हुआ उसके जूतों तक जा पहुँचा।

उसने अपने आपको रोके रखने का एक अन्तिम प्रयत्न और किया लेकिन यह ऐसा था जैसे उसकी पेशियों पर, उसके माँस, और उसके सारे शरीर पर उसका कोई अधिकार ही न रह गया हो। वह फिर पालथी मारकर बैठ गई। जब उसका अन्तर्वस्त्र उष्ण और उष्णतर होता गया, शनैः शनैः उसे एक प्रकार का मजा और आराम मालूम देने लगा, जैसा कि इससे पहले जीवन में उसे कभी अनुभव नहीं हुआ था। यह ऐसा था मानों उसके शरीर की प्रत्येक पेशी, प्रत्येक रन्ध्र और प्रत्येक रेशा आराम कर रहा हो। यह मजे से कुछ विशेष था। यह आनन्द था। कदाचित् आनन्द से भी अधिक; यह परमानन्द था। इससे

उसके सभी भौमिक सम्बन्ध टूट गये। वह आकाश में तैर रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि सम्पूर्ण विमुक्ति और आनन्द का एक क्षण सदा बना रहेगा। यह कालातीत था; उसकी सारी देह विमुक्त थी।

उसे लगा कि वह घण्टों बिना रुके लगातार पेशाब करती रही है, लेकिन जब उसकी नजर अपने चारों ओर के गीले सीमेंट पर पड़ी तो वह भय से काँप उठी। वह खड़ी हुई और छिपने के प्रयत्न में कोठरी के एक कोने की ओर दौड़ गई। यह उसके जीवन का अत्यन्त नाटकीय क्षण था। सारा सीमेंट फर्श एकदम भीग गया था। चारपाई, मेज और उसके अपने पैरों तक धाराएँ बह रही थीं।

वह जानती थी कि उसने कुछ ऐसी बात कर दी है जिसकी आज्ञा नहीं है और इसके लिए उसे कठोर दण्ड मिलेगा। वार्डर का तीखा और भयावना स्वर उसके कानों में गूँज उठा, "तुम्हें सजा मिलेगी।"

उसे इच्छा हुई कि वह अपनी पोशाक फाड़ डाले और उससे फर्श को सुखा दे, लेकिन वह स्पष्ट ही बेकार था। तरल पदार्थ इतना अधिक था कि वह उस रेशमी पोशाक और छोटे से अन्तर्वस्त्र से किसी भी तरह सुखाया नहीं जा सकता था, और फिर वह पोशाक भी इतनी अधिक रमणीय, और इतनी अधिक सुन्दर थी कि उससे फर्श पोंछा नहीं जा सकता था। उसके कानों में लगातार यह आवाज आ रही थी, "तुम्हें सजा मिलेगी।"

अब यह बात सम्पूर्ण रूप से समझ कर कि वह कभी छिपी नहीं रहेगी कि उसका पता लग ही जायगा और दण्ड से बचने का प्रयत्न व्यर्थ है, उसने अपनी आँखें दोनों हाथों से ढक लीं जिनमें अभी भी मकड़ी के जालों जैसे दस्ताने चढ़े थे।

निराशा की पराकाष्ठा में वह रोने लग गई।

१०८

"यह सारी की सारी अत्यंत अफसोसनाक दुर्घटना है," जेल का अधिकारी सार्जेन्ट गोल्डस्मिथ बोला। "मुझे क्षमा-याचना की आज्ञा दें। मुझे हार्दिक खेद है कि आपका मामला इससे पहले मेरे सामने नहीं लाया गया।"

त्रायन और एल्योनोरा की गिरफ्तारी को एक सप्ताह हो गया था। त्रायन बिस्तर पर था। इतना अधिक कमजोर कि हिल-डुल न सके। सात दिन तक उसने खाना-पीना कुछ नहीं छुआ था।

सार्जेन्ट गोल्डस्मिथ अपनी मोटर गाड़ी में उनका सामान ले आया था और अब उसे खोलने में नोरा की मदद कर रहा था। वह उन्हें सिगरेट देता रहा और साफ दिखाई देता था कि वह अपने आपको बड़ी ही विकट स्थिति में अनुभव कर रहा है।

"कल प्रातःकाल तुम रिहा हो जाओगे," वह बोला। "मैं स्वयं तुम्हारे लिए कोई न कोई निवास-स्थान खोजूँगा और तुम्हें अपनी गाड़ी में वहाँ पहुँचा दूंगा। जो कुछ हुआ है उसके लिए मुझे हार्दिक खेद है।"

न तो त्रायन ही एक शब्द बोला और न एल्योनोरा ही।

"श्रीमान् और श्रीमती कोरुग गिरफ्तार नहीं हैं, सार्जेन्ट गोल्डस्मिथ ने चीफ वार्डर से कहा। "वे यहाँ गलती से लाये गये हैं। वे यहाँ कल तक केवल इसलिए ठहर रहे हैं, क्योंकि आज कोई दूसरी रहने की जगह नहीं है। वे दोनों इस कमरे में सोयेंगे। देखो, उन्हें साफ चादर और कम्बल मिलने चाहिये। उनके साथ हमारे अतिथियों का सा बर्ताव होना चाहिये।"

सार्जेन्ट चला गया और आध घण्टे बाद एक पार्सल के साथ लौटा। वह उन दोनों के लिए खाना लाया था और आयन के लिए सन्तरे तथा अंगूर। जब वह जाने लगा, उसने फिर क्षमा माँगी, आयन से हाथ मिलाया और बिदा ली। प्रधान वार्डर ने इस दृश्य को खुली आँखों से देखा था मानों कोई आदमी कोई करिश्मा देख रहा हो।

"मैं जानती थी कि अमरीकी आएँगे और क्षमा-प्रार्थना करेंगे," नोरा बोली। "संयुक्त राज्य एक महान् और सभ्य देश है।"

आयन को ज्वर था। उसे तुरन्त नींद आ गई। रात को उसने स्वप्न देखा कि वह पनडुब्बी पर है और तमाम सफेद खरगोश मर गये हैं, उनमें से हर कोई। वह उठा तो उसे ठण्डा पसीना आया था, उसका पायजामा भीगा था, वह बोला—"यदि सफेद खरगोश मर गये तो अब और कोई आशा नहीं है।" वह नींद में पूरे जोर से चिल्लाया था, किन्तु नाविकों ने उसका विश्वास नहीं किया।

१०६

अगले दिन सार्जेन्ट गोल्डस्मिथ ने दर्शन नहीं दिये। नोरा सारे दिन प्रतीक्षा करती रही।

"वह किसी न किसी महत्त्वपूर्ण कारण से रुक गया होगा," सन्ध्या समय वह बोली। "कल वह अवश्य आयेगा।"

प्रधान वार्डर की भी यही सम्मति थी, तो भी सार्जेण्ट गोल्डस्मिथ न दूसरे ही दिन आया और न तीसरे ही दिन। एक सप्ताह बाद एक नये सार्जेन्ट ने दर्शन दिये।

"मुझे तुम्हारे बारे में कुछ जानकारी नहीं है," वह बोला, "सार्जेन्ट

गोल्डस्मिथ संयुक्तराज्य को वापस चला गया है। तुम्हारे बारे में उसने मेरे लिए हिदायत नहीं छोड़ी। लेकिन मैं जाँच करूँगा और अगले सोमवार को तुम्हें परिणाम से सूचित करूँगा।"

तब वह चला गया।

उस तरुण के बालों का रंग लाल था और सारे चेहरे पर चित्ते पड़े हुए थे। उसने प्रधान वार्डर तक को अपना नाम नहीं बताया था। उसके हस्ताक्षर अस्पष्ट थे और वह बड़ा ही धैर्यहीन था। अगले सप्ताह वह जेल में आया लेकिन ऑफिस में कुछ ही मिनट रहा। जब कोरग उससे मिलने आया तब तक वह चला गया था। उन्हें अगला सारा सप्ताह प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इस बार सार्जेन्ट का मिजाज बिगड़ा हुआ था।

"मैंने तुम्हारे बारे में जाँच पड़ताल की है," वह बोला। "तुम दूसरे सब आदमियों की तरह ही पकड़े गये हो। हमारे पास ऐसी कोई खास हिदायत नहीं है कि हम तुम्हारे साथ विशेष प्रकार का व्यवहार करें।"

सार्जेन्ट ने उनकी ओर पीठ फेर ली।

"उन्हें अलहदा-अलहदा कोठरियों में बन्द करो," उसने प्रधान वार्डर को हिदायत दी। "और उनके साथ ठीक दूसरे कैदियों जैसा व्यवहार करो। मैं इस जेल में किसी प्रकार का विशेष बर्ताव सहन नहीं करूँगा।"

वार्डर ने आँखें फाड़-फाड़ कर देखा। वह टकटकी बाँध कर यह निश्चय करना चाहता था कि उसने समझने में कुछ गलती नहीं की है। तब वह बोल उठा, "मैं समझ गया। अलहदा कोठरियाँ।

सामान्य व्यवहार। कोई विशेष बात नहीं।"

वार्डर का स्वर काँपने लगा।

११०

ज्यों ही नोरा ने बरामदे में वार्डर के पैरों की आहट सुनी वह बोली—"वे हमें पृथक् करने आ रहे हैं" वह आयन की गर्दन से लटक गई और जोर-जोर से सुबकियाँ भर कर रोने लगी।

"मैं अकेली एक कोठरी में बन्द होने की अपेक्षा मर जाना अधिक पसन्द करूँगी।"

प्रधान वार्डर रास्ते पर रुका और उसने अपनी चाबियाँ झनझनाईं। नोरा ने घूमकर नहीं देखा। वह जानती थी कि वह क्यों आया है और आयन भी जानता था। आयन ने उसकी ओर लगातार देखा। वह उससे प्रार्थना करना चाहता था कि वह उन्हें कम से कम पाँच मिनट इकट्ठा रहने दे। लेकिन वह एक शब्द नहीं बोला। वह जानता था कि यह सब बेकार है।

"इस ग्रीष्म में मुझे अपनी नौकरी से छुट्टी मिल जायगी," वार्डर बोला। "मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। अब मैं इस आयु में लुक-छिपी-खेल नहीं सीख सकता और मैं सीखना भी नहीं चाहता।"

वार्डर रुका। वह अपनी सारी शक्ति एकत्र कर रहा था। मानो उसे कोई बहुत ही भारी वजन उठाना हो। तब वह बोला—"तुम जैसे हो वैसे ही रहोगे। इकट्ठे और दरवाजे खुले हुए।"

"क्या सार्जेन्ट ने अपनी आज्ञा वापस ले ली है?" नोरा ने प्रश्न किया।

चाबियाँ खनखनाते हुए, आगे बढ़ते हुए वार्डर ने उत्तर दिया, "सार्जेन्ट ने अपनी आज्ञा वापस नहीं ली।"

कोठरी का दरवाजा खुला रहा।

१११

निराशावस्था में नोरा ने पूछा—"अमरीकियों के पास हमारे विरुद्ध क्या बात है ? उन्होंने छः सप्ताह से हमें क्यों पकड़ रखा है ?"

"अमरीकियों के पास हमारे विरुद्ध कुछ नहीं है," त्रायन ने उत्तर दिया। "उन्हें हमारे अस्तित्व तक का पता नहीं है।"

"और उन्हें यह मालूम करने में कितना समय लगेगा कि उन्होंने हमें पकड़ रखा है और जेल में डाले हुए हैं ?" वह बोली। "मैं इसे अब और सहन नहीं कर सकती।"

"उन्हें तुम्हारे या मेरे अस्तित्व का कभी पता नहीं लगेगा।" वह बोला। "अपनी प्रगति की इस अन्तिम अवस्था में पाश्चात्य सभ्यता को अब व्यक्ति के अस्तित्व का तनिक भान नहीं रहा है और ऐसी कोई वजह नहीं दिखाई देती जिससे यह आशा बँध सके कि इसे भविष्य में भान होगा। यह समाज व्यक्ति के कुछ खास पहलुओं को ही समझ सकता है। जहाँ तक इसका संबंध है, एक इकाई के तौर पर, एक व्यक्ति के तौर पर, इसके लिए आदमी का अस्तित्व है ही नहीं। तुम, एल्योनोरा वेस्ट, जो बिना अपराध के जेल में है। और मैं और हमारी तरह के दूसरे वहाँ है हीं नहीं। हमारा अस्तित्व केवल इतनी ही सीमा तक है कि हम एक वर्ग-विशेष का अत्यन्त छोटा अंश हैं। उदाहरण के लिए तुम जर्मन क्षेत्र में पकड़ी गई शत्रु-नागरिका हो। पाश्चात्य यान्त्रिक समाज तुम्हारे बारे में अधिक से अधिक इतनी ही जानकारी रख सकता है। यह तुम्हें केवल इन्हीं विशेषताओं से पहचान सकता है। और इसलिए यह तुम्हारे साथ गुणा, भाग और शेष के नियमों के अनुसार ही बर्ताव करता है, जिस वर्ग की तुम हो उसी की एक इकाई की हैसियत से,

जिसके अनुसार व्यवहार करना ठीक जान पड़े। तुम्हारा रूमानिया अंश के साथ एकीकरण हो गया है। वह अंश पकड़ा गया है। वह अपराध अथवा कसूर जो गिरफ़्तारी का कारण हुआ है, उस वर्ग का सामान्य गुण है।"

"यह सब होने पर भी मुझे विश्वास है कि अमरीकियों के पास हमें गिरफ़्तार करने का पर्याप्त कारण न रहा होगा," वह बोली। "उनके पास हमारे विरुद्ध कुछ है; कोई न कोई हम पर सन्देह करता होगा; अन्यथा वे हमें चले जाने देते। मुझे गिरफ्तारी के कारणों की जानकारी न होने से असीम वेदना होती है। कारण तो होंगे ही।"

"निश्चयात्मक रूप से बहुत अच्छे कारण हैं," आयन ने उत्तर दिया। "एक मानव के दृष्टिकोण से वे बेहूदा हैं, किन्तु एक मशीन के दृष्टिकोण से सर्वथा न्यायसंगत। आज पश्चिम यान्त्रिक माप-दण्डों से ही मनुष्य का मूल्यांकन करता है। रक्त और मांस का मनुष्य सुखी और दुखी होनेवाला मनुष्य, उसके लिए, आज है ही नहीं। यही कारण है कि उनका हमें गिरफ्तार करना, ताले में बन्द करना और चाहें तो कल मार डालना अपराध नहीं माना जा सकता। यह अपराध होगा यदि इसका रक्त-मांस के मनुष्य से संबंध हो। लेकिन पश्चिम का समाज जीवित मानव के अस्तित्व का लेखा-जोखा रख ही नहीं सकता। जब यह समाज किसी आदमी को पकड़ता है अथवा उसकी हत्या करता है तो यह किसी सजीव प्राणी को गिरफ्तार करता या उसकी हत्या नहीं करता, किन्तु केवल एक अदृश्य कल्पना को किसी भी दूसरी मशीन की तरह इसे ऐसी बातों के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता। कोई भी किसी मशीन से यह आशा नहीं कर सकता कि वह व्यक्तिगत विशेषताओं के अनुसार आदमियों के साथ व्यवहार करेगी।"

"और यह न्याय-संगत और सम्पूर्ण कारण कौन से हो सकते हैं जिनके अनुसार अमरीकियों ने मुझे गिरफ्तार किया है ?" उसने प्रश्न किया।

"मैं नहीं जानता," उसका उत्तर था। "मैं इतना जानता हूँ कि आदमी को ऐसे यान्त्रिक कानूनों और माप-दण्डों के अधीन करना, जो मशीनों के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं, उसे मार डालना है। कोई भी आदमी जिसे ऐसी परिस्थित में रहने के लिए मजबूर किया जायगा, जो मछलियों के लिये अनुकूल है, तो वह चन्द मिनटों में ही मर जायगा। यही बात मछलियों के विषय में आदमियों की परिस्थिति पर लागू होती है। पश्चिम ने एक समाज का आविष्कार किया है जो मशीन का ही पर्यायवाची है। यह अब आदमियों को इसके अनुसार रहने और इसके नये कानूनों के अनुसार अपना मेल बिठाने के लिए मजबूर कर रहा है। अभी पश्चिम को आशा है; कभी-कभी वह अपने आपको सफलता की मृग-मरीचिका के धोखे में भी डालता है। लेकिन जिन आदमियों के साथ उन कानूनों के अनुसार व्यवहार होगा जो मोटरकारों और घड़ियों के लिए बने हैं, वे नाश को प्राप्त होंगे ही 'लोग समान नहीं हैं... जातियाँ समान नहीं हैं, हर आदमी न दूसरे जैसा है न उसकी तरह होशियार या बलवान् है।'* केवल मशीनें ही पूर्ण रूप से समान हो सकती हैं। केवल मशीन के ही स्थान में मशीन लगाई जा सकती है, केवल मशीन के ही टुकड़े किये जा सकते हैं और उसे कुछ आवश्यक हिस्सों अथवा गतियों में बटाया जा सकता है। जब आदमी और मशीनें सर्वथा एकरूप हो जाएँगे, तब पृथ्वी पर आदमी नहीं रहेंगे।"

नोरा ने ठंडी साँस ली।

"एक मानव की हैसियत से, तुम्हारा अस्तित्व नहीं है," त्रायन ने अपनी बात जारी रखी। "अथवा यदि तुम चाहो, तो तुम्हारा अस्तित्व है, किन्तु केवल एक मशीन की ही दृष्टि से। जिस प्रकार पुराने बर्बरों के लिए आदमी का कोई मूल्य नहीं था उसी प्रकार आज के यान्त्रिकों के लिए भी आदमी का कोई मूल्य नहीं है। यदि है तो शून्य के बराबर है।"

---

* जवाहीर लाल नेहरू

"तुम्हारी गिरफ्तारी एक क्षुद्रतम घटना है, एक अत्यन्त ही क्षुद्र घटना। यदि यह अन्यायपूर्ण है तो वह क्षुद्रतम अन्याय है, लेकिन प्रधानतया तो तुम्हारी गिरफ़्तारी ही नहीं हुई है।"

"क्या हम गिरफ्तार नहीं हुए हैं?"

"नहीं ही हुने के समान हैं," त्रायन ने उत्तर दिया। "यद्यपि हम छः महीने से जेल में हैं तो भी हम, अर्थात् तू और मैं गिरफ़्तार नहीं हुए हैं। जिस वर्ग के हम हैं वह वर्ग पकड़ा गया है। पाश्चात्य यान्त्रिक सभ्यता के लिए हमारे व्यक्तित्वों का पृथक् इकाइयों के रूप में अस्तित्व नहीं है। इसलिए न वे गिरफ्तार हो सकते थे और न हुए हैं।"

"जेल में डाल दिया जाना और तब यह कहा जाना कि तुम पकड़े नहीं गये हो निश्चय से कोई बड़ा सुख नहीं है।"

"लेकिन यह भी एक सुख ही है," त्रायन बोला। "इतिहास की इस अन्तिम घड़ी में यही कुछ सम्भव है।"

११२

"अच्छा, अब सारा खेल खतम है," कोरगों की कोठरी में आते हुए प्रधान वार्डर बोला। "सरकारी सूचना पढ़ो; थूरिंगिया और बीमर के नगर रूसियों को अर्पित कर दिये गये हैं। सोवियत सेनाएँ नगर में चली आई हैं। सैनिकों से भरी लारियाँ सारी रात सड़कों पर घूमती रही हैं। अमरीकी पीछे हट गये हैं। इस समय वे केवल सरकारी भवन, जेल और कुछ खास घरों पर ही अपना अधिकार बनाये हैं। किसी को नगर छोड़ने की आज्ञा नहीं है। चारों ओर सैनिक पुलिस का घेरा डाल दिया गया है।"

नोरा ने समाचार-पत्र में सरकारी सूचना पढ़ी। उसने ग्रायन की ओर देखा और तब वार्डर की ओर जो कि दर्वाजे के सहारे खड़ा था।

"और जेल के स्वामी कब बदलेंगे?" वह बोली। "क्या हमें भी जेल के साथ रूसियों को सौंप दिया जायगा?"

"मुझे डर है कि ऐसा ही होगा," वार्डर ने उत्तर दिया। "रूसी लोग या तो आज सुबह या अपराह्न में या अधिक से अधिक शाम को अधिकार कर लेंगे। हमें उनको सौंपे जाने के ठीक समय की सूचना नहीं है।"

ग्रायन ने अपने हाथों से चेहरा ढक लिया। क्षण भर को उसके विचार अतीत की ओर घूम गये; भाग खड़े होना। डेढ़ सौ मील पैदल। रूस। आतंक। बलात्कार। सायबेरिया। नोरा के सूजे हुए छालों वाले पैर। राजनीतिक अफसर। जैसे किसी समय बेड़ियाँ पहने गुलाम सौंप दिये जाते थे उसी तरह जेल की एक कोठरी में किसी को सौंप दिये गये।

"हमें केवल आवश्यक बातों पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि समय सिर पर आ पहुँचा है," ग्रायन बोला। "अब रहस्यों को छिपाये रखने अथवा कल्पनाओं को लिये फिरने का समय नहीं है। हो सकता है कि प्रधान वार्डर सुन ले। मैं जानता हूँ कि हमें अमरीकी कोठरियों में बन्द अवस्था में ही रूसियों को सौंप देना चाहते हैं। यह एक अपराध है। लेकिन अपने दृष्टिकोण से अमरीकी निर्दोष हैं। वे वैसे ही निर्दोष हैं जैसा कि वह मुस्कराता हुआ रेल इंजन जो लाइन पर पड़े हुए आदमी के बदन को पीस डालता है। पश्चिम ने पाप का केवल एक ही परिमाण स्वीकार किया है। इसने उसे जितना कम हो सकता था उतना कम बना दिया। मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि यह अब पाप के अर्थ से ही परिचित नहीं रहा। अपराध अमरीकियों का नहीं है; अपराध उनकी सभ्यता का है। लेकिन अब इसका प्रयोजन नहीं। मैंने यह बात केवल इसलिए कही कि हम आत्म-वंचना से बचे रहें।"

"किसी भी समय हमें रूसियों को सौंपा जा सकता है अर्थात् जिस किसी ने पृथ्वी पर कहीं भी राज्य के द्वारा कुछ किया है, उनमें सबसे बड़े रक्त-पिपासु अत्याचारियों को। मैं एक मशीन-मानव को सहन भी कर लूँ लेकिन मैं एक मशीन बने हुए जंगली पशु का सामना नहीं कर सकता। मैं न ऐसा कर सकता हूँ और न ऐसा करूँगा। रूसियों के हाथ सौंपा जाने से पहले मैं भागने का यत्न करूँगा। यदि मैं असफल रहा तो मैं आत्म-हत्या कर लूँगा।"

त्रायन ने वार्डर को सम्बोधित किया;

"क्या तुम भागने में हमारी मदद करोगे?" उसने पूछा।

"जो कुछ मैं कर सकता हूँ करूँगा," वार्डर का उत्तर था। मैं भी भाग निकलना चाहता हूँ। मैं आस्ट्रिया निवासी हूँ और मैं घर वियना पहुँचना चाहता हूँ, लेकिन मैं बाद में निकलूँगा।"

"और मेरा क्या होगा?" नोरा ने प्रश्न किया। "मैं इतनी अधिक भय-त्रस्त रहूँगी कि भाग न सकूँगी। त्रायन, अच्छा होगा कि तुम मुझे मार डालो।"

"हम इकट्ठे आत्म-हत्या करेंगे," उसने उत्तर दिया। "लेकिन पहले भागने का प्रयत्न करने योग्य है। यह समय होना चाहिए। जेल की दीवार बम से उड़ा दी गई है। मुख्य बात किसी न किसी तरह आँगन में पहुँचना है। वहाँ से बच्चों का खेल होगा।"

११३

"मुझमें तीसरी मंजिल से एक रस्सी पर नीचे उतरने का साहस नहीं है," नोरा बोली। "तुम पुरुष हो और यह कर सकते हो, लेकिन मुझे अत्यधिक डर लगता है।"

आयन रस्सी बनाने के लिए चादरों और कम्बलों को गठिया रहा था।

"डरो मत," वह बोला "तुम्हें कुछ नहीं करना होगा। मैं स्वयं तुम्हारे गिर्द रस्सी बाँध दूँगा और खिड़की से नीचे उतार दूँगा। आँगन में पहुँचने पर तुम्हें इतना ही करना होगा कि दीवार के साथ रेंगती हुई चली जाओ, और दूसरे सिरे पर जो पेड़ मैंने दिखाया था उसके नीचे पहुँच कर मेरी प्रतीक्षा करो।"

जिस समय वह गाँठें लगा रहा था, नोरा रस्सी का एक सिरा पकड़े थी। अब उसने इसे गिरा दिया।

"मैं नहीं भाग सकती। जिस समय तुम मुझे नीचे लटकाओगे, सारा समय मुझे यही डर लगा रहेगा कि कहीं वे मुझ पर गोली न दाग दें। मैं इतनी ही बात से बेहोश हो जाऊँगी। क्या तुम्हें विश्वास है कि मेरे नीचे उतरते समय वे मुझ पर गोली नहीं चलाएँगे?"

"यह सम्भव है," वह बोला-"लेकिन हमें प्रयत्न करना है, वे गोली नहीं भी चला सकते। जो हो, यहाँ रह कर अपने आपको मार डालने की अपेक्षा यदि हम कोशिश करें और भाग निकलें तो हमारे बचाव की अधिक सम्भावना है।"

"मान लो कि हम रूसियों के लिए यहीं रहते हैं," उसने प्रश्न किया—"शायद शैतान उतना काला नहीं है, जितना काला उसे चित्रित किया जाता है। आखिर कम्युनिस्ट भी तो आदमी हैं। यदि वे बने रह सकते हैं तो हमें भी क्यों नहीं बने रहना चाहिए?"

"तुम ठीक कहती हो," वह बोला—"सोवियत भूमि में भी आदमी ही होंगे। हो सकता है कि पश्चिम में जीवन-यात्रा जितनी कठिन है वहाँ इससे अधिक न हो। अपने से बाहर कहीं कोई माप-दण्ड नहीं है और अपने से बाहर कहीं कोई सत्य नहीं है। सभी कुछ आध्यात्मिक है। यह सब होने पर भी मैं उस लाल-स्वर्ग में एक घण्टे के लिए भी रहना अस्वीकार करता हूँ। हो सकता है, दूसरे लोग मेरी इस जिद् को बेहूदा

समझें लेकिन मेरे अपने दृष्टिकोण से यह ठीक है और एक मानव के लिए उसके अपने दृष्टिकोण के अनुसार ही चीज़ें न्यायपूर्ण अथवा अन्यायपूर्ण हो सकती हैं। मैं व्यक्तिगत तौर पर बोल्गा के तटवर्ती, मशीन बने हुए, पशुओं के हाथ में नहीं पड़ना चाहता।"

"यह मेरा अपना खास वहम है। 'जिसमें कुछ भी आत्म-सम्मान का भाव है वह केवल अपने ही तरीके पर जीवित रहना चाहेगा; जिसमें कुछ भी बुद्धि है वह जीने के लिए अत्यधिक उत्सुक होगा ही नहीं।'

"मैं किसी भी समय जीवन-परित्याग के लिए तैयार हूँ; लेकिन जब तक मैं ऐसा नहीं करता, मैं जैसे चाहूँ वैसे जीना चाहता हूँ। तर्क किया जा सकता है कि मेरी जीवन की कल्पना ही ठीक नहीं है। मैं विचार करने और अपना मन बदलने के लिए तैयार हूँ; लेकिन मैं दूसरों को अपने जीवन का संगठन करने नहीं दूँगा और न मैं उस रास्ते पर चलने के लिए मजबूर होऊँगा जिसे दूसरे ठीक रास्ता समझते हों। मेरा जीवन मेरा अपना है। न यह कोलखोज का है, न जमात का है और न राजनीतिक अफसर का है। इसलिए मुझे अधिकार है कि मैं जैसे चाहूँ वैसे जिऊँ और यदि मैं चाहूँ तभी मैं राजनीतिक अफसर के साथ समन्वय करूँ। वास्तव में मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है; लेकिन यदि हुई तो किसी को मुझे दोष देने अथवा मेरी प्रशंसा करने का अधिकार न होगा। यह मेरा जीवन है, और मैं जो चाहूँगा, इसके साथ करूँगा और मैं सोवियत तरीके पर अपना जीवन व्यतीत करना अस्वीकार करता हूँ।

"यही कारण है कि मैं आत्म-हत्या करने जा रहा हूँ।"

नोरा चिल्लाने लगी। वह चादरों को गठियाता रहा। उसने दूसरा सिरा मजबूती से पकड़े रखा।

"नजर उठाकर देखो कि पहरे की मीनार पर से अमरीकी चले आ रहे हैं अथवा नहीं," त्रायन बोला।

नोरा बरामदे में पहुँची और जेल के दरवाजों पर से उसने पहरे की मीनारों की ओर देखकर यह जानना चाहा कि रूसी संतरियों का कोई चिह्न दिखाई देता है अथवा नहीं।

"हमें हर पाँचवें मिनट देखते रहना है। प्रयत्न करने का सब से अच्छा अवसर वही होगा जब रूसी और अमरीकी संतरी बदल रहे होंगे। उसके बाद समय निकल जायगा।"

सारा पूर्वाह्न वे रस्सी तैयार करते रहे। उन्होंने इसकी परीक्षा ली कि यह पर्याप्त लम्बी भी है अथवा नहीं और उनका भार वहन करने के लिए पर्याप्त मजबूत भी है अथवा नहीं।

और हर पाँचवें मिनट दोनों में से कोई एक पहरे के मीनार को देखने जाता और वापिस आकर कहता। "अभी भी अमरीकी।" इससे वे दोनों प्रसन्न थे। उन्हें वहम था कि जब तक जेलों की मीनारों पर अमरीकी पहरा है तब तक अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है।

११४

शाम को छः बजे त्रायन और एल्योनोरा कोठरी में से निकाले जाकर दूसरे कैदियों के साथ अमरीकी लॉरी पर लाद दिये गये। त्रायन का रंग पीला पड़ गया था। नोरा चिल्ला रही थी।

"उन्होंने हमें रूसियों को सौंपने के लिए कोई दूसरी जगह चुनी होगी," वह बोला—"हम पूर्व की ओर जा रहे हैं।"

रूसी सैनिकों और गाड़ियों से बीमर के बाजार ठसाठस थे।

"लॉरी से कूद पड़ने के बारे में क्या विचार है?" उसने उससे प्रश्न किया। "हम अवश्य ही रूसी जेल में ले जाये जा रहे हैं।"

वे नगर को पीछे छोड़ चुके थे। नोरा ने हरे-भरे खेतों की ओर देखा और तब सूर्य की ओर। वह स्वयं देख सकती थी कि वे पूर्व की ओर जा रहे हैं।

"हम अभी एक जंगल में से गुजरनेवाले हैं," वह बोला—"तुम पहले कूदो, उन झाड़ियों में से एक में छिप जाओ और मेरी प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारे बाद ही तुरन्त कूद पड़ूँगा।"

वह चिल्ला रही थी।

"तैयार हो जाओ," वह बोला।

"एक मिनट में," वह बोली। "तुरन्त नहीं, मैं अत्यधिक भय-भीत हूँ।"

"हमें ऐसा अच्छा अवसर फिर कभी नहीं मिलेगा," वह बोला।

"सड़क के किनारे की उन झाड़ियों की ओर देखो। हम आसानी से छिप सकते हैं। क्या तुम अब कूद सकती हो? देखो, लॉरी की गति मन्द पड़ गई है।"

"उसने उसका हाथ पकड़ा। नोरा ने बेंच को दोनों हाथों से मज-बूती से पकड़ लिया।

"नहीं," वह बोली। "यदि तुम चाहो तो तुम कूद पड़ो। मैं शपथ खाती हूँ कि यदि तुम मुझे छोड़कर अकेले भाग निकलो तो मैं इसके लिए तुम्हें दोष नहीं दूँगी।"

वह फिर अपनी पत्नी के पास बैठ गया और आँखें बन्द कर लीं ताकि वह उन घनी झाड़ियों को न देख सके जो छिपने की ऐसी आदर्श जगह होती हैं। वह जानता था कि फिर उन्हें ऐसा अवसर न मिलेगा।

जब उसने अपनी आँखें खोलीं उस समय उसे अंधी बनाती हुई सूरज की किरणें ठीक उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। पहले की तरह सूरज अब उसके पिछली तरफ नहीं था। वे पश्चिम की ओर चले जा रहे थे।

"आखिर अमरीकी भले लोग हैं," नोरा का हाथ पकड़े हुए वह

बोला। उसका चेहरा प्रसन्नता से लाल था। "वे हमें रूसियों को नहीं सौंप रहे हैं।"

"तो ये हमें कहाँ ले जा रहे हैं?" वह बोली, त्रायन का चेहरा मुरझा गया।

"एक अमरीकी जेल में," उसका उत्तर था। उसे इस प्रकार अकस्मात् बेहिसाब प्रसन्न हो उठने पर लज्जा आ रही थी।

"नोरा, मुझे इस प्रकार खुशी से फूले न समाने के लिए क्षमा करो। एक जेल से दूसरी जेल में तबादला होने पर यदि कोई प्रसन्न हो तो उसे पागल समझना चाहिए; लेकिन यूरोप के लोग उस अवस्था को पहुँच गये हैं। वे केवल दो जेलों में से एक का चुनाव ही कर सकते हैं।"

११५

"तुम जॉन मॉरित्ज़ हो, क्या नहीं हो?" अमरीकी अफसर ने पूछा। वह प्रेमपूर्वक मुस्कराया और कहता रहा—"नगराध्यक्ष तुम्हारे भाग निकलने की कहानी सुनना चाहता है। यह तुम्हीं थे, क्या नहीं, जिसने एक कैद कैम्प में पाँच फ्रांसीसियों को बचाया था?"

जॉन की आँखें प्रसन्नता के मारे चमक उठीं। उसने यह कभी विश्वास नहीं किया था कि एक दिन अमरीकी ऑफिसर आकर उसे अपनी मोटर-गाड़ी में ले जाएँगे और उसे अपने कारनामे सुनाने के लिए कहेंगे। "नगराध्यक्ष ने भी मेरे बारे में सुना है," उसने सोचा। इससे पहले जीवन में उसने अपना नाम कभी इतनी प्रसन्नता से नहीं बताया था। वह बोला—

"हाँ, मैं जॉन मॉरित्ज़ हूँ।"

"आओ, हम चलें" अफसर बोला—"मेरे साथ अपनी गाड़ी है।"

जॉन जाकर अपनी जैकेट पहन लेना चाहता था। उसके बदन पर केवल कमीज और पाजामा था। वह जुराब भी पहन लेना चाहता था, क्योंकि उसके जूतों के अन्दर उसके पाँव नंगे थे।

लेकिन अफसर जल्दी में था।

"नगराध्यक्ष हमारी प्रतीक्षा कर रहा है," वह बोला—"जिस हालत में भी तुम हो, चले आओ। आध घण्टे में तुम वापिस चले आओगे। मैं तुम्हें गाड़ी में पहुँचा जाऊँगा।"

वे दोनों जीप में बैठे और चल दिये। जॉन ने सोचा कि वह बिना किसी लाग-लपेट के नगराध्यक्ष को अपनी कहानी सुनाएगा। वह शब्दों का चुनाव कर रहा था, और उत्तेजना से उसके गाल लाल थे। वह कल्पना करने लगा कि नगराध्यक्ष कैसा होगा और वह किस प्रकार उसके सम्मुख बैठ कर अपनी कहानी सुनाएगा।

इस बीच मोटर एक पत्थर के मकान के पास आकर खड़ी हो गई। अफसर ने जॉन को सम्बोधित किया :—

"तुम यहाँ ठहरो।"

जॉन उतर पड़ा। उसे अफसोस था कि उसके साथ अफसर नहीं उतर रहा है। यदि ऐसा होता तो वह अधिक निश्शंक होकर अपनी कहानी सुना सकता। लेकिन जीप चली गई थी। पहरा देनेवाला सन्तरी उसे आँगन में ले गया, जहाँ दो जर्मन पुलिसवाले उसे लेने आये। अपने दायें-बायें देखकर उसे यह विश्वास करना कठिन हो गया कि नगराध्यक्ष ऐसे भद्दे मकान में रहता है, लेकिन उसे प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

जब उसने अन्दर पैर रखा तो देखा कि जेल की तरह सभी खिड़कियाँ सलाखोंवाली हैं। इसलिए उसने पूछा;

"क्या नगराध्यक्ष यहीं रहता है?" पुलिसवाले खिलखिला कर हँस पड़े। उनके लिए हँसी रोकना कठिन हो गया। उन्होंने जॉन को तहखाने

में एक अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया। ताले में चाबी घुमाते समय भी वह कैदी के प्रश्न पर हँस रहे थे।

११६

पादरी की स्त्री कोरीना कोरग पंचायतघर में बुलाई गई। कोई आधी रात के समय दो पट्टीबन्द किसानों ने उसकी खिड़की खटखटाई और उसे अपने पीछे आने के लिए कहा। आज चन्द्रमा का प्रकाश था। उसने ध्यान से दरवाजे में ताला लगाया और चाबी अपने पास रखी।

पंचायत-घर में लगभग बारह रूसी सैनिक गाँववालों के साथ मद्यपान कर रहे थे। पादरी की पत्नी को उनके सम्मुख ले जाया गया। उन्होंने उसे शराब का एक गिलास दिया और ऊपर से नीचे तक देखा।

उसने अपनी आँखें नीची कर लीं और चुपचाप संत निकोलस की प्रार्थना करने लगी।

सिपाहियों ने उसे पीने पर मजबूर किया, किन्तु वह अपनी प्रार्थना में लीन रही। उसने न उनकी ओर देखा और न अपने ओंठों से गिलास का ही स्पर्श किया। एक सैनिक ने उसकी कुर्ती में शराब उँडेल दी। दूसरे ने उसका अन्तर्वस्त्र उठा कर उसकी जाँघों तक शराब ढरका दी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह न तो उनकी ओर देख ही रही है और न जो कुछ वे कहते हैं, सुन ही रही है। वह अपनी आँखें बन्द किये प्रार्थना करती रही और सेन्ट निकोलस के ध्यान में मग्न रही। सन्त निकोलस उसके पति फादर कोरग जैसा लगता था। रूसियों और किसानों ने उसके सिर पर और भी शराब के गिलास खाली कर दिये। उन्होंने उसकी कुर्ती में उँडेले और उसके अन्तर्वसन पर उँडेले। उसका घाघरा और कुर्ती गच हो गई थी। तब उन्होंने उसे खींच कर फर्श पर

ले लिया। उसके वस्त्र और उसका शरीर इतने भीग गये थे मानो वह नदी में गिर पड़ी हो। और तब उसे लगा जैसे वह नीचे, और नीचे चली जा रही हो, और डूब रही हो। सन्त निकोलस किनारे पर खड़ा उसके लिए प्रार्थना कर रहा था।

जो कुछ उस रात गाँव के पंचायत-घर में हुआ था उसके अगले दिन फादर कोरग की पत्नी कोरोना ने मुर्गियों के घर में अपने गले में फाँसी लटका ली।

११७

ओहर्ड्रफ कैद कैम्प में यह नोरा की पहली रात थी। "हमारी गिरफ्तारी का कोई निश्चित कारण होगा; नहीं तो वे हमें इस प्रकार यन्त्रणा नहीं देंगे।"

वह बिना तकिये या कम्बल के नंगे तख्ते पर लेटी थी। उसके नितम्ब, उसकी कुहनियाँ और उसके शरीर का हर हिस्सा दर्द कर रहा था।

जिस समय वह कुछ घण्टे पहले उस कैद कैम्प पहुँची, अँधेरा हो चुका था। ज्योंही वे उस लॉरी से नीचे उतरे थे, जो उन्हें बीमर से लाई थी, वह और त्रायन पृथक्-पृथक् कर दिये गये थे। त्रायन को कहीं अन्यत्र ले जाया गया था और उसे यहाँ भेज दिया गया था।

स्त्रियों का कैम्प लकड़ी की झोपड़ियों का समूह मात्र था। जिस कमरे में वह थी उसमें लगभग तीस दूसरी औरतें थीं। अन्दर आते समय उसने उनके चेहरे नहीं देखे थे, क्योंकि अँधेरा था। लेकिन वे सभी तरुणियाँ प्रतीत होती थीं। उसने अपने आपको तख्त पर लिटा दिया था और रोना आरम्भ किया, तब उसे नींद आ गई।

"इस समय आधी रात होगी," उसने सोचा। "न जाने मेरे साथ यहाँ किस प्रकार की स्त्रियों को बन्द किया गया है।"

कमरे के सुदूर कोने से एक दबी हुई हँसी सुन पड़ी उसे लगा कि यह पुरुष की हँसी है। लेकिन स्त्रियों के कैम्प में पुरुष कैसे हो सकता है? उसने अपने कान खड़े कर लिये। यह एक पुरुष था, इस बारे में सन्देह की गुंजाइश न थी। उसने हँसना बन्द कर दिया था लेकिन उसकी क्रीड़ा सुनाई दे रही थी। हिलना-डोलना साफ तौर पर सुना जा सकता था। एक आदमी फिर हँसा, लेकिन इस बार हँसी की आवाज कमरे के दूसरे हिस्से से आई। नोरा डर गई।

"क्रीड़ा करनेवाले आदमियों से मैं क्यों डरूँ?" उसने अपने आप से पूछा। लेकिन वह अपनी बेचैनी को शान्त नहीं कर सकी। अपने बावजूद वह डरी हुई थी।

उसने अपने कान खड़े किये। उसे अब कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, तो भी उसे वे आँखें बन्द कर लेने पर भी दिखाई देते जैसे प्रतीत होते थे। उसकी चौकी के तख्तों ने चरचर आवाज की। आँख खोलने पर उसे दिखाई दिया कि दरवाजा एकदम सपाट खुला पड़ा है और आदमी अन्दर आ गये थे। वे कमरे के बीच में परस्पर बातचीत कर रहे थे। रात्रि का कपड़ा पहने एक औरत उनके पास खड़ी थी। नोरा रो पड़ी और उसने चिल्लाना आरम्भ किया। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और पूरे जोर से चिल्लाई।

वह अपने को यह न बता सकती थी कि उसने पहले चिल्लाना क्यों आरम्भ किया, लेकिन उसने चिल्लाना जारी रखा, क्योंकि वह कमरे के आदमियों और औरतों से डर गई थी। वे आयेंगे और उसे तब तक पीटेंगे जब तक वह काली-नीली नहीं पड़ जायगी; क्योंकि वह चिल्ला पड़ी थी और इस प्रकार उनकी क्रीड़ा में बाधक हुई थी।

"यह मेरी मूर्खता है," उसने सोचा। "मुझे चिल्लाना नहीं चाहिए था। अब वे सब मुझ पर टूट पड़ेंगे और पीट-पीट कर मार डालेंगे। उन्हें मार डालने का अधिकार है, क्योंकि मैं चिल्ला पड़ी थी।"

आदमी कमरे से बाहर चले गये। उनमें से कुछ दरवाजे की ओर दौड़ रहे थे; कुछ जमीन पर लेटे थे। उसे उनकी आवाज सुनाई नहीं दी थी। एक उसकी शय्या के साथ वाली शय्या पर था। उसे वह भी नहीं सुनाई दिया था। अब जब कि आदमी भाग गये, वे उसे भूतों जैसे लगे।

वे सब उसे बहुत ही ऊँचे और श्यामवर्ण प्रतीत हुए, रात्रि से भी अधिक काले।

आदमियों के साथ कुछ औरतें भी कमरे से बाहर गईं, किन्तु शीघ्र ही वे पंजों के बल कमरे में चली आईं और अपनी-अपनी शय्या पर जा लेटीं।

अन्त में सर्वत्र शान्ति छा गई। सभी स्त्रियाँ वापिस चली आई थीं, हर कोई अपनी शय्या पर। उनमें से केवल दो अभी भी कमरे के बीच में थीं। वे अँधेरे में अपनी रात की झीनी पोशाक पहने थीं, उनकी स्थूल मूर्तियाँ अन्धकार में भी स्पष्ट थीं। वे चुपचाप एक दूसरी से सटी चली जा रही थीं। नोरा को लगा कि वे कुछ खा रही हैं। वे चॉकलेट कुतर रही थीं।

वह लेटी-लेटी कमरे के बीच में अभी तक खड़ी उन दोनों औरतों के अपने-अपने बिस्तर पर जा लेटने की प्रतीक्षा करती रही। डर था कि वे कहीं उस पर चोट ही न करें या नींद में उसे मार ही न डालें। लेकिन स्त्रियाँ चुपचाप अपनी चॉकलेट कुतरती रहीं।

"यह चिल्लानेवाली कौन थी?" उनमें से एक ने कानाफूसी की। "क्या यह वह लाल बालोंवाली विदेशी औरत नहीं थी जो इसी शाम आई है?"

"मैं नहीं जानती," दूसरी ने कानाफूसी की। "मुझे इस बात का अफसोस नहीं है कि वह चिल्लाई। मेरे साथ काफी हो चुका था और मैं इसे फिर नये सिरे से आरम्भ करना नहीं चाहती थी।"

वे अपनी चॉकलेट खाती रहीं और अधिक कुछ नहीं बोलीं। नोरा ने उनकी गति-विधि ध्यानपूर्वक देखी। आखिरकार वे दोनों पृथक् हुईं और कमरे के भिन्न-भिन्न कोनों में जाकर बिस्तरों पर लेट गईं। तख्तों ने चरमर की आवाज की। उन दोनों को शीघ्र ही नींद आ गई।

लेकिन नोरा को घुटा-घुटा सा लग रहा था और वह शांत नहीं हो पाती थी। आदमी सभी चले गये थे। औरतें सो गई थीं, लेकिन वहाँ पसीने, शराब और क्रीड़ा की गन्ध विद्यमान थी। यद्यपि खिड़कियाँ पूरी तरह खुली थीं तब भी दुर्गन्ध नहीं जाती थी। उसे लगा कि ऐसे वायु-मंडल में वह साँस नहीं ले सकती।

"हमारी गिरफ्तारी का कारण अवश्य होगा," वह अपने मन में कहती रही। "अन्यथा मुझे यहाँ दम घुटने के लिए बन्द न किया गया होता।"

वह खाँसना चाहती थी, लेकिन उसने अपने मुँह पर हाथ रख लिया। उसे डर था कि उसकी खाँसी से कहीं स्त्रियाँ जाग न उठें और उसे पीटने न लग जायँ।

११८

कैम्प में पहले ही दिन जब आयन सोकर उठा, उसे जॉन मारित्ज़ दिखाई दिया।

"हम सारी रात पास-पास सोये होंगे," आयन प्रेमपूर्वक हाथ मिलाते हुए बोला। "तुम यहाँ कैसे पहुँचे?"

जॉन ने उसे उस अफसर की बात से आरम्भ करके, जो उसे नगराध्यक्ष से फ्रांसीसियों के साथ भाग खड़े होने की कहानी सुनवाने लाया था, सारी कथा सुनाई।

"नगराध्यक्ष के पास न ले जाकर उन्होंने मुझे यहाँ जेल में डाल दिया है," वह बोला। "आठ सप्ताह तक उन्होंने मुझे एक कोठरी में पड़े रहने दिया, जिसमें न खिड़कियाँ थीं और न सूर्य की एक किरण थी। मैं प्रतीक्षा करता रहा कि नगराध्यक्ष मुझे बुला भेजेगा; किन्तु उस ने कभी नहीं बुलवाया। तब वे मुझे यहाँ ले आये। बस, इतना ही कुछ है।"

जॉन ने थोड़े में अपनी कहानी समाप्त कर के पूछा :—

"और तुम यहाँ कैसे पहुँचे?"

त्रायन ने अपने कंधे हिलाये।

जमीन पर सोये हुए कैदी एक-एक करके जाग रहे थे। ओहर्ड्रफ का कैदी-कैम्प काँटेदार तारों से घिरा एक घास का विशाल क्षेत्र था। पन्द्रह हजार कैदियों को वहाँ घेर कर इकट्ठा किया गया था—खुला आकाश, पृथ्वी और आदमी।

काँटेदार तार के घेरे के चारों कोनों पर टैंक और स्वयं-चालित बन्दूकें लिये पहरेदार खड़े थे।

"क्या फन्तना का कोई समाचार है?" जॉन ने पूछा। उसने त्रायन की ओर देखा और कहा :

"मेरे लिये यह विश्वास करना कठिन है कि तुम यहाँ हो। हम इस प्रकार एक दूसरे के आमने-सामने कैसे हो गये और सारी रात एक दूसरे के पास-पास कैसे सोते रहे? मैं तो यह समझ ही नहीं सकता।"

११९

ओहर्ड्रफ का कैम्प-अधिकारी एक यहूदी था। एल्योनोरा प्रसन्न थी।

"एक यहूदी मेरे कष्टों को अधिक अच्छी तरह समझ सकेगा। वह

यहाँ से निकलने में मेरी उसी तरह सहायता करेगा, जैसे किसी सम्बन्धी की," उसने अपने मन में कहा ।

उसने सोचा था कि वह उसे सारी बात बता देगी । वह उससे तर्क करेगी और सहायता की याचना करेगी । वह उससे एक भाई की तरह बात करेगी ।

अधिकारी के दफ़्तर की दीवारों पर जर्मन कैदी-कैम्पों के फोटो टँगे थे । नोरा ने उनकी ओर देखा । वे दीवारों जितने बड़े थे । उनमें फाँसी पर लटका दिये अथवा भूखे मार दिये गये लोगों के चित्र थे । नंगे कैदियों के चित्र थे । फाँसी के तख्तों के चित्र थे । लाशों के ढेरों के चित्र थे । मरी हुई स्त्रियों से भरी हुई लारियों के चित्र थे ।

नोरा अपने आप को एकदम भूल गई । उसने अपने आपको यहूदियों के सर्वनाश के लिये बने नाज़ी-जर्मनी एक कैम्प में देखा । उसने अपने डेस्क के पीछे बैठे लाल-बालोंवाले लेफ्टिनेंट को देखा । उसकी आँखें उससे मिन्नत कर रही थीं कि वह उस सर्वनाश से, भूखे मरने से, यन्त्रणा से और गैस की कोठरी से बचाये ।

"मैं तुम्हारी बहन हूँ," उसने सोचा । "मैं तुमसे सहायता की याचना करती हूँ ।" लेकिन उसने यह बात मुँह से नहीं निकाली ।

इससे पहले उसे कभी इतनी तीव्रता से अपने यहूदी होने का अनुभव नहीं हुआ था ।

"लेफ्टिनेन्ट !" वह बोली ।

उसकी वाणी रुक गई और उसका गला भर आया । उसकी सिसकियों ने उसे बोलने नहीं दिया ।

"तुम्हें प्रश्नों का उत्तर देना भर है, बोलना नहीं है," अफसर ने तीखे स्वर में कहा ।

नोरा ने अपना ओंठ काटा । वह चुपचाप प्रश्नों की प्रतीक्षा करने लगी । अफसर ने बिना उसकी ओर देखे पढ़ना आरम्भ किया ।

"तुम्हारा नाम एल्योनोरा वेस्ट कोरग है ?" उसने कठोरता से प्रश्न किया। "तुम वही हो, क्या नहीं हो ? तुम्हारा पति भी पकड़ा गया है, क्या नहीं पकड़ा गया ?"

अफसर के बोलने का ढंग परिचित था, किन्तु यह किसी भाई के बोलने का ढंग नहीं था।

"तम्हारा पति डिक्टेटर एन्टोनैकस्को का एक अफ़सर था, क्या नहीं था ?"

"मेरा पति रूमानिया राज्य का एक अफसर था," उसने उत्तर दिया। अफसर का रंग गुलाबी पड़ गया और फिर उसका पीले धब्बों वाला चेहरा एकदम लाल हो गया। उसके ओंठ काँपने लगे।

"रूमानिया में भयानक जन-हत्याएँ हुई हैं, क्या नहीं हुई ?" उसने पूछा।

"वहाँ हुई हैं," उसका उत्तर था।

"रूमानिया में यहूदियों के लिये कैदी-कैम्प थे, जहाँ वे गैस की कोठरियों में डाल कर समाप्त कर दिये जाते थे और गोली मार दी जाती थी..."

लेफ्टिनेन्ट उठ खड़ा हुआ था। नोरा उसे कहना ही चाहती थी कि वह स्वयं यहूदी है और उसे जाली कागज-पत्र बनाकर भाग आना पड़ा है और वह प्रति दिन काँपती रही है।

"मेरे प्रश्न का उत्तर दो," अफसर ने गर्जकर कहा। वह मुट्ठी बाँधे उसके पास आया। उसे यकीन था कि उसके मुँह पर मारने जा रहा है। उसने आँखें बन्द कर लीं और घूँसे की प्रतीक्षा करने लगी। उसका शरीर काँप रहा था और वह इतनी अधिक भयभीत थी कि उसके मुँह से एक शब्द न निकलता था।

"अपराधिन ! उत्तर दे," वह गर्जा। "अपने हाथ से तूने कितनी यहूदी स्त्रियों की हत्या की ? जवाब दे। यदि तू कुछ उत्तर न देगी,

तो मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। तूने अपने हाथ से कितने यहूदियों की हत्या की?"

नोरा कुछ न कह सकी।

"तो तुम कुछ नहीं बता रही हो?" वह बोला। "अब तुम्हें डर लगता है! अब तुम कांप रही हो और डर के मारे अपनी निकर गीली कर रही हो! लेकिन हत्याएँ करते समय तुम्हें डर नहीं लगता था!"

"मैं स्वयं हूँ एक……" एल्योनोरा बोली।

"निकल, हत्यारी नाज़ी कुतिया कहीं की।" वह चिल्लाया। "निकल!"

उसकी आँखों के सामने उसका भयावना घूँसा था। वह आफिस से बाहर चली गई।

पाँचवाँ खण्ड

१२०

आयन लिख रहा था। जॉन उसके पास खड़ा देख रहा था कि किस प्रकार उसकी अँगुलियाँ पेन्सिल को पकड़ती हैं और किस प्रकार सावधानी से वह अक्षरों की रचना करता है, मानों धागे में मोती पिरो रहा हो।

जॉन में स्वयं इतना सब्र नहीं था कि वह लिख सके। उसे यह पसन्द भी नहीं था। लेकिन वह घण्टों आयन को लिखते देखता रह सकता था।

"जब मास्टर आयन लिखता हैं, तो यह ऐसा ही होता है, मानों वह किसी मूर्ति की पूजा कर रहा हो," उसने सोचा। उसे लिखते देखकर तुम भूल जाओगे कि वह कैदी है। तुम्हारा ध्यान इस बात की ओर आकर्षित नहीं होगा कि उसके पैर नंगे हैं, हजामत नहीं बनी है और पाजामा फटा है। लिखते समय आयन कोरग 'आर्य-पुरुष' होता है। तुम्हें लगता है कि तुम उसका सम्मान करो और उसकी उपस्थिति में धीरे बोलो।"

जरा देर रुककर आयन ने पूछा—"क्या तुमने कभी सँपेरों का नाम सुना है!"

"हाँ, मैंने सुना," जॉन का उत्तर था।

"दानियल को शेरों के गार में फेंक दिया था और शेरों ने उसे

नहीं खाया," न्रायन बोला। "उसने उन्हें विनीत बना लिया। आदमी साँपों को मंत्र से बाँध सकता है और शेरों को पाल सकता है। अपने अध्ययन-कोष्ठ में मुसोलिनी ने दो चीते रख छोड़े थे, जिन्हें उसने विनीत बना लिया था। आदमी तमाम जंगली जानवरों को लिखा-पढ़ा सकता है। लेकिन थोड़ा ही समय हुआ, पृथ्वी पर जानवरों की एक नयी जाति का आविर्भाव हुआ है। इन जानवरों को 'नागरिक' कहते हैं। वे वनों अथवा जंगलों में नहीं रहते किन्तु 'दफ्तरों' में रहते हैं, लेकिन ये जंगली जानवरों की अपेक्षा कहीं अधिक भयानक हैं। ये आदमी और मशीन की दोगली संतान हैं—एक पतित सन्तान, किन्तु पृथ्वी पर आज सर्वाधिक शक्तिशाली। उनके चेहरे आदमियों के चेहरे हैं और बाहर देखने से उनमें और मानवों में भेद नहीं किया जा सकता। लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मानवों की तरह नहीं बरतते। वे ठीक मशीनों की तरह बरताव करते हैं। दिलों के स्थान पर वे यथार्थ समय बतानेवाली घड़ियाँ रखते हैं। उनका दिमाग भी एक प्रकार की मशीन है। वे न मशीनें ही हैं और न आदमी हैं। उनकी भूख जंगली जानवरों की सी है, किन्तु वे जंगली जानवर नहीं हैं। वे नागरिक हैं......एक विचित्र दोगला नमूना। वे पृथ्वी के चारों कोनों में फैल गये हैं।"

जॉन ने कोशिश की कि वह इन "नागरिकों" की कल्पना कर सके कि वे कैसे होते हैं; किन्तु, वह कल्पना नहीं कर सका। उसकी आँखों के सामने मरकु गोल्डनबर्ग का एक चलता-सा चित्र घूम गया, किन्तु न्रायन ने उसकी विचार-शृंखला भंग कर दी:

"मैं एक लेखक हूँ," न्रायन बोला। "मेरे विचार के अनुसार लेखक आदमियों को विनीत बनाने का काम करता है। आदमियों को सुन्दर दूसरे शब्दों में सत्य के दर्शन कराकर वह उन्हें विनीत बनाता है। मैं नागरिकों को विनीत बनाने का प्रयत्न करना चाहता हूँ। मैंने

एक पुस्तक लिखनी आरम्भ की थी और चौथे खण्ड तक लिख भी डाली थी। उस समय नागरिकों ने मुझे कैद कर लिया और मैं लिखने के लिए स्वतंत्र नहीं रहा। पाँचवाँ खण्ड भी लिखा जाने को है।

"लेकिन अब इसके लिखने का कुछ अर्थ नहीं रह गया है। मैं अब और पुस्तकें प्रकाशित नहीं करूँगा। पाँचवाँ खण्ड लिखने के बजाय मैं नागरिकों को विनीत बनाने के लिए कुछ और लिखना चाहता हूँ।

"यदि मैं सफल हुआ, तो मैं शान्ति-पूर्वक मरूँगा। जो कुछ मैं लिखूँगा, वह मैं तुम्हें पढ़कर सुना दूँगा। यह न उपन्यास होगा और न नाटक होगा। नागरिक लोग साहित्य पसन्द नहीं करते। उन्हें विनीत बनाने के लिए मैं वही ढंग इख्तयार करूँगा, जो उन्हें पसन्द है; मैं अर्जियाँ लिखूँगा। नागरिक लोग कविता, उपन्यास अथवा नाटक नहीं पढ़ते। वे केवल अर्ज़ियाँ पढ़ते हैं।"

१२१

अर्जी सं० १ विषय, : अर्थशास्त्र (चर्बी)

मैं कई अर्जियाँ पेश करना चाहता हूँ। सबसे पहली यह अर्थशास्त्र के विषय पर है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी यान्त्रिक-सभ्यता भौतिक आधार पर स्थित है। अर्थशास्त्र तुम्हारी बाइबल है। मैं एक लेखक हूँ, और हर लेखक एक साक्षी होता है। साक्षी का प्रथम गुण है निष्पक्षता। इसलिए मेरी अर्जियाँ यथार्थ सत्य की साक्षी होंगी।

जो समस्या मैं आप लोगों के सामने रखनी चाहता हूँ वह अत्यन्त महत्त्व की है। इसका विषय चर्बी है।

तुम सभी यह अच्छी तरह जानते हो कि इस समय चर्बी की संसार-व्यापी कमी है। जब मैं इस कैम्प में आया तो मैंने देखा कि कैदी एक

दूसरे के साथ-साथ जमीन पर लेटे हैं। बड़ी कठिनाई से मैं अपने आपको उनके बीच घुसेड़ने की जगह निकाल सका। मैं अभी कैद से निकला ही था और मुझे आस-पास के खेत बहुत बड़े लग रहे थे। मैं नहीं समझ सका कि आप लोगों ने आदमियों के लिए इससे बड़ा घेरा क्यों नही बनाया।

कैम्प में पन्द्रह हजार आदमी कस कर पैक किये गये हैं। खड़े होने पर कुछ जगह बच रहती है ; लेकिन लेटने पर उन्हें जगह की इतनी कमी हो जाती है कि एक के ऊपर एक ढेर होना पड़ता है। सारी रात मैं अपनी टाँगें नहीं फैला सका था। जैसे-तैसे, मेरे पड़ोसियों ने मेरे सिर पर रख कर अपनी टाँगें फैला ली थीं। उनकी टाँगें गरम थीं और इस-लिए मुझे रात को सर्दी नहीं लगी।

अब मैं समझता हूँ कि तुमने इतना छोटा घेरा क्यों बनाया है, खेतों में घास बचाने के लिए। घास मूल्यवान वस्तु है। यह सचमुच बड़ा दुर्भाग्य होता यदि कैदियों को घास मसलने दी जाती। यह कहीं अच्छा है कि एक गऊ घास चर जाय, क्योंकि गउयें दूध देती हैं, और कैदी कुछ पैदा नहीं करते।

दूसरा कारण यह भी है कि यदि आप लोगों ने इससे बड़ा घेरा बनाया होता तो आप लोगों को इससे अधिक काँटेदार तार की जरूरत पड़ी होती। लोहा कीमती है। स्पष्ट ही है कि केवल इसलिए कि रात को कैदियों को अपनी टाँगें फैलाने के लिए कुछ और जगह मिल जाय अधिक रुपया खर्च करना बेकार है।

तीसरे, मैं यह मानकर चलता हूँ कि आगामी शीत ऋतु में बहुत से कैदी मर जाएँगे। सम्भवतः कुछ इससे पहले भी। जो बच रहेंगे उन्हें अच्छी तरह लेटने के लिए पर्याप्त जगह मिल जायगी। मैं सोचता हूँ कि कैम्प लगाते समय आप लोगों ने इस बात को ध्यान में रखा था। आपकी योजना की श्रेष्टता की मुझे प्रशंसा करनी ही पड़ती है।

सोने से पहले मैंने एक व्याख्यान सुना। मुझे वह सुनना ही पड़ा। व्याख्याता, जो अपने को बर्लिन यूनिवर्सिटी का एक प्रोफेसर कहता था, चर्बी के विषय पर बोला। इस अर्जी में मैं उसके व्याख्यान का सारांश देना और उसकी चर्चा करना चाहता हूँ।

कैम्प में हमें जो 'सूप' मिलता है उसमें जितनी फलियाँ रहती हैं प्रोफेसर ने रोज-रोज उनकी गिनती की। लगातार तीस दिन तक उसने मध्याह्न और शाम के समय भोजनालय के बर्तनों में जितनी भी फलियाँ दिखाई दीं, उनमें से हर एक को गिना। उसने सबको जोड़ा और उनका औसत निकाला। अब वह यह बता सकता है कि दोनों शाम के सूपों में एक कैदी को दस फलियों की औसत पड़ती है। प्रोफसर के सहायकों ने भी तीस दिन तक फलियों की गिनती की और उसकी गिनती का समर्थन किया।

दूसरे, प्रोफेसर ने आलुओं के छिलकों और सूप में के आटे का भी हिसाब रखा। यह मान लेना होगा कि यह गिनती लगभग ही थी, क्योंकि वह रसोईघर में न जा सकता था।

आप निस्संदेह यह जानते हैं कि जिस चीज में भी कुछ नाप-जोख की बात रहती है उसमें जर्मन लोग पटु हैं। इसलिए यह मान लिया जा सकता है कि फलियों की ठीक-ठीक गिनती हुई होगी।

जर्मनी के लोग परिश्रमशील और सिद्धान्त के पक्के होते हैं। तीस दिन के परिश्रम के बाद प्रोफेसर ने सारी अपेक्षित जानकारी इकट्ठी की और अपनी इस खोज को एक व्याख्यान का विषय बनाया। श्रोताओं ने व्याख्यान को बहुत पसन्द किया। जर्मन लोग विषय कुछ भी हो, व्याख्यान सुनना बहुत पसंद करते हैं। यह एक आदत है जो उनके साथ मध्य-युग से चली आई है।

प्रतिदिन सूप को छानकर फलियों की गिनती करने के अपने तरीके को समझाने के बाद उसने प्रत्येक फली की किलोरी *की संख्या बताई। मुझे ठीक संख्या याद नहीं है। तब उसने दस फलियों में जितनी किलो-रियाँ हो सकती थीं उनका हिसाब लगाया और फिर उनमें आलुओं तथा आटे की किलोरियों को मिलाया। कैदियों को सूप में आलुओं तथा आटे का पता नहीं चलता था लेकिन प्रोफेसर ने उनका अस्तित्व मान लिया था। उसने यह कहकर अपना व्याख्यान समाप्त किया कि प्रत्येक कैदी को प्रतिदिन पाँच सौ किलोरियों का औसत पड़ता है। कभी-कभी उसे बहुत कम किलोरियाँ मिलती हैं। ऐसा हुआ है कि लगातार कई दिनों तक प्रोफेसर को अपने सूप में एक भी फली नहीं मिली है और उस दिन उसके लिए रिकार्ड करने को कुछ नहीं रहा। लेकिन दूसरे दिनों उसे पन्द्रह और कभी-कभी अठारह तक मिलीं। इसलिए औसत ठीक है।

एक आदमी जो सो रहा हो, एक दिन में एक हजार किलोरियाँ खपाता है। कैम्प के कैदी सारा दिन सोते नहीं रहते। इसलिए उनका खर्च अधिक है। तो भी प्रोफेसर ने उनका दैनिक खर्च एक हजार किलोरियाँ माना है, जो न्यूनतम है।

कैदियों को फलियों से पाँच सौ किलोरियाँ मिलती हैं। शेष पाँच सौ उन्हें प्रतिदिन अपने संचित धन में से खर्च करनी पड़ती हैं। अर्थात् उनके अपने शरीर में सुरक्षित मूल-धन से। क्योंकि वे अपने उस संचय में से जो जेल में आने के समय उनके पास था, पाँच सौ किलोरियाँ रोज खर्च करते हैं इसलिए प्रत्येक कैदी प्रति महीने छः पाउण्ड कम हो जाता है। निस्सन्देह यह भी एक औसत ही है। तोल प्रोफेसर के सहायकों द्वारा तत्काल बनाई गई तोलने की मशीन और बाटों से रोज-रोज होती थी।। जो हो, उनके तोलने के साधन खासे ठीक थे।

---

* तापमान की इकाई

जो छः पाउण्ड चर्बी हर एक कैदी उसे किलोरियों में बदल कर गवाँ देता है उसका हिसाब लगा कर यह सिद्ध किया जा सकता है कि आपकी अति सुयोग्य व्यवस्था में चल रहे श्राहडूफ के इस कैम्प में प्रतिमहीने चालीस टन चर्बी का अपव्यय होता है। प्रत्येक महीने चर्बी की पाँच गाड़ियाँ उड़ कर सूक्ष्म हवा में विलीन हो जाती हैं। जरा इस अपव्यय की विशालता पर विचार करो।

मैं कोई अर्थ-शास्त्री नहीं हूँ और इसलिए इसका कोई हल भी नहीं सुझा सकता। लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास जो यांत्रिक साधन हैं उनकी सहायता से यह जीवित चर्बी उपयोग में लाई जा सकती है। यह व्यर्थ नष्ट क्यों हो?

मेरी अर्जी का यही उद्देश्य है।

मेरा विश्वास है कि आप मेरी बात का मूल्य समझेंगे। आप लोग पाश्चात्य सभ्यता की सर्वाधिक प्रगतिशील शाखा के सदस्य हैं। आप शायद अपनी वैज्ञानिक संस्था को इस विषय में एक रिपोर्ट भी भेज सकते हैं। हर महीने चालीस टन चर्बी को इस प्रकार नष्ट होने देना बर्बरता है। फिर दूसरे कैम्प भी हैं—मैं समझता हूँ, अकेले जर्मनी में कई सौ, आप प्रतिदिन ताजी चर्बी के पर्वत इकट्ठे कर सकते हैं।

जिस दिन से बर्लिन के उस प्रोफेसर का व्याख्यान सुना है उस दिन से मुझे सारे वायुमंडल में से मानवी चर्बी की ही दुर्गंध आती है। तुम्हारा कैम्प आदमियों की चर्बी निकालने की एक महान मशीन है······मैं इसे हवा में से सूँघ सकता हूँ। क्या जब तुम खिड़की खोल कर अपने आफिस में बैठते हो तो उस समय तुम्हें कभी जीवित मानवी चर्बी की गंध नहीं आती? तुम्हारे अपने कपड़े ही इससे तर होंगे। अपने साथ सोनेवाली अपनी स्त्री अथवा प्रेमिका से पूछो कि क्या उसे तुम्हारे बालों और तुम्हारी चमड़ी से उस समय मानवी चर्बी की दुर्गंध नहीं आती, जब तुम एक बिस्तर में उसके साथ सोते हो? आदमियों की

अपेक्षा औरतों की घ्राण-शक्ति अधिक होती है। वे तुम्हें बताएँगी। जहाँ तक मेरी बात है, इसका विचार करने से ही मुझे उल्टी आती है। अब मुझे आज्ञा दें कि मैं आपकी सभ्यता के प्रति मेरे मन में जो गहरी प्रशंसा और आदर है उसका आपको विश्वास दिला सकूँ।

मुझे इसमें कुछ सन्देह नहीं कि आपके पास जो यांत्रिक साधन हैं, उनके बल पर आप इस मानवी चर्बी के विशाल भण्डार का कुछ न कुछ उपयोग करने का रास्ता निकाल लेंगे। इस बात को मत भूलें कि मैं स्वयं अपने शरीर से हर महीने छः पाउण्ड चर्बी दे सकता हूँ।

आपका
साक्षी

१२२

अर्जी सं० २, विषय सौन्दर्य्य, मानवी (पाश्चात्य यान्त्रिक सभ्यता में आदर्श)

कल रात एक जर्मन-प्रोफेसर से मैंने सौन्दर्य्य-विज्ञान की चर्चा की। सभी दूसरे यूरोपियों की तरह, जर्मन लोग भी शास्त्रीय पाण्डित्य से आगे नहीं बढ़ सके हैं। यही कारण है कि उनका सामाजिक संस्थान गड़बड़ा गया है। तुम्हारी अपनी सभ्यता के समान स्वस्थ और प्रगतिशील सभ्यता को पाश्चात्य यान्त्रिकता की ही तरह अपनी आधुनिक कला का विकास करना होगा।

इस प्रोफेसर ने मुझे कैम्प के मैदान में चलते-फिरते कैदी दिखाये। यद्यपि, जैसा तुम जानते हो, वे अब केवल हड्डियों और चमड़ी का समूह मात्र हैं, उसने कहा वे बदसूरत हैं। वह सौन्दर्य्य के यूनानी आदर्श की दलदल में फँसा है। मेरी सम्मति में जो मानव चमड़ी के अन्दर हड्डियों

का ढाँचा मात्र रह गये हैं, वे शानदार हैं--कला का यथार्थ नमूना। वे उस मानवी सौन्दर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो आधुनिक यान्त्रिक सभ्यता का सब से बड़ा प्रतीक है।

मैंने उस जर्मन प्रोफेसर से यह बात मनवाने की कोशिश की कि पृथ्वी की किसी भी दूसरी सभ्यता की अपेक्षा तुम्हारी सभ्यता में सौन्दर्य के लिये कहीं अधिक आदर और उसकी कहीं ऊँची प्रशंसा है। आदमी के शरीर से चर्बी निकाल डालने की तुम्हारी प्रथा के मूल में केवल सौन्दर्य की, विश्व को अधिक सुन्दर बनाने की भावना है। उसकी समझ में नहीं आया। जर्मन लोग किसी बात को सदैव बड़ी देर से समझते हैं। इसी लिए लोग कहते हैं कि उनके सिर में बन्दूक की गोलियाँ भरी हैं। कल मैं मानवी सौन्दर्य के आधुनिक पाश्चात्य आदर्श पर एक व्याख्यान दूँगा।

स्विटज़रलैण्ड का एक शिल्पी है। नाम है एल्बर्तो ग्यूको मेत्ति। उसने अपने क्षेत्र में उन्हीं सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण की है और पुरुष तथा स्त्री के सौन्दर्य के सम्बन्ध में उन्हीं आदर्शों को प्राप्त किया है जिन्हें तुमने व्यवहार में आदमी के शरीर से चर्बी और माँस निकाल कर प्राप्त कर लिया है। उसके बारे में कहा गया है :

"अशान्त कलाकार ग्यूको मेत्ति की कठिनाई यह थी कि वह एक बार में ही अपना तमाम काम समाप्त नहीं कर सकता था। यदि वह नाक से आरम्भ करता तो चेहरे की शक्ल और उसे देखने का दृष्टिकोण जाता रहता। उसने लिखा है कि 'नाक की एक तरफ और दूसरी तरफ में सहरा का फर्क है।' आगे चलकर समस्त वस्तु को एक साथ ग्रहण करने के प्रयत्न में उसकी कृतियाँ सिकुड़ने लगीं और इतनी छोटी हो गईं कि चाकू के स्पर्श मात्र से गिर पड़ें। अन्त में उसे अपनी मूर्तियाँ तभी यथार्थ प्रतीत होतीं जब वे लम्बी और दुबली-पतली रहतीं। ग्यूको मेत्ति का कहना है कि 'मैं आज लगभग वहीं हूँ।' अस्तित्ववादी

जीन पोल सार्तरो ने एक सूची की भूमिका में लिखा है कि 'उसके शिल्प का मतलब स्थान में से चर्बी को हटा लेना भार है।'

कैम्प में तुम ठीक यही कुछ कर रहे हो। मेरा सदैव से यही मत रहा है कि तुम्हारी सारी सभ्यता सौंदर्य संबंधो सिद्धान्तो पर आश्रित है। यह कितना मनोरम होगा जब कल के विश्व में, सारे संसार में ऐसे ही लोग होंगे जिनके बदन सौन्दर्य-संबंधी उन्हीं नये सिद्धान्तों के साथ मेल खाते होंगे जैसे कि वे ग्यूको मेत्ति की कला में दिखाई देते हैं—और तुम्हारी कला में।

आपका

साची

१२३

"अच्छा, बूढ़े यार मॉरिट्ज," त्रायन बोला।

"सत्य को प्रकट करने के लिए और उन्हें मानव बन्धुओं को यंत्रणा देने से रोकने के लिए मैंने कम से कम चालीस अर्जियाँ लिखी हैं। मैं जानता हूँ कि जो कुछ मैंने लिखा है, ठीक है। हर अर्जी चतुराई के साथ लिखी गई है। लेकिन यह सब व्यर्थ है। मैंने अनेक शैलियों में लिखा है—कानूनी, कूट-नैतिक, तार की भाषा और विज्ञापन तक की शैली में। मैं कभी भावना-प्रधान हो उठा, कभी ठेठ गँवार और कभी प्रार्थना-प्रधान। निराशा ने मुझे जो-जो साधन सुझाए, मैंने उन सबमें न्याय के लिए पुकार की। मुझे कोई उत्तर न मिला।

"मैंने उन्हें खूब खरी-खरी सुनाई; लेकिन उन्हें गुस्सा नहीं आया। मैंने घुटने टेक कर उनसे प्रार्थना की; लेकिन उनका मन नहीं पसीजा। मैंने उनका स्पष्ट रूप से अपमान किया, लेकिन उन्हें बुरा नहीं लगा।

मैंने उन्हें हँसाना चाहा, मैंने उनकी जिज्ञासा को उत्तेजित करना चाहा—सारा प्रयत्न व्यर्थ गया।

"मैं न उनकी ऊँची भावनाओं को जगा सका और न नीची प्रवृत्तियों को। मैं उनमें कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं ला सका। मैं ईंटों की दीवार से भी बात-चीत करता रह सकता था। उनमें भावनाओं के लिए स्थान है ही नहीं। वे घृणा का अर्थ तक नहीं जानते, वे बदले को नहीं समझते, वे करुणा को नहीं समझते, वे एकमात्र योजना के अनुसार यन्त्रवत् काम करते हैं। यदि मैं अपने शरीर से एक पट्टी फाड़ डालूँ और उस पर अपने ऊष्ण रक्त से एक अर्जी लिखूँ तब भी वे नहीं पढ़ेंगे। वे उसे दूसरी अर्जियों की ही तरह रद्दी की टोकरी में फेंक देंगे। वे इस बात की ओर ध्यान तक न देंगे कि यह मानव-शरीर की एक ताजी पट्टी थी। आदमी के प्रति उनकी उपेक्षा है। यह मानव के प्रति 'नागरिक' की उपेक्षा है जो मशीन की उपेक्षा को भी पार कर गई है।"

"बेचारे मास्टर आयन," जॉन करुणा के स्वर में बोला। "अब तुम क्या करते जा रहे हो? शायद अर्जियां लिखना छोड़ देना अच्छा होगा।"

"मैं लिखना जारी रखूँगा," आयन बोला। "जब तक मैं मरता नहीं तब तक मैं रुकूँगा नहीं। विश्व में एक भी पशु नहीं है जिसे आदमी ने सिखा-पढ़ा नहीं लिया। हम 'नागरिक' को ही क्यों अनुशासित न कर सकेंगे?"

"शायद तुम्हें कोई दूसरा तरीका ग्रहण करना चाहिए," जान बोला "मैं नहीं समझता कि लिखने से तुम अपने उद्देश्य को कुछ भी प्राप्त कर सकोगे।"

"जब से आदमी पृथ्वी पर प्रकट हुआ है तब से आदमी की हर विजय उसकी आत्मा की विजय रही है। हम अन्तर्-आत्मा के द्वारा आफिस में बैठे 'नागरिक' को विनीत बनाएँगे।"

"यदि हम असफल हुए, तो वे हमारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। हमें उन्हें शिक्षा देनी चाहिए कि जब वे आदमी से मिलें तब वे उसका विनाश न करें। जब तक हम उन्हें यह नहीं सिखा देते तब तक हम उनके साथ उसी पृथ्वी पर उन्हीं नगरों और गलियों में नहीं रह सकते। चीतों को विनीत बनाने की अपेक्षा भी यह कठिन कार्य होगा। यह सब होने पर भी मैं कभी इतना आशावान् नहीं हुआ जितना इस समय। निस्सन्देह यह मृत्यु के सम्मुख आदमी का आशावाद है। पच्चीसवें घण्टे का यह परिच्छेद, जिसमें मेरी अर्जियाँ लिखी हैं, मेरी मृत्यु-वेदना का अन्तिम क्षण होगा। लेकिन मैं इसे लिख कर रहूँगा।"

१२४

अर्जी सं० ३, विषय—अर्थशास्त्र

(केवल आधे अथवा तीसरा हिस्सा
शरीरवाले कैदी)

मैंने और मेरे एक एकाउण्टैण्ट साथी ने पूरे चार दिन तक कैम्प के उन सब कैदियों का खाता तैयार किया जिनका शरीर या तो आधा है, या दो तिहाई है या पाँच हिस्सों में से चार हिस्से हैं। मेरा मित्र अभी भी सांख्यकी में लगा हुआ है। वह हिसाब-किताब में होशियार है। मैं आपको लिखने में जल्दी कर रहा हूँ क्योंकि आर्थिक दृष्टिकोण से समस्या तुरन्त ध्यान देने योग्य है। आप प्रतिदिन हजारों मार्क बचा सकते हैं।

बात यह है मेरे : साथ जो पन्द्रह हजार कैदी हैं उनमें से तीन हजार के पूरे शरीर नहीं हैं। लगभग दोसौ की टाँगें ही नहीं हैं। वे अपने आपको रेंगने वाले जानवरों की तरह कैम्प के चारों ओर घसीटते हैं। बारह सौ कैदियों की केवल एक-एक टाँग है, दूसरों का केवल एक-एक हाथ

है। कुछ के दोनों हाथ नदारद हैं। यहाँ तक शरीर के बाह्य अंगों की बात हुई।

दूसरी ओर बहुत से कैदी कई भीतरी अंगों से विहीन हैं, कोई फेफड़े से, कोई गुर्दे से, कोई हड्डियों के किसी अंश से, इत्यादि। चालीस कैदियों की आँखें ही नहीं।

मेरी तरह यह सभी कैदी मशीनवत् पकड़े गये थे। आरम्भ में मुझे इन सब के लिए अफसोस हुआ। मेरा मित्र जॉन मारित्ज़ जब भी किसी अत्यंत अंग-विहीन लूले-लँगड़े कैदी को देखता है आँखें बन्द कर लेता, है। लेकिन जॉन-मारित्ज़ असभ्य है। वह नहीं समझता कि यदि गिरफ्तारी मशीनवत् होने को है और यदि कोई उस वर्ग से सम्बन्ध रखता है जिसे कैद करना है, तो कोई केवल इसलिए नहीं बच सकता कि उसकी एक टाँग नहीं है, अथवा एक आँख नहीं है, अथवा एक नाक नही है अथवा एक फेफड़ा नहीं है।

मशीनवत् गिरफ्तारी उन आदमियों को अपवाद मानकर नहीं चलती जिनके शरीर काम के नहीं हैं और ऐसा होना ही चाहिए। न्याय सबके लिए समान होना चाहिए, अपवाद-रहित।

यहाँ एक प्रोफेसर हैं जिनके दोनों हाथ लड़ाई में जाते रहे हैं। आपने सब प्रोफेसरों की गिरफ्तारी की आज्ञा दी और इसलिए यदि हाथ न होने के कारण मेरे मित्र को अपवाद स्वरूप छोड़ दिया जाता तो यह अन्याय होता। आदमी के हाथ और मशीनवत् गिरफ्तारी में क्या सम्बन्ध है? कुछ नहीं, वह प्रोफेसर है और उसे अपने वर्ग के सभी लोगों के साथ गिरफ्तार होना ही चाहिए और तुमने ठीक यही किया भी। तुमसे कभी कोई गलती नहीं होती। इसीलिए मैं आपका असीम प्रशंसक हूँ। मैं तुम्हारी महान् और शानदार सभ्यता के लिए किसी भी क्षण अपनी जान देने के लिए तैयार हूँ। आप न्याय और यथार्थ माप-जोख के अवतार हैं।

अपने विषय पर वापिस। ये अधूरे मनुष्य, जिनके पास असम्पूर्ण अंग हैं, उतना ही भोजन पाते हैं जितना वे कैदी जिनके अंग सम्पूर्ण हैं। यह महान् अन्याय है।

मेरा प्रस्ताव है, उन कैदियों को उनके शरीर के अनुपात में राशन मिलना चाहिए। आपकी सरकार कैदियों द्वारा खाए जानेवाले हर कौर का मूल्य चुकाने के लिए महान् आत्म-परित्याग से काम लेती है। लेकिन एक कैदी से मतलब है एक सम्पूर्ण आदमी से। यदि कैम्प के तीन हजार लँगड़े-लूले आदमियों को एक जगह इकट्ठा किया जाय और उन सबके हाथ-पाँव-आँखें और फेफड़े गिने जायँ तो उन सबके मांस और हड्डी को एक साथ लेने पर उनकी संख्या अधिक से अधिक दो हजार होगी। इसलिए आप प्रतिदिन के खर्चे में एक हजार राशन तक की कमी कर सकते है।

जो अंग अब कैदियों के हैं ही नहीं, उन्हें खाना देने के लिए आप रुपया क्यों खर्च करें? आपकी ओर से ऐसी उदार-आशयता सर्वथा बेमतलब है। मुझे यकीन है कि यदि ऊँचे अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाय तो उन्हें खासा सन्तोष होगा। हो सकता है कि राज्य का अनावश्यक खर्च घटाने के लिए तुम्हें एक तमगा भी मिल जाय और हम सभी जानते हैं कि रुपया ही सार-वस्तु है। उपर्युक्त बुद्धिपूर्ण बात के साथ मैं यहाँ इसे समाप्त करता हूँ।

आ० का
साक्षी

अर्जी सं० ४, विषय—सैनिक

(लिंग-परिवर्तन)

खुराक में कमी होने के कारण, इस कैम्प के कुछ कैदियों में ऐसा सामान्य परिवर्तन हो रहा है, जो सैनिक दृष्टि से महत्त्व का हो सकता है। यहाँ मैं उसको रूप-रेखा दे रहा हूँ। जो लोग चिरकाल से यहाँ कैद हैं

और जिन्हें प्रति दिन पाँच सौ किलोरियाँ ही मिलती हैं, अब हजामत बनाने की आवश्यकता नहीं समझते जो आदमी पहले दिन में एक बार और दो-दो बार भी हजामत बनाते थे, पहले तो हर दूसरे दिन बनाने लगे, फिर सप्ताह में एक बार, फिर महीने में एक बार, और अब वे हजामत बनाते ही नहीं। उनकी दाढ़ी छिदरी-छिदरी और अधिक चिकनी होने लगी और कम होते-होते वह सर्वथा लुप्त हो गई। उनके गाल और ठोढ़ी एक स्त्री के समान नरम और चिकनी हो गई। लेकिन इतना ही नहीं उनके स्वर भी अधिक स्त्रीसदृश हो गये। उनकी छातियाँ उभर कर स्पष्ट रूप से ऐसी हो गईं मानों वे तेरह वर्षीय लड़की की छातियाँ हों उनकी चमड़ी एक स्त्री के समान कोमल है। उनके रंग-ढंग तक स्त्रीसदृश हो गये हैं। मैं ठीक-ठीक नहीं जानता कि उनके लिंगों के साथ क्या बीत रही है; लेकिन मेरा विश्वास है कि यदि आप उन्हें उनकी वर्तमान खुराक देते रहें और खास तौर पर यदि इस राशन में और भी कमी कर दें तो उनकी जननेन्द्रिय और पास के अण्डकोष शनैः शनैः एकदम विलीन हो जाएँगे, और इस परिवर्तन के साथ उनके स्त्री बनने की प्रक्रिया पूरी हो जायगी। डाक्टरों का कहना है कि यह एकमात्र खुराक में कमी होने के कारण होता है। इस विषय में उनका कथन इस प्रकार है :

"खुराक की कमी ने पुरुष-लिंग के निर्माण में सहायक होनेवाले तरल पदार्थ एण्ड्रोजन तथा स्त्रीलिंग में सहायक होनेवाले तरल पदार्थ एस्ट्रोजन की उत्पत्ति को कम किया। साथ ही लिवर की सदोषता के कारण इस तरल पदार्थ विशेष की प्रक्रिया भी गड़बड़ा गई। इससे, जैसा प्रायः होता है, अतिरिक्त एस्ट्रोजन नष्ट हो गया, किन्तु एण्ड्रोजन नहीं। इस प्रकार शनैः-शनैः तरल पदार्थ का झुकाव स्त्री पक्ष की तरफ हो गया।"*

*लेफ्टिनन्ट कॉलेनल यूजेन डी० सी० जैकब।

आपकी सभ्यता के लिए यह बातें अत्यधिक सैनिक महत्त्व की हो सकती हैं। जरा उस अनन्त शान्ति की कल्पना करो जो सारे संसार में फैल जायगी यदि आप अपने सारे पुरुष शत्रुओं को कैदी कैम्पों में रखकर उन्हें तब तक कुछ सौ किलोरियाँ ही देते रहेंगे जब तक वे स्त्रियाँ न बन जायँ। तुमने ऐसा करना आरम्भ तो कर ही दिया है। इस प्रकार कोई भी जाति जो तुम्हारी शत्रु होना चाहेगी, पुरुषत्व-विहीन हो जायगी। तुम्हारे साथ युद्ध करनेवाला कोई नहीं रहेगा मैं समझता हूँ कि तुम्हारे महान् अधिकारी इस आविष्कार का सदुपयोग कर लेंगे। तुम्हारी व्यव-हारिक और आविष्कारों के लिए विशेष प्रतिभावान सभ्यता को ध्यान में रख कर मैं सोचता हूँ कि तुम इससे उलटी दिशा में भी अवश्य प्रयत्नशील होगे--ऐसी स्त्रियों को जो स्वयंसेविकाएँ बनने के लिए तैयार हों, नियमबद्ध अतिरिक्त भोजन खिलाकर पुरुष बना देने की दिशा में। इस प्रकार तुम्हारी पुरुष शक्ति में खासी वृद्धि हो जायगी।

अन्त में मेरी प्रार्थना है कि आपकी व्यवस्था में चलनेवाले कैम्प के कैदियों को जो पाँच सौ किलोरियों का राशन इस समय दिया जाता है उसमें कमी कर दी जाय। सम्भव है, इस तरह कैदी अधिक शीघ्रता से वास्तविक स्त्रियाँ बन जायँ।

आपका
सार्त्री

१२५

विदा की तैयारी। पन्द्रह हजार कैदियों का दूसरे कैम्प में तबादला होना था। रात के दो बजे थे। कैम्प के चारों ओर टैंक और लॉरियाँ आ घिरी थीं। तमाम प्रकाश-स्तम्भों को पूरे तौर से चालू कर दिया

गया था और दिन जैसा प्रकाश हो गया था। टैंकों के प्रकाश-स्तम्भों का भी इसमें सहयोग था। सन्तरियों की संख्या दुगनी कर दी गई थी और तमाम स्वसंचालित शस्त्रों के मुँह कैदियों की उस बाढ़ की ओर घुमा दिये गये थे जो एक महान् नदी की तरह फाटक की ओर बढ़ी चली आ रही थी। त्रायन और जॉन साथ-साथ आगे बढ़े। रात ठंडी थी और वे दोनों परस्पर गर्मी ले रहे थे। जॉन के दाँत बज रहे थे।

फाटक पर डण्डे लिये सैनिकों के दो दस्ते नियुक्त थे। वे फाटक पर आनेवाले कैदियों की गिनती करते थे और उन्हें टोलियों में बाँटते जाते थे।

"जिस लॉरी में सामान्य रूप से दस या बारह आदमी आ सकते हैं उसमें ये हम सत्तर जनों को लादना चाहते हैं," त्रायन बोला। "ये कैसे करेंगे? क्या तुम जानते हो कि आदमियों के शरीर के एक-दूसरे के अन्दर प्रवेश करने के सम्बन्ध में एक नियम है?"

जॉन ने उत्तर नहीं दिया। वह काँप रहा था। जॉन ने सैनिकों को पहली लारी में लदते देखा। पहले बीस आदमी चढ़े। इससे यह एक प्रकार से इतनी भर गई कि अब और आदमी न आ सकते थे, तब सैनिकों ने लॉरी में चढ़े हुए आदमियों पर डण्डे बर्साने शुरू किये जिससे वे एक दूसरे के खूब पास-पास हो गये। दस और चढ़े। और अब इस दस पर डण्डे पड़ने लगे। वे जो पहले से लॉरी में थे उन पर लद गये और इस प्रकार कुछ और जगह निकल आई। दस आदमी और धकेले गये। अब एक बच्चे के लिये भी 'और जगह नहीं हो सकती थी। सैनिकों ने अपनी बन्दूकों को उल्टा कर लिया और उनके कुन्दों से आदमियों को धकेलने लगे। दस और चढ़ गये। सत्तर आदमियों के समूह में से एक भी नीचे नहीं बचा। वे सब लॉरी पर थे। मार पड़नी बन्द हो गई। लॉरी चलने के लिए तैयार थी।

ब्रायन जॉन का हाथ पकड़े लॉरी में चढ़ा था। वे एक दूसरे से पृथक् होना नहीं चाहते थे।

"मारित्ज़, निरपेक्ष नियम जैसी कोई चीज नहीं है। पदार्थ-विज्ञान तक के कानून अपरिवर्तनशील नहीं हैं। पदार्थ-विज्ञान के अनुसार एक ही समय पर एक ही स्थान पर दो वस्तुएँ, किसी हालत में नहीं रह सकतीं। किन्तु यहाँ सात जने एक आदमी के स्थान में हैं। क्या इसके बाद भी तुम पदार्थ-विज्ञान में विश्वास करते रह सकते हो? क्या तुमने कभी पिकासो का नाम सुना है?"

"नहीं, मास्टर ब्रायन" जॉन का स्वर धीमा पड़ गया था। ब्रायन ऊँचा था और इसलिए उसे हवा मिल रही थी। जॉन छोटा था। उसका सिर उसके दोनों पड़ोसियों की छातियों के बीच धँसा था। उसके फेफड़े इतने पिसे थे कि वे हवा की एक साँस नहीं ले सकते थे।

"मेरा दम घुट रहा है," वह बोला। वह भयभीत था और लगभग रो रहा था। वह हिल-डुल नहीं सकता था। उसके नासिका-रन्ध्र वायु की खोज में थे, थोड़ी-सी भी वायु, और उसे वह मिल नहीं रही थी।

"मेरा दम घुट रहा है। मास्टर ब्रायन, मैं मरा जा रहा हूँ," वह बोला।

"मेरे प्रश्न का उत्तर दो। क्या तुमने कभी पिकासो का नाम सुना है?"

"नहीं, मैंने नहीं सुना," जॉन बोला। "मैं कुछ नहीं जानता। लेकिन मेरा दम घुट रहा है। मुझे यकीन है कि मेरा अन्त समय आ पहुँचा।"

ब्रायन, जॉन के सिर को ऊपर उठाना चाहता था। लेकिन वह अपना हाथ नहीं हिला सकता था। वह अपनी एक मांसपेशी भी नहीं हिला सकता था। उसका शरीर पिस गया था, बुकनी बना जा रहा था और क्षुद्रतम जगह घेरे था। लेकिन उसका सिर स्वतंत्र था और दूसरे सभी के सिरों से ऊँचा।

"यह पिकासो पाश्चात्य सभ्यता का सबसे बड़ा चित्रकार है," आयन बोला।

"मुझे कुछ सुनाई नहीं देता," जॉन बोला। "यदि मैं किसी तरह केवल अपनी नासिका को मुक्त कर सकता, उसका एक ओर का छिद्र भी। मास्टर आयन, मेरी सहायता करो; दया करके मेरी सहायता करो। मैं मर रहा हूँ।"

आयन ने उसके लिए ज़रा-सी जगह बनाने की कोशिश की। जॉन का सिर उसकी छाती से सटा था।

"बूढ़े आदमी पिकासो ने, जैसे तुम इस समय लॉरी में हो, तुम्हारा ठीक वैसा चित्र बनाया है।"

"मेरा चित्र ?" जॉन ने पूछा। "मैं सुन नहीं सकता। मेरे कान बन्द हैं।"

"तुम्हारा चित्र," आयन बोला। "चित्र बिलकुल फोटो की तरह है। सात आदमी एक समय में, एक ही जगह, घेरे हुए। एक आदमी की पाँच टाँगें हैं, दूसरे के तीन सिर किन्तु फेफड़ा नहीं। तुम्हारी आवाज है किन्तु मुँह नहीं, जब कि मेरा सिर ही सिर है, लारी पर तैरता हुआ एक सिर। प्रथम बार जब मैंने इस खास चित्र को देखा, यह पेरिस में था—मुझे यह बहुत पसन्द आया; लेकिन मैं इसका अभिप्राय नहीं समझ सका। यह मैं अभी समझ रहा हूँ कि यह हमारी लॉरी का ही आश्चर्यजनक यथार्थ चित्रण था। उससे एक भी ब्योरे की बात नहीं बची। उसने हमारे कैम्प को भी चित्रित किया है। वह फोटो लेने की तरह चित्र बनाता है। यथार्थ जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं। वह प्रतिभावान है।"

लॉरी चल दी। आयन ने अपने चारों ओर के लोगों पर नजर डाली। उसने ऊपर से उनकी ओर नीचे देखा। एक भी 'भगवान् की मूर्ति और उसका प्रतिरूप' नहीं था। जिस समय लॉरी गाँव के बाजार

में से गुजर रही थी, उसमें एक भी मानव न रह गया था । जो हो लारियों के आदमी मरे भी नहीं थे । वे जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे थे । एक क्षण वे जीते थे और दूसरे ही क्षण मर जाते थे । कभी-कभी वे एक साथ ही जीवित और मृत दोनों थे । इस विशेष क्षण पर जो स्थान वे घेरे थे, स्थान नाम की वस्तु वहाँ रही ही नहीं थी स्थान लोप हो गया था । यह मर गया था और स्थान के इस क्षण-विशेष पर, समय नाम की वस्तु भी नहीं रही । समय मर गया था और भौतिक वास्तविकता मर गई थी ।

अस्तित्व ऐंठ गया था । आँखें ऐंठ गई थी । माँस, रक्त, हवा, समय, विचार—सभी कुछ ऐंठ गया था । आदमियों की शक्ल और भावनायें बदल गईं थीं —वे सभी एंठ गये थे ।

"क्या तुम अभी भी साँस ले सकते हो ?" त्रायन ने पूछा ।

"मैं नही जानता । मैं ऐसा सोचता हूँ, लेकिन वह केवल अपनी नासिका के एक रंध्र से और वह भी बीच-बीच में तुम्हारी छाती और पसलिय में से होकर ।"

"तुम्हारी नासिका के एक ही रंध्र को यह काम करना होगा," त्रायन बोला "अब सुनो, मैं तुम्हें कुछ खास महत्त्व की बात कहना चाहता हूँ ।"

"मैं कुछ नहीं सुन सकता...कृपया मुझे क्षमा करो ।"

"तुम्हें सुनना ही होगा," टीपस ईलियट का उद्धरण देते हुए त्रायन बोला—"यह बहुत महत्त्व का है ।

"हर आपत्ति की अपनी परिभाषा होती है,
हर दुःख का अपना अन्त होता है;
जीवन में दीर्घ काल तक रोने का समय नहीं है ।
लेकिन यह, यह तो जीवन से परे है, काल से परे है,
पाप-पुण्य का एक अनन्त क्षण ।

हम ऐसी गन्दगी से मलिन हैं जिसे दूर नह कर सकते,

परा-प्राकृतिक विष से संयुक्त

न केवल हमीं ही, न केवल यह घर ही, न केवल यह नगर ही मलिन है,

किन्तु सारा संसार ही मलिन है।"

"कृपया जरा जोर से, मैं सुन नहीं सकता," जॉन बोला। त्रायन जितने जोर से हो सकता था, कहता गया—

"हवा को शुद्ध करो! आकाश को शुद्ध करो। वायु को शुद्ध करो। पत्थर को पत्थर से हटाओ, बाजू से चमड़ी हटाओ, हड्डी से माँस-पेशी हटाओ, और उन्हें स्वच्छ करो। पत्थर को स्वच्छ करो, हड्डी को स्वच्छ करो, दिमाग को स्वच्छ करो, उन्हें स्वच्छ करो।"

"मैं एक बात भी नहीं समझता," जॉन बोला। "मास्टर त्रायन, तुम कितने भाग्यवान् हो; तुम्हारा सिर वहाँ ऊपर है। तुम्हारा दम नहीं घुट रहा है।"

कैम्प में बड़े आदमियों की अपेक्षा छोटे कद के आदमियों को भूख का कम कष्ट हुआ था। लेकिन लॉरी में, जो सत्तर आदमियों का भार लादे एक भूत की तरह ओहड्रूफ के बाजारों में घूम रही थी, हवा के अभाव से छोटे कदवाले कैदी मरे जा रहे थे।

"मास्टर त्रायन, बोलते न रहो; मुझे कुछ सुनाई नहीं देता," जॉन बोला।

"यदि तुम नहीं सुनते तो तुम्हारे जीवन को खतरा है।"

"जर्मन प्रोफेसर गलती पर था," त्रायन बोला। "उसने महान् पाप किया है और इसके लिए उसे मरना होगा।"

"किस जर्मन ने पाप किया है?" जॉन ने पूछा।

"जिस प्रोफेसर ने हमारे जीवित मांस और चर्बी को तोला था," त्रायन ने कहा। "हमारे कष्टों को नापने के लिए उसने हमें उस

समय तोला जब हमारा माँस गरम और सजीव था। लेकिन आदमी का कष्ट न पाउण्ड से तोला जा सकता है न टन से...जीवन तोला नहीं जा सकता। जो तोलने का प्रयत्न करता है, महान् पाप करता है।"

"मैं नहीं सुन सकता," जॉन ने कहा।

"परवाह नहीं," त्रायन ने कहा। "विनाश की ओर जाने के लिए सुनने की आवश्यकता नहीं। हमारा लॉरी-ड्राइवर कुछ नहीं सुन सकता, न सन्तरी ही सुन सकते हैं, डण्डोंवाले सैनिक ही सुन सकते हैं, और न वे स्वसंचालित शस्त्र ही सुन सकते हैं, जो तुम पर गोली चलाने के लिए बेसब्र हैं। उनमें से कोई कुछ नहीं सुन सकता और तो भी वे सब हमारे साथ विनाश को प्राप्त होंगे, एक ही समय और एक ही तरह से। क्या तुम उन्हें नष्ट होते नहीं देख सकते हो?"

"मैं अन्धा हूँ," जॉन बोला। "मुझे एक भी चीज दिखाई नहीं देती।"

"क्या तुम कुछ अनुभव भी नहीं करते?"

"कुछ नहीं," जॉन बोला। "केवल यही कि मैं साँस नहीं ले सकता।

"क्या तुम नहीं देखते कि जो वास्तविक बात है उसे तुम अनुभव कर सकते हो "त्रायन ने अफसोस के साथ कहा। "तुम ऐसा क्यों कहते हो कि तुम अनुभव नहीं कर सकते? हर किसी को एक ही तरह की अनुभूति होती है लेकिन वे इसे स्वीकार नहीं करते।"

१२६

कैदियों को पशुओं के ट्रकों पर लाद दिया गया। हर डिब्बे में, जिसके बाहर "चौबीस घोड़े" लिखा था, उन्होंने एक सौ चालीस आदमी लादे।

एक-एक करके डिब्बों के दरवाजे बन्द कर दिये गये और ताले लगा दिए गये। गाड़ी के पिछले हिस्से में उन्होंने तीन हजार औरतों को लादा।

गाड़ी लम्बी थी। ट्रायन की इच्छा हुई कि वह थोड़ी दूरी पर से ही सारा की सारी गाड़ी को एक साथ देखता रहता।

"हमारी यह गाड़ी उस जुलूस की तरह है जो गोलगोथा गया था। अन्तर इतना ही है कि यह मशीन रूप है," ट्रायन बोला। "हम मशीन के सहारे गोलगोथा तक धकेले जा रहे हैं। ईसा की तरह नहीं जो दो डाकुओं के साथ ऊपर तक पैदल गया था। क्या तुम जानते हो कि ईसा को दो डाकुओं के बीच करके क्यों फाँसी दी गई थी?"

"नहीं," जॉन ने उत्तर दिया।

"एक निर्दोष आदमी को दण्ड देने के लिए कभी-कभी उसके दोनों ओर एक अपराधी को खड़ा कर देते थे। इस कपट की ऊँचे साहित्य में गिनती है। यहूदियों की हिम्मत नहीं पड़ी कि वे ईसा को अकेले फाँसी पर चढ़ा सकें। इसलिए उन्होंने उसे दो प्रसिद्ध डाकुओं के बीच खड़ा किया ताकि उसके वध के समय जनता का ध्यान बटा रहे।

"तुम और मैं, मेरी स्त्री और बहुत से लोगों के दायें-बायें एक अपराधी है। यह वही कपट है जैसा गोलगोथा के समय हुआ था। केवल प्रमाण में अन्तर आ गया है। उस समय दो अपराधियों के बीच एक निर्दोष आदमी था, लेकिन अब दो अपराधियों के बीच दस हजार आदमी हैं। किन्तु यह बहुत मामूली भेद है; और यह भी वैसा ही कि हमारी हत्या स्वयं-संचालित मशीनों द्वारा हो रही है। सिद्धान्त वही है। लेकिन ठगी का यह ढंग एकदम बच्चों का सा है। वध के समाप्त होते ही जनता उन अपराधियों को भूल गई जो ईसा के साथ मारे गये थे। लोगों ने ईसा और केवल ईसा को याद रखा। यही हमेशा हुआ है और इस बार भी वही होगा। चाहे हत्या स्वयं-संचालित यंत्रों द्वारा हो और चाहे हमें गोलगोथा तक रेल से ले जाया जाय।"

ब्रायन डिब्बे की सलाखोंवाली खिड़की तक गया। गाड़ी रुक गई थी।

"क्या तुम कोई चीज देख सकते हो?" जॉन ने पूछा। उसकी आँखें खिड़की के स्तर तक नहीं पहुँच सकती थीं।

"हम एक स्टेशन पर खड़े हैं।" ब्रायन ने उत्तर दिया। "सामने एक दूसरी गाड़ी खड़ी है।"

"क्या यह भी कैदियों से भरी है?" उत्तेजित जिज्ञासावाले जॉन ने पूछा।

"यह भूतपूर्व कैदियों से भरी है। ये सब विदेशी दास-मजदूर हैं जिन्हें जर्मनी से मुक्ति मिली है।" पड़ोस की गाड़ी को घेरे हुए आदमियों और स्त्रियों की भीड़ की ओर देख कर ब्रायन ने उत्तर दिया।

"वे सब सिगरेट पी रहे हैं," ब्रायन बोला।

जॉन बात निगल गया।

"गाड़ी से एक औरत उतर रही है जो माँस और सफेद पाँव रोटी खा रही है," ब्रायन बोला। और फिर जॉन वह भी बात निगल गया।

"मैं बहुत चाहता हूँ कि मैं देख सकता," जॉन बोला। "सम्भव है, मैं उनमें से कुछ को पहचान सकूँ। वे किस देश के हैं?"

गाड़ियों के बाहर चॉक से बने हुए झण्डा और बटन के सूराखों में लगे हुए रंगीन फीतों की ओर देख कर ब्रायन ने कहा—"मिले जुले। एक औरत है जो रोटी और मक्खन खा रही है, और जिसकी टाँगें रोटी जैसी ही सफेद हैं। वह डेनमार्क की होगी। उसके पीछे एक फ्राँसीसी रमणी है। वह आकर्षक है। काली आँखें।"

"क्या दूसरे फ्राँसीसी भी हैं?" जॉन ने पूछा।

"हमारे डिब्बे के पास ही आदमियों की एक बड़ी भीड़ है," ब्रायन बोला। "वे कुछ बेल्जियम और इटली वासियों के साथ हैं।"

"मैं फ्रांसीसियों को देखना चाहता हूँ," जॉन बेसब्री के साथ बोला। फ्रांसीसियों के लिए उसका पुराना राग जाग उठा था। ब्रायन ने उसे हाथों से इतना ऊपर उठाया कि वह देख सके।

"वे फ्रांसीसी हैं," जॉन बोला "इटलीवासी के पास खड़ा हुआ एक आदमी जॉसफ की सजीव मूर्ति मालूम देता है। क्या तुम उसे देख सकते हो ?"

"कौन सा जॉसफ ?"

"मेरा मित्र जॉसफ," जॉन ने उत्तर दिया।

"क्या मैंने उसके बारे में नहीं बताया ? उसे मैंने भागने में मदद दी थी। यदि मैं यह निश्चित न जानता कि वह फ्रांस में है तो मैं समझता कि यह वही है। यह ठीक उस जैसा लगता है। क्या तुम उसे कुछ नहीं कहोगे ?"

"तुम मुझसे क्या कहलाना चाहते हो ?" ब्रायन ने पूछा।

"जो कुछ तुम चाहो," जॉन ने उत्तर दिया। "वह एकदम जॉसफ जैसा है। मैं फ्रेंच नहीं जानता, लेकिन मैं कुछ कहना चाहूँगा। हैलो कहो और मंगल कामना करो कि वे सकुशल घर पहुँचे।"

जॉन के लिए यह कठिन था कि वह किसी फ्रांसीसी के पास से गुजर जाय, और उससे दो मैत्रीपूर्ण शब्द न बोले, अथवा उसकी ओर देखकर दिल से न मुस्कराये।

"देखो, वह हमारे पास ही खड़ा है," वह बोला। "अब कुछ कहो।"

ब्रायन अभी भी चुप था। जॉन अब अपने को और संयत न रख सका और जर्मन में चिल्लाया :

"घर की ओर प्रस्थान करते समय मंगल-कामना।"

वह कोमलता से बोला था। खुशी से उसका चेहरा चमक रहा था; उसे एक ऐसे आदमी से बोलने का अवसर मिला था जो फ्रांसीसी होने के कारण उसे प्रिय था।

प्लेटफार्म पर लोगों की भिन्न-भिन्न अकस्मात् रुक गई। खिड़की के नीचे खड़ी भीड़ ने चुपचाप जॉन की ओर देखा। आयन ने सुना कि जो आदमी जॉसफ-सा प्रतीत हो रहा था, फ्रेंच में पूछ रहा है :

"वह सूअर का बच्चा नाज़ी क्या चाहता है ?"

प्लेटफार्म की सभी आँखें जॉन मारित्ज़ पर गड़ी थीं जो अपनी खिड़की की सलाखों के पीछे से अभी भी उन आदमियों और औरतों की ओर देखकर प्रेम से मुस्करा रहा था।

"नाज़ी सूअर का बच्चा शायद एक सिगरेट चाहता है" एक औरत बोली।

जॉसफ की तरह प्रतीत होनेवाले तरुण ने अपनी जेब में हाथ डाले किन्तु वह यकायक रुक गया। उसने एक पत्थर उठाया और सीधा उस खिड़की पर दे मारा जहाँ जॉन खड़ा मुस्करा रहा था। पत्थर सलाखों में से निकलकर ट्रक के बीचोबीच जा गिरा। उससे एक कैदी को चोट लगी।

"सिगरेट के बजाय यह लो।" एक औरत बोली। "ओह ! तुम सिगरेट पीना चाहते हो ! तुम्हारे कारण मुझे जर्मनी में तीन वर्ष रहना पड़ा है।"

एक दूसरा पत्थर धड़ाम से ट्रक के एक ओर आ गिरा, फिर तीसरा अब उन पर पत्थरों की वर्षा हो रही थी। कैदी खिड़की से सिर बचाकर जमीन पर लेट गये। ओलों की तरह पत्थरों की वर्षा हो रही थी। बाहर से हल्ला और गालिया सुनाई दे रही थीं, मानों ट्रक को तूफान ने घेर लिया हो।

आदमी चिल्ला रहे थे। औरतें चिल्ला रही थीं। बच्चे चिल्ला रहे थे विद्रोह की आवाजें थी। आवाज फ्रांसीसी में आ रही थी, इटली की भाष

में आ रही थीं, रूसी में आ रही थीं, डेनमार्क की भाषा में आ रही थीं, फिनलैण्ड की भाषा में आ रही थीं, नार्वे की भाषा में आ रही थीं, एक प्रकार से संसार की सभी भाषाओं में।

उनकी गालियाँ समान थीं, घृणा के बोल एक जैसे थे, और जॉन पर गिरनेवाले पत्थरों के साथ सभी भाषाओं के जो शब्द चले आ रहे थे, वे भी समान थे : सूअर नाज़ी, अपराधी नाज़ी, हत्यारा नाज़ी, नाज़ी नाज़ी।

सभी भूतपूर्व कैदी गाड़ी में से निकल आये और कैदियों के डिब्बों पर पत्थर बरसानेवालों के साथ एक हो गये। गार्ड और सैनिक पुलिस शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न कर रही थी लेकिन आक्रमण अत्यधिक भयानक था और शान्त नहीं हो रहा था। उत्तेजना बढ़ती ही जा रही थी। पुलिस ने भीड़ के सिरों पर बन्दूकें छोड़ीं। मुक्त गुलामों के हृदय से नाजियों को पत्थरों की मार से बचानेवाली पुलिस के विरुद्ध विद्रोह की एक आवाज उठी।

जिस समय उसके कान के पास से सीटी की सी आवाज करता हुआ पहला पत्थर गुजरा, तभी से जॉन खिड़की पर हो रहा। आक्रमण अत्यन्त भीषण हो उठने पर भी न वह अपनी जगह से हिला और न उसने मुस्कराना बन्द किया। वह समझ भी नहीं सका कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है। और यदि वह समझ भी पाता तो वह कभी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि जॉसफ से इतनी समानता रखनेवाले फ्रांसीसी ने वास्तव में उस पर पत्थर बरसाये थे और उसके चेहरे को चकनाचूर करने की कोशिश की थी।

वह अपनी उसी जगह खड़ा था, और आँखें फाड़-फाड़ कर उसी भीड़ को देख रहा था जो नीचे से उस पर पत्थर बरसा रही थी। उसी समय ट्रक के अन्दर के कैदियों ने उसे टखने से पकड़ कर खिड़की से घसीटा और जमीन पर ले लिया। सैकड़ों हाथ उसके अंग-भंग करने के लिए उसे खोजने लगे। सैकड़ों पैर उसे मसल रहे थे और घृणा, निराशा

तथा असंयत अत्याचार के वशीभूत हो उसे कुचल रहे थे। बाहर से लगातार पत्थरों की वर्षा हो रही थी जो दीवारों से टकरा-टकरा कर खिड़की से अन्दर चले आ रहे थे।

उसने प्लेटफार्म पर के मुक्त हुए कैदियों को उत्तेजित कर दिया था और उनकी घृणा को उन्मुक्त कर दिया था। वे उसके टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते थे। अब उसके चारों ओर मानव नहीं थे, लेकिन कक भीड़ थी, उसके शरीर को मसलनेवाला एक हजार पाँववाला पशु था जो कि उसके उष्ण जीवित मांस को पीसे डाल रहा था और बाहर की ओर वही सहस्रपांव पशु उस पर पत्थर बरसा रहा था। उसकी नाक और मुँह से खून बह रहा था। जॉन को विश्वास था कि उसकी मौत निकट है। एकबार उसने इस विचार को अपने मनमें जगह दे दी। इसके बाद न तो उसे उन बूटों की वेदना रही जो उसे दल रहे थे और न उन क्रोध भरे मुक्कों की चिन्ता जो उस पर पड़ रहे थे। उसे अब किसी प्रकार का दर्द नहीं हो रहा था, उसे किसी बात की खबर नहीं थी। यदि थी तो केवल इस बात की कि उसका अन्त समीप है। उसे फादर कोरग का, फन्तना के गिरजे की और माता मरियम की मूर्ति की याद आई। उसका शरीर और अन्तरात्मा शान्ति से भर गये। उसे दीवारों से खन खनाते हुए पत्थरों की आवाज सुनाई दी और वह यह जान गया कि यह उसी के लिए हैं, और केवल उसी के लिए।

हर कोई उसे पीस डालना चाहता था। हर कोई जॉन मॉरित्ज़ को मरा हुआ देखना चाहता था। अब वह इस बात को जान गया था। उसे लग रहा था कि मानवता जीवित नहीं रह सकती। जब तक वह जीवित है तब तक मानवता किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकती संसार के सारे दुखों का एक मात्र वही कारण है। वह, जॉन मॉरित्ज़, अपराधी है। यही कारण है कि ये सभी लोग उसे मार डालना चाहते हैं। इसी कारण से कैदी उसे पैरों तले कुचल रहे थे; इसी कारण से

भूतपूर्व कैदी उस पर पत्थर वर्षा रहे थे ; और इसीलिए उसे सैनिकों ने कैदी बनाया था। जब तक वह जीवित है, जनता किसी तरह शान्त नहीं हो सकती; सैनिक पुलिस भूतपूर्व कैदियों का कुछ। नहीं कर सकती जब तक वह जॉन मॉरित्ज मार नहीं डाला जाता, जब तक उसका अन्त नहीं हो जाता, ट्रक के भीतर के कैदियों को काबू नहीं किया जा सकता; जब तक वह जीवित है, टैंकों और स्वयं सञ्चालित सेनाओं में से कोई भी समुद्र पार घर नहीं पहुँच सकतीं।

उसे मरना होगा। वह आदमी था। वह क्षमा नहीं किया जा सकता; "भगवान्, मैंने क्या पाप किया है?" वह सोचने लगा। "मैं फ्रांसीसियों से प्यार करता हूँ और मैं उनमें से एक से प्यार की दो बातें करना चाहता था। यही कारण है कि वे मुझे मारे डाल रहे हैं। उन्होंने ईसा को मार डाला, क्योंकि वह आदमियों से प्यार करता था।"

उसे त्रायन का कथन याद आया, "हम रेल द्वारा गोलगोथा ले जाये जा रहे हैं। हम एक मशीन-रूपी गोलगोथा पर चढ़ रहे हैं।" जॉन को लग रहा था कि वह क्रास पर चढ़ा है और रात आ गई है। यह यहाँ अन्धेरा था, अँधेरा था, अँधेरा था।

१२७

उसी दिन बहुत देर होने पर जॉन होश में आया। उसके सिर और छाती पर पट्टी बँधी थी। वह त्रायन के कन्धे के सहारे लेटा था और वह अपने गाल के साथ त्रायन की नंगी चमड़ी के स्पर्श को अनुभव कर सकता था। त्रायन के बदन पर कमीज नहीं थी।

वह त्रायन से पूछता कि उसने अपनी कमीज क्यों उतार दी है, लेकिन उसमें शक्ति की कमी थी।

"मुझे प्यास लगी है," जॉन बोला।

ब्रायन ने न सुनने का बहाना किया।

कई घण्टों तक जॉन ब्रायन की गोद में अचेत पड़ा था। इस बीच ब्रायन ने अपनी कमीज को फाड़-फाड़ कर उसके जख्मों पर पट्टियाँ बाँध दी थीं और उसके लिए कुछ जगह निकाल कर उसे फर्श पर लिटा दिया था।

"मैं प्यासा हूँ" जॉन ने दुहराया।

जॉन इस बीच एक शब्द नहीं बोला था। थोड़ी-थोड़ी देर पर ब्रायन जॉन के हृदय की धीमी धड़कन अनुभव करने के लिए उसकी छाती पर हाथ रखता था। बीच-बीच में वह अपना हाथ हटा कर उसकी पट्टी पर अपने कान भी रखता; क्योंकि उसके हाथों को कुछ पता नहीं लगता था। जॉन की छाती से अपने कान सटा लेने से भी बड़ी ही कठिनाई से उसे उसके हृदय की गति का पता लगा था।

और अब जॉन बोल पड़ा था।

ब्रायन खुश था, मानो वह स्वयं मर कर जी गया हो; लेकिन जॉन पानी चाहता था। वह क्रॉस पर चढ़े ईसा की तरह प्यासा था और ट्रक में कहीं पानी न था। बीस घण्टे तक कैदी बिना खाने के, बिना पानी के और बिना शौचादि जाने की आज्ञा के ताले में बन्द रहे थे। ट्रक का सारा वायुमंडल बदबू से भरा और गला-घोंटू था। उसमें सड़े हुए मल-मूत्र की तेज दुर्गन्ध उठ रही थी। सारा फर्श पेशाब से तर था और जॉन उस पर लेटा था। अनजाने में जॉन ने स्वयं फर्श के तख्ते पर पेशाब कर दिया था। अभी तक उसने अपनी आँखें नहीं खोलीं थीं किन्तु केवल ओंठ खोले थे।

"मैं प्यासा हूँ," उसने कहा।

"मुझे खेद है। किन्तु यहाँ पानी नहीं है। यहाँ कुछ भी पीने योग्य नहीं है," ब्रायन बोला।

वह सोचने लगा कि वह जॉन को अपने ओंठ तर करने के लिए क्या दे सकता है। उसे याद आया कि उसने कहीं पढ़ा था कि जब चंगेजखाँ के योद्धा बड़े-बड़े मैदानों में से गुजर रहे थे और उनके पास खाने-पीने को कुछ नहीं था तो वे घोड़ों की पीठ से उतर कर चाकू से घोड़ों की टाँग की एक नस खोल देते और उसमें से रक्त की एक दो बूँदें पी लेते। तब वे जख्म पर पट्टी बाँध देते और चल देते। लगातार कई दिनों तक चंगेजखाँ के सैनिक उष्ण रक्त की उन बूँदों के अतिरिक्त न कुछ खाते और न पीते।

त्रायन इस चित्र से अभिभूत था। वह जॉन की प्यास बुझाने के लिए उसे प्रसन्नतापूर्वक अपना रक्त दे सकता था। रक्त उसके लिए अच्छा रहा होता।

"मैं प्यासा हूँ," जॉन आग्रह के स्वर में बोला।

"बूढ़े यार, पीने के लिए कुछ नहीं है," त्रायन बोला। "एक मात्र पेय पदार्थ मेरा अपना रक्त है। मैं प्रसन्नतापूर्वक उसकी एक-दो बूँदें दे सकता हूँ; लेकिन तुम्हें रक्तपान नहीं करना चहिए। जो आदमी मानवी रक्त पीता है वह पिशाच हो जाता है। उसकी शकल आदमी की रहती है लेकिन वह आदमी नहीं रहता; वह एक मशीन होता है, वह एक पिशाच होता है,एक नीच आदमी होता है। उसमें आदमी के सभी लक्षण रहते हैं किन्तु आदमी की आत्मा रहीं रहती।"

"मैं प्यासा हूँ," जॉन क्षीण स्वर में बोला।

"मुझे इसका विश्वास है" त्रायन बोला। "लेकिन इसके बावजूद तुम्हें खून नहीं पीना चाहिए और मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ और है भी नहीं। मेरे आस-पास तुम्हीं अकेले एक ऐसे आदमी हो, जिसने कभी मानवी रक्त का स्पर्श नहीं किया। क्या तुम सुन रहे हो? सभी दूसरे लोगों ने पिया है और वे पिशाच बन गये हैं। वे अब

आदमी नहीं रहे। इन कैदियों, गार्डों और भूतपूर्व कैदियों में से जिन्होंने तुम्हें पथराया, एक भी तो आदमी नहीं हैं। तुम्हीं अकेले हो जो अभी भी आदमियों से प्यार करते हो।"

"मैं प्यासा हूँ।"

"मुझे तुम्हारा विश्वास है। मुझे विश्वास है कि तुम प्यासे हो और यदि तुम कुछ नहीं पीते तो तुम मर जाओगे "त्रायन बोला। लेकिन पिशाच बनकर जीने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है। तुम्हें मानवी रक्त नहीं पीना चाहिए। जो मैं कह रहा हूँ क्या तुम उसे समझ रहे हो?"

"मैं प्यासा हूँ," जॉन ने एक बार फिर क्षीण स्वर में कहा।

\+ \+ \+

जान मारित्ज की अर्जी—

मैं, नीचे हस्ताक्षर करनेवाला मारित्ज़, आयोन, फन्तना का निवासी, जो कि रूमानिया में है यह अर्जी उस देश के अधिकारियों के सामने पेश करता हूँ जिसकी सीमा से बाहर मैं इस समय नहीं जा सकता। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि वे मुझे बतायें कि वे मुझे एक कैदी की तरह क्यों कैद किये हैं, और वे मुझे वैसी यन्त्रणा क्यों दे रहे हैं जैसी केवल क्रॉस पर ईसा को दी गई थी।

मैं पहले भी आपसे यह प्रश्न पूछ सकता था, लेकिन मैंने नहीं पूछा क्योंकि मैं एक सहनशील आदमी हूँ। मैं खेत पर काम करता हूँ, और खेत पर काम करनेवाले प्रतीक्षा करना जानते हैं।

इसलिए मैंने सारा बसन्त प्रतीक्षा की, सारी गर्मियों प्रतीक्षा की और सारी लम्बी शीत ऋतु में प्रतीक्षा की।

अब यह फिर बसन्त आ गया है। मैं हड्डी और चमड़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं हूँ। मेरी अन्तरात्मा दुख और निराशा से काली पड़ गई है, वैसी ही काली जैसा काला कोयला या स्याही। मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता और इसलिए मैं आपसे पूछता हूँ, आप मुझे कैदी क्यों

बनाये हैं। मैंने चोरी नहीं की, मैंने हत्या नहीं की, मैंने किसी को ठगा नहीं और मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जो कानून अथवा धर्म के विरुद्ध हो।

यदि मैं न चोर हूँ न अपराधी हूँ और न कोई बुराई करनेवाला हूँ तो तुम मुझे जेल में क्यों रखते हो? तुमने मुझे पथराया और यहाँ तक यंत्रणा दी कि पृथ्वी तक पर भटकनेवाली एक छाया के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं रह गया।

मैं चौदह कैम्पों में कैद रह चुका हूँ। मैं समझता हूँ कि समय आ गया है कि जब मैं आपसे पूछूँ कि आपके पास मेरे विरुद्ध क्या इल्जाम है। मुझे निश्चय करने में समय लगता है; लेकिन अब मैंने निश्चय कर लिया है।

मैं यह अर्जी डाक द्वारा जेल के अधिकारियों के पास भेज रहा हूँ। मैं इसे जेल के पहरेदार के द्वारा भेजूँगा। यद्यपि पहले यह सारे संसार में फैल जायगी, किन्तु अन्त में यह अधिकारियों के कानों तक पहुँच कर रहेगी। चाहे उनके कान मुँद गये हों, तो भी मुझे अधिकारियों को अपनी यह अपील सुनानी ही होगी। मैं जेल के प्रत्येक दरवाजे पर अपनी यह अर्जी चिपका दूँगा। मैं इसे रस्सी बाँधकर बाजारों में लटका दूंगी मैं कैम्प पर उड़ने वाले पक्षियों को पकड़ लूँगा। और उनके पैरों से अपनी यह अर्जी बाँध दूँगा, ताकि वह इसे पृथ्वी के हर कोने पर पहुँचा दें।

आज से मैं लगातार न्याय की पुकार मचाता रहूँगा। तुम मुझे गहरे तहख़ानों में कैद कर दोगे ताकि मेरी पुकार कोई सुन न सके। लेकिन मैं कहीं भी रहूँ, मैं शान्ती नहीं रहूँगा। यदि मेरे पास न कागज होगा और न पैंसिल होगा तो मैं जेल की दीवारों पर अपने नाखूनों से लकीरें खींचूँगा जब मेरे नाखून घिस जायँगे, तो मैं उनके फिर से उगने की प्रतीक्षा करूँगा और नये सिर से लिखना आरम्भ करूँगा।

यदि तुम मुझे गोली मार दोगे, तो मैं न नरक में जाऊँगा और न पाप-शोधक स्थान में। मेरी रूह यहीं पृथ्वी पर जहाँ भी तुम जाओगे, छाया की तरह तुम्हारा पीछा करेगी। मैं तुम्हें हजार बार सोते से जगाऊँगा और तुम्हारे साथ सोने वाली प्रेमिका को यह सुनाऊँगा कि मैं सही था। और तुम अपनी आँखें न बन्द कर सकोगे। अपने अन्तिम दिनों तक न तुम संगीत सुन सकोगे, न प्रेम के दो शब्द सुन सकोगे, और न कुछ और सुन सकोगे, क्योंकि मेरे शब्द, जॉन मारिज़ के शब्द तुम्हारे कानों में गूँजते रहेंगे।

मैं एक आदमी हूँ, और यदि मैंने कोई पाप नहीं किया, तो किसी को यह अधिकार नहीं है कि मुझे कैद करे और यन्त्रणा दे। मेरी आत्मा और मेरे जीवन पर केवल मेरा अधिकार है, और तुम कोई भी हो, और तुम्हारे पास कितने ही टैंक हों, मशीन-गन हों, प्लेन हों, कैम्प हों और कितने ही रुपये हों, तुम्हें मेरे जीवन और आत्मा पर कोई अधिकार नहीं।

मैंने अपने समस्त जीवन भर कुछ अधिक नहीं चाहा, काम करने का अवसर चाहा है, अपने स्त्री-बच्चों के लिए घर चाहा है, और जितना खाने भर को पर्याप्त हो जाय उतना चाहा है।

क्या इसी लिये तुमने मुझे जेल में डाला है?

रूमानियावालों ने जैसे जायदाद और पशुओं को कुर्क किया, उसी प्रकार मुझे भी कुर्क करने को सिपाही भेजे। मैंने उन्हें अपने आप को कुर्क करने दिया। मेरे हाथ खाली थे। मैं न राजा से लड़ सकता था और न उन सिपाहियों से जिनके पास बन्दूकें और पिस्तौल थे। उन्होंने जिद्द की कि मेरा नाम वह नहीं है जो मेरी माँ ने मुझे दिया था अर्थात् आयोन, किन्तु जैकब है। उन्होंने मुझे यहूदियों के साथ कांटेदार तारों के पीछे कैम्प में कैद कर दिया। वैसे ही जैसे पशुओं को, और मुझसे कड़ा परिश्रम लेने लगे। हमें पशुओं की तरह एक झुण्ड में साथ-साथ सोना पड़ता, हमें झुण्ड में खाना पड़ता, और झुण्ड में चाय पीनी पड़ती

और मैं मानता था कि हमें पशुओं की तरह वध-स्थल पर भी एक साथ ले जाया जायगा। दूसरे कसाई-खाने तक गये। मैं बच निकला।

क्या तुमने मुझे इसलिए कैद किया है कि मैं कसाई-ख़ाने तक पहुँचने से पहले भाग निकला?

हंगरीवालों की मान्यता थी कि मैं जैकब नहीं था किन्तु आयोन था। उन्होंने मुझे रूमानिया वासी होने के कारण गिरफ़ार किया। उन्होंने मुझे कष्ट दिया, यन्त्रणा दी और बाद में मुझे जर्मनों के हाथ बेच दिया। जर्मनों का कहना था कि मेरा नाम न आयोन है, न जैकब है किन्तु जानोस है और उन्होंने, मुझे हंगरी-निवासी मान कर यन्त्रणा दी। तब एक करनैल आया और उसने मुझे सूचना दी कि मेरा नाम न आयोन है, न जैकब है, न जॉकी है, न जानोस् है, किन्तु जॉन है। उसने मुझे एक सिपाही बना दिया। लेकिन सबसे पहले उसने मेरा सिर नापा, मेरे दाँत गिने और शीशे की नलियों में मेरे रक्त की बूँदें डालीं। और यह सब केवल यह सिद्ध करने के लिये कि मेरा नाम वह नहीं था, जो मेरी माँ ने मुझे दिया। क्या इसी लिये तुमने मुझे कैद किया है?

जब मैं सैनिक था, तो मैंने कुछ फ्रांसीसी कैदियों को जेल से भागने में सहायता की। क्या इसलिये तुमने मुझे कैद किया है?

जब युद्ध समाप्त हो गया और मैंने समझा कि अब मेरे लिए भी शान्ति के दिन आये, तो अमरीकी आये और उन्होंने मुझे एक राजा की तरह चाकलेट और अमरीकी खाना खिलाया। तब, बिना कुछ और कहे-सुने, उन्होंने मुझे जेल में डाल दिया। उन्होंने मुझे चौदह कैम्पों में घुमाया मानों मैं संसार का सब से खतरनाक डाकू होऊँ।

और अब मैं जानना चाहता हूँ: क्यों?

क्या यह इसलिए कि तुम्हें मेरा नाम अच्छा नहीं लगता: जानोस् अथवा आयोन, अथवा जॉन अथवा जैकब अथवा जॉकी? क्या तुम भी इसे बदलना चाहोगे? चलो, आगे चलो। मैं जानता हूँ कि आदमियों

को अपनी माताओं का दिया हुआ नाम रखने का अधिकार नहीं है। लेकिन मैं तुम्हें सावधान किये देता हूँ : मैं अब और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मैं जानना चाहता हूँ कि मैं क्यों कैद हूँ और मुझे क्यों यन्त्रणा दी जाती है।

उत्तर की प्रतीक्षा में, मैं हूँ आपका

विनम्र

मारित्ज़, आयोन, जॉन—जैकब—जॉकी—जानोस्

खेतिहर मजदूर और एक परिवार का मुखिया,

\+ \+ \+

"मारित्ज़, तुम रो क्यों रहे हो?" त्रायन ने ज्यों ही उसकी अर्ज़ी पढ़ कर समाप्त की, पूछा।

"मैं रो नहीं रहा हूँ।"

"लेकिन मुझे तुम्हारी आँखों में आँसू दिखाई देते हैं?"

"मैं नहीं जानता कि क्यों।"

"क्या तुम यह अर्ज़ी भेजने से डरते हो?" त्रायन ने पूछा। "जो कुछ मैंने लिखा, वह सब क्या सही नहीं है?"

"कारण यह नहीं है कि मैं भय-भीत हूँ," जॉन ने उत्तर दिया, "यह सब सही है।"

"तब तुम क्यों रो रहे हो?"

"मेरे रोने का ठीक यही कारण है," जॉन बोला, "क्योंकि यह अक्षरशः सत्य है।"

१२८

अर्जी के भेजे जाने के दो दिन बाद जॉन मुलाकात के लिए बुलाया गया। ग्रायन ने उसे अपनी कमीज और पाजामा दिया।

"हम जीत गये," वह बोला "हमारी अर्जी का प्रभाव पड़ा है।"

जॉन की आँखें चमक उठीं। वह अभी से अपने आपको मुक्त समझने लगा।

"हम जीत गये। और इस सबके लिए मैं तुम्हारा ऋणी हूँ।" वह बोला। "अर्जी में जो कुछ तुमने लिखा वह सब अक्षरशः सत्य था।"

"डरो मत," ग्रायन बोला, "भयभीत उन्हें होना चाहिए, क्योंकि दोषी वे हैं।"

जॉन मुस्कराता हुआ मुलाकात करने गया। दोपहर को वह लौट आया। ग्रायन दरवाजे पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"कैसी रही?" उसने पूछा, "क्या उन्होंने तुम्हें बताया कि तुम कब रिहा होगे?"

जॉन ने अपनी आँखें जमीन पर गड़ाये रखीं। जब भी कभी उससे कोई प्रश्न पूछा जाता, वह प्रायः रहस्यमय आकृति बना लेता था।

"मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा," उसने कहा। "अभी मैं नहीं कह सकता।"

"तुम झक्की हो क्या?" ग्रायन बोला "क्या हुआ सुनने के लिए मैं यहाँ घण्टों तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा हूँ और तुम केवल यही कह रहे हो कि बाद में कहूँगा।"

जॉन ने दफ़्तर के फर्श पर से सिगरेट के कुछ टोटे उठा लिये थे। उसने अब उन्हें जेब से निकाला। धीरे-धीरे उन्हें उधेड़ा और

तम्बाकू की दो छोटी ढेरियाँ बनाईं, एक अपने लिए और एक त्रायन के लिए। तब उसने कागज के टुकड़े में सिगरेट गोल करनी आरम्भ की।

"मास्टर त्रायन, मैं तुम्हें किसी दूसरे ही समय बताऊँगा।"

"क्या उन्होंने कहा कि वे तुम्हें रिहा नहीं करेंगे?"

"नहीं, उन्होंने यह नहीं कहा।"

"क्या उन्होंने गाली दी?"

जॉन अपनी सिगरेट गोल करता रहा।

"नहीं, उन्होंने गाली नहीं दी।"

"क्या उन्होंने पीटा?"

"नहीं।"

"तब तुम कोई भी बात क्यों नहीं कहते?" त्रायन ने पूछा। "स्पष्ट ही कोई बुरी बात तो नहीं हुई?"

"नहीं, कुछ नहीं," जॉन ने अपनी सिगरेट जलाते हुए उत्तर दिया।

"क्या तुम्हारी बारी नहीं आई?" त्रायन ने पूछा। "इसकी परवाह नहीं। वे तुम्हें कल बुला लेंगे।"

"मेरी बारी आई।"

"क्या उन्होंने प्रश्न पूछे?"

"हाँ।"

जॉन की जिह्वा जैसे पथरा गई थी। एक-एक शब्द उससे जबर्दस्ती निकालना पड़ रहा था। त्रायन बेसब्र हो उठा।

"जो कुछ उन्होंने पूछा मुझे वह सब बताओ," वह बोला। "जब तुम अन्दर गये ठीक उस समय से आरम्भ करो।"

"पहले मैं भीतर गया," जॉन बोला। "जब मैं दफ्तर में घुसा तो उसने मुझे बैठने के लिए कहा। मेज के आगे एक कुर्सी रखी थी।"

"कम से कम यह अच्छा आरम्भ है," त्रायन बोला "यदि उन्होंने तुम्हें बैठने के लिए कहा तो यह बड़ा अच्छा चिह्न है। उन्होंने तुम्हारी

फाइल देखी होगी और पता लगा लिया होगा कि तुम निर्दोष हो मैं नहीं समझता कि वे हर किसी को बैठने के लिए कहते हैं। बात जारी रखो।"

"एक सार्जेण्ट ने मुझसे प्रश्न पूछे।"

"क्या वह सभ्य था?"

"हाँ।"

"उसने पहले क्या पूछा?"

"पहले उसने फाइलों को उल्टा-पल्टा," जॉन ने उत्तर दिया। "तब उसने मुझसे पूछा, 'क्या तुम जॉन मारित्ज़ हो?' मैंने उत्तर दिया 'हाँ।' उसने मेरी ओर देखा और फिर दुबारा फाइलों की ओर देखा और पूछा: तुम मॉरित्ज़ किस तरह लिखते हो?, हलन्त 'त' के साथ अथवा 'त' 'ज' के साथ?' मैंने उसे बताया कि मैं दोनों तरह लिखता हूँ। रूमानिया में 'त' के साथ और जर्मनी में 'त' 'ज' के साथ।"

जॉन रुक गया। उसने त्रायन की आँखों में निराशा से देखा।

"जारी रखो," त्रायन बेसब्री से बोला। "तुम रुक क्यों गये?"

"तब सार्जेन्ट बोला: धन्यवाद। तुम जा सकते हो।"

"क्या इतना ही था?"

"हाँ इतना ही था," जॉन ने कहा।

और तुमने कुछ और कहने की कोशिश नहीं की?" त्रायन बोला।

"जो कुछ मैंने तुम्हें बताया था वह सब तुमने क्यों नहीं कहा?"

"मैंने कोशिश की," जॉन बोला। "लेकिन सार्जेण्ट सुनता ही नहीं था। उसने मेरी ओर देखा तक नहीं और बोला: 'दूसरे आदमी को बुलाओ।"

"और तुमने क्या कहा?"

"कुछ नहीं!"

"कितनी बेहूदा बात है," अपने हाथों से अपना चेहरा ढकते हुए त्रायन बोला। "कितनी एकदम बेहूदा बात। और तुम चले आए?"

"हाँ, मैं चला आया।"

"और जिस मुलाकात के लिए हम वर्ष भर तक इस जेल में प्रतीक्षा करते रहे वह यही थी ?" त्रायन बोला। "क्या और कुछ नहीं था ? एकदम कुछ नहीं ? शायद तुम कुछ भूल गये हो।"

"और एकदम कुछ नहीं," जॉन बोला "मैं बाहर चला आया। जैसे मैंने अपने पीछे दरवाजा बन्द किया मेरा हाथ काँप रहा था। उन्होंने दूसरे आदमी को बुलाया। यह थॉमस मैन्न था।

"उससे उन्होंने क्या पूछा ?"

"उससे उन्होंने पूछा कि वह 'मैन्न' को एक न से लिखता है अथवा दो से।"

"और कुछ नहीं ?"

जॉन के गालों पर दो बड़े-बड़े आँसू ढरक आए। "मारित्ज़ तुम्हें अब अपने आपको भाग्य-भरोसे छोड़ देना चाहिए," त्रायन ने उसे अपने गले लगाते हुए कहा। "एक बार श्वेत खरगोशों के मर जाने पर फिर कोई दूसरा रास्ता नहीं है।"

१२६

अर्जी सं० ५, विषय : न्याय

(मुलाकातों का मशीनीकरण)

मैं जानता हूँ कि तुम्हें कैम्प के कैदी से एक-एक करके प्रश्न पूछने की आज्ञा मिली है। इस आज्ञा का स्पष्ट ही कुछ भी अर्थ नहीं। जब सभी कैदियों को मशीन की तरह एक साथ पकड़ा गया है तो उनसे एक-एक करके मुलाकात करना बिलकुल बेहूदा है।

जो हो जिस कारण यह आज्ञा निकाली गई है मैं उसे भली भाँति समझता हूँ। तुम्हारी सभ्यता कभी-कभी देशी रस्म-रिवाजों के प्रति

शालीनता का व्यवहार करने में समर्थ है। यह दिखावे और ऊपरी सद्-व्यवहार के हित में एक प्रकार की छूट है।

तुम्हारे एक अफसर को सौ कैदियों से पूर्वाह्न में, और फिर दूसरे पाँच सौ कैदियों से अपराह्न में मुलाकात करनी पड़ती है। मैंने देखा है कि तुम सभी से एक ही प्रश्न पूछते हो, और उनके उत्तर नहीं सुनते। कोई कैदी क्या कोई काम की बात कह सकता है? कुछ नहीं।

लेकिन प्रश्न पूछने में जितनी सारी शक्ति खर्च होती है उसकी मुझे बड़ी चिन्ता है। एक ही प्रश्न को दिन में एक हजार बार पूछने के लिए महान् प्रयत्न की आवश्यकता होती है। मैं सोचता हूँ कि जिन अफसरों को यह ड्यूटी निभानी पड़ती है उनके जबड़ों तथा ओठों में प्रतिदिन शाम को दर्द होने लगता होगा।

इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि प्रश्नों के रिकार्ड तैयार कर लिए जायँ। तब कार्यपद्धति इस प्रकार रहेगी: जिस अफसर की ड्यूटी है वह डेस्क पर बैठता है। यह उसे करना ही होगा, क्योंकि व्यक्तिगत मुलाकात करने का जो क्रम है यह उसका एक निश्चित हिस्सा है। वह एक बटन को दबाता है जिससे सूई रिकार्ड पर लग जाती है। ज्योंही कैदी अन्दर आता है, रिकार्ड कहता है; "बैठ जाओ।" कैदी बैठ जाता है। रिकार्ड घूमता रहता है। पहला, दूसरा और तीसरा प्रश्न होता है तब रिकार्ड कहता है; "धन्यवाद तुम जा सकते हो?" कैदी उठता है और चल देता है। ठीक उसी क्षण जब वह दरवाजे पर पहुँचता है, रिकार्ड अन्तिम वाक्य का उच्चारण करता है; "दूसरा आदमी आए।" यह मुलाकात का अन्त है। दूसरा आदमी अन्दर आता है। रिकार्ड फिर स्वयं आरम्भ से शुरू करता है। एक ही रिकार्ड से चार-पाँच सौ कैदियों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

इस बीच ऑफिसर अपने डेस्क पर बैठा-बैठा जासूस कहानी पढ़ता रह सकता है। मध्याह्न के समय वह सामान्य रूप से भोजन कर सकता है,

क्योंकि व्यर्थ के दबाव से उसके जबड़ों में किसी प्रकार का दर्द न होगा। यह याद रखने की बात है कि ये मुलाकतें प्रश्न पूछने के लिए की जाती हैं, उनके उत्तर सुनने के लिए नहीं इसलिए यह काम एक मशीन द्वारा हो सकता है। यह हर तरह से तर्कानुकूल है। दिखावटी बातों की रक्षा होनी ही चाहिए किन्तु साथ ही मुलाकात करनेवालों पर भी बहुत दबाव नहीं पड़ना चाहिए। उस पद्धति से न्याय को लाभ ही होगा। सभ्य समाज में न्याय स्वयं संचालित होना चाहिए और वह उसी तरह नहीं होते रहना चाहिए जिस तरह वह बिजली के आविष्कार से होता था था। पृथ्वी पर इतने यांत्रिक आविष्कारों का प्रयोजन ही क्या है, यदि न्याय बिजली के रिकार्डों से लाभ नहीं उठा सकता ?

आपका

साक्षी

१३०

पन्द्रहवाँ कैदी-कैम्प ; डार्मस्टर। ठीक-ठीक दूसरे चौदह कैम्पों ही जैसा। विशेषता यही थी कि इसमें एक गिर्जा था, छोटा और जैसे तैसे बनाया हुआ। त्रायन और जॉन ने अपनी पैदल सैनिकों की टोपी उतारी और अन्दर गये। गिरजा घर तम्बू में था जिसकी वेदिका सुदूर कोने में थी। मूर्तियाँ कोयले और रंगीन चॉक से गत्ते पर बनाई गई थीं। फर्श तक के लिए तख्ते नहीं थे; केवल नंगी धरती थी। रात में वर्षा हुई थी। तम्बू की झालर के नीचे से पानी घुस आया था जिससे मिट्टी गारा बन गई थी।

गिरजे के बीच में ही क्रॉस पर आदमी के आकार की ईसा की एक मूर्ति थी। त्रायन ने इसके सामने घुटने टेके। ईसा गत्ते का बना था।

उसके ताज के काँटे खाने के टीन के डिब्बों की पतली-पतली पत्तियाँ काट कर और उन्हें लपेट कर बनाये गये थे।

त्रायन ने ईसा के हाथों और पार्श्व में मेखें ठोंकने से जो जख़्म हो गये थे उनकी ओर आँख उठाकर देखा। चित्रकार के पास रक्त को चित्रित करने के लिए लाल चॉक नहीं था। जख़्मों की आकृति बनाने के लिए उसने लकीस्ट्राइक सिगरेट के पैकटों में से लाल कागज के छोटे-छोटे टुकड़े निकाल कर चिपका दिये थे। काले अक्षर मिटाये नहीं गये थे और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

"ईसा, मैंने इससे पहले तुम्हें इस बेदर्दी के साथ क्रॉस पर चढ़े नहीं देखा," त्रायन बोला। "मैं अपने जख़्मों के लिए प्रार्थना करने आया था। लेकिन मैं नहीं कर सकता। ईसा, मुझे क्षमा करना यदि पहले मैं तुम्हारे लकीस्ट्राइक जख़्मों के लिए प्रार्थना करूँ जिनसे तुम्हारा पहलू, तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर रक्त-रंजित हैं। वे मेरे रक्त-मांस के जख़्मों से भी अधिक पीड़ा-दायक हैं। मैं पहले तुम्हारे सिर पर रखे खाने की चीजों के टीनों से बने ताज के काँटों के लिए प्रार्थना कर लूँ।"

ईसा के शरीर पर घूमती हुई त्रायन की आँखों ने मुक्तिदाता की छाती पर छापे की स्याही में * बना 'म' अक्षर देखा। यह 'मैन्यु यूनिट' के राशन के डिब्बों का 'म' अक्षर था। इन्हीं पेटियों से क्रॉस पर चढ़े ईसा का शरीर काट कर बनाया गया था। त्रायन ने खड़े होकर ईसा के पैरों का चुम्बन लिया।

"अब मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि मैंने वास्तव में तुम्हारे शरीर का हिस्सा ग्रहण किया है ओ! ईसा हमारे मुक्तिदाता। हमें अनन्त काल तक आशा रूपी मैन्यु देने वाले। स्वामी एक मात्र मेरे मैन्यु-यूनिट, मैंने इतने साफ तौर से पहले कभी नहीं समझा था कि तुम्हारा शरीर

* मैन्यु-यूनिट = भोजन मात्रा।

हमें जीवन-शक्ति देता है। कैदी कलाकार ने गत्ते की 'मेन्यु-यूनिट' पेटियों में से तुम्हारे शरीर को काट निकालने की कैसे कल्पना की? तुम ही अन्त में मेरी दैवत्व की प्यास के भोजन के और स्वतंत्रता के चतुर्मुखी प्रतीक हो।"

त्रायन आनन्द में निमग्न था। उसे अपने चारों ओर की कुछ सुध-बुध नहीं थी। जॉन सिगरेट की डिब्बियों में से निकली चाँदी की पन्नियों से बने हुए देवताओं की ओर देख रहा था और देख रहा था पवित्र मातामरियम की ओर टीन के डिब्बों के सुनहरे डिब्बों को काटकर बनाई गई मालाएँ पहने थी। उसने फादर कोरग की तरह प्रतीत होने वाली संत निकोलस की मूर्ति के सामने क्रास का चिह्न बनाया। तब वह त्रायन के पास आया और ईसा के जख्मों की ओर देखता हुआ वहीं उसके पास घुटनों के बल झुक गया।

"स्वामी," त्रायन बोला, "मैं यह नहीं चाहता कि मेरे ओठों से यह प्याला दूर हो जाय। मैं जानता हूँ कि यह असम्भव है। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरे सहायक हों कि मैं इस प्याले को पी सकूँ! एक वर्ष तक मैं इस प्याले को ओठों के समीप लिये रहा। एक वर्ष तक मैं जीवन और मृत्यु की सीमा पर झूलता रहा; एक वर्ष तक मैं स्वप्नों और वास्तविकता के बीच खड़ा रहा। मेरा अस्तित्व समय से परे है, तो भी मैं जी रहा हूँ। मेरे शरीर के रंध्र में से जीवन निकल चुका है, और मुझ में कुछ भी शेष नहीं रहा। तो भी मैं साँस लेता हूँ और भोजन तथा पानी से शरीर को बनाये रखकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान घसीटता रहा हूँ। मेरी कुछ भी खाने-पीने की इच्छा नहीं रही।

"और यह सारा कष्ट मेरे भाग्य में केवल इसलिए है, क्योंकि मैं यह नहीं समझ सकता कि मैं एक कैदी हूँ, अथवा एक स्वतंत्र आदमी हूँ। मैं देखता हूँ कि मैं कैद में हूँ; और तो भी मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि मैं कैद में हूँ। मैं देखता हूँ कि मैं स्वतंत्र नहीं हूँ और तो

भी मेरा मन मुझे कहता है कि कोई ऐसा कारण नहीं है कि मैं स्वतंत्र क्यों न होऊँ ! समझ न सकने की यंत्रणा. गुलामी के कष्ट से कहीं अधिक दुःसह है ।

"जिन लोगों ने मुझे कैद किया है, उन्हें मुझसे कोई घृणा नहीं है, न वे मुझे दण्डित करना चाहते हैं और न मेरी मृत्यु । वे केवल संसार की रक्षा करना चाहते हैं । तो भी वे मुझे धीमी आँच पर जला कर यंत्रणा दे रहे हैं और मारे डाल रहे हैं । वे सारी मानवता को धीरे-धीरे ग्रस्त कर रहे हैं मृत्यु की ओर ले जा रहे हैं । मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं अकेला नहीं हूँ"

"संसार के शासक स्वतंत्रता के बारे में सुन्दर-सुन्दर बातें कहते हैं । मैं जानता हूँ कि जब वे मनुष्य मात्र के लिए स्वतंत्रता की खोज की बात करते हैं, तो वे झूठ नहीं बोलते । तो भी, स्वतंत्रता और स्वतंत्रता की लड़ाई की बात करते हुए भी वे जेलों का निर्माण करते हैं । पृथ्वी जेलों से भरी है । उनकी वाणी में कल्याण है लेकिन जब वे आदमी के माँस के सम्पर्क में आते हैं, तो जहरीले तीर की तरह उनका स्पर्श प्राणघातक सिद्ध होता है ।

"संसार के शासकों ने आदमी के जख्मों की चिकित्सा करने के लिए बड़े-बड़े अस्पतालों का निर्माण आरम्भ किया है । लेकिन जिन ईंटों को वे बना रहे हैं उनसे अस्पतालों की बजाय जेल खाने ही बन रहे हैं ।

"उन पर शैतान का जादू चल गया प्रतीत होता है ।

"यह सब मेरी समझ में नहीं आता ।"

"इसीलिए मैं मरना चाहता हूँ । स्वामी, मेरी सहायता करें कि मैं मर सकूं ।

"यह घड़ी मेरे लिए अत्यंत दुस्सह है । यह मेरी शक्ति और सहन शक्ति से परे है ।

"यह वर्तमान घड़ी जीवन की घड़ी नहीं है। मैं अपने रक्त-मांस के साथ इसमें से नहीं गुजर सकता। यह पच्चीसवाँ घण्टा है, और अब मुक्ति का भी समय नहीं रहा, जीने का भी समय नहीं रहा, मरने का भी समय नहीं रहा। अब बहुत-बहुत देर हो गई।

"स्वामी मैं किसी तरह चट्टान बन जाऊँ। लेकिन मैं जैसा हूँ वैसा .ही न रहूँ।

"यदि तुम मुझे अब छोड़ दोगे,मैं अब मर भी नहीं सकूँगा। देखो, मेरा शरीर और मेरी अन्तरात्मा मृत है, तो भी मैं जी रहा हूँ। संसार मृत है तो भी जी रहा है। हम न जीते हैं न मरे ही हैं।"

आयन ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। जॉन ने धीरे से उसका कन्धा थपथपाया। लेकिन उसे कुछ पता नहीं लगा।

गिरजे में एक पादरी आया। उसकी वर्दी अमरीकी सैनिक वर्दी थी और उस पर दूसरे सभी कैदियों की तरह 'पी' 'ओ' 'डबल्यू' अंकित था। जॉन उसके समीप गया और उसकेहाथ चूम लिये। आयन अभी सूली पर चढ़े ईसा के सामने घुटने टेके था।

पादरी ने जॉन से पूछा कि वे कहाँ से आए हैं और किस जाति के हैं। जब उसने सुना कि आयन की स्त्री भी कैद की गई है, उसने अपने दोनों हाथ अपनी छाती पर रखे और उनके लिए प्रार्थना की। तब उसने आयन को आशीर्वाद दिया जो अभी भी उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ था।

"हम प्रतिदिन शाम के छः बजे यहाँ पूजा करते हैं," पादरी बोला; "मैं वार्सा का प्रधान पादरी हूँ मेरी पादरियों की सभा यहीं मेरे साथ है। हम सभी पकड़े गये थे। पूजा बहुत बढ़िया होती है। अवश्य आना। एक रूमानिया का पादरी भी है जो कभी-कभी विशेष पूजा करता है। लेकिन इस समय वह अस्पताल में है।"

जॉन ने प्रधान पादरी की ओर बड़े ध्यान से देखा।

"मैं उसे अस्पताल में कहला भेजूँगा," प्रधान पादरी ने कहा। "जब वह सुनेगा कि यहाँ कुछ रूमानियावासी भी हैं तो वह आएगा और तुम्हें अपना आशीर्वाद देगा।"

१३१

छः बजे पादरियों की मण्डली ने शाम की पूजा आरम्भ की। उन सब ने सैनिक वर्दी के ऊपर अपना पादरी का वस्त्र-विशेष डाल रखा था।

त्रायन और जॉन एक दूसरे के पास खड़े थे। प्रधान पादरी ने अपना चोगा और लम्बी टोपी पहन रखी थी। प्रायः जो मूल्यवान् पत्थर उनमें जड़े रहते हैं, वे नहीं थे। अपनी कोमलता के कारण प्रधान पादरी का स्वर वायलिन की याद दिलाता था।

त्रायन वेदिका तक आगे बढ़ा; लेकिन ज्योंही वह सूली पर चढ़ी ईसा की मूर्ति के समीप पहुँचा वह यकायक जमीन पर आ रहा। जॉन ने सोचा कि त्रायन का पाँव चूक गया और वह फिसल पड़ा। वह उसकी सहायता करने के लिए दौड़ा। लेकिन ऐसा लगता था मानों त्रायन का जिस्म एकदम मुलायम पड़ गया हो, मानों उसके शरीर की सारी हड्डियाँ घुल गई हों। उसके गाल मोम के रंग के हो गये थे।

पादरियों के अतिरिक्त, उस तम्बू के गिरजेघर में कोई नहीं था। जॉन ने उनकी ओर सहायता के लिए देखा उस समय वह समझ नहीं सका कि त्रायन क्यों बेहोश हो गया।

जॉन के मुँह से इतना ही निकल सका कि "फादर कोरग" वह पादरी के सामने घुटनों पर गिर पड़ा मानों उसके पाँव चूमने के लिए।

लेकिन फादर कोरग की टाँगें अब जाती रही थीं। वह बैसाखी के सहारे उन तक पहुँचा था।

त्रायन और जॉन मूर्तिवत् खड़े थे।

पादरी के केश पहले से भी अधिक श्वेत हो गये थे। अनन्त करुणा और प्रसन्नता से वह मुस्करा रहा था। उसकी आँखों और मुस्कराहट में एक प्रकार की स्वर्गीय झलक चमक रही थी।

"मेरे प्यारे बेटे त्रायन!" फादर कोरग के मुँह से निकला, लेकिन ज्योंही वह झुका उसकी बगल के नीचे से एक बैसाखी खिसक कर जमीन पर गिर पड़ी। उसने दूसरी बैसाखी के सहारे अपने आपको सँभाला।

तब उसने जानबूझ कर, उसकी दूसरी बैसाखी को भी गिरा दिया। उसकी टाँगों का जो कुछ शेष था वह उसी पर त्रायन के पास तीर की तरह सीधा खड़ा था। उसने अपनी बैसाखियों को गिर जाने दिया था ताकि उसके हाथ मुक्त होकर अपने पुत्र का आलिंगन कर सकें।

जॉन ने बैसाखियाँ उठाई और फादर कोरग तथा त्रायन के पास लिये खड़ा रहा।

१३२

जॉन, फादर कोरग और त्रायन इस समय डरमस्टट के कैम्प में इकट्ठे रहते थे।

पूरे एक वर्ष के विलम्ब के बाद कैदियों को अपनी डाक प्राप्त करने की अनुमति मिली थी। पहली चिट्ठी जॉन को मिली थी।

हिल्दा की माँ ने लिखा :

"प्रिय हंस,

६ मई, १६४५ को तुम्हारा घर जला दिया गया था। मैं जानती हूँ कि तुमने इसके बारे में नहीं सुना। जब रूसी सैनिक नगर में बढ़े चले आ रहे थे तभी अपराह्न के समय उसमें आग लगी। तब हिल्दा और फ्रांज़ घर में थे। पहले चन्द सप्ताहों में तो मुझे यह पता ही नहीं लगा कि वे जीते जल मरे। लेकिन एक दिन जब मैं मलबे में यूँ ही इधर-उधर खोज रही थी कि शायद कोई चीज आग से बची रह गई हो, मुझे उनकी कोयला बनी लाशें मिलीं। हिल्दा बच्चे को गोद में लिये मर गई। मैं नहीं जानती कि ज्योंही घर में आग लगी वह क्यों भाग नहीं खड़ी हुई। वह सोती रही होगी। मुझे यह विश्वास करना बड़ा कठिन मालूम देता है कि वह उस समय और विशेष रूप से उस दिन जब रूसी नगर में घुस आए, सोती पड़ी रही होगी। हर कोई भाग गया था, खास कर औरतें। और जैसा तुम जानते हो हिल्दा अपराह्न में कभी नहीं सोती थी। लँच के बाद जब वह अस्पताल से लौटती सीधा घर के काम-काज में लग जाती।

"मैंने उनकी कोयला बनी हड्डियाँ इकट्ठी कीं और उन्हें एक ही शव-पेटी में अपने श्मशान में दफना दिया मैं दो अलग-अलग दो शव-पेटियों की व्यवस्था नहीं कर सकी; क्योंकि वे बड़ी कीमती हैं और उन्हें कोई बनाना नहीं चाहता। आजकल यहाँ लोग शव-पेटियों के बिना ही अपने मुर्दों को दफना रहे हैं। कीलों की तो बात ही क्या, तख्ते तक नहीं मिलते मुझे दीवारों और तसवीरों के चौखटों से कीलें निकाल कर हिल्दा की शव-पेटी के लिए बढ़ई को देनी पड़ीं। तब भी वह बनाने को तैयार न था। उसका कहना था कि शव-पेटी के लिए कीलें बहुत पतली और बहुत छोटी हैं। मैंने उसे प्रेरित करने के लिए तुम्हारी टोपियों में से एक टोपी दे दी। कृपया बुरा न मानना कि इसके लिए मैंने तुमसे पहले पूछा नहीं, बिना टोपी दिये और वह किसी तरह शव-पेटी बनाने के लिए तैयार ही न होता था। उनकी हड्डियों को किसी न

किसी तरह दफनाना ही था। जैसी स्थिति थी उसमें मुझे पूरे एक सप्ताह तक उन्हें घर में रखना पड़ा। मैंने लकड़ी का क्रॉस भी बनवा लिया था। जब तुम आओगे तो पत्थर का एक क्रॉस बना सकोगे। श्मशान में हमारे सारे परिवार के पत्थर के सुन्दर क्रॉस हैं।

तुम्हारे घर के खण्डहरों में उन्हें एक अफसर की लाश मिली है, एकदम कोयला बनी हुई। वह उनमें से कोई एक होगा जो आतिथ्य-खोजते थे अथवा अपनी सैनिक वर्दी उतार असैनिक कपड़े पहनने आते थे। रूसियों के आने पर हमारे सभी अफसरों और आदमियों ने यही किया। वह नगर के खर्चे पर हमारे श्मशान में दफनाया गया। उसकी चिट्ठियों के केस में जो पूरी तरह नष्ट नहीं हुआ था, मुझे उसके कागज-पत्र मिले। उसका नाम जरगू जॉर्डन है, और वह तुम्हारी ही तरह रूमानिया का रहनेवाला रहा। मैंने सोचा कि मैं तुमसे इसका जिक्र कर दूँ, क्योंकि हो सकता है कि वह तुम्हारा कोई दोस्त अथवा संबधी हो जो तुमसे मिलने आया हो।"

१३३

"शायद यह सब अच्छे के लिए हुआ है," फादर कोरग बोला। उसने जॉन के कन्धे पर अपना हाथ रखा और उसे सान्त्वना देने लगा। "मान लो, हिल्दा जीवित होती और तुमएक दिन रिहा हो जाते, तुम्हें यह पता ही न चलता कि कहाँ जाओ? तुम्हें एक औरत को छोड़ कर दूसरी के पास वापिस जाना होता।"

"तो क्या तब सुसाना ने मुझे तलाक नहीं दिया है?" जॉन बोला। यह पहली बार था कि जॉन ने सुना था कि सुसाना उसके प्रति वफादार रहा है।

"और क्या वह अब भी मेरी प्रतीक्षा कर रही है?"

"सुसाना तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है और जीवन के अन्तिम दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहेगी," पादरी ने उत्तर दिया। "वह अभी भी तुम्हारी पत्नी है। उसने परिस्थिति से मजबूर होकर तलाक-पत्र पर हस्ताक्षर किये, ताकि वह अपने बच्चों सहित सड़क पर न डाल दी जाय और घर में बनी रह सके। उसने हताश होकर यह सब किया। लेकिन उसने कभी एक क्षण के लिए भी अपने को तुमसे कानूनी तौर पर पृथक् नहीं माना।"

"तो यह सारा तलाक एक जालसाजी थी।" जॉन बोला "और मैंने एक मूर्ख की भाँति यह समझ लिया कि सुसाना ने दूसरे आदमी से शादी कर ली है। यही कारण है कि मैंने हिल्दा से शादी की। मैंने समझा कि सुसाना ने मुझे छोड़ दिया। मैं यह कैसे विश्वास न करता जब मैंने स्वयं अपनी आँखों से तलाक-पत्र पढ़ा था? लेकिन मैं जानता हूँ कि मैंने एक बड़ा पाप किया। परमात्मा मुझे कभी क्षमा नहीं करेगा।"

"तुम्हारा यह पाप क्षमा कर दिया जायगा," पादरी ने कहा "मारित्ज, जो कुछ हुआ है वह बड़ी ही गम्भीर बात है। लेकिन इसमें न सुसाना ही दोषी है और न तुम ही दोषी हो। सारा दोष राज्य और कानून का है और राज्य क्षमा नहीं किया जायगा। परमात्मा इसे दण्डित करेगा ठीक वैसे ही जैसे उसने सोदोम और गोमोराह को दण्डित किया। न केवल खास तौर पर एक हमारे राज्य पर किन्तु अपने पापों के कारण इस सभ्यता के सभी राज्यों पर विपत्ति आएगी। पाप परमात्मा को पुकार रहे हैं।"

१३४

आयन अपनी पहली मुलाकात के लिए बुलाया गया।

"क्या तुम मुझे यह बताने की कोशिश करते हो, कि तुम नहीं जानते कि तुम्हें पकड़ा गया है ? और एक वर्ष से अधिक तुम क्यों कैद हो ?" अफसर ने प्रश्न किया। "यहाँ पच्चीस हजार कैदी हैं, और उनमें से कोई एक भी यह स्वीकार नहीं करता कि वह जानता है कि वह क्यों पकड़ा गया है। तुममें से हर कोई यही कहता है कि हमने योरप में अँधाधुन्ध गिरफ़ारी की, लेकिन तुम गलती पर हो। हर गिरफ़ारी एक निश्चित कानून के अनुसार हुई है।"

त्रायन मुस्कराया। अफसर ने उसकी मुस्कराहट बीच में ही रोक दी।

"क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि हमारे कानून न्याय के सनातन सिद्धान्तों से मेल नहीं खाते ? मैं रोज यह आलोचना सुनता हूँ। जिन कानूनों के अनुसार तुम्हारी गिरफ़ारी हुई है उन कानूनों के बारे में तुम सब लोग जो यह निन्दा करते रहते हो कि उनमें न कोई तत्त्व है और, सर्व-व्यापकता है, यह सर्वथा उपहासास्पद है। पहली बात तो यह है कि हर देश का यह अधिकार है कि वह जैसे चाहे, कानून पास करे और उनके अनुसार अपना शासन चलाए। हमारे अपने देश में हमारे अपने बनाए हुए कानून एकमात्र हमारी चीज हैं। दूसरे न्याय में कोई सनातन सिद्धान्त नहीं हैं। न्याय मनुष्य-निर्मित है और कोई भी मानवी चीज सनातन नहीं हो सकती। इस महान् विश्व में एक कानून उतना ही अच्छा या बुरा है जितना दूसरा। सभी कानून समानरूप से और एक ही साथ क्षणिक तथा नित्य दोनों हैं। इससे विरुद्ध मत रखना आत्मवंचना है।

"इस समय अमरीकी अधिकार-क्षेत्र में जो कानून लागू हैं, उनके अनुसार तुम शत्रु देश के एक अफसर की हैसियत से गिरफ़ार किये गये हो। यह कानून है। तुम्हारी पत्नी भी इसी कानून के अनुसार पकड़ी गई है जिसमें लिखा है कि ऊँचे ओहदे के शत्रु अफसरों की पत्नियाँ

अपने-आप पकड़ी मान ली जायँगी। इसके साथ तुम्हारा पिता भी शत्रु राज्य के एक अफसर की हैसियत से अपने-आप गिरफ्तार हुआ है।

"मैं यह स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ, कि यह तुम्हें कठोर लग सकता है, किन्तु कानून यही है। इतिहास में कानून सदैव कठोर रहे हैं, आखिर तुम हमसे यह आशा तो नहीं कर सकते थे कि कानून बनाते समय हम तुम्हारी मंजूरी ले लेते। अथवा क्या तुम ऐसी आशा कर सकते थे?"

त्रायन उठ खड़ा हुआ। वह चल देना चाहता था। जिस समय उसने 'पच्चीसवाँ घण्टा' लिखना आरम्भ किया, वह जानता था कि एक समय आयगा कि जब ऐसे कानून बनेंगे कि आदमी अपना निजी जीवन जीने के अधिकार से वंचित कर दिये जायेंगे। अपनी गिरफ्तारी के समय उसे दूसरा अन्दाजा लगा था कि इस प्रकार के कानून लागू हो गये हैं। लेकिन उसके मन में एक अस्पष्ट आशा थी कि वह गलती पर है।

अब उसे इस बात का सरकारी प्रमाण मिल गया था कि यह कानून बड़ी कठोरता के साथ लागू किये जा रहे हैं और सर्वत्र सम्मानित हैं। अब इसमें कोई गलती सम्भव नहीं है। जिन आदमियों ने कोई अपराध नहीं किया वे कानूनी तौर पर पकड़े जा रहे थे, उन्हें यंत्रणा दी जा रही थी, भूखे मारे जा रहे थे, नंगे किये जा रहे थे और नष्ट कर डाले जा रहे थे।

"मैं जानता हूँ कि व्यक्तिगत तौर पर तुम अपराधी नहीं हो," अफसर बोला। "मैंने तुम्हारी पत्नी की, और तुम्हारे पिता की रिहाई के लिए पाँच प्रार्थना-पत्र पहले से मँगवा भेजे हैं। इस बात के बावजूद कि सरकारी तौर पर हमें अपने-आप पकड़े गये कैदियों की

व्यक्तिगत मुक्ति के लिए प्रार्थना करने का अधिकार नहीं है। मेरे पास कोई भी उत्तर नहीं आया। व्यक्तियों को रिहाई की आज्ञा नहीं मिल सकती, वह केवल व्यक्तियों के वर्गों को ही मिल सकता है।"

"क्या व्यक्ति का अपराधी अथवा निरापराधी होना बिलकुल तुम्हारी दिलचस्पी का विषय नहीं है?" त्रायन ने पूछा,"केवल जिज्ञासा की दृष्टि से भी नहीं?"

"नहीं, इस पहलू में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम एक शिक्षित आदमी हो। चाहे यह बात तुम्हारे व्यक्तिगत, सैद्धान्तिक, ललितकला-संबंधी और मानवता-वादी संस्कारों पर कितनी ही चोट करे, मैं इस विषय में कुछ नहीं कर सकता। जो हो, मैं विद्यमान आज्ञा में किसी प्रकार का परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं समझता। सम्भव है कि हमारी पद्धति शुष्क हो, शास्त्रीय हो और गणित-प्रधान हो, किन्तु यह न्याय है। सारा विश्व गणित के अनुसार चलता है, और किसी के दिमाग में यह बात नहीं आती कि उसके पथ अथवा दिशा को बदले।"

"तो आपने मुझे मुलाकात करने का जो अवसर दिया है उसमें आपकी कोई दिलचस्पी नहीं है? यह अवसर न भी दिया होता तो भी भी बराबर था।" त्रायन ने पूछा। "क्या व्यक्ति-संबंधी किसी भी बात में तुम्हारी दिलचस्पी नहीं है?"

"कुछ नहीं," अफसर ने कहा,"हम एक व्यक्ति से जो कुछ जानना चाहते हैं, वह उसके संबंध में निजी जानकारी है अर्थात् उसका पूरा नाम पैदा होने की तिथि और स्थान, पेशा इत्यादि। यह सारी बातें नोट कर ली जायँगी और हमारी फाइलों तथा साख्यकी में, कार्डों के हिसाब से विभक्त की जायँगी।

"यथार्थ बात यह है कि व्यक्तिगत मुलाकातें जानकारी की जाँच करने के लिए ही की जाती हैं, जिससे हम कैदियों का ठीक ठीक

वर्गीकरण कर सकें। सतत कैद अथवा रिहाई की आशायें इसके बाद वर्गों के हिसाब से ही दी जाती हैं। हमारा काम हर किसी को उसके ठीक वर्ग में रख देना भर है। यह गणित-प्रधान यथार्थ नाप-जोख का काम है।"

"क्या तुम्हें यह बात अमानवीय नहीं लगती कि आदमी का आदमी के तौर पर एकदम विचार न किया जाय और उसके साथ केवल एक वर्ग के एक अंश का ही व्यवहार किया जाय?"

"नहीं, मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे यह अमानवीय लगती है," अफसर ने उत्तर दिया। "यह पद्धति व्यवहारिक है। जल्दी काम करती है और सबसे बड़ी बात यह है कि निष्पक्ष है। इस पद्धति से न्याय को लाभ ही लाभ है। न्याय ने गणित और पदार्थ-विज्ञान के तरीके अपना लिये हैं, अर्थात् जितने भी हो सकते हैं उतने निश्चित और ठीक तरीके। केवल कवि और कल्पना जगत् में विचरनेवाले दूसरे लोग ही आपत्ति करते हैं।

"लेकिन आधुनिक समाज ने कविता और अध्यात्मवाद को समाप्त कर दिया है। अब हम गणित और यथार्थ विज्ञान के युग में से गुजर रहे हैं। और हम भावनाओं के वशीभूत होकर घड़ी की सुई को पीछे नहीं घुमा सकते। और यह भावना कवियों तथा रहस्यवादियों का आविष्कार मात्र है।"

अफसर ने इस बात का संकेत कर दिया कि मुलाकात समाप्त हो गई।

"इस विषय में बहुत चिन्ता न करो," वह बोला।

त्रायन ने दरवाजा खोला। उसने सुना कि जिस अफसर ने उससे मुलाकात की थी, बड़े ही शान्त स्वर में कह रहा है—'दूसरा आदमी'।

१३५

जॉन भाग निकलना चाहता था। जबसे उसे पता लगा था कि सुसाना ने उसे तलाक नहीं दिया और बच्चों के साथ भक्ति-सहित उसकी प्रतीक्षा कर रही है, जॉन का मन अशान्त था।

"यह प्रयत्न करने जैसी चीज भी नहीं है," त्रायन बोला। "जिस क्षण तुम काँटेदार तार के समीप हुए, पोलैण्डवासी तुम्हें गोली मार देंगे।"

"जॉन ने नीली अमरीकी वर्दियाँ पहने हुए पोलैण्डवासी सन्तरियों की ओर देखा। उनकी आँखें उस पर टिकी थीं मानों उन्हें उसके विचारों का पता लग गया हो और उनकी बन्दूकें तैयार थीं।

"और यदि कोई चमत्कार हो गया और पोलैण्डवासियों से तुम बच गये," त्रायन ने अपना कथन जारी रखा तो अमरीकी अथवा जर्मन पहरेदार तुम्हें धर दबायेंगे। रूमानिया पहुँचने से पहले तुम्हें आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया फ्रांस और हंगरी के पहरेदारों से प्रत्येक सड़क पर निबटना होगा, और यह सब करने पर भी तुम घर न पहुँच पाओगे। वे तुम्हें रास्ते में पकड़ लेंगे। यदि तुम एक जाति की गोलियों से बच निकले तो दूसरी तुम्हें भून देगी। मेरे प्यारे मॉरित्ज़, तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के बीच में, तुम्हारे और तुम्हारे घर के बीच में, संसार की सभी जातियाँ तुम्हारा रास्ता रोकने के लिए, दृढ़तापूर्वक तुम्हारा रास्ता रोकने के लिए सन्नद्ध खड़ी हैं। प्रत्येक मनुष्य और उसके निजी व्यक्तिगत जीवन के बीच अन्तराष्ट्रीय सेना आ खड़ी हुई है। अब आदमी को अपना व्यक्तिगत जीवन व्यतीत करने की आज्ञा नहीं है। यदि वह कोशिश करता है तो उसे गोली मार दी जाती है। ये टैंक, ये मशीनगनें, ये सर्चलाइट और ये काँटेदार तार सब इसीलिए हैं।"

"यह सब होने पर मैं भी भागूँगा ही," जॉन बोला।

मीनार पर खड़े पोलैण्डवासी सन्तरी ने उसकी ओर और भी अधिक ध्यान से देखा।

उस समय दो अमरीकी अफसर परेड के मैदान में दिखाई दिए जो रुग्णालय की ओर बढ़े चले गये। जॉन ने उन्हें जाते देखा।

अकस्मात् बिना दूसरा शब्द बोले, उसने त्रायन का साथ छोड़ा, वह उनकी ओर दौड़ा और रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। अफ़सर रुक गये। क्षण भर के लिए उन्होंने जॉन की ओर देखा और जॉन ने उनकी ओर, तब उन अफसरों में से एक ने जो प्रौढ़ था और मोटा भी था जॉन का आलिंगन कर लिया। कैदी आश्चर्य के मारे चारों ओर इकट्ठे हो गये। उन्होंने कभी किसी अमरीकी अफ़सर को किसी कैदी को गले लगाते नहीं देखा था।

जॉन अमरीकी अफसर के साथ-साथ रुग्णालय की ओर हो लिया। अफसर का हाथ अभी भी उसके गले में था। ये सब उस इमारत में इकट्ठे दाखिल हुए।

त्रायन रुग्णालय तक गया, और यह जानने के लिए कि क्या हुआ, दर्वाजे पर प्रतीक्षा करता रहा। उसे आशा थी कि जॉन लौट कर आएगा और उसे सारा हाल सुनाएगा। किन्तु जॉन को आने में विलम्ब हो रहा था।

कुछ देर के बाद त्रायन को जॉन की आवाज सुनाई दी। उसने रुग्णालय के दफ़्तर की खिड़की में से अपना सिर बाहर निकाल रखा था। उसकी काली-काली आँखें उत्साह से चमक रही थीं।

"अमरीकी अफ़सर मेरा मित्र डा० अब्रमोविचि है," वह बोला "मैंने उसे तुरन्त पहचान लिया। मैं इसी के साथ रूमानिया से भागा था। अब मुझे रिहा होने का पूरा विश्वास है।"

उसने खिड़की बन्द कर दी। उसके मित्र ने उसे बातचीत करने के लिए भीतर बुला लिया था।

१३६

रूमानिया में और हंगरी में जॉन डा० अब्रमोविचि के साथ हमेशा यहूदी में बात करता रहा और अब भी वे यहूदी में बोले। सैनिक मेडिकल सर्विस का लेफ्टिनेन्ट अब्रमोविचि जॉन से मिल कर हृदय से प्रसन्न हुआ और उसने उसके हर शब्द को ध्यान से सुना।

जिस दिन वे पृथक् हुए थे, उस दिन से जो-जो हुआ था, जॉन ने वह सब कुछ सुनाया। डा० अब्रमोविचि ने सहानुभूति से अपना सिर हिलाया। विशेष रूप से जब जॉन ने जिन पन्द्रह कैम्पों में वह गत चन्द वर्षों में रहा था, उनकी कष्ट-कहानी सुनाई।

अपनी कलाई पर बँधी सुनहरी घड़ी की ओर देखते हुए डा० अब्रमोविचि बोला—"मुझे अब जाना है। मेरे प्यारे जॉनकी मैं जानता हूँ कि तुम्हें सहायता चाहिये। जो जो चाहिए वह सब मुझे बताओ और मैं मदद करूँगा। मैं इस बात को नहीं भूला हूँ कि हमने एक-दूसरे की संगत में कुछ असुविधाजनक क्षण बिताए हैं।"

उसने उसकी पीठ पर एक प्रेम-भरा थप्पड़ मारा।

"अब मेरे हाथ में शक्ति है," वह बोला "जब कि तुम्हारा भाग्य अभी भी उदय नहीं हुआ है। तुम्हें क्या चाहिए? सिगरेट? खाना? कपड़े? जरा मुझे बतादो कि तुम्हें क्या चाहिये।"

"मैं रिहाई चाहता हूँ," जॉन बोला "मैं अपने स्त्री-बच्चों के पास घर जाना चाहता हूँ।"

"मेरे प्यारे जाँकी, असम्भव चीज मत माँगो," डाक्टर ने खीझ कर कहा—"कोई ऐसी चीज माँगो जो मैं तुम्हें दे सकता हूँ। तुम्हारी रिहाई तो और के साथ अपने-आप ही हो सकती है। तुम्हें इसकी बात सोचनी भी नहीं चाहिए। तुम्हें सहनशील होना चाहिए।"

"लेकिन मैं दोषी नहीं हूँ!" जॉन बोला। "वे मुझे कैद क्यों रखेंगे?"

चिढ़ चले डाक्टर ने उत्तर दिया—तुम्हारे अपराध" और तुम्हारी रिहाई में कोई सम्बन्ध नहीं है। क्या कभी किसी ने यह कहा है कि जॉन मारित्ज़ ने कोई अपराध किया है? मुझे इस बारे में पूरा सन्देह है। मैं तुम्हें जानता हूँ और मैं यह भी जानता हूँ, तुम सज्जन हो। लेकिन एक कैदी के अपराध और उसकी रिहाई में कुछ सम्बन्ध नहीं है। बिलकुल कुछ नहीं। तुम्हारी रिहाई केवल शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा करते रहने से संबंध रखती है।"

"मैं बहुत देर प्रतीक्षा कर चुका।"

"यह तुम्हारा विचार है," डाक्टर बोला। "स्पष्ट है कि तुम अभी भी सरल हृदय किसान हो। क्या तुम समझते हो कि कोई भी पुराना अफसर किसी कैदी को केवल इसलिए रिहा कर सकता है कि कैदी निरपराध है? यदि यह बात हो तो एक रात में सारे कैम्प खाली हो जायँ। उनमें रहने वाला हर नाजी अपनी निर्दोषिता का एकाध प्रमाण गढ़ लेगा। रिहाई केवल फ्रॉंकफोर्ट के हेडक्वार्टर की आज्ञा से ही होती है। वहाँ से कागज-पत्र वाशिंगटन भेजे जाते हैं और फिर वहाँ से स्वीकृति के लिए विजबाडन। एर्लिंगन् में एक खास कमीशन उनकी जाँच करता है और उन्हें बर्लिन भेजता है। रिहाई की आज्ञा बर्लिन से जारी होती है और हीडलबर्ग भेज दी जाती है। जिस समय आज्ञा हीडलबर्ग पहुँचती है, सैकड़ों दफ्तरों की फाइलों में से कार्ड हटा दिया जाता है और तभी तुम्हारी रिहाई सम्भव है। सारी व्यवस्था अत्यंत उलझी हुई और स्वय

संचालित है। हर कैदी का अपना कार्ड है। अमरीकियों के बड़े-बड़े रिकॉर्ड ऑफिस हैं, उतने बड़े जितनी बड़ी कि रास्ते की बैरकें। ज्योंही रिहाई की आज्ञा कार्यवाही के लिए हीडलबर्ग भेजी जाती है, उसी समय वाशिंगटन, स्टगार्ड, ल्युडविग्सबर्ग, म्युनिख, कॉर्नवेस्थीन, पेरिस, बर्लिन और फ्रॉंकफोर्ट के रिकार्ड दफ्तरों से कार्ड अपने-आप हट जाता है। सारे संसार में तुम्हारे नाम की खतौनी है। अमरीका के खुफिया पुलिस के केन्द्रीय कार्यालय में मित्र सेनाओं के जेनरल हेडक्वार्टर में पेरिस के यूरोपीय कमाण्ड में, बर्लिन के कंट्रोल कमीशन में, सभी कैदी कैम्पों और जेलों में अ र सी० आई० सी०, सी० आई० डी; एम० पी०; एस० पी० एस० ओ० एस० के सभी दफ्तरों में—यथार्थ में सभी जगह।

"तुम्हारी हर एक हरकत—चाहे वह एक कैम्प से दूसरे कैम्प में तबादला ही क्यों न हो—इन सभी रिकार्ड ऑफिसों में तुम्हारे कार्ड पर परिवर्तन करके दर्ज की जायगी। क्या तुम्हें यह बात ज्ञात रही है?"

जॉन को लगा कि संसार के हर नगर में उसका नाम लिया जा रहा है, एक महान् विद्युत्-यंत्र द्वारा प्रसारित किया जाता है, पहले प्रकाशित होता है और फिर अंधकार में विलीन हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कैम्प के तारों के जाल के ऊपर लगे सर्चलाइट। अब उसे यह मालूम हुआ कि उसकी हर गति-विधि की फोटो ली जाती है और उस पर प्रकाश की बाढ़ आ जाती है।

"मैं नहीं जानता था।"

"यदि तुम जानते तो तुम कभी मुझसे अपनी रिहाई की बात न करते। इसीलिए मैं तुमसे गुस्से नहीं हूँ। क्या तुम वास्तव में यह विश्वास करते थे कि मैं अकेला तुम्हें इस विशाल जाल में से बाहर निकाल सकता हूँ?"

सैमुअल अब्रमोविच्चि खिलखिला कर हँसने लगा।

"व्यक्तिगत रूप से संयुक्त राज्य का सभापति भी यह नहीं कर सकता," उसने कहा। "तुम्हें केवल अपनी बारी आने तक प्रतीक्षा करनी होगी।"

"लेकिन यदि मैं निर्दोष हूँ तो मुझे काँटेदार तारों के पीछे क्यों रखा जाता है?" जॉन ने पूछा। "इस विशाल यंत्र के पास मेरे विरुद्ध क्या है? मैंने किसी को हानि नहीं पहुँचाई है। सम्भवतः तुम्हारा यह यंत्र चोरों के लिए है, अपराधियों के लिए है और बुराई करने वालों के लिए है।"

"मेरे प्यारे जॉकी, अब वह समय आ गया है कि जब तुम एक ठेठ गँवार की तरह तर्क करना छोड़ दो," डाक्टर बोला। "तुम हर समस्या को, हर चीज को व्यक्तिगत रूप दे देते हो। महान् और सभ्य देशों को व्यक्तियों की निजी समस्याओं से कुछ लेना-देना नहीं है। तुम्हारा अपराधी होना अथवा निर्दोष होना तुम्हारा अपना निजी मामला है। इसमें तुम्हारी पत्नी की, तुम्हारे पड़ोसियों की अथवा गाँव के दूसरे किसानों की दिलचस्पी हो सकती है। केवल ये ही लोग हैं जो अभी भी व्यक्तिगत बातों के लिए हैरान होते हैं। सभ्य देश बड़े पैमाने पर काम करते हैं। व्यक्तिगत बातों को लेकर नहीं चलते।"

"लेकिन मैं गिरफ्तार क्यों किया गया था?"

"हमने वर्गों के अनुसार पूर्व व्यवस्था की पद्धति पर गिरफ्तारी की है। तुम उन वर्गों में से एक में हो। जब भी कभी हम किसी सन्दिग्ध व्यक्ति को पकड़ना चाहते हैं, उदाहरण के लिये किसी युद्धापराधी को, हम जानते हैं कि वह हमारे हाथ में है और हमें उसे ढूँढ़ने के लिये गाँव और जंगल नहीं छानने पड़ते। अत्यधिक समय व्यर्थ चला जायगा। अब ऐसा है कि खतौनी में जो ठीक वर्ण है उस वर्णवाले बटन को दबा देना होता है। और एक आँख के झपके में अपेक्षित व्यक्ति का कार्ड तुम्हारे सामने आ जाता है, जिसमें तमाम बातें रहती है—फोटोग्राफ,

ऊँचाई, वजन, बालों का रंग, जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, दाँतों की संख्या और उसके बारे में जो भी कुछ तुम जानना चाहते हो। तब तुम को इतना ही करना होता है कि माइक्रोफोन लो और जिस कैम्प में अथवा जेल में वह है, उसका ब्योरा रेडियो द्वारा प्रसारित कर दो। कुछ ही घण्टों के बाद वह न्यूरेमबर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों के सामने पहुँच जायगा। यह कितन अद्भुत बात है। यह वैज्ञानिक पद्धित का परिणाम है। सभी कुछ अपने आप होता है। सारा काम बिजली से चलता है। तुम उससे रिहाई की आशा कैसे कर सकते हो? इसका अर्थ होगा तुम्हारी बारी से पहले मुक्त कर देना। यह पागलपन होगा। तुम एक करघे के एक धागे की तरह हो। एक बार यह अन्दर पड़ गया, कोई उसे बाहर नहीं निकाल सकता। तुम्हें तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी जब तक यह धागों के साथ बुना जाकर करघे पर से नहीं उतरता। यह और किसी तरह हो ही नहीं सकता। मशीनें ठीक-ठीक काम करती हैं। तुम्हें उनके साथ सब्र से काम लेना होगा।

"और अब तुम पूर्ण रूप से मशीन में जकड़े गये हो। तुम इससे अपना सिर दे मारो, और जितने चाहो हैरान हो, तुम कभी रिहा नहीं हो सकते। मशीन बहरी है। यह सुनती नहीं, यह देखती नहीं, यह केवल काम करती है। यह प्रशंसनीय योग्यता के साथ काम करती है और सम्पूर्णता के एक ऐसे दर्जे तक पहुँच जाती है, जहाँ तक कोई आदमी पहुँचने की आशा नहीं कर सकता। तुम्हें केवल दीर्घ-काल तक प्रतीक्षा करनी होगी और तुम इस विषय में सर्वथा निश्चित रह सकते हो कि तुम्हारी बारी आयेगी। आदमी की तरह मशीन भूलती नहीं। यह ठीक-ठीक काम करती है। तुम समझते हो?"

जॉन ने अपने कन्धे हिलाये।

"इसका मतलब यह है कि तुम मुझे रिहा कराने के लिये कुछ नहीं कर सकते?"

"अरे भले आदमी, क्या मैंने तुम्हें स्पष्ट नहीं कह दिया कि तुम एकदम मशीन के बीचोंबीच हो और इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता है ?"

"लेकिन यदि तुम मेरे लिए केवल दो शब्द कह दो तो बहुत मदद हो सकती है," जॉन बोला। "सेनापतिगण भी हमारी तरह आदमी हैं। वे समझ लेंगे। शायद जब वे यह सुनेंगे कि मेरे स्त्री है और बच्चे हैं और कि मैंने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई तो भी मुझे वर्षों एक के बाद दूसरे कैम्प में यंत्रणा दी गई है तो शायद वे मुझे छोड़ देंगे।"

"मैं तुम्हें एक सीधी-सी बात कभी नहीं समझा सकता," डॉक्टर ने खीझ कर कहा। "तुम बार-बार हर चीज को निजी और व्यक्तिगत प्रश्न बना लेते हो। तुम अपने आपको तसवीर से बाहर छोड़ ही नहीं सकते। यह आदिम कालिक असभ्य आदमी का लक्षण है। तुम्हारे लिए यह अच्छा होगा कि तुम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए। मुझे जाना है। क्या तुम्हें सिगरेट चाहिये अथवा भोजन चाहिये अथवा कपड़े चाहिये ?"

"मैं न्याय चाहता था," जॉन बोला। "लेकिन मैं जानता हूँ कि समस्त पृथ्वी पर कहीं मानवी न्याय के लिए स्थान नहीं रहा। मैं और कुछ नहीं चाहता।"

मुस्कराते हुए और जॉन के आगे अपना लकी सिगरेटों का पैकेट बढ़ाते हुए डा० अब्रमोविचि बोला—"यह सब होने पर भी तुम एक सिगरेट ले सकते हो मेरे प्यारे जॉकी। आखिरकार हमने साथ-साथ कष्ट भोगा है।"

जॉन ने सिगरेट के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। पैकेट खाली था। डाक्टर ने अपनी जेबें टटोलीं। वहाँ भी उसे एक भी सिगरेट न मिली।

"मेरे प्यारे जान्कल, अगली बार जब मैं आऊँगा तो तुम्हें एक सिगरेट दूँगा," वह बोला। तब वह चल दिया।

१३७

अपनी बैसाखी बगल में दबाये फादर कोरग उस अफसर के सामने बैठा था जो उससे प्रश्न पूछ रहा था।

"यदि तुम न नाजी थे और न उनके सहायक तो तुम जर्मनी में क्या कर रहे थे?" अफसर ने प्रश्न किया। तुम्हारी कथा, कि एक दिन तुम जर्मन अस्पताल में अचानक जागे—बिना यह जाने कि तुम वहाँ कैसे पहुँचे—बच्चों का दिल बहलाने के लिए अच्छी है। इस तरह की घटनाएँ तुम्हारे बलकान की परियों की कथाओं में घट सकती हैं, किन्तु वास्तविक जीवन में नहीं। एक अमरीकी प्रश्न करने वाले अफसर को यह कथा सच्ची लगती ही नहीं। इसमें परियों की कथा की रंगत बहुत ही अधिक है। यदि तुम जर्मनों के मित्र अथवा सहायक नहीं थे तो उन्होंने तुम्हें अपने अस्पताल में क्यों रखा? उन्होंने छ: महीने तक तुम्हारी टाँगों का ऑपरेशन क्यों किया? क्योंकि तुम उनके शत्रु थे? केवल मानवता के दृष्टिकोण से? जर्मन कबसे मानवतावादी बन गये हैं? जर्मन लोग अपने सभी शत्रुओं को कैदी कैम्पों में रखते हैं और उसके बाद उन्हें गैस की कोठरियों में भेज देते हैं। तुम उनके सहायक थे। यही कारण कि उन्होंने तुम्हारी देख-भाल की तुम्हें बड़ा अफसोस होगा कि हिटलर ने लड़ाई नहीं जीती। क्या मैं ठीक हूँ?"

फादर कोरग चुप था। उसका रंग पीला पड़ गया था। भौंहों से पसीने के मनके गिर रहे थे। उसे कुर्सी पर बैठने में कष्ट होता था। जबसे उसकी टाँगों का ऑपरेशन हुआ था, वह केवल कुर्सी पर बैठा

रह सकता था। विशेष यह था कि उसे जोर का बुखार था। वह चाहता था कि मुलाकात यथाशीघ्र समाप्त हो ताकि वह उस कुर्सी से नीचे उतर सके।

"यदि हिटलर ने लड़ाई जीत ली होती, तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती। क्या नहीं?" अफसर कहता गया। यदि वह जीता होता तो हिटलर ने तुम्हें रूमानिया का प्रधान पादरी बना दिया होता। नाजियों की विजय से तुम्हें बड़ी प्रसन्नता न हुई होती?"

"नहीं, मुझे प्रसन्नता न हुई होती, "पादरी ने कहा।

"तो क्या तुम्हें मित्र-सेनाओं के जीतने पर प्रसन्नता हुई?"

"उनसे भी मुझे प्रसन्नता नहीं हुई?"

लेफ्टिनेंट के चेहरे की रौनक जाती रही। पादरी मुस्कराया और बोला :—

"शस्त्रबल की किसी भी विजय मुझे प्रसन्नता नहीं होगी।"

उत्तर देते समय पादरी आफिस की दीवारों पर टँगी तस्वीरों को देखता रहा। उसे वकील जार्ज डमियन, वसील अयोनतोल तथा फन्तना के दूसरे किसानों की याद आई जिन्हें उसके साथ ही साथ मरकु गोल्डन-बर्ग ने गोली मार दी थी और जो अस्तबल के पीछे खाद के गढ़ों में फेंक दिये गये थे। उसे ड्रैस्डन, फ्रांकफर्ट और बर्लिन के बच्चों की लाशों का ध्यान आया, डन्कर्क और स्टालिनग्राद् की लाशों का और उनकी लाशों की कीमत देकर प्राप्त की गई विजय उसे प्रसन्न न कर सकी।

"विजय प्राप्त करने के लिये पृथ्वी निरपराध बच्चों, स्त्रियों और आदमियों की लाशों से पाट दी गई है :

"विजय में भी सौन्दर्य नहीं है,
जो इसे सुन्दर कहता है,
वह वही है जो हत्या में आनन्द मनाता है।
जो हत्या में आनन्द मनाता है,

उसकी संसार पर शासन करने की महत्त्वाकांक्षा कभी पूरी नहीं होगी
जनता की हत्या पर दुःख के आँसू बहाये जाने चाहिये।
विजय-प्राप्ति होने पर श्राद्ध किया जाना चाहिए।"

"यह बहुत बढ़िया कविता है," अफसर बोला, "क्या इसे तुमने लिखा था?"

"यह दो सहस्र वर्ष पूर्व एक चीनी ने लिखी थी।"

"इसे मेरे लिये लिख दो, "अफसर बोला, "मैं इस संयुक्त-राज्य में अपने लोगों के पास भेजना चाहूँगा।"

अफसर अपने परिवार का विचार कर मुस्कराया। यकायक उसकी मुस्कराहट गुस्से में बदल गई। उसने पादरी की ओर सन्दिग्ध दृष्टि से देखा।

"क्या तुम्हें यकीन है कि जो पंक्तियाँ तुमने अभी सुनाईं वह किसी चीनी की ही लिखी हुई हैं?"

"पूरा यकीन है,"पादरी बोलता। "किन्तु यदि तुमने लिखा है तो यह बात गौण है कि उन्हें किसने लिखा है, वे सुन्दर हैं। शेष बात व्यर्थ है।"

"इसके विरुद्ध, इस बात का बड़ा मूल्य है," अफसर ने कहा। "मुझे प्रसन्नता है कि रचयिता चीनी है। चीन संयुक्त-राज्य का सहायक है, मेरे परिवार के लोग बड़े प्रसन्न होंगे। यदि ये पंक्तियाँ किसी शत्रु कवि की लिखी हुई होती तो मैं इन्हें न भेज सकता। कल सुबह तक इसे मेरे लिये नकल कर दो मैं तुम्हें कागज और पैंसिल दे दूँगा। दैव-वाद के अतिरिक्त क्या तुमने कभी कुछ और भी अध्ययन किया है?"

"जो कुछ सीखने का मैं अवकाश निकाल सका, वह मैंने सब कुछ सीखा; और जो भी कुछ मैंने सीखना चाहा।"

"ऐसा नहीं प्रतीत होता कि तुम चीनी जानते हो ? क्या जानते हो ?"

"नहीं।"

"कितने बड़े अफसोस की बात है।" अफसर बोला, "मैं तुमसे चीनी अक्षरों में ही कविता लिखवाता। इससे मेरे परिवार के लोग चकित होंगे। वे निश्चय से मुझसे चीनी अक्षरों की आशा नहीं करते। लेकिन कोई परवाह नहीं। यदि तुम्हें चीनी नहीं आती, तो अँग्रेजी में लिख देना। जिस चीनी ने वह कविता लिखी, उसमें विनोद की भावना है। साथ ही वह मित्र-राज्यों का सहायक है।"

अपने तम्बू में वापिस पहुँचने पर पादरी थकावट के मारे मिट्टी हो गया। जॉन ने उसे बिस्तर पर लेटने में मदद की और उसके सिर पर ठंडी पट्टी रक्खी।

"फादर, क्या उसने तुम्हारी रिहाई के सम्बन्ध में कोई बात की ?"

"कोई नहीं," पादरी का उत्तर था।

"उसने तुमसे क्या पूछा ?"

"उसने मुझे लाओत्से की एक कविता नकल करने को कहा। वह उसे मूल चीनी में चाहता था और उसे काफी क्लेश हुआ जब उसे यह पता लगा कि मैं चीनी वर्ण माला नहीं जानता।"

"क्या सारी मुलाकात इतनी ही बात के लिये थी ?"

"यही सब कुछ था," पादरी ने उत्तर दिया।

१३८

ब्रायन को नोरा की एक चिट्ठी मिली।

जिस लिफाफे पर 'युद्ध-बन्दी' लिखा हुआ था, उसे हाथ में लेते

हुए त्रायन बोला—"मैं जानता था कि नोरा पकड़ी गई है, लेकिन मुझे आशा थी कि इस बीच वह रिहा हो गई होगी। अब मैं और स्वप्नों के संसार में नहीं रह सकता। मैं निश्चित जानता हूँ कि वह हमारी ही तरह कैदी है, हमारी ही तरह के कैदी-कैम्प में रहती है और हमारी ही तरह कष्ट उठाती है। हमारी ही तरह उसे आज्ञायें दी जाती हैं, और एक कैम्प से दूसरे कैम्प भेजा जाता है। हमारी ही तरह उसे काँटेदार तारों के पीछे रखा जाता है और स्वयं-संचालित शस्त्रों से सुसज्जित पोलैण्ड-वासी उस पर पहरा देते हैं। मेरा सारा व्यक्तित्व विद्रोह करता है और अब इसे सहन नहीं कर सकता।"

लिखते समय नोरा को त्रायन का पता ज्ञात न था। उसने लिफाफे पर उसका नाम लिख दिया था और अमरीकी-क्षेत्र के सभी कैदी-कैम्पों के नाम। उसके हाथ लगने से पहले उसका पत्र सभी कैम्प में घूमा होगा।

"वे उसे यह नहीं पता लगने देंगे कि मैं कहाँ था," त्रायन बोला। "और उन्होंने मुझे यह बताने से इनकार किया कि उन्होंने उसे किस कैम्प में रखा।"

सिर पर पट्टी रखे पादरी बिस्तरे पर लेटा था। उसने उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न किया। जॉन पास खड़ा था। त्रायन पर उसके सान्त्वना के शब्दों का कुछ प्रभाव नहीं पड़ा।

खड़े होते हुए त्रायन बोला, "मानवी सहन-शक्ति की एक सीमा है। मैं सोचता हूँ कि मैं उस सीमा पर पहुँच गया हूँ। कोई भी इस सीमा को पार करके जीवित नहीं रह सकता।"

त्रायन तम्बू से बाहर चला गया।

जॉन भयभीत होकर बोला, "मास्टर त्रायन आत्म-हत्या करने जा रहा है।"

पादरी आँखें बन्द किये चित्त लेटा था। उसने जॉन के शब्द नहीं सुने। वह प्रार्थना कर रहा था। वह न केवल आयन और नोरा के लिये प्रार्थना कर रहा था, किन्तु जॉन और दूसरे सभी मानवों के लिये जिन्हें पश्चिमी यान्त्रिक सभ्यता ने उस सीमा पर ला खड़ा किया है, जहाँ से आगे जीवन असम्भव है।

"यदि मास्टर आयन को अकेले रहने दिया गया, तो वह आत्म-हत्या कर लेगा," जॉन बोला।

पादरी ने अपनी आँखें खोलीं। उसने जॉन के हाथों का स्पर्श किया और उसे जाने दिया।

१३६

"मुझे अपना हाथ दो," फादर कोरग बोला। वह पहले की ही तरह अपनी अर्ध-उन्मीलित आँखें लिए लेटा था। उसका माथा पीला पड़ गया था और उसके गालों में रक्त नहीं था। बूढ़े आदमी ने अपने दोनों हाथों में आयन का हाथ ले लिया। एक शब्द नहीं बोला गया। अब दो हाथ और दोनों में एक जैसी गरमी। ऐसा लगता था मानों एक हाथ से दूसरे हाथ में रक्त बह रहा है। उन्हें परस्पर ऐसा सामीप्य अनुभव हुआ जैसा केवल पिता-पुत्र में ही हो सकता है। उनके हृदय एक ही ताल पर धड़कने लग गये। लेकिन पादरी के हृदय की गति मन्द पड़ती जा रही थी।

जॉन ने पादरी से पूछा कि क्या वह पट्टी बदल दे। पादरी ने यह प्रकट करने के लिये अपना सिर हिलाया कि अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। वह मुस्कराया। जॉन बिस्तर के किनारे बैठ गया। पादरी बोला—

"मैंने जीवनाग्नि के सम्मुख दोनों हाथों को गरम किया;
यह डूब रही है, और मैं बिदा ले रहा हूँ।"

"इस क्षण मुझे ऐसा लग रहा है मानो मैं तुम्हारी गरमी से नहीं, किन्तु जीवन की गरमी से अपने हाथों को गरम कर रहा हूँ," पादरी बोला। "तुम भयानक गरमीवाली आग हो, जो कि केवल जीवनाग्नि ही हो सकती है।"

त्रायन ने पिता के हाथ को और भी जोर से पकड़ लिया। वे ठण्डे थे, किन्तु पादरी मुस्करा रहा था।

"मैंने इस पृथ्वी पर दो महान् स्वप्न देखे," वह बोला। "जीते जी अमरीका में पादरी बनना, और मरने पर फन्तना के श्मशान में दफनाया जाना। त्रायन, तुम जगह जानते हो। इसके गिर्द कोई बाड़ा या चारदीवारी नहीं है, यह एक खुले-मैदान की तरह है जिसमें बेहिसाब घास और फूल उगे हैं। वहाँ, मुझे लगता है कि मैं सदैव अत्यन्त शान्तिपूर्वक पड़ा रहता।

"और अब मेरे दोनों स्वप्न सच सिद्ध हुए हैं, किन्तु कितने आश्चर्यजनक तरीके से। मैं कभी अमरीका नहीं गया, किन्तु अमरीका मेरे पास आ गया। मैं इस जेल में जान दूँगा जिसके ऊपर अमरीका का तारागण खचित झण्डा फहरा रहा है।

"मैं फन्तना की श्मशान-भूमि में नहीं दफनाया जाऊँगा, क्योंकि वह श्मशान-भूमि इतनी फैल गई है, कि उसमें सारे यूरोप का समावेश हो गया है।

"फन्तना, रूमानिया और समस्त यूरोप संसार के मानचित्र पर, स्याही के धब्बे की तरह, एक काले धब्बे के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहे। सारा महाद्वीप फन्तना के कब्रिस्तान की ही तरह सुनसान और उजाड़ है। वह समय समीप है, जब सारा संसार हमारी श्मशान-भूमि की तरह एक जंगली बियाबान बन जायगा।

"जहाँ भी कहीं मैं अपने इस महाद्वीप में दफनाया जाऊँगा, मैं यही अनुभव करूँगा कि मैं अपने गाँव के दीवार-रहित कब्रिस्तान में ही दफनाया गया हूँ।

"इतिहास की नाना वञ्चना-पूर्ण गलियाँ हैं,
बनावटी बरामदे,
और अवसर,
मन्द मन्द महत्त्वाकांक्षाओं द्वारा ठगा जाना,
अभिमान को मार्ग-दर्शक मान लेना।
अब सोचो,
जिस समय हमारा ध्यान बटा रहता है,
उस समय इतिहास हमारी कामना पूरी करता है,
किन्तु उस पूर्ति में ऐसी लचीली उलझन रहती है कि तृष्णा ही मर जाती है।
अत्यधिक देर से पूर्ति होती है
जिसमें विश्वास नहीं जगता,
यदि मात्र कल्पना में ही विश्वास जगता है,
तो वह राग की पुनरावृत्ति मात्र होती है।"

"यह सब तुम मुझे क्यों कह रहे हो?" त्राथन बोला। "अच्छा होगा कि तुम विश्राम करो।"

"तुम ठीक हो," पादरी बोला। "लेकिन मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ और भी है। मैं कैसरलिंग को उद्धृत कर रहा हूँ: 'मृत्यु के अतिरिक्त जीवन का कोई बाह्यादर्श नहीं है। हर सच्चा और वास्तविक आदर्श मात्र आध्यात्मिक है।' पाश्चात्य सभ्यता के तन्त्रवादी जीवन पर एक बाह्यादर्श लादने का प्रयत्न करते हैं। जीवन के मूलोच्छेद का यही सब से अच्छा उपाय है। उन्होंने जीवन को कुछ संख्याओं के स्तर पर ला खड़ा किया है। लेकिन, जैसा कि कैसरलिंग का कथन है: 'सांख्यकी निश्चयात्मक तौर पर किसी ऐसे व्यक्ति का ध्यान नहीं रखती

जो अपने ढँग का अनोखा होता है। ज्यों-ज्यों मानवता का विकास होगा, त्यों-त्यों प्रत्येक व्यक्ति को विशेषता अधिकाधिक निर्णयात्मिका होगी।' समकालीन समाज ठीक विरोधी दिशा में जा रहा है। हर चीज सामान्य बना दी जा रही है। 'सामान्यीकरण के प्रयत्न द्वारा तथा सामान्यताओं में ही तमाम जीवन-मूल्यों को खोजने और पाने से, पश्चिम के आदमी की असाधारण को समझने की सारी शक्ति नष्ट हो गई। वह व्यक्ति के जीवन को लेकर चलना भूल गया। इसीलिए समूहीकरण का महान् खतरा है, चाहे रूसी ढंग का हो और चाहे अमरीकी ढंग का।

"और इसलिये यह लगभग अनिवार्य है कि इस समाज का चौखटा चर्रा जाय, जैसा कि तुमने एक शाम फत्तना में कहा था। यान्त्रिक सभ्यता व्यक्तिगत जीवन से बेमेल हो गई है। यह इसका गला घोट रही है और मानवता तुम्हारे उपन्यास के श्वेत खरगोशों की तरह मर रही है।

हम सब इस विषैले वायुमण्डल में विनाश को प्राप्त हो रहे हैं, जिसमें केवल यान्त्रिक-दास, मशीनें और 'नागरिक' ही साँस ले और जीते रह सकते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसा तुम अपनी पुस्तक में वर्णन करने जा रहे थे। इस प्रकार आदमियों ने भगवान् के विरुद्ध महान् पाप किया है। एक्वीना का कथन है: 'यह कहना पर्याप्त नहीं है कि भगवान् की दृष्टि में अन्याय हुआ है। भगवान् हमसे तभी रुष्ट होता है जब हम अपने हित के विरुद्ध काम करते हैं।' इस समय हम अपनी सारी शक्ति अपना अहित करने में खर्च कर रहे हैं, इसलिए भगवान् के विरुद्ध काम कर रहे हैं, यह पतन की पराकाष्ठा है, जिस तक कोई भी समाज पहुँच सकता है। और इसलिये, जिस प्रकार ऐतिहासिक और पूर्व ऐतिहासिक-युग में कई समाज विनाश को प्राप्त हो गये, उसी प्रकार यह समाज भी विलीन हो जायगा।

"लोग एक तर्कानुकूल व्यवस्था द्वारा समाज के उद्धार का प्रयत्न कर रहे हैं, जब कि यह क्रम-बद्धता ही इसके विनाश का कारण होगी। अँगरेज-कवि डब्ल्यू० एच० ऑडन का कथन है:

"हे तर्कानुकूल व्यवस्था में मुक्ति खोजनेवाली आदमी की मूर्खता !

हे सारी एकता की भावना के मूल को नष्ट कर देनेवाली, उसकी स्वाभाविक ऊष्मा को ठण्डा कर देनेवाली आदमी की निर्दयी प्रतिभा ! प्रेम का तेज कम और कम होता चला जा रहा है........."

"इसी बात में पाश्चात्य यान्त्रिक सभ्यता का पाप निहित है। यह जीवित आदमी की हत्या कर डालती है, उसे योजनाओं, सिद्धान्तों तथा सारांशों की बलि चढ़ा देती है। यहाँ हमें प्राचीन मानव-बलिदान का आधुनिक प्रतिरूप मिलता है। जीते-जी जला डालना आदि नहीं रहे, किन्तु उनका स्थान राज्यशाही और सांख्यकी ने ले लिया है। ये दोनों इस युग की मिथ्या धारणायें हैं जिनके शोले मानवी-मांस को जला कर खाक कर देते हैं।

"उदाहरण के लिए जनतन्त्रवाद, सामाजिक संगठन के एक स्वरूप की हैसियत से, समस्त शक्ति किन्हीं एक ही हाथों में रहने के सिद्धान्तों से श्रेष्ठतर है, किन्तु तो भी यह मानवजीवन की केवल सामाजिक नाप-जोख का ही प्रतिनिधित्व करता है। जनतन्त्रवाद को स्वयं अपने में उद्देश्य मान लेना मानव-जीवन को केवल एकपक्षीय बना कर उसकी हत्या कर डालना है। नाजियों और कम्युनिस्टों ने ठीक यही गलती की है।

"जब तक समग्र रूप से इसकी कल्पना नहीं की जा सकती, तब तक मानव-जीवन का कोई अर्थ नहीं। हम इसके अन्तिम उद्देश्य को तभी ग्रहण कर सकते हैं, यदि हम इसके लिए उन सभी इन्द्रियों का उपयोग करें, जो हमें धर्म को समझने और कला को अस्तित्व में लाने अथवा उसकी व्याख्या करने में सहायक होती हैं। जीवन के अन्तिम उद्देश्य

की खोज में तर्क का स्थान गौण है। गणित सांख्यकी और तर्कशास्त्र, मानव-जीवन के समझने और उसके संगठित करने में उतने ही प्रभाव-हीन सिद्ध होते हैं जितने वे मोजर्ट अथवा बिथोवन को समझने ·।

"लेकिन हमारा आधुनिक पश्चिम समाज गणित और गिनती की सहायता से ही बिथोवन और राफेल को समझने का आग्रही है। यह लगातार सांख्यकी की ही सहायता से आदमियों के जीवन को उन्नत बनाने के लिए व्यग्र है।

"यह प्रयत्न उपहासास्पद और साथ ही खेद-जनक है।

"इस पद्धति के अनुसार आदमी जिस ऊँचे से ऊँचे स्थान को प्राप्त कर सकता है, वह सामाजिक सम्पूर्णता का शिखर ही हो सकता है। लेकिन इससे उसकी कुछ सहायता नहीं होगी। एक बार आदमी का जीवन सामाजिक और स्वयं-संचालित अवस्था को प्राप्त हो जाने पर, और सम्पूर्ण रूप से मशीन के नियमों के अधीन हो जाने पर, सर्वथा अभाव को प्राप्त हो जायगा। यह कानून किसी भी परिस्थिति में जीवन को सार्थक नहीं बना सकते। और यदि जीवन का जो अर्थ है—उसका एक मात्र अर्थ जो सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है और जो तर्क से ऊपर और परे है—तो अन्त में स्वयं जीवन ही बुझ जायगा।

"वर्तमान समाज ने पर्याप्त समय से इन सत्यों को तिलांजलि दे दी है, और अब बेतहाशा गति से और निराशा से उत्पन्न शक्ति से नया मार्ग खोज रहा है।

"और यही कारण है कि गुलामों के आँसू राइन, डैन्यूब और वॉल्गा नदी के पानी के साथ बह रहे हैं। ये आँसू योरोप की नदियों तथा संसार भर की सारी नदियों में बाढ़ ला देंगे, यहाँ तक कि विज्ञान और राज्य तथा पूँजी और शासनशाही द्वारा गुलाम बनाये गये लोगों के खारे आँसुओं से तमाम सागर और समुद्र लबालब भर जायेंगे।

"तब अन्त में परमात्मा आदमी पर दया करेगा और जैसा उसने भूतकाल में बार-बार किया है, आदमी को बचा लेगा। और इस बीच वे

मुट्ठी भर आदमी जो मानव बने रहेंगे, पानी की सतह पर तैरते रहेंगे जैसे नूह अपनी नौका में, केवल वे ही गुलामी की जंजीरों द्वारा रसातल तक नहीं खींचे जायेंगे। वे बच निकलेंगे, और उन्हीं के कारण पृथ्वी पर मानव-जीवन बचा रहेगा, जैसे कि पहले भी बचा रहा है।

"लेकिन आदमियों को मुक्ति केवल व्यक्तिगत रूप से मिलेगी। यह वर्गों के द्वारा नहीं दी जायगी।

"कोई धर्म, कोई जाति, कोई राज्य और कोई भी महाद्वीप ऐसा नहीं है जो अपने लोगों को सामूहिक रूप से अथवा वर्गों के हिसाब से बचा ले। उनका धर्म, नसल, सामाजिक अथवा राजनीतिक वर्ग कुछ भी हो, उन्हें स्वतंत्रता उनकी व्यक्तिगत हैसियत से मिलेगी। और इसीलिए आदमी के बारे में उसके वर्ग के हिसाब से सम्मति नहीं बनाई जानी चाहिये। वर्ग, मानव मस्तिष्क की सबसे बर्बरतापूर्ण और शैतानियत भरी उपज है। हमें यह याद रखना चाहिये कि स्वयं हमारा शत्रु भी एक व्यक्ति है, कोई वर्ग नहीं।"

पादरी रुक गया और त्रायन ने इस अवसर का लाभ उठाकर कुछ भय के साथ पूछा;

"फादर, इस समय तुम यह सब कुछ मुझे क्यों कह रहे हो? क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप विश्राम करें?"

"यही तो मैं करने जा रहा हूँ," पादरी बोला, "मैं विश्राम करूँगा, लेकिन विश्राम लेने से पहले, मैं तुम्हें ये बातें बता देना चाहता था। तुम इन बातों को जानते हो और मेरी ही तरह अनुभव भी करते हो। हर कोई जानता है और अनुभव करता है। जॉन मॉरित्ज़ करता है। लेकिन इनको दुहरा देना मेरे लिए अच्छा हुआ। मैं इन्हें तुम्हें कहे बिना आराम नहीं कर सकता था।"

"फादर, तुम्हारा हाथ ठंडा है," त्रायन बोला।

"त्रायन, मैं जानता हूँ। यह इसलिए है क्योंकि मेरे अन्दर एक विचित्र बेचैनी है जिस पर मैं काबू नहीं पा सकता। मांस से अधिक बलवान् बेचैनी।"

"फादर, मैं नहीं समझ रहा हूँ," त्रायन बोला, "आप क्या कहना चाहते हैं ? क्या आपकी तबियत खराब है ?"

"नहीं," पादरी बोला, लेकिन कार्डिनल न्यूमैन का कथन याद रखना :

"मैं अब और सहन नहीं कर सकता।
क्योंकि वेदना से भी अधिक भयानक,
वह विनाश-संज्ञा फिर जाग्रत हो रही है,
वह सर्व-व्यापी निषेध,
वह लड़खड़ा कर गिर पड़ना
प्रत्येक उस वस्तु का जो आदमी को आदमी बनाती है;
मानों मैं किसी अनन्त प्रपात के किनारे झुका हुआ हूँ,
या और भी बदतर :
मानो मैं नीचे नीचे चला जा रहा हूँ
निर्मित चीजों के ठोस संस्थान में से हटता हुआ,
डूबता हुआ, डूबता हुआ,
विशाल पाताल में।
और इससे भी निर्दयतापूर्ण,
एक भयानक और बेचैन भीति
मेरे अन्तरात्मा के भवन में
प्रवेश करती चली आ रही है।"

पादरी के होंठ सुकड़ गये मानो उसके शरीर को एक असह्य-वेदना बींध गई। त्रायन उसके ऊपर झुका। अचानक पादरी का चेहरा अनन्त प्रेम और उष्णता की मुस्कराहट से चमक उठा, मानो उसकी

खोपड़ी में कहीं प्रदीप प्रज्वलित हो उठा हो। उसके ओठों से कुछ शब्द निकले जो बड़ी कठिनाई से सुनाई देते थे। त्रायन को लगा जैसे वह न्यूमैन की इन पंक्तियों को पहचान सका—

"मैं सो गया था; किन्तु अब मैं तरोताजा हो उठा हूँ।
एक विचित्र ताजगी। क्योंकि अपने में
एक अवर्णनीय हलकेपन का अनुभव करता हूँ,
और एक स्वतंत्रता का,
मानों मैं अब जैसे अपना-आप हो गया हूँ
और जैसे मैं कभी इससे पहले नहीं रहा।
यह कैसी शान्ति है !"

त्रायन समझ गया कि यह अन्तिम घड़ी है और उसकी शय्या के पास झुक गया। उसने सिसकियाँ भरनी आरम्भ कीं।

जॉन खड़ा हुआ उसने पूछा :

"क्या मैं डाक्टर को बुलाऊँ ?"

त्रायन ने उत्तर नहीं दिया। वह अभी भी अपने हाथों में पिता का हाथ लिये था और अभूतपूर्व निराशा से रो रहा था।

जॉन समझ गया। अपनी टोपी उतार कर वह पादरी की ओर झुका और उसने एक क्रॉस का निशान बनाया।

कुछ सेकिण्डों के बाद वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ। पास-पड़ोस के तम्बुओं से कैदी आकर इकट्ठे हुए थे। चारपाइयों के बीच की जगह आदमियों से ठसाठस भरी थी।

जॉन ने भीड़ के किनारे से जैसे तैसे अपना रास्ता बना लिया। लोगों ने अपनी टोपियाँ उतार रखी थीं और चुपचाप खड़े थे। कुछ ही क्षणों के बाद वह चॉकलेट-बक्सों के बाहर से मोम खुर्च कर बनाई गई एक मोम की बत्ती लिये आया। उसने एक पुराने खाली टीन के डब्बे को मोम-बत्ती रखने के दीप-दान की तरह काम में ला, फॉदर कोरग के सिरहाने एक मोम-बत्ती जलाकर रख दी।

१४०

दो स्ट्रैचर उठानेवालों को साथ लिये कैम्प का मैडिकल अफसर उस तम्बू में दाखिल हुआ, जहाँ फॉदर कोरग अभी मरा था।

"तुम क्या चाहते हो?" त्रायन ने पूछा।

"लाश को ले जाना। तम्बू में लाशें नहीं छोड़ी जा सकतीं," डाक्टर बोला।

"तुम इसे कहाँ ले जा रहे हो?"

"कैम्प से बाहर," डाक्टर बोला। "हम नहीं जानते कहाँ। हम अधिकारियों को सूचित कर देते हैं और अमरीकी ट्रक में डालकर ले जाते हैं।"

"मैं यह पहले जानना चाहता हूँ कि तुम मेरे पिता के पार्थिव अवशेषों को कहाँ ले जाना चाहते हो।"

"बहुत सी बातें हैं, जिन्हें हम सब जानना चाहेंगे, किन्तु दुर्भाग्य से यह असम्भव है," डाक्टर ने थोड़ी कठोरता से कहा।

दोनों सिपाही पादरी की लाश के पास आये और उसे उठाकर स्ट्रैचर पर डालने लगे। डाक्टर ने उन्हें रोक दिया :

"पहले मुझे यह निश्चित रूप से मालूम होना चाहिये कि यह मर गया है," वह बोला। "क्योंकि जैसा मैं जानता हूँ, वह अभी भी जीवित हो सकता है।"

उसने पादरी का हाथ लिया और उसे एक मिनट के लिये अपने हाथ में रखा। तब उसने उस वृद्ध पुरुष की छाती पर कान लगा कर देखा।

"इसे ले चलो,' उसने सैनिकों से कहा।

"नहीं," त्रायन चिल्लाया।

"हमारा विरोध करने से क्या लाभ? हम तुम्हारी तरह ही सामान्य कैदी हैं और हमें आज्ञा का पालन करना होता है।"

"मैं माँग करता हूँ कि मुझे पहले यह मालूम हो कि तुम मेरे पिता के शरीर को कहाँ ले जा रहे हो। यह कम से कम बात है जो मैं पूछ सकता हूँ, क्योंकि मुझे अन्तिम संस्कार के समय उपस्थित रहने की आज्ञा नहीं है। मैं इस विषय में आश्वस्त होना चाहता हूँ कि उसे ईसाई ढंगपर दफनाया जायगा। यह मेरा अधिकार है, चाहे मैं एक कैदी ही होऊँ। जिस क्षण मेरा पिता मरा, वह कैदी नहीं रहा। इसलिये जीवित रहते वह कुछ भी रहा हो, वह इस बात का अधिकारी है कि मृत का जो सम्मान होना चाहिये वह उसका हो।"

"तुम्हें किसने बताया कि मृतों का सम्मान नहीं होता," डाक्टर ने सन्देह भरे स्वर में पूछा।

"मैंने यह नहीं कहा। लेकिन मेरा पिता एक आरथोडाक्स पादरी रहा है, और मैं चाहता हूँ कि जिस सम्प्रदाय की उसने जन्म-भर सेवा की उसी के रस्मोरिवाज के साथ उसका अन्तिम संस्कार हो।"

"तुम कल अमरीकी अधिकारियों के पास एक लिखित प्रार्थना-पत्र भेज सकते हो," डाक्टर बोला।

"क्या तुम इस बात की गारण्टी दे सकते हो कि प्रार्थना-पत्र के लिए कल अत्यधिक देर नहीं होगी?"

"मैं किसी चीज की गारण्टी नहीं दे सकता," डाक्टर बोला। "मैं तुम्हारी तरह ही एक कैदी हूँ।"

"तो मैं अपने पिता का शरीर हटाने नहीं दूँगा। इससे पहले कि मैं इससे पृथक् होऊँ, मुझे यह पूरा-पूरा विश्वास होना चाहिये कि वह आरथोडाक्स चर्च के रीति-रिवाज के अनुसार दफनाया जायगा।"

"बाधा उपस्थित करने में कोई लाभ नहीं है" डाक्टर बोला।

"लेकिन जो हो, मैं करने जा रहा हूँ।"

"हम लाश को हटा ले जाने के लिए मजबूर हैं। हमें कड़ी आज्ञा है कि कैम्प में कोई लाश न रहने दी जाय।"

"यदि चाहो तो तुम उसे जबर्दस्ती ले जा सकते हो, किन्तु तुम्हें अफसोस होगा।"

सिपाहियों ने त्रायन के हाथ पकड़े और उसे एक ओर धक्का दे दिया। पादरी की लाश स्ट्रेचर पर उतार ली गई। जो लोग त्रायन को पकड़े हुए थे, त्रायन ने उनकी पकड़ से छूटने की कोशिश की। जिस समय स्ट्रेचर त्रायन के पास से गुजरा, उसे चन्द्रमा के थाल के समान चिकना और स्वच्छ अपने पिता का ऊँचा माथा दिखाई दिया।

नंगा सिर और नीची आँखें किये जॉन सिपाहियों के पीछे-पीछे चला जा रहा था। उसके हाथ में अभी भी पुराने टिन में रखी हुई मोमबत्ती थी। वह टिन ही लैम्प-दान का काम दे रहा था।

"तुम्हें इस पाप की बड़ी कीमत देनी पड़ेगी," त्रायन चिल्लाया। "कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जिनका फल अनिवार्य तौर पर भुगतना पड़ता है। डाक्टर, इस बात को मत भूलना कि तुमने मुझे अपने पिता की लाश के साथ दरवाजे तक जाने नहीं दिया।"

"यह मेरा काम नहीं है। यह कैम्प का कानून है।"

"अपने पर काबू करो," त्रायन की ओर बढ़ते हुए कैम्प-लीडर ने कहा। "यदि वे तुम्हें चिल्लाता सुन लेंगे तो अँधेरी कोठरी में बन्द कर देंगे।"

"अब से मुझे कोई चीज शान्त नहीं रख सकती।" त्रायन बोला। "कोई काल-कोठरी मेरी पुकार को बन्द नहीं कर सकती। अब से मैं भूख-हड़ताल आरम्भ करूँगा और यह तब तक चालू रहेगी जब तक मैं इन बीस हजार लोगों के बीच में मर नहीं जाता। मैं विरोध के प्रतीक के तौर पर थोड़ा-थोड़ा करके क्रमशः मरना चाहता

हूँ। मेरी मृत्यु विद्रोह की एक पुकार होगी जो मेरे साथी कैदियों के कानों, आँखों और मांस में खुभ जायगी और साथ में उनके भी खुभ जायगी जिन्होंने मुझे कैदी बनाकर रखा है। यह संसार के चारों कोनों में सुनी जायगी। कोई इस अभिशाप से नहीं बचेगा। कभी नहीं, जिस समय मैं कबर में होऊँगा, तब भी नहीं।"

१४१

"क्या तुम वास्तव में जान देना चाहते हो?" जॉन ने पूछा, "भूखे-प्यासे रहकर जान देना?"

यह त्रायन की भूख-हड़ताल का चौथा दिन था। गरमी थी। त्रायन तम्बू की छाया में चित लेटा हुआ था। चलने से वह थक गया था; बोलने से वह थक गया था। खड़े होने से, लोगों की बातचीत सुनने से, आकाश की ओर देखने से वह थक गया था। उसे हर चीज ने थका दिया था। स्वयं जीवन और उसका अस्तित्व ही उसके लिए असह्य भार हो उठे थे।

मध्याह्न के भोजन की सूचना अभी हुई ही थी। जॉन ने त्रायन को प्रेरित करने का एक बार और प्रयत्न किया।

"क्या मैं तुम्हारे लिए तुम्हारा भोजन लाऊँ?" उसने पूछा।

उसके हाथ में त्रायन का भोजन-पात्र था।

"तुम मर जाओगे तो वे प्रसन्न ही होंगे, किन्तु मरने की इच्छा करना ठीक नहीं।"

"यदि तुम चाहो तो मेरा हिस्सा खा सकते हो," त्रायन बोला। "मुझे यह नहीं चाहिये।"

जॉन चला गया और अपने पात्र में शोरवा भर लाया। उसने इसे जमीन पर रखा, बैठा, जेब से एक चम्मच निकाल कर उसे अपने हाथ से साफ किया। तब उसने पात्र को अपने घुटनों में रखा। शोरवा गरम था और जब उसकी नाक में भाप पहुँची तो उसके नथुने चौड़े हो गये।

आयन का भोजन-पात्र उसके पास खाली पड़ा था।

"तुमने मेरा हिस्सा क्यों नहीं लिया ?" आयन ने पूछा। "जो तुम्हें मिलता है, वह पर्य्याप्त नहीं है। यह किसी के लिये पर्य्याप्त नहीं है।"

"मैं तुम्हारा हिस्सा नहीं खा सकता था," जॉन बोला। "यदि मैं खाता तो ईश्वर मुझे दण्ड देता। तुम मुझसे कैसे यह आशा करते हो कि तुम भूखे रहो और मैं तुम्हारा हिस्सा खा लूँ ? यह बुरी बात होगी। मैं ऐसा नहीं कर सकता था।"

जब उसने भोजन-पात्र को अपने घुटनों में ले लिया, जॉन ने लदे हुए भूरे आकाश की ओर आँख उठाई और कुछ क्षण तक इसी प्रकार अर्ध उन्मीलित ओठों के साथ ऊपर की ओर देखता रहा। तब उसने क्रॉस का निशान बनाया।

आयन ने हर गति-विधि को देखा। जॉन ने शोरवे में चम्मच डुबोया। उसका ढँग ऐसा चिन्ता प्रधान था जैसे वह कोई पवित्र संस्कार कर रहा हो। जब यह केवल आधा भरा था उसने इसे धीरे से ऊपर उठाया, मानों आचमन कर रहा हो। तरल पदार्थ को निगल जाने के बाद, वह थोड़ी देर के लिये रुका। उसका चम्मच अभी भी स्थिर था, मानो भरा हो।

उसकी काली आँखें सुदूर कहीं देख रही थीं, जो केवल उसे ही दिखाई देता था और जो स्वर्ग और पृथ्वी की सीमा से परे है।

तब उसने फिर एक बार चम्मच को शोरवे में डुबोया। अभी भी केवल आधा भरा था। फिर उसे उसी नज़ाकत के साथ ऊपर उठाया, जो बहुत ही आकर्षक थी।

और फिर चम्मच नीचे गया। उसने इसे कभी लबालब नहीं भरा, कभी आधे चम्मच से अधिक मुँह में नहीं निगला। उसने इस चक्र को उसी लय और गाम्भीर्य के साथ पूरा किया।

जॉन ने संस्कार-विशेष के अवसर पर भोजन करनेवाले पादरी की गम्भीरता से भोजन किया। खाना, उसके लिए एक पवित्र संस्कार था, अपनी पुरातन शान के साथ स्थापित शरीर-पोषण का क्रिया-कलाप। प्रत्येक आवश्यक संस्कार की तरह इसमें भी जल्दबाजी वर्जित थी और यह बड़ी एकाग्रता तथा गम्भीरता के साथ किया गया था। न ओठों पर एक बूँद छूटी थी, न जमीन पर गिरी थी और न चम्मच में लगी रही थी।

पवित्रता की सीमा में प्रविष्ट जॉन, की भोजन करने की इस गति-विधि ने सारे सन्देहवाद को शान्त कर दिया और गाम्भीर्य का वायु मण्डल पैदा हो गया। उसके आचरण में कहीं कुछ नाटकीय न था, कहीं कुछ व्यर्थ न था।

इस भोजन ग्रहण करने के समय पर जॉन महान् प्रकृति के साथ एक लय हो गया। जिस प्रकार पेड़ पृथ्वी की गहराई में से अपने लिये जीवन-तत्त्व ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार उसने पोषण-तत्त्व ग्रहण किया। उसका सारा अस्तित्व उस संस्कार के साथ एकाकार हो गया। उस समय उसे अपने आसपास की और किसी चीज की खबर न थी। उसने अपने वास्तविक व्यक्तित्व की सम्पूर्णता को पुनः प्राप्त कर लिया। वह अपने अस्तित्व के सार के साथ प्रकृति की गोद में लौट आया और तदाकार हो गया।

जब उसका खाना समाप्त हो गया और वह अपने चम्मच में शोरबे की अन्तिम बूँद को ग्रहण कर सका, कुछ क्षण के लिये वह उस दृश्य में अपने आपको भूल गया जो केवल उसे ही दिखाई देता था। तब तीनों उँगलियों के सिरों को मिलाकर उसने फिर क्रॉस का चिह्न बनाया।

त्रायन की ओर घूमकर, मानों स्वप्न से जागा हो, वह बोला।

"दूसरे का भोजन खाना महान् पाप है।"

तब वह उठ खड़ा हुआ और अपना भोजन-पात्र धोने चला गया।

त्रायन शून्य में देख रहा था। उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। उसकी आँखों के सामने पोषण-तत्त्व का दिव्य-संस्कार था, जिसे जॉन कर रहा था और जिसे अब उसने स्वयं करना छोड़ दिया था।

१४२

"मुझे किसी भी तरह की डाक्टरी सहायता नहीं चाहिये," त्रायन बोला।

यह उसकी भूख-हड़ताल के चौथे दिन की शाम थी। कैम्प-अफसर लेफ्टिनेण्ट जैकबसन को सूचना मिली थी कि अमरीकी पत्रकारों की एक मण्डली अभी स्टटगार्ड आ पहुँची है। यह जर्मनी के कैद-कैम्पों का निरीक्षण करती हुई घूम रही थी। उसने बारगोमास्तर शमित और मुख्य मैडिकल-अफसर को हिदायत कर दी थी कि कुछ समय के लिये कोरग को कैम्प से हटा दे। उसका मामला प्रेस तक नहीं पहुँचना चाहिये। यह अत्यधिक बदनामी का कारण हो सकता था। त्रायन कोरग एक नाजी नहीं था। उसका बाप, जिसकी अभी मृत्यु हुई थी, एक पादरी था और दोनों टाँगों से रहित था। उसकी एक यहूदी औरत थी। एक रिपोर्टर के लिये यह सब बड़ी काम की कहानी होगी। जैकबसन उस तरह की प्रसिद्धि नहीं चाहता था। यदि उसके विरुद्ध प्रेस में निकलने लगा तो उसे तुरन्त अमरीका वापिस बुला लिया जायगा। यही वह समय था जब वह जर्मन-पोर्सलिन बटोरने का अपना काम समाप्त करने को था। उसने सिगरेट के चन्द पैकटों की कीमत देकर इसका अधिकांश

खरीदा था। कुछ बक्से ब्रिटिश-क्षेत्र में एक तहखाने में पड़े थे। उन्हें संयुक्त-राज्य जहाज से भेजना था। यदि वह उस सारे माल को खरीद लेगा, जो जर्मनी के अनेक नगरों, गाँवों और तहखानों में बिखरा पड़ा था तो वह उसे बेचकर अपना शेष जीवन आराम से गुजार सकता था। लेकिन इसके लिये यह आवश्यक था कि वह सारे संग्रह की खरीदारी समाप्त होने तक वहीं रहे।

यदि पत्रकारों तथा बदनामी का डर न होता, तो कोरग का मामला चुपचाप निबट जाता। उसने अपनी रिपोर्ट तक में इसका उल्लेख न किया होता। कैम्प में प्रति दिन कैदी भूख के मारे मरते थे, और जब खाने के अभाव में इतने कैदी मरते हैं तो इसमें क्या अन्तर पड़ता है यदि कोई एक कैदी, खाने की इच्छा के अभाव में, मर जाय। लेकिन इस परिस्थिति में, खुली बदनामी, जैकब की सारी योजनाओं को चौपट कर दे सकती थी। वह जैसे भी हो, इससे बचना चाहता था। लाखों का खतरा था।

बरगोमास्तर शमित पहले नाजी-सेना में एक करनैल था और अब बीमर-पुलिस का मुखिया था। उसने लेफ्टिनेण्ट जैकबसन को आश्वासन दिया कि वह इस मामले में अपने विवेक से काम लेगा और इसे थोड़े से थोड़े समय में निपटाने की कोशिश करेगा।

"हर डाक्टर की यह ड्यूटी है कि चाहे रोगी राजी हो, और चाहे राजी न हो, वह उसकी सहायता करे," बरगोमास्तर त्रायन से बोला। "तुम्हें तेज बुखार है, इसलिये तुम्हें कैम्प के रुग्णालय में पहुँचा दिया जायगा।"

रात के दस बजे थे। जॉन त्रायन के बिस्तर के किनारे बैठा था। जब भी कभी उसने बरगोमास्तर का स्वर सुना, वह चौंक गया। उसे ऐसा लगता था कि यह जरगु जॉरडन का स्वर है। वे लगभग समान थे।

"मैं यहाँ से हटने से इनकार करता हूँ," त्रायन बोला। "तुम मुझे इस तम्बु में से हटाना चाहते हो, इसलिये नहीं कि मैं बीमार हूँ

बल्कि इस लिये कि तुम्हें बदनामी का भय है। लेकिन तुम इसे दबा नहीं सकते। मुझे लगता है कि मैं बहुत जल्दी मर जाऊँगा। क्या यही असली मुसीबत नहीं है? इस कैम्प में जिन बीस हजार लाशों को तुमने कैद कर रखा है, वे तनिक तुम्हारी चिन्ता का कारण नहीं हैं। दूसरे सब धीरे-धीरे मर रहे हैं। उसमें कहीं कोई नसनी की बात नहीं है। धीरे-धीरे मरने से कहीं कुछ बदनामी नहीं है। तुम उन्हें अस्पताल क्यों नहीं भेजते?"

"एक डाक्टर की हैसियत से मेरी ड्यूटी है कि मैं तुम्हें रुग्णालय में भेज दूँ," मैडिकल-अफसर प्रो० डार्फ ने कहा। "मि० कोरग' तुम्हारी हालत बहुत खराब है। हम तुम्हें इस तम्बू में और एक रात नहीं बिताने दे सकते।"

दो सिपाहियों ने त्रायन को उठाकर स्ट्रेचर पर डाल दिया, मानो उन्होंने कोई सामान उठाया हो। जॉन ने अपनी मुट्ठी बाँधी और दाँत पीसे। वह त्रायन का पक्ष लेकर लड़ना चाहता था, किन्तु आरम्भ होने से पहले ही युद्ध में हार हो गई थी।

"एक अनुचित कारण के लिये उचित बात करना महानतम अपराधों में से एक है," त्रायन बोला।

डाक्टर ने उसके कथन की उपेक्षा की।

"आगे बढ़ो," डाक्टर ने आज्ञा दी।

सैनिक स्ट्रेचर को तम्बू से बाहर ले गये। बिना एक शब्द बोले कैदियों ने रास्ता दे दिया। वे सब जाग रहे थे, किन्तु चुप रहे।

यह वह मौन था, जो मृत्यु का सँगी-साथी है। वे जानते थे कि कुछ असाधारण गम्भीर बात होने जा रही है, लेकिन कोई उनमें से यह नहीं कह सकता था कि क्या होने जा रहा है।

चन्द्रमा का प्रकाश था। जॉन स्ट्रैचर के पीछे-पीछे चला जा रहा था। उसकी नजर जमीन पर थी, मानो श्मशान-यात्रा हो उसके हाथ

में ब्रायन के कपड़े, जूते, गिलास और पाइप थे। उसकी आँखों में आँसू थे। तब यकायक उसे ध्यान आया कि स्ट्रेचर पर का आदमी उसका मित्र अभी जीवित है।

जब वे रुग्णालय के दरवाजे पर पहुँचे, जॉन को वापिस कर दिया गया।

"तुम्हें और अधिक आगे आने की आज्ञा नहीं है," बरगो-माल्तर ने कहा। "यही आज्ञा है। किसी को ब्रायन कोरग से बात करने की अथवा उसे देखने की आज्ञा नहीं है। उसके जूते, कपड़े, मैं स्वयं उस तक ले जाऊँगा।"

उस रात जॉन काँटेदार तार के बाहर रुग्णालय के चारों ओर इधर से उधर घूमता रहा। उसके लिये ब्रायन को छोड़ देना आसान नहीं था।

१४३

ब्रायन रुग्णालय के एक वार्ड में था। वहाँ छः बिस्तर थे, किन्तु सभी खाली। खास तौर पर उसके लिये वार्ड खाली कर दिया गया था। दो तरुण सिपाही उस पर पहरा देने के लिये नियुक्त थे।

ब्रायन बिस्तर पर लेटा था और उसका मुँह दीवार की ओर था। उसके ओठ राख की तरह खुश्क थे। उसके दिमाग में स्वप्नों का ताँता लगा था, जैसे किसी सचित्र फिल्म की रील हो।

यद्यपि उसकी आँखें बन्द थीं किन्तु उसे ऐसा भास हुआ मानों वह किसी नये प्रकाश के तेज से भीतर ही भीतर अन्धा हो गया। यह प्रकाश गरम था, और उससे उसकी आँखें जल रही थीं। उसके सारे विचार इसी से रंजित और प्रकाशित थे। अपना शरीर तक उसे प्रकाश-निर्मित

मालूम दे रहा था, और स्वप्नों की तरह ही अग्निमय तथा निस्सार था। उसे ऐसा लग रहा था मानों वह आकाश में तैर रहा हो।

"अब मैं समझ सकता हूँ कि तपस्वी और साधक, व्रत क्यों रखते हैं," वह मन में कहने लगा। "निराहार रहकर आदमी कितनी आसानी से पार्थिव भार से मुक्त हो सकता है। परमात्मा बहुत समीप मालूम देता है। ऐसा लगता है मानों माथा, आकाश छू रहा हो।"

लेकिन यह ध्यानावस्था अधिक समय नहीं रही। यकायक उसे भोजन की उपस्थिति का अनुभव हुआ। एक सिपाही उसकी चारपाई के पास कुर्सी पर खाने की चीजें रख गया था। आयन की, इधर पीठ थी; किन्तु तो भी वह बता सकता था कि क्या-क्या चीज आई थी।

सबसे पहले उसे मक्खन में भुने आलुओं की गन्ध आई। तब उसे काफी की गन्ध मालूम दी। उसे खाद्य-सामग्री की उपस्थिति का पूरा विश्वास था, मानों उसने उसे देखा हो और चखा हो। उसकी घ्राणेन्द्रिय तेज हो उठी थी। इससे पहले वह दो गन्धों में ठीक-ठीक इस प्रकार भेद नहीं कर सकता था।

वहाँ गरम दूध का एक बरतन भी था। दूध की भाप उतनी ही तेज थी, जितनी काफी मांस की गन्ध भी वैसी ही तीव्र थी। यह उसको वैसे ही चुभी जैसे किसी चित्र का अत्यन्त शोख रंग। मक्खन और कबाब ने दूसरी तश्तरियों के प्रभाव को बढ़ा दिया। गन्ध बिस्तर में व्याप गई, कमीज़ में व्याप गई, बालों में व्याप गई और उसके आसपास की दीवारों में व्याप गई।

थोड़े जले मांस, मक्खन, दूध और काफी की गन्ध किसी तेल की सुगन्ध की तरह चिमट गई। जितनी बार उसने साँस लिया, यह उसके फेफड़ों में व्याप्त होकर नीचे पेट तक पहुँच गई। इससे उसको भोजन करने की, और इस प्रकार अपनी भूख-हड़ताल की कठोरता में कमी की अनुभूति हुई। उसने, जिस हवा में वह साँस ले रहा था, उसमें से,

भोजन की गन्ध को निकाल बाहर करने का प्रयत्न किया, किन्तु यह असम्भव था। हर गुजरते क्षण के साथ गन्ध तीव्रतर होती जाती थी।

न्नायन ने जान-बूझ कर इसका विश्लेषण करना आरम्भ किया, मानों वह एक सूर्य-किरण को इन्द्रधनष के सात में रंगों बाँट रहा हो।

"जैसे किसी और तरीके से अपनी घ्राण-शक्ति की परीक्षा हो सकती है, वैसे ही इसी तरह भी उसकी योग्यता का परीक्षण किया जा सकता है," न्नायन सोचने लगा। उसने अपने आपको इस नये तजुर्बे से उत्पन्न उत्तेजना में तल्लीन कर दिया। इससे उसे अपने ऊपर पूर्ण अधिकार होने की कल्पना होती थी और सन्तोष होता था कि वह भोजन को वैज्ञानिक विश्लेषण मात्र के स्तर तक ले आ सका है।

एक खोज जो वह कर सका, यह थी कि मांस न गो-मांस था और न सुअर का मांस। यद्यपि यह टीन के डिब्बे का बन्द मांस था और इस की तैयारी में कई मसाले आदि पड़ चुके थे, तो भी वह निश्चयात्मक रूप से यह जान गया था कि यह मुर्गी का मांस था। वह घूम कर अपने निष्कर्ष की परीक्षा कर लेना चाहता था; लेकिन उसने अपने आपको रोका और अपना मुँह दीवार की ओर रखा। दूध थोड़ा जल गया था। वह पाउडर-दूध था, और कदाचित् अत्यधिक सारवाला। हो सकता है इसी लिये यह अत्यधिक जल्दी उफना गया हो वहाँ कुछ टीन-बन्द बल भी रखे थे। इन्हीं की गन्ध सबसे कम थी। यह पहचान तक में नहीं आती थी। यह उतनी ही हल्की थी जितना अश्वपाती वर्ण।

इस बात से कि उसने उबले हुए फल तक का पता लगा लिया था, उसे अत्यधिक मानसिक संतोष का अनुभव हुआ। उसे ऐसा लगा मानों उसने कोई रिकार्ड तोड़ दिया हो अथवा किसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला में कोई नई खोज कर ली हो। एक ही प्रश्न का वह उत्तर नहीं दे सकता—वहाँ पाव-रोटी थी अथवा नहीं। यदि रही होगी तो वह अमरीकी आटे की बनी सफेद-रोटी रही होगी। आटा इतना सफेद होगा कि सत्व मात्र ही शेष रहा हो, और बासी होगा।

"यदि मैं तुम्हारी जगह होता, तो अब तक खा गया होता," बिस्तर की ओर बढ़ते हुए सिपाही ने कहा "एक बार ठण्डा हो जाने पर फिर इसमें कुछ मज़ा नहीं आयेगा।"

त्रायन ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह अपने भोजन के विश्लेषण-क्रम को जारी रखना चाहता था, लेकिन अब उसे यह असम्भव प्रतीत होने लगा। उसके चिन्तन में बाधा पड़ गई थी और अब वह नये सिरे से अपेक्षित शान्ति और एकाग्रता नहीं बटोर पाता था। तमाम गन्धें मिल कर एक हो गई थीं, जैसे इन्द्रधनुष के तमाम रंग मिलकर श्वेत-वर्ण हो जा सकते हैं। जिस प्रकार किसी तालाब में कोई पत्थर पड़ा हो और उससे लहरों का क्रम बिखर गया हो, वही बात गन्धों को लेकर सिपाही के शब्दों ने की।

त्रायन को निराशा हुई और अफ़सोस हुआ कि वह भोजन में से आनेवाली गन्ध का अब और विश्लेषण नहीं कर सक रहा था। उसे नींद आ गई। अगले दिन प्रातःकाल भोजन वहीं रखा था। अभी भी उसने उनकी ओर नहीं देखा। अब गन्ध मुश्किल से आ रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे भोजन जीवित न रहा हो, रात में मर गया हो अथवा जम गया हो।

वह थका था। न वह घूमा और न उसने अपनी आँखें तक खोलीं। अनेक बार उसने थूक से अपने ओठों को गीला किया, किन्तु उसे यह अनुभव करके निराश होना पड़ा कि उसके ओंठ तीते और सूखे थे।

सिपाही कल की भोजन-सामग्री उठा ले गया और उनकी जगह दूसरी नई सामग्री ले आया। आज मक्खन में भुने अण्डे थे। उनकी गन्ध किसी विज्ञापन के शोख़ रंगों की तरह बड़ी ही तीव्र थी। अण्डों के अतिरिक्त, आमलेट, दूध, काफी और मक्खन था। ये सारी सुगन्धियाँ मानों उसके बदन में तीर चुभो रही थीं। उसने वेदना से अपनी आँखें ज़ोर से बन्द कर लीं। "भगवान्, मेरा अन्त यथाशीघ्र आ जाय," वह

प्रार्थना के स्वर में बोला। "देहधारी होकर प्रलोभन को जीतना बड़ा कठिन है।"

उसने अपने आपको इस विचार से सान्त्वना दी कि एक या दो दिन में उसका शरीर अन्तिम साँस ले लेगा।

"दो या तीन दिन में मैं मर जाऊँगा," उसने अपने मन में कहा और फिर सो गया।

१४४

त्रायन तकियों के सहारे बिस्तर पर सीधा बैठा था, और खिड़की के बाहर झाँक रहा था। मध्याह्न का समय था। बाहर, तीन कतारों में, कैदियों की परेड हो रही थी। वे नंगे थे। सारा परेड का मैदान नंगे आदमियों से भरा था।

रुग्णालय की खिड़की के ठीक नीचे एक जीप खड़ी थी, सिपाहियों से घिरी हुई, जिनके पास रबर के चाबुक थे। वे सभी गोंद चबा रहे थे। एक-एक करके कैदी सिपाहियों के पास आते थे, एक अनिश्चितता के साथ, एक अकबकेपन के साथ। नंगे आदमी हमेशा अनिश्चित ढंग से चलते हैं। त्रायन इस भावना से परिचित था। जब उसके पास वस्त्र नहीं थे, तो वह भी इस प्रकार चल चुका था।

"दूसरी तलाशी?" उसने पूछा। "पता नहीं अब वह और किस चीज की आशा करते हैं?"

ये तलाशियाँ एक महीने में कई बार होती थीं।

एक वृद्ध-पुरुष अभी सिपाहियों के पास आया था।

"वह ऐतेड्यूस है, वार्सा का प्रधान पादरी," त्रायन बोला।

प्रधान पादरी ऊँचा था, यद्यपि वह जरा झुककर चलता था। वह इतना दुबला था कि कुछ दूर से उसकी पसलियाँ गिनी जा सकती थीं, चमड़ी से ढका हुआ एक ढाँचा मात्र। उसकी सफेद दाढ़ी थी। उसके सारे जिस्म में एक यही चीज सफेद थी। इसकी साफ घोषित सफेदी देखनेवालों की आँख में धँस जाती। ज्योंहीं वह नजदीक आया, सिपाही हँसने लगे।

लेकिन प्रधान पादरी उनकी उपस्थिति की ओर से अचेत था। वह उनकी चोटीदार टोपियों के ऊपर आकाश की ओर देख रहा था। उस दिन आकाश रोम के किसी गिरजे के शिखर की तरह नीला था।

सिपाहियों ने प्रधान पादरी की उँगलियों को देखा-भाला।

"इन्हें फैलाओ," अनुवादक ने आज्ञा दी।

वृद्ध पुरुष ने उँगलियाँ फैला दीं। कैदियों ने ध्यान से देखा। कैदी के हाथ पर कोई अँगूठी नहीं थी।

"हाथ ऊपर करो," अनुवादक ने फिर आज्ञा दी।

वृद्ध पुरुष ने अपनी छाती तक हाथ ऊपर उठाए, मानों वह आशीर्वाद दे रहा हो। इसके बाद सिर के ऊपर। उसने न अनुवादक की ओर देखा न सैनिकों की ओर। किन्तु वे उसकी अच्छी तरह परीक्षा ले रहे थे। छिपा कर रखे हुए हीरे-मोतियों के लिए वह उसकी बगलों की तलाशी ले रहे थे। तब उन्होंने उसकी गर्दन पर के बालों की तलाशी ली। प्रधान पादरी के लम्बे सफेद बाल थे, जिनमें अँगूठियाँ छिपा कर रखी जा सकती थीं। सिपाहियों ने उसके बालों की एक-एक लटी को पृथक्-पृथक् करके देखा, पहले अपनी छड़ी के सिरों से, और बाद में अँगुलियों से। उन्होंने उसके सिर के ठीक बीचों-बीच के सफेद बालों को देखा और तब उसकी गर्दन पर के। इसके बाद उन्होंने उसकी दाढ़ी को टटोला कि कहीं उसी में अँगूठियाँ न हों।

"उधर मुँह करो," अनुवादक बोला।

वृद्ध पुरुष ने सिपाहियों की ओर अपनी पीठ कर ली।

"झुको।"

वह नीचे झुक गया मानो मूर्तियों के सामने झुक रहा हो। लेकिन स्पष्ट ही इतना पर्याप्त नहीं था।

"टाँगें फैलाओ।"

प्रधान पादरी ने अपनी टाँगें फैला दीं। वे सफेद तथा दुबली-पतली थीं। अनुवादक और सैनिक ने नीचे झुक कर देखा कि प्रधान पादरी ने कहीं अपनी टाँगों के भीतर तो अँगूठियाँ अथवा दूसरी सुनहरी चीजें नहीं छिपा रखी हैं। लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। दोनों सिपाहियों में से एक ने दूसरे से कुछ कहा। वृद्ध पुरुष अभी भी झुका हुआ था। उसकी टाँगें दूर-दूर थीं और पीठ उनकी ओर।

"दफा हो," अनुवादक बोला।

सिपाहियों ने दूसरे आदमी की तलाशी ली। प्रधान पादरी उसी संकुचित चाल के साथ कतार में अपनी जगह वापस चला गया। उसके बाल और दाढ़ी हवा में ऐसे उड़ रहे थे मानो किसी श्वेत पताका की रेशमी तहें हों। त्रायन को लगा कि दूसरों की तरह वह नंगा नहीं है।

त्रायन की आँखें तब तक उसका पीछा करती रहीं जब तक कि नंगे आदमियों की कतार में अपनी जगह पर नहीं जा पहुँचा। यद्यपि वह दूसरे आदमियों के बीच में था किन्तु वह सामान्य भीड़ का हिस्सा नहीं था। उसके सिर की अपनी विशेषता ने त्रायन का ध्यान आकर्षित किया। शायद यह उसके बालों की सफेदी थी या दाढ़ी थी जिसने ध्यान आकर्षित किया था अथवा उसका अपना सिर का ढंग-विशेष था। कुछ खास बात थी जो वैसी ही आदर-भावना के लिए मजबूर करती थी जैसी मूर्तियों के प्रति होती है।

"अब मैं जानता हूँ कि मैं क्या देखता हूँ," अचानक त्रायन कह उठा। सिपाहियों ने घूम कर उसे घूर-घूर कर देखना आरम्भ किया। लेकिन वह उनकी ओर से सर्वथा उदासीन रहा खिड़की से बाहर देखता रहा।

"प्रधान पादरी के सिर के गिर्द प्रकाश है। यह एक प्रभा-मण्डल है। उसके सिर के पीछे से चौंधिया देनेवाला प्रकाश निकल रहा है। किसी प्रदीप के प्रकाश से भी जोरदार। उसके सिर के गिर्द सुनहरी किरणें दिखाई दे रही हैं।"

कतार में अपनी जगह पर पहुँच कर वृद्ध पुरुष ने रुग्णालय की खिड़कियों की ओर देखा। उसके सिर का प्रभा-मण्डल और भी अधिक तेज-पूर्ण था।

"प्रभा-मण्डल केवल चित्रकारों का आविष्कार ही नहीं है," त्रायन बोला। उसकी आँखें दूसरे कैदियों पर भी घूम गईं। कुछ दूसरे कैदियों के सिर पर भी प्रभा-मण्डल था। वह उन सबको नहीं जानता था। वियना एकेडमी के अध्यक्ष के सिर पर एक प्रभा-मंडल था, और इसी बर्लिन के एक तरुण पत्रकार के सिर पर। एक यूनानी-सचिव, बर्लिन में रूमानिया के राज-दूत और दूसरे कई लोगों के अपने-अपने प्रभा-मण्डल थे। उन सबके मस्तक से प्रकाश-रश्मियाँ वैसे ही निकल रही थीं जैसे आग या बड़े-बड़े लैम्पों से। लेकिन वे अग्नि अथवा बिजली से कहीं अधिक सुन्दर थीं। उनके माथे से निकलनेवाली ये रश्मियाँ सारे संसार को प्रकाशित कर सकती थीं और पृथ्वी पर से रात्रि का अन्धकार मिट जा सकता था।

१४५

"तुम खाओगे क्यों नहीं?" कैम्प के अध्यक्ष लेफ्टिनेन्ट जैकबसन ने पूछा।

वह त्रायन को उसके वार्ड में देखने आया था। उसने बरगो-मास्टर और डाक्टर को बाहर भेज दिया था ताकि वह अकेला उसके साथ रह जाय।

"तुम चाहते क्या हो ?" लेफ्टिनेण्ट ने पूछा। "कैम्प में यह सारे मजाक का मतलब क्या है ?"

"मैं नहीं खाऊँगा, क्योंकि मुझे भूख नहीं है," त्रायन ने कहा। "यकायक मेरी भूख मारी गई है। मेरी वमन की प्रवृत्ति है, बहुत ज्यादा है। मेरा पेट उलट रहा है। लेफ्टिनेण्ट, क्या तुम्हारी कभी वमन की प्रवृत्ति नहीं होती ?"

जैकबसन चुपचाप था। वह सोचने लगा कि अच्छा होता यदि उसने उसके साथ अकेले रहने का ख्याल न किया होता। प्रतीत होता था कि कैदी पागल हो गया है। उनकी आँखें जल रही थीं। "वह आसानी से मेरे गले पर कूद सकता है और मेरा गला घोंट सकता है," अफसर ने सोचा। उसने दरवाजे की ओर देखा और तब मुस्कराता हुआ बोला :

"मि० कोरुग। तनाव कम करो। तुम अत्यधिक उत्तेजित हो और यह समझ में आने लायक बात है। आज यह छठा दिन है, कि तुमने कुछ भी खाना-पीना नहीं लिया है।"

"लेफ्टिनेण्ट, जाओ नहीं। मैं पागल नहीं हूँ," त्रायन बोला। "डरो मत। मैंने जो तुमसे वमन की प्रवृत्ति के बारे में प्रश्न किया, वह मेरा बेहूदा प्रश्न था। निस्सन्देह तुम्हारी कभी वमन की प्रवृत्ति नहीं होती होगी। यदि तुम अपनी आँखें मूँद लो, और नाक बन्द कर लो तो फिर और खतरा नहीं रहता। लोगों को अभ्यास पड़ जाता है और उनकी वमन की प्रवृत्ति नहीं होती। यह केवल मनोबल का प्रश्न है। मुझमें मनो-बल नहीं है, इसलिये मुझे वमन की प्रवृत्ति होती ही है। कुछ मज़दूर, अपनी हाज़री, अपना मध्याह्न तथा शाम का भोजन गन्दी नालियों अथवा पाखानों में बैठकर कर लेते हैं। उन्हें वमन की प्रवृत्ति नहीं होती, क्योंकि उन्हें इसका अभ्यास हो जाता है। मैंने स्वयं अपनी आँख से देखा है कि पाखाने से कुछ ही कदम के फासले पर लोग शोरवा,

रोटी और मक्खन निगल रहे हैं। वे अपने ओंठ चाट रहे थे, हँस रहे थे और मज़ाक कर रहे थे। चाहे कितनी ही तीव्र घ्राण-शक्ति हो किन्तु आदमी इस सब का अभ्यस्त हो जाता है।

"कैदी-कैम्पों के कैदियों की लाशों को जर्मन लोग भट्टियों में जला देते थे और भट्टियों का दरवाजा बन्द करते ही वे चले जाते और बिना किसी भी प्रकार की विरक्ति के अपना मध्याह्न का भोजन करते। यहाँ ऐसे आदमी हैं, जिनके पास गद्दे हैं, जिनमें उन औरतों के बाल भरे हैं, जो कैदी-कैम्पों में मारी गई हैं। और जो उन्हीं गद्दों पर अपनी प्रेमिकाओं से क्रीड़ा करते हैं और अपनी पत्नियों के साथ सन्तानोत्पत्ति। उनके पेट इतने नाज़ुक नहीं हैं। उन्हें वमन नहीं होता। वे पूर्ण रूप से प्रसन्न हैं।

"मैं उसी जेल में था जिसमें एक औरत थी, जिसके सोने तथा बैठने-उठने के कमरे में आदमी की चमड़ी की छतरीवाला एक लैम्प था। उससे प्रकाश कुछ वासनामय तथा पीला लगता। इन मानवी चमड़ी की छतरियों में से लैम्प का जो प्रकाश छनता, उसमें वह क्रीड़ा करती, खाती, पीती नाचती, तथा अपने आप को अपने प्रेमी के हाथों में सौंप देती। वह प्रसन्न थी। कोई भी हो, उसे विरक्ति न होने का अभ्यास हो जा सकता है। यह केवल अभ्यास और मनोबल का प्रश्न है।

"रूसी और उनकी खासी बड़ी संख्या, अस्सी वर्षीया वृद्धा से क्रीड़ा करते थे। वे लाइन बना कर खड़े हो जाते और अपनी-अपनी बारी से एक ही औरत से विषय करते, एक पर दस दस रूसी। इसके बाद, उनका जी मचलाने की जगह वे वोदका पीते थे।

"मुझे विश्वास है कि तुम यह नहीं करोगे। तुम औरतों के साथ जबर्दस्ती नहीं करते। तुम उन्हें चॉकलेट देते हो और जब तुम उनसे क्रीड़ा करते हो तो सन्तान-निरोध के उपाय काम में लाते हो। तुम

वैसा भी नहीं करते, जैसा जर्मन करते हैं। हर जाति के अपने रस्मो-रिवाज होते हैं, लेकिन चिन्ता करने की बात नहीं। तुम कुछ भी करो, तुम्हारा जी कभी नहीं मचलायेगा। मुझे इसका यकीन है कि तुम्हारे लिये कोई ख़तरा नहीं है। मैं 'ख़तरा' कहता हूँ, विश्वास रखें, जी की मचलाहट एक बड़ा ख़तरा है। मैं जानता हूँ कि इसके कारण मुझे कितना कष्ट उठाना पड़ा है।

"मेरी आँतें हाथ के दस्ताने की तरह अन्दर से बाहर की ओर हो रही हैं और मुझे अपने मुँह में उनके सिरों का रस मालूम देता है। सारा चित्त प्रकुप्त हो उठा है और मेरे पेट से बुरी दुर्गन्ध आती है। मैं मानवता के लिये करुणा की बाढ़ में बहा जा रहा हूँ, अत्यधिक करुणा की बाढ़ में। तुम मुझसे यह आशा कैसे कर सकते हो कि मुझे भूख लगेगी। क्या तुम यह समझ सके कि अब मैं कभी खाना नहीं खा सकूँगा?"

लेफ्टिनेण्ट जैकबसन दरवाज़े की ओर खिसक गया था। वह सोचता था कि अच्छा होता कि वह न आया होता। न बरगोमास्तर और न डाक्टर ने ही उसे बताया था कि त्रायन पागल है। उनके अनुसार, रोगी की अक्ल बिल्कुल ठीक-ठीकाने थी। लेकिन वास्तविकता से दूसरी ही बात सिद्ध होती थी।

"मि० कोरग, तुम बिल्कुल ठीक हो," लैफ्टिनैण्ट बोला, "इस परिस्थिति में, यह आशा नहीं की जा सकती, कि तुम्हें भूख लगेगी।"

"जाएँ मत," त्रायन बोला। "मेरे लिये बैठे रहना बहुत कठिन है। मेरी ओर से ज़रा खिड़की से बाहर झाँक कर बताएँ कि क्या तलाशी समाप्त हो गई है।"

"अभी नहीं," लेफ्टिनेण्ट जैकबसन ने कहा।

त्रायन को आश्चर्य्य था। यह कैसे हो सकता था कि जिस प्रकार की तलाशी बाहर हो रही थी, आदमी उसे देखता रहे और उसकी भूख न मर जाय? जैकबसन सीधा भोजन करने जा रहा था। अब बारह बजे थे।

"तुम कहते हो कि यह अभी समाप्त नहीं हुई ?" वह बोला। "निस्सन्देह, यह इतनी जल्दी समाप्त नहीं हो सकती था। यह अभी आरम्भ हुई है। पहले तुम सूट-केसों में, घरों में, कपड़ों में, जेबों में, जूतों में, पतलूनों में और कपड़ों की सिलाई में सोना खोजते थे। अब तुम मुँह में, बगलों में, आदमी के नितम्बों में—सब कहीं खोजते हो। तुमने उन्हें नंगा कर दिया है; लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है। कल से तुम सोने की खोज में आदमी की चमड़ी की पट्टियाँ उतारना आरम्भ करोगे, और सोने के लिये आदमी की हड्डियों से उनकी मांस-पेशियाँ पृथक् कर दोगे। और आगे चलकर तुम हड्डियाँ पीस डालोगे कि उनमें भी कहीं सोना न छिपा हो। तुम आदमियों के दिमागों को निचोड़ोगे और उनकी आँतों तक की तलाशी लोगे। तुम सोना ढूँढने के लिये आदमी की फाँकें फाँकें काट डालोगे। सोने के सिक्के, सोने की अँगूठियाँ, सोने की विवाह-मुँदरियाँ; सोना, सोना, सोना। अभी तो हमने मुश्किल से आरम्भ किया है। हम चमड़ी तक पहुँच गये हैं। लेकिन चमड़ी उतार दी जायगी। तलाशी जारी रहनी चाहिये······"

लेफ्टिनेण्ट जैकबसन कमरे से चला गया था। मायन ने दीवार की ओर मुँह फेर लिया।

१४६

अर्जी संख्या ६, विषय : अर्थशास्त्र (कैदियों के बदन पर मिली मूल्यवान् वस्तुएँ)

कैदियों की नंगा-झोली में, उनके बदन पर जो कुछ मिला—अगूँठियाँ, पहुँचियाँ, घड़ियाँ, फाउन्टेन-पेन, सिक्के और दूसरी सभी चीजें जब्त कर ली गई थीं। लेकिन जिस सावधानी से चमड़ी तक की तलाशी

ली गई, उसके बावजूद तलाशी के तरीके में अभी सुधार की बहुत गुञ्जायश है।

आज मैंने देखा कि कुछ कैदियों के सिर पर वैसा ही ताज है जैसा चित्रकार संतों की मूर्तियों को पहनाते हैं। यह सभी जानते हैं कि संतों के सिर पर सोने के ताज होते हैं। कैदियों के ताज सोने अथवा अन्य किसी कीमती धातु के नहीं रहे होंगे। यदि होते तो ये ताज अथवा ये प्रभा-मण्डल कभी के जब्त कर लिये जाते। तो भी उनका मूल्य कम नहीं है।

मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ, किन्तु मैं सोचता हूँ कि ये अत्यन्त मूल्यवान् हैं। ये उन कैदियों की अन्तरात्मा से निकलनेवाली खास-खास रश्मियों से बने हैं।

यह बात बड़ी रोचक है कि इस तरह की घटना पश्चिम की यान्त्रिक सभ्यता में नहीं घटती। ऐसा लगेगा कि यह आदिम सभ्यता की विशेषता है। लेकिन यह विषयान्तर है; क्योंकि ये ताज कीमती हैं, इसलिए इन्हें कैदियों के पास नहीं रहने देना चाहिए। स्थायी आज्ञा के अनुसार कोई कैदी अपने पास कोई कीमती चीज नहीं रख सकता।

मुझे याद सा आ रहा है कि इतिहास के पास इस तरह के मूल्य-वान् ताजों (प्रभा-मण्डलों) की जब्ती के उदाहरण हैं। चंगेज-खाँ जैसे बर्बर विजेता भी इस प्रकार के कैदियों के बदन पर मिलनेवाले आभ-रणों के यथार्थ-मूल्य को समझते थे और उन्होंने उन्हें जब्त कर लिया था। लेकिन, उन दिनों में आज की तरह के मशीन-प्रधान यातायात के साधन विकसित नहीं हुए थे। चंगेज-खाँ ने उन प्रभा-मण्डलों की चमक और शक्ल को बिगड़ने से बचाने के लिये, जिन्हें वह अपने राज दरबार में रखना चहता था, आज्ञा दी कि साथ-साथ कैदियों के सिर भी जब्त कर लिये जायँ। प्रभा-मण्डलयुक्त कैदियों के ये सिर रस्सी में

बाँध कर घोड़ों की जीनों के साथ लटका दिये गये और चीन तथा अरब से मंगोलिया जाये गये। लेकिन रास्ते में ही जल-वायु की परिस्थिति अथवा उष्णता के अकस्मात् परिवर्तन के कारण, ये प्रभा-मण्डल अदृश्य हो गये और इन सिरों को फेंक देना पड़ा। वे सड़ने तक लग गये थे।

इस प्रकार की बर्बादी से बचने के लिये यह अच्छा होगा कि चंगेज-खाँ की तरह कैदियों के सिर काटे न जायँ। इसके बजाय जिन कैदियों के सिर पर इस प्रकार के प्रभा-मण्डल हों, उन्हें समान ताप-मान के टैंकों में बन्द करके तुम्हारे देश भेज दिया जाय। हमारी सभ्यता को यह असाधारण लाभ है कि उसे सभी आवश्यक यान्त्रिक साधन प्राप्त हैं और इसलिये हम उस अपव्यय से बच सकते हैं, जिस से बर्बर-विजेता न बच सके थे।

इतिहास-लेखकों का कहना है कि इस प्रकार पाँच लाख अमूल्य प्रभा-मण्डल नष्ट हो गये।

अनन्त प्रशंसा और मुस्कराहट के साथ,

तुम्हारा,
साक्षी

१४७

"पाँच मिनट में तुम्हें अस्पताल ले जाया जायगा," बरगोमास्तर बोला।

अपने हाथ पीछे किये, वह वार्ड में इधर से उधर टहल रहा था।

"वहाँ तुम्हें जबर्दस्ती खिलाया जायगा। मुझे इसके लिए बड़ा दुःख है। हमने अपनी सामर्थ्यानुसार सभी कुछ करके देखा और इसी

तरह लेफ्टिनेन्ट जैकबसन ने भी। लेकिन तुमने सहयोग देने से इनकार किया। हम तुम्हारा भला चाहते हैं और जो हाथ तुम्हें खाना खिलाता है, तुम ठीक उसी को काटते हो।"

त्रायन दीवार की ओर मुँह किये बिस्तर पर पड़ा था। "तुम्हारे बरताव में सहयोग की भावना का सर्वथा अभाव है," उत्तेजित बारगो मास्टर बोला। "तुम डाक्टरों को, लेफ्टिनेण्ट जैकबसन को और मुझे अपना अमूल्य समय अपनी व्यक्तिगत बातों पर बर्बाद करने के लिए मजबूर कर रहे हो। इस प्रकार हमारे समय के अपव्यय के कारण बनकर तुम अपने सहयोगी-कैदियों के हितों के विरुद्ध आचरण कर रहे हो। यह सहन नहीं किया जा सकता। तुम अकेले हो और वे बीस हजार हैं। तुम्हारी अपनी निजी समस्याएँ एक ओर रहनी चाहिये। हम में से हर किसी को पत्नी और परिवार है। यदि हम सभी तुम्हारी ही तरह बरतने लगें तो क्या परिणाम हो? लेकिन तुम अपनी जमात का कभी विचार तक नहीं करते! तुम शुद्ध स्वार्थी हो। मैंने लेफ्टिनेण्ट जैकबसन का परामर्श माना। वह सभी अमरीकियों की तरह भावुक और जनतन्त्र में विश्वास रखता है। उसका कहना मानकर मैंने पिछले कुछ दिनों में कैम्प के एक आदमी पर कम से कम पाँच घण्टे बर्बाद कर दिये। और बीस हजार आदमियों की ओर ध्यान तक नहीं दिया। मैं पागल था कि मैंने ऐसा विचार भी किया।"

"तुम कैम्प में किसी एक की भी फिकर नहीं करते," त्रायन बोला। "तुम्हें जिस चीज की फिकर है, वह व्यक्तित्व-रहित शासन-व्यवस्था मात्र है। कैम्प के आदमियों को इस मशीन में नहीं मिलाना चाहिये, जिसका मतलब है कार्ड-इन्डैक्स, टाइपराइटर और संख्याएँ। यह तुम्हार काम है। नहीं, महाशय। इस कैम्प के बीस हजार निवासियों से तुम्हें कभी कुछ भी सरोकार नहीं रहा। ये बीस हजार कैदी, रक्त; मांस और आत्मा के बने हैं। वे कष्टों और श्रद्धा से बने हैं, आकांक्षाओं और क्षुधा से बने हैं, आशा और निराशा से बने हैं तथा स्वप्नों से निर्मित हुए हैं।

"दूसरी ओर तुम्हें न तो उनके रक्त-मांस से सरोकार है जो खास हैं और व्यक्तिगत हैं और न उनकी आशाओं तथा निराशाओं से जो और भी अधिक व्यक्तिगत हैं। तुम्हारा क्षेत्र फाइलें और संख्याएँ हैं। तुम व्यक्तिगत रूप से किसी एक भी कैदी से परिचित नहीं हो। जब तुम्हें किसी एक की भी चिन्ता नहीं है तो तुम बीस हजार की चिन्ता करने की बात मुँह से निकाल ही कैसे सकते हो? यह हास्यास्पद है। तुम विचारों और सारों से ताल्लुक रखते हो, तुम और जैकबसन; तथा लोगों से नहीं। यहीं और अभी, मैं भी तुम्हारे लिए मानव के अतिरिक्त और सब कुछ हूँ। तुम्हारे लिए मैं बीस हजार का बीस हजारवाँ हिस्सा मात्र हूँ। इसी लिए तुम्हें समय का अपव्यय करने का क्लेश होता है। तुमने आज तक मुझे एक व्यक्ति नहीं समझा और तुम कभी समझोगे नहीं। तुमने सम्भवतः अपनी पत्नी को भी एक व्यक्ति करके नहीं माना। यह ठीक है कि वह तुम्हारी पत्नी है, अथवा तुम्हारे बच्चों की माँ है अथवा तुम्हारी घरवाली है, किन्तु उसका मानवी व्यक्तित्व नहीं। यह सब होने पर भी सच्चाई यह है कि उसके आवश्यक व्यक्तित्व के बिना, उसका अस्तित्व नहीं। और तुम अपने आपको भी अपनी पत्नी और माता-पिता से कम पहचानते हो।

"यथार्थ में इस पृथ्वी पर तुमने कभी एक भी प्राणी को नहीं पहचाना। यदि तुमने पहचाना होता तो तुम कभी यह शिकायत न करते कि तुम किसी एक व्यक्ति की चिन्ता करके समय का अपव्यय करते रहे हो, क्योंकि सभी मानव समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् हैं। तुम्हें आदमी का केवल एक ही पहलू दिखाई दिया है। लेकिन जिस प्रकार एक ही पहलू से त्रिघात नहीं बनता उसी प्रकार एक ही पहलू से देखने से आदमी नहीं रहते।"

सिपाही यह सूचना देने के लिए अन्दर आया कि रोगी-शकट-बाहर प्रतीक्षा कर रहा है।

"मैं अपने मित्र, जॉन मारित्ज़ से विदा लेना चाहूँगा," त्रायन बोला।

"तुम्हें दूसरे कैदियों से सम्बन्ध स्थापित करने की आज्ञा नहीं है ।"

त्रायन ने बोरगो मास्तर की ओर पीठ करली। सिपाहियों ने उसे एक कम्बल में लपेट लिया और एक पार्सल की तरह उठा कर रोगी-शकट पर रख लिया।

गाड़ी की खिड़की पर काला पर्दा डाल दिया गया। लेकिन त्रायन जानता था कि जॉन गाड़ी को जाते देखने के लिए दरवाजे पर होगा।

त्रायन मन ही मन उसकी बात सोचकर हँसा और बोला—"नमस्कार।"

१४८

"दो अमरीकी कैम्प से एक पागल कैदी ले आये हैं।"

कार्लस्रुहे-जेल-अस्पताल का प्रधान मैडिकल ऑफिसर बिस्तर से निकला, बत्ती जलाई और घड़ी की ओर देखा। रात का एक बजा था। जो सिपाही समाचार लाया था उसने कपड़े पहनने में सहायता की। डाक्टर उत्तेजित अवस्था में कमरे से बाहर आया।

कैदी जब कभी अस्पताल लाये जाते थे तो हमेशा टोलियों में। कैम्पों में जब सब रोगियों की संख्या पूरी सौ न हो जाती तब तक उन्हें अस्पताल नहीं भेजा जाता। असाधारण रोगियों को भी प्रायः तीन-चार सप्ताह प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। जब रोगियों की संख्या पूरी हो जाती तो सारी टोली को एक साथ अस्पताल भेजा जाता। सारे साल में केवल दो अपवाद हुए थे। यह तीसरा था। "यह कैसा पगला आदमी होगा जिसे उन्होंने रात को ऐसे असमय हमारे पास भेजा?" दफ्तर में जाते हुए डाक्टर ने पूछा।

"मैं समझता हूँ कि इसकी हालत काफी खराब होगी," सिपाही बोला। "मैंने उसे अभी तक देखा नहीं। वह रोगी गाड़ी में सोया था। लेकिन जब दो अमरीकी इसे ऐसे असमय यहाँ लाये हैं तो इसकी हालत अवश्य खराब होगी।"

बाहर ठंड थी। डाक्टर अभी गरम बिस्तर में से निकला था। कैदी के प्रवेश-पत्र पर हस्ताक्षर करते समय भी वह काँप रहा था।

दोनों अमरीकी रोगी-गाड़ी में वापिस जा चढ़े और उसे हाँक ले गये। डाक्टर वापिस बिस्तर में जा लेटा। उसने रोगी की परीक्षा करने का खयाल छोड़ दिया। इस समय अत्यधिक ठंड पड़ रही थी। लेकिन उसने हिदायत दे दी कि रोगी को तुरंत ठाक वार्ड में ताले में बन्द कर दिया जाय।

आयन नहीं जानता था कि वह अपने मुकाम पर पहुँच गया है। उसे यह भी मालूम नहीं था कि रास्ते में गाड़ी के पहिये में एक छेद हो गया था जिसने आधी रात तक उन्हें वहीं रोके रखा। उसे समय तक की जानकारी नहीं थी। उसकी आँख उस समय खुली जब उसे स्ट्रेचर पर अस्पताल के आँगन में से ले जाया जा रहा था। उसने तारों भरा नीला आकाश देखा था। "आकाश गंगा," वह बोला। वह आकाश के महान् श्वेत-पथ को देख कर मुस्कराया। तब उसे बरगो-मास्तर के शब्द याद आये : "हम तुम्हें एक अस्पताल में भेज रहे हैं जहाँ तुम्हें जबर्दस्ती खिलाया जायगा।" आयन ने निश्चय किया कि वह किसी प्रकार की सहायता न स्वीकार करेगा "जब तक मुझमें होश बाकी है तब तक मेरा इरादा खाना-पीना एक दम अस्वीकार करने का है।"

जिन सिपाहियों ने उसे "आकाश गंगा" कहते सुना था, मजाक करना आरम्भ किया। उन्होंने स्ट्रेचर नीचे रख दिया। उनमें से एक उस पर झुका और व्यंग के साथ बोला।

"यहाँ हम हैं—यहाँ आकाश-गंगा है !"

त्रायन ने मजाक का मजा नहीं लिया। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसे लगा कि किसी ने उसे हाथों पर उठा कर बिस्तर पर रख दिया है।

१४६

जिस कमरे में लेटा था त्रायन ने उसमें चारों ओर नजर दौड़ाई। छत में लगे हुए लैम्प के चारों ओर लोहे के तारों की जाली थी और खिड़की में लोहे की भारी-भारी सलाखें। वार्ड में चार पलँग थे, जर्मन सैनिक वर्दी पहने हुए दो रोगी परस्पर बातें कर रहे थे। जब त्रायन को अन्दर लाया गया, उन्होंने मुड़ कर देखा तक नहीं और बातें करते रहे। वे दोनों तरुण थे। तीसरा रोगी सिर पर कम्बल ओढ़े लेटा था। कम्बल के दूसरे सिरे पर बाहर निकले हुए बूटों के अतिरिक्त उसका कुछ भी और दिखाई न देता था। त्रायन को आश्चर्य था कि रोगी बूट पहने-पहने क्यों सो गया।

दरवाजे पर अस्पताल की सफेद वर्दी पहने एक वार्डर था। उसका चौड़ा भारी सिर बारगो मास्तर स्मिथ के समान था; काठ का सिर, जिसके चेहरे की पेशियाँ जड़ीभूत हो गई थीं या मर गई थीं। उसकी आँखें भी निर्जीव और चिकनी थीं। यह किसी मुर्दे का सिर नहीं था किन्तु एक ऐसे आदमी का जो कभी जीवित रहा ही नहीं।

वार्डर उसकी ओर आया।

उसने एक बच्चे को गाली देने के समान, त्रायन की ठुड्डी में चिकोटी काटते हुए कहा : "और तुम हमें कौन सी कहानी सुनाओगे ?"
बिना उत्तर दिये त्रायन ने मुँह मोड़ लिया।

"तो तुम हमें कोई कहानी नहीं सुनाने जा रहे हो?" वार्डर बोला।

"ओह! यह तो कोई मौनी बाबा है?" उसने उसके गाल को थपथपाया।

"जैसे चाहो वैसे रहो," वह बोला।

तब वह वापिस चला गया और दरवाजे पर बिछी अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

१५०

"उन्होंने मुझे पागल-खाने में बन्द कर दिया, क्योंकि मैंने भूख-हड़ताल की।" त्रायन ने अपने ओंठ काटे। उसकी सारी क्रान्ति जाती रही थी और अब उसके मन में लड़ पड़ने का दृढ़ मनोबल था।

"मैं एक पागल-खाने में हूँ," उसने अपने मन में कहा। "यह एक दिमाग की लहर थी! उससे पहले मुझे कभी इसकी जानकारी नहीं हुई, उन उपन्यासों तक में नहीं जिनमें रूसी-जेलखानों की यन्त्रणाओं का वर्णन रहता है। वे सिद्ध करना चाहते हैं कि मेरी भूख-हड़ताल पागलपन का परिणाम है। लेकिन वास्तविक जीवन में कुछ बातें इतनी सरल और इतनी आसान नहीं होतीं। मैं अभी समाप्त नहीं हुआ हूँ।"

त्रायन ने अपनी मुट्ठी बाँधी :

"पहला कार्य्य तो यही है कि मैं उन्हें यह सिद्ध कर दूँ कि मेरा दिमाग ठीक है," उसने अपने आप को कहा। वह वार्डर तक पहुँचा। उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, और उसे दीवार का सहारा लेना पड़ता था।

"तो तुम अपनी छोटी कहानी ले आये ?" वार्डर ने पूछा। "मैं जानता था कि तुम्हारी एक कहानी अवश्य होगी।" वह दाँत पीस रहा था।

"हर कोई जो यहाँ आता है, एक कहानी लिये आता है। लेकिन प्यारे, इस समय मेरे पास तुम्हारी कहानी सुनने के लिए अवकाश नहीं है। तुम थोड़ी प्रतीक्षा करो, और मुझे कल सुना देना, परसों सुना देना, अथवा अगले महीने, और हो सकता है अगले वर्ष। तुम मुझे अपनी कहानी अनेक बार सुनाओगे। कोई जल्दी नहीं है।"

वार्डर के हाथ में एक अखबार था और वह उसे ही पढ़ते रहना चाहता था।

"वह उस सुदूर कोने में तुम्हारी चारपाई है। अब जाओ और चुपचाप पड़ रहो। किसी दूसरे बिस्तरे में मत जा लेटना। समझे ?"

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ," त्रायन बोला।

"मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते हो," वार्डर ने भरभराई हुई आवाज में जवाब दिया। "लेकिन मेरे पास अब तुम्हारे लिये समय नहीं है। जाओ, और अपने बिस्तर पर बैठ जाओ। तुम्हें यहाँ एक अच्छे लड़के की तरह रहना चाहिये, अन्यथा चाबुक से पीटे जाओगे।"

उसने मेज की दराज में से एक चाबुक निकाला और उसे दिखाकर फिर भीतर रख दिया।

त्रायन समझ गया कि बोलना बेकार है। वह कुछ भी कहे, उसे एक पागल की बकवास से अधिक महत्त्व नहीं दिया जायगा। वह अपने बिस्तर पर वापिस चला गया।

१५१

"मुझे जेल में डालना पर्याप्त नहीं था। अब उन्होंने मुझे जेल के पागल-खाने में डाला है।" त्रायन ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

उसने दूसरे दिन के लिए युद्ध की योजना बनाना पसन्द किया होता, किन्तु उसमें इसकी कुछ सामर्थ्य नहीं थी। वह अभी भी मुट्ठी बन्द किये सो गया।

"उठो!"

त्रायन चौंक गया। उसकी अभी आँख लगी ही थी। दो सिपाहियों में से एक उसकी चारपाई के पास खड़ा था। यही उसे स्ट्रैचर पर ले गया था और इसी ने "आकाश-गंगा" के बारे में मजाक किया था। त्रायन ने उसकी आवाज पहचान ली।

"जो कुछ तुम्हारी जेब में हो, वह सब मुझे दे दो।"

त्रायन उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी जेब में हाथ डाला। वह काँप रहा था। उसने अपना रूमाल निकाला और सिपाही को थमा दिया। दूसरी जेब से उसने पाइप निकाला और वह भी उसे दे दिया। उसकी छाती पर की जेब में एक छोटी मूर्ति थी—सन्त एण्टनी की मूर्ति। उसने इसकी ओर देखा और अन्त में वह भी सिपाही को सौंप दी।

"क्या तुम्हारी जेब में और कुछ नहीं है?"

"नहीं," त्रायन का उत्तर था। "मेरे पास यही कुछ है।"

"अपने हाथ ऊपर उठाओ," सिपाही ने आज्ञा दी।

त्रायन ने अपने हाथ ऊपर उठाये, किन्तु केवल अपनी छाती तक। उसकी आँखों के सामने धुंध आ गई। वह इससे अधिक अपने हाथ न उठा सका।

"अपने हाथ ऊपर उठाओ," सिपाही ने दुबारा आज्ञा दी।

"मैं असमर्थ हूँ," त्रायन ने उत्तर दिया। "मैं बीमार हूँ। मुझे चक्कर आता है।"

सिपाही ने उसके हाथ पकड़े और उन्हें उसके सिर के ऊपर उठा दिया। त्रायन अपने बाजुओं के बोझ के नीचे ही दबा जा रहा था, जो पत्थर के सदृश भारी हो गये थे। इससे पहले कभी उसे अपने बाजू इतने भारी न लगे थे। वह उसके सिर के ऊपर इतने जड़ हो उठे जैसे पानी के पाइप हों।

सिपाही ने उसकी जेबों की तलाशी ली। त्रायन को उन अपरिचित् हाथों का ज्ञान था, जो उसकी जेबों में नहीं किन्तु उसकी देह पर तथा उसकी चमड़ी के बीच में घूम रहे थे।

"अपने हाथ नीचे करो।"

सिपाही ने अपने हाथ नीचे गिरा लिये।

"अपने बूट के फीते खोलो।"

"उसे छोड़ दो," ड्यूटी-वाला वार्डर बोला। "उसकी ओर देखो। मोम की तरह पीला पड़ गया है।"

त्रायन को बिस्तर पर लिटा दिया गया। उसके बूट के फीते निकाल लिये गये। तब उन्होंने उसका पाजामा खिसकाया, उसमें से नाड़ा निकाला और उसे ले गये। तब उन्होंने उसकी नाक पर से चश्मा उतार लिया।

"मेरा चश्मा मत लो," त्रायन ने बहस की। उसे बहुत कम दिखाई देता था।

"मैं समझता हूँ कि इससे तुम अपनी नसें काट डालना चाहते हो!"

"मैं बिना चश्मे के कुछ देख नहीं सकता।"

"यहाँ तुम्हारे लिए देखने को कुछ नहीं है।"

सिपाही ने ऋायन के चश्मे, रूमाल, पाइप और मूर्ति का एक पार्सल बनाया। इतनी ही दुनियावी सम्पत्ति उसके पास रह गई थी। तब उसने पार्सल लिया और चल दिया।

१५२

"उठो और खाओ!"

पागल-खाने में यह ऋायन का पहला दिन था। उसने शोरवे के उस बरतन की ओर देखा, जो वार्डर उसके लिए हाथ में लिये था।

"मैं नहीं खाऊँगा।"

"यदि तुम समझते हो, कि यहाँ तुम जैसा चाहो वैसा कर सकते हो, तो तुम बड़ी गलती पर हो," वार्डर बोला। उसने बरतन उसके पास जमीन पर रख दिया और दूसरे पलँग की ओर बढ़ा।

"मैं पिछले छः दिन से भूख-हड़ताल पर हूँ।" ऋायन बोला।

"मेरे प्यारे! यहाँ सभी कोई भूख-हड़ताल पर हैं। अकेले तुम्हीं ही नहीं हो।"

वार्डर उस रोगी के पास पहुँच गया था, जो अपने बिस्तर के सारे कपड़े सिर पर ओढ़े पड़ा था और जिसका कीलों वाला बूट कम्बल में से बाहर दिखाई दे रहा था। वार्डर ने बिस्तर के कपड़ों को वापिस खींचा उनके नीचे सफेद दाढ़ीवाला एक बूढ़ा सो रहा था। उसने व्याकुल दृष्टि से वार्डर की ओर देखा और तब तकिये में मुँह छिपा लिया।

"तुम क्या चाहते हो?" उसने पूछा और फिर तकिये के नीचे अपना सिर छिपा लिया।

"दादा, उठो," वार्डर ने आज्ञा दी। "तुम्हें खाना खिलाने का समय हो गया है।"

दो पागल तरुण आये और उसकी चारपाई के पास इस प्रकार कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो गये मानों उन्हें एक दूसरे से पृथक् होने डर लगता हो। वार्डर उन्हें 'बुल-डॉग' कह कर पुकारता था।

"बुल-डॉग,' उस पर कूद पड़ो," वार्डर बोला, मानों वह कुत्तों को ललकार रहा हो।

बुल-डॉगों में से एक ने बूढ़े को पीछे से, बगल के नीचे से, पकड़ा। दूसरे ने सिर पकड़ा और उठाकर बिठा दिया।

"धीरे करो, इसकी हड्डियाँ मत तोड़ो," वार्डर ने हँसते हुए कहा।

बूढ़ा रो रहा था। उसने अपनी ठोड़ी सटा ली थी और उसकी आँखें जमीन पर थीं।

"दादा, अपना मुँह खोलो," वार्डर बोला। "बकरी तुम्हें दूध पिलाने आई है।"

बूढ़े ने अपनी ठोड़ी छाती से सटा ली और जबड़ों को पूरे जार से बन्द कर लिया।

"इसकी थुथनी खोल दो, लेकिन धीरे करना।"

बुल-डॉग बिस्तर पर झुक गये, अपनी उँगलियाँ बूढ़े के मुँह में डाल दीं और जबड़ों को पृथक् कर दिया। एक हाथ से वार्डर ने उसके नासिका-छिद्रों को बन्द करने के लिये उसकी नाक पकड़ ली, और दूसरे से उसके मुँह में शोरवा उँडेल दिया।

रोगी ने 'बुल-डॉगों' छाती पर सारा शोरवा थूक दिया। वे खिल-खिलाकर हँस पड़े। वार्डर ने बूढ़े के मुँह में दूसरा चम्मच उँडेल दिया। इस बार वह थूकने में सफल नहीं हुआ। खाना उसके गले में जा लगा था, और गला घुटने से बचने के लिये उसे निगलना पड़ा। वह नाक के द्वारा साँस नहीं ले सकता था, क्योंकि वार्डर उसके नासिका-छिद्रों को मसल रहा था।

"मेरी साँस घुट रही है," वह बोला।

यही क्रम अनेक बार दोहराया गया। बीच-बीच में बूढ़ा चिल्लाया कि उसकी साँस घुट रही है और उसने 'बुलडागों' की पकड़ से छूटने की कोशिश की; लेकिन वे जितनी जोर की पकड़ रख सकते थे, रखे रहे।

"दादा, अब ठीक चल रहा है, क्यों, क्या नहीं?" वार्डर बोला।

बूढ़े का चेहरा मोम की तरह पीला पड़ गया था और उसके माथे पर पसीने के दाने उभर आये थे।

त्रायन ने उस दृश्य की ओर से अपनी आँखें मूँद लीं।

"अरे, डर गये!" वार्डर बोला। "अभी एक मिनट में तुम्हारी बारी आती है।"

"क्या हमें इसे भी खिलाना है?" दोनों 'बुलडॉग' एक साथ बोले।

"अवश्य, यदि यह एक अच्छे लड़के की तरह नहीं बरतता।"

'बुलडॉगों' ने उस आदमी की ओर और अधिक ध्यान नहीं दिया। उनकी आँखें त्रायन की गरदन और जबड़ों पर गड़ी थीं। त्रायन झुका, शोरबे का बरतन उठाया और बिना चबाये ही निगलने लगा। जब समाप्त कर चुका तब बोला :

"तुम्हारा कहना ठीक है। जो आदमी पागलखाने में बन्द कर दिया गया हो और तब भी खाने से इनकार करे, निश्चयात्मक रूप से पागल है। पागल भूख-हड़ताल नहीं कर सकते। वे अपने कामों के लिए उत्तरदायी नहीं होते। लेकिन मैं पागल नहीं हूँ। इसी लिये मैंने खाने का निश्चय कर लिया है। किन्तु, इसका यह मतलब नहीं कि मैंने संघर्ष छोड़ दिया है।"

१५३

"किसी न किसी तरह, मुझे डाक्टरों को यह सिद्ध कर देना चाहिये कि मेरा दिमाग ठीक है," त्रायन ने अपने मन में कहा। उसे

सिर-दर्द था। जिस भोजन को उसने अभी निगला था वह जस्ते के ढेले की तरह उसके पेट में पड़ा था। लेकिन उसने जैसे-तैसे अपने आपको सीधा खड़ा किया। उसने मुस्कराने का प्रयत्न किया। तब वह वार्डर के पास गया।

"मैं इस विभाग के इन्चार्ज डाक्टर से बातचीत करना चाहता हूँ," वह बोला।

"तुम्हें उसके आने के दिन की प्रतीक्षा करनी होगी," वार्डर बोला। "जब वह आये, उस दिन तुम उससे बात कर सकोगे।"

"क्या मैं इससे पहले उसे नहीं मिल सकता ?"

"इस वार्ड के रोगी डाक्टर को नहीं बुला सकते।"

"निस्सन्देह, डाक्टर इसके लिये नहीं आ सकता कि कोई पागल उसे देखना चाहता है, लेकिन मैं पागल नहीं हूँ।"

"यदि तुम पागल नहीं हो, तो तुम क्या समझते हो कि उन्होंने तुम्हें यहाँ क्यों भेजा ?"

"मुझसे मेरी भूख-हड़ताल तुड़वाने के लिये," आयन बोला। "मैं यह तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ। लेकिन अब मैं कुछ खा चुका हूँ। इसलिये अब मुझे पागल समझने का कोई कारण नहीं रह गया है। यदि मैंने खाना अस्वीकार किया होता, तो विरोध का संकेत न समझा जाकर, यह पागलपन का एक लक्षण समझा जा सकता था। लेकिन अब इसका कोई कारण नहीं है।"

आयन ने यकायक देखा कि जितनी देर वह बोलता रहा है, सिपाही समाचार पत्र पढ़ता रहा है। उसने उसके कथन की ओर तनिक ध्यान नहीं दिया है।

"तुम अभी भी समझते हो, कि मैं पागल हूँ। अब जब कि मैंने कुछ खा भी लिया है ?" उसका स्वर काँप रहा था।

"अपने बिस्तर पर जाओ, और मुझे अखबार पढ़ने दो," सिपाही ने आज्ञा दी।

"लेकिन आदमी, मैं तुम्हें कह रहा हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," वार्डर बोला। "अब बिस्तर पर जाओ और चुप हो जाओ। यहाँ तुम्हें अच्छे लड़के की तरह रहना चाहिये। शरारती लड़कों को चाबुक लगते हैं।"

१५४

उस दिन डाक्टर अपने दौरे पर नहीं आया। मध्याह्न के समय एक वार्डर एक 'बुल-डॉग' को कमरे से बाहर ले गया। आधे घंटे के बाद उसे एक स्ट्रैचर पर लाया गया और कमरे के बीचोंबीच लिटा दिया गया। उसके नासिका-रन्ध्र, जिनमें रूई-ऊन ठूँसी हुई थी, काँप रहे थे। उसका माथा पीला था। पगले कुत्ते जैसी, हरी झाग, उसके मुँह के एक कोने से निकल रही थी। उसके ओठ काँप रहे थे।

"इसे क्या हुआ?" ग्रायन ने पूछा।

दूसरा 'बुल-डॉग' अपने मित्र के काठ बने शरीर को देखकर हँस रहा था। शरीर तड़प रहा था। टाँग और हाथ की मांसपेशियाँ स्वतंत्र रूप से ऊपर-नीचे जा रही थीं, मानों उनका शरीर से किसी प्रकार का सम्बन्ध न हो। उसकी चमड़ी एकदम अनोखे रंग की हो गई थी। अब वह किसी जीवित आदमी की चमड़ी नहीं थी। उसकी रीढ़ की हड्डी, निष्प्राण वस्तु की तरह कठोर थी। उसे जो 'दौरे' आते थे और जो उसे ऊपर से नीचे तक हिला देते थे, वे भी किसी जीवित प्राणी को लगने वाले झटके नहीं थे, वे एक मशीनी-गुड़िया को अपने से लगनेवाले झटकों की तरह थे। उसके आसपास जीवित-वस्तु एक ही थी—सफेद-हरे रंग की झाग, जो उसके मुँह से निकलकर उसकी छाती और स्ट्रैचर के कैनवस पर बिखर गई थी।

"बुल-डॉग," को क्या हुआ ?" ब्रायन ने फिर पूछा।

"कुछ नहीं," वार्डर ने उत्तर दिया। "केवल इन्जैक्शन।"

"कैसे इन्जैक्शन ! वह इस प्रकार तड़प क्यों रहा है ?"

"मेरे प्यारे, अधिक जिज्ञासा मत प्रकट करो," वार्डर बोला। "तुम्हें भी अनुभव होगा। सम्भवतः कल।"

"कल ?"

ब्रायन ने स्ट्रेचर पर ऐंठते हुए। उसके लकड़ी बने शरीर की ओर देखा।

"इसमें तमाशे की क्या बात है ?" वार्डर बोला। तुम मेरा विश्वास नहीं करते ? हर किसी को इन्जैक्शन लेने होते हैं," वार्डर बोला। उसने 'बुल-डॉग' की नाक में और रुई और ऊन ठूँस दी और उसके गाल पर चिकोटी काटी। 'बुल-डाग' में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं हुई।

"तुम चाहो तो इसके बदन में से चाकू से फाँकें काट सकते हो। इसे पता नहीं लगेगा। जब तक दौरा है तब तक नहीं। तुम सभी को इन्जैक्शनों की जरूरत है। वे स्नायुओं को उत्तेजित करते हैं। ज़रा देखो, इससे क्या मजे का सरकस कराया जा सकता है।"

ब्रायन बिस्तर पर बैठ गया और अपना सिर हाथों में गड़ा लिया। दरवाजा खुला। आवाज हुई; किन्तु यह डाक्टर नहीं था। यह एक सिपाही था, जो दूसरे 'बुल-डॉग' को लेने आया था। उसने उसे बाजू से पकड़ा और कमरे से बाहर गया।

थोड़ी देर बाद उसे भी एक स्ट्रैचर पर लाया गया और उसके मित्र के पास लिटा दिया गया। उसकी नाक में भी रुई-ऊन की फूहियाँ ठूसी हुई थीं और पागल-कुत्ते के थूक की तरह उसके मुँह से भी हरी झाग निकल रही थी। स्ट्रेचर पर उसके अंग तड़फड़ा रहे थे।

तब वे उस बूढ़े के लिए आये और उसे भी स्ट्रैचर पर लिटा गये।

ब्रायन ने तीनों के बदन को देखा। यद्यपि वे परस्पर असम्बन्धित थे, तो भी एक ही ताल पर झटके खा रहे थे।

"यह कैसे इन्जैकशन हैं?"

"कारदिया-जोल," वार्डर ने कहा। "स्नायु-संस्थान के लिये झटके। यह दिमाग को हिला देता है और बदन के (मकड़ी के) जालों को साफ कर देता है।"

वार्डर को हँसी आ गई।

ब्रायन ने तीनों मानवी-देहों की ओर देखा। उनकी गति-विधि, मशीन-मानव के झटकों की तरह मशीनी थी। उनके नासिका-छिद्र समान समय पर फूलते और काँपते थे, और समान ताल तथा वेग के साथ। उनकी छातियाँ पिचकारी के डट्टे की तरह ऊपर नीचे उठती थीं।

तीनों देहों में जीवन का जो कुछ अंश शेष था, वह मांस-पेशियों को अपने आप लगने वाले झटके थे। इच्छा-शक्ति, प्रेरणाशक्ति, बुद्धि-शक्ति—तीनों समान रूप से मृत थीं। मशीनी-प्रतिक्रिया के अतिरिक्त और कुछ शेष न रह गया था। यह घनी-भूत होकर ऐंठन में परिवर्तित हो गई थी—अपने आप होनेवाली ऐंठन।

अब वह केवल उन तीनों मानवी-देहों को नहीं देख रहा था, जिनके जीवन मशीनी-मानव की तरह के ही प्रतिक्रियाओं की समूह मात्र रह गये थे—किन्तु, अब उसकी नजर पृथ्वी के सभी लोगों पर थी। यह एक मूर्खता-पूर्ण, पागलपन लिये स्वप्न था, किन्तु वह इसे देख रहा था। उसे ऐसा लगा मानो बरगोमास्तर शमित कॉरनवेसथीय के सारे कैम्प को उसी पैशाची-ताल पर नचा रहा है, जैसे उसके पैरों में पड़ी वे तीन मानवी-देहें तड़प रही थीं और केवल बरगो-मास्तर ही नहीं था। जैकबसन, गवर्नर ब्राउन, सैमुअल अब्रमोविचि और दूसरे सभी उसे उसी मशीनी शोर-गुल-पूर्ण ताल पर झटके खाते दिखाई दिये—कारदिया-जोल इन्जैक्शन के तालपूर्ण झटके। सारी की सारी सभ्यता भयानक

झटके खा रही थी। त्रायन ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और चिल्लाया —"मैं नहीं, मैं नहीं।"

१५५

"तुम्हारे रिकार्ड के कार्ड में कहीं भूख-हड़ताल का उल्लेख नहीं है।"

डाक्टर ने त्रायन की ओर सन्देह-भरी दृष्टि से देखा।

"यदि तुम किसी तरह की 'स्ट्राइक' पर होते, तो उसका यहाँ उल्लेख होता," वह बोला। "तुम्हारे कार्ड पर यहाँ इतना ही लिखा है, "गम्भीर दिमागी गड़बड़, आत्म-हत्या का पागलपन, हिंसक प्रवृत्ति के दौरे, उपद्रव करने का पागलपन। स्ट्राइक के बारे में एक शब्द भी नहीं। स्ट्राइक एक बुद्धिपूर्वक जान-बूझ कर किया जानेवाला कर्म है। लेकिन उसके बारे में यहाँ एक शब्द नहीं। सार्टिफिकट पर दो यूनिवर्सिटी-प्रोफेसरों के हस्ताक्षर हैं, जर्मन मैडिकल-पेशे के दो प्रसिद्ध व्यक्तियों के। तुम मुझसे किसका विश्वास करने की आशा रखते हो? तुम्हारा अथवा दो प्रोफेसरों का?"

डाक्टर को निश्चय था कि त्रायन की आरम्भ से अन्त तक की सारी कथा मन-घड़न्त है।

"क्या तुम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हो कि तुम्हारी पत्नी गिरफ्तार है?" उसने पूछा। "मुझे आश्चर्य नहीं होगा, यदि तुम्हारी शादी ही न हुई हो। तुम्हारी विवाह की मुँदरी कहाँ है?"

"यह कैम्प की एक तलाशी में जब्त कर ली गई।"

"यह हो सकता है," डाक्टर बोला, "किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है। जो कुछ तुम्हारे कागज पर लिखा है, मैं उसी के अनुसार चल

सकता हूँ । उत्तेजित मत होना, लेकिन जब तक इसके विरुद्ध सिद्ध न हो मैं इन बातों को मान कर चलता हूँ, तुम्हारी पत्नी पकड़ी नहीं गई । सम्भवतः तुम्हारी शादी ही नहीं हुई, तुम्हारा पिता कैम्प में नहीं मरा, और तुम्हारी गिरफ्तारी सकारण ही हुई । जितनी बातें तुमने मुझे बताई हैं, मैं उन सबको अनसुनी करने के लिये मजबूर हूँ ।"

त्रायन सोच रहा था, "कोई भी अपने बारे में यह कैसे सिद्ध कर सकता है कि उसका दिमाग ठीक है। प्रत्येक शब्द और प्रत्येक गति-विधि जो आज तक सामान्य प्रतीत होती रही है, बारीकी से अध्ययन करने पर एक पागल-आदमी के लक्षण प्रतीत होते हैं । वही शब्द, वही वाक्यांश, वही सम्मतियाँ जो प्रतिदिन के जीवन में सामान्य और बुद्धि-संगत प्रतीत होती हैं, एक पागलखाने में पहुँच कर उग्र पागलपन के लक्षण समझी जाती हैं । सही दिमाग और पागलपन के बीच यथार्थ विभाजक रेखा खींच सकना असम्भव है । तो भी मुझे यह सिद्ध करना ही है कि मैं पागल नहीं हूँ ।"

"डाक्टर, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी मदद करें," वह बोला ।

"मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"मेरा विश्वास करें ।"

"इससे तुम्हें कुछ लाभ न होगा," डाक्टर का उत्तर था ।

"मैं यह नहीं चाहता कि तुम मुझे कहो कि तुम मेरा विश्वास करते हो, किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम वास्तव में मेरा विश्वास करो," त्रायन बोला । "और मैं यह भी चाहूँगा कि आप मेरी पूरी-पूरी डाक्टरी परीक्षा करें ।"

"यह बिलकुल बेकार है । डाक्टरी परीक्षा तो अनिवार्य है ही । तुम्हारी पहली माँग मैं स्वीकार नहीं कर सकता । मैं एक वैज्ञानिक हूँ । मैं केवल उसी बात पर विश्वास कर सकता हूँ, जिसे मैं एक वास्तविक

घटना के रूप में सिद्ध कर सकूँ । मैं बिना प्रमाण के विश्वास नहीं कर सकता ।"

"एक मानव के नाते मेरा विश्वास करें ।"

"मैं एक वैज्ञानिक हूँ," डाक्टर ने जोर देकर कहा । "मेरे पेशे से सम्बन्धित-अन्तरात्मा मुझे इस बात की आज्ञा नहीं देती, कि जब तक कोई बात ठोस प्रमाणों से प्रमाणित न हो जाय तब तक मैं उस पर विश्वास करूँ ।"

१५६

ब्रायन की डाक्टरी परीक्षा की गई । दोनों हाथों की नसों से खून लिया गया, तब उसकी अँगुलियों के सिरों से एक और नमूना लिया गया । उसने उपेक्षा भाव से दे दिया । आदमी को अपना रक्त देने के लिए तैयार होना चाहिये—सदैव और सर्वत्र । लेकिन रक्त लेना काफी नहीं था । पहली शाम को उन्होंने उसकी उसकी खोपड़ी में से तरल पदार्थ क चन्द बूँदें निकालने के लिये, उसकी रीढ़ की हड्डी में पिचकारी घोंपी । उसने पीड़ा सहन कर ली, जो अत्यन्त तीव्र थी । यही क्रम दोहराया गया । ब्रायन ने बिना शिकायत के सहन कर लिया । वह जानता था कि आदमी को मूल्य चुकाना पड़ता है—अपने रक्त से ही नहीं, अपने दिमाग से भी; अन्यथा उसका जीने का अधिकार जाता रहता है ।

उन्होंने उसकी गिल्टियों को उत्तेजित किया और अन्तरतम से मल निकाला । इसके बाद उसे शीशे के टुकड़ों के बीच रखकर तीव्र प्रकाश में उसकी परीक्षा की । उसका पेशाब, उसका थूक, नाना ग्रन्थियों तथा अंतड़ियों से सम्बन्धित अंगों से निकला हुआ रस—सभी चीजों की

अणुवीक्षण-यंत्र द्वारा परीक्षा की गई, परीक्षण, नलियों में रखा गया, तोला गया और जेलखाने की प्रयोग शाला में छाना गया।

डाक्टरों ने उसकी छाती का और बाद में उसकी खोपड़ी का एक्स रे लिया। उन्होंने उसके हड्डियों के ढाँचे को, एक-एक हड्डी करके, एक-एक जोड़ कर एक्स-रे यन्त्र द्वारा देखा।

वे उस जख्म की खोज में थे जिसके कारण वह मानव के लिये न्याय की पुकार मचाता था। जख्म अन्यत्र था, किन्तु डाक्टर उसे त्रायन के शरीर में ही कहीं न कहीं स्थापित करना चाहते थे, उसके फेफड़ों में, उसके दिमाग में, उसके रक्त में, उसकी हड्डियों में और उसकी हड्डियों की चर्बी में ही। उसने उन्हें खोज करने दी।

एक-एक करके उन्होंने उसकी माँस-पेशियों और प्रतिक्रियाओं की परीक्षा की, उसके घुटनों की, उसके हाथों की और उसके पेट की।

उन्होंने उसके हृदय की धड़कन सुनी, उसके रक्त की गति सुनी; उन्होंने उसके फेफड़ों में छोटे से छोटा विकार ढूँढने का प्रयत्न किया।

उसे तराजू पर चढ़ाया गया और तोला गया। उन्होंने उसकी ऊँचाई नापी, कमर नापी, छाती नापी, कलाई नापी और गिट्टे नापे। उन्होंने उसका मुँह खोला, दाँतों की परीक्षा ली, उन्हें गिना और बजा कर देखा। उन्होंने उसकी जिह्वा की परीक्षा ली मानो यह प्लेट पर कोई अस्वादिष्ट तश्तरी हो। उसके सारे शरीर की परीक्षा ली गई, मानो वह कोई वस्तु हो जिसमें कोई छिपा हुआ दोष हो। अब यह किसी काम का था अथवा नहीं?

तब मानसिक रोगों के डाक्टर ने उसे हाथ में लिया। डाक्टर उससे प्रातःकाल, दोपहर और रात हर समय बात करता। अत्यन्त निर्दोष प्रश्नों के उसके दिये गये उत्तर लिख लिये गये। डाक्टर पागलपन के चिह्नों की खोज में लगे थे जैसे खुफिया पुलिसवाले अपराध के स्थान पर अँगुलियों के चिह्नों की खोज करते हैं। वह अपने बचपन के बारे में

बोलने के लिए उत्साहित किया गया, अपनी माता और बहन के बारे में, अपने पिता के बारे में और अपनी परिचित स्त्रियों के बारे में। त्रायन अचेतन मन के अँधेरे में छिपे गुप्त रास्तों से परिचित था। उसने डाक्टरों का वहाँ तक प्रवेश होने देने में भरसक सहायता की।

उसकी आत्मा को नंगा कर दिया गया था, ठीक उसी प्रकार जैसे वह कोई पुराने तथा मैले कपड़ों की अलमारी हो। उनसे कोई बात बचाई नहीं गई और वे भी बिना किसी प्रकार के संकोच अथवा घृणा के उसके प्राइवेट जीवन के गुह्यतम स्थलों को सूँघने लगे।

अन्त में परीक्षा समाप्त हुई।

"तुम्हारा दिमाग सोलहों आने ठीक है," डाक्टर बोला। "निस्सन्देह थोड़ा गोल-माल, पोषण-तत्त्व की कमी, और सामान्य से कम वजन। इसके अतिरिक्त और सब कुछ ठीक है। कुछ रक्ताभाव, अपर्याप्त पोषण-तत्त्व के कारण सूजे हुए जोड़, और इसी कारण से दाँत भी कुछ प्रभावित। सामान्य दौर्बल्य के कारण नब्ज कुछ कमजोर है, फेफड़ों पर एकाध निर्दोष-चिह्न और मामूली वात-रोग। लेकिन ये सभी सामान्य शिकायतें हैं और किसी महत्त्व की नहीं।"

"तो क्या तुम्हें पूर्ण सन्तोष है कि मैं पागल नहीं हूँ?" त्रायन ने पूछा।

वह थक गया था, उतना ही जैसे ओलिव के पर्वत पर ईसा।

"मैं तुरन्त अस्पताल से मुक्त होना चाहूँगा," त्रायन बोला।

"तुम्हें हम डाक्टरी-वार्ड में भेज दे रहे हैं," डाक्टर बोला। शारीरिक तौर पर तुम बहुत दुर्बल हो।"

"मैं कैम्प वापिस जाना चाहता हूँ," त्रायन बोला।

"यह तुम्हारी बड़ी मूर्खता है।"

"मैं यथाशीघ्र कैम्प वापिस जाना चाहता हूँ।"

सात दिन के बाद त्रायन कैम्प में वापिस चला आया। वह अपने साथ तमाम डाक्टरी सार्टिफिकेट ले आया था, जिनसे प्रमाणित

होता था कि वह पागल नहीं है, कभी पागल रहा ही नहीं है। उसकी आँखें विजय की प्रसन्नता से चमक रही थीं, लेकिन उसका सारा शरीर थकावट और कष्ट से एक छाया की तरह काँप रहा था।

१५७

"हो सकता है कि अनायास गिरफ्तारी के पक्ष में एक तरीके के तौर पर कुछ कहा जा सके, लेकिन यह अपने में किसी की गिरफ्तारी का पर्याप्त कारण नहीं हो सकती," त्रायन बोला। "एक आदमी को जेल में डालने से पहले, उसके साथ एक अपराधी का व्यवहार करने से पहले, उसे तिल-तिल कर मार डालने से पहले, उसके विरुद्ध कुछ होना चाहिये। उस आदमी से कुछ तो अपराध हुआ रहना चाहिये। तो भी मैंने क्या अपराध किया है? अथवा मेरी स्त्री ने? मेरे पिता ने क्या अपराध किया? लॉन मारित्ज़ ने कौन-सा अपराध किया? लेकिन जब मैंने एक बड़े स्वाभाविक उद्वेग की अवस्था में—पन्द्रह महीने कैद रहने के बाद—यह प्रश्न किया, तो तुमने मेरी पुकार को पागलपन समझा। ज्यों ही आदमी की न्याय और स्वतन्त्रता की माँग को 'पागलपन' करार दे दिया गया, आदमी का अस्तित्व समाप्त। चाहे वह इतिहास में सब से अधिक उन्नत सभ्यता से सम्बन्धित हो, यह उसके लिये किसी काम का न होगा।"

लेफ्टिनेण्ट जैकबसन ने एक सिगरेट जलाई। ज्योंही त्रायन अस्पताल से वापिस लौटा, जैकबसन ने उसे वापिस बुला भेजा। उसे अफसोस होने लगा था।

"तुम यूरोपी लोग हर चीज को अत्यधिक दुःखान्त बना देते हो," वह बोला। "यह तुम लोगों की विशेषता है।"

"हो सकता है कि तुम्हारा कहना ठीक हो," त्रायन बोला। "यह हमारी एक कमी है। लेकिन यह इससे कहीं अधिक भयानक बात है कि आदमी पास खड़ा रहे और किसी के दुःखद-प्रकरण को, आदमी की मरण-वेदना को मुस्कराहट के साथ देखता रहे। यह एक अपराध अथवा कमी से कहीं अधिक गम्भीर बात है।"

"मैंने तुम्हारे लिये कुछ करने की कोशिश की," जैकबसन बोला। "लेकिन मैं कुछ कर नहीं सका। मैंने अधिकारियों से तुम्हें रिहा करने के लिये कहा।"

"मुझे विश्वास है कि तुमसे जो कुछ हो सकता था, तुमने किया," त्रायन बोला। "लेकिन तुम कर नहीं सकते, और कभी भी सफल नहीं होगे। अब कोई भी आदमी न अपने को मुक्त कर सकेगा और न किसी दूसरे को। आदमी अल्पमत में है, और उसके हाथ बँधे हैं। हथकड़ियाँ अनायास पड़ रही हैं। तुम भी जंजीर में बँधे हो। यान्त्रिक सभ्यता की हथकड़ियाँ और बेड़ियां हाथों और गिट्टों में लटक रही हैं। पाश्चात्य सभ्यता की हमारे लिये एक ही भेंट बची है : हथकड़ियाँ।"

"कैम्प वापिस जाओ," जैकबसन बोला। "विश्राम करो। तबियत हलकी रखो। फिर अपने आपको मूर्ख मत बनाओ।"

"मैं वही कुछ करूँगा जो इतिहास की अब इस विलम्ब की घड़ी में आदमी कर सकता है।"

"तुम जाओ, गम्भीर चिन्तन को दूर हटाओ," जैकबसन बोला। "मुझे अच्छा नहीं लगता कि तुम्हारे चेहरे पर इतनी उदासी देखूँ। एक सिगरेट लो!"

"खुशी से।"

त्रायन ने सिगरेट जलाई और तब पूछा।

"क्या तुम्हें कभी यह अनुभव नहीं होता कि हम वह दर्शक हैं जो तमाशा समाप्त होने के बाद भी जबर्दस्ती जमे बैठे हैं? हमारी इस जिद्द का कोई अर्थ नहीं। अन्त में हम सब बाहर कर दिये जायेंगे। हाल

को हवा मिलनी चाहिये और कुर्सियों की सफाई होनी चाहिये। महा-द्वीपों की वायु बदलनी चाहिये। दूसरा तमाशा आरम्भ होने को है। इतिहास का नाटक चालू रहना चाहिये। कल अर्जियों में छेद कर दिये गये थे—आदमी की अर्जियाँ कि उसे जीने दिया जाय, यान्त्रिक सभ्यता के शासकों के नाम उसकी अपील। उसके प्राण-दण्ड के विरुद्ध की गई अपील रद्द कर दी गई थी। यह पढ़ी तक नहीं गई थी। 'मनोरञ्जन' का प्रतिकूल स्वागत हुआ था। 'सुखद अन्त' नहीं।

"कल "यान्त्रिक-नृत्य" का एक प्रथम दर्जे का तमाशा होगा। मण्डप में एक भी मानव न होगा। केवल मशीन-मानव, मशीनें और आकार विहीन 'नागरिक' ही स्टेज पर दिखाई देंगे। मैं तमाशा देखने के लिए उपस्थित नहीं रहूँगा। मेरे लिये पर्दा अत्यधिक देर में उठेगा। जो हो, तुम्हारे लिये स्थान सुरक्षित है, लेकिन केवल पूर्वार्द्ध के लिए। अवश्य जाओ और आनन्द लो। इस बात को मत भूलना कि ऋतु के आरम्भ के लिये ही स्थान सुरक्षित है।"

त्रायन ने अपना सिगरेट का शेष-हिस्सा लेफ्टिनेण्ट के डेस्क पर रखी राख डालने की डिबिया में छोड़ दिया और कमरे से बाहर चला गया।

१५८

त्रायन ने जॉन को फाटक के पास कैम्प-द्वार पर खड़े हुए पाया। जॉन का चित्त खिन्न था। त्रायन के दिखाई देते ही उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"क्या सचमुच तुम हो? मैं सोचता था कि अब मैं तुम्हें कभी न देख पाऊँगा।"

"क्या तुम्हें अफसोस हुआ होता ?"

"मरते दम तक," जॉन बोला। उसने उत्सुकतापूर्वक हाथ मिलाया। "मैं तुम्हारे जाते समय तुम्हें विदा भी नहीं कह सका। यद्यपि मैंने अनेक बार कोशिश की, किन्तु उन्होंने मुझे अस्पताल में नहीं घुसने दिया। उन्होंने तुम्हें कहाँ रखा ?"

"पागल-खाने, में" त्रायन बोला। "मैं पीने के लिये कुछ तम्बाकू ले आया हूँ।"

उसने अपना रूमाल खोला, जिसमें उसके इकट्ठे किये हुए सिगरेट के टोटे बँधे थे।

"उन्होंने वहाँ तुम्हें ताले में बन्द कर दिया ? बेचारा मास्टर त्रायन।"

वे कैम्प के दरवाजे के पास जलती धरती पर बैठ गये और सिगरेटों को गोल करना आरम्भ किया।

जॉन की हैरानी अभी समाप्त नहीं हुई थी। किन्तु उसे प्रश्न पूछने का साहस नहीं था।

"तुम हमेशा मेरे पाइप की प्रशंसा करते थे, क्यों क्या नहीं ?" त्रायन बोला।

"पाइप रहने से तम्बाकू पी सकने की पक्की व्यवस्था रहती है," जॉन ने उत्तर दिया। "तुम इसे जले तम्बाकू के अवशेष तथा सभी तरह के कूड़ा-करकट से भर सकते हो, जिससे कभी सिगरेट नहीं बन सकते। यही कारण है कि मुझे अफसोस है कि मेरे पास एक नहीं है। कैम्प में पाइप के बिना बड़ी कठिनाई होती है।"

"मैं तुम्हें अपना दूँगा," कहते हुए त्रायन ने उसे अपना पाइप दे दिया। यह अठारह महीने से उसके पास था, और हमेशा उसके दाँतों में लगा रहता था। हाँ, इसे भरने के लिये उसे मुश्किल से कभी कुछ मिलता था।।

"तुम ऐसा नहीं कर सकते," जॉन बोला। "कैम्प में एक पाइप अपने बराबर के सोने की कीमत का है। और तुम कैसे पीओगे?"

"मैं सिगरेट पीना छोड़ रहा हूँ। यह मेरा अन्तिम सिगरेट है।"

"क्या डाक्टर ने तुम्हें इसे छोड़ देने के लिये कहा?"

"नहीं, उसने नहीं कहा, किन्तु मैं अब और पीना नहीं चाहता।"

जॉन ने पाइप ले लिया और उसे तम्बाकू से भरना आरम्भ किया।

"धन्यवाद," वह बोला, "लेकिन यदि तुम्हें लगे कि तुम नहीं छोड़ सकते, तो मैं तुम्हें यह वापिस दे दूँगा, मैं दे दूँगा। मैं इसे केवल इस शर्त पर स्वीकार कर रहा हूँ कि तुम वास्तव में सिगरेट छोड़ रहे हो।"

"मैं अवश्य छोड़ दूँगा।"

जॉन मुस्कराया।

"मैंने अनेक बार कहा है कि मैं तम्बाकू छोड़ता हूँ, लेकिन मैं दृढ़ नहीं रहा। सिगरेट छोड़ना आसान नहीं है।"

"मैं जानता हूँ," त्रायन बोला। "लेकिन इस बार यह हमेशा के लिये है।"

त्रायन ने अपनी सिगरेट जलाई और जॉन ने पाइप। वे चुपचाप पीते रहे। त्रायन ने अपना चश्मा उतारा और उसे स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा। यह ऐसा ही था मानो वह उसे "नमस्कार" कर रहा हो।

जो निजी चीजें उसके पास रहती थीं, उनमें से केवल एक चश्मा बाकी रह गया था। तम्बाकू, थैली, घड़ी, विवाह-मुँदरी, भोजन की थैली, फाउन्टेन-पेन और पेन्सिल, एक-एक करके सभी चीजें जब्त कर ली गई थीं। जो चीज उसके पास अभी तक बची थी, वह था उसका चश्मा।

जब उसका पिता मरा था, तो उसने अपने गले का क्रॉस पादरी की छाती पर रख दिया था ताकि वह उसके साथ दफनाया जा सके। पुराण-पन्थी पादरी हमेशा अपने चोगों में दफनाये जाते थे, उनकी छाती पर एक मूर्ति रहती थी। उसके बदन पर एक अमरीकी जाकेट थी, जिसके पीछे और आस्तीनों पर "पी० ओ० डब्ल्यु०" छपा था। उसके नीचे वह एक कमीज भी नहीं पहने था। जॉन ने उसे धोया था, और यह अभी सूख ही रही थी कि पादरी का देहान्त हो गया। उसे तम्बू से इतनी जल्दी हटा लिया गया था कि कमीज लाकर उसके गले में डालने का समय भी नहीं मिला। लेकिन ब्रायन ने अपने गले में से छोटा सा क्रॉस उतार कर पिता की चमड़ी से सटाकर उसकी जाकेट के नीचे सरका दिया। उसका पिता उसके साथ दफना दिया गया था। कदाचित् उसके साथ उसकी दाह-क्रिया हुई थी।

अब ब्रायन के पास चश्मे के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। शरीर के अतिरिक्त उसकी एक यही निजी सम्पत्ति थी; यह शरीर और यह चश्मा—यही दो चीजें थीं जो वह अपने आज तक के जीवन से किसी प्रकार बचा कर रख सका था। अब उसने हाथ में इधर-उधर पलट कर चश्मे को देखा और बड़ी हसरत के साथ जॉन के हाथ में रख दिया।

"क्या तुम इसे मेरे लिए रखोगे?"

"क्या तुम अब इसके बिना देख सकते हो?" जॉन ने प्रश्न किया। जॉन की दृष्टि में किसी का जन्म भर चश्मा लगाना एक व्यर्थ का भार और दण्ड था। उसे हार्दिक प्रसन्नता थी कि ब्रायन को अब चश्मे की जरूरत नहीं थी।

"नहीं, मैं इसके बिना नहीं देख सकता," ब्रायन बोला। "लेकिन इसे न पहनने में अधिक आराम है। मैं इसे अब और नहीं पहनूँगा।"

"तुम्हें सारे दिन इसे पहने देखकर मुझे बड़ी हैरानी होती रही है," जॉन बोला। "तुम इसे केवल रात को उतरते रहे हो। मैंने तुम्हें इसके बिना कभी नहीं देखा।"

"यदि तुम मुझसे पहले छूट जाओ, तो मैं चाहूँगा कि तुम इस चश्मे को मेरी पत्नी के पास ले जाओ," त्रायन बोला। "हो सकता है कि तुम सीधे उस तक न पहुँच सको, लेकिन इसे हमेशा अपने पास रखो। पता नहीं, वह तुम्हें कहाँ मिल जाय? सम्भव है। किसी दिन रूमानिया में मुलाकात हो जाय। सावधान रहना, इसे चकना-चूर न कर देना।"

जॉन ने चशमा ले लिया और उसकी ओर देखा। उसे लगा कि त्रायन उससे कोई बात छिपाये है। उसका पहले पाइप और अब चश्मा देना सार्थक था।

"मारित्ज, चौंको नहीं," त्रायन बोला। "मैं इतना ही चाहता हूँ कि तुम चश्मा संभाल कर रखो। मैं इसे अब कभी नहीं पहनूँगा, लेकिन मैं नहीं चाहता कि यह अपरिचित हाथों में जा पड़े। इसकी कृपा से मैंने जीवन में बहुत चीजें देखी हैं। क्या तुम समझते हो कि यह मुझे इतना प्यारा क्यों है?

"मैंने इसी चश्मे से सर्वप्रथम अपनी पत्नी को देखा। इसके द्वारा मैंने हजारों सुन्दरी लड़कियाँ देखी हैं, मैंने चित्र देखे हैं, मूर्तियाँ देखी हैं, अजायब-घर देखे हैं, नगर देखे हैं और देश देखे हैं। इसके द्वारा मैंने आकाश देखा है, समुद्र देखा है, पर्वत देखे हैं और रोज-रोज रात को अगणित पुस्तकें पढ़ी हैं।

"इसी चश्मे से मैंने अपने पिता को मरते देखा, तुम्हें देखा और अपने सब मित्रों को देखा।

"इसी चश्मे से मैंने यूरोप को मटिया-मेट होते हुए देखा, मैंने आदमियों को भूख से मरते देखा, कैद भुगतते देखा, कैम्पों में

यातना और क्रमिक मृत्यु देखी। इसी चश्मे से मैंने पागल और सन्त देखे।

"मैंने एक सारे के सारे महाद्वीप को अपनी जनता और कानूनों के भार के नीचे दबकर मरते देखा। उसे अपनी मृत्यु का ज्ञान तक नहीं हुआ। वह कैम्पों में कैद रहा। उसके किनारे पर एक ऐसी सभ्यता के यान्त्रिक कानूनों की गोट लगी, जो कि अब बर्बर-युग के अनिच्छितपन को वापिस लौट गई है।

"मेरे प्यारे, यह चश्मा मेरे अपने चश्मे ही हैं। कभी-कभी मुझे पता नहीं लगता कि कौन-कौन से हैं; वे अविभाज्य हैं। इससे मैंने इस घड़ी तक जो कुछ भी देखने को था, वह सब कुछ देख लिया है।

"लेकिन अब मैं कुछ भी और नहीं देखना चाहता। मैं थक गया हूँ। तमाशा अत्यधिक देर से चालू है।

"यदि मैं अभी चश्मे को और पहने रहूँगा, तो मुझे केवल नगरों का विनाश देखने को मिलेगा, लोगों का विनाश देखने को मिलेगा, देशों का विनाश देखने को मिलेगा, सम्प्रदायों और मज़हबों का विनाश देखने को मिलेगा। मुझे अपने शरीर का विनाश देखने को मिलेगा—सभी विनाशों से बड़ा विनाश। मैं विभव-तृष्णा के वशीभूत नहीं हूँ, इसलिये मैं यह सब देखना सहन नहीं कर सकता। जहाँ तक दिखाई दे, वहाँ तक हर जगह विनाश ही विनाश देखना, मेरे लिए असह्य है।

"ध्वंसावशेषों पर नये निर्माणकर्ताओं की प्रगति आरम्भ हो गई है। ये इतिहास में एक नये संसार के 'नागरिक' हैं। ये भयानक गति से निर्माण-कार्य्य में लगे हैं। अपनी सभ्यता के निर्माण-कार्य को इन्होंने जेल-खानों से आरम्भ किया है। इसी में इनकी दिलचस्पी है। लेकिन मैं इसका साथ नहीं देना चाहता। इसलिए अब मुझे एक ओर बैठ कर शेष जीवन केवल दर्शक बना रहना होगा। लेकिन एक दर्शक का जीवन व्यतीत करना, एक साक्षी का जीवन व्यतीत करना, न जीने के

ही बराबर है। यान्त्रिक सभ्यता के पास आदमी के लिए केवल एक दर्शक का आसन है।

इसका व्यंग्य बड़ा तीखा है : अपनी तलाशी में उन्होंने केवल एक ही चीज़ जब्त नहीं की—मेरा चश्मा। इस प्रकार उन्हों ने मुझे बताया कि मुझे जीवन के प्रति क्या दृष्टि कोण रखना चाहिये। मैं सोचता था कि यह सिपाहियों की उदारता थी कि उन्होंने मेरा चश्मा मेरे पास रहने दिया। लेकिन यह उदारता नहीं थी, यह विभव तृष्णा थी। उन्होंने केवल मुझे दर्शक बनने पर मजबूर ही नहीं किया, किन्तु यह भी तय कर दिया कि मैं क्या देखूँ—कैम्प। मुझे कोई भी चीज देखने की छुट्टी नहीं। आबाद हैं—कैम्प, पागल खाने, जेल, फौजें और काँटेदार तार—मीलों तक लगे हुए काँटेदार तार। यही कारण है कि मैंने चश्मा पहनना छोड़ दिया।

"इस पृथ्वी पर यही चीज़ आखीर तक मेरे साथ रही। आँख की तरह चश्मा भी अद्भुत वस्तु है। संसार में किसी भी अन्य वस्तु से इस की तुलना नहीं हो सकती। लेकिन, उसी हालत में जब आदमी जीवित हो। जब आदमी जीवित न हो, जब आदमी जैसे तैसे जीवित हो, जब आदमी को अधूरा जीवन व्यतीत करने की ही अनुज्ञा हो, तब चश्मा एक मज़ाक के अतिरिक्त कुछ नहीं।

"क्या तुमने कभी किसी मुर्दे को चश्मा पहने देखा है?"

"लेकिन तुम तो मुर्दे नहीं हो?"

"हमारी इतनी ही आशा है—कि अभी भी जीवित हैं। लेकिन आशा जीवन का स्थान नहीं ले सकती। आशा वह घास है जो कबरों में भी उगती है।"

"मास्टर त्रायन! लेकिन हम जीवित हैं।"

"हम आशा करते हैं कि हम हैं।"

जॉन ने ब्रायन की ओर सूखी आँखों से देखा। उसने अपने आपको याद कराया कि ब्रायन अभी पागल-खाने से आया है। ब्रायन ने स्वयं यह बात कही थी।

"मारित्ज़, बूढ़े यार डरो मत," ब्रायन बोला। "पागल नहीं हूँ। मुझे बड़ी चोट लगेगी यदि तुम भी मुझे औरों की तरह पागल समझोगे तुम कहते हो कि मैं अभी भी जीवित हूँ, क्योंकि यदि मैं जीवित न होता तो तुम मुझे मृत देखते। तुम मेरी आँखें बन्द देखते, मेरे हृदय की गति रुकी देखते, मेरा शरीर ठँडा हुआ देखते। तुम एक लाश देखते। लेकिन मारित्ज़। कुछ मौतें ऐसी होती हैं जो अपने पीछे लाश नहीं छोड़ जातीं। महाद्वीप मरते समय लाश नहीं छोड़ते। इसी प्रकार सभ्यताएँ, धर्म और देश, और आदमी भी कभी कभी, लाश द्वारा उनकी मृत्यु प्रमाणित होने के बहुत पहले मर जाते हैं। केवल इसलिए कि तुम मेरी लाश नहीं देखते हो, तुम मुझे जीवित नहीं मान सकते। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो?"

जॉन सुसकने लगा।

"मारित्ज़, तुम्हें क्या हुआ?"

"मास्टर! तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है।"

"क्या तुम्हारे कहने का मतलब है कि मैं बकवास कर रहा हूँ और पागल हुआ जा रहा हूँ।"

"नहीं, मास्टर ब्रायन! मैं ऐसी बात मुँह से कैसे निकाल सकता हूँ।"

"तुम समझते हो कि मेरा दिमाग ठीक नहीं है," ब्रायन बोला। "यही कारण है कि तुम रो रहे हो। किन्तु तुम व्यर्थ रो रहे हो। मेरे प्यारे मरित्ज़, मैं पागल नहीं हूँ। मेरा दिमाग हमेशा से अधिक ठीक है।"

"मास्टर ब्रायन, क्या तुम सचमुच ठीक हो?'

"निस्सन्देह, मैं ठीक हूँ।"

"मैंने यही सोचा था कि तुम पागल हो। मैंने सोचा था कि तुम्हें सिर-दर्द होगा," जॉन बोला। "तुम्हें इतने दिनों तक कुछ खाने को

नहीं मिला...बहुत करके उन्होंने तुम्हें वहाँ यन्त्रणा दी होगी।...तुम इतने पीले पड़ गये हो। यह बात कभी मेरे दिमाग में नहीं आई कि तुम...।"

जॉन 'पागल' शब्द को बचा गया।

त्रायन ने विचार कर देखा तो उसे लगा कि जिन्हें यूरोपी सभ्यता के बिखरने से आत्मिक-वेदना हो रही है, वे इस सभ्यता के साथ ही मर रहे हैं। और जो जीवित हैं वे इस दुःखान्त नाटक के दर्शक मात्र बनकर रह गये हैं। या तो वे जैकब सन की तरह मशीनी-सभ्यता के अंग हैं, या वे जॉन मारित्ज़ की तरह सीधे-सादे लोग हैं, जो आज तक अपनी सहज-बुद्धि और मिथ्या-विश्वासों की जकड़ में ही जकड़े हैं। यूरोप को दोनों तरह के लोगों से कुछ लेना-देना नहीं। जिस आत्मा ने वेदना को छान कर वेदना ही वेदना का पान किया है, उसे दोनों तरह के लोग 'पागल' समझते हैं।

"जो व्यक्ति यह समझकर कि यह पागलपन नहीं है, किन्तु पीड़ा की अन्तिम-वेदना है, जीता रह सकता है, वह केवल नोरा है," त्रायन सोच रहा था। "क्योंकि उसे हजारों वर्षों की गुलामी और अपमान वंशानुवंश से प्राप्त हैं। मिस्र में जब पिरेमिड बने उसी समय उसके लोग दासता और कष्टों के अभ्यस्त हो गये, उसके लोग स्पेन के धार्मिक-अत्याचारों के बावजूद भी बचे रहे, रूसी यन्त्रणाओं और जर्मन कैम्पों के बावजूद भी बचे रहे, और अब ये लोग यान्त्रिक-सभ्यता के आरम्भिक युग में भी बने रह सकेंगे।"

उसे उसका ख्याल करके खुशी थी। वह मुस्कराया।

"मारित्ज़, अपना पाइप जला लो," वह बोला, "और तब जाकर तम्बू में मेरा चश्मा रख आओ। तुम जानते हो कि मैं चाहता हूँ कि यह मेरी पत्नी को टूटी हालत में न मिले।"

"मैं इसे तुरन्त ले जाऊँगा।"

जॉन नये कदम और थोड़े ऊँचे कन्धों के साथ धुआँ उड़ाता हुआ चला गया। उसे देखने पर त्रायन को लगा कि जॉन के स्थिर कदम उसे कैम्प के परेड-मैदान के उस पार नहीं ले जा रहे हैं, बल्कि इतिहास की शताब्दियों में से लिये जा रहे हैं; और कि चलते समय, उसे अपने आसपास का कुछ ध्यान न था। उसकी जड़ें पृथ्वी में गहरी चली गई थीं और उसकी आँखें आकाश के नीले चमत्कारों पर थीं। उसे इस बात की चिन्ता भी नहीं थी कि आकाश नीला है, तो क्यों है।

"जॉन और नोरा यूरोप के बाद भी जीवित रहेंगे," उसने अपने मन में कहा। "वे पश्चिम की यान्त्रिक सभ्यता में भी जीवित रह सकेंगे। निस्सन्देह अधिक समय नहीं। इसमें कोई भी मानव अधिक देर जीवित नहीं रह सकेगा। वे आरम्भ के कुछ दृश्य देख सकते हैं; लेकिन आखीर में, जो सबसे शक्तिशाली आदमी होंगे वे भी लुप्त हो जायेंगे। पृथ्वी-तल पर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण सर्वत्र मशीन-मानव ही दिखाई देंगे।"

१५९

ज्यों ही जॉन तम्बुओं के बीच दृष्टि से ओझल हो गया, त्रायन उठ खड़ा हुआ, सिगरेट फेंकी और मुख्य द्वार की ओर चल दिया।

कैम्प के मुख्य द्वार की ओर जानेवाले क्षेत्र में कैदियों को जाने की आज्ञा नहीं थी। त्रायन को इसकी पूरी जानकारी थी, किन्तु वह चलता ही गया। उसकी चाल न घिसटती हुई न तेज़, एक ऐसे आदमी की चाल थी, जो दिन भर काम करके घर लौट रहा हो, और इसलिए जो धीरे-धीरे टहलता हुआ आ सकता हो, किन्तु साथ ही बिना अत्यधिक विलम्ब के घर पहुँचने के लिए उत्सुक हो।

चौक के कैदियों ने, जिनमें से हज़ारों वहीं चारों ओर थे, देख लिया था कि उनमें से एक निषिद्ध-क्षेत्र में चला गया है। वह बाड़े की ओर बढ़े ताकि उसे समीप से देख सकें। उन्होंने सोचा कि या तो यह सेनाध्यक्ष के दफ़तर का कोई क्लर्क होगा, या डाक्टरों में से एक। केवल ये ही लोग चौक की सीमा लाँघ सकते हैं।

कैदी उसे पहचानने के लिए उत्सुक थे। कैम्प में कोई छोटी से छोटी बात भी इन हज़ारों आँखों से छिपी नहीं रहती थी। रात-दिन वही चीज़ें देखते रहने के लिए मजबूर आँखें हर समय किसी न किसी नवीनता के लिये उत्सुक रहती थीं, भले ही कोई चीज़ कितनी ही छोटी हो; शर्त इतनी ही थी कि असामान्य हो। यह रोज़ के स्वयं होनेवाले कामों से मुक्ति पाने की इच्छा, वह व्यक्तिगत और मौलिक चीज की खोज, यह जीवन में कुछ अनोखा और असाधारण है, उसकी प्यास—यह मानव-आत्मा की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है।

निषिद्ध क्षेत्र में एक कैदी का निर्भय होकर चले जाना एक ऐसी बात थी, जिस पर ध्यान दिया ही जाना चाहिये था। यह एक घटना थी। यदि वह एक कम्पनी-क्लर्क या डाक्टर होता, जिसे उस क्षेत्र में जाने की अनुज्ञा थी, तो भी दृश्य देखने योग्य था, और कैदियों ने उसे उसी ध्यान से देखा, जिस ध्यान से उन्होंने स्टेज पर किसी एक्टर को देखा होता। मात्र इसलिए कि वह एक ऐसा काम कर सकता था, जो सामान्य जनता नहीं कर सकती थी।

त्रायन को इस बात का बोध था कि हज़ारों आँखें उसका पीछा कर रही हैं।

साथ ही वह यह भी जानता था कि काँटे-दार तारों से ऊँची बनी चौकियों में खड़े पोलैण्ड-वासी पहरेदार भी उसकी ओर आश्चर्य कर रहे होंगे कि न जाने यह क्या समझता है कि यह कहाँ जा रहा है।

लेकिन त्रायन ने न तो काँटेदार-तारों के पीछे से आँखें फाड़-फाड़

कर देखनेवाले कैदियों की ओर ही देखा, न चौकियों के पोलैण्ड-वासी पहरेदारों की ही ओर।

वह सीधा चला गया। उसकी चाल में दृढ़ता से भी कुछ विशेष था। यह किसी क्रोधी की नपी-तुली कठोर चाल नहीं थी, जो मार्ग में आनेवाली हर बाधा को पार करने के लिये दृढ़-निश्चयी हो। इसमें निश्चय था, लेकिन साथ ही एक हलकापन था, जो उस आदमी की चाल में रहता है जिसे चलने में आनन्द आता हो।

वास्तव में त्रायन चलने में किसी प्रकार का आनन्द नहीं ले रहा था, लेकिन वह जानता था कि जो कुछ वह करने जा रहा है उसके पीछे उद्देश्य है, और इससे उसके मन में गहरा संतोष था। उसकी चाल किसी मशीन की नियमित और नीरस चाल न थी, न किसी ऐसे आदमी की जो उत्तेजना में अन्धा होकर चल रहा हो। त्रायन की चाल एक दुराग्रही की चाल न थी।

उसकी आँखें खुली थीं। इसमें तनिक सन्देह नहीं कि चश्मे के बिना वह जैसे-तैसे ही देख सकता था, लेकिन उसके दिल और दिमाग की आँखें खुली थीं, और इसलिये उसे अपना मार्ग और उद्देश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था, इसका सुख और दुःख दोनों।

कोई आँख वाला यह सारी बातें त्रायन की चाल में पढ़ सकता था, जिस समय वह बालू पार करके काँटेदार तार की ओर बढ़ा—यह सब, और इससे भी बढ़कर एक गहरी ग़मगीनी। यह उस आदमी की ग़मगीनी थी, जो अपना घर पीछे छोड़े जा रहा था, एक नाविक की ग़मगीनी थी जो अपरिचित तट के लिए निकल पड़ा था।

कोई आँख वाला उसके बालू में के पद-चिह्नों में यह सब कुछ पढ़ सकता था। लेकिन वहाँ जो लोग थे उन्हें देखने को आँखें तो थीं, किन्तु उन्होंने देखा नहीं।

पहरेदारों और कैदियों ने देखा कि त्रायन बाड़े के तार के अधिकाधिक समीप होता चला जा रहा है। यह अनधिकृत था। कोई

काँटेदार तार के अधिक से अधिक डेढ-गज समीप तक जा सकता था। और त्रायन बढ़ा चला जा रहा था।

कुछ कैदियों ने अपनी आँखों पर हाथ रख लिये ताकि वह उसकी प्रत्येक गति-विधि को देख सकें। दूसरे ताली पीटने लगे। उन्होंने मुँह बा दिया। वे प्रतीक्षा कर रहे थे, कि अब क्या होता है, मानो वह एक दिलचस्प फुटबाल-मैच की अत्यन्त उत्तेजना पूर्ण घड़ी हो, एक मस्साहसी फिल्दु की अथवा एक जासूसी कहानी की।

पहरे की चौकी में खड़ा पोलैण्ड-वासी भी समान रूप से चकित था। यदि उसके: हाथ में राइफल न होती तो कदाचित् वह भी स्पष्ट तया देखने के लिये अपने हाथ ऊपर उठाता। जब वह हाथ ऊपर उठाने लगा तो उसने देखा कि उसकी राइफल ऊपर उठ रही है। इससे उसे याद आया कि एक कैदी काँटेदार तार के पास जा रहा है और उसका कर्तव्य है कि वह गोली दागे। उसने घोड़ा दबाया।

जब बन्दूक छूट गई तब पोलैण्ड-वासी की समझ में आया कि उस से गलती हो गई। वह निशाना लगाना भूल गया था। ड्रिल की किताब में लिखा था : निशाना लगाओ : गोली चला दो। वह यह जानता था। यह एक प्रकार से अचेतन मन की प्रक्रिया हो गई थी। इसलिए, दूसरी बार गोली दागने से पहले उसने अपनी गलती सुधार ली। उसने लक्ष्य पर निशाना लगाया; लक्ष्य एक कैदी था, जो सीमा से बाहर चला गया था।

त्रायन ने सुना कि पहली गोली खाली चली गई। क्षण भर बाद दूसरी। उसकी आँखों के सामने बिजली कौंध गई, और उसके अंगो में क्लान्ति की अनुभूति समा गई। वह एक ओर से दूसरी ओर तक गरम हो उठा, मानो मध्य-शीत काल में वह एक भली भाँति गरम किये गये कमरे में चला आया हो और उसने गरम ताड़ी का एक भरा गिलास पी लिया हो। कुछ गरम चीज उसके हाथों पर से होकर बहने लगी।

चिलचिलाती धरती पर, काँटेदार तार के पास उसका शरीर दोहरा होकर गिर पड़ा, मानो किसी खूँटी पर टँगा हुआ ओवर-कोट चुप चुप ज़मीन पर गिर कर ढेर हो गया हो।

त्रायन के मन में अपने उस शरीर के प्रति असीम करुणा जाग चुकी थी जो यकायक जाता रहा था और जमीन पर गिर कर एक गीली ढेरी मात्र रह गया था। यह शरीर ही उसका सर्वश्रेष्ठ मित्र रहा था। अब, उसे पहली बार यह पता लगा कि उसके लिए यह मित्रता कितनी मूल्यवान् थी। उसे नोरा और अपने पिता की याद आईं, जो उसके लिए अपने शरीर के समान ही प्रिय थे। नोरा की तस्वीर, पिता की तसवीर, माता की तसवीर, जॉन मारित्ज की तसवीर जार्ज दमियन की तस्वीर और कुछ लोगों की तसवीरें उसकी आँखों के सामने आईं और यकायक गिर गईं, मानो अचानक रस्सी टूट गई हो।

ये उसके प्रियतम स्वरूप भी उसके शरीर की तरह ही जमीन पर गिर कर एक दूसरे के ऊपर ढेर हो गये।

उसका दिमाग अब इन्हें और अधिक अपनी आँखों के सामने न रख सका। उसकी सारी शक्ति जाती रही थी। अन्तिम चीज जो क्षण भर के लिए सीधी रही, उसका सिर था। अब तक केवल उसका माथा ही ऊँचा था।

लेकिन कुछ क्षणों के बाद वह भी उसके लिए अत्यन्त भारी हो उठा।

उसने उष्ण धरती पर अपने गाल रख दिये और किसी चीज को याद करने की कोशिश की। लेकिन उसकी स्मृति उस झण्डे की तरह हो गई थी जिसने अतीत के चित्रों को ढक रखा हो और साथ ही उसके अशक्त शरीर को, जिसमें से रक्त बह रहा था।

न्यायन जानता था कि वह क्या कहना चाहता है : यह एक प्रार्थना थी, जो उसे खास तौर पर पसन्द थी, लेकिन जो अनुच्चारित ही रही। जीवन में और बहुत-सी बातों की तरह, यह सर्वदा के लिए अकथित ही रह गई। यह लम्बी नहीं थी। यदि वह कुछ क्षण और जिया होता, कदाचित् उसने अपनी यह प्रार्थना कह ली होती :

"मातृभूमि, जननी, मैं······

मैं युग-युगों से तुम्हारा ही रहा हूँ।"

उसके गाल और ओंठ उष्ण पृथ्वी से और भी अधिक सट गये; बड़ी कोमलता के साथ, मैत्री और प्रेम के अन्तिम प्रतीक के रूप में।

यह सब कुछ गम्भीर था, सम्पूर्ण था। आदमी की तुच्छता नहीं छू गई थी। यह इतना सरलता के साथ सम्पन्न हुआ था। इसमें बुझती हुई आग की शान थी।

कैम्प के चौक में जॉन की चीख निकलनेवाली थी। किन्तु उसने अपने मुँह पर हाथ रख कर अपने आप पर काबू पा लिया।

उसने अपनी आँखें नीचे कीं और क्रॉस का चिह्न बनाया।

१६०

न्यायन की मृत्यु के चार दिन बाद जॉन को सुसाना की चिट्ठी मिली।

"प्यारे जानी,

"तुम अवश्य से यही सोचते रहे होगे कि मैं मर चुकी हूँ। नौ वर्ष हो गये हमें एक दूसरे का कुछ समाचार नहीं मिला। मैंने अनेक बार अपने आप को कहा कि तुम मर गये होगे। मैं तुम्हारे लिए गिरजे में वे प्रार्थनाएँ करवाने जा रही थी, जो मृतकों के लिए की जाती हैं।

"लेकिन किसी न किसी कारण, अन्तिम क्षण पर मेरा मन बदल गया। अब मुझे प्रसन्नता होती है कि मैंने तुम्हारे लिये 'मृतों की प्रार्थना' नहीं करवाई। किसी जीवित व्यक्ति को मृत मान कर उसके लिये प्रार्थना करवाना बड़े ही दुर्भाग्य की बात है।

"मुझे स्विट्ज़रलैंड के रैड-क्रास के श्री पेरुस्सेत से तुम्हारा पता मिला। उसने मुझे बताया कि तुम अनेक वर्ष। कैद रहे हो।

"तुम्हें जीवित रखने के लिए परमात्मा को धन्यवाद देने के अनन्तर, मैंने प्रार्थना की कि वह उन्हें ज्ञान दे जो तुम्हें अन्याय पूर्ण ढंग से जेलों में रखते हैं, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम न चोर हो और न अपराधी हो, और कि उन्होंने तुम्हें अकारण कैद रखा है।

"मुझे तुम्हें इतनी बातें बतानी हैं। इन नौ वर्षों में इतनी घटनायें घटी हैं, लेकिन एक चिट्ठी में वे सभी नहीं लिखी जा सकतीं।

"यह रविवार से अगला दिन था, जब तुम गये। गाँव के लोगों ने मुझे बताया कि सिपाही तुम्हें बन्दूक का डर दिखा कर ले गये। मैंने उनका विश्वास नहीं किया, क्योंकि मैं जानती थी कि तुम निर्दोष हो, और कि कोई कारण नहीं था कि सिपाही तुम्हें क्यों कैद कर दें और एक अपराधी की तरह बन्दूक का डर दिखा कर ले जायँ।

"तुम्हारे चले जाने के चार सप्ताह बाद मैंने एक पाव-रोटी सेंकी और तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। मैं जानती थी कि तुम भूखे-प्यासे लौटोगे। जब पाव-रोटी बासी हो गई तो मैंने वह बच्चों को दे दी और एक दूसरी रोटी सेंकी ताकि तुम्हारे लिये ताजी तैयार रहे। मैं नहीं जानती कि क्यों, लेकिन मेरा दिल मुझे कहता रहा कि तुम आओगे। मैं प्रतिदिन तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी। मैं सोचती थी कि तुम सन्ध्या के समय आओगे और इसलिए मैं ताला खुला छोड़ देती थी कि जब तक मैं ताला खोलने आऊँ, तब तक तुम्हें दरवाजे पर प्रतीक्षा न

करनी पड़े। मैं जानती थी कि तुम थके होगे और तुम्हारे पाँव में दर्द होता होगा। इसलिए मैं नहीं चाहती थी की तुम खड़े प्रतीक्षा करते रहो। मेरे प्रिय जानी, लेकिन तुम नहीं आये। मैंने तुम्हारे लिए रोटी सेंकनी बन्द कर दी, क्योंकि मेरे पास आटे क कमी हो गई। लेकिन मैं प्रतीक्षा करती रही।

"क्रिसमस के एक दिन पहले सार्जेण्ट आया और बोला कि तुम यहूदी हो, और उसके पास तुम्हारे घर की जब्ती का हुक्म-नामा है। मैं बच्चों को लेकर घर में टिकी रह सकूँ, इसके लिए उसने मुझसे एक तलाक के कागज पर हस्ताक्षर कराये। मैंने हस्ताक्षर कर दिये। यह सर्दी का मौसम था। मेरे पास जाने को कोई जगह न थी। लेकिन मैंने वास्तविक रूप से तुम्हें कभी तलाक नहीं दिया। मैं और भी अधिक व्यग्रता से तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही।

"जब रूसियों ने गाँव में प्रवेश किया तो उन्होने फादर कोरुग और गाँव के मुखियों को गोली मार दी। उस रात तुम्हारी माँ और मैं दोनों मिल कर उसे जंगल में छिपाकर रखने के लिए खाद के गढ़े में से उठा ले गये। रास्ते में हमें कुछ जर्मन लारियाँ मिलीं और हमने उसे अस्पताल में ले जाने के लिए उन्हें सौंप दिया। मैं नहीं जानती कि हमने ठीक किया अथवा नहीं। लेकिन हम उसे वहाँ मरने के लिए नहीं छोड़ सकती थीं। अगले दिन जो कुछ हमने किया था, उस अपराध के लिये तुम्हारी माँ को गोली मार दी गई। वह मुझे भी गोली मरने जा रहा था लेकिन मैं बच्चों को लेकर गाँव से भाग खड़ी हुई। मैंने बहुत सी जगहों पर कामा किया और कष्ट पाया। मुझे डर था कि यदि रूसियों ने मुझे पकड़ लिया तो वे मुझे उसी प्रकार गोली मार देंगे जैसे उन्होंने तुम्हारी माँ को गोली मार दी। जहाँ तक मैं भाग सकती थी, मैं भागती चली गई। लेकिन उन्होंने मुझे युद्ध अन्त में जर्मनी में पकड़ लिया। उन्होंने मुझे गोली नहीं मारी।

वे मेरे प्रति बड़े दयालु थे। उन्होंने तुम्हारे बच्चों को रोटी दी, मिठाई दी, और कपड़े दिये; क्योंकि वे जर्मन-बच्चे न थे। और उन्होंने मुझे भी भोजन और वस्त्र दिये। मुझे अफसोस होने लगा कि मैं रूसियों के डर के मारे फन्तना से क्यों भाग आई।

"यह चार दिन चला। मैं बीमार थी इसलिए प्रतीक्षा कर रही थी कि घर जाने लायक अच्छी हो जाऊँ। एक रात मैंने खिड़की पर खटपट की आवाज सुनी। यह रूसी सैनिक थे; उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया, और यह देखने के लिये कि वहाँ कोई और भी औरत है अथवा नहीं, उन्होंने घर भर की तलाशी ली। वह घर की मालकिन की चौदह वर्षीया कन्या को पकड़ लाये। तब उन्होंने हमें शराब पीने पर मजबूर किया। उन्होंने अपने पिस्तौल निकाले और कहा कि यदि हम नहीं पियेंगी तो वे हमें गोली मार देंगे। इसके बाद उन्होंने हमें नंगा होने के लिए कहा। कमरे में बच्चे थे। मैंने उत्तर दिया कि वे चाहें तो मुझे गोली मार सकते हैं किन्तु मैं बच्चों के सामने कपड़े उतारनेवाली नहीं हूँ। उन्होंने मेरे वस्त्रों के तार-तार कर दिये। सिपाही सारी रात एक-एक करके हमारे साथ बलात्कार करते रहे। उन्होंने मेरे गले में ब्राण्डी उडेली, क्योंकि मैं पीती नहीं थी और इसके बाद मेरे कानों में। तदनन्तर उन्होंने फिर मेरे साथ बलात्कार किया। प्यारे जॉनी, मुझे क्षमा करना, किन्तु मैं तुम से कुछ भी छिपा कर नहीं रखना चाहती। जब मैं जागी तो रूसी कमरे से चले गये थे और मेरे चारों ओर बच्चे रो रहे थे जैसे मैं मर गई हूँ।

"अगली शाम को रूसी फिर आये। ये वे ही लोग थे। वे घर की मालकिन की लड़की को पकड़ लाये और फिर हमारे साथ बलात्कार किया।

"इसके बाद मैं बच्चों सहित तहखाने में जा छिपी ताकि रूसी मेरा पता न पा सकें। लेकिन तीसरी रात उन्होंने मुझे तहखाने में से भी

ढूँढ़ निकाला और रातों जैसा ही हुआ; किन्तु मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती, क्योंकि उनका आरम्भ करने के पहले मैं बेहोश हो गई।

"यह लगातार दो सप्ताह तक चला, रोज-रोज रात को। मैं बाग में छिपी, पड़ोसियों के यहाँ छिपी और अटारी पर जा छिपी। लेकिन उन्होंने हर जगह मुझे पा लिया। मैं एक भी रात बची न रह सकी। मैंने आत्महत्या कर लेने का निश्चय किया लेकिन जब मैंने बच्चों की ओर देखा तो उन्हें मातृहीन बनाकर चल बसने का मेरा दिल नहीं हुआ। पितृहीन जीवन व्यतीत करने में ही उन्हें कम कठिनाई न थी। विदेश में जहाँ कोई भी उनकी सार-सँभाल लेनेवाला न रहता, ये छोटी-छोटी जानें क्या करतीं? जॉनी, उनके लिए मैं जीवित बनी रही। लेकिन भीतर से मैं तभी से मरी हुई हूँ।

"रूसियों से बचने के लिए मैं पश्चिम की ओर भागी। मैं ब्रिटिश लोगों के पास पहुँची। आखीर में अमरीकियों के पास जहाँ मैं इस समय हूँ। रास्ते में मुझे रूसियों ने कई बार पकड़ा। जब-जब वे कर सके, उन्होंने मेरे बदन पर हाथ डाला और सभी दूसरी औरतों की तरह बच्चों के सामने मेरे साथ बलात्कार किया। मुझे ब्रिटिश क्षेत्र में से गुजारने से पहले रूसियों ने तीन दिन तक मुझे सीमा पर रोक रखा और रात-दिन मेरे साथ बलात्कार करते रहे। आखिरी बार मुझे गर्भ रह गया। अब पाँच महीने से उनका एक बच्चा मेरे गर्भ में है।

"मैं क्या करूँ? कृपया मुझे लिखें और बतायें कि यह जो कुछ हो चुका है क्या उसके बाद भी आप मुझे अपनी पत्नी समझते हैं और क्या आप कभी मेरे पास वापिस आयेंगे?

"मैं रो रही हूँ और यह जानने के लिए कि मैं क्या करूँ, तुम्हारे पत्र की व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही हूँ।

सुसाना"

१६

जॉन चिट्ठी समाप्त कर चुका तो उसके काफी देर बाद तक उसकी अँगुलियाँ चिट्ठी के पन्नों से चिपकी रहीं। शोरबे की तैयारी की सूचना मिली-लेकिन जैसे स्वप्न में मिली हो। वह हिला-डुला नहीं। वह बिस्तर पर चित लेटा रहा।

उसकी आँखों की नजर बदल गई थी, उसके गाल, और जिस प्रकार वह अपने बिस्तर पर लेटा था। कुछ क्षण पहले वह जैसा था अथवा जैसा वह हमेशा से चला आया था, जॉन मारित्ज़ अब वह जॉन मारित्ज़ नहीं रहा था। वह कोई और ही हो गया था। जॉन का शरीर और आत्मा उस बिजली के तार की तरह था, जिसमें से इतनी जोरदार बिजली गुजर रही हो, जिसे वह सहन न कर सकता हो। अब वह कुछ नहीं था, यदि था तो बुझा हुआ कोयला था। जॉन, अब नहीं रहा था। यदि किसी ने उसके बदन में एक सूई भी चुभो दी होती तो उसे पता ही नहीं लगता। वह एक आदमी था, जिसे भूख-प्यास की परवाह न थी, जिसे खुशी-गमी की चिन्ता न थी, और न अभी उपेक्षा……

वह एक ही समय रो और हँस सकता था, क्योंकि वह किसी चीज में हिस्सेदार नहीं था, क्योंकि वह अब जीवित नहीं था।

वह उठ खड़ा हुआ और तम्बू से बाहर चला गया, बिना यह जाने कि वह कहाँ जा रहा है।

वह अभ्यासवश, अचेतन-मन के कारण काँटेदार तार से उतनी दूर रुक गया, जितनी दूर उसे रुक जाना चाहिये था। यदि आयन की तरह उसे भी गोली मार दी जाती तो जॉन को इसकी परवाह न थी। न वह उस निषिद्धक्षेत्र में जाना ही चाहता था और न उससे बाहर ही रहना चाहता था। उसके मन में किसी भी तरह की इच्छा या आकांक्षा नहीं थी।

कुछ ही देर बाद बाड़े के दूसरी तरफ से दो अमरीकी सिपाही उसकी ओर आये। उनके पास कैमरा था और उन्होंने उसकी फोटो ली। वह न तो हिला और न उसने उनकी ओर देखा। वह तभी चौंका जब एक तीसरा सिपाही पीछे से आया। जॉन ने धीरे से उसे सम्बोधित किया :

"स्ट्रूल, तुम कैसे हो ?"

हाथ में कैमरा लिये अमरीकी सिपाही रुका और उसने उसकी ओर आँखें फाड़ कर देखा। यह स्ट्रूल था—रूमानिया के यहूदी कैम्प का आफिस-क्लर्क। यही डा० अब्रमोविचि और जॉन के साथ बुडापेस्ट भागा था। जॉन और स्ट्रूल ने एक दूसरे को देख और पहचान लिया था।

जब जॉन ने दूसरी बार नाम लेकर पुकारा तो स्ट्रूल अपना कैमरा आँखों तक ले गया और फोटो लेने का बहाना किया। तब वह घूमा और बिना उत्तर दिये चुपके से चल दिया।

जॉन काँटेदार तार के पीछे मूर्तिवत् खड़ा रह गया। उसने देखा कि स्ट्रूल और दोनों अमरीकी सिपाही जीप में बैठे और चल दिये।

जब गाड़ी चलने लगी, स्ट्रूल ने उसे कनखी से एक बार देखा और फिर झट नजर घुमा ली। उसे उससे आँख मिलाते शरम मालूम देती थी। जॉन को क्रोध नहीं आया। कोई और समय होता तो वह आग-बबूला हो जाता। उसकी इतनी कठिनाइयों के साथ ही स्ट्रूल ने उसे न पहचानने का बहाना किया था।

लेकिन आज उसके लिये सब कुछ समान था। उसने परवाह नहीं की। काफी समय तक वह कांटेदार तार के पास खड़ा रहा।

पीछे से कोई आया और उसने उसे कन्धे पर थपथपाया। वह हिला नहीं।

"मॉरित्ज़, चलने के लिये तैयार हो जाओ।"

जॉन ने घूम कर देखा। उसने सोचा कि उसकी रिहाई का हुक्म-नामा आ पहुँचा। उसकी आँखों में एक नई चमक दिखाई दी।

"मेरी मुक्ति ?" जिस तम्बू-नायक ने उसके कन्धे का स्पर्श किया था, उसने उससे प्रश्न किया।

"वृद्धपुरुष, खेद है कि नहीं।"

"तब किसी दूसरे कैम्प को ?"

"न्युरेमबर्ग।"

जॉन ने उपेक्षाभाव से अपने कन्धे हिलाये। उसे कुछ समय से यह मालूम था क्योंकि उसका नाजी-सेना से सम्बन्ध था, इसलिये वह अनायास ही युद्ध-बन्दी घोषित कर दिया गया है। इसलिये यह आशा की जा सकती थी कि मार्शल गोएरिंग, रुडाल्फ, हैस्स, रुसेनवर्ग तथा फॉन पापेन सदृश दूसरे युद्धबन्दियों के साथ उसे भी न्यूरेमबर्ग भेज दिया जायगा।

वे सम्भवतः उसे प्राणदण्ड भी देंगे। बहुत करके वे उसे फाँसी पर लटकायेंगे। अब यह सब समान था।

वह काँटेदार तार में से फासले को देखता रहा।

तम्बू-नायक ने उसे कन्धे पर थपकी दी और बोला :

"आध घण्टे में चलने के लिए तैयार।"

जॉन नहीं हिला।

"अपनी चीजें बटोर लो," तम्बू-नायक बोला। "अधिक समय नहीं है। एक बजे इकट्ठा होना है।"

मुझे कुछ तैयारी नहीं करनी है," जॉन बोला।

"क्या तुम अपने साथ कुछ नहीं ले चल रहे हो ?"

"नहीं।"

"अपना कम्बल भी नहीं ?"

"नहीं, अपना कम्बल भी नहीं।"

तम्बू-नायक को सूझा कि यदि जॉन अपना कम्बल नहीं ले चल रहा है तो वह दो कम्बल ले चल सकता है। इससे उसे कुछ अधिक आराम रहेगा। लेकिन उसने अपने दिमाग से इस ख्याल को निकाल दिया और बोला :

"तुम्हें अपना कम्बल ले चलना चाहिए। न्युरेमबर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का जेल-खाना ठण्डा और गीला है। तुम्हें एक कम्बल की जरूरत पड़ेगी।"

"मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है।"

तम्बू-नायक जाने के लिए वापिस मुड़ा।

"समय से पहुँच जाना। एक बजे चल देना है।"

अभी भी जॉन नहीं हिला। उसके बूट की नोक उस सफेद लकीर पर थी, जहाँ से निषिद्ध-क्षेत्र आरम्भ होता था। उसके दाहने पाँव का पंजा आगे बढ़ा। सफेद रेखा आधी ढक गई। उसने चौकी पर खड़े पोलैण्ड-वासी पहरेदार की ओर देखा। पहरेदार की आँख जॉन पर थी और बन्दूक तैयार। लेकिन जॉन ने सफेद लकीर पार करने का साहस नहीं किया।

आध घण्टे बाद वह अपने कैम्प के दूसरे युद्ध-बन्दियों के साथ न्युरेमबर्ग जा रहा था।

जॉन की दूसरी चीजों के साथ सुसाना की चिट्ठी भी पीछे तम्बू में छूट गई थी। दूसरे कैदियों ने इसे पढ़ने का प्रयत्न किया, लेकिन इसकी भाषा रूमानिया की थी। उनकी कुछ भी समझ में नहीं आया। यह बहुत ही पतले कागज पर लिखी थी। कैदियों ने इसे फाड़कर सिगरेट का कागज बनाया और आपस में बाँट लिया। तब उन्होंने सिगरेटों को गोल किया और उन्हें पिया।

१६२

अर्ज़ी सं० ७. विषय : न्याय, मारित्ज जॉन (युद्ध अपराधी, दण्ड) अर्ज़ी, दफ़्तर में साक्षी की मृत्यु के बाद प्राप्त।

बावन जातियों के प्रतिनिधि, न्युरेमबर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय ने यह पता लगाया है कि मेरा मित्र जॉन मारित्ज़ एक युद्ध अपराधी था। यह बढ़िया है। ज्यों ही इस निर्णय की सार्वजनिक घोषणा हो जायगी, मैं कैम्प के चौक के आसपास उसके साथ टहलना बन्द कर दूँगा। यह अच्छा नहीं लगता, और एक अपराधी की संगत में घूमना अपराध भी हो सकता है। जो हो, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय का जॉन मारित्ज़ पर कोई प्रभाव पड़ा नहीं मालूम देता। आश्चर्य है कि वह अपराध के गाम्भीर्य से सर्वथा अपरिचित प्रतीत होता है।

मेरी अर्ज़ी का यही उद्देश्य है।

जॉन मारित्ज़ का कहना है कि जीवन भर उसने कभी किसी प्राणी की हत्या नहीं की। एक मक्खी तक की नहीं, और इसलिए वह एक अपराधी नहीं हो सकता। स्पष्ट ही यह असत्य है, क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की बावन जातियों की यह स्थापना है कि जॉन मारित्ज़ एक अपराधी है। इससे आगे जॉन मारित्ज़ का कहना है, क्योंकि वह बावन जातियों को जानता तक नहीं, इसलिए वह उनके विरुद्ध किसी तरह का अपराध नहीं कर सकता। निस्सन्देह उसका यह तर्क एक गँवार का तर्क है। मैंने उसे दोषी कहने वाली बावन जातियों के नाम पढ़कर सुनाये। अधिकांश के नाम उसने मुझसे ही प्रथम बार सुने। उसे यह भी पता नहीं था कि ऐसे देशों का अस्तित्व भी है। लेकिन यह कोई उचित सफाई नहीं है।

जॉन ने जब यह सुना कि जिन जातियों ने उसे दोषी ठहराया है उनमें फ्रांस, और यूनान के भी दो नाम हैं तो वह उत्तेजित हो उठा। वह गुस्से से लाल-पीला हो गया और उसने विश्वास नहीं करना चाहा। उसका कहना है कि वह पाँच फ्रांसीसियों से परिचित है, जिन्हें उसने एक बार जेल से भागने में सहायता दी थी। इसके अतिरिक्त उसका फ्रांस से और कोई सम्बन्ध नहीं रहा। वह केवल एक ही यूनानी से मिला है जो उसके साथ कैम्प में कैदी था। उसे उसने एक बार आधी पावरोटी दी थी। यूनान से उसका इतना ही संबंध रहा है।

लेकिन ये सारे प्रश्न निजी और व्यक्तिगत हैं। इन दोनों जातियों ने समान रूप से उस निर्णय में सहयोग दिया है जो उसे दोषी घोषित करता है। निर्णय स्पष्ट और असंदिग्ध है।

तमाम सहयोगी जातियों के प्रति उसने जो अपराध किया है, जॉन मारित्ज़ को उसका बोध कराने के लिए मेरा प्रस्ताव है कि उसे इन देशों में से प्रत्येक में एक-एक वर्ष कैद रखा जाय। इससे उसको कभी न कभी यह निश्चय हो जायगा कि वह अपराधी है और उसका उपेक्षा-भाव जाता रहेगा।

इस बात की अधिक संभावना नहीं है कि जॉन मारित्ज़ बावन वर्ष तक जीता रहेगा। सभी अपराधियों की तरह उसकी शारीरिक अवस्था दुर्बल ही है। इसलिए उसकी समय से पूर्व मृत्यु की संभावना का विचार कर और इस बात का विचार कर कि शायद इस प्रकार बावन जातियों में से कुछ उसे अपना कैदी बनाकर रखने के अधिकार से वंचित न रह जायँ, मेरा प्रस्ताव है कि उसकी कैद की अवधि घटा कर प्रत्येक जाति के लिए छः महीने कर दी जाय। इससे वह छब्बीस वर्ष तक जेल में रह सकेगा। यदि वह बचा रहे (यह सचमुच बड़े खेद का विषय होगा; यदि वह बावन देशों में से प्रत्येक में अपने अपराध का प्रायश्चित किये बिना ही मर जाय) मेरा प्रस्ताव है कि उसके

हाथों में हथकड़ियाँ डालकर उसे सभी बावन जातियों की जेलों में घुमाया जाय। एक देश में एक महीने से अधिक नहीं लगना चाहिए। एक चक्कर पूरा होने पर फिर दोबारा आरंभ हो।

इस प्रकार हर जाति को उसका सन्तोषजनक हिस्सा मिल जायगा और किसी की भी हानि नहीं होगी। न्याय ही पश्चिम की यान्त्रिक सभ्यता का आधार है। न्याय होना ही चाहिए। इस बात को ध्यान में रखकर कि रूस, पोलैंड और यूगोस्लाविया जैसे कुछ देश अपने कैदियों को बहुत अच्छी हालत में नहीं रखते और कभी-कभी उन्हें सर्वथा भूल जा सकते हैं, मेरा प्रस्ताव है कि हर यात्रा के प्रारंभ पर जॉन मारित्ज़ को अच्छी तरह तोला जाय और उसके शरीर के प्रत्येक अंग का विस्तृत लेखा तैयार किया जाय। जिस समय कोई भी जाति अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से जॉन मारित्ज़ का चार्ज ले, वह हस्ताक्षर करे और जिस समय वह उस न्यायालय को लौटाये उस समय उसका वही वजन होना चाहिए और सूची में दिये गये उसके शरीर के सारे अंग भी सम्पूर्ण रहने चाहिएँ।

इस प्रकार बावन जातियों में से प्रत्येक जॉन मारित्ज़ को काम में ला सके। उसकी अवस्था इस योग्य बनी रहेगी।

पश्चिम की यांत्रिक सभ्यता का यह सिद्धान्त है कि किसी वस्तु का ह्रास न होने दिया जाय।

हमारा कर्तव्य है कि हम सभी ऐसी दूसरी जातियों को जो हमारे समान सभ्य नहीं है, उन्हें सौंपी गई किसी वस्तु के साथ ऐसा व्यवहार न करने दें जैसा बर्बर लोग किया करते हैं। समस्त भूमंडल को सभ्य बनाना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। यही हमारा उद्देश्य है और हमें इसका अभिमान है।

साक्षी

माध्यमिकी

आख़िरकार जॉन मारित्ज़ रिहा हो गया।

वह तेरह वर्ष बाहर रहा था, जिन तेरह वर्षों में उसे सैकड़ों कैम्पों में रहना पड़ा। अब वह एक बार फिर अपने बीबी-बच्चों में वापिस आ गया था। रात के दस बजे थे, उनके एक साथ रहने की पहली रात। जॉन खा चुका था और अब मेज़ पर कोहनी टिकाये बैठा बच्चों की ओर देख रहा था।

सब से बड़ा लड़का पेत्रु, पन्द्रह वर्ष का था। जॉन ने उसकी ओर देखा और तब अपनी आँखें मलीं। वह अपने आपको यह विश्वास दिलाना चाहता था कि वह स्वप्न नहीं देख रहा है। उसे यह विश्वास नहीं होता था, कि जो लड़का उसके सामने खड़ा है, वह उसका अपना पुत्र है।

पेत्रु नीले रंग की अमरीकी जाकेट पहने था, सिगरेट पीता था और आँखें पिता की आँखों जैसी थीं। दूसरी ओर उसे विश्वास नहीं होता था कि यह पतला-दुबला आदमी, जिसकी कनपटी के बाल सफ़ेद हो गये हैं, जो उसके सामने खड़ा है और जिसे उसने कभी नहीं देखा है, उसका पिता है। लेकिन अब जब उन्हें एक ही कमरे में रहना है तो वे परस्पर एक दूसरे के अभ्यस्त हो रहे थे।

"मैं अपने मालिक को कहूँगा, हो सकता है कि वह तुम्हें अपने कारखाने में काम दे सके," पेत्रु बोला।

जॉन मुस्कराया।

"मुझे यक़ीन है कि जब मैं तुम्हारे बारे में उसे बताऊँगा तो वह तुम्हें अवश्य नौकर रख लेगा। वह सामान्य रूप से काम सीखे हुए कारीगरों को ही रखता है, और तुम्हें काम आता नहीं। लेकिन जब वह सुनेगा कि तुम मेरे पिता हो तो वह तुम्हें अपवाद रूप में स्वीकार कर लेगा।"

जॉन ने अपने दूसरे बच्चे, निकोले को देखा जो सुसाना पर गया था। वह उतना ही गोरा था और उसकी आँखें भी वैसी ही नरम रेशमी ढँग की थीं।

तब जॉन की आँखें तीसरे बच्चे पर पड़ीं, जो अभी चार वर्ष का था। यह उसका अपना पुत्र न था। सुसाना को वह रूसियों से मिला था, किन्तु इसके लिये जॉन ने उसे क्षमा कर दिया था। यह उसका कसूर न था। उसने दूसरी सिगरेट जलाई। पेत्रु ने सिगरेट के एक पूरे पैकट से उसका स्वागत किया था।

जॉन थका था, लेकिन उसका सोने जाने का मन नहीं हुआ। कमरे में केवल दो चारपाइयाँ थीं। सुसाना और सबसे छोटा बच्चा छोटी चारपाई पर सोने जा रहे थे। बड़ा पलँग अकेले जॉन के लिये था। बच्चे ज़मीन पर सोनेवाले थे।

"अभी इसी तरह काम चलाना होगा," पेत्रु बोला। "आगे चल कर हम एक और कमरे की अथवा एक और चारपाई की व्यवस्था कर लेंगे।"

लड़कों ने जमीन पर अपने कम्बल बिछाये और कपड़े उतारने शुरू किये।

जॉन अभी भी अपने हाथ पर सिर रखे, मेज के सहारे बैठा था। उसने पेत्रु और निकोले को कपड़े उतार कर सोते देखा। उन्होंने जर्मन में उसे 'गुड-नाइट' कहा। जॉन को अच्छा लगता यदि वे रूमानिया की भाषा बोलते, लेकिन बच्चे अपनी मातृ-भाषा लगभग भूल चुके थे।

सुसाना ने छोटे को बिस्तर पर लिटा दिया। "रूसियों का बच्चा," जॉन के मन में हुआ। वह घुँघराले बालों वाला सुन्दर बच्चा था। जॉन को उसकी ओर देखना पसन्द न था। उसने कैम्प से सुसाना को लिख दिया था कि वह बच्चे को अपना समझेगा। लेकिन जब उसने उस गोरे बालोंवाले बच्चे को देखा तो सुसाना को भी यह अच्छा नहीं लगा। उसने उसके कपड़े उतारे और बिस्तर के अन्दर कर दिया, मानो उसे छिपाना चाहती हो।

थोड़ी देर के लिये सुसाना कमरे के बीच खड़ी यह सोचती रही कि अब क्या करें। तब वह अपने पति के सामने मेज के सहारे बैठ गई। वह जानती थी कि जॉन थका है किन्तु उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह उसे सोने के लिये कह सके। उसे लगता था कि जो कुछ भी हुआ, उस सबके लिये वही दोषी है—उसकी गिरफ्तारी के लिये और जितने वर्ष उसने कैम्पों में व्यतीत किये उसके लिये। यह उसकी मूर्खता थी किन्तु उसे यह ख्याल आता ही था। और तब रूसियों के बलात्कार के लिये भी वह अपने आप को अपराधी मानती थी। यह भी उसी का कसूर था। वह जॉन से आँखें चार नहीं कर सकती थी और उसे सोने के लिये नहीं कह सकती थी।

उसे उसकी प्रतीक्षा थी। उसने उसके लिये कुछ खाना तैयार किया था और बिस्तर लगा दिया था। वह भूखा आया था और जो कुछ भी सामने रखा गया वह सब चौपट कर गया था। और अब पेत्रु के दिये हुए सिगरेटों का भी वह आधा समाप्त कर चुका था।

ज्योंही बच्चे सो गये सुसाना ने अपने पति की ओर देखा। उनकी आँखें मिलीं और थोड़ी देर के लिए दोनों में से कोई एक भी अपनी आँखें न फेर सका।

"क्या यह वही पोशाक नहीं है, जो तुमने उस रात पहन रखी थी?"

जॉन ने उसकी नीची गरदनवाले उस नीले लम्बे वस्त्र को देखा जो सुसाना उस रात पहने थी, जिस रात जरगु जारडन को उसके भाग निकलने का पता लग गया था। वह उस समय भी इसे ही पहने थी जब वह सुसाना को अपने घर लाया था, जब अरिस्तित्जा ने उन दोनों को निकाल दिया था, जब उन्हें फादर कोरग की शरण लेनी पड़ी थी, जहाँ सुसाना रसोई-घर के साथ वाले कमरे में सोई थी। यही एक चीज वह अपने साथ लाई थी। इसके अतिरिक्त अपनी कहने लायक उसके पास और कोई चीज नहीं थी, एक बनियाइन तक भी नहीं। और घर से भागने के बाद कुछ सप्ताह तक वह केवल वही नीली पोशाक पहनती रही। रात को वह इसे उतार देती और नंगी सोती। आगे चलकर उसने अपने लिए दूसरे कपड़े बनवा लिये, लेकिन उसे अपनी पोशाक सर्वाधिक सुन्दर लगती थी, और वह जानती थी कि जॉन को भी यही अनुभव होता है। उन पहले हफ्तों में जब दोनों परस्पर बड़ी ही मौज में दिन काट रहे थे, वह इसे ही लगातार पहनती थी।

"तुम्हारे फन्तना छोड़ने के बाद मैंने इसे फिर कभी नहीं पहना," सुसाना बोली। "जिस दिन वह तुम्हें पकड़ कर ले गये, मैंने शपथ खाई कि जब तक मैं तुम्हें अपनी देहली पर वापिस नहीं देखूँगी, तब तक मैं इसे नहीं पहनूँगी। तेरह वर्ष तक मैं इसे साथ लिये लिये फिरती रही, और तेरह वर्ष तक मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। आज इसके पहनने का मेरा पहला दिन है।"

सुसाना ने अपनी आँखें झुका लीं, मानो उसके मुँह से कोई लज्जापूर्ण बात निकल गई हो। तब उसने जॉन की ओर देखा और उसकी आँख से आँख मिली। जॉन शायद उसे अपने घुटनों पर बिठाकर यह कहना पसन्द करता कि मैं तुम्हारी याद करता रहा। किन्तु उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

उसने दूसरी सिगरेट जलाई और सोते हुए बच्चों की ओर देखा। तब उसकी नजर सुसाना की ओर फिरी। उसमें कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ था। उसके चेहरे पर चन्द झुर्रियाँ थीं। उसकी चमड़ी अब उतनी चिकनी नहीं रही थी और उसके बाल भी अब पहले जितने सुन्दर नहीं थे। वह महुवे की तरह हो गये थे। उसकी छाती भी लटकने लगी थी। तो भी उसे वह अभी वैसी ही लगती थी, जैसा जॉन ने उसे प्रथम बार देखा था। उसे यह विश्वास करने में बड़ी कठिनाई हो रही थी कि उन तेरह वर्षों में फन्तना की सुसाना में इतना थोड़ा परिवर्तन आया है।

"मैं घूमने चलना चाहूँगा," वह बोला।

वह खड़ा नहीं हुआ किन्तु वह सुसाना के उठने की प्रतीक्षा करने लगा।

"क्या मैं भी आ सकती हूँ?" उसने पूछा।

जॉन ने उत्तर नहीं दिया, किन्तु उसके तैयार होने की प्रतीक्षा करता रहा। तब वे दोनों पंजों के बल कमरे में से बाहर चले आये ताकि कहीं बच्चे न जाग उठें। उसको कैसा लग रहा था। सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उनके कन्धे दो बार टकराये। कुछ समय तक दोनों में से किसी ने एक शब्द नहीं कहा।

आकाश अंधेरा था। जॉन मुख्य बाजार देखना चाहता था। उसने रास्ता दिखाया। जब वे एक खूब-रोशन दुकान की खिड़की के सामने से गुजरे उसने उसका हाथ पकड़कर एक जोड़ा-जूता दिखाया जो वह उसके लिए खरीदना चाहती थी। तब वे अभी भी हाथ पकड़े चलते रहे। उनकी नजर बाजार की दूसरी दुकानों की खिड़कियों पर थी। उन्होंने न कैम्पों की चर्चा की और न अपने रूमानिया स्थित घर की चर्चा। थोड़ी देर के लिए वे अतीत को भूल गये। आज की सन्ध्या को वह अतीत की। दुःखद-स्मृतियों से मलिन नहीं होने देना चाहते थे।

"मैं एक-दो दिन विश्राम करूँगा, और तब काम ढूढूँगा" जॉन बोला। "हो सकता है कि जहाँ पेत्रु काम करता है, वहाँ मुझे भी कुछ काम मिल जाय।"

"तुम्हें कम से कम एक या दो सप्ताह विश्राम करना है," सुसाना बोली। "इसके बाद काम खोजने के लिए बहुत समय रहेगा। अभी तुम बहुत कमजोर हो। पेत्रु और मैं दोनों मिलकर सभी के खर्च के लिए पर्याप्त कमा लेते हैं। मैं धुलाई करने जाती हूँ। मुझे काम देने वाले लोग अच्छे हैं।"

उसने उसका हाथ दबाया। जॉन को यह अच्छा लगा कि सुसाना ने उसे अधिक विश्राम करने के लिए कहा।

वे नगर के बाहर पहुँच गये थे। सड़क के दोनों ओर दूर तक फलों के बाग ही बाग चले गये थे। अब अँधेरा था।

"तुम्हें लगता होगा कि हम फन्तना में हैं," जॉन बोला।

"हाँ," उसका उत्तर था।

फन्तना की रातें और उल्लू की चीख को याद करते हुए वे चले जा रहे थे। दोनों के मन में समान प्रकार की स्मृतियाँ जाग-जाग रही थीं।

"मेरे पैर दर्द करते हैं," वह बोला। "यदि, कोई हर्ज न हो तो हम कुछ देर बैठ जाँय।"

वे एक बगीचे में गये और घास पर बैठ गये।

सिर के नीचे हाथ रखकर घास पर लेटते हुए वह बोला—"यह ठीक फन्तना की तरह है।" वह पलटा और अपना मुँह घास में छिपा लिया।

"सुसाना, जरा इस घास को सूँघो। इसमें से ठीक वैसी ही गन्ध आती है, जैसी तुम्हारे पिता के घर के पीछे घास के बाग में से। तुम्हें याद है, वह बाग जहाँ हम मिला करते थे।"

वह घास की गन्ध ग्रहण करने के लिए झुकी। उसे लगा कि हृदय धड़क रहा है। वह उत्तर न दे सकी। उसका स्वर बहुत अस्थिर होता।

उसने सुसाना के कन्धे पर अपना हाथ रखा। वह अभी भी घास पर झुकी हुई थी।

काफी समय तक वे इसी तरह रहे, स्थिर, एक दूसरे से पृथक्। हाँ, उसका हाथ सुसाना के कन्धे पर अवश्य था। वे इससे अधिक समीप आने का साहस नहीं कर सकते थे।

"सुसाना, तुम जानती हो कि जब मैं कैम्प में था, तो मैं तुम्हारी याद किया करता था," वह बोला।

आकाश में कुछ तारे छिटक रहे थे। उन्हें देखने के लिये वह पलटी, थोड़ी जॉन की ओर झुकी, जरा सरकी, कहीं जॉन को पता न लग जाय। उसे लज्जा आ रही थी।

"सुसाना, मुझे क्षमा करना," वह बोला, "कैम्प में जब कभी मुझे तुम्हारा स्वप्न आता तो तुम नंगी ही दिखाई देती थी। आदमी कैदी होता है, तो उसका यही हाल होता है।"

"मैं चाहता हूँ, कि तुम सच्ची-सच्ची बात जान लो," उसने क्षमा-याचना के लहजे में कहा। "तुम्हारे घर के पिछवाड़े घास में मैं जैसे तुम्हें देखता था, वैसा ही नग्न तुम स्वप्न में दिखाई देती थीं। इससे सुन्दर ऋतु शायद ही हम कभी देख पायें।"

वह उसकी ओर बढ़ गई और अपना सिर उसके हाथ पर रख दिया। उसने उसका कन्धा थपथपाया, फिर पीठ और अन्त में उसकी छाती पर हाथ रखा।

"तेरह वर्ष तक ठीक रखने के बाद, तुम अब अपनी इस सुन्दर पोशाक को खराब कर दोगी," वह बोला।

वह कहने जा रही थी कि इसमें लकीरें नहीं पड़ेंगी।

"अच्छा होगा कि इसे उतार कर घास पर रख दो, जैसा कि तुम फन्तना में किया करती थीं।"

उसने जल्दी से अपने सिर में से अपनी पोशाक निकाल ली, मानों वह उससे छिपा रही हो। अब वह सर्वथा नग्न थी। काली-हरी घास में उसका बदन संगमरमर पत्थर की तरह चमक रहा था। वह अभी भी उसके पास न थी। उसने उसकी कमर के गिर्द अपना हाथ डाला और आश्चर्य्य से बोला :

"तुम जैसी थी वैसी ही हो। तुममें कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। जैसे हम फन्तना में थे, वैसी ही तुम अभी हो। यह कैसे हुआ कि तुममें परिवर्तन नहीं आया?"

"यह सच नहीं है," वह बोली। "मैं बूढ़ी हो चली हूँ, किन्तु तुम वैसे ही हो।"

उसने उसे और भी पास खींच लिया। वह खिंच आई।

"जैसे तुम पहले खिंच आती थी," वैसे ही अभी भी खिंच आती हो, वह बोला। "तुम्हें यह ख्याल नहीं आता कि तेरह बर्ष बीत गये हैं।"

उसने जैसा वह किया करता था, उसकी कमर में हाथ डालकर पास खींच लिया था, और उसके मुँह पर अपना मुँह रखकर इतना दबाया था कि उसका साँस ही घुटने लगा। उसके बदन पर उसकी छाती लोहे की ढाल की तरह पड़ी थी। यह ठीक वैसा ही था, जैसा हुआ करता था।

"तुम्हारे बदन में से फन्तना की घास की गन्ध आती है," वह बोली। "इसमें सदा से घास तथा ताजे कटे चारे की सुगन्ध रही है। मुझे भी केवल तुम्हारा ही ख्याल आता था। मैं शपथ खाती हूँ। मैं रात-दिन तुम्हारी ही चिन्ता करती थी। मेरे सारे बिचार तुम्हारे ही सम्बन्ध में थे—सारे के सारे। तुम मेरे सूर्य थे, मेरे पति थे, मेरे आकाश थे। केवल तुम ही तुम।"

जॉन जानता था कि वह सत्य बोल रही है। वह केवल उसकी और उसी की होकर रही है। वह उसके बदन की गरमी, उसके हृदय की धड़कन और उसके जलते हुए शब्दों से यह जान रहा था। वह जानता था कि वह सुसाना का सूर्य और आकाश था और वह केवल उसी का ख्याल करती रही है। लगता था कि तेरह वर्ष एक झपाटे में समाप्त हो गये हों। वे फिर मिल गये थे, वैसे से ही जैसे वे फ़न्तना में थे, दोनों के दोनों, और दोनों के सम्मुख जीवन फैला पड़ा था।

जॉन को अब जीवन का डर नहीं था।

अरुणोदय से थोड़ा ही पहिले वे घास पर से उठ खड़े हुए। उन दोनों को लज्जा मालूम दे रही थी।

"तेरह वर्ष पहले हम कितने तरुण थे, अब नहीं हैं। हमें घर जल्दी जाना चाहिये था।"

वह हँसा। उन्होंने अगले दिन भी फिर उसी स्थान पर मिलने का निश्चय किया।

"और अब इसके बाद हरएक रात्रि को," वह बोला। "हमें हमेशा यहीं मिलना चाहिये, अन्यत्र कहीं नहीं, केवल यहीं। यहाँ यह बिलकुल फन्तना की तरह है, ऐसा प्रतीत होता है कि हम वास्तव में वहीं हैं और इधर तेरह वर्षों में जो कुछ हुआ है, वह हुआ ही नहीं।"

घर लौटते समय वे हँस रहे थे और बतिया रहे थे। अब उनकी दूरी जाती रही थी और इसलिए अब उन्हें संकोच भी नहीं था। एक-दो बार उसने उसके वक्ष को धर लिया और वह भी पीछे नहीं हटी।

"क्या तुम जानती हो," वह बोला "मैं किसी प्रकार की थकावट अनुभव नहीं करता। आज ही मैं पैत्रु के साथ काम खोजने जाऊँगा। अनेक दिनों तक व्यर्थ क्यों प्रतीक्षा करूँ? हम दो कमरे ले सकेंगे। मैं कुछ कमा लूँगा और हम आनन्द से रहेंगे।"

वह चाहती थी कि जॉन पहले कुछ विश्राम कर ले। लेकिन जॉन अपना निर्णय कर चुका था।

"आज ही प्रातःकाल मैं पेत्रु के साथ जाऊँगा," वह बोला। "मुझे काम करने का अभ्यास है। तेरह वर्ष तक मैं लगातार दिन-रात काम करता रहा। और वह काम हमेशा भारी, थका देनेवाला रहा है।"

वे एक दुकान के सामने खड़े हुए, जिसकी खिड़की में प्रकाश था।

"अपनी पहली मजदूरी में से ही, मैं तुम्हें एक काँच की माला ले दूँगा," वह बोला। "वह लाल दानोंवाली कैसी रहेगी? क्या तुम्हें वह पसन्द है?"

उसने पहले कीमत की ओर देखा और तब उसकी ओर। उसे उत्तर देने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। वे बहुत से स्वप्न, जिनमें जॉनी आया था और एक काँच की माला लाया था सत्य होने जा रहे थे।

"अब हमें कभी-कभी भी एक दूसरे से पृथक् नहीं होना चाहिये।"

"यदि मैं कल काम आरम्भ कर दूँ, तो शनिवार के दिन मैं तुम्हें माला ले दूँगा!"

जिस समय वे अपनी गली में पहुँचे, दिन चढ़ चला था।

उसने सुसाना को अपनी बाँहों में दबाया और चूम लिया।

"मैं घर पर तुम्हारा चुम्बन नहीं ले सकता—बच्चे हम पर हँसेंगे," वह बोला। "वे समझते हैं कि हम बूढ़े हो गये हैं। लेकिन हम वास्तव में तनिक बूढ़े नहीं हुए हैं, क्या हुए हैं?"

जलती बत्तियों के साथ एक लारी उनके मुख्य दरवाजे पर आ खड़ी हुई।

जॉन का दिल धड़कने लगा। उसने अपनी वह जेबें टटोलीं जिनमें कागज थे। वे सब अपनी जगह थे और ठीक-ठाक थे। तो भी उसे बेचैनी थी। कैम्पों में जैसी लारियों को वह देखा करता था, वैसी ही यह थी, और इसकी बत्तियाँ वैसी ही तेज रोशनी देती थीं।

"मामला क्या है?" सुसाना ने पूछा।

उसने उत्तर नहीं दिया, किन्तु घर में जा घुसा। सीढ़ियों के ऊपर उन्हें दो सैनिक सिपाही मिले, जो उनके कमरे से बाहर आ ही रहे थे। उन्होंने जॉन के बच्चों को जगा कर कह दिया था कि घर भर के लोगों को ठीक सात बजे घर के दरवाजे पर तैयार रहना होगा। किसी के भी पास पचास सेर से अधिक वजन न हो।

सीढ़ियों पर जॉन मिला तो उन्होंने अपनी हिदायत दोहरा दी।

"ठीक सात बजे तैयार रहना।"

"तुम हमें कहाँ ले जा रहे हो?" सुसाना ने पूछा।

"पूर्वीय यूरोप के तमाम पूर्व-कैदियों को नजर-बन्द रखना है," सैनिक-सिपाही ने उत्तर दिया।

"यह राजनीतिक व्यवस्था मात्र है। तुम्हारे देश पाश्चात्य मित्र-देशों के साथ लड़ाई पर हैं, लेकिन चिन्ता मत करो। तुम्हारी अच्छी तरह देख भाल की जायगी। अमरीकी राशन। यह केवल एक सुरक्षा-व्यवस्था है। डरो मत, तुम गिरफ्तार नहीं हो।"

जॉन ने भाग खड़े होने का निर्णय किया।

एक बार पहले भी उसे धोखा देकर नगराध्यक्ष के पास यह बताने के लिये ले जाया गया था कि उसने किस प्रकार कुछ फ्रांसीसी कैदियों को भागने में सहायता की थी। तब उसे कैद कर लिया गया था। यही कारण था कि उसने इतने वर्ष कैद में बिताये थे। अब वह फिर धोखा नहीं खायेगा। जिस बैग के साथ वह अठारह घण्टे पहले दफ्तर से आया था, उसने अपना वह बैग उठाया और लड़कों को जगाया ताकि जाने से पहले वह उन्हें "विदा" कह दे।

जब पेत्रु ने पिता को जाने के लिए तैयार देखा तो वह खिलखिला-कर हँस पड़ा। पेत्रु धाराप्रवाह अँगरेजी बोलता था और अमरीकियों का प्रशंसक था।

"पिताजी, आप क्या समझते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं?" उसने पूछा। "इतने भोले मत बनिये। मैं अमरीकियों को जानता हूँ। अनेक

अमरीकी मेरे मित्र हैं। हम हर शाम इकट्ठे घूमने जाते हैं। यदि अमरीकी कहते हैं कि यह गिरफ्तारी नहीं है तो तुम उनके शब्दों का विश्वास कर सकते हो। यदि यह एक राजनीतिक नजरबन्दी है तो इसका मतलब है कि हमें अच्छा अमरीकी खाना, अच्छी काफी, सिगरेट और चाकलेट मिलेंगे। हमें काम तक नही करना होगा। भाग खड़े होना मूर्खता होगी। आप अमरीकियों को नहीं जानते।"

जॉन को, जो कुछ वह जानता था, जो कष्ट उसने भोगे थे और जो कुछ उसने भोगा था, उस सबका ख्याल आया। तब उसने पेत्रु की ओर देखा। वह अपनी जानकारी से पेत्रु की मान्यताओं को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।

उसने कन्धे से अपना बैग उतार कर मेज पर रख दिया। वह नहीं जानता था कि वह भाग कर कहाँ जाय। यदि वह अमरीकियों से बच निकला तो रूसियों के हाथ में पड़ने का खतरा था, जो और भी खराब था। इसका यह मतलब नहीं था कि जो कुछ पेत्रु ने उसे अमरीकियों के बारे में कहा था, उसका उसमें विश्वास था। वह ज्यादा अच्छी तरह जानता था। अब वह थक गया था। अब उसमें कहीं भागने की शक्ति नहीं रह गई थी। उसके सामने वहीं रहने और दुबारा पकड़े जाने के अतिरिक्त और कोई चारा न था।

"तुम ठीक हो," उसने पेत्रु से कहा। "भागना मूर्खता होगी।"

पेत्रु ने एक दोस्त की तरह उसे कन्धे पर थपथपाया।

"हम अमरीकी सेना में वालंटीयर बनेंगे," वह बोला।

"रूस को जीत लेने के बाद हम वापिस रूमानिया जा सकेंगे। यह बर्बरता के विरुद्ध सभ्यता की लड़ाई है। पिताजी, तुम्हें भी वालंटीयर बनना चाहिये।"

जॉन ने उसकी बात सुननी बन्द कर दी थी। उसे दखौ, हीलब्रॉन, कोर्नवैसथीम, टार्मस्डट, ओहर्ड्रफ, जीगेल हाइम के काँटेदार तार याद

थे और उन अड़तीस अमरीकी-कैम्पों के काँटेदार तार याद थे, जिनमें से वह पिछले कई वर्षों में गुजरा था। उसे वे कैम्प भी याद थे जहाँ फादर कोरग मरा था और जहाँ त्रायन कोरग को भूखा मारा गया था तथा यन्त्रणा दी गई थी। और उसे इन सभी तारों का हर एक काँटा अपने हृदय में चुभता जान पड़ता था।

"मैं ठीक अठारह घण्टे तक स्वतन्त्र रहा," वह कहने लगा। "अब मैं फिर किसी कैम्प में ले जाया जा रहा हूँ। अब मैं एक यहूदी, एक रूमानिया-वासी, एक हंगरी-निवासी अथवा एक नाजी सैनिक की हैसीयत से नहीं पकड़ा जा रहा हूँ। इस बार मैं पूर्व अर्ध गोलाकार में पैदा हुआ, इसलिये नजरबन्द किया जा रहा हूँ।" उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"पिता जी, क्या आप तैयार नहीं हो रहे हैं?" पेत्रु ने पूछा। उसे चलने के विचार से बड़ी खुशी हो रही थी।

"मैं तैयार हूँ," जान बोला। "पिछले तेरह वर्ष में मैंने एक कैम्प से दूसरे कैम्प जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया है। मैं लगातार तेरह वर्ष तक सामान बाँधता और तैयार होता रहा हूँ। तुम्हें भी इसकी आदत पड़ जायगी। मुझे तुम्हारे लिये अफसोस है, किन्तु हर किसी को इसका अभ्यस्त होना होगा, अब से उन्हें कैम्प, काँटेदार तार और लारियों की कतार के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देगा। अभी तक मैं एक सौ पाँच कैम्पों में रहा हूँ। यह एक सौ छठाँ होगा। कितने दुःख की बात है कि मैं केवल अठारह घण्टे तक स्वतन्त्र रहा। कौन जानता है कि अब मैं मरने से पहले दुबारा स्वतन्त्र होऊँगा या नहीं?"

सुसाना की ओर देख कर वह बोला :

"लेकिन कितना आनन्द था! अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ। मैंने कभी यह कल्पना नहीं की थी कि मुझे फिर चन्द आनन्द की घड़ियाँ बिताने को मिलेंगी। यह ठीक वैसा ही था, जैसा फन्तना में, क्यों सुसाना, क्या नहीं?"

अवसान

"मिसेज वैस्ट मैं एक निजी मामले के बारे में दो बातें करना चाहूँगा।"

जो फाइल वह पढ़ रही थीं, एल्योनोरा ने उसे उठा कर रख दिया और लेफ्टिनेंट लेविस की ओर देखने लगी। वह अपने डेक्स पर टाँगें रखे बैठा था। कुर्सी पर आराम से लेटा हुआ, और सिगरेट पीता हुआ।

लेफ्टिनेंट लेविस विदेशी वालण्टीयरों को भर्ती करने के दफ्तर का मुख्य अधिकारी था। एल्योनोरा इसी दफ्तर में दुभाषिये का काम करती थी, और पिछले छः महीने से उसके अधीन काम कर रही थी। "यह फीते क्यों नहीं बाँधता?" उसने उसके गिट्टों के गिर्द उलझी हुई जुराबों को देख कर कहा। "वह अपनी कुर्सी पर इस प्रकार पैर फैलाकर क्यों बैठता है, जैसे वह घोड़े की पीठ पर बैठता तो सिर्फ जहाजों के नाविक इस तरह बैठते हैं। और लेविस एक भले घर का यूनीवर्सिटी शिक्षा-प्राप्त तरुण है। समाज कितना भी प्रगतिशील हो, यह किसी के लिए भी अशोभनीय है कि वह दफ्तर में बैठे और अपनी नंगी टाँगें किसी रमणी को दिखाये।"

जब भी कभी वह मुँह में सिगरेट रखे-रखे उससे हाथ मिलाता, जब भी कभी वह एक कुत्ते के सामने हड्डी फैंकने की तरह फाइल को मेज पर पटकता, हर बार उसे ऐसा लगता मानो उसके मुँह पर एक थप्पड़ मारा है।

लेफ्टिनेण्ट लेविस को इस बात का तनिक भाव न था कि नोरा के मन में ऐसे विचार हैं। इसके विरुद्ध वह यही समझता था कि वह उसकी प्रशंसक है। इसमें सन्देह नहीं कि नोरा की आँखों में प्रायः संकोच और आश्चर्य रहता था।

"मैं सुन रही हूँ," वह बोली।

"मिसेज वैस्ट, क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?"

लेफ्टिनेण्ट लेविस अपनी कुर्सी पर और भी अधिक पीछे की ओर झूल गया, यहाँ तक कि कुर्सी केवल दो टाँगों पर टिकी रह गई।

"मिस्टर लेविस, मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकती।"

"क्या भविष्य के लिये तुम्हारे कुछ दूसरे प्रस्ताव हैं?"

"नहीं, मेरे कोई दूसरे प्रस्ताव नहीं हैं, किन्तु मेरा उत्तर है: नहीं।"

नोरा फिर अपनी फाइलों को उलटने-पलटने लगी। किन्तु अब उसका मन काम में नहीं लग रहा था। वह कागजों पर झुकी हुई थी; किन्तु भूतकाल का विचार कर रही थी।

जिस प्रकार वह गिरफ्तार हुई थी, उसी प्रकार अनायास रिहा होने से पहले उसने कैम्प में दो वर्ष बिताये थे। जब अन्त में वह कैम्प से बाहर आई, उसका सब कुछ जाता रहा था, उसका रुपया, उसके कपड़े, उसके गहने और यहाँ तक कि उसकी विवाह की मुँदरी भी। हर चीज जब्त कर ली गई थी। बाहर के बैंकों में उसका जो रुपया जमा था, वह भी। अब वह उतनी ही दरिद्र थी, जितनी दरिद्र उसकी नौकरी।

तब उसे सरकारी तौर पर यह सूचना दी गई कि त्रायन आत्म-हत्या करके मर गया, उसके बारे में वह इतनी ही जानकारी प्राप्त कर सकी।

वह वापिस रूसियों के पास नहीं जा रही थी, और जाने के लिए उसके पास दूसरी जगह न थी। इसलिए वह जर्मनी के एक छापेखाने में अनुवादक का काम करती रही। तब पूर्वी गोलार्द्ध में पैदा हुए लोगों की

नजर-बन्दी का हुक्मनामा आया। युद्ध की घोषणा हो गई और एक बार फिर अपने आप अनायास नजर-बन्दी हो गई। लेकिन इस बार सब कुछ दूसरा ढँग था वह अब बिदेशी वालण्टीयरों के भर्ती के दफ्तर में काम करती थी।

कैम्प में ही उसके रहने और खाने-पीने की व्यवस्था थी और ऊपर से वेतन मिलता था। समय बचता था, तब वह लिखती थी। वह त्रायन के 'पच्चीसवाँ घण्टा' नामक अधूरे उपन्यास को पूरा करने में लगी थी। उसने एक सूट-केस में उपन्यास के पहले चार परिच्छेद सँजो कर रख लिये थे। उसे लगता था कि वे ही पुस्तक का सार हैं।

वह कभी भविष्य की चिन्ता न करती थी। उसकी केवल एक ही योजना थी, और वह थी उपन्यास समाप्त करने की। यह एक प्रकार से कोई योजना न थी, किन्तु योजना बनाने की आवश्यकता से बचने का एक साधन मात्र था। उसने अपने आप को एक इसी काम में लगा दिया। इससे उसे प्रेम था। वह भरसक त्रायन की शैली का अनुकरण करने लगी। वह चाहती थी कि वह इसे ऐसे समाप्त करे जैसे त्रायन इसे समाप्त देखना चाहता था।

इस प्रकार, जब जब वह लिखती, उसे लगता कि वह उसके पास बैठा है। उसे अनुभव होता कि वह इकट्ठे लिख रहे हैं। उसने उसे विस्तार से सारा प्लाट समझा दिया था और वह उसे निभाने की पूरी-पूरी चेष्टा कर रही थी।

"बहुत अच्छा," थोड़ी देर के बाद लेफ्टिनेण्ट लेविस बोला। "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम क्यों इनकार कर रही हो?"

"यदि तुम सचमुच जानना चाहते हो, तो इसलिये कि हमारी तुम्हारी आयु में बहुत अन्तर है।"

"बकवास," लेफ्टिनेण्ट लेविस दिल खोल कर हँसा। "तुम मुझसे एक वर्ष छोटी हो। मैंने तुम्हारे कागज देखे हैं। तुमने कहाँ से यह

विचार खोज निकाला ? यह सब यूँ ही है। हम दोनों की आयु बहुत मेल खाती है।"

"तुम गलती पर हो," नोरा बोली।

"तुम मुझे चकमा दे रही हो," लेफ्टिनेण्ट लेविस बोला। "तुम्हारी आयु कितनी है ?"

"हम दूसरे विषय पर चर्चा क्यों न करें ?"

"जब तक तुम मुझे अपनी आयु नहीं बता देतीं, तब तक नहीं।"

"एक स्त्री से उसकी आयु पूछना भद्रोचित कार्य नहीं है," नोरा बोली। "मेरी आयु नौ सौ छियानवे वर्ष है। किन्तु एक बात याद रखना कि स्त्रियाँ सदैव अपनी आयु कम करके बताती हैं। वास्तव में मेरी आयु इससे कहीं अधिक है।"

"बहुत अच्छा, श्रीमती मैथ्यु सेला," वह बोला। लेफ्टिनेण्ट को बड़ा मजा आया था।

लेकिन नोरा गम्भीर थी।

लेफ्टिनेण्ट लेविस का पक्का विश्वास था कि वह उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। लेकिन नोरा ने दो बार कह दिया था कि उसका उत्तर निश्चयात्मक नहीं है।

"मि० लेविस, अधिक बुरा मत मानना," वह बोली। "किन्तु मैं तुम्हारे साथ एक ही घर में चौबीस घण्टे भी नहीं बिता सकती।"

"क्यों नहीं ?"

"मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है—आयु में फर्क होने के कारण," वह बोली। "तुम किसी भी दूसरे तरुण की तरह एक भले, स्वार्थी, सुन्दर तरुण हो, और मैं दूसरे संसार की देवी हूँ।"

"मैं नहीं समझा।"

"यही तो वह कारण है कि मैंने समझाने से इनकार कर दिया," नोरा बोली। "यह तुम्हारे लिए एकदम स्वाभाविक है कि तुम न

समझो। मैं एक हजार वर्ष और उससे भी अधिक जी चुकी हूँ। जो कुछ मैं आज हूँ, वह एक हजार वर्ष के अनुभव का परिणाम है। तुम्हारा भूत-काल कुछ नहीं है। तुम्हारे पास वर्तमान ही है और शायद भविष्य भी। मैं शायद इसलिये नहीं कहती कि मुझे इसमें कुछ सन्देह है, बल्कि इसलिये कि भविष्य के बारे में निश्चयात्मक रूप से कुछ कहा ही नहीं जा सकता।"

ले० लेविस बेचैन होकर बोला—"अत्यधिक रहस्यवाद,"

"मि० लेविस,देखो," नोरा बोली। "पेटरार्च, गेटे, बायरन, पुशकिन और त्रायन कोरग से 'प्रेम' की बातें सुनने के बाद, रीतिकालीन कवियों से प्रेम के गीत सुनने और उन्हें जैसे ईश्वर के सामने वैसे ही अपने सामने घुटने टेके देखने के बाद राजाओं और युद्धवीरों को अपने लिये जान देते देखने के बाद, वैलरे, रिल्के, दातुनजियो और इलियट से प्रेम के शब्द सुनने के बाद, मैं तुम्हारे किसी भी प्रस्ताव पर गम्भीरता-पूर्वक कैसे विचार कर सकती हूँ, जिसे तुम सिगरेट के धुएँ के साथ मेरे मुँह पर मारे दे रहे हो।"

"क्या मुझे शादी का प्रस्ताव करने के लिये गेटे, बायरन या पेटरार्च बनना होगा?"

"नहीं, मि० लेविस," नोरा बोली। "तुम्हें पुशकिन और रिल्के भी नहीं बनना होगा। लेकिन जिस औरत से तुम शादी करना चाहते हो, उससे तुम्हें प्रेम करना होगा।"

"स्वीकार है," लेविस बोला। "तुम्हें किसने कहा कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता?"

नोरा मुस्करा दी।

"मि० लेविस, प्रेम एक तीव्र भावना है," वह बोली। "हो सकता है, तुमने यह बात कहीं सुनी हो, अथवा पढ़ी हो।"

"मैं पूर्णतया सहमत हूँ," वह बोला। "प्रेम एक तीव्र भावना है।"

"लेकिन तुम किसी भी तीव्र अनुभूति के अयोग्य हो," नोरा बोली। "और अकेले तुम्हीं नहीं हो। तुम्हारी सभ्यता में कोई आदमी तीव्र-भावना का अर्थ नहीं समझता। प्रेम-सर्वोपरि भावना-के लिए केवल ऐसे ही संसार में स्थान हो सकता है जहाँ मानव के अनुपम मूल्य में विश्वास किया जाता हो। तुम्हारा समाज मानता है कि आदमी का स्थान आदमी ले सकता है। तुम्हारी दृष्टि में मानव, और इसलिये वह स्त्री भी, जिससे तुम प्रेम करने की बात करते हो, परमात्मा अथवा प्रकृति द्वारा निर्मित एक विशेष व्यक्तित्व नहीं है, एक असाधारण कृति। तुम्हारे लिये हर व्यक्ति एक परम्परा की एक इकाई है, और कोई भी एक औरत दूसरी के समान है। जीवन का यही दृष्टिकोण प्रेम की जड़ काटता है।

"मेरे संसार के प्रेमी जानते हैं कि यदि वे उस स्त्री को नहीं पा सकते जिससे वे प्रेम करते हैं तो पृथ्वी पर कोई दूसरी चीज़ उसी कमी को पूर्ण नहीं कर सकती। यही कारण है कि वे उसके लिये प्रायः अपनी जान दे देते हैं। कोई दूसरी चीज उनके प्रेम की स्थानापन्न नहीं हो सकती। यदि कोई आदमी मुझ से वास्तव में प्रेम करता है तो वह मुझे इस बात का विश्वास दिला देगा कि अकेली मैं ही उसे प्रसन्न कर सकती हूँ, संसार भर में एक मात्र मैं अकेली। वह मुझे सिद्ध कर देगा कि मैं अनुपम हूँ, संसार में मेरे सदृश और कोई है ही नहीं। और उसे विश्वास हो जायगा कि यह ऐसा ही है। एक आदमी जो मुझे यह विश्वास नहीं दिला सकता कि मैं असाधारण और अनुपम हूँ, मेरा प्रेमी नहीं है। *एक स्त्री, जिसे अपने प्रेमी से यह आश्वासन नहीं मिलता, वास्तव में* उसकी प्रेमिका नहीं है। जो आदमी मुझसे प्रेम नहीं करता, मैं उससे विवाह नहीं कर सकती। मि० लेविस, क्या तुम मुझमें यह भावना जगा सकते हो? मि० लेविस, क्या तुम ईमानदारी से यह विश्वास करते हो कि पृथ्वी पर मेरे सदृश कोई दूसरी औरत नहीं? क्या तुम्हें पक्का विश्वास है कि यदि तुम काफी कोशिश करो तब भी तुम्हें कोई मेरे स्थान

पर नहीं मिल सकती ? नहीं, तुम्हें पूरा भरोसा है कि यदि मैं अस्वीकार कर दूँ तो तुम्हें अपनी पत्नी बनाने के लिए कोई दूसरी औरत मिल जायगी, और यदि वह भी अस्वीकार कर दे, तो तीसरी मिल जायगी। क्या मैं ठीक नहीं कह रही हूँ ?"

"हाँ, तुम बिल्कुल ठीक हो," वह बोला। "किन्तु मुझे बड़ा खेद होगा, यदि तुमने अस्वीकार कर दिया। ईश्वर की कसम, बड़ा खेद होगा।"

"मि० लेविस, हम अपने आफिस का नियत काम करें।"

उसने फाइल खोली और बोली --

"कैम्प में हर किसी ने अर्जी दी है। बूढ़े आदमियों, स्त्रियों, और बच्चों तक ने। वे सब वालण्टीयर बनकर तुम्हारे पक्ष में लड़ना चाहते हैं।"

वह मुस्कराई। वह उन हजारों आदमियों का विचार कर रही थी जो रूसी आतंक से डर कर पश्चिम की ओर भाग आये थे। उन सब को अमरीकियों, ब्रिटेन वालों और फ्रांसीसियों के पास शरण-स्थान मिला था। वे यह सोचने के लिए भी नहीं रुके थे कि वे कहाँ जा रहे हैं। वे केवल भाग आये थे--रूसियों से, बर्बरता से, आतंक से, यन्त्रणा से और मृत्यु से। वे किसी भी ऐसी जगह पहुँचना चाहते थे जहाँ रूसी न हों और वह उस स्थान की ओर आँखें बन्द करके जा रहे थे। वे इतना ही जानते थे कि उन्हें पीछे नहीं मुड़ना है। उनके पीछे अन्धकार था, रक्त था, आततायीपन था और अपराध थे। जहाँ रूसी न हों, उस भूमि को उन्होंने चूमा था। उन्होंने घुटने टेक कर उसे चूमा था, उसे स्वर्ग और भक्ति-देश कहा था--बिना यह जानने की इच्छा किये कि वह वास्तव में क्या है? यहाँ रूसी न थे। इससे आगे उन्हें इस बात की चिन्ता ही न थी यहाँ कौन रहता है, और किसका अधिकार है ?

वे अब रूसियों को और नहीं देखना चाहते थे।

अमरीकियों ने शरणार्थियों को गिरफ्तार कर लिया, इसकी उन्हें चिन्ता न थी। वे 'स्वर्ग' में थे। उन्होंने केवल एक ही प्रार्थना की थी कि वे किसी प्रकार रूसियों के हाथ में न पड़ें और उनकी यह प्रार्थना मंजूर हो गई थी। इससे आगे उन्हें परवाह नहीं थी कि क्या होता है? वे रूसियों से बच गये थे, अमरीकियों ने पकड़ा तो उन्हें इसकी कुछ परवाह न थी। यदि अमरीकियों ने उन्हें मार भी दिया होता, तब भी उन्होंने विरोध न किया होता।

और अब लड़ाई छिड़ गई थी—तीसरी विश्वव्यापी लड़ाई। शरणार्थी थके थे, भूखे थे, और कैम्पों में बन्द थे। उन्हें भोजन की जरूरत थी, विश्राम की जरूरत थी; काम की जरूरत थी और स्वतंत्रता की जरूरत थी। लेकिन जब उन्हें ये चीजें भी नहीं मिलीं तो भी वे चुप रहे। वे रूसियों से बच गये थे और यही बड़ी बात थी।

जो भी कोई पश्चिमी सेना में भर्ती होकर लड़ने के लिए तैयार थे, अमरीकियों ने उसे कैम्प से रिहा करने की घोषणा कर दी थी। इसलिए सभी भर्ती हो गये थे, यह इसलिए नहीं कि वे लड़ना चाहते थे, बल्कि इसलिए कि वे कैम्प में पड़े रहकर भूखों मरना नहीं चाहते थे।

"इन लोगों में अद्भुत उत्साह है," लेफ्टिनेण्ट लेविस बोला। "पूर्व की बर्बरता के विरुद्ध जिस पक्ष का पश्चिम समर्थन कर रहा है, उसे सब ने अपना लिया है। वे सब जान गये हैं कि वह घड़ी आ पहुँची है कि या तो विजयी होना होगा या मर जाना होगा। यह इतिहास में अनुपम युगान्तरकारी युद्ध होगा। बर्बर पूर्व और सभ्य पश्चिम का युद्ध। यह विश्वव्यापी युद्ध होगा, इतिहास में प्रथम-विश्वव्यापी युद्ध।"

लेफ्टिनेण्ट लेविस ने अपने हाथ मले।

"यह हमारा सौभाग्य और अधिकार है कि हम इस युद्ध में भाग ले रहे हैं। हमारी विजय निश्चित है। सारा संसार सभ्य हो जायगा। अब और युद्ध न होगा—केवल प्रगति, सम्पत्ति और सुख।"

नोरा मुस्करा दी।

"तुममें विशेष उत्साह नहीं दिखाई देता," वह बोला। "मुझे लगता है कि तुम्हें पश्चिम का पक्ष कुछ विशेष नहीं जँचता। क्या तुम बोल्शेविकों के अनुकूल हो? केवल तुम्हीं हो जो अपने विचार को छिपाये हो, केवल तुम्हीं में असाधारण उत्साह नहीं दिखाई देता।"

"किसी एक के मन में भी वास्तव में उत्साह नही है," नोरा बोली। "वे केवल तुम्हें वैसे प्रतीत होते हैं।"

"क्या हमारे सभी वालण्टीयर दिल और आत्मा से बोल्शेविकों के विरुद्ध नहीं हैं?"

"वे सभी बोल्शेविकों के विरुद्ध हैं." वह बोली। "लेकिन यह बात यहीं तक है। इसका मतलब है कि वे स्वतंत्रतापूर्वक रहना चाहते हैं। भय और मृत्यु से स्वतंत्र। भूख, जला-वतनी और यन्त्रणा से स्वतंत्र। उनका दृष्टिकोण राजनीतिक नहीं है, यह वह दृष्टिकोण है जिसे आदमी अपराध, यंत्रणा और दासता के आमने-सामने होने पर अपना लेता है।"

"इससे अधिक और तुम क्या चाहती हो?" उसने पूछा। "इसका मतलब है कि वे अपने दिल और अन्तरात्मा से पश्चिमी पक्ष के साथ हैं; हम ठीक स्वतन्त्रता, सुरक्षा और जनतन्त्र के लिये ही तो युद्ध कर रहे हैं।"

"मि० लेविस! शब्दों के से भ्रम में न पड़ें। यह तथाकथित विश्व-व्यापी युद्ध पूर्व और पश्चिम का युद्ध नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि युद्ध का मोर्चा सारी पृथ्वी पर-एक सिरे से दूसरे सिरे तक, फैला हुआ है लेकिन तब भी ठीक तौर से कहा जाय तो यह लड़ाई ही नहीं है, यह पाश्चात्य सभ्यता के चौखटे के अन्दर एक आन्तरिक-क्रान्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, केवल आन्तरिक-क्रान्ति, सर्वथा और केवल पश्चिमी।"

"लेकिन हम पूर्व के विरुद्ध लड़ रहे हैं, सारे पूर्वीय यूरोप के विरुद्ध," वह बोला।

"तुम गलती पर हो," नोरा बोली। "तुम पश्चिमवाले, अपनी ही सभ्यता की शाखा के विरुद्ध लड़ रहे हो।"

"हम रूस के विरुद्ध लड़ रहे हैं।"

"कम्युनिस्ट क्रान्ति के बाद से रूस पाश्चात्य यान्त्रिक सभ्यता की सर्वाधिक अग्रगामी शाखा बन गया है। इसने पश्चिम के सभी सिद्धान्तों को कार्य रूप में परिणत किया है। इसने पश्चिम के सिद्धान्त के अनुसार आदमी को शून्य बना दिया है। इसने पश्चिम के सिद्धान्त के अनुसार समाज को एक बड़ी मशीन में बदल दिया है। रूस ने एक बबर अथवा एक जंगली की तरह पश्चिम का अनुकरण किया है। कम्युनिस्ट समाज को रूस की यदि कोई सच्ची देन है तो वह केवल उसका बर्बरता-पूर्ण दुराग्रह है। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। रक्त-पिपासा और धर्मोन्माद के अतिरिक्त और सभी कुछ यू० एस० एस० आर० में पश्चिम की नकल है। अब तुम पश्चिमी सभ्यता के इस अनोखे पहलू—कम्युनिस्ट पहलू—के विरुद्ध लड़ रहे हो। यही कारण है कि तुम्हारा तीसरा विश्व-व्यापी युद्ध केवल एक ऐसी क्रान्ति है जो पश्चिम की यान्त्रिक सभ्यता की सीमाओं के भीतर फूट पड़ी है और चालू है। पश्चिमी सभ्यता का एटलान्टिक-पार और यूरोपी पहलू अपने पश्चिमी कम्युनिस्ट पहलू के विरुद्ध लड़ रहा है। यह एक प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व है दो श्रेणियों में, एक ही समाज के दो वर्गों में। यदि तुम चाहो तो तुम इसे मालिकों की १८४८ की क्रान्ति की तरह एक वर्ग क्रान्ति कह सकते हो। पश्चिम की इस अन्दरूनी उथल-पुथल से पूर्व को कुछ भी लेना-देना नहीं है। पश्चिमी सभ्यता से बाहर किसी का इसमें कुछ काम नहीं है। और मि० लेविस, क्योंकि यह क्रान्ति पश्चिमी क्रान्ति है, इसलिए यह आदमी के भले के लिए नहीं हो रही। पश्चिमी सभ्यता आदमी को नहीं पहचानती।"

"मैं नहीं समझ रहा हूँ।"

"बात बहुत सरल है," नोरा बोली। "पाश्चात्य सभ्यता का स्वार्थ आदमियों का स्वार्थ नहीं है। किन्तु इसके सर्वथा विरुद्ध है। पश्चिम को यान्त्रिक सभ्यता में आदमी, जीवन के तट पर उसी प्रकार रहते हैं जैसे आरम्भिक ईसाई तहखानों में, जेलखानों में, गिरजों में और यहूदियों के मुहल्लों में रहते थे। आदमी छिपे-छिपे रहते हैं, क्योंकि उन्हें सार्वजनिक स्थलों में दिखाई देने अथवा सार्वजनिक दफ्तरों में काम करने का कोई अधिकार नहीं। वे कहीं भी दिखाई न दें, और दफ्तरों में तो नहीं हो, क्योंकि तुम्हारी सभ्यता ने दफतरों को बलि-वेदियों का स्थान दे दिया है।

"आदमी को यह बात छिपा कर रखनी होती है कि वह मानव है। उसे मशीन की तरह यान्त्रिक कानूनों के अनुसार काम करना होता है। आदमी का केवल एक ही पहलू शेष रह गया है—सामाजिक पहलू। वह एक "नागरिक" बन गया है। उसमें और मानव की कल्पना में अब कोई समानता नहीं रही है।

"पाश्चात्य सभ्यता आदमी को केवल एक अंश के तौर पर स्वीकार करती है—एक 'नागरिक' के तौर पर। और जब यह उसे एक आदमी के तौर पर स्वीकार ही नहीं करती, तो यह उसके हित में कोई भी क्रान्ति कैसे कर सकती है? अपनी खास पश्चिमी रंगत होने के कारण यह वर्तमान क्रान्ति एक व्यक्तिगत मानव की हैसियत से आदमी के हितों के सर्वथा प्रतिकूल है।

"तुम्हारी इस सभ्यता में, 'आदमी' बहुत समय से अल्पमत में है, और इस संघर्ष में कोई भी पक्ष विजयी हो, 'आदमी' की स्थिति वही रहेगी।

"यह वर्तमान संघर्ष दो तरह के मशीन-मानवों का आपसी संघर्ष है। दोनों ने अपनी-अपनी पूँछ में रक्त-मांस के गुलामों को बाँध

रखा है। न तो रोम के गुलामों को साम्राज्य के युद्धों में हिस्सेदार कहा जा सकता था और न मानवों को ही इस युद्ध में हिस्सेदार माना जा सकता है। वे केवल युद्ध की जंजीरों में जकड़े हुए हैं। वे युद्ध में क्रियात्मक भाग नहीं ले सकते।"

"लेकिन इस कैम्प के कैदी तो स्वेच्छा से, अपनी स्वतन्त्र इच्छा से, भर्ती हो रहे हैं, क्या नहीं?" लेफ्टिनेण्ट लैविस बोला। "तुम्हारी मान्यता बड़ी भयानक है। मैं तुम्हें धमकी नहीं दे रहा हूँ, किन्तु मुझे स्पष्ट रूप से तुम्हारा खण्डन करना चाहिये। प्रत्येक वालण्टीयर अपनी स्वतन्त्र इच्छा से आता है। क्या तुम्हारा यह कथन है कि हमने किसी एक के साथ भी जबर्दस्ती की है? जब भी हमने किसी की अर्जी अस्वीकार कर दी है तो तुमने देखा है कि वह कितना निराश हुआ है। यदि हम इन्हें स्वीकार न करें तो ये लोग आत्म-हत्या की धमकी देते हैं। क्या यह तुम्हारे लिए प्रसन्नतापूर्वक किया जाने वाला चुनाव नहीं है? क्या यह उत्साह नहीं है? वे हमारी अपेक्षा भी कहीं अधिक उन्मत्त हैं। उनकी अर्जी अस्वीकार कर देना ही उन्हें सबसे बड़ी सजा देना है। क्या मैं ठीक हूँ?"

"यही उनके भाग निकलने का एक मात्र रास्ता है," वह बोली। "वे एक जेल-खाने में कैद हैं, जिसके चारों ओर आग की लपटों की दीवारें हैं और केवल एक दरवाजा है। वह रास्ता है पश्चिमी-सेना में भर्ती हो जाना। इसी कारण तुम्हारे दफ्तर में ये अर्जियाँ धड़ाधड़ चली आ रही हैं। इनमें से हर एक अर्जी स्वतन्त्रता के एकमात्र दरवाजे से भाग निकलने के अन्तिम उत्साहपूर्ण प्रयत्न का प्रतिनिधित्व करती है। सभी लोग अर्जियाँ दे रहे हैं—पूर्व के शरणार्थी ही नहीं, किन्तु यूरोप के सभी लोग।"

"तुम गलती पर हो," लेफ्टिनेण्ट लेविस ने उत्तर दिया। "ये अर्जियाँ मुक्ति का एक मात्र रास्ता नहीं हैं। ये लोग रूसियों के पास जा सकते हैं। ये क्यों नहीं जाते, ये हमारे पास क्यों आते हैं?"

"नहीं," नोरा का उत्तर था। "उन्हें रूस का मार्ग बताने का अर्थ है आग की लपटों की एक ऐसी दीवार दिखा देना, जिसके उस पार यदि वे कूद भी जायें तो भयानक शोलों के अतिरिक्त और कुछ न मिले। दीवार के उस पार वे अपने आप को केवल अग्नि और मृत्यु के मुँह में झोंके दे सकते हैं। जब तक एक भी रास्ता रहेगा, कोई भी आदमी आग में कूदना पसन्द न करेगा। हम ही वह रास्ता हैं, इसलिये वे लोग हमें अर्जियाँ देते हैं। उन्हें इसका तनिक पता नहीं है कि दरवाजे के उस पार क्या है, उन्हें इसकी चिन्ता भी नहीं है। वे बाहर निकलना चाहते हैं, क्योंकि उनका दम घुटा जा रहा है। लपटों की दीवार से तो कम से कम एक दरवाजा अच्छा है। यदि उन्हें यह मालूम भी हो कि दरवाजे के उस ओर भी आग की लपटें ही हैं तो भी वे दरवाजे को अच्छा समझेंगे। कम से कम एक क्षण के लिये तो आग को आँख से ओझल कर सकते हैं और अपने मन में एक अन्तिम आशा और 'माया' को स्थान दे सकते हैं। कुछ न होने से यह अच्छा है। किसी न किसी 'माया' से चिपटे रहना—भले ही वह कितनी ही बेहूदा हो—बड़े ही महत्व की बात है।"

"तुम हरएक चीज को एक निराशा भरी दृष्टि से देखती हो," लेफ्टिनेण्ट लेविस बोला। "वालण्टीयर तुम्हारी तरह नहीं सोचते। जब हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं तो उन्हें अत्यधिक खुशी होती है। वे हमारे पक्ष के लिए—जो कि उनका भी है— अन्त तक लड़ने को तैयार हैं। वे हमारे सर्वश्रेष्ठ सैनिक हैं। जरा दरवाजा खोल कर बाहर खड़ी भीड़ की ओर देखो। वे सैकडों और हजारों हैं। वे सब भर्ती होना चाहते हैं। सब सभ्यता की रक्षा के लिये लड़ना चाहते हैं। वे हमारी कल की विजय के हेतु बलिदान होना चाहते हैं। इससे सारी मानव जाति को सुख मिलेगा, सभ्यता का लाभ होगा, शान्ति और रोटी मिलेगी, स्वतन्त्रा और प्रजातन्त्र हाथ लगेगा। क्या तुम सहमत नहीं हो?"

"नहीं" वह बोली। "वे इस युद्ध में विश्वास नहीं रखते। हो सकता है कि वे मेरी तरह विचार न करते हों, क्योंकि उन्होंने इतना कष्ट सहन किया है कि वे विचार करते नहीं रह सकते, उन्होंने विचार करना छोड़ दिया है। लेकिन वे मेरी ही तरह अनुभव करते हैं, कष्ट भोगते हैं और निराश होते हैं। ठीक मेरी ही तरह, और यह हाल सारे यूरोप का है।"

"मिसेज वैस्ट, यथार्थता को स्वयं बोलने दो। मैं तुम्हें भर्ती होने वालों के उत्साह का खुला प्रमाण दूँगा। मैं यूँ ही कोई एक नमूना चुन लेता हूँ।"

लेफ्टिनेण्ट लेविस उठ खड़ा हुआ। उसने पूरा दरवाजा खोल दिया।

"देखो," वह बोला। "आज फिर पाँच सौ से अधिक अर्जियाँ हैं।"

उसने दरवाजे के बाहर प्रतीक्षा करती हुई आदमियों और औरतों की कतार की ओर इशारा किया।

"हम पहले को ही लें।"

लेफ्टिनेण्ट लेविस ने बाहर प्रतीक्षा करनेवाले पहले आदमी को अन्दर आने दिया। वह अकेला नहीं था। उसकी स्त्री और तीन बच्चे साथ आये। आदमी के बाल काले थे, किन्तु वे कनपटियों पर सफेद हो चले थे। उसके गाल कुछ खिंचे थे। उसकी काली बड़ी-बड़ी आँखों में ग़म की छाया थी।

नोरा ने उनकी ओर देखा।

'एक ऐसी भी ग़मगीनी होती है, जो आध्यात्मिक महात्त्व से होड़ करती है," उसने अपने मन में कहा।

जो आदमी उसके सामने खड़ा था, वह एक मजदूर था, लेकिन उसकी आत्मा का प्रकाश उसकी आँखों में चमक रहा था—महात्त्व से समानता रखनेवाला आत्म-प्रकाश। उसकी ग़मगीनी शरीर की ही नहीं थी किन्तु आत्मा की थी।

उसके पास जो औरत खड़ी थी उसकी पोशाक नीली थी। शरीर पर ढीली-ढीली। उसके सुंदर बालों में सफेद धारी थी। वह मनोरम थी। उसका शरीर ही आकर्षक नहीं था, किन्तु उसका स्त्रीत्व भी उसके चारों ओर की चमक के समान उसके शरीर के हर रोम में से प्रकाशित हो रहा था। नोरा स्नेह से उसकी ओर देखकर मुस्कराना चाहती थी, किन्तु औरत ने अपनी आँखें जमीन पर गड़ाये रखीं। वह गमगीन नहीं थी किन्तु डरी हुई थी।

लड़कों में से एक की आँखें अपने पिता की ही आँखों की तरह काली थी। लेकिन उसकी दृष्टि में कहीं गम की छाया न थी। उसकी जलती हुई खुली आँखें जिज्ञासा भाव से नोरा की परीक्षा कर रही थीं। दूसरे लड़के ने अपनी नजर नीची रखी। वह सुन्दर था। ऐसा लगता था कि यह अपने ही स्वप्नलोक में विचर रहा है।

सब से छोटे बच्चे के बाल घुँघराले और आँखें नीली थीं। नोरा को इसका विश्वास न था कि यह लड़का है अथवा लड़की। लेकिन यह राफेल के देवताओं की तरह सुन्दर था।

"यहाँ एक सारा परिवार भरती होना चाहता है," लेफ्टिनेण्ट लेविस बोला। "जरा इनसे पूछकर देखो कि ये तुम्हारे विचारों से सहमत हैं अथवा नहीं। तुम स्वयं देखोगी कि ये निराश होकर नहीं आये हैं। ये हमारी सेना में आये हैं, क्योंकि ये स्वतन्त्रता और न्याय के प्यासे हैं! ये शांति और सभ्यता के लिये लड़ने की इच्छा से भरती होना चाहते हैं। ये भली भाँति जानते हैं कि क्या करने जा रहे हैं। तुम इनसे जो चाहो प्रश्न करो और तुम्हें पता लग जायगा।"

"इसकी जरूरत नहीं है," नोरा बोली। "मुझे इसका पता लगाने की अवश्यकता नहीं है कि इन लोगों के दिल में क्या है। मैं जानती हूँ। मेरे अपने कष्ट पर्याप्त हैं। मुझे दूसरों को हताश करने के लिये मजबूर मत करो। सामान्य मुलाकात चालू रखो, मुझे कुछ विशेष की इच्छा नहीं है।"

"इनसे तुम जो चाहो पूछो। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा विचार बदल जायगा।"

"बहुत अच्छा," नोरा बोली।

लेफ्टिनेण्ट लेविस का अंतिम वाक्य आज्ञा के समान था।

उसकी नजर हाथ में टोपी लिये, दरवाजे पर खड़े, आदमी पर पड़ी। उनकी आँखें मिलीं।

"तुम्हारा नाम?"

"जॉन मारिट्ज़," आदमी ने उत्तर दिया—"मैं अपने सारे परिवार के साथ भरती होना चाहता हूँ। कृपया हम सब को स्वीकार करें। मुझे एक विशेष आयु-पत्र चाहिए—मेरी आयु अधिक है, किन्तु मैं अपने को नवजवान अनुभव करता हूँ। लड़कों की आयु बहुत कम है। उनकी आयु अभी उतनी नहीं हुई है, जितनी कि इतिहारों में कही गई है। लेकिन वे मेहनती और ईमानदार लड़के हैं। हम बोलशिवकों के खिलाफ हैं जैसा कि इश्तहार में कहा गया है। हम सभ्यता की विजय में विश्वास करते हैं जैसा कि इश्तहार में कहा गया है। केवल हममें से किसी की भी आयु ठीक नहीं है। इसी लिये हमारी प्रार्थना है कि हमें विशेष रूप से आयु-पत्र प्रदान किया जाय। यदि आप हमें स्वीकार नहीं करते तो हम कहा के न रहेंगे। हम और अधिक सहन नहीं कर सकते।"

काली आँखोंवाले लड़के ने पिता को कोहनीमारी वह उसे यह समझाना चाहता था कि उसने अत्यधिक कह दिया है। जॉन रुका और उसके गालों पर लालीछा गई। उसे अनुभव हुआ कि उसे अंतिम शब्द मुँह से नहीं निकालने चाहए थे। उससे एक बड़ी गलती हो गई। इसके परिणाम स्वरूप, सम्भवतः अर्जी अस्वीकृत हो जाय। उसने प्रार्थना भरी दृष्टि से नोरा की ओर देखा।

"कृपया हमें स्वीकार करो," वह बोला "हम मेहनती, ईमानदार आदमी हैं।"

पेत्रु ने उसे और कई बातें सिखाई थीं। किन्तु वह उन्हें कहना नहीं चाहता था। वह सभ्यता में, पश्चिम में और वैसी ही सब बातों में अपना विश्वास प्रकट करना नहीं चाहता था। ऐसा नहीं होगा। उसके ओठों ने शब्दों का उच्चारण करने से इनकार कर दिया। ज्यों ही ये बाहर निकलेंगे, उसका लड़का उस पर गुस्सा होगा और गालियाँ देगा; किन्तु वह उन शब्दों को मुँह से नहीं निकाल सका। वह इतना ही कर सका कि उस डेस्क पर बैठी लाल बालोंवाली स्त्री की ओर प्रार्थना भरी दृष्टि से देखता रहे। वह उसकी ओर देख रही थी।

खामोशी थी।

डेस्क पर बैठी स्त्री की आँखों में दया थी और प्रकाश था। जॉन की स्त्री ने अपनी आँखें ऊपर उठाई और डेस्क पर बैठी औरत की ओर देखा। बच्चों ने भी वैसा ही किया। नोरा चुपचाप जॉन की ओर देखती रही।

लेफ्टिनेंट लेविस थोड़ी देर के लिए आफिस से उठकर चला गया। नोरा अभी भी कुछ नहीं बोली। वह केवल अपने सामने खड़े आदमी की ओर टकटकी बाँधे देखती रही।

"क्या तुम त्रायन कोरग से परिचित थे?" उसने प्रश्न किया।

जॉन चौंक पड़ा।

"हम इकट्ठे थे।" वह बोला। वह कैम्प की चर्चा नहीं करना चाहता था। पेत्रु ने उसे यह बात मुँह से निकालने के लिये मना कर दिया था। "हम अन्त समय तक इकट्ठे थे। वह, मैं और फादर कोरग भी। मैं मास्टर त्रायन के साथ तब तक था जब तक कि यह हुआ..."

जॉन जरा देर के लिये रुका और तब कहता गया।

"उससे बढ़कर मैंने दूसरा आदमी नहीं जाना। वह आदमी नहीं था, संत पुरुष था। क्या तुम भी मास्टर त्रायन से परिचित थीं?"

"मैं उसकी पत्नी हूँ।"

जॉन दरवाजे से जा लगा। उसका रंग पीला पड़ गया था। उसने जेब में से अपना रूमाल निकालना चाहा लेकिन उसके पास रूमाल न था। उसकी उँगलियाँ शीशे की बनी किसी चीज से जा टकराई—त्रायन के चश्मे से।

उसने उसी दिन उसे अपनी जेब में रखा था, ताकि उसके लिये एक चमड़े का खोल बनवा ले, जब उसने चश्मे को अपने सूटकेस में रखा तो उसे डर था कि कहीं टूट न जाय। उसने जेब से निकाल कर उसे जरा देर अपने हाथ में रखा, सोचा कि अब इसके लिए खोल बनवाना अनावश्यक है। अब इसे दुबारा सूटकेस में न रखना होगा।

उसने नोरा के सामने डेस्क पर चश्मा रख दिया।

"यह मास्टर त्रायन का है।" वह खाँसने लगा। उसका गला रूँध गया। "उसके अन्तिम शब्द थे कि मैं यह तुम्हें दे दूँ। यह होने के ठीक पहले......उसके अन्तिम .."

जॉन का स्वर काँप रहा था। वह अधिक नहीं बोल सका। उसने फिर अपना रूमाल टटोला। इस बार उसके हाथ चमड़े का वह टुकड़ा लगा जिससे वह चश्मे काखोल बनवाना चाहता था। उसने इसे पाकेट से बाहर निकाला। वह नहीं जानता था कि क्या करे, और इसका कुछ भी करने के लिये उसने इस चमड़े के टुकड़े को चश्मे के पास डेस्क पर रख दिया।

"मैं इसके लिये एक चमड़े का खोल बनाने जा रहा था," वह बोला, "ताकि यह टूटे नहीं।" उसने चमड़े का टुकड़ा दुबारा हाथ में उठा लिया और लिये खड़ा रहा। बोला, "मैं इसे कैम्प में बनाऊँगा। वहाँ बहुत समय है। तब इसे खोल में रखा जा सकता है, उस तरह से अच्छा रहेगा। यह टूटेगा नहीं।"

"अच्छा, अब तो तुम्हें विश्वास होगा कि ये सच्चे वालण्टियर और उत्साह के मारे यहाँ आये हैं?" आफिस में वापिस आता हुआ लेफ्टिनेंट लेविस बोला।

नोरा ठिटक गई, खाँसी, और तब निश्चयात्मक स्वर में बोली :—

"अब मुझे यकीन है कि तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। इन लोगों ने मुझसे प्रार्थना की है कि मैं आयु के सम्बन्ध में जो प्रतिबन्ध है उसे ढीला कर दूँ। ये सभी भरती होना चाहते हैं, सारा परिवार।"

लेफ्टिनेंट लेविस ने सन्तोष प्रकट किया।

"इन्हें एक परमिट दे दो," वह बोला "आवश्यक फार्म मँगा लो। मैं सारे परिवार का एक फोटो लेकर अखबारों को भेजना चाहता हूँ।"

लेफ्टिनेंट लेविस सब से छोटे बच्चे के पास पहुँचा और उसे सिर पर थपथपाया। तब उसने सुसाना से पूछा :—

"यह भी रूसियों के खिलाफ है, क्यों क्या नहीं?"

सुसाना ने अपनी आँखें नीची कर लीं। उसे लगा कि उसे कुछ न कुछ उत्तर अवश्य देना चाहिए।

"हाँ, यह भी रूसियों के खिलाफ है," वह बोली। उसे डर था कि कहीं जॉन न सुन ले, जॉन ने सुन लिया। उसने अपने ओंठ चबा लिये।

नोरा ने फार्म भरने आरम्भ कर दिये थे।

"आज रात मेरे यहाँ चले आना," वह बोली। "मैं भी कैम्प में रहती हूँ। हम साथ बैठ कर चाय पियेंगे और शांति से बात करेंगे। तुम मुझे आयन के बारे में सब कुछ बता सकोगे।" नोरा ने अपना गला साफ किया।

"अब मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, ताकि मैं तुम्हारे फार्म भर सकूँ। १९३८ से आज तक तुम कहाँ रहे? मुझे सब कुछ बता दो। घबराओ मत, तुम्हारी अर्जी मंजूर हो जायगी।"

सबसे बड़ा लड़का मुस्कराया। वह जीत गया था, और वह प्रसन्न था। सबसे छोटा लड़का भी प्रसन्न था। लेफ्टिनेंट लेविस ने उसे जो मिठाई दी थी वह उसे कुतर रहा था और दाँत निकाले था।

सुसाना की आँख जमीन पर गड़ी थी।

लेफ्टिनेंट लेविस अपना कैमरा बिठा रहा था। वह उस परिवार का फोटो ठीक उसी समय लेना चाहता था, जब जॉन फारम भर रहा हो। हर एक चीज वास्तविक होनी चाहिए।

"१६३८ में मैं रूमानिया के यहूदी कैम्प में था। १६४० में हंगरी में एक रूमानिया के कैदी कैम्प में। १६४१ में, जर्मनी में, एक कैम्प में।......१६४५ में एक अमरीकी कैम्प में, परसों मैं दछौ से रिहा हुआ। तेरह वर्ष तक लगातार कैम्पों में। मैं अठारह घंटे तक स्वतंत्र रहा। तब मुझे यहाँ लाया गया।"

"मुस्कराते रहो," लेफ्टिनेंट लेविस बोला।

उसका कैमरा जॉन और उसके परिवार पर केन्द्रित था।

जॉन नोरा की ओर देख रहा था और उसे वे काँटेदार तारों के सैकड़ों मील याद आ रहे थे जो उसने देखे, और जो अब उसके सारे बदन पर प्रकट थे।

जब ले० लेविस ने उसे सम्बोधन किया, तो जॉन ने घूमकर देखा तक नहीं। वह अँगरेजी नहीं समझता था।

"१६३८ से आज तक मैंने इस प्रकार समय व्यतीत किया है," वह बोला। "कैम्प, कैम्प, कैम्प, तेरह वर्ष तक कैम्पों के अतिरिक्त कुछ नहीं।"

"मुस्कराते रहो," ले० लेविस बोला।

आखिरकार जॉन समझा कि ये शब्द उसके लिये हैं। उसने नोरा से पूछा:—

"यह अमरीकी क्या कह रहा है?"

"वह तुम्हें मुस्कराते रहने की आज्ञा दे रहा है।"

जॉन ने डेस्क पर रखे त्रायन के चश्मे की ओर देखा। उसे एक बार फिर, तार के पास त्रायन बेहोश होता और मृत्यु के मुख में जाता दिखाई दिया।

उसे कांटेदार तारों के वे सैकड़ों मील याद आये जिनके पीछे वह कैद रहा था। उसे फादर कोरग की कटी हुई टांगें याद आईं। उसे वह सब कुछ याद आया जो उन तेरह वर्षों में उसके साथ बीता था।

उसने सुसाना की ओर देखा। उसने छोटे बच्चे की ओर देखा, और उसका चेहरा मुर्झा गया। उसकी आँखों में आँसू छलक आए। अब जब उसे मुस्कराने की आज्ञा मिली थी, वह इसे अधिक सहन न कर सका। उसे लगा कि वह सम्पूर्ण रूप से हताश होकर एक औरत की तरह उन्माद-पूर्ण सुसकियाँ भरने जा रहा है। यह अवसान था, वह सहन नहीं कर सकता था। कोई भी जीवित आदमी सह नहीं सकता था।

"मुस्कराते रहो," अफसर बोला। उसकी आँखें जॉन मारित्ज़ पर गड़ी थीं। "मुस्कराते रहो............"